

⑦

→ 164



प्रवृत्ते तुमुले युद्धे द्रोणपाण्डवयोर्मध्ये ॥ ४८
शरजालैः समाकीर्णं मेघजालैरिवाम्बरे ।

न स्म संपतते कश्चिदन्तरिक्षचरस्तदा ॥ ४९

इति श्रीमहाभारते द्रोणपर्वणि त्रिपञ्च्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १६३ ॥

१६४

संजय उवाच ।

तस्मिंस्तथा वर्तमाने नराश्वगजसंक्षये ।
दुःशासनो महाराज धृष्टद्युम्नमयोधयत् ॥ १
स तु रुक्मरथासक्तो दुःशासनशरादितः ।
अमर्षाच्च पुत्रस्य शरैर्वाहानवाकिरत् ॥ २
क्षणेन स धृष्टस्य सध्वजः सहसारथिः ।

नादृश्यत महाराज पार्षतस्य शरैश्चितः ॥ ३
दुःशासनस्तु राजेन्द्र पाञ्चाल्यस्य महात्मनः ।
नाशकत्प्रमुखे स्थातुं शरजालप्रपीडितः ॥ ४
स तु दुःशासनं बाणैर्विमुखीकृत्य पार्षतः ।
किञ्चशरसहस्राणि द्रोणमेवाभ्ययाद्रेणे ॥ ५
प्रत्यपद्यत हार्दिक्यः कृतवर्मा तदन्तरम् ।

C. 7. 8523
B. 7. 129. 6
K. 7. 190. 6

शरौघैरथ कृष्णं तु छायाभूतं महामृधे ।
तुमुलं प्रवर्धो राजन्तर्धस्य जगतो भयम् ।

164

[(L. 1) T Gs. 4 मुक्त्वा; Gs ल्यक्त्वा (for त्यज्य).
M1. 2 अभिधावत (for अन्व). — (L. 3) M3-s अपि
(for अथ). M3-s च (for तु).]

49 Ss missing (cf. v. l. 38). — ^{as} Ds समस्तः
(for शरजालैः). D1. 5 समाकीर्णः; G1 M अवाकीर्णं
(for समा). T G2-1 प्रच्छादितेजुनेनाजौ शर(T मेघ)जालैर-
(G2 'स्त')थांबरे. — ^o Gs संस्तंभते (for संपतते). S1
K3 नासंपतततः कश्चिद्; K1 नासन्वत ततः किंचिद्; K2
नासन्पर्वततः किंचिद्; K4 D1. 2. 4. 5. 7. 8 नापतच्च ततः
कश्चिद्; Dc1 Dn1 न स्म संपतते किंचिद्; Dn2 नाम
संपद्यते कश्चिद्; D3 समापतततः कः; D3 समापतत नः
कः. — ^d T G2-4 तथा (for तदा). B (except B1)
D6. 8 अंतरी (D3 नांतरी)क्षरस्तदा; Dn1 पुनरेव विशां पते.

This adhy. is missing in Ss Ks Gs (cf. v. l. 7. 163. 38; 125. 14; 137. 9).

1 ^a B3 Dc1 Dn1 ततो; B4 D1. 5. 7. 8 तदा (for
तथा). M3-s वच्यमाने ततः सैन्ये. — ^b B1 रथाश्व- (for
नराश्व-). D1. 5. 7. 8 नरप्रवरयोस्तथा (D3 'दा'); S (Gs
missing) हस्त्यश्वर्यसंक्षये (Gs 'कुले'); Bom. ed. गजा-
श्वनर. — ^d D3 अयोधयत्; D4 अयोज (for अयोध).

2 ^a M1. 2 रुक्म- (for रुक्म-). D3 रथारक्तो; M3-s
रथे सक्तो (for रथासक्तो). — ^b D1 पूर्वमेव विशां पते.
— D1 om. (hapl.) 2^c-3^d. — ^c K4 इवाकिरत् (for
सवा).

3 D1 om. 3 (cf. v. l. 2). — ^a रथे (for
रथः). S (except Gs; Gs missing) वास (for
तस्य). — ^d D3 (marg. as in text) M1. 2 पार्षतश्च
(for 'तस्य'). D1. 5. 7. 8 पुनः (for चितः).

4 M3 om. 4^{bcd}. — ^b K2 D2-5. 7. 8 पांचालस्य.
— ^c K1. 2 M4 समरे (for प्रमुखे). — ^d S1 K (Ks
missing) D1 जालेन; D3 जालैः प्र- (for जालप्र-).
M4 शरजातप्रताडितः.

5 For 5^{as}, G1 M subst.:

1295* धृष्टद्युम्नोऽपि राजेन्द्र भयं दृष्ट्वा तवात्मजम् ।

Colophon: Ss Ks Gs missing. — Sub-parvan:
B1. 2 (marg.) द्रोणवध. — Day of Drona's General-
ship: S1 K3 T G1. 3. 4 पंचमेहनि; K1 D1 पंचमयुद्ध-
दिवसः; K4 पंचमदिवसयुद्धं; M1. 2 पंचमेहि. — Adhy.
name: S1 K1-3 D1. 2 द्रोणार्जुनयुद्धं; Bom. ed. संकुल-
युद्धं. — Adhy. no.: (figures, words or both):
Dn1 189; D2 192; D3 83; T G2-1 184; G1
M1. 2 182; M3-5 181. — Soka no.: Dn1 52.

सोदर्याणां त्रयश्चैव त एनं पर्यवारयन् ॥ ६
तं यमौ पृष्ठतोऽन्वैतां रक्षन्तौ पुरुषर्षभौ ।
द्रोणायामिमुखं यान्तं दीप्यमानमिवानलम् ॥ ७
संप्रहारमकुर्वन्ते सर्वे सप्त महारथाः ।
अमर्षिताः सत्त्ववन्तः कृत्वा मरणमग्रतः ॥ ८
शुद्धात्मानः शुद्धवृत्ता राजन्स्वर्गपुरस्कृताः ।
आर्यं युद्धमकुर्वन्त परस्परजिगीषवः ॥ ९

[M3 om. the prior half.]

—^a) K1. 2. 4 D1 बली (for रणे).

6 ^a) K3 अभ्यपद्यत (for प्रत्य). —^b) Bom. ed. त्वन्तरं (for तदन्तरम्). —^c) D2. 4. 6. 7 सौदर्याणां. D1. 8 T G2. 3 त्रयं (for त्रयश्च). G1 M1. 2 चैनं (for चैव). —^d) D3 ते सर्वे; D4. 5. 7. 8 तत्तल्लं; S (G5 missing) सर्वतः (for त एनं). Ś1 K (K5 missing) D1 प्रत्यवारयन्; D3 T G1-3 पर्यवारयन्.

7 ^a) Dn2 M3 (sup. lin.) तौ यमौ; G1 M1. 2 यमौ च (for तं यमौ). Some MSS. [5] न्वेतां; B4 [5] न्वेत्य; Dn2 D3. 6 वीरौ (for ऽन्वैतां). —^b) D3. 6 रक्षन्तावनु (D3 ऽन्व) जगमनुः. —^c) G1 M3-5 द्रोणस्य (for द्रोणाय). K3 Dn2 यातं (for यान्तं).

8 D1 om. (hapl.) 8^a-9^a. —^b) D3 गताः (for सर्वे). K4 Dn2 D2 च सु; S (G5 missing) तत्र (for सप्त). —^c) M3 सत्त्ववन्तः (for सत्त्व).

9 D1 om. 9^a (cf. v. 1. 8). —^a) G3 शुद्धात्मानं. D4 शुद्धात्मानं च शुद्धत्वाद्; D5. 8 त्मानं शुद्धसत्त्वा; D6 शुद्धवृत्ताः सत्त्ववन्तो. —^b) Dn2 स्वर्गं (for स्वर्गं). —^c) Dc1 Dn D2. 2. 5. 6 आर्ययुद्धम्; G1 M आर्या युद्धम् (for आर्यं युद्धम्). Dc1 Dn1 om. (hapl.) from कुर्वन्त up to धर्मयुद्ध (in 10^a). Dn2 D4. 5. 8 अकुर्वन्ते (for वन्त). —^d) Ś1 K1-3 D1 जिगीषया; G1 M चपैरिणः.

10 Dc1 Dn1 om. up to धर्मयुद्ध (cf. v. 1. 9). —^a) S (except M1; G5 missing) शुद्धाभिजन- (for शुद्धा). D4. 6 कुर्वाणा (for कर्माणो). —^b) Dn2 गतिमन्तो (for मतिमन्तो). Ś1 K3 B3 M3-5 जनाधिप (for धिपा). —^c) D5. 5. 6 अकुर्वन्त; G2 अयुध्यन्तः (for अयुध्यन्त). —^d) K2 प्रेक्षन्तो; B (except B1) Dc1 Dn1 D2 प्रेक्षन्तो; Dn2 D4. 5. 7. 8 पश्यन्तो; T G3-5 काक्षन्तो (for प्रेक्षन्तो).

शुक्लामिजनकर्माणो मतिमन्तो जनाधिपाः ।
धर्मयुद्धमयुध्यन्त प्रेक्षन्तो गतिमुत्तमाम् ॥ १०
न तत्रासीदधर्मिष्ठमशस्त्रं युद्धमेव च ।
नात्र कर्णो न नालीको न लिप्तो न च वस्तकः ॥ ११
न ह्यसौ कपिशो नात्र न गवास्थिर्गजास्थिकः ।
इपुरासीन्न संश्लिष्टो न पूतिर्न च जिह्वगः ॥ १२
ऋजून्वेव विशुद्धानि सर्वे शस्त्राण्यधारयन् ।

11 ^b) Ś1 T G3 अशस्त्रं; K1 अशस्त्रः; K3. 4 अशस्त्रं; Dn2 D2. 4. 5. 7. 8 नाशस्त्रं (for अ). B4 G1. 4 M1. 2 वा (for च). —^c) D3 न तु (for नात्र). G2 M3-5 नालीको. B Dc1 Dn1 D5 न तत्र कर्णो (Dn1 D5 णि-) नालीको; T G1. 3. 4 M1. 2 न चा (G1 M1. 2 त) त्र कर्णिना- (G3 णी ना) ली (G3. 4 ली) को. —^d) K4 वस्तिकः; B1 वस्तकः; B2. 3. 5 D3 वस्तकः; Dc1 D6 S (G5 missing) वस्तकः; Dn1 D2. 4. 5. 7. 8 वस्तकः; Dn2 वस्तिकः (for वस्तकः). B4 न च लिप्तो न वस्तकः. —After 11, M3-5 ins. 1296*.

12 M3-5 om. 12^a. —^a) Ś1 K1-3 सूतिः; B1. 2 शुची; B3. 5 शुची; D1. 6 [अ]शुचिः; D1. 3 सूचिः (for सूची). D1. 3 वापि; D1. 3 वासीन् (sic); Bom. ed. नैव (for नात्र). Dn1 न सूची कपिशा चोसि (sic); Dn2 न सूची कपिशैने च (sic); D2 न सूति क्षप्यमानो वा; D4 न सूति कपिमानेव (sic); D5 नाशुचिः कपिशा वापि. —^b) B1 Dn2 D1 न गवास्थिः; B3 गवास्थिकः; D6 T G3 न गवाक्षि (D6 क्षिर्); G1. 4 M1. 2 न गवाक्षी (for स्थिर्). Ś1 K3 D3 न चाधिकः; K1. 2 न चाविकः; Dn1 D1. 8 अजाविकः; D2 अजोधिकः; D4. 5 अजारकिः (D5 रिकाः); D6 न जाविकः; T1 न चास्थिकः (for गजास्थिकः). G2 न भवाक्षि भुजास्थितौ. —T G1-4 M1. 2 ins. after 12^a; M3-5 after 11:

1296* न चूली बलिशस्तत्र न यमौ नापि पावकः ।

[G1 बलिशस्त्र. M3-5 न चूली बलिशस्तत्र (for the prior half). M1 बर्मी (for यमौ). M3 न बर्मी न पावकः (sub-metric); M5 न बर्मी नापि पावकः (for the post. half).]

—^c) K1. 4 D1. 7. 8 S (G5 missing) संश्लिष्टो (for संश्लिष्टो). Dn2 इपुरासीन्नमंश्लिष्टो (sic). —^d) Dc1 Dn1 पूतिर्; Dn2 पुतिर्; T G2-4 M पूती (for पूतिर्). G1 M1. 3-5 जिह्वगः.

13 ^a) D1 एव (for एव). Dn2 हि (for वि). D4. 5. 7. 8 तान्येव हि विशुद्धानि. —^b) B4 D4. 5. 7. 8 G1

सुयुद्धेन पराल्लोकानीप्सन्तः कीर्तिमेव च ॥ १३
तदासीत्तुमुलं युद्धं सर्वदोषविवर्जितम् ।
चतुर्णां तव योधानां तैस्त्रिभिः पाण्डवैः सह ॥ १४
धृष्टद्युम्नस्तु तान्हित्वा तव राजत्रयर्षिभान् ।
यमाभ्यां वारितान्दृष्ट्वा शीघ्रास्त्रो द्रोणमभ्ययात् ॥ १५
निवारितास्तु ते वीरास्तयोः पुरुषसिंहयोः ।
समसज्जन्त चत्वारो वाताः पर्वतयोरिव ॥ १६
द्वाभ्यां द्वाभ्यां यमौ सार्धं रथाभ्यां रथपुंगवौ ।
समासक्तौ ततो द्रोणं धृष्टद्युम्नोऽभ्यवर्तत ॥ १७
दृष्ट्वा द्रोणाय पाश्चात्यं व्रजन्तं युद्धदुर्मदम् ।

यमाभ्यां तांश्च संसक्तांस्तदन्तरमुपाद्रवत् ॥ १८
दुर्योधनो महाराज किरञ्शोणितभोजनान् ।
तं सात्यकिः शीघ्रतरं पुनरेवाभ्यवर्तत ॥ १९
तौ परस्परमासाद्य समीपे कुरुमाधवौ ।
हसमानौ नृशार्दूलावमीतौ समगच्छताम् ॥ २०
बाल्ये वृत्तानि सर्वाणि प्रीयमाणौ विचिन्त्य तौ ।
अन्योन्यं प्रेक्षमाणौ च हसमानौ पुनः पुनः ॥ २१
अथ दुर्योधनो राजा सात्यकिं प्रत्यभाषत ।
प्रियं सखायं सततं गर्हयन्वृत्तमात्मनः ॥ २२
धिकक्रोधं धिक्सखे लोभं धिङ्मोहं धिगमर्षितम् ।

C. 7. 8650
B. 7. 109. 23
K. 7. 190. 23

M सर्व- (for सर्वे). Ś1 K1.2 D1.3 अपातयत् (Ś1 D1
नृ); Dn1 D4 G4 अवारयत् (D4 त्) (for अधा).
—^d) D4 ईप्सितः; S (G5 missing) इच्छतः (for
ईप्सन्तः).

14^a) Dn1 D1.5.7.8 तुमलं. —^b) D2.4.5.7.8 S
(G5 missing) पाप- (for दोष). D3 स्वच्छं दोषविव-
र्जितं. —^c) Dn1 चैव (for तव). G1.4 M योधानां.

15^a) K1 B Dc1 Dn S (G5 missing) दृष्ट्वा; D2.6
हत्वा; D3 जित्वा; D7.8 वीरांसं (for हित्वा). —^b)
D6 युवान् (for राजन्). K1.2 D2.7.8 नरर्षिभान् (for
रथ). —^c) G2 वारितस् (for तान्). K1 B Dc1
Dn वीराज्; S (G5 missing) तत्र (for दृष्ट्वा). —^d)
Dn2 शीघ्रास्त्रै (for स्त्रो). G2 तव सेनां समभ्ययात्.

16^a) T G2-4 शराक्षिं (G3.4 चिंतास्; G1 M
शरानलास् (for निवारितास्). Ms-5 ततो (for तु ते).
D3.6 योधास् (for वीरास्). —^c) K1.2 D6 चतुरो
(for चत्वारो).

17^b) K1.2 D1 नर- (for रथ-). B1 D3.6 सत्तमौ
(for पुंगवौ). D5 रथाभ्यां पुरुषर्षभौ; T G2-4 रथिनां
रथ (G3 धि) सत्तमौ. —^c) G1.4 रणे (for ततो). —^d)
Dn2 [5] अभ्यवर्षत; Ms-5 बाल्युनः (for वर्तत).

18^a) D6 युद्धाय (for द्रोणाय). G1 M1.2 तं यातं
(for पाश्चात्यं). —^b) Ś1 गच्छतं; K1.2 प्रयातं; G1
M1.2 पांचाल्यं; G3 जयतं (for व्रजन्तं). D4.5.7.8
व्रजन्तं शत्रुमर्दनं. —^c) D5 G1 संयुक्तास्. Ms-5 यमाभ्यां
सह संसक्तास्. —^d) G1 M (except M4) उपाद्रवन्.
— Ms-5 ins. after 18: G1 M1.2 after 19:

1297* ततस्त्व सुतो राजन्सास्वतेन समागतः ।

19^d) K4 अभ्यवर्षत (for वर्तत). — After 19,
G1 M1.2 ins. 1297*.

20^b) T G2-4 Ms-5 बाण्यैकुरुपुंग (G1 पांड) वौ.
—^c) B1 Dn1 D4 G2 सहमानौ; T G3.4 हिंस (for
हस). S (G5 missing) महावीर्याव (for नृशार्दूलाव).
—^d) D3 प्रतीतौ; G3.4 अहितौ; M3 विभीतौ (for अ).
B Dc1 Dn S (G5 missing) समसज्ज (B5 जे) तां (for
गच्छताम्).

21^a) K1 B3 Dn2 D2.4.5.7.8 बाल्य- (for बाल्ये).
B1 बाल्ये सर्वाणि वृत्तानि. —^b) D5 प्रीयमानौ (sic)
(for प्रीयमाणौ). D6 T G2-4 Ms-5 प्रक्षिन्त्य (for विचि-
न्त्य). —^c) K2 Dc1 Dn1 D6 प्रेक्ष्यमाणौ; K4 प्रेक्षमानौ
(for माणौ). Dn2 D2.4.5.7.8 तावन्त्योन्यं प्रेक्ष्य (Dn2 D2
क्ष) माणौ. —^d) B Dc1 Dn1 D1.2 स्मयमानौ; Dn2
हन्व; D4.7.8 समानौ तौ (D5 तु); D5 सज्जंतौ च;
T G3.4 हर्षमाणौ; G2 सहमानौ (for हस).

22^b) B Dc1 Dn T G1-4 M1.2 सात्यकिं समभाषत.
—^c) Ms-5 प्रियः (for प्रियं). T G2.8 सहायं
(for सखायं). —^d) Ś1 K1.2.4 D3.6 वृत्तिम् (for
वृत्तम्).

23^a) S (G5 missing) च वै (G2 ने) (for सखे).
—^b) B1.4 Dc1 D4.5.7 अमर्षितां; B2 Dn1 T G2-4
Ms-5 धृतां; G1 M1.2 पराक्रमं (for अमर्षितम्). —^c)
Dn2 D4-7 G2 क्षत्रम् (for क्षात्रम्). —^d) K3 B1
(marg.) 2-5 Dc1 Dn1 बलपौरुषं; B1 (orig.) बलमौषधं
(for भौरसम्).

24^a) K3 B D (except D1) यत्र (for यत्वं). D5

धिगस्तु क्षात्रमाचारं धिगस्तु बलमौरसम् ॥ २३

यत्त्वं मामभिसंधत्से त्वां चाहं शिनिपुंगव ।

त्वं हि प्राणैः प्रियतरो ममाहं च सदा तव ॥ २४

स्मरामि तानि सर्वाणि बाल्ये वृत्तानि यानि नौ ।

तानि सर्वाणि जीर्णानि सांप्रतं नौ रणाजिरे ।

किमन्यत्क्रोधलोभाभ्यां युध्यामि त्वाद्य सात्वत ॥ २५

तं तथावादिनं राजन्सात्यकिः प्रत्यभाषत ।

प्रहसन्विशिखांस्तीक्ष्णानुद्यम्य परमास्त्रवित् ॥ २६

नेयं सभा राजपुत्र न चाचार्यनिवेशनम् ।

यत्र क्रीडितमस्माभिस्तदा राजन्समागतैः ॥ २७

दुर्योधन उवाच ।

क सा क्रीडा गतास्माकं बाल्ये वै शिनिपुंगव ।

क च युद्धमिदं भूयः कालो हि दुरतिक्रमः ॥ २८

किं तु नो विद्यते कृत्यं धनेन धनलिप्सया ।

यत्र युध्यामहे सर्वे धनलोभात्समागताः ॥ २९

संजय उवाच ।

तं तथावादिनं तत्र राजानं माधवोऽब्रवीत् ।

एवंवृत्तं सदा क्षत्रं यदन्तीह गुरुनपि ॥ ३०

यदि तेऽहं प्रियो राजञ्जहि मां मा चिरं कृथाः ।

त्वत्कृते सुकृताल्लोकान्गच्छेयं भरतर्षभ ॥ ३१

त्वाम् (for माम्). Ds. ० इह; G1 M1.2 इति (for अभि). Dc1 गच्छस्त्वं (for संघत्से). —^०) K1 त्वा चाहं; Dn1 त्वामहं; Ds अहं त्वां; Ds चाहं त्वां (by transp.); Ds त्वां वाहं. Ds. 7.8 शनि- (for शिनि-). —^०) B1 Ds. 5.7.8 च (for हि). Ds. 5.7.8 G1 M1.2 प्रियतमो (for 'तरो'). —^०) S (Gs missing) ममाहं तव वै तथा.

25 ^०) B1 om. (hapl.) from तानि up to यानि नौ (in 25^०). B1 transp. सर्वाणि and वृत्तानि. D1.2.1. 5.7.8 बाल्य-; Ds वाङ्मये; M1 बाले (for बाल्ये). Ds. 7.8 M1.2 तानि (for यानि). Dc1 Dn2 Ds वै; Dn1 भो; Ds. 5.7.8 ते (for नौ). —^०) K1 संप्राप्तं; B1 lacuna (for सांप्रतं). K1.2.4 D1 तु; B1 D2 G4 नो; B1 Ds. 5 ते (for नौ). —^०) K1 lacuna; D2. 4-8 अद्य (for अन्यत्). Bs -लाभाभ्यां (for -लो'). —^०) Bom. ed. युद्धमेव (for युध्यामि त्वा). K1 त्वाम् (hypermetric) (for त्वा). Dc1 G2 सात्वतं. Dn2 युध्यामस्त्वाव सात्वत (sic).

26 ^०) B Dc1 Dn1 तत्र (for राजन्). —^०) Dn2 Ds सात्वतः (for सात्यकिः). Ds. 5.7.8 सात्वतः प्रत्यपद्यत. —^०) Dn2 प्रसहन् (for प्रहसन्). —^०) K1.2 अभ्य-स्यन् (for उद्यम्य). S (Gs missing) उद्यम्य प (M3-5 'द्वमन्य' रलोकजित्).

27 Before 27, S (Gs missing) ins. सात्यकिः. —^०) B Dc1 Dn1 नाचार्यस्य; Dn2 D1.8.7 न वाचार्य-; S (Gs missing) नैवाचार्य- (for न चा'). —^०) Dn2 Ds. 5.7.8 यद्य (for यत्र). —^०) S (Gs missing) पुरा (for तदा). Ś1 K1-3 बाल्ये; D1 बाल्यं (for

राजन्). Dn1 Ds. 7.8 समागतैः (for समा').

28 ^०) Dn1 कस्मात् (for क सा). —^०) B1.3 Dc1 Dn1 [5] पि (for वै). K1 Ds. 7.8 शनि- (for शिनि-). Ś1 -नंदन (for -पुंगव).

29 D4 om. 29. T G2.3 om. 29-60. —^०) Ś1 (sup. lin. as in text) क तु; K1 B1.5 Dn Ds. 5.8.8 किं तु (for किं तु). G1.1 M मे (for नो). Ds लोके (for कृत्यं). —^०) K1.2 D1 रणेन (for धनेन). K1.3 D1 -लिप्सुना; G1 M1.2 -लिप्सतः; G4 -लिप्सकः (for -लिप्सया). Ds. 8 धनेन चलवस्तुना; M3-5 'न त्विह युध्यतः'. —^०) M3-5 तत्र (for यत्र). K1-3 Dn2 D1-3.5-8 वध्यामहे (for युध्या'). Ś1 K2.3 D1 शशब्दः; K1 यद्वद् (for सर्वे). —^०) D1 समागतान्; Ds 'गमः (for 'गताः).

30 T G2.3 om. 30 (cf. v. 1. 29). B1 om. the ref. —^०) Dn2 Ds. 5.7.8 सात्वतो (for माधवो). —^०) G1.1 M युक्तं (for -वृत्तं). Dn2 महा; D2 G4 M3-5 यदा; D4 तथा; Ds. 7.8 यथा (for सदा). K4 B1-3 Dc1 D1.8 G1 M1.2 क्षात्रं (for क्षत्रं). —^०) K4 Dn2 D1-5 युध्यंतीह; Ds जघंतीह; D1.8 यत्र घंति; G1.1 M युध्यते ह (for यदन्तीह). Ś1 K1-3 Ds कुरुन् (for गु').

31 T G2.3 om. 31 (cf. v. 1. 29). —^०) Dn2 यत्र (for यदि). Dn2 त्वां ते; Ds. 5.7.8 अहं ते (by transp.). —^०) G1 M3.4 मामचिरं; G4 M1.2.5 मा मा चिरं (for मां मा चिरं). —^०) Ds om. 31^०. —^०) Ds आस्थेयं; G1.1 M इच्छेयं (for न'). Ś1 Ks गच्छेयं

या ते शक्तिर्वलं चैव तत्क्षिप्रं मयि दर्शय ।
 नेच्छाम्येतदहं द्रष्टुं मित्राणां व्यसनं महत् ॥ ३२
 इत्येवं व्यक्तमाभाष्य प्रतिभाष्य च सात्यकिः ।
 अभ्ययात्पूर्णमव्यग्रो निरपेक्षो विशां पते ॥ ३३
 तस्मान्तमभिप्रेक्ष्य प्रत्यगृह्णाच्चवात्मजः ।
 शरैश्चावाकिरद्राजञ्चैनेयं तनयस्त्व ॥ ३४

कुरुपुंगव; Ds 'यं पुरुषर्षभ.

32 T G2.3 om. 32 (cf. v. l. 29). —^a) B Dc1 Dn1 D2 G1.4 M यच्च (for चैव). —^b) Ds.6 अपि (for मयि). D3 तत्क्षेत्रमिव दर्शय. —^c) Ś1 K2 अहम्; K3 Dn D2-5.7.8 तद्; G1.4 M एवम् (for एतद्). Ś1 K3 इदं (for अहं).

33 T G2.3 om. 33 (cf. v. l. 29). —^a) K1 युक्तम् (for व्य). —^b) K1 अत्ययात्; Dn2 D2.4.5.7.8 अन्य (for अभ्य). —^c) K1.3 निरपेक्षो (K3 'क्षं'); Dn2 'पेक्षे (for 'पेक्षो). B Dc1 Dn1 दयो ना- (Dc1 Dn1 मा) कुरुतात्मनि.

34 T G2.3 om. 34 (cf. v. l. 29). —^a) B Dc1 Dn1 महाबाहुः; D3 तं संप्रेक्ष्य (for अभि). — Ds om. 34^{ad}. —^b) K2 D1.6 चैवाकिरद्; D1 च विकिरद् (for चावा). D1.3 शरैश्च विकिरंस्तीक्ष्णैः; M3-5 'श्चावात्सुजद्राजा. — After 34, D2 ins. 1299*.

35 T G2.3 om. 35 (cf. v. l. 29). D2 om. 35-37. —^a) G1 प्रवृत्ते (for 'वृत्ते). D3 ततः प्रवृत्ते युद्धे तु. —^b) K1.2.4 D1 'मुह्ययोः; M3-5 'वीरयोः (for 'सिंहयोः). — Ś1 K1-3 D1.7.8 om. (hapl.) 35^{ad}. —^c) M1 कूरयोर् (for क्रुद्ध). D3 भीमं (for घोरं).

36 D2 T G2.3 om. 36 (cf. v. l. 35, 29). —^a) D3 दुर्योधनः सात्यकिं विध्यत् (hypermetric). — D7 om. (hapl.) 36^{ad}-37^a. —^b) Dn2 सात्वतं; D1.5 सरथं; D3 तथैव (for दशभिर्). K4 B Dc1 Dn1 D3 G1.4 M कुपितो दशभिः शरैः.

37 D2 T G2.3 om. 37 (cf. v. l. 35, 29). D7 om. 37^a (cf. v. l. 36). D1.5 om. (hapl.) 37^{ad}. —^b) B Dc1 Dn1 [अ]वाकिरद्; D3 निशितैः; G1.4 M [अ]वनिपं (for दशभिः). Dn2 D3 सत्वरं निशितैः शरैः. — After 37^{ab}, G1.4 M ins.:

1298* दुर्योधनस्ततः क्रुद्धो माधवं नवभिः शरैः ।

— K2 reads twice (without var.) 37^{ad} followed by

ततः प्रवृत्ते युद्धं कुरुमाधवसिंहयोः ।
 अन्योन्यं क्रुद्धयोर्धोरं यथा द्विरदसिंहयोः ॥ ३५
 ततः पूर्णायतोत्सृष्टैः सात्वतं युद्धदुर्मदम् ।
 दुर्योधनः प्रत्यविध्यद्दशभिर्निशितैः शरैः ॥ ३६
 तं सात्यकिः प्रत्यविद्वत्तथैव दशभिः शरैः ।
 पञ्चाशता पुनश्चाजौ त्रिंशता दशभिश्च ह ॥ ३७

C. 7. 8664
B. 7. 109. 28
K. 7. 190. 37

lines 1-2 of 1299*. —^a) B1 चाष्टौ; Dn2 त्वाजौ; G1.4 M चान्यैस् (for चाजौ). Ś1 K1-3 D1 पञ्चाशत्या पुनश्चापि. —^b) Ś1 K3 तथैव; K1.2.4 D1.4.5.7.8 त्रिंशत्या; Dn2 त्रिंशत्या; D3 G1.4 M त्रिंशद्विर् (for 'ता). D3 G1 M1.2 तथा; D1.5.7.8 सह; G1 च नः (for च ह). — After 37, N (Ś1 K3 missing; D2 after 34) ins.:

1299* सात्यकिं तु ततो राजप्रहसंस्तनयस्तव ।
 आकर्णमुकैर्निशितैर्विष्याच त्रिंशता शरैः ।
 ततोऽस्य सगरं चापं क्षुरप्रेण द्विधाकरोत् ।
 सोऽन्यत्कारुण्यमादाय लघुहस्तस्ततो दृढम् ।
 सात्यकिर्यत्सुजचापि शरश्रेणीं सुतस्य ते । [5]
 तामापनन्तीं सहसा शरश्रेणीं जिघांसया ।
 चिच्छेद बहुधा राजंस्तत उच्चुकुशुर्जनाः ।
 सात्यकिं च त्रिसप्तत्या पीडयामास वेगितः ।
 स्वर्णपुङ्खैः शिलाधौतैराकर्णार्णुनिःसृतैः ।

[D2 om. line 1. — (L. 1) Dn2 तं; D3 च (for तु). B Dc1 Dn D3-5.7.8 रणे (for ततो). — (L. 2) B Dc1 D3 'पूँर; Dn1 'पूँ- (for 'मुकैर्). D1.5.7.8 विविधैर् (for निशितैर्). D4.5.7.8 निशितैः (for त्रिंशता). — (L. 3) Ś1 ते तस्य; K1.3 पुनश्च (for ततोऽस्य). B Dc1 Dn1 D3 '[अ]च्छिन्नं (for [अ]करोत्). — (L. 4) D1.5 दृढः (for दृढम्). — (L. 5) K1 निस्सृज्; D1 देसृज्च (for व्यसृज्). D1.2 शरश्रेणीः (for 'श्रेणी). D3 सुतं च (for सुतस्य). — (L. 6) K1.2 D1.7 तम् (for ताम्). — (L. 7) K1 Dn2 D2.4.5.7.8 बहुशो (for 'धा). B1.3.5 Dc1 Dn1 राजा (for राजंश्च). B1 प्रचुकुशुर (for उच्चु). Ś1 K3 ते तदा उच्चुकुशुर्जनाः (for the post. half). — (L. 8) K4 Dc1 Dn1 D1 तु (for च). K4 D2-5.7.8 वेगतः (for वेगितः). — (L. 9) D1.5.7.8 चित्र- (for स्वर्ण-). K1.2 सुवर्णपुङ्खैर्निशितैर् (for the prior half). Ś1 आकर्णार्कभिः; K (K3 missing) D1 'कर्ण-; B2 Dc1 'नार्कभिः; Dn2 'नै पूँ- (for 'नार्क-). Dn1 D4 'निःसृतैः. D3 आकर्णार्कभित्तैः शरैः (for the post. half).]

तस्य संदधतश्चेष्टुन्संहितेषु च कार्ष्णिकम् ।
 अच्छिन्तसात्यकिस्तूर्णं शरैश्चैवाभ्यवीवृषत् ॥ ३८
 स गाढविद्धो व्यथितः प्रत्यपायाद्रथान्तरम् ।
 दुर्योधनो महाराज दाशार्हशरपीडितः ॥ ३९
 समाश्वस्य तु पुत्रस्ते सात्यकिं पुनरभ्ययात् ।
 विसृजन्निषुजालानि युयुधानरथं प्रति ॥ ४०
 तथैव सात्यकिर्वाणान्दुर्योधनरथं प्रति ।
 प्रततं व्यसृजद्राजंस्तत्संकुलमवर्तत ॥ ४१
 तत्रेषुभिः क्षिप्यमाणैः पतद्भिश्च समन्ततः ।

अग्रेष्विव महाकक्षे शब्दः समभवन्महान् ॥ ४२
 तत्राभ्यधिकमालक्ष्य माधवं रथसत्तमम् ।
 क्षिप्रमभ्यपतत्कर्णः परीप्सस्तनयं तव ॥ ४३
 न तु तं मर्षयामास भीमसेनो महाबलः ।
 अभ्ययाच्चरितः कर्णं विसृजन्सायकान्वहून् ॥ ४४
 तस्य कर्णः शितान्वाणान्प्रतिहन्य हसन्निव ।
 धनुः शरांश्च चिच्छेद स्रुतं चाभ्यहनच्छरैः ॥ ४५
 भीमसेनस्तु संकुद्धो गदामादाय पाण्डवः ।
 ध्वजं धनुश्च स्रुतं च संममर्दाहवे रिपोः ॥ ४६

33 T G2.3 om. 38 (cf. v. 1. 29). —^a) D2.4
 ततः (for तस्य). D1.5 संदधतश्च. B (except B1) Dc1
 D1 चेपु (for चेष्टु). —^b) K1.2 स (K2 सं) हतेषु;
 B (except B1) D2 G1 संहि (B1 'ह' तेषु; Dc1 Dn1
 D2.6 संहितेषु (D3.6 'पु'); D1.5.8 M4 संहितेषु (for
 संहितेषु). Dn2 कार्ष्णिकं. D7 शकार्मुकविशोपणं (sic). —^c)
 K2.4 Dc1 Dn1 D1-3 G4 M3-5 अच्छिन्तत्. K1 D8
 सात्यकिं. —^d) G1.4 M शरीरं च (for शरैश्चैव). K1
 [अ]स्यवीवृषत्; B1-3.5 Dc1 Dn1 D5 [अ]भ्यवीवि (D5
 'वृ') धत्; B1 'विध्यत; D3 [अ]वधीदृशं; G4 व्यवी-
 वृषत्; M3-5 [अ]प्यवीवृषत् (for [अ]भ्य).

39 T G2.3 om. 39 (cf. v. 1. 29). —^b) D1.5.
 7.3 प्रत्य (D4 'र्यु') वेयाद् (for 'पायाद्'). K4 रथांतरे.

40 T G2.3 om. 40 (cf. v. 1. 29). —^a) Dn1
 समाश्वस्तस्य; D3-5.7.8 G4 'श्वस्य' (for 'श्वस्य'). —^b)
 S1 अभ्ययात् (for 'यात्'). —^c) K1 शर- (for इषु).

41 T G2.3 om. 41 (cf. v. 1. 29). K4 D1.3 om.
 (hapl.) 41^{ab}. —^a) G1.4 M वाणैर् (for वाणान्).
 —^c) S1 K (K5 missing) Dn2 D1.3.6 सततं; Dc1
 Dn1 प्रतपन्; D4.5 प्रतितं; D7.8 प्रतप्तान् (for प्रततं).
 K4 B3.5 D2 G1 M विसृजन्; G4 व्यसृजन् (for
 'जद्'). G1 M1.2 तस्थौ (for राजंस्). —^d) D2.4.5
 स (for तत्).

42 T G2.3 om. 42 (cf. v. 1. 29). B4 om. 42.
 —^a) D4.5 क्रियमाणैः (for क्षिप्य). —^b) B1-3.5
 Dc1 Dn G1.4 M शरीरेषु; D5 सहस्रशः (for समन्ततः).
 D3 अंतरिक्षासहस्रशः. —^c) S1 K2.3 D7 महाकक्षे;
 Dn2 'कक्षैः; D1 'कक्षे (for 'कक्षे). — After 42,
 N (except B4; S2 K5 missing) ins.:

1300^a तयोः शरसहस्रैश्च संछन्नं वसुधातलम् ।
 अगम्यरूपं च शरैराकाशं समपद्यत ।

[(L. 1) D1.5.7.8 तु (for च). K4 संछिन्नं (for
 संछन्नं).]

43 T G2.3 om. 43 (cf. v. 1. 29). Dn2 om. 43.
 —^a) K4 G1.4 M3.4 अप्यधिकम् (for अभ्य). —^c)
 S1 K1.2 अभ्यापतत् (for अभ्य).

44 T G2.3 om. 44 (cf. v. 1. 29). —^a) Dc1
 Dn1 G1 M (except M1) तन्; D1 सं- (for तं).
 —^c) K1 अत्ययात्; B Dc1 Dn1 G1.4 M सोभ्ययात्
 (for अभ्य). G1 स्वरितं (for 'तः'). —^d) Dn D5
 G4 व्यसृजन् (for वि).

45 T G2.3 om. 45 (cf. v. 1. 29). —^a) D1
 अस्य (for तस्य). G1.4 M शरैर् (for शितान्). —^b)
 B (except B1) Dc1 Dn1 D3.4.6 G1.4 M प्रतिहस्य (for
 'हस्य'). —^d) S1 चाभ्याहन्त; D5 चाभ्यवधीत्.

46 T G2.3 om. 46 (cf. v. 1. 29). —^a) K2
 भीमसेनं. M3-5 च (for तु). —^b) Dn1 om. मादाय.
 D5 G1.4 M वीर्यवान् (for पाण्डवः). —^c) B1 Dn2
 D3.6 धनुर्ध्वजं (by transp.); D5 ध्वजं रथं; G1 M
 रथं धनुश्च. —^d) K1.2 D3-5.7 स (for सं). — After
 46, N (S2 K5 missing) ins.:

1301^a रथचक्रं च कर्णस्य बभञ्ज स महाबलः ।
 भग्नचक्रे रथेऽतिष्ठदकम्पः शैलराडिव ।
 एकचक्रं रथं तस्य तमूहुः सुचिरं हयाः ।
 एकचक्रमिवाकस्य रथं सप्तर्षयोऽमलाः ।

[(L. 1) Dc1 Dn1 गु- (for स). — (L. 2) K1.2
 Dn2 D3-5.7.8 तिष्ठन् (for अतिष्ठद्). S1 K1-3 B1 Dc1

अमृष्यमाणः कर्णस्तु भीमसेनमुध्यत ।
 विविधैरिपुजालैश्च नानाशस्त्रैश्च संयुगे ॥ ४७
 संकुले वर्तमाने तु राजा धर्मसुतोऽब्रवीत् ।
 पाञ्चालानां नरव्याघ्रान्मत्स्यानां च नरर्षभान् ॥ ४८
 ये नः प्राणाः शिरो ये नो ये नो योधा महाबलाः ।
 त एते धार्तराष्ट्रेषु विपक्ताः पुरुषर्षभाः ॥ ४९
 किं तिष्ठत यथा मूढाः सर्वे विगतचेतसः ।
 तत्र गच्छत यत्रैते युध्यन्ते मामका रथाः ॥ ५०
 क्षत्रधर्मं पुरस्कृत्य सर्व एव गतज्वराः ।

जयन्तो वध्यमाना वा गतिमिष्टां गमिष्यथ ॥ ५१
 जित्वा च बहुभिर्यज्ञैर्यक्ष्यध्वं भूरिदक्षिणैः ।
 हता वा देवसाद्भूत्वा लोकान्प्राप्स्यथ पुष्कलान् ॥ ५२
 ते राज्ञा चोदिता वीरा योत्स्यमाना महारथाः ।
 चतुर्धा वाहिनीं कृत्वा त्वरिता द्रोणमभ्ययुः ॥ ५३
 पाञ्चालास्त्वेकतो द्रोणमभ्यघ्नन्बहुभिः शरैः ।
 भीमसेनपुरोगाश्च एकतः पर्यवारयन् ॥ ५४
 आसन्तु पाण्डुपुत्राणां त्रयोऽजिह्वा महारथाः ।
 यमौ च भीमसेनश्च प्राक्रोशन्त धनंजयम् ॥ ५५

C. 7. 8590
B. 7. 109, 64
V. 7. 190. 63

Dn1 Ds-3 अकंष्यः; Dn2 Ds.5 नाकंष्यः; D3 अकंष्य (for अकंष्यः). — (L. 3) Dn2 दस्य (for तरय). — B3 om. (hapl.) line 4. — (L. 4) K2 एकवक्त्रं रथाकंष्य (for the prior half). Dn1 रथे (for रथं). Ds सप्त क्रनो (for सप्तर्षयो). B3 Ds यथा; Dn1 हयाः (for सन्तः). B1.2.4 Dn2 Ds रथं सप्त हया दया; Ds1 रथं सप्त यथा हयाः (for the post. half).]

47 T G2.3 om. 47 (cf. v. l. 29). B3 om. 47. —^a) Dn1 अमृष्यमाणः. B1 च (for तु). —^c) Ds. 6.7.8 तु (for च). —^d) Ds तु (for च). — After 47, B Dc1 Dn1 ins.:

1302* भीमसेनस्तु संकुलः सूतपुत्रमयोध्यत ।

[B2 Dc1 Dn1 च; B3 [s]पि (for तु).]

48 T G2.3 om. 48 (cf. v. l. 29). —^a) B Dc1 Dn1 तस्मिन्स्थिता वर्तमाने; Ds संकुले वर्तमानस्तु. —^b) B1.2 Dc1 Dn1 युद्धे; B3-5 क्रुद्धो; G1 राजन् (for राजा). —^c) Bom. ed. पंचालानां. Dn2 रथ- (for नर-). —^d) K4 Dn2 Ds.1.7.8 G1.4 M म (G1 मा). ल्यांश्चैव (for मत्स्यानां च). B Dc1 Dn1 मत्स्यांश्च पुरुषर्षभान्; Ds मत्स्यानां च महर्षभान्.

49 T G2.3 om. 49 (cf. v. l. 29). —^a) Ds.5 शरा (for शिरो). K1 B3 Dn2 Ds.1.7.8 ये च; Ds भूता (for ये नो). G1.4 M ये नः प्राणार्पि (G1 M 'वि')तारो वै. —^b) K1 om. (hapl.) ये नो. Ds.1.7.8 मे (for नो). B Dc1 Dn1 Ds महारथाः (for 'बलाः'). Ds ये मे योधाः सहस्रशः; G1.4 M ये नो यौ (G1 यो)धाः परंतपाः. —^c) Ds.1.7.8 ते सर्वे; G1.4 M सर्वे ते (for त एते). M1.2 धार्तराष्ट्रे तु (for 'राष्ट्रेषु'). —^d) B2 विशक्ताः; B3.5 Dn2 विसक्ताः; G1 विसक्ताः (for विपक्ताः).

50 T G2.3 om. 50 (cf. v. l. 29). —^a) K1.2 Ds किं तिष्ठथ; Ds किं च तिष्ठ. — Ds om. 50^a-51^b. —^c) S1 K1.2 Ds.3 अत्र (for तत्र). Ds transp. यत्रैते and युध्यन्ते. M1 युध्यते. G1 हताः (for रथाः).

51 T G2.3 om. 51 (cf. v. l. 29). Ds om. 51^{ab} (cf. v. l. 50). —^c) K1 जयन्तो (for जयन्तो). B Dc1 Dn1 Ds.3 च; G1 वो; M3-5 वै (for वा).

52 T G2.3 om. 52 (cf. v. l. 29). —^a) S1 K3 इष्ट्वा (for जित्वा). B Dc1 Dn1 Ds.3.6 G1 M वा; G1 तु (for च). Ds विविधैर् (for बहुभिर्). M1.2 युक्तर (for यज्ञैर्). —^b) K1.2 Ds यक्ष्यध्वं; K1 B Dc1 Dn Ds.6 यज्ञध्वं (for यक्ष्यध्वं). G1.4 M बहु (for भूरि). —^c) Ds.5.8 M3 हत्वा (for हता). Dn2 देवसाद्; Ds G1 M देवता (for देवसाद्). S1 K3 Dn2 Ds.8 भूत्वा (for भूत्वा).

53 T G2.3 om. 53 (cf. v. l. 29). —^a) Ds-3 नोदिता (for चो'). — Dn2 reads 53^{ad} twice. —^c) Dn1 वाहिनी; M1.2 वाहिनी (for वा'). K1 चतुर्विधां वाहिनीं भूत्वा (hypermetric); K1 चतुर्धा वाहिनी भूत्वा; B2 (marg. as in text). 3 श्वा (B1 श्व) त्रधर्मं पुरस्कृत्य; Dn2 (second time) Ds.1.7.8 यमौ च भीमसेनश्च. —^d) Ds त्वरितो (for 'ता').

54 T G2.3 om. 54 (cf. v. l. 29). Dc1 Dn1 om. 54^a-55^b. —^a) Bom. ed. पंचालास्. Ds च (for तु). Ds पंचाला द्रोणमभ्येत्य. —^b) B1 निशितैः (for बहुभिः). —^c) N (except Ds.1.7.8; Dc1 Dn1 om.; S2 K3 missing) [अ]प्येकतः; G1.4 M होकतः (for ए'). G1 च व्यवारयन् (for पर्य').

55 T G2.3 om. 55 (cf. v. l. 29). Dc1 Dn1 om. 55^{ab} (cf. v. l. 54). Ds om. 55. —^b) B3 योधा;

अभिद्रवार्जुन क्षिप्रं कुरुद्रोणादपातुद ।
तत एनं हनिष्यन्ति पाञ्चाला हतरक्षिणम् ॥ ५६
कौरवेयास्ततः पार्थः सहसा समुपाद्रवत् ।
पाञ्चालानेव तु द्रोणो वृष्ट्युन्नपुगेगमान् ॥ ५७
पाञ्चालानां ततो द्रोणोऽप्यकरोत्कदनं महत् ।
यथा कुद्धो रणे शक्रो दानवानां क्षयं पुरा ॥ ५८
द्रोणास्त्रेण महाराज वध्यमानाः परे युधि ।
नात्रसन्त रणे द्रोणात्सच्चवन्तो महारथाः ॥ ५९

वध्यमाना महाराज पाञ्चालाः सृज्यास्तथा ।
द्रोणेमेवाभ्ययुर्युद्धे मोहयन्तो महारथम् ॥ ६०
तेषां तूत्साद्यमानानां पाञ्चालानां समन्ततः ।
अभवद्भैरवो नादो वध्यतां शरशक्तिभिः ॥ ६१
वध्यमानेषु संग्रामे पाञ्चालेषु महात्मना ।
उदीर्यमाणे द्रोणास्त्रे पाण्डवान्भयमाविशत् ॥ ६२
दृष्ट्वाश्चनरसंघानां विपुलं च क्षयं युधि ।
पाण्डवेया महाराज नाशंसुर्विजयं तदा ॥ ६३

Ms-3 गुल्मा (for ३जिह्वा). — After 55^{ab}, Ms reads 60^{ab} for the first time, repeating it in its proper place. — °) D₁. 5. 7. 8 माद्रैयौ (for यमौ च). — °) K₂. 4 B D₁ D₃ G₁. 4 M प्रा (D₃ प्र-; G₁ व्या)क्रो-शस्ते (for 'शन्त').

56 T G₂. 3 om. 56 (cf. v. l. 29). — °) D₂ प्रदुद्राव; D₁ अभिद्रुव (for 'द्रव'). — °) D₁. 8 अवा-नुदः (D₃ 'द' (for अपानुद). — °) B₁ एव; G₁ स्वेनं (for एनं). D₁. 8 हरिष्यन्ति (for हनि'). — °) Bom. ed. पंचाला. S₁ K₁-3 D₁ रक्षणे (for 'रक्षिणम्'). D₁. 8 पांचालाः सर्वतो भृशं.

57 T G₂. 3 om. 57 (cf. v. l. 29). — °) S₁ K₁-3 कौरवेयास्ततः पार्थः; K₄ वेयास्तथा पार्थाः; D₃ वेयास्ततः पार्थः (sic). — °) K₃ समुपाद्रवन्. — D₂ om. 57^{cd}. — °) D₂ पंचालान्. D₃-5. 7. 8 पां (D₁ पं) चाला एव तु (D₃ ते) द्रोणे. — °) D₂-5. 7. 8 -पुरोगमाः (for 'गमान्'). — After 57, D₃ Bom. ed. ins.:

1303* ससृजुस्तरसा वीरान्पञ्चमेऽहनि भारत ।

[Bom. ed. ममर्दुस्तरसा वीराः (for the prior half).]

— On the other hand, after 57, B D₁ D₂ D₃ G₁. 4 M ins. an addl. oolophon [Sub-parvan: B₁. 3 (marg.) द्रोणवध. — Day of Droṇa's Generalship: D₃ पंचमदिवसे. — Adhy. no. (figures, words or both): D₁ 190; D₂ 193; D₃ 83; G₁ M₁. 4 183; G₁ 185; Ms-3 182].

58 T G₂. 3 om. 58 (cf. v. l. 29). Before 58, B D (except D₂) G₁. 4 M ins. संजय उवाच. — °) B₁ पंचालानां; D₃ पांचाल्यानां. G₁. 4 M रणे (for ततो). — °) D₂ स्वकरोत्; D₃ अक'; D₃ व्याक'; D₁. 5. 7. 8 प्राक'; G₁. 4 M चकार (for स्यकरोत्). — °) K₂ G₁. 4 M transp. कुद्धो and शक्रो. — °) D₂ युग[नि]; D₃ महत् (for पुरा).

59 T G₂. 3 om. 59 (cf. v. l. 29). — °) D₃ द्रोणे-नैव (for द्रोणास्त्रेण). — °) D₃ रणे (for परे). — D₃ om. 59^{cd}. — °) D₂ G₁ ना (G₁ अ)त्रसंतो (for 'सन्त').

60 T G₂. 3 om. 60 (cf. v. l. 29). K₄ D₁ D₂ om. (hapl.) 60. Ms reads 60^{ab} for the first time after 55^{ab}. — °) B₁ D₂ D₃. 4 युध्यमाना (for वध्य'). — °) Bom. ed. पंचालाः. — °) D₂ om. from मेवाभ्य up to पाञ्चा (in 62^b). D₃ सर्वे (for युद्धे). D₁ द्रोण-मेवाभ्ययुयुधे (sic). — °) B (except B₁) D₂. 3. 5 योधयंतो (for मोह'). D₂-4. 6-8 G₁ महारथाः (for 'रथम्').

61 D₂ om. 61 (cf. v. l. 60). — °) K₁. 4 B D₁. 2. 4-8 तेषां तु छाद्य (K₁ 'पां' भूत्साद्य-; D₂. 7. 8 'पा-मुत्साद्य-; D₁-8 'पां' तत्साद्यमानानां; D₃ तेषां तु युध्य'; S (G₁ missing) तेषु तूत्साद्यमानेषु. — °) K₄ पंचालानां. S (G₁ missing) पांचालेषु महात्मना (G₁. 4 'नः'). — °) D₃ रथ- (for शर-). K₁-3 B D₁ D₂ वृष्टिभिः (for 'शक्तिभिः').

62 D₂ om. up to पाञ्चा (cf. v. l. 60). — °) Bom. ed. पंचालेषु. D₃ महात्मसु (for 'त्मना'). — °) D₃ द्रोणे तु (for द्रोणास्त्रे). S₁ K₁. 3 उदीर्यमाणद्रोणा-स्त्रात्; D₁. 5 M 'पौद्रोणास्त्रैः'. — °) D₁ D₂ S (G₁ missing) पांचालान् (for पाण्डवान्).

63 °) K₄ सुरथ-; B₁. 2. 6 D₁ D₂ च रथ-; B₂. 4 [अ]श्वरथ-; D₃ स्वसैन्य-; D₃ च नर-; D₁. 3 [अ]श्वगज- (for [अ]श्वनर-). D₂ D₁. 2. 4. 5. 7. 8 -योधानां; D₃ -सिंहानां (for -संधानां). — °) B₁ विपुलं (sic). D₃ सं- (for च). — For 63^{ab}, S (G₁ missing) subst.:

1304* दृष्ट्वा च नरनागाश्वपत्नीनां विपुलं क्षयम् ।

[G₁ M₁. 3 तु रथ- (for च नर-). G₁ -नागाश्च (for -नागाश्च-). T G₂. 3 विपुल- (for 'लं').]

कचिद्रोणो न नः सर्वान्क्षपयेत्परमास्त्रवित् ।
समिद्धः शिशिरापाये दहन्कक्षमिवानलः ॥ ६४
न चैनं संयुगे कश्चित्समर्थः प्रतिवीक्षितुम् ।
न चैनमर्जुनो जातु प्रतियुध्येत धर्मवित् ॥ ६५
त्रस्तान्कुन्तीसुतान्दृष्ट्वा द्रोणसायकपीडितान् ।
मतिमाञ्जश्रेयसे युक्तः केशवोऽर्जुनमब्रवीत् ॥ ६६
नैष युद्धेन संग्रामे जेतुं शक्यः कथंचन ।
अपि वृत्रहणा युद्धे रथयूथपयूथपः ॥ ६७
आस्थीयतां जये योगो धर्ममुत्सृज्य पाण्डव ।

यथा वः संयुगे सर्वान्न हन्याद्रुकमवाहनः ॥ ६८
अथत्थाम्नि हते नैष युध्येदिति मतिर्मम ।
तं हतं संयुगे कश्चिदस्मै शंसतु मानवः ॥ ६९
एतन्नारोचयद्राजन्कुन्तीपुत्रो धनंजयः ।
अन्ये त्वरोचयन्सर्वे कृच्छ्रेण तु युधिष्ठिरः ॥ ७०
ततो भीमो महाबाहुरनीके स्वे महागजम् ।
जघान गदया राजन्नश्चत्थामानमित्युत ॥ ७१
भीमसेनस्तु सत्रीडमुपेत्य द्रोणमाहवे ।
अथत्थामा हत इति शब्दमुच्चैश्चकार ह ॥ ७२

C. 7. 8709
B. 7. 190. 18
K. 7. 191. 15

—^d) D₁.s नाशंसन् (for 'सुर'). K₁.s तव; G₃ तथा (for तदा). B D₁ D₂ D₃ G₁ M₁.s नाशंसंमुज्जयं तदा; D₃ नाशंसंमुस्तदा जयं.

64 ^a) D₁.s किंस्विद् (for कचिद्). —^b) B₁.s D₁ क्षयेत् (for क्षप). —^c) D₁ om. (hapl.) 64^a-65^a. —^e) K₂ संसिद्धः; D₃ S (G₃ missing) विबुद्धः (for समिद्धः). —^d) B₁ D₂ D₃.s-3 दहन् (for दहन्). S₁ कक्षयम् (for कक्षन्). D₃ यथा (for हव).

65 D₁ om. 65 (cf. v. l. 64). —^a) S₁ K₃ B₁ समरे (for संयुगे). —^b) G₃ परि- (for प्रति-). —^c) D₂ राजन् (for जातु). D₃ न चैवमर्जुनो जेतुं. —^d) S₁ (sup. lin. as in text) D₃ विध्येत (for युध्येत). S₁ (before corr.) कर्हिचित्; D₃ धार्मिकः (for धर्मवित्).

66 Before 66, G₁.s M ins. संजयः. —^a) D₃ प्रस्तान् (for त्र). —^b) D₁.s शायकः (for सायक-). G₃ -पिडितान् (for -पी).

67 ^a) D₃ युद्धेन; D₃ कैतेय (for संग्रामे). —^b) D₁.s कथं च नः. D₃ जेतुं शक्येत केनचित्. — B D₁ D₂ T G₁-4 M₁.s ins. after 67^a: D₂ D₃ M₃-s after 67:

1305* सधनुर्धन्विनां श्रेष्ठो देवैरपि सवासवैः ।

न्यस्तशस्त्रस्तु संग्रामे शक्यो हन्तुं भवेच्चृभिः ।

[D₂ om. line 1. — (L. 1) S (G₃ missing) धनुर्धरो द्विजश्रेष्ठो (G₃ 'ह-') (for the prior half). — (L. 2) T G₁-4 M₃-s तु सः; G₁ M₁.s द्विजः (for नृभिः).]

— B D₁ D₂ T G₁-4 M₁.s om. 67^a. —^c) D₃ वृत्रहतो; D₃ जिता (for 'हणा'). D₃ M₃.s संख्ये; M₃ संखे (for युद्धे). D₂ अतिवैत्र ह रणयुद्धे (sic). —^d) K₁ यूथपाः (for 'पः').

68 ^a) D₂.s-3 आस्त्रियं (D₂ 'यै') तां; D₁ आस्त्रियतां; T G₂.s आश्री (G₃ 'श्रि') यतां (for आस्थी). D₂ क्षयो (for जये). S (G₃ missing) यत्नो (for योगो). D₃ आस्त्रियतां जयोद्योगे. —^b) K₂ D₃.s-3 T G₃ पांडवः; B D₁ D₂ D₃.s पांडवाः; G₁ M₁.s वै रणे (for पाण्डव). —^c) S₁ K₃ D₂ यथा नः; K₃ तथा वः; D₂.s-3 G₃ यथा नः; D₃ यथा वः; D₁ स यथा नः (hyper-metric); T G₂.s स यथा (for यथा वः). M₃-s सर्वं (for सर्वान्). —^d) G₂ M₁.s रुम- (for रुक्म-). K₃ G₁ वाहनं (for 'नः').

69 D₁ om. 69. —^a) B₁ वीरे; D₂ D₃ चैष; D₃ नैव; D₃ चैव (for नैष). —^b) D₃ युद्धं नैति; T G₂.s युध्यतीति; G₁.s युध्येतेति; M युध्येतेति (for युध्येदिति). D₂ मे मतिः (for मतिर्मम). B₁ नैष युद्धेन-तिर्मम. —^c) D₂ निहतु (for तं हतं). —^d) T G₂-4 तस्मै (for अस्मै). D₂ G₁ शंसितु (for शंसतु). G₁ M₁.s मानद (M₂ 'दं') (for 'वः').

70 Before 70, G₁ M ins. संजयः. —^a) D₂ D₁-2.3 न रोचयद् (D₃ 'यते'); G₃ नारोचयेद् (for 'यद्'). S (G₃ missing) वाक्यं (for राजन्). —^c) K₁.s G₂ [s] न्वरोचयन् (for त्वरो').

71 ^b) B D₁ D₂ अनीके ते; D₃ 'के स्वं; D₃ 'कैः स्वरैः; D₁.s 'कस्थं; T G₁.s-3 M 'के स्तः; G₃ 'केतु (for 'के स्ते). —^d) D₃ एव च; G₃ इत्युतः (for इत्युत). D₂.s-3 अथत्थामेति विश्रुतं. — After 71, B D₁ D₂ ins.:

1306* परप्रमथनं घोरं मालवस्येन्द्रवर्मनः ।

[cf. 101^a.]

72 D₁.s-3 om. 72^a. —^a) D₃ च (for तु). B₁

C. 7. 8710
B. 7. 180. 17
K. 7. 191. 16

अश्वत्थामेति हि गजः ख्यातो नाम्ना हतोऽभवत् ।
कृत्वा मनसि तं भीमो मिथ्या व्याहृतवांस्तदा ॥ ७३
भीमसेनवचः श्रुत्वा द्रोणस्तत्परमप्रियम् ।
मनसा सन्नगात्रोऽभूद्यथा सैकतमम्भसि ॥ ७४
शङ्कमानः स तन्मिथ्या वीर्यज्ञः स्वसुतस्य वै ।
हतः स इति च श्रुत्वा नैव धैर्यादिकम्पत ॥ ७५
स लब्ध्वा चेतनां द्रोणः क्षणेनैव समाश्वसत् ।
अनुचिन्त्यात्मनः पुत्रमविषममरातिभिः ॥ ७६

D₁ सव्रीडः; S (G₅ missing) सव्रीलम्. — ^δ D₅ अश्वेत्य (for उपेत्य). D₃ अन्नवीत् (for आहवे). — D₁ T G_{3.1} repeat 72nd after 106th. — ^ο D_{4.5.8} गजं हत्वा (for अश्वत्थामा). D₅ तत् (for हत). — ^d D₅ मृशम् (for शब्दम्). D₂ D_{2.4.5.7.8} सः (for ह). D₁ (second time) द्रोणं व्यक्तमथाव्रीत्.

73 ^a K₁ D₁ lacuna; D₅ M₃₋₅ च (for हि). — ^δ D₄ [s]भवन्; D₅ भवेत्. — ^ο T G₂₋₁ तद् (for तं). — ^d D₃ मिथ्या (for मिथ्या). D₅ S (G₅ missing) मिथ्योदाहृतवांस्तदा (G₃ 'था).

74 ^δ B₁ G₁ M_{1.2} तु परम्; D_{4.5.7.8} सुमहद् (for तत्परम्). B D₂ D_{2.3.6} परमाप्रियं (for 'मप्रियम्). — ^ο D₅ मात्रो (for 'गात्रो). S (G₅ missing) सहसासन्नकण्ठोभूद्.

75 ^ο T G₂₋₁ तु; G₁ M_{1.2} च (for स). D_{4.5} तं (for तन्). — ^δ T G_{3.4} स (for स्व). D₅ च (for वै). G₂ ततो वायुसुतस्य वै. — ^ο K_{1.2} स्म; B₁ च (for स). G₂ तत् (for च). — ^d D₄₋₃ न च (for नैव). D₃ व्यकंपत.

76 ^ο D₂ M₃₋₅ स लब्धचेतनो द्रोणः. — ^δ D₂ D_{3.4} T G₅ समाश्वसन्. — ^ο G₁ M_{1.2} स विधिं (for अनु).

77 ^a G₃ ता (sic) (for स). — ^δ D₅ G_{4.5} M_{3.5} जिवांशुं (for 'सुर). D₂ पुत्रम् (for मृत्युम्). — ^ο K₂ D₅ D₂ D_{1.3-5.7} G₂ अवाकिरन् (for 'किरन्). K₁ सहस्राणां (for 'क्षेण). — ^d T G_{3.4} तीव्राणां (for तीक्ष्णानां).

78 B D₅ D₂ D₁ read 78-121 after 7. 165. 26. — ^a Ś₁ K₂ D_{1.2} ते वै; D_{4.7.8} तं ते; D₅ ततो (for तं वै). B D₅ D₂ D₁ D₅ S (G₅ missing) तं विंशतिः सहस्राणि. — ^δ K₁ B D₅ पंचालानां. K_{1.2} D₅ D₅

स पार्षतमभिद्रुत्य जिघांसुर्मृत्युमात्मनः ।
अवाकिरत्सहस्रेण तीक्ष्णानां कङ्कपत्रिणाम् ॥ ७७
तं वै विंशतिसाहस्राः पाञ्चालानां नरर्षभाः ।
तथा चरन्तं संग्रामे सर्वतो व्यकिरञ्जरैः ॥ ७८
ततः प्रादुष्करो द्रोणो ब्राह्ममन्त्रं परंतपः ।
वधाय तेषां शूराणां पाञ्चालानामपि ॥ ७९
ततो व्यरोचत द्रोणो विनिघ्नन्सर्वसोमकान् ।
शिरांस्यपातयन्नापि पाञ्चालानां महामृधे ।

S (G₅ missing) महारथाः (M₃₋₅ 'धं); D₃ रथर्षभाः (for नर'). — ^d K_{1.2.4} D_{1.2.4.5.7.8} व्याकिरञ्जः; K₃ B D₅ D₂ D₃ वा (D₃ वि कि' (for व्यकि'). D₅ S (G₅ missing) सर्वतः पर्यवारयन्. — After 78, N (Ś₂ K₅ missing) ins.:

1307* तैः शरैरावृतं द्रोणं नापश्याम महारथम् ।

भास्करं जलदै रुद्धं वर्षास्त्रिव विशां पते ।

विधूय तान्वाणगणान्पाञ्चालानां महारथः ।

[(L. 1) Ś₁ K (K₅ missing) D₁ तं शरैः; B शरैः स्तैः (by transp.); D₅ तैः परैः. B आचितं (for आवृतं). D₂ तैः शरेणावृतं द्रोणं (sic) (for the prior half). — (L. 2) D₂ D_{2.4.5.7.8} यद् (for रुद्धं). D₅ भास्करं जलदाहृतं (for the prior half). D₅ नमस्तले (for विशां पते). — (L. 3) D₅ धूयमानान् (for विधूय तान्). D₁ om. the post. half. K₃ B पंचालानां. K_{1.2} D₅ महारथाः; D₂ D_{2.4.5.8} अपरितः (for महारथः).]

79 For the sequence in B D₅ D₂ D₁, cf. v. l. 78. D₁ om. 79^a-80^a. — ^a Ś₁ K (K₅ missing) B D_{1.3} प्रादुश्चक्रे ततो द्रोणो; D_{5.6} ततः प्रादुश्चकारोयं (D₅ 'राथ). — ^δ D₂ om. from परंतपः up to पाञ्चालानां (in 80^d). D₂ D₃ परंतपः. D₄ ब्रह्माक्षं परमं तपः; D₅ ब्राह्म्यं द्रोणो महारथः. — ^ο D_{4.5.8} शत्रूणां (for शूराणां). — ^d Bom. ed. पंचालानाम्. K₄ जमर्षतः.

80 For the sequence in B D₅ D₂ D₁, cf. v. l. 78. D₂ om. up to पाञ्चालानां; D₁ om. 80^a (for both, cf. v. l. 79). G₁ M om. 80-82. — ^δ Ś₁ K₃ न्य-वधीत्; D₅ [s]न्यहनत्; T G₂₋₁ न्यहनत् (for विनिघ्नन्). D₄₋₈ सैनिकान् (for 'सोमकान्). — ^ο K_{1.2} [अ]पातयंश्; D₅ पातयंश्; D₁ पातयच् (for अपात'). D₂ शिरांसि पातयामास. — ^d B D₅ पंचालानां. D₃ महाहवे; G₃ 'स्मनां (for 'मृधे). — ^ο K₁ D₅

तथैव परिधाकारान्वाहून्कनकभूषणान् ॥ ८०
 ते वध्यमानाः समरे भारद्वाजेन पार्थिवाः ।
 मेदिन्यामन्वकीर्यन्त वातनुन्ना इव द्रुमाः ॥ ८१
 कुञ्जराणां च पततां हयौघानां च भारत ।
 अगम्यरूपा पृथिवी मांसशोणितकर्दमा ॥ ८२
 हत्वा विंशतिसाहस्रान्पञ्चालानां रथव्रजान् ।
 अतिष्ठदाहवे द्रोणो विधूमोऽग्निरिव ज्वलन् ॥ ८३
 तथैव च पुनः क्रुद्धो भारद्वाजः प्रतापवान् ।
 वसुदानस्य भल्लेन शिरः कायादपाहरत् ॥ ८४
 पुनः पञ्चशतान्मत्स्यान्पट्टसहस्रांश्च सृजयान् ।
 हस्तिनामयुतं हत्वा जघानाश्चायुतं पुनः ॥ ८५

क्षत्रियाणामभावाय दृष्ट्वा द्रोणमवस्थितम् ।
 ऋषयोऽभ्यागमस्तूर्णं हव्यवाहपुरोगमाः ॥ ८६
 विश्वामित्रो जमदग्निर्भरद्वाजोऽथ गौतमः ।
 वसिष्ठः कश्यपोऽत्रिश्च ब्रह्मलोकं निनीपवः ॥ ८७
 सिकताः पृथ्वयो गर्गा बालखिल्या मरीचिपाः ।
 भृगवोऽङ्गिरसश्चैव सूक्ष्माश्चान्ये महर्षयः ॥ ८८
 त एनमनुवन्सर्वे द्रोणमाहवशोभिनम् ।
 अधर्मतः कृतं युद्धं समयो निधनस्य ते ॥ ८९
 न्यस्यायुधं रणे द्रोण समेत्यास्मानवस्थितान् ।
 नातः क्रूरतरं कर्म पुनः कर्तुं त्वमर्हसि ॥ ९०
 वेदवेदाङ्गविदुषः सत्यधर्मपरस्य च ।

C. 7. 8731
B. 7. 190. 37
K. 7. 161. 26

बहून् (for वा°). Ds परिध- (for कनक-).

81 For the sequence in B Dc1 Dn1, cf. v. l. 78. G1 M om. 81 (cf. v. l. 80). — °) Ds पृथिव्याम् (for मेदिन्याम्).

82 For the sequence in B Dc1 Dn1, cf. v. l. 78. G1 M om. 82 (cf. v. l. 80). — °) Ds तु (for च). — °) D1 महौघानां (for हयौ°). Dn2 D2.4.5. 7.8 T G2-1 पार्थिव (for भारत).

83 For the sequence in B Dc1 Dn1, cf. v. l. 78. — °) D1 स हत्वा (for हत्वा). D1 -साहस्राः; S (G5 missing) -साहस्रं (for 'स्रान्). — °) Bom. ed. पंचालानां. B Dc1 Dn1 D4-8 महारथाः (Dn1 Ds 'थान्); S (G5 missing) रथव्रजं (for 'व्रजान्).

84 For the sequence in B Dc1 Dn1, cf. v. l. 78. K3 om. 84^{ab}. — °) Ds स (for च). Ds क्रोधाद् (for क्रुद्धो). — °) Ds अपातुदत्; Ds तयत् (for 'हरत्).

85 For the sequence in B Dc1 Dn1, cf. v. l. 78. — °) Dn2 D2.4.5.7.8 ततः; G3 lacuna (for पुनः). K1.3 Ds पंचाशतान्; B Dc1 Dn1 पंचदशान् (for 'शतान्). T G2 मात्स्यान्. — °) K1 Ds -साह-स्रांश्च. — °) Dn2 Ds जघानाश्चापुनः पुनः.

86 For the sequence in B Dc1 Dn1, cf. v. l. 78. — °) D3 T G2 उपस्थितं (for जव°). — °) D2 ऋषयौ (for ऋषयो). M1.2 [S]भ्यागमत्; Bom. ed.

'गतात् (for 'गमंस्). T G1-4 M2-5 तत्र; M1.2 सर्वे (for तूर्ण).

87 For the sequence in B Dc1 Dn1, cf. v. l. 78. — °) S1 K3 जामदग्न्यो; K1.2 D3 G2 जामदग्निर- Ds जमदग्निर्भरद्वाजो. — °) K1 B Dc1 Dn1 D2.3 T G1-4 M1.5 भरद्वाजो; Ds (marg. also as in text) विश्वामित्रो. D1 गोमतः (for गौतमः). — °) K1 Dn2 Ds वसिष्ठः. S (except G2; G5 missing) काश्यपो. — °) Dn1 Ds ब्रह्मलोकं (for 'लोकं).

88 For the sequence in B Dc1 Dn1, cf. v. l. 78. Ds om. 88^{ab}. — °) K1 पृथ्वयो; K1 D1 G1 प्रथ्वयो (for पृ°). T G1 गर्गा (for गर्गा). Dn1 सिकतामन्स्यो रंगा (sic); D2 शैकटाश्चात्र यो[यि] गर्गा; D1.5 शैकटा- (Ds 'टा)ष्टपयो गर्गा; Ds सिकतप्रथ्वयो गर्गा; D1 'ताष्टप्रथ- गमां (sic). — °) K1 Dn2 D1-3.5 T G2-4 बालखिल्या; B Dc1 Dn1 D4.7 बालखिल्या; Ds बालखिल्य- (for बालखिल्या). Ds मरीचयः (for 'चिपाः). K1 बाल्य- खिल्याः मरीचपाः. — °) Ds ब्रह्मलोकं निनीपवः (= 87^d).

89 For the sequence in B Dc1 Dn1, cf. v. l. 78. — °) Ds एवम् (for एनम्). M2-5 ऋषयः (for ऋषवन्). — °) Ds M1 -शोभितं (for 'नम्).

90 For the sequence in B Dc1 Dn1, cf. v. l. 78. — °) Ds नास्य युद्धं (for न्यस्यायुधं). S1 K3 इह द्रोणः; Ds द्रोण रणे (by transp.). — °) B Dn1 समीक्षः; Dc1 Ds समीक्ष्य; Dn2 D2-2.7.8 S (G5 miss- ing) ससेहि (for 'स्य). K1.2.4 D (except Dc1 Dn1)

C. 7. 6731
B. 7. 190. 37
K. 7. 191. 36

ब्राह्मणस्य विशेषेण तवैतन्नोपपद्यते ॥ ९१
न्यस्यायुधममोघेपो तिष्ठ वर्तमनि शाश्वते ।
परिपूर्णश्च कालस्ते वस्तुं लोकेऽद्य मानुषे ॥ ९२
इति तेषां वचः श्रुत्वा भीमसेनवचश्च तत् ।
धृष्टद्युम्नं च संप्रेक्ष्य रणे स विमनाभवत् ॥ ९३
स दह्यमानो व्यथितः कुन्तीपुत्रं युधिष्ठिरम् ।
अहतं वा हतं वेति पप्रच्छ सुतमात्मनः ॥ ९४
स्थिरा बुद्धिर्हि द्रोणस्य न पार्थो वक्ष्यतेऽनुत्तम् ।

त्रयाणामपि लोकानामैश्वर्यार्थं कथंचन ॥ ९५
तस्मात्तं परिपप्रच्छ नान्यं कंचिद्विशेषतः ।
तस्मिंस्तस्य हि सत्याशा बाल्यात्प्रभृति पाण्डवे ॥ ९६
ततो निष्पाण्डवाधुर्वी करिष्यन्तं युधां पतिम् ।
द्रोणं ज्ञात्वा धर्मराजं गोविन्दो व्यथितोऽब्रवीत् ॥ ९७
यद्यर्धदिवसं द्रोणो युध्यते मन्युमास्थितः ।
सत्यं ब्रवीमि ते सेना विनाशं समुपैष्यति ॥ ९८
स भवांस्त्रातु नो द्रोणात्सत्याज्यायोऽनुत्तं भवेत् ।

S (G₅ missing) इह (for अव-). — °) T M_{1.2} कूर-
तमं (for 'तर'). — °) Ś₁ K (K₅ missing) D₁ transp.
कतुं and त्वम्. B D₀₁ D₀₁ इहाहंसि (for त्वम्).

91 For the sequence in B D₀₁ D₀₁, cf. v. 1.
78. G₃ om. 91-92; T₂ reads the same on marg.
— °) K₂ B D₀₁ D₀₁ D₃ G_{1.2.4} M -रतस्य ते (K₂ G₂
च); K₄ D₀₂ D_{1.2.4.5.7.8} T -परस्य ते (K₄ D₁ हि)
(for 'स च'). — °) D_{1.7.8} न वै तत्र; D₅ न च
त्वयि; M₃₋₅ तथैतन् (for तवै).

92 For the sequence in B D₀₁ D₀₁, cf. v. 1.
78. G₃ om. 92 (cf. v. 1. 91). T₂ reads 92 on
marg. — °) B D₀₁ D₀₁ त्यज (for न्यस्य). K₁ D₀₁
D_{1.5.7} अमोघेपु; D₀₂ 'ह्येपुम्' (sic) (for 'वेपो'). — °)
D₀₂ D_{2.4.5.7.8} T₂ तु; G₂ [s]द्य (for च). Ś₁ ते
कालो (by transp.); G₂ कालोस्तु. G₄ परिपूर्णश्च-
लेद्य. — After 92, B D₀₁ D₀₁ D_{3.5.6} ins.:

1308* ब्रह्मर्षेण त्वया दग्धा अनस्रज्ञा नरा भुवि ।
यदेतदीदृशं विप्र कृतं कर्म न साधु तत् ।
न्यस्यायुधं रणे क्षिप्रं द्रोण मा त्वं चिरं कृथाः ।
मा पापिष्ठतरं कर्म करिष्यसि पुनर्द्विज ।

[(L. 1) D_{3.6} न शस्त्रज्ञा (for अन°). — (L. 2)
D_{3.6} विद्वन् (for विप्र). D₅ साधुवत् (for साधु तत्).
— (L. 3) D₀₂ क्षमं; Bom. ed. विप्र (for क्षिप्र°).]

93 For the sequence in B D₀₁ D₀₁, cf. v. 1.
78. — °) Ś₁ K₁₋₃ D₁ तथा; D₅ च सः (for च तत्).
— °) K₁ D₁ स विमनस्. Ś₁ K₃ अभूत्; K_{1.2.4} D₁
त्वभूत्; D₅ ह्यभूत् (for [अ]भवत्).

94 For the sequence in B D₀₁ D₀₁, cf. v. 1.
78. — °) K₁ B D₀₁ D₀₁ D_{2.5-8} G_{1.2} M_{1.2} संद-
(B D₀₁ 'दि') ह्यमानो (for स दह्य°). — °) D₅ यश्-

स्विनं (for युधिष्ठिरम्). — After 94^{ab}, D₃ ins.:

1309* युधिष्ठिरमुपागम्य द्रोणो वचनमब्रवीत् ।

सत्यं कथय राजेन्द्र यदि जीवति मे सुतः ।

— °) B D₀₁ D₀₁ S (G₅ missing) वापि; D₀₂ D_{4.6}
चेति (for वेति). D₅ हतं वा अहतं वेति.

95 For the sequence in B D₀₁ D₀₁, cf. v. 1.
78. G₁ M om. 95-96. — °) D₃ ऐश्वर्याच्च (for
'यार्थं').

96 For the sequence in B D₀₁ D₀₁, cf. v. 1.
78. G₁ M om. 96 (cf. v. 1. 95). — °) D_{5.6}
तस्मात्त्वं (D₆ 'त्वां') परिपृच्छस्व (D₆ 'च्छामि'). — °) D₃
नान्यत् (for नान्यं). D_{3-6.8} किंचिद् (for कं). K₄
B D₀₁ D₀₁ D_{1.2.4.5} T G₂₋₄ द्विजर्षभः (D₀₁ 'भ') (for
विशेषतः). — °) T G_{3.4} विश्वासो (for सत्याशा).

97 For the sequence in B D₀₁ D₀₁, cf. v. 1.
78. — °) G₂ तस्मान् (for ततो). D₃ S (except
G₂; G₅ missing) निष्पाण्डवीम्. D_{7.8} पृथ्वीं (for उर्वीं).
— °) D₃ करिष्यति युधां पतिः. — °) K₁ च***;
K₂ तु प्रशजं (for धर्मराजं).

98 For the sequence in B D₀₁ D₀₁, cf. v. 1.
78. M₃ om. 98^a-99^b. — °) K₂ om. (hapl.) from
द्रोणो up to स्त्रातु नो (in 99^a). D₃ यद्यर्धं. M₅
-दिवसे. Ś₁ K₁₋₃ अद्याधदि (K₁ 'धं दि') वसे द्रोणो (K₂
om. द्रोणो). — °) D_{7.8} युध्यते मन्युनाश्रितः. — °)
Ś₁ K_{1.3} D_{3.7.8} सेना ते (by transp.); T₂ (before
corr.) G_{3.4} योधानां; G₁ M_{1.2} योधानां; G₂ साधूनां;
M_{4.5} साधूनां. — °) K_{1.4} D₀₂ D_{1.4-6} समुपैष्यति;
D₇ 'पश्यसि. D₃ विनाशमुपयास्यति; T₂ (before corr.)
G_{3.4} नरः कस्तमुपैष्यति; G_{1.2} M_{1.2.4.5} न नोर्कस्त (G₁
नोर्कस्त)मुपैष्यति.

अनृतं जीवितस्यार्थे वदन्न स्पृश्यतेऽनृतैः ॥ ९९
तयोः संवदतोरेवं भीमसेनोऽब्रवीदिदम् ।
श्रुत्वैव तं महाराज वधोपायं महात्मनः ॥ १००
गाहमानस्य ते सेनां मालवस्येन्द्रवर्मणः ।
अश्वत्थामेति विख्यातो गजः शक्रगजोपमः ॥ १०१
निहतो युधि विक्रम्य ततोऽहं द्रोणमब्रुवम् ।
अश्वत्थामा हतो ब्रह्मन्निवर्तस्वाहादिति ॥ १०२
नूनं नाश्रद्धद्राक्यमेष मे पुरुषर्षभः ।

स त्वं गोविन्दवाक्यानि मानयस्व जयैषिणः ॥ १०३
द्रोणाय निहतं शंस राजञ्चारद्वतीसुतम् ।
त्वयोक्तो नैष युध्येत जातु राजद्विजर्षभः ।
सत्यवान् हि नृलोकेऽस्मिन्भवान्ख्यातो जनाधिपः ॥ १०४
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा कृष्णवाक्यप्रचोदितः ।
भावित्वाच्च महाराज वक्तुं समुपचक्रमे ॥ १०५
तमतथ्यमये मयो जये सक्तो युधिष्ठिरः ।
अव्यक्तमब्रवीद्राजन्हतः कुञ्जर इत्युत ॥ १०६

C. 7. 8750
B. 7. 190. 53
K. 7. 191. 54

99 For the sequence in B Dc1 Dn1, cf. v. l. 78. K2 om. up to स्नातु नोः; M3 om. 99^{ab} (for both, cf. v. l. 98). —^b) D2 सत्याचार्योः; D2 सत्यजो यो (for सत्याज्यायो). K1 वचः; Dn2 वदन्; D2.4.5 वदेत् (for भवेत्). D1.8 त्वज सत्याध्रि (D2 नृ)वं वचः; S (G2 missing) सर्वज्ञादरिमर्दनात्. —^c) K1 जीवितस्यार्थं. —^d) K4 B Dc1 Dn D2 G2.4 स्पृश्यते (for स्पृश्यते). T G2.4 M3 (inf. lin.) त्वत्वं (for अनृतैः). G1 M1.2 वदन्स्पृ (G1 पदं स्पृ)श्ये (M2 इयै)त नैनया- [? सा]; Ms. 4.5 (orig.) वदन्नस्पृश्यतेनसा. — After 99, D1.8 ins.:

1310^a कामिनीषु विवाहेषु गवामर्थे तथा धने ।

ब्राह्मणाभ्यवपत्तौ च अनृते नास्ति पातकम् ।

[= (var.) Manu. 8. 112.]

100 For the sequence in B Dc1 Dn1, cf. v. l. 78. —^a) D2.3 G1 M एव (for एवं). —^{ad}) K1. 2.4 D1.5 एनं तं (D2 त्वं; D2 च); Dn2 D1.3 G1 M1.2 एवैतं; T G2.4 त्वेतन् (for एव तं). K2 transp. महाराज and वधोपायं.

101 For the sequence in B Dc1 Dn1, cf. v. l. 78. —^a) Ś1 K3 तं (for ते). —^b) T G1 M मालवस्य. K1 कर्मणः (for चर्मणः). D1.3 आचार्यस्येन्द्रकर्मणः. —^c) Ś1 K3 Dn2 D2.3 विक्रातो (for विख्यातो).

102 For the sequence in B Dc1 Dn1, cf. v. l. 78. —^a) D1.5 राजेन्द्र (for विक्रम्य). —^b) K1.2 अप्रियं; M1.2.5 अत्रवं (for अब्रुवम्). —^d) D3 इतः (for इति).

103 For the sequence in B Dc1 Dn1, cf. v. l. 78. —^a) Ś1 K3 Dn2 G2 न श्रद्धा (Ś1 धा)द्; D1.3 न श्रद्धे; T G2.4 नाश्रद्धाद् (for धद्). G2 युक्तम्

(for वाक्यम्). —^b) D1.3 एवं; G1 M1.2 एतन् (for एव). Dn1 D2.3 G1.2.4 M1.2 पुरुषर्षभ. —^c) D2 सत्वं (for स त्वं). Ś1 K (K2 missing) D1.3 त्वं कृष्णस्य; D2.3 स गोविन्दस्य (for त्वं गोविन्द). D1 स त्वं गोविन्दस्य वाचो. —^d) Ś1 K1.3 मानयित्वा; D2 यंश्च; D2 वस्य; D2 यंस्तज् (for यस्त्व).

104 For the sequence in B Dc1 Dn1, cf. v. l. 78. —^a) K2.4 D2.3 S (G2 missing) त्वयोक्ते (for क्तो). K1 Dn2 D2.3.6 G1 M1.2 नैव (for नैष). —^d) Ś1 K1.3 राजज्ञानु (by transp.); D1.5 ननु राजन्. —^e) D1.5 T G2.4 M3.5 सत्यवान् (for वान्). K4 B Dc1 Dn D2.3 द्वित्रि; D1.7.8 T G2.4 M3.5 इति (for द्वि नृ). D3 [s]ति (for स्मिन्). K1.2 सत्यवा (K2 त्वं वा)ग्यिनृलोकेस्मिन्; G2 वाम्निर्नृलो- [नृलो]केस्मिन्. —^f) D1.3 तव ख्यातिर् (for भवान्ख्यातो). D2 द्विजर्षभ (for जनाधिप).

105 For the sequence in B Dc1 Dn1, cf. v. l. 78. —^b) D3 तस्य (for कृष्ण). D2 प्रचोदितः; D2.3 प्रचोदितः (for प्रचो). —^c) Ś1 K3 भवितव्यान्; K1.2 D2.7 भावितव्यान्; D3 स वै तथा (for भावित्वाच्च). — D1 om. 105^d-107^d.

106 For the sequence in B Dc1 Dn1, cf. v. l. 78. D1 om. 106 (cf. v. l. 105). —^a) K1.2.4 D1 M2.5 तद्वच्यः; T G2.4 सोप्यतथ्यः (for तम). K1 भयो (for मयो). D3 ततोत्यर्थे जये मयो. —^b) K1 D2.6 जये शक्तौ; D3 जयासक्तो. — After 106^{ad}, D1 T G2.4 repeat 72^{ad}. —^c) Dn2 D1.5 वाक्यं (for राजन्). G2 अश्वत्थामा हतो राजन्. — D4 om. (hapl.) 106^d-108^d.

107 For the sequence in B Dc1 Dn1, cf. v. l. 78. D1 om. 107^a (cf. v. l. 105). D4 om. 107 (cf.

C. 7. 8150
B. 7. 190. 56
K. 7. 191. 55

तस्य पूर्व रथः पृथ्व्याश्चतुरङ्गुल उत्तरः ।
वभूवैवं तु तेनोक्ते तस्य बाहोःस्पृशन्महीम् ॥ १०७
युधिष्ठिरात्तु तद्वाक्यं श्रुत्वा द्रोणो महारथः ।
पुत्रव्यसनसंतप्तो निराशो जीवितेऽभवत् ॥ १०८
आगस्कृतमिवात्मानं पाण्डवानां महात्मनाम् ।
ऋषिवाक्यं च मन्वानः श्रुत्वा च निहतं सुतम् ॥ १०९
विचेताः परमोद्विग्नो दृष्टद्युम्नमवेक्ष्य च ।
योद्धुं नाशकुवद्राज्यथापूर्वमरिंदम ॥ ११०

v. l. 106). —^a) Dn² om. (hapl.) from पृथ्व्या up to महारथः (in 108^b). K_{1.2} B Dc₁ Dn₁ D_{3.5}. a. s. M_{1.2} पृथ्व्या (for पृथ्व्याश्च). —^b) T G_{2.3} M_{1.2} अङ्गुलम्. D₁ उन्नतः (for उत्तरः). B Dc₁ Dn₁ चतुरङ्गुलमुन्नतः; D_{2.3.5} G_{1.2} M₃₋₅ मुन्नतः (G₁ M₂₋₅ 'तं'); D₁ महानङ्गुल उत्तमः. —^c) G₁ M एव (for एवं). D₁ च (for तु). Ś₁ (marg. as in text) K₃ ततो नक्तं (for तु तेनोक्ते). —^d) G_{1.3.4} M_{1.2.4} बाहोःस्पृशन्महीम्.

108 For the sequence in B Dc₁ Dn₁, cf. v. l. 78. D₁ om. 108^a (cf. v. l. 106). Dn² om. 108^{ab} (cf. v. l. 107). G₁ M om. 108. —^a) D₅ युधिष्ठिरस्य तद्वाक्यं. — D₁ om. 108^c-113^d. —^e) Ś₁ K_{2.3} संप्राप्तो; G₂ संसक्तो (for संतप्तो).

109 For the sequence in B Dc₁ Dn₁, cf. v. l. 78. D₁ om. 109 (cf. v. l. 108). —^b) Ś₁ K₁₋₃ अमन्यत महात्मनो (K_{1.2} 'मना:'); M₃₋₅ मेने पाण्डवनन्दनः. —^c) B Dc₁ Dn S (except M₃₋₅; G₅ missing) वाक्येन (for वाक्यं च). —^d) D_{3.5} S (G₅ missing) वि (for च).

110 For the sequence in B Dc₁ Dn₁, cf. v. l. 78. D₁ om. 110 (cf. v. l. 108). K₂ reads 110^a-111^b twice. —^a) S (G₅ missing) विचेताः समरोद्विग्नो (G₂ 'रे वीरो'). —^b) T G₂₋₄ अवैक्षत (for अवैक्ष्य च). K_{1.2} (both times) ह (for च). —^c) K₁ M₁₋₃ नाशकुवन्. —^d) K₁ Dn₂ D_{1.2.4.5} T G₁₋₄ M_{1.2} अरिंदमः. — After 110, B Dc₁ Dn₁ D₂₋₅ S (G₅ missing) Editions ins. an addl. colophon [Sub-parvan: D₅ द्रोणवध. — Adhy. name: Bom. ed. युधिष्ठिरासत्यकथनं. — Adhy. no. (figures, words or both): Dn₁ 192; D₂ 194; D₃ 84; T G_{2.3} 185; G₁ M_{1.2} 184; G₄ 186; M₃₋₅ 183].

111 For the sequence in B Dc₁ Dn₁, cf. v. l.

तं दृष्ट्वा परमोद्विग्नं शोकोपहतचेतसम् ।
पाञ्चालराजस्य सुतो दृष्टद्युम्नः समाद्रवत् ॥ १११
य इष्ट्वा मनुजेन्द्रेण द्रुपदेन महामखे ।
लब्धो द्रोणविनाशाय समिद्धाद्वयवाहनात् ॥ ११२
स धनुर्जैत्रमादाय घोरं जलदनिखनम् ।
दृढज्यमजरं दिव्यं शरांश्चाशीविषोपमान् ॥ ११३
संदधे कर्णके तस्मिञ्शरमाशीविषोपमम् ।
द्रोणं जिघांसुः पाञ्चाल्यो महाज्वालमिवानलम् ॥ ११४

78. For the repetition in K₂, cf. v. l. 110. D₁ om. 111 (cf. v. l. 108). Before 111, MSS. ins. संजय उवाच. —^a) M_{3.5} समरोद्विग्नं (for परमो). —^b) S (G₅ missing) शोकोत्तरमचेतनं. —^c) Dn₂ D₂ पंचालः (for पाञ्चालः). D₅ पांचालराजपुत्रस्तु. —^d) D₁ दृष्टद्युम्नमाद्रवत् (sic); D₅ दृष्टद्युम्नोभ्युपा.

112 For the incident, cf. l. 155. 38. With 112, cf. 7. 86. 49; 159. 3. For the sequence in B Dc₁ Dn₁, cf. v. l. 78. D₁ om. 112 (cf. v. l. 108). —^a) D₂ यद् (for य). D₄ इष्ट्वा; D₅ इष्ट्वा (for इष्ट्वा). G₂ यं दृष्ट्वा द्रुपदेन्द्रेण. —^b) G₁ M_{1.2} महात्मना (for 'मखे'). —^c) M₄ सखङ्गो द्रोणनाशाय. —^d) Dn₁ समिद्धो (for 'द्वाद्'). S (G₅ missing) समिद्धेसौ परंतपः (G₁ M_{1.2} 'प').

113 For the sequence in B Dc₁ Dn₁, cf. v. l. 78. D_{1.7} om. 113 (for D₁, cf. v. l. 108). —^a) D₅ धनुर्जैत्रं समादाय. —^b) Some MSS. निःस्वनं. —^c) D₃ घोरं (for दिव्यं). —^d) D₅ विषोपमं. B Dc₁ Dn₁ G₁ M_{1.2} शरं चाशीविषोपमं.

114 For the sequence in B Dc₁ Dn₁, cf. v. l. 78. —^a) D₃₋₅ S (G₅ missing) संदधत् (for 'धे'). D₅ कर्णकं. Ś₁ K (K₅ missing) D₁ तत्र (for तस्मिन्). —^b) D₅ घोरम् (for शरम्). D₄ आसीद् (for आशी). K₁ शरमासीविसोपमं (sic); B Dc₁ Dn₁ ततस्त्वमनलोपमं; G₁ M_{1.2} ज्वलंतमनलोपमं. —^d) S (G₅ missing) गतः (for महा).

115 For the sequence in B Dc₁ Dn₁, cf. v. l. 78. —^a) D_{1.5.7.8} अस्य (for आसीद्). —^b) D₅ मंडलंतरे. —^c) K₂ इह (for इव). —^d) K₃ Dn₂ D_{3.5} वेपिणः; K₄ वेशनः; B Dc₁ Dn₁ D₅ वेपतः; D₂ वीक्षितः; D₄ धिष्यते; D_{7.8} T G_{1.3.4} M₃₋₅

तस्य रूपं शरस्यासीद्वनुज्यामण्डलान्तरे ।
द्योततो भास्करस्येव धनान्ते परिवेशिनः ॥ ११५
पार्पतेन परामृष्टं ज्वलन्तमिव तद्वनुः
अन्तकालमिव प्राप्तं येनैरे वीक्ष्य सैनिकाः ॥ ११६
तमिषुं संहितं तेन भारद्वाजः प्रतापवान् ।
दृष्ट्वा मन्यत देहस्य कालपर्यायमागतम् ॥ ११७
ततः स यत्नमातिष्ठदचार्यस्तस्य वारणे ।
न चास्यास्त्राणि राजेन्द्र प्रादुरासन्महात्मनः ॥ ११८
तस्य त्वहानि चत्वारि क्षपा चैकास्ततो गता ।
तस्य चाहस्त्रिभागेन क्षयं जग्मुः पतत्रिणः ॥ ११९

सं शरक्षयमासाद्य पुत्रशोकेन चार्दितः ।
विविधानां च दिव्यानामस्त्राणामप्रसन्नताम् ॥ १२०
उत्सृष्टकामः शस्त्राणि विप्रवाक्यामिचोदितः ।
तेजसा प्रेर्यमाणश्च युयुधे सोऽतिमानुषम् ॥ १२१
अथान्यत्स समादाय दिव्यमास्त्रिसं धनुः ।
शरांश्च ब्रह्मदण्डभान्धृष्टद्युम्नमयोधयत् ॥ १२२
ततस्तं शरवर्षेण महता समवाकिरत् ।
व्यशातयच्च संकुद्धो धृष्टद्युम्नममर्षणः ॥ १२३
तं शरं शतधा चास्य द्रोणश्चिच्छेद सायकैः ।
ध्वजं धनुश्च निशितैः सारथिं चाप्यपातयत् ॥ १२४

C. 7. 6. 68
B. 7. 191. 14
K. 7. 192. 14

-विष्यतः; G₂ -तिष्ठतः; M_{1.2} -विष्य[M₂ 'प्य']ते (for -वेशिनः).

116 For the sequence in B Dc1 Dn1, cf. v. 1. 78. —^a) K₁ B Dc1 Dn D₂₋₃ S (G₂ missing) अनु- (for इव). —^d) D_{5.7.8} प्रेक्ष्य; G₂ M_{3.5} तस्य (for वीक्ष्य).

117 For the sequence in B Dc1 Dn1, cf. v. 1. 78. —^a) K₁ D₁ संहतं; B Dc1 Dn D_{2-3.7.8} T G_{1.2} M संहितं (for संहितं). G₁ M दृष्ट्वा (for तेन). —^c) G₁ M₃₋₅ त्यागे (for दृष्ट्वा). —^d) M₃₋₅ -पर्य-यम्. D_{7.8} आत्मनः; M_{3.5} आगतः (for 'तम्').

118 For the sequence in B Dc1 Dn1, cf. v. 1. 78. —^a) K₂ समयम्; D₂ संयतम्; Bom. ed. प्रय-त्नम् (for स यत्नम्). D_{1.3.7.8} ततः समयस्त्रिवातिष्ठ- —^b) D_{1.3.7.8} तं नि- (for तस्य). D₃ दुर्वारस्य तु वारणे.

119 For the sequence in B Dc1 Dn1, cf. v. 1. 78. —^b) D₃ वा (for च). D₃ चैवास्ततो (for चैका). S₁ K₃ G_{2.4} M_{1.2.4} गताः (for गता). — For 119^{ab}, B Dc1 Dn1 subst.:

1311* तस्य त्वहश्च रात्रिश्च शरानभ्यसतोऽगमत् ।

—^c) K₁ बाह्वा; Dn₂ बाहुस् (for चाहस्). D_{1.3} -भागांते (for -भागेन). D₁ सत्यं बहुस्त्रभागेन (sic).

120 For the sequence in B Dc1 Dn1, cf. v. 1. 78. —^a) K₁ आदाय (for आसाद्य). —^b) K₁ Dn₂ चोदितः (for चार्दितः). —^d) D₃ शराणाम् (for अस्त्रां). K₁ B Dc1 Dn अप्रसादतः; D_{1.3.7.8} चाप्रसन्नतां (for

अप्र).

121 For the sequence in B Dc1 Dn1, cf. v. 1. 78. —^a) K₁ D₁ उत्सृष्टकामः; K₃ तत्सृष्टं; Dn₂ उत्सृष्टं (for उत्सृष्टं). —^b) K_{1.2} D_{1.3} -वाक्यानि (for 'नि-'). D_{2.4.5.7.8} -नोदितः (for 'चो'). K₁ B Dc1 Dn D_{3.6} कृत्वि (Dn₂ D_{3.6} विप्र)वाक्यप्रचो (D₃ 'णो')दितः. —^c) K₁ Dn₂ D_{2.4-3} प्रेर्यमाणश्च (for प्रेर्यमाणश्च). B Dc1 Dn D_{2.4-3} तु (for च). —^d) D₃ सुयुधे (for युयुधे). G₂ चाति- (for सोऽति-). B Dc1 Dn1 युयुधे न यथा पुरा.

122 ^a) B Dc1 Dn1 मूयश्चान्यत् (for अयान्यरस).

123 ^b) D₃ महात्मन् (for महता). Dc1 D₄₋₆ सम-वाकिरत्; D₃ रयत् (for 'किरत्'). —^c) D₃ व्यसा-दयच्च; T G_{2.4} अशतयंश्च (for व्यशातयच्च). —^d) B Dc1 Dn D_{3.6} G₂ M₃₋₅ अमर्षं (D₃ 'दि')जं (for 'णः'). G₁ M_{1.2} धृष्टद्युम्नस्य तदनुः. — After 123, D₁ ins.:

1312* ततश्च पार्पवो राजम्समाकुर्य धनुर्मदत् ।

शरं सुमोच निशितं भारद्वाजजिवांसया ।

124 ^a) D₃ स तथा (for शतधा). K₃ तस्य (for चास्य). K₁ B Dc1 Dn S (G₂ missing) शरांश्च शतधा (T G₂ 'तथा')त (Dn₂ चा)स्य. —^b) D₃ सारथि (for सायकैः). —^c) S (G₂ missing) रयं (for ध्वजं). G₂ ध्वजं (for धनुश्च). —^d) Dn₂ अम्यपातयत्; D₃ न्यपातयत् (for अप्य). D_{1.3.8} सारथिं चास्य पातयत् (D₁ 'न्').

125 Dn₂ om. 125^{ab}. —^a) D₃ पुनश्च (for प्रहस्य). —^b) D₃ ददम् (for पुनर्). S₁ K₁₋₃ D_{1.3} आदत्

C. 7. 8769
D. 7. 191. 15
K. 7. 192. 15

धृष्टद्युम्नः प्रहस्यान्यत्पुनरादाय कार्मुकम् ।
शितेन चैनं बाणेन प्रत्यविध्यत्स्तनान्तरे ॥ १२५
सोऽतिविद्धो महेष्वासः संभ्रान्त इव संयुगे ।
भल्लेन शितधारेण चिच्छेदास्य महद्भुजः ॥ १२६
यच्चास्य बाणं विकृतं धनूंषि च विशां पते ।
सर्वं संछिद्य दुर्धर्षो गदां खड्गमथापि च ॥ १२७
धृष्टद्युम्नं ततोऽविध्यन्नयमिनिंशितैः शरैः ।
जीवितान्तकरैः क्रुद्धः क्रुद्धरूपं परंतपः ॥ १२८
धृष्टद्युम्नरथस्याश्वान्स्वरथाश्चैर्महारथः ।
अमिश्रयदमेयात्मा ब्राह्ममस्त्रमुदीरयन् ॥ १२९

ते मिश्रा बह्वशोभन्त जवना वातरंहसः ।
पारावतसवर्णाश्च शोणाश्च भरतर्षभ ॥ १३०
यथा सविद्युतो मेघा नदन्तो जलदागमे ।
तथा रेजुर्महाराज मिश्रिता रणमूर्धनि ॥ १३१
ईपावन्धं चक्रवन्धं रथवन्धं तथैव च ।
प्रणाशयदमेयात्मा धृष्टद्युम्नस्य स द्विजः ॥ १३२
स छिन्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः ।
उत्तमामापदं प्राप्य गदां वीरः परामृशत् ॥ १३३
तामस्य विशिखैस्तीक्ष्णैः क्षिप्यमाणां महारथः ।
निजघान शरैर्द्रोणः क्रुद्धः सत्यपराक्रमः ॥ १३४

(for आदाय). — °) D4-6 शितेन (for शि°). G1 M चैव (for चैनं).

126 °) B1 D1.5 [s] संभ्रान्त (for सं°). — °) D4-6 शत- (for शित-). — °) B Dc1 Dn T G2-4 पुनर्धनुः; D4.5.7.8 ततो धनुः; D6 महाधनुः; G1 M धनुः पुनः (for महद्भुजः).

127 °) Ś1 K1-3 D1.3 तं च; Dc1 Dn1 स च; D1.5 अथ; D7.8 तथा (for यच्च). B1.3 Dc1 Dn1 D2.4-8 T G1.3.4 M1.2 बाण- (for बाणं). Ś1 K1-3 D1 निष्कृत्य; D6-8 -निकरं (for विकृतं). — °) B Dc1 Dn D2 चिच्छेदः; G2 संचिद्य (for संछिद्य). D6 संछिद्य सर्वं दुर्धर्षो. — °) K1 अवाच्य च; B Dc1 Dn D2 च वर्जयन्; D6 च चर्म च; T G2-4 तथैव च (for अथापि च). K1 D4.7.8 वा (for च).

128 Dn2 om. 126°-129°. G1 M om. 128. — °) B Dc1 Dn1 च विव्याध (for ततोऽविध्यन्). — °) D6 नवभिर्नतपर्वभिः. — °) D8 जीवनांत- (for जीवितान्त-). Dc1 D1 (before corr. as in text) -करः; D6 -कर- (for -करैः). Ś1 K3 क्रुद्धः; Dn1 lacuna (for क्रुद्धः). — °) Ś1 K1-3 B1 D1 क्रुद्धरूपः; Dn1 शुद्धरूपे; D4.5.7.8 घोररूपः; T G2-4 शिलाधौतैः (for क्रुद्धरूपं). K4 B3.4 Dn1 D6.3 G4 परंतपः; D4 'तपं (for 'तपः).

129 Dn3 om. 129° (cf. v. l. 128). — °) D2.5 धृष्टद्युम्नो (for 'द्युम्न-). K4 धृष्टद्युम्नोय तस्याश्वान्; D6 धृष्टद्युम्नो रथाश्वांश्च. Ś1 K8 B5 Dn1 सरथाश्चैरः; D6 स महाश्वैर (for स्वस्था). D4 धृष्टद्युम्नोरथाश्वान्स रथांश्चैव महारथाः. — °) K4 B Dc1 Dn D2-8 व्या (B1.4 व्य). मिश्रयद् (for अमि°). Ś1 K1-3 D1 विमृशत् (K1 'मर्द-).

अप्रमेयात्मा. — °) D4-6 ब्राह्मयम् (for ब्राह्मम्). Ś1 K3 उदैरयत् (K3 'न); Dn1 D1 उदीरयत्. K2 ब्राह्मयं समुदीरयत्; D7.8 द्रोणो ब्रह्मविदुत्तमः.

130 °) T G3.4 वाजिनो (for जवना). — °) D4.6.7 पारावत- (for 'वत-). D6 सवर्णाश्वाः (for 'र्णाश्च). — °) G1 M1.2 शोणाश्वा (for 'श्च). D6 शोणाश्चैव नराधिप.

131 M3-5 om. 131. B5 om. 131°-132°. — °) D6 नदैतो (for नदन्तो). — B2 reads 131°-133° on marg. — °) D6 तेषा (for रेजुर्). — °) D6 व्यामिश्रा (for मिश्रिता).

132 B5 om. 132° (cf. v. l. 131). B2 reads 132 on marg. — °) K4 Dn1 D5.6 इपावन्धं (sic). B3.4 Dc1 Dn1 D2.4.5.7.8 रथ (D4.5.7.8 'थे) वन्धं चक्रवन्धं (by transp.). — D6 repeats 132° after 134°. — °) Ś1 K1.3 B1-4 Dc1 Dn2 D1.3.7 M3.5 प्राणा (K1 D7 'ण) शयद्; D6 (first time) प्राच्यावयद्; G1 M1.2 व्यानाशयद् (for प्रणा°). — °) G2 वै (for स).

133 B2 reads 133 on marg. — °) G1.4 M सं- (for स). B Dc1 Dn1 पांचाल्यो (for विरथो). — °) D1 -शारथिः (for -सा°). B Dc1 Dn1 निरुक्तध्वजसारथिः. — °) Dn1 transp. प्राप्य and वीरः. Ś1 K2.3 D1 प्राप्सो (for प्राप्य). D1.4 G3 वीरः; D6 गुर्वी (for वीरः). Ś1 K1.4 B1.2 D1 परामृशत्.

134 °) D4.5.7.8 तामस्य निशितैर्बाणैः. — °) Dn1 D6 क्षिप्यमाणो; D6 कंष्यमानो. — After 134°, D6 repeats 132°. D6 om. 134°.

तां दृष्ट्वा तु नरव्याघ्रो द्रोणेन निहतां शरैः ।
 विमलं खड्गमादत्त शतचन्द्रं च भानुमत् ॥ १३५
 असंशयं तथाभूते पाञ्चाल्यः साध्वमन्यत ।
 वधमाचार्यमुख्यस्य प्राप्तकालं महात्मनः ॥ १३६
 ततः स्वरथनीडस्थः स्वरथस्य रथेपया ।
 अगच्छदसिमुद्यम्य शतचन्द्रं च भानुमत् ॥ १३७
 चिकीर्षुर्दुष्करं कर्म धृष्टद्युम्नो महारथः ।
 इयेप वक्षो भेतुं च भारद्वाजस्य संयुगे ॥ १३८
 सोऽतिष्ठद्युगमध्ये वै युगसंहनेषु च ।

शोणानां जघनार्धेषु तत्सैन्याः समपूजयन् ॥ १३९
 तिष्ठतो युगपालीषु शोणानप्यधितिष्ठतः ।
 नापश्यदन्तरं द्रोणस्तदनुत्तमिवाभवत् ॥ १४०
 क्षिप्रं श्येनस्य चरतो यथैवामिपगृद्धिनः ।
 तद्वदासीदभीसारो द्रोणं प्रार्थयतो रणे ॥ १४१
 तस्याश्वात्रयशक्त्यासौ तदा क्रुद्धः पराक्रमी ।
 सर्वानैकैकशो द्रोणः कपोताभानजीघनन् ॥ १४२
 ते हता न्यपतन्भूमौ धृष्टद्युम्नस्य वाजिनः ।
 शोणाश्च पर्यमुच्यन्त रथवन्धाद्विशां पते ॥ १४३

C. 7. 8787
B. 7. 191. 33
K. 7. 192. 33

135 ^a) K₂ तं (for तां). B (except B₁) D_{ci} D_{n1} S (G₅ missing) तु दृष्ट्वा (by transp.); D_{n2} D_{2.1.7.8} दृष्ट्वा स. D_{n2} D₃ नरव्याघ्र. D₅ तां दृष्ट्वा निहतां वीरो. — ^b) S (except G₂; G₅ missing) विहतां (for नि). G₅ रणे (for शरैः). — ^c) D_{2.8} S (G₅ missing) आदाय (for आदत्त). — ^d) D_{1.3} भास्वरं (for भानुमत्). D₅ कर्म चादत्त भानुमत्.

136 K₁ D_{1.2.4.5} om. (hapl.) 136-137. — ^a) D₅ असंशये (for 'शय'). Ś₁ D₃ तथाभूतः; D_{n1} 'भूतं' (for 'भूते'). — ^b) K₁ पांचालः. — ^c) Ś₁ K₃ चर्यस्य (for 'मुख्यस्य'). — ^d) Ś₁ K₃ D₅ महारथः; T G₂₋₄ 'मनाः' (for 'रमनः'). — After 136, T G₂₋₄ read 142-148.

137 K₁ D_{1.2.4.5} om. 137 (cf. v. l. 136). — ^a) B (except B₁) D_{ci} D_{n1} D₃ सरथः; D_{1.8} चचार; T G₂₋₄ तु रथः (for स्वरथः). B D_{ci} D_n नीडस्थः; T G₂₋₄ नीलं स; G₁ M नीलस्थः (for नीडस्थः). — ^b) T G₂₋₄ समारुह्य (for स्वरथस्य). K₂ B₁ रथेपया; B_{1-2.5} 'ज्ञया'; D₃ रणेपया (for रथे). — ^c) K₁ अगच्छदसिमुख्यस्य; D_{1.8} असिमुख्यस्य चागच्छत्. — ^d) = 135^d.

138 ^a) D_{n2} D_{4.5.7.8} दुस्तरं (for दुष्करं). D_{n2} D_{2.4.5} मोहाद् (for कर्म). — ^b) B₅ महाबलः (for 'रथः'). — ^c) K₁ B D_{ci} D_{n1} D_{2.6} स; D₁ lacuna (for च).

139 ^a) T G₂₋₄ अतिष्ठद् (for सोऽति). M₃₋₅ रथः (for युग). D₅ पक्षे (for मध्ये). D₁₋₃ तु (for वै). — ^b) K₁ संनिहतेषु; B₁ D₂₋₆ संहननेषु (for 'संहन'). — ^c) D₃ शराणां (for शोणानां). Ś₁ K (K₅ missing) D_{1.3} शोणानां जघनार्धेषु (Ś₁ 'तेषुस';

K₁ 'नाते; D₃ 'धेन'); B D_{ci} D_{n1} जघनार्धे (B₁ 'नाते') पु चाश्वानां. — ^d) Ś₁ K (K₅ missing) D_{1.3} T G₂₋₄ तत्सैन्यान्वयः (D₃ 'भि' पूजयन्.

140 ^a) Ś₁ K (K₅ missing) D₁ 'पालेषु; D_{n2} D_{2.4.5} 'पाशेषु; D₃ 'पार्श्वेषु; D_{1.8} 'पाशे तु; S (G₅ missing) 'पालीषु (for 'पालीषु). — ^b) K_{1.2} (marg. as in text) D₅ अति; D₃ अव- (for अधि-). D₅ शोणानामप्यतिष्ठतः; G₁ M शोणाश्चानधितिष्ठतः. — ^c) D_{4.5.7.8} अन्तरे.

141 ^a) G₃ सैन्यस्य (for श्येनस्य). — ^b) Ś₁ K₃ 'गृद्धिनः; D_{1.7.8} 'गृद्धिनः (for 'गृद्धिनः). — ^c) D₃ तथैव (for तद्वद्). D_{n1} D₅ अभिसारो; T G_{2.4} M₂₋₅ अभिसरो (for अभीसारो). — ^d) B D (except D₁) T_{1.2} (inf. lin.) द्रोणपार्पत्यो रणे (D₅ 'योर्नृप').

142 T G₂₋₄ read 142-148 after 136. — ^a) D₅ वै; S (G₅ missing) स (G₂ [श्वा]नु) (for [श्वा]सी). B D_{ci} D_{n1} तस्य पारावतानश्चान् (B₁ 'तक्षिणान्). — ^b) D₅ परंतप; G₁ M_{1.2.4.5} पराश्रयत् (for पराक्रमी). B D_{ci} D_{n1} रथशक्त्या पराभिन (B₁ 'श्रप')त्; T G₂₋₄ रथा-
 क्रुद्धः पराश्रयत्; M₃ तदा क्रुद्धाद्विशां पते. — M₃ om. (hapl.) 142^d-143^d. — ^c) D_{1.7} सर्वानैकैकशो द्रोणः. — ^d) D_{n2} D_{2-5.7.8} नीलवर्णान् (for कपोताभान्). K₁ अजीघ्नन्. B₁₋₄ D_{ci} D_{n1} T G_{1.3.4} M (M₃ om.) रक्तशोणान्विव (T G_{2.4} 'न्विस-; M_{1.5} 'न्यस-')जयन् (D_{n1} M_{1.5} 'त्'); B₅ रक्तान्धान्विवर्जयन्; D₃ रक्तशोणोरजीघ-
 नत् (sic); G₂ रक्तशोणानवर्जयत्.

143 For the sequence in T G₂₋₄, cf. v. l. 142. D₅ M₃ om. 143 (for M₃, cf. v. l. 142). — ^a) B D_{ci} D_{n1} S (M₃ om.; G₅ missing) शोणास्तु; D_{n2} D_{2-4.6-8} 'श्वाः (for 'श्व). K_{1.2} शोणाश्च परियुञ्चत.

C. 7. 8788
B. 7. 191. 34
K. 7. 192. 34

तान्ह्याभिहतान्दृष्ट्वा द्विजाग्र्येण स पार्षतः ।
नामृष्यत युधां श्रेष्ठो याज्ञसेनिर्महारथः ॥ १४४
विरथः स गृहीत्वा तु खड्गं खड्गभृतां वरः ।
द्रोणमभ्यपतद्राजन्वैनतेय इवोरगम् ॥ १४५
तस्य रूपं बभौ राजन्मारद्वाजं जिघांसतः ।
यथा रूपं परं विष्णोर्हिरेण्यकशिपोर्वधे ॥ १४६
सोऽचरद्विविधान्मार्गान्प्रकारानेकविंशतिम् ।
भ्रान्तमुद्भ्रान्तमाविद्धमाभुतं प्रसृतं सुतम् ॥ १४७

परिवृत्तं निवृत्तं च खड्गं चर्म च धारयन् ।
संपातं समुदीर्णं च दर्शयामास पार्षतः ॥ १४८
ततः शरसहस्रेण शतचन्द्रमपातयत् ।
खड्गं चर्म च संवाधे धृष्टद्युम्नस्य स द्विजः ॥ १४९
ते तु वैतस्त्रिका नाम शरा ह्यासन्नघातिनः ।
निकृष्टयुद्धे द्रोणस्य नान्येषां सन्ति ते शराः ॥ १५०
शारद्वतस्य पार्थस्य द्रौणेर्वैकर्तनस्य च ।
प्रद्युम्नयुधुधानाभ्यामभिमन्योश्च ते शराः ॥ १५१

—^a) D₁. 6-8 रथवंशाद् (for 'बन्धाद्').

144 For the sequence in T G₂-1, cf. v. l. 142.
—^a) Ś₁ K₁-3 D₈ नाशितान् (for निहतान्). —^b)
K₁ D₂ D₁. 3. 4. 7. 8 T G₂ द्विजाग्र्येण; D₅ शोणाश्वेन.
D₁ च (for स). —^c) B₅ S (except M₂; G₅
missing) महाबलः (for 'रथः').

145 For the sequence in T G₂-1, cf. v. l. 142.
—^a) D₃ सं- (for स). B₁ च; D₈ [अ]थ; T G₂. 4
[आ]शु (for तु). —^b) B₂ विशारदः; D₅. 7. 8 -भृतां
वर. —^c) K₁. 2 D₁. 5 अभ्या (D₅ 'प्य') पतद्; T G₂-4
अभ्यद्रवद् (for 'पतद्').

146 For the sequence in T G₂-1, cf. v. l. 142.
G₁-3 M₁. 2 om. 146. —^a) K₁. 2 om. (hapl.) from
बभौ up to रूपं (in 146^a). M₃-5 तथा (for बभौ). Ś₁
K₃. 4 D₁. 6 तत्र (for राजन्). —^b) D₈ भारद्वाजजिघां-
सिनः. —^c) K₄ B D₁ D₂ G₄ M₃. 5 पुरा; D₃ बभौ;
M₄ तथा (for परं). —^d) B₁. 2 मृधे (for वधे).

147 For the sequence in T G₂-1, cf. v. l. 142.
—^a) K₃ सोजरद्; K₄ D₈. 3 सोचरन्; B D₁ D₂
स तदा (B₁. 8 'था' (for सोऽचरद्). — After 147^a,
D₄ ins. 1314* and om. 147^b-148^d. —^b) B₁
पुरुषांश्चैकः; B₂-5 D₁ D₂ प्रवरांश्चैकः; T₂ (before
corr.) G₁. 2. 4 M₁. 2. 4. 5 (sup. lin.) प्रचारानेकः; G₅
प्रवरा' (for प्रकारा'). D₂ D₃. 5. 6. 8 G₅ -विंशतिः; G₁
M₁. 2 'तीन्' (for 'तिम्'). — After 147^{ab}, N (D₄
om.; Ś₂ K₅ missing) ins.:

1313* दर्शयामास कौरव्य पार्षतो विचरन्नने ।

[D₈ व्यचरद् (for विचरन्).]

—^a) D₂ आकृतं (for आभुतं). D₁ प्रभृतं; D₈
विभृतं (for प्र'). B₁-3. 5; D₁ D₂ T G₂-1 M₁. 2
स्थितं; D₂ तथा (for सुतम्).

148 For the sequence in T G₂-1, cf. v. l. 142.
D₁ om. 148 (cf. v. l. 147). —^a) D₃ om. निवृत्तं.
K₁ om. च. —^b) D₂ D₅. 7 खड्गः; D₃ lacuna (for
खड्गं). D₅ om. चर्म च. —^c) Ś₁ K₂ D₁ D₂ समु-
दीर्णः; K₁ G₁ M₁. 2 'दीर्णः'; B₁ 'दीर्णः'; D₁. 3 'दीर्णं'
(for 'दीर्ण'). D₈ संपातं च समुदीर्णं (sic). — After
148, N (Ś₂ K₅ missing; D₄ after 147^a) ins.:

1314* भारतं कौशिकं चैव सात्वतं चैव शिक्षया ।
दर्शयन्न्यचरद्युद्धे द्रोणस्यान्तचिकीर्षया ।
चरतस्तस्य तान्मार्गान्विचित्रान्खड्गचर्मिणः ।
व्यस्यन्त रणे योधा देवताश्च समागताः ।

[D₁ om. from भारतं up to तान्मार्गान् (in the prior
half of line 3). — (L. 1) Ś₁ D₁ कैशिकं (for कौ').
— (L. 2) Ś₁ K₁-3 D₁. 3. 5. 7. 8 अचरद् (for व्यच').
— (L. 3) K₁ D₁ D₂ D₁ तन्- (for तान्). D₂
खड्गचर्म च; D₈ खड्गचर्मणि (for 'चर्मिणः'). — D₂ om.
line 4. — (L. 4) D₃ विस्मयंत. D₄ योद्धा (for योधा).
K₁-3 D₁ देवताश्च (for दे').]

149 D₂ om. 149^{ab}. D₇ om. 149^b-150^c. —^b)
D₁ अशतयत् (for अपा'). —^c) B D₁ D₂ T G₁-4
चर्मं खड्गं (by transp.); M₁. 2 खड्गचर्मं. Ś₁ K₁-3 D₁
संवाधं; D₂. 4-8. 8 संचारे (for संवाधे).

150 D₇ om. 150^{ab} (cf. v. l. 149). —^a) K₃
G₁ M ये (for ते). D₈ वैतस्त्रिका. —^b) D₈ बाणा
(for शरा). K₄ D₂ D₃. 4-6. 3 -योधिनः (for -घातिनः).
B D₁ D₂ शरा आसन्नयोधिनः; D₃ शरा ह्यासन्नघातिनः;
S (G₅ missing) बाणास्तस्यामितद्युतेः. —^c) K₃ निकृष्य
युद्धं द्रोणस्य.

151 D₁ reads 151^{ab} twice. D₈ repeats 151^a
after 151^d. —^b) D₁ (second time). 4-8 द्रोण- (for
द्रोणेर्). — For 151^{ab}, B D₁ D₂ subst.:

अथास्येपुं समाधत्त दृढं परमसंशितम् ।
 अन्तेवासिनमाचार्यो जिघांसुः पुत्रसंमितम् ॥ १५२
 तं शरैर्दशभिस्तीक्ष्णैश्चिच्छेद शिनिपुंगवः ।
 पश्यतस्तत्र पुत्रस्य कर्णस्य च महात्मनः ।
 प्रस्तमाचार्यमुख्येन धृष्टद्युम्नमोचयत् ॥ १५३
 चरन्तं रथमार्गेषु सात्यकिं सत्यविक्रमम् ।
 द्रोणकर्णान्तरगतं कृपस्यापि च भारत ।
 अपश्येतां महात्मानौ विष्वक्सेनधनंजयौ ॥ १५४
 अपूजयेतां वाष्पेयं युवाणौ साधु साध्विति ।
 दिव्यान्यस्त्राणि सर्वेषां युधि निघ्नन्तमच्युतम् ।

अभिपत्य ततः सेनां विष्वक्सेनधनंजयौ ॥ १५५
 धनंजयस्ततः कृष्णमब्रवीत्पश्य केशव ।
 आचार्यवरमुख्यानां मध्ये क्रीडन्मधूदहः ॥ १५६
 आनन्दयति मां भूयः सात्यकिः सत्यविक्रमः ।
 माद्रीपुत्रौ च भीमं च राजानं च युधिष्ठिरम् ॥ १५७
 यच्छिक्षयानुद्धतः सत्रणे चरति सात्यकिः ।
 महारथानुपक्रीडन्वृष्णीनां कीर्तिवर्धनः ॥ १५८
 तमेते प्रतिनन्दन्ति सिद्धाः सैन्याश्च विस्मिताः ।
 अजय्यं समरे दृष्ट्वा साधु साध्विति सात्वतम् ।
 योधाश्चोभयतः सर्वे कर्मभिः समपूजयन् ॥ १५९

C. 7. 2808
B. 7. 191. 53
K. 7. 192. 51

इति श्रीमहाभारते द्रोणपर्वणि चतुःपञ्चदशतमोऽध्यायः ॥ १६४ ॥

1315* ऋते शारद्वतात्पार्थाद्रोणेवैकर्तनात्तथा ।

[Dc1 Dn1 द्रोणद्वैकर्तनात्कृपात् (for the post. half).]

—^a) B Dc1 Dn1 भारत (for ते शराः). G2 नाच्येषां
 संति ते शराः (= 150^a).

152 Ds om. 152^a. —^a) B2.4 G2 अ (B4 त) थास्येपुं;
 G2 तथास्येपुं (for अ). Ś1 K (K5 missing) B4 D1
 समाधत्त. —^b) G2 शरं (for दृढं). Ś1 दंसितं; K1-3
 D1 दंसितं; K4 B Dc1 Dn1 संमतं; Dn2 D2-5.7.8
 वेगिनं; Ds दंसितं (for संशितम्).

153 ^b) D1.5.7.8 शनिपुंगवः. — After 153^{ab}, Ds
 ins. :

1316* पश्यतस्तस्य तान्मागीन्विचित्रान्खड्गचर्मणि ।

—^a) Ds द्वि (for च). —^c) Ś1 K3 अचोदयत्; K4
 अयोधं (for अमोचं).

154 ^a) Dn2 चरन्तः; T G2-4 व्यचरद् (G2 न्);
 G1 M विचरन् (for चरन्तं). —^b) Ds लघु- (for
 सत्यः). S (G5 missing) सात्यकिः सत्यविक्रमः. —^c)
 G2 द्रोणकर्णांतरं गत्वा. —^d) S (G5 missing) सात्यकिं
 (G3 कं) (for भारत). D7.8 तं कृपस्यापि भारत.

155 K4 om. (hapl.) 155. —^a) G1 आपूजयेतां.
 —^b) G1 M ब्रुवन्तौ (for युवाणौ). D4.5 सात्वतां (Ds
 तं) (for साध्विति). —^c) B5 सर्वाणि; T G2-4 चैतेषां
 (for सर्वेषां). —^d) K1 निघ्नन्तम्. D4 युधि सत्यपरा-
 क्रमः; Ds युधि तेषां प्रमुञ्चतां. — T G2.3 om. 155^c.

—^c) D4.5.7.8 अभिगम्य (for पत्य). B4 Dc1 Dn1
 तेषां (for सेनां). G1.4 M1.3-5 नातिसर्तं (G4 कं) व्यस-
 तृतां.

156 ^c) B Dc1 Dn रथ- (for वर-). —^d) D2.
 1.5.7.8 G3.4 मधूदह (sic); T G2 यदूदह (G2 हः).

157 ^a) S (G5 missing) स (M1.3 से) नन्दयति (for
 आनन्द). Ś1 K3 मे; K1.2 T मा (for मां). —^b)
 B (except B4) Dc1 Dn1 D1.3.6 S (G5 missing)
 सात्यकिः परवीरहा. —^c) K4 Dn2 Ds-5.7.8 M1.2 -पुत्रं
 (for -पुत्रौ). —^d) Ś1 K (K5 missing) D1 धर्मराजं;
 Dn2 D2.3.5.7.8 नकुलं च (for राजानं च).

158 ^a) K1.2 Dn2 D3 यः (for यत्). D3 पूजयन्
 (for शिक्षया). Dc1 संयुतः (for अनुद्धतः). D3 यं
 शिक्षयन्त्यस्त्रि च; D4 यः शिक्षयन्तिव रणे; D5 यः शिक्ष-
 याधिको वीरो; Ds अनुत्तरं रक्षतीव; D7.8 यः शिक्षया-
 धिकोतीव; S (G5 missing) अनुद्धतः शिक्षितवान् (G1
 M वद्). —^b) Ś1 K3 राजंशः; Ds द्रोणे; S
 (except M1.2; G5 missing) रणे (for रणे). —^c)
 Ds क्रीडयंश्च (for उपक्रीडन्). —^d) Dn2 वर्तनः (sic)
 (for वर्धनः).

159 ^a) Dc1 D2 एतं; D4.5.7.8 एनं (for एते).
 T G2-4 M3-5 प्रत्यनन्दत (G4 तः) (for प्रतिनन्दन्ति).
 —^b) M1 (inf. lin. as in text) साध्याश्च (for सैन्याश्च).
 —^c) D3 असह्यः; D4 असह्यः; D5 अजयं (for उयं).
 —^d) B Dc1 Dn1 Ds सात्यकिं (for सात्वतम्). —^e)

१६५

संजय उवाच ।

कूरमायोधनं जज्ञे तस्मिन्नाजसमागमे ।

रुद्रस्येव हि क्रुद्धस्य निघ्नतस्तु पशून्यथा ॥ १

हस्तानामुत्तमाङ्गानां कार्मुकाणां च भारत ।

G₁ M यौवाश्च. — ' S (except M₃₋₅; G₅ missing)
तमपूजयन् (for सम°).

Colophon : Ś₂ K₅ G₅ missing. — *Sub-parvan :*
B_{1.2} द्रोणवध. — *Day of Droṇa's Generalship :* K₁
D₁ पंचमे युद्धदिवसे; K₃ D₅ पंचमे दिवसे; K₄ पंचमे
दिवसयुद्धे; D₅ पंचमे; T G₃ पंचमेहति. — *Adhy.*
name : Bom. ed. संकुलयुद्धं. — *Adhy. no. (figures,*
words or both) : D₁ 191; D₃ 85; T G_{2.3} 186;
G₁ M_{1.2} 185; G₄ 187; M₃₋₅ 1-4. — *Śloka*
no. : D₁ D₁ 63.

165

☞ This adhy. is missing in K₅ G₅ (cf. v. 1. 7.
125. 14; 137. 9).

1 Ś₂ is missing up to 62^{ab} (cf. v. 1. 7. 163. 38).
T₂ G₂₋₄ M₃₋₅ om. 1-13. — After the ref., N (Ś₂
K₅ missing) T₁ ins. :

1317* सात्वतस्य तु तत्कर्म दृष्ट्वा दुर्योधनादयः ।
शैनेयं सर्वतः क्रुद्धा वारयामासुरञ्जसा ।
कृपकणौ च समरे पुत्राश्च तव मारिष ।
शैनेयं त्वरयाभ्येत्य विनिघ्नन्निशितैः शरैः ।
युधिष्ठिरस्ततो राजा माद्रीपुत्रौ च पाण्डवौ । [5]
भीमसेनश्च बलवान्सात्वतं पर्यवारयन् ।
कर्णश्च शरवर्षेण गौतमश्च महारथः ।
दुर्योधनादयस्ते च शैनेयं पर्यवारयन् ।
तां वृष्टिं सहसा राजन्नुत्थितां घोररूपिणीम् ।
वारयामास शैनेयो योधयस्त्वान्महारथान् । [10]
तेषामन्त्राणि दिव्यानि संहितानि महात्मनाम् ।
वारयामास विधिवद्व्यैरन्त्रैर्महासूधे ।

[(L. 1) D₅ च (for तु). — (L. 2) D_{5.6}
अञ्जसा (for अञ्जसा). — (L. 3) K₄ D₂ कृपः (for
कृप-). D₂ D_{3-5.7.8} T₁ कृपः कर्णोय समरे (for the prior
half). K₃ D₂ D_{2.4.5.7.8} T₁ तव पुत्रा (K₃ 'त्र)श्च (by
transp.). Ś₁ K_{2.4} पुत्रश्च. D₅ भारत (for मारिष).
— (L. 4) D₅ त्वरयाभ्येत्य; D₅ 'रिताभ्येत्य; D₅ 'रिता
यात्वा. D₅ व्यानिघ्नन्; D₅ [अ]व्यनिघ्नन्. Ś₁ K₃ विन्य-

घ्नन् शितैः शरैः; K_{1.2} D₁ च्य (D₁ वि)निघ्नन् (K₁ 'ति)
शितैः शरैः (for the post. half). — (L. 6) B D₁
D₁ साल्वाकिं (for सात्वतं). D₁ D₁ समवारयन्; D₅
पर्यरक्षयन्. — D_{1.3} om. (hapl.) lines 7-8. — (L. 7)
D₅ तु (for च). — (L. 8) Ś₁ K (K₅ missing) D₁
सर्वे; D₂ D₂₋₅ T₁ चैव (for ते च). — (L. 9) D₅
तां दृष्ट्वा सहसा वृष्टिं (for the prior half). D₁ D_{5.7}
उच्छ्रितां; D₂ om. (for उत्थितां). — D_{1.3} om. (hapl.)
lines 10-11. — (L. 11) D₄ घोराणि (for दिव्यानि).
D₂ D₂ T₁ संघितानि; D_{3.5} संहं; D₅ सन्धि° (for संहि°).
— (L. 12) D_{1.5.7.8} विविधैर् (for विविधद्.).]

— Whereas, after the ref., G₁ M_{1.2} read 14^{ab} for the
first time, repeating it in its proper place. After
the first occurrence of 14^{ab}, G₁ M_{1.2} ins. :

1318* संप्रहृष्टाच्युतो दृष्ट्वा साधु साध्विति पूजयन् ।
तं यौवाश्चाभवन्सर्वे कर्मणानेन पूजयन् ।
पुत्रमुक्त्वा महाराज वासुदेवं धनंजयः ।
प्रायात्तव बलं जिष्णुर्भरिद्वाजरथं प्रति ।
तत्रासीद्भैरवो नादस्त्रावकानां जयैषिणाम् । [5]
समभिद्रवतां पार्थ दैत्यानामिव वासवम् ।
तत्राकरोन्महाराज महौ शोणितकर्दमाभम् ।
प्राच्छिन्नचोत्तमाङ्गानि पार्थोऽश्वनरदन्तिनाम् ।

[(L. 1) G₁ संप्रहृष्टाच्युतो दृष्ट्वा (for the prior half).]

— °) Ś₁ K_{3.4} B D₁ (marg.) D₂ D₁ राजन्; D_{5.7}
जन- (for राज-). G₁ M_{1.2} तस्य राजन्पराक्रमे. — °)
D₄ वै (for [ह]व). D_{4.6} च (for हि). G₁ M_{1.2}
रुद्रस्यातिप्रहृष्टस्य. — °) Ś₁ K_{1.2} D₁ वै; K₃ lacuna;
K₄ B₂₋₄ D₁ D₁ T₁ तान्; D_{3.6} G₁ M_{1.2} च (for
तु). B₂₋₅ D₁ D₁ पुरा; D₅ मृधे (for यथा). B₁
निघ्नतस्तानुरा पशून्.

2 Ś₂ missing; T₂ G₂₋₄ M₃₋₅ om. 2 (cf. v. 1. 1).
— °) D₅ भस्मानाम् (for हस्ता°). — B₂ reads 2^{bc} on
marg. — °) Some MSS. कार्मुकानां. G₁ M_{1.2} संघशः
(for भारत). — °) D₁ om. (hapl.) चापविद्वानां
चामराणां. G₁ M_{1.2} अपविद्वानां (for चाप°). B D₁ D₁
संचयैः (for संयुगे). — After 2, Ś₁ K (K₅ missing) D

छत्राणां चापविद्वानां चामराणां च संयुगे ॥ २
भग्नचक्रै रथैश्चापि पातितैश्च महाध्वजैः ।
सादिभिश्च हतैः शूरैः संकीर्णा वसुधाभवत् ॥ ३
वाणपातनिकृत्तास्तु योधास्ते कुरुसत्तम ।
चेष्टन्तो विविधाश्वेष्टा व्यदृश्यन्त महाहवे ॥ ४
वर्तमाने तथा युद्धे घोरे देवासुरोपमे ।
अत्रवीक्षत्रियांस्तत्र धर्मराजो युधिष्ठिरः ।
अभिद्रवत् संयत्ताः कुम्भयोनि महारथाः ॥ ५
एष वै पार्षतो वीरो भारद्वाजेन संगतः ।

घटते च यथाशक्ति भारद्वाजस्य नाशने ॥ ६
यादृशानि हि रूपाणि दृश्यन्ते नो महारणे ।
अथ द्रोणं रणे क्रुद्धः पातयिष्यति पार्षतः ।
ते यूयं सहिता भूत्वा कुम्भयोनिं परीप्सत ॥ ७
युधिष्ठिरसमाज्ञप्ताः सुज्जयानां महारथाः ।
अभ्यद्रवन्त संयत्ता भारद्वाजं जिघांसवः ॥ ८
तान्समापततः सर्वान्भारद्वाजो महारथः ।
अभ्यद्रवत् वेगेन मर्तव्यमिति निश्चितः ॥ ९
प्रयाते सत्यसंधे तु समकम्पत मेदिनी ।

C. 7. 825
B. 7. 192. 17
K. 7. 193. 17

(except Dc1 Dn1) T1 ins.:

1319* राक्षसः स व्यदृश्यन्त तत्र तत्र रणाजिरे ।

[Ś1 K (K2 missing) Dn2 D1.3 समदृश्यन्त (for स व्य). T1 तत्र (for the first तत्र).]

3 Ś2 missing; T2 G2-4 M3-5 om. 3 (cf. v. l. 1). —^a) D4 भग्नचक्रैः; D5 भग्नैश्चक्रैः. —^b) K1.3 B1 Dc1 Dn2 D1.3 T1 पतितैश्च; M1.2 निपातित- (for पातितैश्च). Ś1 K1.2 Dn2 D3.4.5-8 T1 महाध्वजैः; K4 D5 'रथैः'; D2 'गजैः' (for 'ध्वजैः'). —^c) D3 सादि- तैश्च (for 'भिश्च'). D5.6 हवैः (for हतैः). D1.3 अश्वैः; D5 चापि (for शूरैः). —^d) D1 सात्यकिणा वसुधा- धिप (sic).

4 Ś2 missing; T2 G2-4 M3-5 om. 4 (cf. v. l. 1). —^a) K1 निवृत्तास्तु; K3 D1.3 T1 निवृत्तास्तु; D4 निवृत्त्यास्तु; D5 निपातितैस्तु; D3 निवृत्तास्तु (for 'त्तास्तु'). G1 M1.2 पार्षत्राणनिकृत्ताश्च. —^b) Dn1 योधास्तु; D5 'नां'; G1 M1.2 योधास्ते. Ś1 K3 योधास्ते भरतर्षभ. —^c) G1 M1.2 कुर्वन्तो (for चेष्टन्तो). K1 D5.7.8 विविधा. —^d) D3 व्यवर्तत; G1 M1.2 दृश्यन्ते स (for व्यदृश्यन्त). Ś1 K3 रणाजिरे; B1.3 Dc1 Dn1 D5 G1 M1.2 महारणे (for 'हवे').

5 Ś2 missing; T2 G2-4 M3-5 om. 5 (cf. v. l. 1). —^a) K3 तदा; D5.6 महा- (for तथा). D3 घोरे (for युद्धे). —^b) D3 युद्धे (for घोरे). —^c) G1 M1.2 अत्रवीक्षत्रियांस्तत्र. —^d) D5 om. 5^a-6^b. —^e) D4.5 संयात (for संयत्ताः).

6 Ś2 missing; T2 G2-4 M3-5 om. 6 (cf. v. l. 1). D5 om. 6^a (cf. v. l. 5). —^a) K4 एको (for एष). K4 B D (D5 om.) T1 हि (for वै). G1 M1.2

असौ हि पार्षतः शूरो. —^a) D3 यत्तेयं; G1 M1.2 घटयन् हि (for घटते च). K1 यथाशक्ति. —^b) B Dc1 Dn1 D4-5 T1 शासने; D3 G1 M1.2 पातने (for नाशने).

7 Ś2 missing; T2 G2-4 M3-5 om. 7 (cf. v. l. 1). —^a) D2 च; D4.7 ह; D5.8.9 [ह]ह (for हि). —^b) K4 B Dn2 D2.8 T1 [5]स्य; Dc1 Dn1 D3 G1 M1.2 स्म (for नो). K1.2 महाध्वजे (for 'रणे'). —^c) D1.2 अथ (for अथ). Dn2 T1 च संक्रुद्धः; D4.7.8 रथे क्रुद्धः; G1 M1.2 रणे यादृग् (for रणे क्रुद्धः). —^d) K4 B Dc1 Dn घातयिष्यति; G1 M1.2 निवृत्ति (for पातयि). —^e) G1 M1.2 गत्वा (for भूत्वा). —^f) D1.6 परीप्सथ; D2 परीप्सया; D5.8.7.8 परी (Dr 'ति') प्सवः (for 'प्सत'). B Dc1 Dn T1 युध्यन् क्रुद्धसंभवः; G1 M1.2 पार्षतं चानि (M1 'पि') रक्षय.

8 Ś2 missing; T2 G2-4 M3-5 om. 8 (cf. v. l. 1). D5 om. (hapl.) 8. Before 8, Dr. 8 ins. संजय उवाच. —^a) G1 M1.2 आज्ञापितास्ते राज्ञा तु. —^b) K3 अभ्यद्रवत्. K4 D1 संग्रामे (K4 'मे'); D5.7.8 सहिता (for संयत्ता). G1 M1.2 वेगेनाभ्यद्रवन्सर्वे. —^c) K1 B1.2 Dn1 D2.8 T1 भारद्वाज. G1 M1.2 युयुत्सवः (for जिघांसवः).

9 Ś2 missing; T2 G2-4 M3-5 om. 9 (cf. v. l. 1). —^a) G1 M1.2 सहसा पतवन्तास्तु. —^b) D2.8 महारथान्. —^c) K1 अभ्यद्रवत्; B1-3 Dc1 Dn D2.4.5.7.8 T1 G1 M1.2 अभ्यवर्तत (for 'द्रवत्'). —^d) D4.8 निश्चयः (for निश्चितः).

10 Ś2 missing; T2 G2-4 M3-5 om. 10 (cf. v. l. 1). —^a) G1 M1.2 पांचालानां महारथे. —^b) D5 om. 10^a. —^c) Dn2 T1 ततो घोरात् (for सनिर्वातात्).

C. 7. 8825
B. 7. 192. 18
K. 7. 193. 17

ववुर्वाताः सनिर्घातास्त्रासयन्तो वरूथिनीम् ॥ १०
पपात महती चोल्का आदित्यान्निर्गतेव ह ।
दीपयन्तीव तापेन शंसन्तीव महद्भयम् ॥ ११
जज्वलुश्चैव शस्त्राणि भारद्वाजस्य मारिप ।
रथाः खनन्ति चात्यर्थं हयाश्चाश्रूयवासृजन् ॥ १२
हतौजा इव चाप्यासीद्भारद्वाजो महारथः ।
ऋषीणां ब्रह्मवादानां स्वर्गस्य गमनं प्रति ।
सुयुद्धेन ततः प्राणानुत्सृष्टमुपचक्रमे ॥ १३

ततश्चतुर्दिशं सैन्यैर्दुपदस्याभिसंवृतः ।
निर्दहन्क्षत्रियव्रातान्द्रोणः पर्यचरद्रणे ॥ १४
हत्वा विंशतिसाहस्रान्क्षत्रियानरिमर्दनः ।
दशायुतानि तीक्ष्णाग्रैरवधीद्विशिखैः शितैः ॥ १५
सोऽतिष्ठदाहवे यत्तो विधूम इव पावकः ।
क्षत्रियाणामभावाय ब्राह्ममात्मानमास्थितः ॥ १६
पाश्चात्यं विरथं भीमो हतसर्वायुधं वशी ।
अविपण्णं महात्मानं त्वरमाणः समभ्ययात् ॥ १७

G1 M1.2 उत्पाता अभवन्कूरास्. —^d) K4 B Dc1 Dn
D2.4-7 T1 त्रासयाना (for 'यन्तो).

11 S2 missing; T2 G2-4 M3-5 om. 11 (cf. v. l. 1). —^a) D6 वा (for च). —^b) B Dc1 Dn1 निश्चरन्त्युत; Dn2 D2 T1 निश्चरन्निव; D6 निःसरन्निव; G1 M1.2 निःसृताशनिः (for निर्गतेव ह). D3 हि (for ह). D1.5.8 दिव्यान्निश्चरतीव च; D7 [आ]दित्यान्निश्चरतीव च. —^c) Dn2 D4.8 पातेन (for तापेन). B Dc1 Dn1 दीपयन्ती उभे सेने; D2.7 'यन्ती च पातेन; D5 'यन्ती पपातेव; G1 M1.2 'यन्निव ते सैन्यं. —^d) K1 D1.6 T1 शंसन्तीव; D5 'ती च; G1 M1.2 'निव (for 'न्तीव). B1 महाभयं.

12 S2 missing; T2 G2-4 M3-5 om. 12 (cf. v. l. 1). —^a) D6 चास्त्राणि (for शस्त्राणि). —^c) S1 K3 चात्यन्तं (for चात्यर्थं). B Dc1 Dn1 रथाश्चास्त्रनता (Dc1 Dn1 'स्तु नमां'त्यर्थं (sic); D1 रथोस्त्रनत चात्यर्थं; D5 रथोस्त्रनवतश्चासीद्; G1 M1.2 रथश्चासीदत्यर्थं. —^d) G1 M1.2 वाहाश् (for हयाश्). D5 अश्रूणि (for चा'). B1.3 Dc1 Dn1 G1 M1.2 [अ]वर्तयन्; Dn2 D2.4-3 T1 [अ]पातयन् (for [अ]वासृजन्).

13 S2 missing; T2 G2-4 M3-5 om. 13 (cf. v. l. 1). —^a) S1 Dc1 D1.4.5.7.8 G1 M1.2 हतौजा. — After 13^{ab}, N (S2 K5 missing) T1 ins.:

1320* प्रास्फुरन्मयनं चास्य दक्षिणो बाहुरेव च ।

विमनाश्चाभवद्युद्धे दृष्ट्वा पार्थतमप्रतः ।

[(L. 1) K2 चापि (for चास्य). B1 D3 दक्षिणं; D4 'जे (for 'जो). K4 B (except B1) Dc1 Dn1 T1 वामं (K4 'म' बाहुस्तथैव च (for the post. half). — (L. 2) T1 विमनस्को (for 'नाश्).]

—^c) K4 B2-5 Dc1 Dn1 D5.5 T1 ब्रह्मवादी (B5 'दि')नां; D2 'वादे च; D7 'वादिश्च; D8 'वादांश्च; G1 M1.2

'ससानां (for 'वादानां). D6 ऋषिवाक्यं तु तच्छ्रुत्वा. —^d) D1.8 श्रुत्वा स्वर्गमनं प्रति. —^e) D1 सुयुद्धेन; G1 M1.2 अयुद्धेन (for सु'). K4 तदा (for तत:).

14 S2 missing (cf. v. l. 1). Before 14, G3.4 ins. संजयः. G1 M1.2 read 14^{ab} for the first time after the ref. in 1. —^a) K2.3 Dn1 D1 चतुर्दिशः. D1.5.7.8 T G1 (second time). 2-4 M1.2 (last two second time) सैन्यं. —^b) K1 D1 पांचाल्यस्य; K2 पंचालस्य; K3 G3.4 द्रौपदस्य; D5 पंचालैर् (for द्रुपदस्य). G1 (first time). 3.4 M1.2 (last two first time) [अ]भिसंवृतं. D1.8 द्रौपदेयादिभिरवृतं. —^c) D6 श्रेष्ठान्; T G1.3.4 M1.2 व्रातं (for व्रातान्). —^d) D2 प्रेक्षार्थंयद्; D1 प्रेक्ष्योभवद्; D5 प्रेक्ष्योभवद्; D6.7 पर्यपतद् (for 'चरद्).

15 S2 missing (cf. v. l. 1). M1 om. 15-16. —^a) Dc1 (marg.) हयान् (for हत्वा). —^c) Bom. ed. करिणाम् (for तीक्ष्णाग्रैर्). —^d) B5 G1 M1.2 शरैः; D6 पुनः; M3.5 वशी (for शितैः).

16 S2 missing (cf. v. l. 1). M1 om. 16 (cf. v. l. 15). —^b) B Dc1 Dn1 D6 S (M1 om.; G5 missing) विधूमोभिरिव उवलन्. —^d) G1 M1.2 शास्त्रम् (for ब्राह्मम्). K4 B Dc1 Dn D3 ब्राह्म (D3 'श)सं समास्थितः; T G2.4 M3.5 'मखमुपास्त्रि (T 'श्रि)तः; G2 'मखमुदीरयन्.

17 S2 missing (cf. v. l. 1). —^a) D3 विरथो. D6 T G3 भूमौ (for भीमो). —^b) B Dc1 Dn1 वली (for वशी). —^c) K4 D6 S (G5 missing) अविपण्णं; B Dc1 Dn D1 सुविपण्णं (for अ'). S1 K3 महाबाहुं (for 'स्मानं). —^d) Dc1 Dn1 D4.5 त्वरमाणं; T G4.4 सुयुधानः (for त्वरमाणः).

18 S2 missing (cf. v. l. 1). —^d) M3 अत्यन्तम्

ततः स्वरथमारोप्य पाञ्चाल्यमरिमर्दनः ।
 अत्रवीदभिसंप्रेक्ष्य द्रोणमस्यन्तमन्तिक्रात् ॥ १८
 न त्वदन्य इहाचार्य योद्धुमुत्सहते पुमान् ।
 त्वरस्व प्राग्धायैव त्वयि भारः समाहितः ॥ १९
 स तथोक्तो महाबाहुः सर्वभारसहं नवम् ।
 अभिपत्याददे क्षिप्रमायुधप्रवरं दृढम् ॥ २०
 संरब्धश्च शरानस्यन्द्रोणं दुर्वारणं रणे ।
 विचारयिषुराचार्य शरवर्षैरवाकिरत् ॥ २१
 तौ न्यवारयतां श्रेष्ठौ संरब्धौ रणशोभिनी ।
 उदीरयेतां ब्राह्मणि दिव्यान्यस्त्राप्यनेकशः ॥ २२

स महासैर्महाराज द्रोणमाच्छादयद्रणे ।
 निहत्य सर्वाण्यस्त्राणि भारद्वाजस्य पार्श्वतः ॥ २३
 स वसतीञ्चिर्वीथैव बाह्मीकान्कौरवानपि ।
 रक्षिष्यमाणान्संप्राप्ते द्रोणं व्यधमदच्युतः ॥ २४
 धृष्टद्युम्नस्तदा राजन्गमस्तिमिरिवांशुमान् ।
 वभौ प्रच्छादयन्नाशाः शरजालैः समन्ततः ॥ २५
 तस्य द्रोणो धनुश्छित्त्वा विद्धा चैनं शिलीमुखैः ।
 मर्माण्यभ्यहनद्भ्यः स व्यथां परमामगात् ॥ २६
 ततो भीमो दृढक्रोधो द्रोणस्याश्लिष्य तं रथम् ।
 शनकैरिव राजेन्द्र द्रोणं वचनमब्रवीत् ॥ २७

C. 7. 6844
B. 7. 192. 35
K. 7. 193. 36

(for अस्यन्तम्).

19 Śs missing (cf. v. 1. 1). —^a) Dn₂ D₄.₃
 इव (for इह). M₄ आचार्यः. —^b) T G₁.₃.₄ M
 सोढुम्; G₂ द्रोणम् (for योद्धुम्). —^c) D₁.₃ त्वं;
 T G₃.₄ द्राग् (for प्राग्). T G₂.₄ एष (for एव). B
 (except B₅) D₁ D₁ G₁ M त्वरस्व प्राग्धायैव (G₁
 M 'देव').

20 Śs missing (cf. v. 1. 1). —^b) B₂ रथं; B₄
 रथे; Bom. ed. धनुः (for नवम्). —^c) B D₁ D₁
 प्रतिपद्य (D₁ 'त्य'); T G₁.₃.₄ M परिमृज्य; G₂ प्रति-
 हत्य (for अभिपत्य). Ś₁ आदधे. D₅ प्रतिगृह्णाह्वामास-
 — D₃ reads 20^d-21^c on marg. —^d) D₁ D₁.₃ G₃
 आयुधं. D₁ परमं (for -प्रवरं). — After 20, D₅
 ins.: 1323*.

21 Śs missing (cf. v. 1. 1). D₃ reads 21^{ab} on
 marg. —^a) D₅ संरब्धस्य. D₁ स (for च). Ś₁
 K₁₋₃ संरब्धः स शरानस्य; K₄ स शरानस्यनस्य (sic);
 M₃.₄ स संरब्धः शरानस्य. —^b) D₃ दुर्वारितं (for
 'रणं'). D₅ द्रोणस्यामिततेजसः. —^c) K₁.₂ D₁ D₁
 D₁.₃.₆ G₂ निवारयिषु (D₁ 'तु')र; D₅ विचारयिषुः;
 G₁ M निपातं (for विचारं). —^d) D₃ अथ बाणैर्
 (for शरवर्षैर्).

22 Śs missing (cf. v. 1. 1). —^a) D₁ D₁.₃
 निवारयतां; T G₂.₄ व्यवा (G₃ व्यदा; G₄ विदा)र
 (for न्यवारं). G₁ M₁.₂ तौ निपत्य रथश्रेष्ठौ; M₃.₅
 तावुभौ रथिनां श्रेष्ठौ. —^b) D₅ रथः; G₁ M₁.₂ शर-
 (for रण-). D₁ D₁.₇ शोभिनी; D₂ G₅ शोभनी.
 —^c) K₁.₂ D₁ transp. ब्राह्मणि and दिव्यानि. D₃.₅.

1. 3 ब्राह्मणि; D₅ ब्रह्मादीन्; G₁.₂ M ब्राह्मादि. D₅.
 5. 1. 3 दिव्यानि. D₅ अस्त्राणि रिपुघातिनौ.

23 Śs missing (cf. v. 1. 1). —^a) D₁ D₁ मही-
 पाल (for महाराज). —^b) Ś₁ K₁₋₃ B₃ D₁ D₁ आच्छा-
 दयन्; D₅ प्राच्छादयद्. —^c) D₁ D₁ धृष्टः (for
 पार्श्वतः).

24 Śs missing (cf. v. 1. 1). —^a) B₂.₄ D₁
 D₁ स वसती (D₁ 'ता')ञ्; D₅ स वसताञ्; S (G₅
 missing) वसा (T 'शा')र्त्ताञ्. D₁ D₁ D₅ शिवांश्च;
 G₁ M₁.₂ शिवांश्च (for शिवांश्च). —^b) Some MSS.
 बाह्मीकान्. —^c) Ś₁ (sup. lin.) रक्षिष्यमाणः संप्राप्ते;
 D₅ रिरक्षयंतः सं. —^d) M₃.₅ द्रोणाद् (for द्रोणं).
 T G₂ व्यधमद्.

25 Śs missing (cf. v. 1. 1). —^a) B D₁ D₁
 T G₂.₄ M₃ तथा; D₁ D₂.₄.₅.₇.₈ ततो (for तदा).
 — D₁ om. 25^c-26^d. —^c) D₁ ययौ प्र-; D₅ स वभौ
 (for वभौ प्र-). Ś₁ K₁₋₃ D₁.₅.₇.₈ अस्त्राण (for
 आशाः).

26 Śs missing (cf. v. 1. 1). D₁ om. 26 (cf.
 v. 1. 25). —^b) D₂.₄.₅.₇.₈ चैव (for चैनं). —^c)
 D₁.₅.₇.₈ G₁ M₁.₂.₅ मर्मणि. Ś₁ K (K₂ missing)
 D₁.₃ [अ]भ्य (K₁ 'त्य')वधीद्; D₄.₅ [अ]भिहनद् (for
 [अ]भ्य). M₃ om. भूयः. D₅ मर्मण्यमिरते चैनं. —^d)
 D₃ G₁ M₁.₂ परमां गतः; D₄ 'मागमत्'. — After 26,
 B D₁ D₁ read 164. 78-121.

27 Śs missing (cf. v. 1. 1). —^a) D₁ दृढक्रुद्धो;
 D₅ भृशं क्रुद्धो; G₁ M दृढक्रोधी. —^b) K₁ आक्षिप्य;
 G₁ M आक्षिप्य (for आक्षिप्य). D₁.₃ द्रोणं संक्षिप्य तं रथं.

C. 7, 2845
B. 7, 192. 37
K. 7, 193. 37

यदि नाम न युध्येरञ्जिषिता ब्रह्मवन्धवः ।
स्वकर्मभिरसंतुष्टा न स्म क्षत्रं क्षयं व्रजेत् ॥ २८
अहिंसा सर्वभूतेषु धर्मं ज्यायस्तरं विदुः ।
तस्य च ब्राह्मणो मूलं भवांश्च ब्रह्मवित्तमः ॥ २९
श्वपाकवन्मलेच्छगणान्दत्त्वा चान्यान्पृथग्विधान् ।
अज्ञानान्मूढवद्ब्रह्मणुत्रदारधनेप्सया ॥ ३०
एकस्यार्थे बहून्दत्त्वा पुत्रस्याधर्मविद्यथा ।
स्वकर्मस्थान्विकर्मस्थो न व्यपन्नपसे कथम् ॥ ३१

28 Śs missing (cf. v. l. 1). —^a) D₄-7 G₃ युद्धेर्ञ्. —^o) D₃-5 च संतुष्टा (for अस्ते). D₆ कर्मसु स्वेषु संतुष्टा. —^d) T G₃.4 हि (for स्म). Ś₁ K₃ न क्षत्रं प्रलयं व्रजेत्.

29 Śs missing (cf. v. l. 1). —^a) T G₃ M₄.5 अहिंसा. —^b) K₁-3 धर्म-. G₁ M₂ ज्यायस्करं; M₃ न्यायस्तरं. Ś₁ K (K₅ missing) D₁ भवेत् (for विदुः). D₂ D₃-5 धर्मस्यावि (D₅ 'स्य वि'स्तरं विदुः; D₇.3 धर्मस्य परमं वपुः. —^o) D₃ हि (for च). Ś₁ K₂.4 B₁ D₁ D₂ D₁.6 M₄.5 ब्राह्मणा; K₁.3 ब्रह्मणा; M₃ ब्रह्मणो. —^d) D₂ D₃-5.7.8 हि (for च). D₆ भवान्ब्रह्मविदुत्तमः.

30 Śs missing (cf. v. l. 1). —^b) S (G₅ missing) प्राणीन् (for चान्यान्). — After 30^{ab}, T G₂-4 ins.:

1321* भरन्ति हि सुतान्दारांस्त्वद्ब्रह्मज्ञानमोहिताः ।

—^o) D₂ ब्रह्ममूढत्वं; D₅ मूढब्रह्मत्वं (for 'वद्ब्रह्मन्'). —^d) Ś₁ K (K₆ missing) D₁.4.6.7.8 T G₂-4 -धनेच्छया (for 'प्सया').

31 Śs missing (cf. v. l. 1). —^a) D₁.5 अन्यान्; D₇.8 अर्थान् (for इत्वा). —^b) K₄ D₂ D₁.2.8 [अ]धर्मविद्यया. — For 31^{ab}, D₆ S (G₅ missing) subst.:

1322* एकपुत्रस्य चार्थे त्वं बहून्निघ्नजनाधिपान् ।

[D₆ एकस्य पुत्रस्यार्थे त्वं (for the prior half). G₁ M₁.2 नराधिपान्.]

—^o) M₃ स्वकर्मस्था विकर्मस्था. —^d) T G₃.4 [अ]पन्नपयसे; G₁ M₁.2 चापन्नपसे; M₃-5 [ए]वाप* (for व्यप*). G₂ नोपत्तापयसे तु किं. — D₇.8 ins. after 31: D₆ after 20:

स चाद्य पतितः शेते पृष्टेनावेदितस्त्व ।
धर्मराजेन तद्वाक्यं नातिशङ्कितुमर्हसि ॥ ३२
एवमुक्तस्ततो द्रोणो भीमिनोत्सृज्य तद्धनुः ।
सर्वाण्यस्त्राणि धर्मात्मा हातुकामोऽभ्यभाषत ।
कर्ण कर्ण महेष्वास कृप दुर्योधनेति च ॥ ३३
संग्रामे क्रियतां यत्नो ब्रवीम्येष पुनः पुनः ।
पाण्डवेभ्यः शिवं वोऽस्तु शस्त्रमभ्युत्सृजाम्यहम् ॥ ३४
इति तत्र महाराज प्राक्रोशद्रौणिमेव च ।

1323* आचारहीन निर्लज्ज ब्रह्मवन्धो नराधम ।

इदानीं तिष्ठ दुर्बुद्धे न मे जीवनगमिष्यति ।

[(L. 1) D₆ आचार्य- (for 'र-'). D₇ नराधमः.]

— D₆-8 cont.: K₁ D₁ D₂ D₁-5 T₁.2 (marg.) ins. after 31:

1324* यस्त्यार्थे शस्त्रमादाय यमपेक्ष्य च जीवति ।

[D₃.7.8 यस्त्यार्थ. D₃ चास्त्रम् (for शस्त्रम्). D₁.5 आदत्से (for आदाय).]

32 Śs missing (cf. v. l. 1). —^a) D₄ चाद्य (for चाद्य). D₄ पततः (for पतितः). D₆ S (G₅ missing) स चासौ (T 'जौ') निहतः शेते. —^b) Some MSS. पृष्टेन. D₁ D₂ [अ]विदितस्त्व (for [आ]वे). D₃.4 पृष्टे नो (D₃ 'थिव्यां') विदितस्त्व; S (G₅ missing) तव पुत्रः सुमदधीः. —^o) D₂.3.6-8 S (G₅ missing) धर्मराजस्य (for 'राजेन'). D₁.5 ग्राह्यं (for वाक्यं). —^d) Ś₁ K₃ नाप; B D₂ D₃ नाभिः; D₃ न वि- (for नाति-).

33 Śs missing (cf. v. l. 1). —^a) K₂ उक्त्वा (for उक्तस्). D₃ तदा (for ततो). —^b) Ś₁ K (K₅ missing) D₁.4-8 S (G₅ missing) भीममुत्सृज्य (for भीमिनो). — After 33^{ab}, S (G₅ missing) ins.:

1325* संन्यासाय शरीरस्य योक्ष्यमाणः स वै द्विजः ।

— D₂ om. 33^{ab}. —^d) D₆ G₁ M₁.2 त्यक्तुकामो; G₂ मोक्तु* (for हातु*). — After 33^{ab}, S (G₅ missing) ins.:

1326* कर्णदुर्योधनौ राजस्त्वरमाणः पराक्रमी ।

[G₁ M सरमाणः (for त्वर*).]

— Before 33^{ab}, T G₂-4 ins. द्रोणः.

34 Śs missing (cf. v. l. 1). T G₁-4 M₁.2 om. 34^{ab}. — For 34^{ab}, M₃-5 subst.:

उत्सृज्य च रणे शस्त्रं रथोपस्थे निवेश्य च ।
अभयं सर्वभूतानां प्रददौ योगयुक्तवान् ॥ ३५
तस्य तच्छिद्रमाज्ञाय धृष्टद्युम्नः समुत्थितः ।
खड्गी रथादवप्लुत्य सहसा द्रोणमभ्ययात् ॥ ३६
हाहाकृतानि भूतानि मानुषाणीतराणि च ।

द्रोणं तथागतं दृष्ट्वा धृष्टद्युम्नवशं गतम् ॥ ३७
हाहाकारं भृशं चक्रुरहो विगिति चाबुवन् ।
द्रोणोऽपि शस्त्राण्युत्सृज्य परमं साम्यमास्थितः ॥ ३८
तथोक्त्वा योगमास्थाय ज्योतिर्भूतो महातपाः ।
दिवमाकामदाचार्यः सद्भिः सह दुराक्रमम् ॥ ३९

C. 7. 2261
B. 7. 192. 53
K. 7. 193. 54

1327* रणे कृतो मया यत्नो यन्मा व्यय सदा सदा ।
— °) B₅ हि; D₂ D₁ च; D₅ न (for वो). D₅
स्वस्ति च: पांडुपुत्रेभ्यः. — °) D₂. 4. 5. 7. 8 उत्सृज्य यामि
(for अभ्युत्सृजामि). — After 34, M₃-5 ins.:

1328* उत्सृज्यामेव वै प्राणान्दिदं गच्छामि तांप्रतम् ।

35 Ś₂ missing (cf. v. l. 1). T G₁. 2. + M₁. 2 read
35 after 37^{ab}. — °) M₃-5 इत्येवं समरे राजन्. — °) D₅
द्रोणम्; D₅ द्रोण (for द्रौणिम्). B₁. 3 D₅ आहवे
(for एव च). S (G₅ missing) द्रोणो धीना (M₃-5 'णः
क्रोश' न्युनः पुनः. — °) Ś₁ D₂ D₂. 3 स उत्सृज्य; K₂
स त्सृज्य; D₁. 6 समुत्सृज्य (for उत्सृज्य च). D₂. 3
स (for च). S (G₅ missing) समरे (for च रणे).
— °) Ś₁ K₂ D₁ न्यवेश (D₁ 'श्य'तः K₁ [s]त्यशेरतः;
K₃ न्यवेश च; B D₂ D₂. 3 M₄. 4 निविश्य च (for
निवेश्य च). — °) S (G₅ missing) -भूवेभ्यः (for -भू-
तानां). — °) M₁. 2 प्रययौ (for प्रददौ). Ś₁ K₃ योग-
युक्तवाक्; B D₅ युक्तवत्; D₂. 4. 5 युक्तवान्; T G₁-4
M₁. 2 वित्तदा; M₃-5 मास्थितः (for युक्तवान्).

36 Ś₂ missing (cf. v. l. 1). — °) G₁ M₁. 2. 4
आस्थाय (for आजाय). — °) K₁ B D₅ D₁ प्रताप-
वान्; D₃ समुच्छ्रितः (for स्थितः). D₅ S (G₅ miss-
ing) पद्मामेव स पारितः. — After 36^{ab}, K₁ B D₅
D₁ D₁ ins.:

1329* सशरं तदबुधोरे संन्यस्याथ रथे ततः ।
— °) D₅ रथी (for खड्गी). D₁. 3 अबुध (for 'बुध').
— After 36, S (G₅ missing) ins.:

1330* प्रभुते स्वध द्रोणाय धृष्टद्युम्ने महारथे ।

[G₂ विप्रबुधेय द्रोणाय (for the prior half).]

37 Ś₂ missing (cf. v. l. 1). — °) D₁. 5 स्थाव-
राणि (for मानुषाणि). G₂ तु (for च). D₁. 5 मानुषाणां
च (D₁ त)राणि च. — After 37^{ab}, T G₁. 2. 4 M₁. 2
read 35. G₃ om. 37^c-38^d. — °) D₅ T G₁. 2 M
विचेतसं (G₁ M₁. 2 'नं' (for तथागतं).

38 Ś₂ missing (cf. v. l. 1). G₃ om. 38 (cf. v. l.
37). — °) T G₂. 4 अभयं (for भृशं). — °) Ś₁

K (K₅ missing) D₁ सर्वशः; D₂ चोक्तवान्; D₄. 5
चात्रवीव (for चाबुवन्). — °) K₃ B₁ D₅ T G₁. 2
M शस्त्रमुत्सृज्य. — °) K₁ परमां. K₁ शांतिम्; B
D₅ D₁ D₁. 5 शम्यम्; D₂ D₂ सांख्यम्; D₁. 3 T
G₂. 4 M₁ शमम्; G₁ M₁-2. 5 शौचम् (for साम्यम्).
D₁ परमाभ्यासमास्थितः; D₅ 'मात्मन्यवस्थितः.

39 Ś₂ missing (cf. v. l. 1). — °) Ś₁ K₁. 2. 4
D₁ तदुक्त्वा; B₃. 5 तथोक्तो. — °) D₂. 4 ज्योतिर् (for
ज्योतिर्). D₅ भूत्वा (for भूतो). G₁ M₁. 2 महायथाः
(for 'तपाः). — After 39^{ab}, K₂ (marg.). + D (except
D₁) ins.:

1331* पुराणं पुरुषं विष्णुं जगाम मनसा परम् ।

सुखं किंचित्समुद्राम्ब्य विष्टभ्य उरमग्रतः ।

निर्मलितः सत्त्वस्थो निश्चिन्त्य हृदि धारणाम् ।

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म ज्योतिर्भूतो महातपाः ।

स्मरित्वा देवदेवेशमक्षरं परमं प्रभुम् । [5]

[(L. 1) K₁ D₁ यत् (for विष्णु). — D₅ om.
lines 2-4. — (L. 2) D₁. 3 क्षयं (for सुखं). D₂
D₁. 4 समुद्रम्. K₂. 4 D₁. 4 विष्टभ्योरस्तथागतः (K₁ 'था
कृतं; D₁ 'था कृतः); D₅ 'न्य चतुरोग्रतः (for the post.
half). — (L. 3) K₁ सत्त्वस्थो; D₁ तत्त्वस्थो (for स').
K₂ D₁ धारणं. — (L. 4) K₁ D₁ व्याहरन्तिर्मित्तमिन्द्रियः;
D₁. 3 ज्योतिर्भूतं सनातनं (for the post. half). — K₂
om. line 5. — (L. 5) D₁. 5 स्मरितो; D₁. 3 स्मरं
(D₁ 'र'तं.]

— D₁. 3 cont.:

1332* निरावरणमाचार्यं पद्मामस्तदनन्तरम् ।

— °) K₁ दिव्यम्. K₂. 4 B₁. 3-5 D (except D₁) G₁
M₁. 2 आक्रमद् (for आक्रा'). — °) K₂ सद्भिः स हि;
K₁ B₅ D₂ साक्षात्सद्भिः; D₂. 4. 5 सह सद्भिर् (by
transp.); D₁. 3 सर्वसद्भिर्. K₃. 4 D₂ दुराक्रमां (D₂
'मः); B₅ (marg.) महामतिः and also महाद्युतिः; D₅
S (G₅ missing) यथाक्रमं; D₂. 5. 7. 8 दुरासदं (D₁ 'दां;
D₃ 'दः') (for 'क्रमम्). D₅ योगमास्थाय केवलं. — After
39, S (G₅ missing) ins.:

1333* मूर्धानं यस्य निर्भिद्य ज्योती राजन्महात्मनः ।

C. 7. 8861
B. 7. 192. 53
K. 7. 193. 56

द्वौ दूर्याविति नो बुद्धिरासीत्स्मिन्तथा गते ।
एकाग्रमिव चासीद्धि ज्योतिर्भिः पूरितं नभः ।
समपद्यत चार्काभे भारद्वाजनिशाकरे ॥ ४०
निमेषमात्रेण च तज्ज्योतिरन्तरधीयत ।
आसीत्किलकिलाशब्दः प्रहृष्टानां दिवौकसाम् ।
ब्रह्मलोकं गते द्रोणे धृष्टद्युम्ने च मोहिते ॥ ४१
वयमेव तदाद्राक्ष्म पञ्च मानुषयोनयः ।
योगयुक्तं महात्मानं गच्छन्तं परमां गतिम् ॥ ४२

अहं धनंजयः पार्थः कृपः शारद्वतो द्विजः ।
वासुदेवश्च बाष्पण्यो धर्मराजश्च पाण्डवः ॥ ४३
अन्ये तु सर्वे नापश्यन्भारद्वाजस्य धीमतः ।
महिमानं महाराज योगमुक्तस्य गच्छतः ॥ ४४
गतिं परमिकां प्राप्तमजानन्तो नृयोनयः ।
नापश्यन्गच्छमानं हि तं सार्धमृषिपुंगवैः ।
आचार्यं योगमास्थाय ब्रह्मलोकमरिंदमम् ॥ ४५
वितुन्नाङ्गं शरशतैर्यस्तायुधमसृक्क्षरम् ।

जगाम परमं स्थानं देहं न्यस्य रथोत्तमे ।

40 Ś2 missing (cf. v. l. 1). —^a) B (except B2.4) Dn1 D1 S (G5 missing) इव (for इति). D3 मे (for नो). D5 तत्र स्म (for नो बुद्धिर्). —^b) D5 युधिरासीत्तथागते (sic). —^c) D5 एकस्थम् (for एकाग्रम्). M3-5 चाकाशं (for चासीद्धि). K1 B Dc1 Dn1 D2 च (for हि). T G2-4 एकरूपमिवाभा (G2 'व ह्या-सीज्. —^d) Dn2 M1.2 पूजितं; G2 पूरयन् (for पूरितं). D5 जगत्; D7 मनः (for नभः). —^e) D7.3 read 40^e twice. —^f) D3 समापद्यत. Dn2 चार्काभं; D7.3 (both first time) चा (D3 वा) काशं; S (G5 missing) चोदकामं. Ś1 K1.2 D5 सम (D5 'मा) पद्यतचार्काभं; K3 B Dc1 Dn1 D1 'पद्यतचार्काभं; D4.5 'पतत्तदा (D5 'द्य तथा) काले; D7.3 (both second time) उदिते तु महाराज. —^g) Dn2 D3 'दिवाकरे (Dn2 'रौ) (for 'निशाकरे). B Dc1 Dn1 S (G5 missing) द्रोणस्य निधने तदा (B2-5 Dc1 Dn1 'था; D1 भारद्वाजं निशाकरे; D7.3 (both first time) तेजःपुंजसमावृतं.

41 Ś2 missing (cf. v. l. 1). —^a) T G2.4 तदा (for च तज्). —^b) After 41^{ab}, D7 reads 42^a for the first time, repeating it in its proper place. —^c) D5 'दृष्टः (for 'शब्दः). Dn2 S (G5 missing) आसीत्किलि (Dn2 'कल) किलाशब्दः. —^d) D2 विशां पते (for दिवौकसाम्). —^e) Ś1 K1.2 ब्रह्मलोकः. —^f) Dn2 मोदिते (for मोहिते). D5 धृष्टद्युम्नेन संगते.

42 Ś2 missing (cf. v. l. 1). —^a) Ś1 K1 तद- (K1 'म) द्राक्ष्म; D4-8 तदाद्राक्षं (D5.7 'क्षयं); T G1-4 M1.2 तदा राजन्; M3-5 [अ] न्वपश्यामः (for तदा द्राक्ष्म). —^b) M2.5 मानुष्ययोनयः. —^c) D7 reads 42^a for the first time after 41^{ab}.

43 Ś2 missing (cf. v. l. 1). —^b) D5 तथा (for द्विजः). Ś1 K1-4 B Dc1 Dn D1-5.7.8 भारद्वा-

जस्य चात्मजः (D2 वंशजः). —^c) D5 तु (for च). —^d) B Dc1 Dn1 T G2-4 धर्मपुत्रश्च (for 'राजश्च). Dn2 D2 [s] थ (for च). G1 M1.2 युधिष्ठिरः (for च पाण्डवः).

44 Ś2 missing (cf. v. l. 1). —^a) Dn1 अन्यत्र (for अन्ये तु). D1.5.7.8 सर्वे च (for तु सर्वे). Dn2 अन्यः सर्वे विनापश्यन्. —^b) D1 धर्मतः (for धीमतः). D5 देवगुह्यं परं महद्; S (G5 missing) देवगुह्यं तमु- (G1.2 M1.2 'ह्यमनु-; G4 'ह्यं तदु) त्तमं. —^c) D5 S (G5 missing) द्विजैर्द्रस्य (for महाराज). —^d) After 44, N (Ś2 K5 missing) ins.:

1331* ब्रह्मलोकं महद्दिव्यं देवगुह्यं हि तत्परम् ।

[Ś1 K3 D5 हि तं; Dn2 D1.5.7 च तद्; D5 तु तद् (for महद्). B1 दीप्तं (for दिव्यं). K1.2 D1 ब्रह्मलोकं हितं दिव्यं; D5 'गुह्यं च तदिव्यं (for the prior half). D1 देवलोकं (for 'गुह्यं). B3 Dc1 Dn1 D2.1.5.7.8 च (for हि). D3 यत्परं.]

45 Ś2 missing (cf. v. l. 1). —^a) Dn2 D1.4.5.7.8 एकां परां (D7.8 'इ) (for परमिकां). D5 M1.2 प्राक्षे. —^b) D5 ह्यजानन्तो. K1.8 D1.7.8 [s] न्ययोनयः; Dn2 नृपोत्तमः; D3 व्यजानयं (for नृयोनयः). —^c) D5 तु (for हि). —^d) D3 तैः (for तं). D5 'सत्तमैः (for 'पुंगवैः). —^e) Dc1 Dn D3-5 अरिंदमः; D5 निनीपवः; G2 अनुत्तमं. T G2.4 ब्रह्मलोकगतं विभुं.

46 Ś2 missing (cf. v. l. 1). —^a) Ś1 K1 विशु- झांगं; K2 D1.4.6 विवु (D1 'च्य) झांगं; D2 किंतु; D5 विध्यन्नागैः; D7.8 विभिन्नांगं (for विवु). K2-4 B Dc1 Dn G2 शरवातैर्; D1.7 शतशरैर् (for शरशतैर्). D3 पितुर्नामृष्यत वधं. —^b) Ś1 (orig.) अनक्षतं; Ś1 (sup. lin.) K1 D1.4.7.8 अनक्षरं; K1 अक्षयं; K2 lacuna; K3 *क्षतं; B5 अस्त्रकलुप्तं; Dn2 असृक्क्षुरं;

धिकृतः पार्षतस्तं तु सर्वभूतैः परामृशत् ॥ ४६
तस्य मूर्धानमालम्ब्य गतसचस्य देहिनः ।
किञ्चिदनुवतः कायाद्विचकर्तासिना शिरः ॥ ४७
हर्षेण महता युक्तो भारद्वाजे निपातिते ।
सिंहनादरवं चक्रे भ्रामयन्खड्गमाहवे ॥ ४८
आकर्णपलितः श्यामो वयसाशीतिपञ्चकः ।
त्वत्कृते व्यचरत्संख्ये स तु षोडशवर्षवत् ॥ ४९
उक्तवांश्च महाबाहुः कुन्तीपुत्रो धनंजयः ।

जीवन्तमानयाचार्यं मा वर्षीर्जुपदात्मज ॥ ५०
न हन्तव्यो न हन्तव्य इति ते सैनिकाश्च ह ।
उत्क्रोशन्नुनश्चैव सानुक्रोशस्तमाद्रवत् ॥ ५१
क्रोशमानेऽर्जुने चैव पार्थिवेषु च सर्वशः ।
धृष्टद्युम्नोऽवधीद्रोणं रथतल्पे नरर्षभम् ॥ ५२
शोणितेन परिक्रिन्नो रथाद्भूमिरिदमः ।
लोहिताङ्ग इवादित्यो दुर्दर्शः समपद्यत ।
एवं तं निहतं संख्ये ददृशे सैनिको जनः ॥ ५३

C. 7. 5877
B. 7. 192. 69
K. 7. 193. 71

Ds अरिदम (for असङ्क्षरम्). Ds न्यस्तशस्त्रमुपागमत्;
T G2-4 Ms (inf. lin. as in text) क्ष (Gs धु) रंतं रुधिरं
बहु. — T G2-4 Ms-5 ins. after 46^{ab}: G1 M1.2 cont.
after 1336*:

1335* विकृत्य पार्षतः खड्गं क्रोधामर्षवशं गतः ।

— On the other hand, G1 M1.2 ins. after 46^{ab}:

1336* अभ्यद्रवत्स वेगेन पार्षतः खड्गचर्मभृत् ।

प्रदुतं त्वथ वेगेन तमाचार्यजिघांसया ।

प्राक्रोशन्पाण्डवाः सर्वे फल्गुनश्चादुतो रथात् ।

न हन्तव्यो न हन्तव्य इति ते सर्वतोऽनुवत् ।

क्रोशस्तु पाण्डवेयेषु अनुधावति फल्गुने । [5]

विकृतः सर्वभूतस्य ब्रह्मभूतं परामृशत् ।

[(L. 1) G1 अभ्यद्रवत्. — (L. 4) M1.2 इह (for
शिरः).]

— °) Ds तत्र (for तं तु). S (Gs missing) दृश्य-
(Ms-5 निघं)मानः सर्वभूतैः. — °) Ds सर्वलोकैः; S
(Gs missing) केशपक्षे (for सर्वभूतैः). S1 K1 B2 परा-
मृपत्.

47 S2 missing (cf. v. l. 1). — °) S1 K1-3 B2
D2.3 आलक्ष्य; K1 Dn2 D1.5.7.8 आलोक्य (for आ-
लम्ब्य). — °) K1 Dn2 देहतः. G1 M1.2 खड्गमुद्रह
पार्षतः. — °) Ds शिरो व्यपचकर्त ह; S (Gs missing)
शिरोभ्यव (T G3.4 रोस्य वि)चकर्त ह.

48 S2 missing (cf. v. l. 1). T G2-4 Ms-5 om.
48. — °) D1 दूषणं (for हर्षेण). Dn1 युक्ते. — °)
Dn1 न पातिते (for निपातं). — °) S1 K1.2 भ्रमयन्.
G1 M1.2 उत्तमं (for आहवे).

49 = (var.) 103. S2 missing (cf. v. l. 1).
— °) S1 K1-3 G1 M1.2 आसन्नः; Ds आपन्नः (for

आकर्णः). — °) B1.3.4 Dc1 Dn1 यो वर्षाशीतिको
द्विजः; B2.5 T G2-4 वयसाशीतिको द्विजः; G1 M
तिकात्परः. — °) K1 Dn1 D1.5.8 व्यचरन्; Ds
[s]भ्यचरत् (for व्यचरं). S (Gs missing) त्वत्कृते
निघनं प्राप्तः. — °) Ds वृद्धः (for स तु). Dn1 वार्षिकः
(for वर्षवत्).

50 S2 missing (cf. v. l. 1). — After 50^{ab}, Ds
ins.:

1337* बाहयित्वा रथं तत्र मा द्रोणं घातयिष्यसि ।

— °) D1-3 एनमाचार्यं; G1.3.4 मानया (for आनया).
Ms-5 जीवमानं समाचार्यं. — °) Dn1 D1.5 नावधीर्
(for मा वधीर्).

51 S2 missing (cf. v. l. 1). — °) D3 [अ]ब्रुवन्
(for च ह). — °) S1 K3 प्राक्रोशन्; Dc1 Dn1 चुक्रो
(for उत्क्रो). Ds स (for [ए]व). Ds उदक्रोशदनुनश्च.
— Ds om. (hapl.) 51^a-52^a. — °) K1 सानुक्रोशस्;
Ms-5 'क्रोशं (for 'क्रोशस्). B Dc1 Dn1 D1 T G2-4
तमा (T G2-4 'या)ब्रजवत्; Dn2 D1.5.7.8 तमब्रवीत्;
Ds तमाह्वयत् (for 'द्रवत्). Ds सानुजस्त्रमुपाद्रवत्.

52 S2 missing (cf. v. l. 1). Ds om. 52^a (cf.
v. l. 51). — °) Ds क्रोधमाने. — °) Dn2 G1 M1.2
नरर्षभ.

53 S2 missing (cf. v. l. 1). S (Gs missing)
repeats 53^{ab} after 1340*. — °) Ds लोहितेन (for
शोणि). S (Gs missing) (all second time) परिक्रिन्वा.
S (Gs missing) (all first time) स हि तेन परिक्षितो.
— °) Dn2 D1.5-8 अयापतवत्; Ds अपातयत् (for
अरिदमः). Ds रथाद्भूमिर्यापतवत् (sic); S (Gs missing)
(all second time) रणभूमिश्च भारत. — °) T G1.3.4
M1.2 (all second time) लोहितार्द्रः; G2 (second time)

C. 7. 8878
B. 7. 192. 70
K. 7. 193. 71

धृष्टद्युम्नस्तु तद्राजन्भारद्वाजशिरो महत् ।
तावकानां महेष्वासः प्रमुखे तत्समाक्षिपत् ॥ ५४
ते तु दृष्ट्वा शिरो राजन्भारद्वाजस्य तावकाः ।
पलायनकृतोत्साहा दुद्रुवुः सर्वतो दिशम् ॥ ५५
द्रोणस्तु दिवमास्थाय नक्षत्रपथमाविशत् ।
अहमेव तदाद्राक्षं द्रोणस्य निधनं नृप ॥ ५६
ऋषेः प्रसादात्कृष्णस्य सत्यवत्याः सुतस्य च ।
विधूमामिव संयान्तीमुल्कां प्रज्वलितामिव ।

*ताम्र; Ms. s (both second time) *ताम्र; Ms. (second time) *ताम्र (for *ताम्र). —^a) N (except S₁; S₂ Ks missing) दुर्धर्षः; S (G_s missing) (all first time) दुर्धर्षः (G_s दुर्धर्षः) (for दुर्धर्षः). S (G_s missing) (all second time) चाभवत्तदा (for समपद्यत). —^c) B₁ Dc₁ Dn₁ वि-; D_s तु (for तं). Ms. s संखे. G₁ M_{1.2} एवं विनिहते संखे. —^f) G₁ M_{1.2} ददृशुः. M₁ (by corr.) सैनिका जनाः; M₄ *कोर्जुनः.

54 S₂ missing (cf. v. l. 1). T G₂₋₄ M₃₋₅ om. 54-55. G₁ M_{1.2} read 54-55 after 57. —^a) Dn₂ Ds-5. 7. 3 ततो (for तु तद्). —^b) G₁ M_{1.2} निचकतं (for भारद्वाज). K₄ B Dc₁ Dn₁ D_{1.3.5} G₁ [S] हरत् (for महत्). —^d) D_s प्रमुखेन (for *खे तत्). G₁ M_{1.2} ह्यग्रतस्तदपातुदत्.

55 For the sequence in G₁ M_{1.2}, cf. v. l. 54. S₂ missing (cf. v. l. 1). T G₂₋₄ M₃₋₅ om. 55 (cf. v. l. 54). —^a) D₁ तेन (for ते तु). —^b) B₁ D₂ सैनिकाः (for तावकाः). — After 55^{ab}, G₁ M_{1.2} ins. :

1338* रथान्निपतितं द्रोणमाचार्यं ब्राह्मणं गुरुम् ।

—^a) G₁ M_{1.2} दुद्रुवुस्ते दिशो दश.

56 S₂ missing (cf. v. l. 1). —^a) D_s S (except Ms. s; G_s missing) योगम् (for दिवम्). —^b) D_s पदम् (for पथम्). D₁ आविशन्. — D₄ om. 56°-58°. —^{cd}) S₁ K₁₋₃ D_{2.7} एतद् (for एव). Dn₁ अहमेवा-द्राक्षं द्रोणस्य निधनं नृपसत्तम (hypermetric).

57 S₂ missing (cf. v. l. 1). D₄ om. 57 (cf. v. l. 56). —^a) D_s 7. 3 कवेः (for ऋवेः). — After 57^a, G₁ M_{1.2} ins. :

1339* चरवारस्ते च मानुषाः ।

अग्नेरिव शिखां दीप्तामुल्कां प्रज्वलितामिव ।

अपश्याम दिवं स्तब्ध्वा गच्छन्तं तं महाद्युतिम् ॥ ५७
हते द्रोणे निरुत्साहान्कुरूपण्डवसृञ्जयाः ।
अभ्यद्रवन्महावेगास्ततः सैन्यं व्यदीर्यत ॥ ५८
निहता हयभूयिष्ठाः संग्रामे निशितैः शरैः ।
तावका निहते द्रोणे गतासव इवाभवन् ॥ ५९
पराजयमथावाप्य परत्र च महद्भयम् ।
उभयेनैव ते हीना नाविन्दन्धृतिमात्मनः ॥ ६०
अन्विच्छन्तः शरीरं तु भारद्वाजस्य पार्थिवाः ।

अपश्याम दिवं स्तब्ध्वा महिमानं महात्मनः ।

[(L. 2) Post. half = 57^d. — (L. 3) Prior half = 57^e. G₁ तमात्मनः (for महात्मनः).]

— G₁ M_{1.2} om. 57^b. —^b) K_{1.2.4} B_{2.3.5} Dn₂ D_{2.6} तु; T G₂₋₄ M₃₋₅ ह (for च). —^c) D₃ अधूमा (for वि). D_{1.2.3} इह (for इव). D₃ संजाताम्; D₅ संयातीम्; D₆ खे यांतीम् (for संयान्तीम्). —^d) D₆ T G₂₋₄ M₁ प्रभो; Ms. s विभो (for इव). —^e) D₇ अपश्यामि. D_s वर्त्मा (for स्तब्ध्वा). —^f) D₃ तं गच्छन्तं (by transp.); D₆ द्रोणं तच्च. K₁ lacuna; G₁ M_{1.2} च (for तं). K_{1.2} महाबलं; T G_{1.2} M_{1.2.5} मति (for *द्युतिम्). — After 57, G₁ M_{1.2} read 54-55.

58 S₂ missing (cf. v. l. 1). B₂ reads 58^{ab} on marg. —^a) S₁ K (K_s missing) B₁ Dn₂ D_{1.3.6} M_{1.2} निरु (D_s हतो)त्साहाः. —^b) S₁ K₂₋₄ B₁ Dn₂ D_{1.3.6.7} M_{1.2} कुरु- (for कुरुन्). K₁ कुरुसंजयपांडवाः. —^c) S₁ K₁₋₃ D₁ महावीर्यासु; Dn₂ वेणु- (sic); D₄ वेगासु; Ms. s भागासु (for वेगासु). —^d) K₁ ततं; Dn₂ D₄ सु (D₄ सु)तः (for ततः).

59 S₂ missing (cf. v. l. 1). —^a) T G₂₋₄ निराशा; G₁ M_{1.2} ते हता (for निहता). —^b) G₁ M_{1.2} संग्रामे च पराजिताः. —^c) D₃ S (G_s missing) गतसत्त्वा (for गतासव).

60 S₂ missing (cf. v. l. 1). —^a) Dn₁ अथाव्याप्य; S (G_s missing) अवाप्याथ (by transp.). —^b) D_s परेभ्योस्तु (for परत्र च). B_s महाभयं. —^c) T ते भीता; G₂ तेनाहं; G_{3.4} ते भूता (for ते हीना). D₄ उभावपि महाराज. —^d) S₁ K_{1.2} D_s गतिम्; K_s मतिम् (for धृतिम्). S (G_s missing) व्यनिदन्मतिमात्मनः.

नाध्यगच्छंस्तदा राजन्कवन्धायुतसंकुले ॥ ६१
पाण्डवास्तु जयं लब्ध्वा परत्र च महद्यशः ।
बाणशब्दरवांश्चक्रुः सिंहनादांश्च पुष्कलान् ॥ ६२
भीमसेनस्ततो राजन्ष्टुष्टुस्रश्च पार्षतः ।
वरूथिन्यामनृत्येतां परिष्वज्य परस्परम् ॥ ६३
अब्रवीच्च तदा भीमः पार्षतं शत्रुतापनम् ।
भूयोऽहं त्वां विजयिनं परिष्वक्ष्यामि पार्षत ।

क्षतपुत्रे हते पापे धार्तराष्ट्रे च संयुगे ॥ ६४
एतावदुक्त्वा भीमस्तु हर्षेण महता युतः ।
बाहुशब्देन पृथिवीं कम्पयामास पाण्डवः ॥ ६५
तस्य शब्देन चित्रस्ताः प्राद्ववंस्तावका युधि ।
क्षत्रधर्मं समुत्सृज्य पलायनपरायणाः ॥ ६६
पाण्डवास्तु जयं लब्ध्वा हृष्टा ब्राम्हणानि पते ।
अरिक्षयं च संग्रामे तेन ते सुखमामुवन् ॥ ६७

C. 7. 8692
B. 7. 192. 84
K. 7. 193. 87

61 S₂ missing (cf. v. l. 1). —^a) D₃ G₁ M_{1.2} अनिच्छे (D₃ °च) तः. D₃ अनिच्छेतः शिरस्तस्य. —^b) S (G₃ missing) संयुगे (for पार्थिवः). —^c) K₂ D₃ M₃₋₅ नान्वगच्छंस; T G₂₋₄ नाव° (for नाद्य°). D₃ महाराज (for तदा राजन्). B D₁ D₂ D₃ 2. 4. 6-8 नान्वगच्छन्महाराज. —^d) B₃ -सन्तरे; D₂ D₃ 1. 5. 7. 3 T G₂ M₃₋₅ -संवृते; D₃ -संकुले; G_{3.4} -संयुते (for -संकुले). S₁ K₁₋₃ भारुंडायुतसंवृते; K₃ ***युतसंवृते; D₃ तुमुले युद्धसंकुले. — After 61, S (G₃ missing) ins. :

1340* पतिते स्वेव संरब्धे सेनायां तत्र भारत ।
उदतिष्ठशुरुण्डानां सल्लाप्येकविंशतिः ।

[(L. 1) M₃ [अ]य (for [ए]व). G₁ M_{1.2} दुर्धर्षे (for संरब्धे). — (L. 2) G₂ कवंधानां (for उरुण्डानां).]
— After 1340*, S repeats 53^{ab}. After the second occurrence of 53^{ab}, G₁ M_{1.2} ins. :

1341* आच्छिन्नाः पट्टसैः खड्गैः प्रासैश्च भरतर्षभ ।
हाहाकारेण महता शस्त्रसंतापतापितान् ।
हतान्पर्यवहयौ धान्सजीवानपि चापरे ।
प्रधानहतभूयिष्ठाः कृतचिन्ताः पलायने ।
ते च यौधा महाराज निरुसाहासदाभवन् । [5]
रथिनोऽश्वगतस्थाश्च पादाताश्च विशां पते ।
निहता हतभूयिष्ठा मृता इव हतप्रभाः ।
तावकानां रथश्रेष्ठा उध्वस्ता इव भस्मना ।
अधर्मपूर्वकं युद्धमुपस्कृत्य पराजिताः ।

— After 1341*, G₁ M_{1.2} read 67^{ad} for the first time, repeating it in its proper place.

62 S₂ missing up to 62^{ab} (cf. v. l. 1). —^a) D₁ D₂ D₃ 3 च (for तु). —^b) G₁ M₁ तयैव (for परत्र). — M₃₋₅ om. 62^a-67^b. —^c) S₂ K_{3.4} B₂₋₄ D₁ D₂ 3 T G₁ 2. 4 M_{1.2} बाणशंख.

63 M₃₋₅ om. 63 (cf. v. l. 62). —^a) G₁ M_{1.2} तत्र भीमो महाराज. —^b) K₂ D_{1.2} पार्थिव (K₂ °वः) (for पार्षतः). —^c) T G_{3.4} वरूथिनाव. B D₂ D₃ अदश्येतां; D₃ अमन्येतां (for अनृत्येतां). G₁ M_{1.2} बलाधिकौ प्रननृतुः; G₂ वरूथिनीं विनृत्येतां.

64 M₃₋₅ om. 64 (cf. v. l. 62). —^a) D₂ तु (for च). —^b) D₁ D₂ T G₂₋₄ शत्रुतापनः; D₃ °सुदनं. —^c) S₂ ह; D₃ हि (for हं). T G₂₋₄ परिष्वज्य (for विजयिनं). G₁ M_{1.2} भूयस्त्वामिति तं युद्धे. —^d) K_{3.4} B_{1.4} D₂ D₁₋₃ परिष्वज्यामि; D₂ T G₂₋₄ °वक्ष्यामि (for °वक्ष्यामि). K₂ D₁ पार्थिव; B₃ D_{2.3} T पार्षतं; D₃ भारत. G₁ M_{1.2} परिष्वज्येह पार्षतं. — K₂ om. 64^a-65^a.

65 K₂ M₃₋₅ om. 65 (cf. v. l. 64, 62). —^a) D₃ एवमुक्त्वा तु भीमस्तु. —^b) S₂ [अ]वृत्तः; B₁ D₁ D₂ D₃ 1. 5. 7. 3 [अ]न्वितः; D_{2.6} पुनः; G₁ M_{1.2} [आ] युतः (for युतः). —^c) D₃ G₁ M_{1.2} महता (for पृथिवीं). —^d) D₃ पांडवं; D₃ मेदिनीं (for पाण्डवः). G₁ M_{1.2} कंपयशिव मेदिनीं.

66 M₃₋₅ om. 66 (cf. v. l. 62). —^a) D₃ तेन (for तस्य). —^b) G₁ M_{1.2} पुनः (for युधि). G₂ तावकाः प्राद्ववन्युधि. — After 66^{ab}, G₁ M_{1.2} ins. :

1342* पाण्डवास्तु मुदा युक्ताः सिंहनादं प्रचक्रिरे ।
प्राद्ववंस्ते सुतान्दृष्ट्वा सुमुखं चैव पार्षतम् ।

— G₁ M_{1.2} om. 66^a-67^b. —^c) S₂ क्षत्रं; K₂ D_{1.2} क्षात्रं (for क्षत्रं). D₃ परित्यज्य (for समुत्सृज्य).

67 G₁ M₁ om. 67^{ab} (cf. v. l. 62; 66). —^a) D₁ च (for तु). —^b) D₁ च (for हि). T G₂₋₄ तयैव च महद्यशः. — G₁ M_{1.2} read 67^{ad} for the first time after 1341*. —^c) G₁ M_{1.2} (all second time) रिपु- (for अरि-). S₁ D₃ अरिक्षयेन (D₃ °वे तु) संग्रामे. —^d) D₁ तत् (for ते). B₁ आवसन् (for

C. 7. 693
B. 7. 192. 1
K. 7. 194. 1

ततो द्रोणे हते राजन्कुर्वः शस्त्रपीडिताः ।
हत्प्रवीरा विध्वस्ता भृशं शोकपरायणाः ॥ ६८
विचेतसो हतोत्साहाः कश्मलाभिहतौजसः ।
आर्तस्वरेण महता पुत्रं ते पर्यवारयन् ॥ ६९
रजस्वला वेपमाना वीक्षमाणा दिशो दश ।
अश्रुकण्ठा यथा दैत्या हिरण्यक्षे पुरा हते ॥ ७०
स तैः परिवृतो राजा व्रस्तैः क्षुद्रमृगैरिव ।
अशक्रुवन्नवस्थातुमपायात्तनयस्तव ॥ ७१
क्षुत्पिपासापरिश्रान्तास्ते योधास्तव भारत ।

आदित्येन च संतप्ता भृशं विमनसोऽभवन् ॥ ७२
भास्करस्येव पतनं समुद्रस्येव शोषणम् ।
विपर्यासं यथा मेरोर्वीसवस्येव निर्जयम् ॥ ७३
अमर्षणीयं तद्दृष्ट्वा भारद्वाजस्य पातनम् ।
व्रस्तरूपतरा राजन्कौरवाः प्राद्रवन्भयात् ॥ ७४
गान्धारराजः शकुनिस्त्रस्तस्त्रस्ततरैः सह ।
हतं रुक्मरथं दृष्ट्वा प्राद्रवत्सहितो रथैः ॥ ७५
वरूथिनीं वेगवतीं विद्रुतां सपताकिनीम् ।
परिशृङ्ख महासेनां स्रतपुत्रोऽपयाद्भयात् ॥ ७६

आमुवन्. G₁ M_{1.2} (all second time) प्राप्स्यते सुख-
मामुयुः. — After 67, K₁ B D (except D₂) S (G₅
missing) ins. an addl. colophon [*Sub-parvan* : K₁
B Dc₁ Dn₁ D_{1.2.4.6-8} G_{1.2.4} M_{1.2} द्रोणवध; D_{3.6}
द्रोणाचार्यवध. — *Day of Droṇa's Generalship* : K₁
पंचमद्रिवसयुद्धे. — *Adhy. name* : T G_{1.8} ब्रह्मलोक-
प्रवेशः. — *Adhy. no.* (figures, words or both) : Dn₁
193; D₂ 196; D₃ 86; T G_{2.3} 187; G₁ M_{1.2}
186; G₄ 188; M₃₋₅ 185].

68 ⁶ K₁ शत्रु- (for शस्त्र-). S (G₅ missing)
-विध्वस्ताः (for -पीडिताः). — ⁷ D₆ हत्प्रवीर-. K_{1.2}
विध्वस्ता; D_{3-5.7.8} वित्र* (for विध्व*). — After 68,
N (K₅ missing) ins. :

1343* उदीर्णाश्च परान्दृष्ट्वा हृष्यमाणान्पुनः पुनः ।

अश्रुपूर्णक्षणाद्यस्ता दीना ह्यासन्विशां पते ।

[(L. 1) D_{1.4.6.7} उदीर्णास्तु (D₁ *श्च). D₃ तु (for
च). Ś₁ K₃ D₅ हृष्यमाणाः; K_{1.2} B₄ Dn₁ *मानान् (K₂
B₅ *नाः); K₄ B₅ Dn₂ D_{2.4.5} कंपमानाः (B₅ *नान्);
D_{7.8} ह्यदृष्टाः (D₃ *ष्टः) (for हृष्यमाणान्). — (L. 2)
K₃ तु; B Dc₁ Dn D₃ च (for हि).]

69 ^a K₃ गतोत्साहाः. — ⁷ Ś₂ K_{1.2.4} D₁ आर्त-
स्वनेन विव्रस्ताः. — ⁸ Ś₁ K₃ पुत्रस्ते पर्यवारयत्.

70 ^a D_{7.8} रज्जुता (for *स्वला). S (G₅ miss-
ing) विषण्णवदना दीना (G₁ M₁ भीता; M₂ भीमा).
— ⁶ Ś₂ K_{1.2.4} B (except B₄) D वीक्ष्यमाणा. — ⁷
D_{7.8} अश्रुपूर्णा. — ⁸ D₅ हते पुरा (by transp.). D₆
हिरण्यक्षिणौ हते; G₁ M_{1.2} *ण्याक्षवधे पुरा.

71 ^a D₅ ततः (for स तैः). Dn₂ D_{4.5.7} राजंस्
(for राजा). — ⁷ Dn₁ तत्र (for अव-). — ⁸ D₁

अनाथास्तनयास्तव.

72 ^a K₁ B Dc₁ Dn₁ D_{2.3.5-8} -ग्लानास्; Dn₂
D₁ -ग्लानास् (for -ग्रान्तास्). — ⁶ D₃ T G_{3.4} M_{1.2}
योधास्ते (by transp.); G₁ M₃₋₅ योधास्ते. D_{1.5.7.8}
तत्र (for तव). G₂ योधास्तव च भारत. — ⁷ K₁
B₂₋₅ Dn₂ [इ]व; Dc₁ Dn₁ [ए]व (for च). Ś₂ K₂ शृशे
(for च सं-). — ⁸ Dn₂ om. from भृशं up to अमर्ष-
णीयं त (in 74^a). D_{3.6} G_{1.2.4} M दृढे (for शृशे).

73 Dn₂ om. 73 (cf. v. l. 72). — ⁶ D₇ द्रोणितं
(for शोषणम्). — ⁷ D₆ विपर्यायं. M₃₋₅ अथो (for
यथा).

74 Dn₂ om. up to अमर्षणीयं त (cf. v. l. 72). — ^a
D₆ S (G₅ missing) अप्रेक्षणीयं (for अमर्षं). D_{4.7.8}
T G_{1.2} M_{1.2} तं (for तद्). Ś₁ K₁₋₃ D₁ तत्र; Ś₂
तस्य (for दृष्ट्वा). — ⁶ B₅ घातनं (for पां). — ⁷
D₆ -रूपास्तदा; T G₁₋₄ M_{1.2} -रूपधरा (for *तरा).
G₂ केचित् (for राजन्). — ⁸ Dc₁ Dn₁ D₄ रणे (for
भयात्). — After 74, the sequence in G₁ M_{1.2} is :
77-79, 81, 76, 82, 75, 80.

75 For the sequence in G₁ M_{1.2}, cf. v. l. 74.
D₁ om. (hapl.) 75-77. T G_{3.4} om. (hapl.) 75-76.
— ^a Some MSS. गंधारराजः. — ⁶ D₅ श्वस्रदैः सह
भारतः; D₆ तत्र तत्र नरैः सह; G₁ M_{1.2} त्रासाव्रस्ततरो-
भवत्; G₂ व्रस्तः स्तब्धः स्वसैनिकः; M₃₋₅ ततश्चस्ततरो
भृशं. — ⁷ B_{1-3.5} Dc₁ Dn₁ श्रुत्वा (for दृष्ट्वा). — ⁸
Ś₂ K_{1.2} D_{1.6} प्राद्रवन्. Ś₁ K₁₋₃ D₁ सर्वतो; D₅
सहिता. D₆ स्वकैः (for रथैः). G₁ M रथानीकेन
प्राद्रवत्.

76 For the sequence in G₁ M_{1.2}, cf. v. l. 74.
D₄ T G_{3.4} om. 76 (cf. v. l. 75). — ⁶ G₁ M ध्व-

रथनागाश्चकलिलां पुरस्कृत्य तु वाहिनीम् ।
मद्राणामीश्वरः शल्यो वीक्षमाणोऽपयाद्भयात् ॥ ७७
हतप्रवीरैर्भूयिष्ठं द्विपैर्बहुपदातिभिः ।
वृतः शारद्वतोऽगच्छत्कष्टं कष्टमिति बुवन् ॥ ७८
भोजानीकेन शिष्टेन कलिङ्गारड्वाहिकैः ।
कृतवर्मा वृतो राजन्प्रायात्सुजवनैर्हयैः ॥ ७९
पदातिगणसंयुक्तस्त्रस्तो राजन्भयादितः ।

उद्धकः प्राद्रवत्तत्र दृष्ट्वा द्रोणं निपातितम् ॥ ८०
दर्शनीयो युवा चैव शौर्ये च कृतलक्षणः ।
दुःशासनो भृशोद्विग्नः प्राद्रवद्भजसंवृतः ॥ ८१
गजाश्वरथसंयुक्तो वृतश्चैव पदातिभिः ।
दुर्योधनो महाराज प्रायात्तत्र महारथः ॥ ८२
गजात्रथान्समारुह्य परस्यापि हयाज्जनाः ।
प्रकीर्णकेशा विध्वस्ता न द्रावेकत्र धावतः ॥ ८३

C. 7. 8914
B. 7. 193. 22
K. 7. 194. 22

जिनीं (for विद्रुतां). M₂-s सु- (for स-). --^o) D₅ प्रतिगृह्य. G₂ वेगात् (for सेना). --^a) D₁ [s]भ्य-
यात् (for स्पयाद्). B₃ रणे; D₇ पुनः (for भयात्).

77 For the sequence in G₁ M₁.2, cf. v. l. 74.
D₁ om. 77 (cf. v. l. 75). S₂ K₁.2 B₂ om. (hapl.)
77. --^a) D₁.3 रथाश्वनागकलिलां. --^b) D₂ उप-
हृत्य; D₅ उपगृह्य (for पुरस्कृत्य). D₅ स्वः; M₂-s
च (for तु). D₅ पुरस्कृत्वा वरुथिती. -- K₁ om. 77^{ad}.
--^o) B₁ D₅ अधिपः (for ईश्वरः). --^a) Some MSS.
वीक्षमाणो. D₂.1.3 [s]भ्ययाद् (for स्प^a). D₅ ततः;
M₂ हतः (for भयात्).

78 For the sequence in G₁ M₁.2, cf. v. l. 74.
D₃ om. 78^{ab}. --^a) K₂ हतप्रवीरैः; D₂1 प्रवीर-;
D₁.6 ततः (D₃ हते) प्रवीरे; D₇ हतः प्रवीर. B₃ D₂
D₂.3.5.6 T G₂-4 भूयिष्ठैः. --^b) Bom. ed. ध्वजैः
(for द्विपैः). B D₁ पताकिभिः. D₂1 द्वीपवाह-
पताकिभिः. --^o) D₁.5 गच्छन्. --^a) D₁ om. the
first कष्टं.

79 For the sequence in G₁ M₁.2, cf. v. l. 74.
--^a) G₁ M₁.2 भोजानीकावशिष्टेन. --^b) D₂1 D₂.4.5
कलिङ्गादर (D₂1 D₂ 'रद्'वाहिकैः; D₁ 'गाः सह बा';
D₅ 'नैरथ बा'; D₇ 'मै * * * बा'; D₅ 'नैर्वाहिकैः सह.
--^o) S₁ K₂ कृपो; S₂ K₁.2 D₁ भयाद्; D₅ ततो
(for वृतो). --^a) B₁-3 D₁ D₁ T G₂-4 M₂-s स
(B₂ स्व) जवनैः; G₁ M₁.2 सुजवितैः (for 'वनैः).

80 For the sequence in G₁ M₁.2, cf. v. l. 74.
G₂-4 M₂-s om. 80. T₂ reads 80 on marg. --^b)
B₁ G₁ M₁.2 ततो (for त्रस्तो). --^a) D₁ om. द्रोणं.
G₁ M₁.2 दृष्ट्वा द्रोणनिपातनं.

81 For the sequence in G₁ M₁.2, cf. v. l. 74.
--^a) S₂ K₁.2 तत्र (for चैव). --^b) S₂ K₁ B D₁
D₂1 D₂ G₁ M₁.2 शौर्येण (for 'र्ये च). G₂ निश्चयः
(for लक्षणः). --^o) D₁ D₂1 भृशं विद्रुः; G₂ भया-

द्विग्नः (for भृशो). --^a) D₂1 संयुतः (for संवृतः).
G₂ प्रायात्सु जवनैर्हयैः (= [var.] 79^a). -- S K (K₅
missing) B D₁ D₂ D₂.2.3.7.8 ins. after 81: D₁
after 82:

1344* रथानामयुतं गृह्य त्रिसाहस्रांश्च दन्तिनः ।
वृषसेनोऽपयान्गुणं दृष्ट्वा द्रोणं निपातितम् ।

[(L. 1) S₁ K₂.4 D₁ त्रिसाहस्रे. K₁ B₁ D₁ दन्तिनां.
S₂ K₂ अयुतं नैव दन्तिनां; K₁ corrupt (for the post.
half). -- (L. 2) S₂ damaged; K₁.2 D₅ [s]भ्ययाद्;
K₂.4 B D₁ D₂ ययौ; D₁ दया (for दयात्).]

-- D₅.1 cont. 1345* after the above.

82 For the sequence in G₁ M₁.2, cf. v. l. 74.
D₂.7 om. 82. B₃ repeats 82^{ab} after 1345*. --^a)
S₂ रथाश्वगजसंयुक्तो. --^o) D₁ महासेनैः (for 'रात्र).
--^a) D₂ प्रायात्तत्र (for प्रायात्तत्र). D₂ प्राद्रवद्भ-
वेतनः; D₃ प्राद्रवत्स महारथः; D₄.6 प्राद्रवद्भ (D₅ 'न्ना)-
जसंवृतः; S (G₅ missing) प्राद्रवद्भजभिः सह. -- S K
(K₅ missing) B D₁ D₂ D₂.3.3 ins. after 82:
D₅.1 cont. after 1344*:

1345* संशसकबलं गृह्य हतशेषं किरीटिना ।

सुशर्मा प्राद्रवद्भजान्दृष्ट्वा द्रोणं निपातितम् ।

[(L. 1) Some MSS. संशसक. B D₁ D₂ D₂.3
गणान् (B₁.5 D₃ 'णाद्' (for 'बलं). S₂ B D₁ D₂ D₂
हतशेषान्.]

-- D₁ ins. 1344* after 82.

83 ^a) G₁ M₁.2 रथानांजान् (by transp.). D₂
समासाद्य (for 'रुह्य). --^b) S K (K₅ missing) B₃ D₁
D₂ D₂.2.3.7.8 व्युदस्य; D₂ बारुह्य; D₂ व्युदस्य
(for परस्य). K₂ B₃ D₂ D₂.2.3.7.8 च (for [अ]पि).
G₁ M₁.2 भयावहः; G₂ भयावहाः (for हयाज्जनाः).
D₅ तुरगानतिशीघ्रगान्; M₂.3 (sup. lin. as in text)
परस्यातिभयाजनाः. -- After 83^{ab}, N (except D₅;
K₅ missing) ins.:

C. 7. 8914
B. 7. 183. 22
K. 7. 194. 22

नेदमस्तीति पुरुषा हतोत्साहा हतौजसः ।
उत्सृज्य क्वचानन्ये प्राद्वन्स्तावका विभो ॥ ८४
अन्योन्यं ते समाक्रोशन्सैनिका भरतर्षभ ।
तिष्ठ तिष्ठेति न च ते स्वयं तत्रावतस्थिरे ॥ ८५
धुर्यान्प्रमुच्य तु रथाद्धतस्तान्खलंकृतान् ।
अधिरुह्य हयान्योधाः क्षिप्रं पद्भिरचोदयन् ॥ ८६
द्रवमाणे तथा सैन्ये व्रत्रूपे हतौजसि ।

प्रतिस्रोत इव ग्राहो द्रोणपुत्रः परानियात् ॥ ८७
हत्वा बहुविधां सेनां पाण्डूनां युद्धदुर्मदः ।
कथंचित्संकटाद्भुक्तो मत्तद्विरदविक्रमः ॥ ८८
द्रवमाणं बलं दृष्ट्वा पलायनकृतक्षणम् ।
दुर्योधनं समासाद्य द्रोणपुत्रोऽब्रवीदिदम् ॥ ८९
किमियं द्रवते सेना व्रत्ररूपेव भारत ।
द्रवमाणां च राजेन्द्र नावस्थापयसे रणे ॥ ९०

1346* प्राद्वन्तवर्तः संख्ये दृष्ट्वा रुक्मरथं हतम् ।
स्वरयन्तः पितृनन्ये भ्रातृनन्ये च मातुलान् ।
पुत्रानन्ये वयस्यांश्च प्राद्वन्कुरवस्तथा ।
चोदयन्तश्च सैन्यानि स्वस्त्रीयांश्च तथापरे ।
सम्बन्धिनस्तथान्ये च प्राद्वन्त दिशो दश । [5]

[(L. 1) K1 -हन् रथं (for -रथं हतम्). — (L. 2) K1 om. (hapl.) भ्रातृनन्ये. Dn2 D1. 7. 8 अपि (for अन्ये). K4 B Dc1 D1 [5]य; Dn1 तु (for च). — (L. 3) S K (Ks missing) D1. 8 तदा (for तथा). Ds प्राद्वन्तं कुलंस्तथा (for the post. half). — (L. 4) Ds नोदयन्तश्च; D1 हार; D1. 8 वार (for चोद). S K1. 2 स्वस्त्रीयांश्च. — (L. 5) Dc1 Dn चान्ये (by transp.); Ds [अन्येपि. Dn2 reads twice (without var.) the post. half and 83°-84°. Dc1 Dn1 D1. 5. 7. 8 वि (Dn1 प्रा). द्रवन्ति (for प्राद्वन्त).]
— Ds cont.:

1347* ततो दुर्योधनो राजा अश्वत्थामानमब्रवीत् ।
— Ds om. 83°-108°. — °) Ds विकीर्ण- (for प्र). Ds भिन्न- (for -केश). Ds विग्रस्ता. B1. 2. 4 Dc1 Dn1 प्रकीर्णकेशान्वि (B2 शा वि) भवस्तान्. — °) Ms. 4 धावतः (for धावतः). B1. 2. 4 Dn1 नाना चैकत्र धावतः; Dn2 corrupt; Ds नेष्टुस्ते कौरवा भृशं; D1. 8 नष्टचित्ता विचेतसः.

84 For the repetition in Dn2, cf. v. l. 1346*. Ds om. 84 (cf. v. l. 83). Ks reads 84^{ab} twice. — °) B1. 2. 4 Dc1 Dn1 मन्वाना; D1. 8 विग्रस्ता (for पुरुषा). — °) S1 Ks जनाः; Ds तथा; Ds भयात्; G2 रणे (for विभो).

85 Ds om. 85 (cf. v. l. 83). Ds om. 85-86. — °) S1 Ks तावका (Ks कान्) (for सैनिका). Gs सैनिकास्तव भारत. — °) D2 च ततः (for न च ते).

86 Ds, 8 om. 86 (cf. v. l. 83, 85). — °) Ks

B1-4 Dc1 Dn1 उत्सृज्य च; B5 उत्सृज्य च. Ds च (for तु). T G2. 4 रथान्. S K1-3 D1 धुर्यांश्चोत्सृज्य तर (S1 Ks सह)सा; Dn2 D2. 5 °) उत्सृज्य तुरगाद् (Dn2 तु रथान्); D1. 8 °) उत्सृज्य विरथा. — °) K2. 4 B4 Dc1 D1 हतसूतात्; D2 °) स्वान्. S2 त्वलंकृतान्; B5 D2 G1 M1. 2 अलं; Dn1 स्वयं (for स्वलं). Dn2 Ds भूपणैः श्राप्य (Ds °) श्व स्व लंकृतान्; G2 हतसूतास्वलंकृतान्. — °) B (except B5) Dc1 Dn1 अभि- (for अधि-). G1 M1. 2 भयाद् (for हयान्). Ds. 7. 8 अन्ये; G1. 4 M1. 2 योधाः; Ms-5 क्षिप्रं (for योधाः). — °) M2-5 योधाः (for क्षिप्रं). Ds अवापतन् (for अचोदयन्). K1 क्षिप्रमहि- रचोदयन् (sic); Ds क्षिप्रं पायाहीत्यदयन् (sic); D1. 8 क्षिप्रं ते समनोदयन् (D1 °) न्).

87. D1 om. 87 (cf. v. l. 83). — °) A few MSS. द्रवमाने; D2 श्रोतमाणे (for द्रवमाणे). — °) Ds महौजसि (for हतौ). — For 87^{ab}, Ds subst.:

1348* तस्मिन्हाहाकृते सैन्ये वर्तमाने भयावहे ।
— °) Ds. 6-8 प्रतिश्रोत. — °) S Ks परानयात्; B5 °) न्प्रति.
— After 87, N (except D1; Ks missing) ins.:

1349* तस्यासीत्सुमहद्युद्धं शिखण्डिप्रमुखैर्गणेः ।
प्रभद्रकैश्च पाञ्चालैश्चेदिभिश्च सकैकयैः ।
[(L. 2) Ds स- (for च). Some MSS. पंचालैश्च. Ds सह (for च स-). Some MSS. सकैकयैः.]

88 Ds om. 88 (cf. v. l. 83). — °) K4 B Dc1 Dn D2. 2. 5. 6 T G2-4 हत्वा बहुविधाः सेनाः (D2. 2. 5 °) सैन्यं). — °) D1. 8 Ms-5 पाण्डवीः; T2 (inf. lin. as in text) Gs पाण्डवीर; G1 पाण्डवैर. S2 Gs युद्धदुर्मदाः. — °) S (G5 missing) समरान् (for संकटान्).

89 Ds om. 89 (cf. v. l. 83). — °) A few MSS. द्रवमानं. — °) B5 Ds. 6-8 Gs पलायनपरायणं. — °) S2 Ks अयासाद्य (for समा).

90 Ds om. 90 (cf. v. l. 83). — °) Ds अर्थ (for

त्वं चापि न यथापूर्वं प्रकृतिस्यो नराधिप ।
कर्णप्रभृतयश्चेमे नावतिष्ठन्ति पार्थिवाः ॥ ९१
अन्येष्वपि च युद्धेषु नैव सेनाद्रवच्छदा ।
कच्चित्क्षेमं महाबाहो तव सैन्यस्य भारत ॥ ९२
कस्मिन्निदं हते राजत्रयसिंहे बलं तव ।
एतामवस्थां संप्राप्तं तन्माचक्ष्व कौरव ॥ ९३
तत्तु दुर्योधनः श्रुत्वा द्रोणपुत्रस्य भाषितम् ।
घोरमप्रियमाख्यातुं नाशक्तपार्थिवर्षभः ॥ ९४
भिन्ना नौरिव ते पुत्रो निमग्नः शोकसागरे ।

वाष्पेण पिहितो दृष्ट्वा द्रोणपुत्रं रथे स्थितम् ॥ ९५
ततः शारद्वतं राजा सत्रीडमिदमब्रवीत् ।
शंसेह सर्वं भद्रं ते यथा सैन्यमिदं द्रुतम् ॥ ९६
अथ शारद्वतो राजन्नार्तिं गच्छन्पुनः पुनः ।
शशंस द्रोणपुत्राय यथा द्रोणो निपातितः ॥ ९७
कृप उवाच ।
वयं द्रोणं पुरस्कृत्य पृथिव्यां प्रवरं रथम् ।
प्रावर्तयाम संग्रामं पाञ्चालैरेव केवलैः ॥ ९८
ततः प्रवृत्ते संग्रामे विमिश्राः कुरुसोमकाः ।

C. 7. 8931
P. 7. 193. 38
K. 7. 194. 39

इयं). — ⁶) K1.2 सेनेव (for रूपेव). — After 90^{ab}, Dn2 D2 Ms-s read 93. — Dn2 D2 om. 90^c-91^b. — ^c) Ds.6.8 G3.4 द्रवमाणं. — ^d) D2 कथं (for रणे).

91 D1 om. 91 (cf. v. l. 83). Dn2 D2 om. 91^{ab} (cf. v. l. 90). — ^b) Ś K1-3 D1.7.8 T G2.4 जनाधिप (for नरा). — After 91^{ab}, Ds reads 93 for the first time, repeating it in its proper place. — ^c) Ś K1-3 सेनाम्; D1 सर्वे; G1 M1.2 चान्वे (for चेमे). — ^d) Ś K1-3 D1 अवतिष्ठन्ति (for नाव). K4 B Dc1 Dn1 D2 पार्थिव.

92 D4 om. 92 (cf. v. l. 83). — ^a) Ds योषेषु (for युद्धे). S (G5 missing) सर्वेष्वपि हि युद्धेषु. — ^b) B1.2 D1.8 नैवं. Ds [अ]भवत् (for [अ]द्र). Ś2 K1.2.4 D1 पुरा; B4 Dn तथा; Ds यथा; D1.8 कदा; S (G5 missing) तव (for तदा). — ^c) G2 महाराज (for बाहो).

93 D4 om. 93 (cf. v. l. 83). Dn2 D2 Ms-s read 93 after 90^{ab}; Ds reads it for the first time after 91^{ab}. — ^a) Ds कच्चिदं (for कस्मिन्निदं). D1.8 G1 M य (D1.8 क)स्मिन्निदं हते राजन्. — ^b) Ds (first time) यथा सिंह; Ds (second time) नरसिंह (for रथसिंह). — ^d) Ds (both times) T G3 M भारत (for कौरव).

94 D4 om. 94 (cf. v. l. 83). — ^a) Dn D2.5 तत्र; Ds न तद् (for तत्तु). — ^d) K2.4 B (except B4) Dc1 Dn1 Ds.6 S (G5 missing) नाशक्तोत् (for कत्). B2 Dc1 Ds-8 G2 M1.2 पार्थिवर्षभ.

95 D4 om. 95 (cf. v. l. 83). — ^a) Ś1 K1 B1

D1 T G3 निहन्. — ^b) B Dc1 Dn1 D2.6 S (G5 missing) मग्नः शोकमहागणे. — After 93^{ab}, S (G5 missing) ins.:

1350^a अश्वे प्लवमन्विच्छन्त्यागाधे नरोऽभसि ।

— ^c) K2.4 B Dc1 Dn D2.3.6-8 [अ]पिहितो (B Dc1 Dn1 'तं'); T G3.4 पिहितं. — ^d) Ś2 रथ- (for रथे). G2 स्थितः.

96 D4 om. 96 (cf. v. l. 83). — ^a) B2 शारद्वतं (for शार). Dn2 D2.5.6 राजन् (for राजा). Ś K1-3 Ds.7.8 T G2.4 ततः (D1.8 अथ) शारद्वतो राजन्. — D3 om. (hapl.) 96^b-97^a. — ^b) G1 M सत्रीडम्; G2.4 सत्रीड. — ^c) Ś2 K1-3 D1.2.5 T G3.4 शंसेह; K4 B1.3.4 Dc1 शंसात्र; B2 शंस त्वं; G2 शंसैतद् (for शंसेह). Ś1 K3 सर्वं भवतो; Ś2 K1.2 B1 D1 T G3.4 भवते सर्वं; K4 भद्रं ते सर्वं (by transp); B2.5 G2 भगवन्सर्वं; B3 Dc1 भवते सैन्यं; B4 Dn1 D2 द्रवते सर्वं; Dn2 D2 पूर्व (D2 'व') भद्रं ते; Ds भद्रं पूर्व ते; G1 M1.2 सर्वं द्रवते. Ms-5 शंस त्व (Ms त)स्य भवान्सर्व. — ^d) B3 Dc1 सर्वम् (for सैन्यम्). S (except G2; G5 missing) अभि- (for इदं). K2 ध्रुवं (for द्रुतम्).

97 D4 om. 97 (cf. v. l. 83). Ds om. 97^a (cf. v. l. 96). — ^a) K3 ततः (for अथ). — ^b) K4 B Dc1 Dn2 आच्छन् (B1 'त्') (for गच्छन्).

98 D4 om. 98 (cf. v. l. 83). — ^b) Ds परमं (for प्रवरं). — ^c) B2 Dn1 Ds.3.7.8 T G2-4 प्र (B2 Dn1 Ds.5 प्रा)वर्तयामः. Ś2 Ds संग्रामे. — ^d) Ds सह (for पृव). K3 B1 S (G5 missing) केवलं; D2 केकयैः. Ds पंचालैश्चैव केवलैः.

99 D4 om. 99 (cf. v. l. 83). — ^a) B3 Ms-8

G. 7. 6931
B. 7. 183. 38
K. 7. 194. 38

अन्योन्यमभिगर्जन्तः शस्त्रैर्देहानपातयन् ॥ ९९
ततो द्रोणो ब्राह्ममस्त्रं विकुर्वाणो नरर्षभः ।
अहनच्छात्रवान्मल्लैः शतशोऽथ सहस्रशः ॥ १००
पाण्डवाः कैकया मत्स्याः पाञ्चालाश्च विशेषतः ।
संख्ये द्रोणरथं प्राप्य व्यनशन्कालचोदिताः ॥ १०१
सहस्रं रथसिंहानां द्विसाहस्रं च दन्तिनाम् ।
द्रोणो ब्रह्मास्त्रनिर्दग्धं प्रेषयामास मृत्यवे ॥ १०२
आकर्णपलितः श्यामो वयसाशीतिपञ्चकः ।
रणे पर्यचरद्द्रोणो वृद्धः षोडशवर्षवत् ॥ १०३
क्लिश्यमानेषु सैन्येषु वध्यमानेषु राजसु ।

अमर्षवशमापन्नाः पाञ्चाला विमुखाभवन् ॥ १०४
तेषु किञ्चित्प्रभग्नेषु विमुखेषु सपत्नजित् ।
दिव्यमस्त्रं विकुर्वाणो बभूवार्क इवोदितः ॥ १०५
स मध्यं प्राप्य पाण्डूनां शररश्मिः प्रतापवान् ।
मध्यंगत इवादित्यो दुष्प्रेक्ष्यस्ते पिताभवत् ॥ १०६
ते दह्यमाना द्रोणेन सूर्येणैव विराजता ।
दग्धवीर्या निरुत्साहा बभूवुर्गतचेतसः ॥ १०७
तान्दृष्ट्वा पीडितान्वाणैर्द्रोणेन मधुसूदनः ।
जयैपी पाण्डुपुत्राणामिदं वचनमब्रवीत् ॥ १०८
नैव जातु परैः शक्यो जेतुं शस्त्रभृतां वरः ।

-गच्छन्तः (for -गर्जन्तः). —^d D₃ शरैर् (for शस्त्रैर्).
B₂ देहान्यपातयन्; B₅ शस्त्राण्य. — After 99, N
(except D₃; K₅ missing) ins. :

1351* वर्तमाने तथा युद्धे क्षीयमाणेषु संयुगे ।

धार्तराष्ट्रेषु संकुब्धः पिता तेजसमुदैरयत् ।

[(L. 1) D_{7.8} तदा (for तथा). B₅ तथा युद्धे क्षीय-
माणे (for the prior half). D₈ क्षीयमाणे च (for 'णेषु).
D_{7.8} सर्वतः (for संयुगे). — (L. 2) D₈ धार्तराष्ट्रे च
(for 'द्रेषु). K₁ उदैरयत्; K₄ D₁ D_n D_{2.8.6.8} उदी-
रयत्.]

100 D₃ om. 100 (cf. v. 1. 83). —^δ Ś₂ महा-
यशाः; D₁ G_{1.4} M नरर्षभ; D₅ महारथः. —[°]
K_{2.4} B₂₋₄ D₁ D_n D₂ व्यहनत्; B₁ D_n D₅ S
(G₅ missing) न्य; B₅ व्याहरत्; D₅ व्यद्रवन् (for
अहनत्). D₃ अवधीत्सहवान्मल्लैः (sic). — After 100,
G₁ M ins. :

1352* पिता तव सुसंकुब्धो रिपूनभिमुखे स्थितः ।

निहन्ति प्रबलस्त्र वायुवृक्षानिवौजसा ।

[(L. 1) G₁ वीरा (sic) (for पिता). — (L. 2) G₁
M_{1.2} न्यहनत् (for निहन्ति).]

101 D₃ om. 101 (cf. v. 1. 83). —^a G₃
damaged. D_n D_{1-2.5-8} कैकया. G_{2.4} मात्स्याः.
—^δ Some MSS. पंचालाश्. Ś K_{1.2.4} D_{1.2.7.8}
विशां पते; D_n D_{2.5} द्विजोत्तम (D_n 'मः); G₃ सह-
स्रशः (for विशेषतः). —[°] G₁ M संख्ये; G₃ संघे.
—^d D₅ नाशकाः (for व्यनशन्). D_{2.8.5.7.8} नोदितः
(for चोदिताः).

102 D₁ om. 102 (cf. v. 1. 83). —^a B D₁ D_n
T G₁₋₄ नर- (for रथ-). —^δ D_{7.8} द्विसहस्रं. —[°]
Ś₂ K_{1.2.4} D_{1-3.5-8} G_{1.2} M₅₋₈ निर्दग्धान्; B D₁
D_n -योगेन (for -निर्दग्धं).

103 = (var.) 49. D₁ om. 103 (cf. v. 1. 83).
K₂ om. 103^{ab}. —^a Ś K_{1.3} D₁ आसन्न-; D_{2.6}
आपन्न- (for आकर्ण-). Ś₂ D₁ D_{2.6.7} G_{1.3.4} M₁₋₄
-पलित-. —^δ B₂ (marg.) -पंचमः (for -पञ्चकः). B_{1.2}
D₁ D_n S (G₅ missing) वयसाशीतिकात्परः. —[°]
B₁ पर्यटति (for 'चरद्).

104 D₁ om. 104 (cf. v. 1. 83). —^a D₆₋₈ T
G₂₋₄ M₅₋₈ कृष्यमाणेषु. K₂ सर्वेषु (for सैन्येषु). —^δ
B₅ D_n युध्यमानेषु. —^d Some MSS. पंचाला. D₅
भवेत् (sic) (for [अ]भवत्).

105 D₁ om. 105 (cf. v. 1. 83). K₁ om. 105^a-
106^b. —^a B_{2.4} D₁ D_n D₅ S (G₅ missing) प्रण-
क्षेषु (for प्रभग्नेषु). —[°] D₅ प्रकुर्वाणो. —^d D_n
इवोदिता (sic); G₁ M_{1.2} -समद्युतिः.

106 D₁ om. 106 (cf. v. 1. 83). K₄ om. 106^{ab}
(cf. v. 1. 105). —^δ Ś₂ B_{1.2.5} D₅₋₈ शररश्मि-
—[°] B₅ मध्यंदिन (for 'गत). —^d Ś₁ K₃ D₁
D_n G_{3.4} दुष्प्रेक्षस्.

107 D₁ om. 107 (cf. v. 1. 83). —^a G₁ M_{1.2}
वध्यमाना (for दह्य). —[°] S (G₅ missing) हतो-
त्साहा (for निरु). —^d G₁ M_{1.2} गतचेतनाः.

108 D₁ om. 108 (cf. v. 1. 83).

109^a D₂ नैव (for नैष). K₄ B D₁ D_n D_{1.6}

अपि वृत्रहणा संख्ये रथयूथपयूथपः ॥ १०९
 ते यूयं धर्मसुसृज्य जयं रक्षत पाण्डवाः ।
 यथा वः संयुगे सर्वान्न हन्याद्रुक्मवाहनः ॥ ११०
 अश्वत्थाम्नि हते नैप युध्येदिति मतिर्मम ।
 हतं तं संयुगे कश्चिदाख्यात्वस्मै मृषा नरः ॥ १११
 एतन्मारीचयद्वाक्यं कुन्तीपुत्रो धनंजयः ।
 अरोचयंस्तु सर्वेऽन्ये कृच्छ्रेण तु युधिष्ठिरः ॥ ११२
 भीमसेनस्तु सत्रीडमव्रवीत्पितरं तव ।

अश्वत्थामा हत इति तच्चाबुध्यत ते पिता ॥ ११३
 स शङ्कमानस्तन्मिथ्या धर्मराजमपृच्छत ।
 हतं वाप्यहतं वाजौ त्वां पिता पुत्रवत्सलः ॥ ११४
 तदुत्थयभये मग्नो जये सक्तो युधिष्ठिरः ।
 अश्वत्थामानमाहेदं हतः कुञ्जर इत्युत ।
 भीमेन गिरिवर्ष्माणं मालवस्येन्द्रवर्मणः ॥ ११५
 उपसृत्य तदा द्रोणमुच्चैरिदमभाषत ।
 यस्म्यर्थे शस्त्रमाधत्से यमवेक्ष्य च जीवसि ।

C. 7. 8950
B. 7. 193. 57
K. 7. 194. 57

S (G₅ missing) नरैः (for परैः). —^δ) Ś₁ K₃ अश्व-
 (for शस्त्र). —[°]) G₁ वृत्रहणं. D₃ युद्धे; G₁ M₁₋₄
 संखे. D₂₋₆ अपि वृत्रहणो युद्धे; T G₂₋₄ वृ (G₃ पु) व-
 हतापि वा (G₂ 'ता इवा') संख्ये.

110 °) Ś₂ वयं (for यूयं). S (G₅ missing) यूयं
 धर्मं सुसृज्य. —^δ) D₂ वलं (for जयं). D₃ कांक्षत
 (for रक्षत). — After 110^δ, S (G₅ missing) ins. :

1353* जये हि यतमानानां श्रीधर्मश्च प्रवर्तते ।

—[°]) K₁ यथावत्; D₁₋₅ यथा च; D₆ अथातः (for
 यथा वः). Ś₁ K₃ समरे (for संयुगे). —^δ) D₂
 निहन्याद् (for न ह[°]). M₁₋₂ रुम- (for रुक्म-).

111 °) K₂ नैव (for नैप). —^δ) D₃ G₁ M युध्-
 (M₃₋₅ 'ध्वे'तेति; G₂₋₄ युध्यतीति (for युध्येदिति).
 —[°]) S (G₅ missing) तं हतं (by transp.). —^δ) Ś₁
 K₁₋₃₋₄ D₁₋₃₋₅₋₇₋₈ [अ]स्य (for [अ]स्यै). Ś₂ lacuna;
 K₂ (sup. lin. as in text) मृषा वरः; D₆ महारथः
 (for मृषा नरः).

112 °) D₆ एवं (for एतन्). —[°]) D₆ अरोचयंत
 ते सैन्याः.

113 °) Some S MSS. सवीळम्. —^δ) K₁ B Dc₁
 D₂ तं न; D₂ तत्र (for तच्च). D₂ तन्नात्र युध्यता-
 मिति; D₁₋₆₋₈ नावबुध्ये (D₆ 'ध्य'त ते पिता; D₃ तं
 नाबुध्येत ते पिता.

114 °) T G₁₋₄ M₁₋₂ स्म (T G₃₋₄ स) पृच्छति (for
 अपृच्छत). —[°]) D₂ D₃ तु; D₁₋₇₋₈ च (for the
 first and the second च). T G₂₋₄ वापि (for वाजौ).

115 °) Ś₁ K₁ B Dc₁ D₂₋₃₋₅₋₆ T G₁₋₄ M₁₋₂ तम-
 त्थयः; K₁ उपतथ्यः; M₃₋₅ स चातथ्यः (for तदुत्थयः).
 D₁ तमपथ्यभयेनासौ; D₇₋₈ तमतथ्यभयोद्भिन्नो. —^δ) Ś₁
 K₁ B₁₋₂₋₅ D₁₋₈ जये शक्तो; D₇₋₈ जयासक्तो. D₆ T

G₂₋₄ M₃₋₅ च पांडवः (for युधिष्ठिरः). — G₁ M₁₋₂ ins.
 line 3 of 1354* after 115^δ, G₁ M₂ repeating it
 after 116. —[°]) B Dc₁ S (G₅ missing) आयोचे
 (for आहेदं). D₂ D₃ हतं इष्टाश्वत्थामानं; D₂
 अश्वत्थामेभिनामानं (sic); D₂₋₃₋₇₋₈ 'मद्युवाचेदं'; D₄
 'मानुवाचेदं'. —^δ) Ś₁ कुञ्जरो हत इत्युत; K₂₋₄ D₃
 हतं कुञ्जरमित्युत (K₁ 'र इत्यतः'); B Dc₁ D₂ D₃ S
 (G₅ missing) हतं इष्टा (D₂ तदा राजा; D₃ तदा
 राजा) महागजं. —^δ) D₂₋₅₋₇₋₈ भीमस्तु (for भीमेन).
 D₂ चपाणां; D₂ D₃₋₅₋₇₋₈ वर्माणं; D₆ संकाशं (for
 वर्माणं). —^δ) D₆ मालवस्य; G₁ M मालवस्य.

116 °) K₁₋₃ Dc₁ D₁ T G₂ उपसृत्य; D₂ D₂₋₄.
 5.7.8 अभिह (D₂ 'च'त्य (for उपसृत्य). K₁₋₂ तथा;
 K₁ B₁₋₅ D₂ D₃₋₈ ततो (for तदा). —^δ) B Dc₁
 D₂ D₁₋₃ S (G₅ missing) उवाच ह (for अभाषत).
 —[°]) Ś₂ K₁ D₁ T G₁₋₃ M₁₋₂₋₅ (inf. lin.) आदत्से;
 D₆ गृहीयात् (for आधत्से). —^δ) D₆ तम् (for यम्).
 Ś₂ K₁₋₂ अवीक्ष्य; D₅₋₆ अपेक्ष्य. Ś₂ जीवसे. —^δ)
 K₁₋₂ D₁ स (for ते). D₅ निहतो (for दयितो). —^δ)
 Ś₁ K₁₋₂ D₆ अश्वत्थामा (for सोऽश्व[°]). Ś₁ K₃ स (for
 नि-). — N (K₅ missing) G₁ M₂ (last two second
 time) ins. after 116: G₁ (first time) M₁₋₂ (first
 time) after 115^δ;

1354* शेते विनिहतो भूमौ वने सिंहशिशुर्यथा ।

जानन्नप्यनुवस्यथ दोषान्स द्विजसत्तमम् ।

अन्यकमव्रवीद्राजा हतः कुञ्जर इत्युत ।

[G₁ (both times) M₁₋₂ (both times) om. lines
 1-2. — (L. 1) D₆ वातहतो (for विनि[°]). Dc₁ D₂
 नर- (for वने). — (L. 2) D₆ [अ]यं (for [अ]य). Ś₁
 K₁₋₃ B₁₋₄ D₂ D₄₋₅ द्विजसत्तम (K₁₋₂ B₁ 'नः'). D₆
 गुणदोषान्नराविपः (for the post. half). — (L. 3) G₁

C. 7. 0850
B. 7. 193. 57
K. 7. 184. 57

पुत्रस्ते दयितो नित्यं सोऽश्वत्थामा निपातितः ॥ ११६
तच्छ्रुत्वा विमनास्तत्र आचार्यो महदप्रियम् ।
नियम्य दिव्यान्यस्त्राणि नायुध्यत यथा पुरा ॥ ११७
तं दृष्ट्वा परमोद्विग्नं शोकोपहतचेतसम् ।
पाञ्चालराजस्य सुतः क्रूरकर्मा समाद्रवत् ॥ ११८
तं दृष्ट्वा विहितं मृत्युं लोकतत्त्वविचक्षणः ।
दिव्यान्यस्त्राण्यथोत्सृज्य रणे प्रायु उपाविशत् ॥ ११९
ततोऽस्य केशान्सव्येन गृहीत्वा पाणिना तदा ।
पार्षतः क्रोशमानानां वीराणामच्छिनाच्छिरः ॥ १२०
न हन्तव्यो न हन्तव्य इति ते सर्वतोऽब्रुवन् ।

तथैव चार्जुनो बाहादवरुहैनमाद्रवत् ॥ १२१
उद्यम्य बाहू त्वरितो युवाणश्च पुनः पुनः ।
जीवन्तमानयाचार्यं मा वधीरिति धर्मवित् ॥ १२२
तथापि वार्यमाणेन कौरवैरर्जुनेन च ।
हत एव नृशंसेन पिता तव नरर्षभ ॥ १२३
सैनिकाश्च ततः सर्वे प्राद्रवन्त भयादिताः ।
वयं चापि निरुत्साहा हते पितरि तेऽनघ ॥ १२४
संजय उवाच ।
तच्छ्रुत्वा द्रोणपुत्रस्तु निधनं पितुराहवे ।
क्रोधमाहारयतीत्रं पदाहत इयोरगः ॥ १२५

इति श्रीमहाभारते द्रोणपर्वणि पञ्चषष्ठ्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १६५ ॥ ॥ समाप्तं द्रोणवधपर्व ॥

(both times) M1. 2 (first time) द्रोणं (for राजा).]

117 ^a) Gs आकार- (for तच्छ्रुत्वा). M3-s तस्थौ (for तत्र). — For 117^{ab}, N (Ks missing) subst.: 1355* स त्वां निहतमाक्रन्दन्कृत्वा त्वन्नामपीडितः ।

[Ss K1.2 D1 स त्वा; D1 मत्वा; D1 श्रुत्वा (for स त्वा). K4 B D (except D1. 7. 8) आक्रन्दे. S2 सन्नोपि; K1 तन्नाम- (for त्वं). K4 B D (except D1) Bom. ed. श्रुत्वा संतापपीडितः (Bom. ed. 'तापितः') (for the post. half).]

—^o) Ds निक्षिप्य (for नियम्य). S (Gs missing) सर्वाणि (for दिव्यानि). —^a) G1 तथा (for यथा).

118 ^b) B Dc1 Dn Ds शोकातुरमचेतसं (B3 Ds 'नं'); T G1-4 M1. 2 शोकोत्तरमचेतसं (G1 M1. 2 'नं'). —^o) Some MSS. पंचाल-. —^a) D2 घटयुग्मः; D4 क्रूरं कर्म (for क्रूरकर्मा).

119 D4 om. 119^a-121^b. —^a) Dn1 तां. K4 D1 निहतं; Ds विहतं. —^a) K3 B Dn1 Ds S (except M8, Gs missing) प्रायम्.

120 D4 om. 120 (cf. v. 1. 119). —^a) Ds स (for स्य). K1 मध्येन (for सव्येन). —^b) Ds ततः (for तदा). S2 पाणिना गुह्य वे***. —^o) K1 पार्षतः केशमात्राणां. —^a) Dc1 D7. 8 T G2-4 आच्छिन्नत् (for अच्छिन्).

121 Ds om. 121^{ab} (cf. v. 1. 119). —^b) Ss तं (for ते). —^o) Ds तत्रैनम् (for तथैव). D4. 6 अर्जुनो (for चां). —^a) S K1-3 D1 अवमुल्य (for रुह्य). Bs अत्रवीत्; D7. 8 आब्रजत् (for आद्रवत्).

122 D2. 4 om. 122-124. —^a) S2 बाहुंस्त्वरितो; K4 B Dc1 Dn Ds त्वरितो बाहू (K4 Dn2 'हुं') (by transp.); Ds बाहुंस्त्वरितो. —^o) Ds om. 122^a-124^a. —^o) D7. 8 जीवन्तमेनमाचार्यं; G3. 4 M1-3. 5 जीवन्तं मानयां. —^a) Dn2 अपि (for इति).

123 D2. 4. 5 om. 123 (cf. v. 1. 122). —^a) K4 तथा निवार्यमाणेन. —^b) S K2-4 D1. 3 कौरवेणा (K3 'व्येना')र्जुनेन च. —^o) Ds एवं. —^a) G1 M1. 2 नरर्षभः.

124 D2. 4. 5 om. 124 (cf. v. 1. 122). —^a) S K (Ks missing) D1. 3. 7. 8 तु (for च). Ds ततः सर्वा दिशः सैन्याः; S (Gs missing) ततः सेना दिशः सर्वाः. —^b) Ds नावर्तत (for प्राद्रवन्त). S (Gs missing) भयातुराः (for 'दिताः'). —^a) Ds च (for ते).

125 ^b) S K1-3 D1. 6 पितुर्निधनमाहवे. —^a) K1 D1 पादाहतः; G1. 2. 4 M दंढाहत. — After 125, N (Ks missing) ins.:

1356* ततः कुब्धो रणे द्रौणिर्नृशं जज्वाल मारिष ।
यथेन्धनं सहस्राण्य प्राज्वलद्वन्द्ववाहनः ।
तलं तलेन निष्पिप्य दन्तैर्दन्तालुपस्पृशत् ।
निःश्वसन्नुरगो यद्रुहोद्विताक्षोऽभवत्तदा ।

१६६

धृतराष्ट्र उवाच ।

अधर्मेण हतं श्रुत्वा धृष्टद्युम्नेन संजय ।

ब्राह्मणं पितरं बृद्धमश्वत्थामा किमब्रवीत् ॥ १

मानुषं वारुणाग्नेयं ब्राह्ममस्त्रं च वीर्यवान् ।

ऐन्द्रं नारायणं चैव यस्मिन्नित्यं प्रतिष्ठितम् ॥ २

तमधर्मेण धर्मिष्ठं धृष्टद्युम्नेन संजय ।

श्रुत्वा निहतमाचार्यमश्वत्थामा किमब्रवीत् ॥ ३

येन रामादवाप्येह धनुर्वेदं महात्मना ।

प्रोक्तान्यस्त्राणि दिव्यानि पुत्राय गुरुकाङ्क्षिणे ॥ ४

एकमेव हि लोकेऽस्मिन्नात्मनो गुणवत्तरम् ।

इच्छन्ति पुत्रं पुरुषा लोके नान्यं कथंचन ॥ ५

आचार्याणां भवन्त्येव रहस्यानि महात्मनाम् ।

तानि पुत्राय वा दद्युः शिष्यायानुगताय वा ॥ ६

स शिल्पं प्राप्य तत्सर्वं सविशेषं च संजय ।

C. 7. 8970
B. 7. 194. 7
K. 7. 193. 7

[(L. 2) Dn₂ पाठेयनं (for यथेयनं). D₃ समासाद्य (for महत्प्राप्य). Ś K_{1,2} Dn₂ D₃ 4. 6-8 प्रज्वलेद्; D₅ प्रज्वलद्. — (L. 3) D₅ संरुध्य (for निरुप्य). Ś₁ दन्तान्दन्तैर् (by transp.). Ś₂ K_{1,2} 4 Dc₁ D₁ 2. 7 उप (K₄ D₂ 'पा'स्पृशत्; B₃ 4 उपास्पृशन्; Dn₂ D₃ अस् (for उप). D₅ दंतैर्दन्तान्यपीडयत् (for the post. half). — (L. 4) Some MSS. निश्चस्त्. B₄ तथा (for तदा).]

Colophon: K₅ G₅ missing. Sub-parvan: Ś₂ K₂ D₁ द्रोणवध. — Day of Droṇa's Generalship: K₁ 2. 4 D₁ पंचमयुद्धदिवसे. — K_{1,2} read समाप्त after the sub-parvan. — Adhy. name: D₅ पितृवधारुह्यान्; Bom. ed. अश्वत्थामक्रोधः. — Adhy. no. (figures, words or both): Dn₁ 194; D₂ 197; D₃ 87; T G₂ 3 188; G₁ M_{1,2} 187; G₄ 189; M₃ 186.

166

☞ This adhy. is missing in K₅ G₅ (cf. v. l. 7. 125. 14; 137. 9).

1 ^a) B₁ छत्रना नि- (for अधर्मेण). D₃ इष्ठा (for श्रुत्वा). — ^b) D_{2,3} संयुगे (for संजय). B₄ पितरं पापकर्मणा. — B₁ om. 1^{cd}. — ^c) D₄ ब्राह्मणं (for ब्राह्मणं). — After 1, G₁ M_{1,2} 4. 5 ins.:

1357* शूरश्च कृतविद्यश्च तेजसा ज्वलनोपमः ।

यदब्रवीत्तदा सूत तन्ममाचक्ष्व संजय ।

यो वेद दिव्यान्स्त्राणि सर्वशस्त्रभृतां वरः ।

[G₁ M_{1,2} ins. lines 1-2 after 3. — (L. 2) M_{1,2} संजयः.]

2 T G₃ M₃ om. (hapl.) 2-3; Ś₂ reads the same on marg. — ^a) B₅ Dn₂ D₂ 4-8 मानवं (for

मानुषं). Ś₁ K₁₋₃ D₅ (before corr.) G₂ वारुणाग्नेये (G₂ 'यौ') (for 'यं'). G₁ M (M₃ om.) वायव्यं वारुणं यान्यं. — ^b) K₁ ब्रह्मन्; D₄ ब्रह्मन्. Ś K₁ B (except B₁) वीर्यवत् (for 'वान्'). G₁ M (M₃ om.) ब्राह्ममाग्नेयमेव च. — ^d) G₁ M (M₃ om.) यत्र सम्यक् (for यस्मिन्नित्यं).

3 = (var.) 13. T G₃ M₃ om. 3 (cf. v. l. 2). Ś₂ reads 3 on marg. — ^b) Ś₂ damaged; K₂ 4 B D संयुगे (for संजय). — Dn₂ om. 3^c-4^d. — ^c) D₄ निकृत्तम् (for निहतम्). — ^d) Ś₂ K₁ 4 B_{2,3} 5 D₁ 2 G₂ सोधत्थामा (for अश्व). — After 3, G₁ M_{1,2} ins. lines 1-2 of 1357*.

4 Dn₂ om. 4 (cf. v. l. 3). D₅ om. (hapl.) 4-15. — ^a) Ś₂ इव; D₃ एवं; T G₁ 4 M_{1,2} एव (for इव). — ^b) Dn₁ D₃ M_{1,2} महात्मना: (sic) (M₁ 'नः') (for 'त्मना'). — ^c) Ś K₁₋₃ D₁ सर्वाणि; D₂ 4. 5. 7. 8 पुत्राय (for दिव्यानि). — ^d) Ś K (K₅ missing) D₁ शुभः; B Dc₁ Dn₁ गुण. (for गुरु). K₂ काङ्क्षिणा (for काङ्क्षिणे). D₂ 4. 5. 7. 8 सर्वा (D₂ शुभा) णि शुभकाङ्क्षिणा (D₅ 'क्षये').

5 D₅ om. 5 (cf. v. l. 4). — ^a) M_{1,2} एवम् (for एकम्). — ^b) Dn₂ आत्मना; D₄ 5 धार्मिकं (for आत्मनो). G₃ गुणवत्तरः. — ^c) Ś₂ Dn₂ transp. पुत्रं and पुरुषा लोके. B Dc₁ Dn₁ D₂ 5. 7. 8 पुरुषाः पुत्रं (by transp.).

6 D₅ om. 6 (cf. v. l. 4). — ^a) D₃ एवं (for एव). — ^c) D₄ 5. 7. 8 ते (for वा). — B₁ om. 6^d-8^d. — ^d) D₂-5. 7. 8 अनुमताय (for अनुग*). Dc₁ D₂ 5 च; Dn₁ lacuna (for वा).

7 B₁ D₅ om. 7 (cf. v. l. 6, 4). — ^a) B (B₁

C. 7. 8970
B. 7. 194. 7
K. 7. 195. 7

शूरः शारद्वतीपुत्रः संख्ये द्रोणादनन्तरः ॥ ७
रामस्यानुमतः शास्त्रे पुण्डरिसमो युधि ।
कार्तवीर्यसमो वीर्यं बृहस्पतिसमो मतौ ॥ ८
महीधरसमो धृत्या तेजसाग्निसमो युवा ।
समुद्र इव गाम्भीर्यं क्रोधे सर्पविषोपमः ॥ ९
स रथी प्रथमो लोके दृढधन्वा जितक्लमः ।
शीघ्रोऽनिल इवाक्रन्दे चरन्कुद्र इवान्तकः ॥ १०
अस्यता येन संग्रामे धरण्यभिनिपीडिता ।
यो न व्यथति संग्रामे वीरः सत्यपराक्रमः ॥ ११
वेदस्त्रातो व्रतस्त्रातो धनुर्वेदे च पारगः ।

महोदधिरिवाक्षोभ्यो रामो दाशरथिर्यथा ॥ १२
तमधर्मेण धर्मिष्ठं धृष्टद्युम्नेन संयुगे ।
श्रुत्वा निहतमाचार्यमश्वत्थामा किमब्रवीत् ॥ १३
धृष्टद्युम्नस्य यो मृत्युः सृष्टस्तेन महात्मना ।
यथा द्रोणस्य पाञ्चाल्यो यज्ञसेनसुतोऽभवत् ॥ १४
तं नृशंसेन पापेन क्रूरेणात्यल्पदर्शिना ।
श्रुत्वा निहतमाचार्यमश्वत्थामा किमब्रवीत् ॥ १५
संजय उवाच ।
छद्मना निहतं श्रुत्वा पितरं पापकर्मणा ।
वाष्पेणापूर्यत द्रौणी रोषेण च नरर्षभ ॥ १६

om.) D₀₁ D_n D_{2.5} G₁ M₃₋₅ शिव्यः; D₃ शिव्यः;
D_{1.7.8} शिव्यं (for शिल्पं). G₁ M_{1.2} सर्वं तत् (by
transp.). —^a) D₃ तु (for च). —^a) G₁ M₁₋₄ संख्ये;
G₁ संखे (for संख्ये). S₂ K₁ D_{2-5.7.8} M₃₋₅ अनन्तरं.

8 B₁ om. 8^{ab} (cf. v. l. 6). D₈ om. 8 (cf. v. l.
4). D₄ om. 8^a-11^a. —^a) D₂ अनुगतं (for अनुमतः).
S₂ D₃ शास्त्रे; K₁ चास्त्रे; K₂ D_{n2} D_{2.5} संख्ये; T₁
शास्त्रे (for शास्त्रे). B₂₋₅ D₀₁ D_{n1} रामस्य तु समः
शास्त्रे; T₂ (inf. lin. as in text) G_{1.8.4} M₁ रामस्यानु-
मतः शास्त्रे (T₂ G₁ 'स्त्रे'); G₂ रामस्यापि समः शास्त्रे. —^b)
M_{1.2} युवा (for युधि). — D₀₁ D_{n1} om. 8^{ad}. —^c)
S₂ धैर्यं (for वीर्यं). —^a) G₄ युधि (for मतौ).

9 D_{1.5} om. 9 (cf. v. l. 8, 4). D₈ om. 9^{ab}.
—^a) B_{1.3-5} D₀₁ D_{n1} स्वैर्यै; B₂ सत्रे; G₂ सत्रे (for
द्युत्वा). —^b) S₂ युधि (for युवा). —^a) S₁ K_{1.3}
[s]मर्षः (S₂ 'र्व'); B₁₋₄ D₀₁ D_{n1} चाग्नी (for सर्पः).

10 D_{1.5} om. 10 (cf. v. l. 8, 4). —^a) S₂
damaged. D_{2.5.7.8} परमो (for प्रथमो). T₂ G₂₋₄ स
रथप्रवरो लोके. —^b) K_{1.2.4} D_{n2} D_{1.8.5.7.8} T₂ G₂₋₄
M₃₋₅ जितधन्वा (for दृढ). —^c) D₀₁ G₂ M_{3.5} (sup.
lin.) शीघ्रानिल; D₅ G₄ M_{4.5} शीघ्रानल; T₂ शीघ्रेनिल;
M_{1.2} शीघ्रोऽनिल (for शीघ्रोऽनिल). D_{7.8} इवोद्गत्यां (D₈
'त्या); M_{1.2} इवाक्रन्दो (for 'क्रन्दे). —^a) D_{5.7.8}
कालरूप; S (G₅ missing) वीरः कुद्र (for चरन्कुद्र).

11 D₁ om. 11^{ab} (cf. v. l. 8). D₈ om. 11 (cf.
v. l. 4). —^a) B₃ (marg.) युध्यता; D_{7.8} स्वरता
(for अत्यता). —^b) T₂ G₂₋₄ अतिः; M₃₋₅ अपि (for
अभिः). D₅ धरण्याभिनिपीडिता. — After 11^{ab}, S

(G₅ missing) ins.:

1358* मेघस्तनितनिर्घोषा कम्पते भयविक्रवा ।

—^c) S₁ K₁₋₃ D_{3.5} नाव्यथत; D₁ न व्याप्यत; D_{7.8}
न व्यथेत (for न व्यथति). —^a) M_{4.5} धीरः (for
वीरः).

12 D₈ om. 12 (cf. v. l. 4). —^a) D₀₁ (marg.
as in text; sec. m.) D_{n1} व्रतधरो; D_{7.8} बले शक्तो;
G₃ lacuna (for व्रतस्त्रातो). —^b) T₂ G₂₋₄ परं गतः
(for च पारगः). D₃ चतुर्वेदस्य पारगः.

13 = (var.) 3. D₈ om. 13 (cf. v. l. 4). —^b)
G₁ M_{1.2} संजय (for संयुगे). —^a) S₁ K₁₋₃ D_{n2}
D_{2.8} G_{3.4} M₃₋₅ सोऽश्वत्थामा (for अश्व^o). — After
13, D₂ reads 15 for the first time repeating it in
its proper place.

14 D₈ om. 14 (cf. v. l. 4). K_{1.2} B_{2.4} om.
(hapl.) 14-15. —^b) D_{n2} D_{1.7.8} दृष्टस्त्र; D₅ दृष्टस्त्र
(for सृष्टस्त्र). —^c) T₂ G_{2.4} तथा; G₃ ततो (for
यथा). G₂ पांचालो (for पाञ्चाल्यो).

15 K_{1.2} B_{2.4} D₈ om. 15 (cf. v. l. 14, 4).
D₂ reads 15 for the first time after 13. —^a)
D₂ (first time) न (for तं). D₁ धृष्टद्युम्नेन निहतः.
—^b) D_{n2} D_{1.5.7.8} क्षुद्देण (for क्रूरेण). B_{1.8.5}
D₀₁ D_{n1} अदीर्घः; D_{n2} अत्यन्यः; D₄ अल्पस्य (for
अत्यल्पः). S₂ मेघस्ता; T₂ G_{3.4} शिल्पिना; G₂ बुद्धिना
(for दर्शिना). D₂ (both times) क्षुद्देणात्यल्पदर्शिना.
—^c) = 3^{ad}, 13^{ad}. D₂ (first time) स सोऽश्वत्थामा
(for अश्व^o). — After 15, K₁ B D₀₁ D_n D_{1-5.7.8}
S (G₅ missing) ins. an addl. colophon [Adhy. name :

तस्य क्रुद्धस्य राजेन्द्र वपुर्दिव्यमदृश्यत ।
 अन्तर्कश्येव भूतानि जिहीर्षोः कालपर्यये ॥ १७
 अश्रुपूर्णं ततो नेत्रे अपमृज्य पुनः पुनः ।
 उवाच कोपाग्निः श्वस्य दुर्योधनमिदं वचः ॥ १८
 पिता मम यथा क्षुद्रैर्यस्तशस्त्रो निपातितः ।
 धर्मध्वजवता पापं कृतं तद्विदितं मम ।
 अनार्यं सुनुशंसस्य धर्मपुत्रस्य मे श्रुतम् ॥ १९
 युद्धेष्वपि प्रवृत्तानां ध्रुवौ जयपराजयौ ।

द्वयमेतद्भवेद्राजन्वधस्तत्र प्रशस्यते ॥ २०
 न्यायवृत्तो वधो यस्तु संग्रामे युध्यतो भवेत् ।
 न स दुःखाय भवति तथा दृष्टो हि स द्विजः ॥ २१
 गतः स वीरलोकाय पिता मम न संशयः ।
 न शोच्यः पुरुषव्याघ्रस्तथा स निधनं गतः ॥ २२
 यत्तु धर्मप्रवृत्तः सन्केशग्रहणमाप्तवान् ।
 पश्यतां सर्वसैन्यानां तन्मे मर्माणि कृन्तति ॥ २३
 कामात्क्रोधादवज्ञानाद्दर्पाद्भाल्येन वा पुनः ।

C. 7. 2508
B. 7. 195. 10
K. 7. 196. 10

Bom. ed.: धृतराष्ट्रप्रश्नः. — *Adhy. no.* (figures, words or both): Dn1 195; D2 198; D3 88; T G2.3 189; G1 M1.2 188; G4 190; M3-s 187. — *Śloka no.*: Dn1 15].

16 ^a G3 शस्त्रमा (sic) (for छत्रमा). D2. 4. 5. 7. 8 दृष्टा (for श्रुत्वा). — ^d Ś2 च परंतप; Dn1 D3 भरत-
 पंभ; G1 M1.2 च नराधिप; M3-s च नरपंभः.

17 Ds om. 17. — ^a B4 क्रोधेन (for क्रुद्धस्य).
 — ^b K3.4 B Dc1 Dn दीप्तम् (for दिव्यम्). S (G5
 missing) वपुर्न्यक्षकाशते. — ^c K2 च (for [हृ]व).
 — ^d D3 जिहांसोः; T G1.3.4 M दिव्यशोः (for
 जिहीर्षोः). G2 दिव्यशोरिव संशये.

18 ^a B Dc1 Dn1 D3 T G2-4 तोयः; D1 अस्तु;
 D3 अस्तु; G1 M वाक्प- (for अश्रु-). Dn2 G1 M1.2
 -पूर्णं (for -पूर्णं). Ds तथा (for ततो). — ^b Ś
 K3.4 B Dc1 Dn1 D1.3 T G2-4 व्यपमृज्य; K1 उप-;
 K2 व्यसृज्य च; Ds M3-s प्रसृज्य च; Ds अवसृज्य;
 G1 M1.2 विसृज्य (M3 'व्य' च (for अपमृज्य). — ^c
 G1 M1.2 रोषान् (for कोपान्). Dc1 Dn1 D1.6 M1.2.5
 निश्चय (for निः). — ^d Dn2 अयाव्रवीत् (for
 हदं वचः).

19 D4 om. 19^a ^b ^c K1 वृथा (for यथा).
 Ds. 7. 8 क्रुद्धैर (for क्षुद्धैर). G1 M1.2 श्रुतं यथा पिता
 क्षुद्धैर. — ^d K4 मया; D1.6 S (G5 missing) तव
 (for मम). — ^e K4 D2.3.5 T सुनुशंसं (Ds 'त्यं' च;
 G1-4 M1.2 च नृशंसं च (for सुनुशंस्य). B2-4 Dc1
 Dn1 अनार्यस्य नृशंसस्य; Dn2 अनार्ये सनुशंसं च; M3-s
 अनार्यत्वं नृशंसं च. — ^f Ds धर्मराजस्य; T G2-4
 'पुत्रेण (for 'पुत्रस्य). Ś K (K5 missing) D1 शाश्वतं;
 D3 तच्छ्रुतं; M4 मे श्रुतः (for मे श्रुतम्). — After 19,
 G1 M ins.:

1359* असत्यवाक्यं यत्तेन लोभादुक्तं दुरात्मना ।

राज्यहेतोर्नृशंसेन तच्चापि विदितं मया ।

[(L. 1) M3-s यत्तेन (for यत्तेन). — (L. 2)
 M3-s त्वया.]

20 ^a B1.2 Dc1 Dn1 D2 T G1-4 M1.2 [अ]भि-
 (for [अ]पि). — ^b K3 B Dc1 Dn1 D2 ध्रुवं; Ds
 यथा (for ध्रुवौ). — ^c D2 दैवम्; D1-c दिष्टम्; G3
 स्वयम् (for द्वयम्). — ^d D2 धर्मम् (for वधम्). Ś1
 D2-5. 7. 8 G1 M1.2 तस्य (for तत्र). Ds प्रपश्यते.

21 ^a Dn2 नापप्रजो; T G2-4 M3-s न्याययुक्तो;
 G1 M1.2 'युद्धे (for 'वृत्तो). G4 वधे (for वधो). Ds
 S (G5 missing) यस्य (for यस्तु). — ^b S (G5
 missing) मतो मे (for संग्रामे). D1 संग्रामे युध्यतेभवन्.
 — ^c B4 Dn2 D3.5 यथा (for तथा). D2 भूतो; G1
 M दृष्टो (M1.2 'दृष्टौ) (for दृष्टो). D1 [s]पि (for
 हि). K3 B Dc1 Dn2 D3 S (G5 missing) स द्विजैः;
 D4 यद्विजैः (for स द्विजः).

22 ^a D1 प्रचारः (sic); Ds प्रवीरः (for स वीरः).
 — ^b B1.5 Dc1 Dn1 D2.7 -व्याघ्र (for -व्याघ्रस्य).
 — ^c B1.5 Dc1 Dn1 यस्तदा (B1 'था); Ds. 6 यथा
 स; D1 तथा सं- (for तथा सं). D3 पिता मम महामते.
 — After 22, Ds ins. 1360*.

23 Ds om. 23^a. — ^a D2.5 T G2 स (for सन्).
 — ^b B1.2 Dc1 Dn1 Ds केशप्रहमवाप्तवान्. — ^c Ś
 भूतानां (for सैन्यानां). — ^d D1.3 मर्मे नि- (for
 मर्माणि). — B Dc1 Dn D2.5 ins. (var.) *Feṣi-*
saṁhāra, (Act 3, st. 37) after 23: Ds after 22:

1360* मयि जीवति यत्तातः केशप्रहमवाप्तवान् ।

कथमन्ये करिष्यन्ति पुत्रेभ्यः पुत्रिणः सृष्ट्वाम् ।

C. 7. 6829
B. 7. 195. 11
K. 7. 196. 10

वैधर्मिकानि कुर्वन्ति तथा परिभवेन च ॥ २४
तदिदं पार्षतेनेह महदाधर्मिकं कृतम् ।
अवज्ञाय च मां नूनं नृशंसेन दुरात्मना ॥ २५
तस्यानुबन्धं स द्रष्टा धृष्टद्युम्नः सुदारुणम् ।
अनार्यं परमं कृत्वा मिथ्यावादी च पाण्डवः ॥ २६
यो ह्यसौ छद्मनाचार्यं शस्त्रं संन्यासयत्तदा ।
तस्याद्य धर्मराजस्य भूमिः पात्यति शोणितम् ॥ २७

[(L. 1) B₅ मत्ततः (for वं). D₃ केशग्रहणमाप्तवान् (for the post. half). — D₅ om. line 2. — (L. 2) D₅ स्पृहं.]

24 °) D₂. 4-8 मम (for कामात्). S₂ K₂ Dn₂ अयाज्ञा (K₂ 'य ज्ञा' नाद्; K₂. 4 B D₁ Dn₁ D₃ अविज्ञानाद् (for अवज्ञा). — °) K₄ B₂. 3. 6 D₅ हर्षाद्; Dn₂ D₂. 4. 7. 8 द्वेषाद्; D₅ G₂ दोषाद् (for दर्पाद्); D₃ दर्पेणान्येन वा पुनः. — °) S₁ वैधर्मिकानि (sic); K₄ D₅ विधर्मिकाणि (K₄ 'नि'); B D₁ Dn₁ D₃. 6. 8 S (G₅ missing) वैधर्मि (G₄ 'मै' काणि; Dn₂ D₂. 4 विधर्मिकानि (for वैधर्मिकानि). K₃ वैधर्मिका विकुर्वन्ति. — °) Dn₂ D₂. 4-8 S (G₅ missing) तथा परिभवन्ति च.

25 °) S₁ K₁. 2 D₁ यद् (for तद्). — °) D₃ चाधर्मिकं; D₄. 6-8 अ (D₅ आ) धा (for आध). T G₂-1 कृतं महदाधर्मिकं. — °) K₁ D₁ तु (for च). M₃. 5 मा (for मां). G₂ तदवज्ञाय मां नूनं. — °) K₁ M₁. 2 महात्मना; D₁ दुरात्मनां (for 'त्मना).

26 °) D₅ अनुबन्धः (for 'बन्ध'). K₁. 2 D₂. 8 स द्रष्टा; K₄ B D₁ Dn₁ द्रष्टासौ; D₁. 3 संद्रष्टा (D₅ 'ष्टा'); D₄. 7 स द्रष्टा; G₁ M₁. 2 क्षुद्रस्य; M₃. 4 क्षुद्रः सन्; M₅ क्षुद्रः स (for स द्रष्टा). D₅ तस्यावमानस्य फले; T G₂-1 तस्यैवाद्य वधः क्षुद्रो. — °) D₅ स मंदधीः; G₁ M₁. 2, 5 (sup. lin.) प्रपश्यतु (for सुदारुणम्). T G₂-4 धृष्टद्युम्नस्य दारुणः. — °) B D₁ Dn₁ अकार्यं (for अनार्यं). — °) Dn₁ D₅ मिथ्यावादं (for 'वादी).

27 °) G₁ M₁. 2 यच् (for यो). S (G₅ missing) चालौ (for ह्यसौ). D₁. 5 यो ह्यस्य छद्मना वीर्यं. — °) D₅ छद्मं (for शस्त्रं). K₂ पथ्यमित्यत् (sic); B D₁ Dn₁ D₁. 8 अत्याजयत्; D₅ वै न्यासयन्; G₁ M स न्यासयद् (for संन्यासयद्). D₅ मृधे; S (G₅ missing) रणे (for तदा). — °) B₁ पुत्रस्य (for 'राजस्य). — °) D₅ धर्मः; G₂ मृत्युः (for भूमिः). — After 27, N (except D₅; K₅ missing) ins. :

सर्वोपायैर्यतिष्यामि पाञ्चालानामहं वधे ।
धृष्टद्युम्नं च समरे हन्ताहं पापकारिणम् ॥ २८
कर्मणा येन तेनेह मृदुना दारुणेन वा ।
पाञ्चालानां वधं कृत्वा शान्तिं लब्धास्मि कौरव ॥ २९
यदर्थं पुरुषव्याघ्र पुत्रमिच्छन्ति मानवाः ।
प्रेत्य चेह च संप्राप्तं त्राणाय महतो भयात् ॥ ३०
पित्रा तु मम सावस्था प्राप्ता निर्वन्धुना यथा ।

1361* शपे सत्येन कौरव्य इष्टापूर्तेन चानघ ।

अहत्वा सर्वपाञ्चालाञ्जीवेयं न कथंचन ।

[(L. 1) B₁. 3. 4 Dn₂ D₁-3 चैव हि; B₂. 5 D₁ Dn₁ चैव ह; D₃ वै तथा (for चानघ). — (L. 2) K₁ 'पा' हूनां; B₁ 'पञ्चालान् (for 'पाञ्चाल')'. S₁ K₁-3 D₁ जीवेयं चेत्; D₅ न जीवेयं (by transp.). B D₁ Dn₁ D₅ यदि जीवेयमित्युत (for the post. half).]

28 D₂ om. 28. D₄ om. 28^a-29^b. T G₂-1 om. 28-29; G₁ M₁. 2 read the same after 32, while M₃-5 read them after 33. — °) D₅ वधिष्यामि; G₁ M यतिष्येहं (for 'प्यामि). — °) K₄ D₁ M₁. 2. 5 पञ्चालानाम् (for पाञ्चाल). S₂ D₅ महामृधे; Dn₂ D₅ महाहवे (for अहं वधे). — °) Dn₁ lacuna; D₃. 6 हत्वा (for हन्ता). D₃ पापकर्मिणं.

29 For the sequence in G₁ M, cf. v. l. 28. D₄ om. 29^a; T G₂-1 om. 29 (for all, cf. v. l. 28). — °) B₁ तेनाहं; G₁ M केनापि (for तेनेह). — °) K₂ B₁. 2. 5 D₁ Dn₂ D₃. 5. 8 G₁ M₂ च; D₁ om. (for वा). — °) K₄ M₁ पञ्चालानां; D₂. 4. 5. 7. 8 बालानां च (for पाञ्चालानां). M₃-5 श्रुत्वा (for कृ). — °) K₁ चार्ति (for शान्ति). D₄ लब्धा स्म (sic); D₅ गतास्मि (for लब्धास्मि). G₁ M भारत (for कौरव).

30 °) T G₂. 4 'व्याघ्राः (for 'व्याघ्र). — °) K₄ B D₁ Dn D₂. 3. 6 S (except G₅; G₅ missing) पुत्रान् (for पुत्रम्). D₅ वा न वा (for मानवाः). — °) K₄ B D₁ Dn T G₂. 4 M₃-5 संप्राप्तासु; D₂ संप्राप्य; D₃ संप्राप्तासु; D₅ वै पुत्रासु; G₁ M₁. 2 नः सर्वासु (for संप्राप्तं). — °) K₄ B D₁ Dn D₃ T G₂-1 M₃-5 त्रायेते; D₂ त्रास्यन्ति; D₄ पुत्राय; D₁ त्राणांघ (sic); G₁ M₁. 2 त्रायेत (for त्राणाय). D₃ यथा (for भयात्). D₅ त्रायेते नरकात्पितृन्.

31 °) D₅ 'प्रकाशे तु (for 'प्रतीकाशे).

मयि शैलप्रतीकाशे पुत्रे शिष्ये च जीवति ॥ ३१
 धिक्कामास्त्राणि दिव्यानि धिग्बाहू धिक्पराक्रमम् ।
 यन्मां द्रोणः सुतं प्राप्य केशग्रहणमाप्तवान् ॥ ३२
 स तथाहं करिष्यामि यथा भरतसत्तम ।
 परलोकगतस्यापि गमिष्याम्यनृणः पितुः ॥ ३३
 आर्येण तु न वक्तव्या कदाचित्स्तुतिरात्मनः ।
 पितुर्वधममृष्यंस्तु वक्ष्याम्येह पौरुषम् ॥ ३४
 अद्य पश्यन्तु मे वीर्यं पाण्डवाः सजनार्दनाः ।
 मृद्वतः सर्वसैन्यानि युगान्तमिव कुर्वतः ॥ ३५
 न हि देवा न गन्धर्वा नासुरा न च राक्षसाः ।
 अद्य शक्ता रणे जेतुं रथस्थं मां नरर्षभ ॥ ३६

मदन्यो नास्ति लोकेऽस्मिन्नर्जुनाद्वास्त्रवित्तमः ।
 अहं हि ज्वलतां मध्ये मयूखानामिवांशुमान् ।
 प्रयोक्ता देवसृष्टानामस्त्राणां पृतनागतः ॥ ३७
 कुशाश्वतनया ह्यद्य मत्प्रयुक्ता महामृषे ।
 दर्शयन्तोऽऽत्मनो वीर्यं प्रमथिष्यन्ति पाण्डवान् ॥ ३८
 अद्य सर्वा दिशो राजन्धारामिरिव संकुलाः ।
 आवृताः पत्रिमिस्तीक्ष्णैर्दृष्टारो मामकैरिह ॥ ३९
 किरन्धि शरजालानि सर्वतो भैरवस्वरम् ।
 शत्रून्निपातयिष्यामि महावात इव द्रुमान् ॥ ४०
 न च जानाति वीभत्सुस्तद्वन्न न जनार्दनः ।
 न भीमसेनो न यमौ न च राजा युधिष्ठिरः ॥ ४१

C. 7. 9007
B. 7. 195. 29
K. 7. 196. 29

32 °) Gs मामस्त्राणि (for ममा'). — °) Ds बाहुर्
 (for बाहू). — With 32^{ad}, cf. Vepīśambhāra 3. 31.
 — °) Ks Ds T यं स्म; Gs M यन्मा; Gs यं मा
 (for यन्मां). Ds द्रोणः (for द्रोणः). — °) Ks B
 Ds Dn Ds. 7. 8 केशग्रहणमाप्तवान्. — After 32, Gs
 M. 1. 2 read 28-29.

33 Gs M. 1. 2 om. 33^{ad}. — °) Ds. 5. 7. 8 परलोकं;
 Ds 'लोके (for 'लोक). — After 33, Ms-3 read
 28-29.

34 °) B Ds Dn आर्येण हि; Ds. 3 Gs आचार्येण;
 Ds न चार्येण (for आर्येण तु). Ds. 3 Gs तु (for
 न). Dn Ds. 4-8 कर्तव्या (for वक्तव्या). — °) Ks. 2
 स्तुतिम् (for स्तुतिर). Śs Ks. 2 आत्मना (for 'नः').
 Ds कथंचित्स्तुतिमात्मनः. — °) Ds अमृष्यं (for 'प्यं').
 — °) Ds अद्यात्मा; T Gs-4 अद्यैव (for अद्येह).

35 °) T Gs-4 पाण्डवाः सहकेशवाः. — °) Ds मर्दितः;
 Ds. 7. 8 मर्दितः; Ds निघ्नतः (for मृद्वतः).

36 °) Ds च (for हि). — °) Śs Dn Ds. 5. 7. 8
 नासुरो रगराक्षसाः. — °) Dn Ds Ds. 1. 2 मा (for
 मां). Śs Ks Ds रथर्षभ; Ks. 4 Dn Ds S (Gs miss-
 ing) नरर्षभाः; Dn 'र्षभं (for 'र्षभ).

37 °) Dn Ds-3 Gs नार्जुनाद् (for अर्जुं). B D
 (except Ds) वा (Ds शा)स्त्रवित्तवित्; S (Gs missing)
 अस्त्रवित्तमः. — With 37^{ad}, cf. 6. 32. 21^{ad}. — °)
 Ms-5 अद्य (for मध्ये). — °) Ks शस्त्राणां (for श').
 Śs Ks पृतनां गतः; Ms 'नावृतः.

38 Ds. 8 om. 38. — °) Ś K (Ks missing) T

Gs-4 Ms (sup. lin. as in text) भृशश्च (Ks 'श्च'); Ds
 कुशाश्व-; Gs M. 1-4 प्रियाश्च (for कुशाश्व-). Ds राजन्; Gs
 M. 2 ह्यस्य (for ह्यद्य). B Ds Dn Ds-3 भृशमिष्य-
 (B Ds 'त्वा)सनादद्य; Ds कुशावागतनयाश्च (hyper-
 metric). — °) Ś Ks-3 Ds. 6 मंत्रयुक्ता (for मत्प्र').
 B Ds Dn Ds-3 T Gs-4 M. 2 महाहवे; Ds ममाहवे;
 Ms-3 महारणे (for 'मृषे). — Ds om. 38^{ad}. — °)
 Ks दर्शयंत; Gs. 2 M. 2 'यन्ति (for 'यन्तो). Ś K
 (Ks missing) Ds. 6 मनो-; B Ds Dn Ds. 4 शरा;
 Dn निजं; T [55]स्मनां (for सऽऽत्मनो). S (Gs
 missing) रूपं (for वीर्यं). — °) Ks Ds प्रथमिष्यन्ति;
 Gs प्रमथिष्यन्ति; Gs प्रथमिष्यन्ति; Gs प्रथमि' (for
 प्रमथिष्यन्ति). Dn प्रमथिष्यन्ति पाण्डवाः; Ds प्रथमिष्यन्ति
 पार्थिवान्.

39 °) Ds पश्चिमिष्य (for पत्रि). Śs Ks तीक्ष्णैर्
 (for तीक्ष्णैर्). — °) Bs सह (for इव). Ds दृष्टारो
 मामर्दितमं; Ds 'रो मामका इव. — For 39^{ad}, S (Gs
 missing) subst.:

1362* भविष्यन्ति महाराज मच्छरैर्विदिशस्तथा ।

40 °) Ks B. 1-2 Ds Dn Gs M विकिरन्; Ds.
 4-8 किरंतः; T Gs-4 विस्त्रजन् (for किरन्धि). Gs M. 2
 मालाभिः (for जालानि). Ds किरंतं सारजालानि. — °)
 Ds. 5 भैरवं (for 'व-). Śs Ds. 6 स्वनं; Ks B Ds
 Dn Ds Ms स्वनान्; T Gs. 2. 4 M. 1-2 (sup. lin.)
 स्वरान्. — °) Ds सङ्गृह्णन् (for शङ्गृह्णन्). Ks Ds च निह-
 निष्यामि; Ds विघातयि'; Ms. 5 (sup. lin.) निवारयि'
 (for निपातयि').

41 °) Ds. 5 च (for न). — °) Ds om. the first न.

C. 7. 90C8
B. 7. 195. 30
K. 7. 196. 79

न पार्षतो दुरात्मासौ न शिखण्डी न सात्यकिः ।
यदिदं मयि कौरव्य सकल्यं सनिवर्तनम् ॥ ४२
नारायणाय मे पित्रा प्रणम्य विधिपूर्वकम् ।
उपहारः पुरा दत्तो ब्रह्मरूप उपस्थिते ॥ ४३
तं स्वयं प्रतिगृह्णाथ भगवान्स वरं ददौ ।
वव्रे पिता मे परममखं नारायणं ततः ॥ ४४
अथैनमब्रवीद्राजन्भगवान्देवसत्तमः ।
भविता त्वत्समो नान्यः कश्चिद्युधि नरः कचित् ॥ ४५
न त्विदं सहसा ब्रह्मन्प्रयोक्तव्यं कथंचन ।
न ह्येतदस्त्रमन्यत्र वधाच्छत्रोर्निवर्तते ॥ ४६

42 °) Ś1 K3 [s] सौ दुरात्मा; Ds दुरात्मा वै (for 'त्मासौ'). —^δ) G2.4 शिखण्डी न च सात्यकिः. —[°]) S (Gs missing) तद् (for यद्). Ś2 lacuna; Ms. 5 मम (for मयि). —^d) B1 Dn1 T G1-4 M1-3. 5 सकलं; M4 सकलं (for सकल्यं). Dn1 G3 M1. 2. 4. 5 सनिवर्तनं; D2 सविसर्जनं. Ś K1-3 D1 सं (K2 स) कल्प-मनिवर्तनं; Dn2 Ds-8 सरहस्यनि (Dn2 'कल्पस्य वि') वर्तनं.

43 Ds om. 43^{ab}. —^a) Ś K1-3 D1 नः (for मे). D1. 5. 7. 8 नारायणाखं मे पित्रा. —^δ) D1. 8 ध्यात्वा तं (for प्रणम्य). —[°]) M3. 4 उपहारस् (for उपहारः). T G2-4 तथा; G1 M तदा (for पुरा). D1. 8 प्रार्थितं सावहारं च. —^d) Ś1 उपस्थिते; Ś2 ततः स्थिते; K4 B1-8 Dc1 Dn1 उपस्थितः (for 'स्थिते').

44 °) K3 ते; Dc1 तत्; Dn1 न (for तं). B5 शरं (for स्वयं). —[°]) Ds समरम्; T G2-4 सवरम् (for परमम्). D4 वव्रे निपतितामेप.

45 °) Ds तत्र (for अथ). —^d) Ds om. 45^b-46^a. —^d) Ds कापि (for युधि). Ds युधि कश्चिन्नरपैभः. —^a) After 45, G1 M ins.:

1363* गृहाणाखमिदं विप्र नारायणमुत्तमम् ।

46 D1 om. 46^a (cf. v. l. 45). —^δ) Ś1 K3 कदा-चन (for कथं).

47 °) D1 वैतत्; M3-5 च तत् (for चैतत्). Ś K1-3 D1 कर्तुं; D1. 8 जातु; T G2-4 जेतुं (for जातुं). —^δ) Ś1 (by corr.) 2 K4 B Dc1 Dn1 Ds. 5 केन; Dn2 G3 कं न; D1 को नु; M3-5 येन (for को न). Ds वध्या इति; D1 मेध्यादिति (sic); T G1-4 M

न चैतच्छक्यते ज्ञातुं को न वध्येदिति प्रभो ।
अवध्यमपि हन्याद्वि तस्मान्नैतत्प्रयोजयेत् ॥ ४७
वधः संख्ये द्रवश्चैव शस्त्राणां च विसर्जनम् ।
प्रयाचनं च शत्रूणां गमनं शरणस्य च ॥ ४८
एते प्रशमने योगा महास्त्रस्य परंतप ।
सर्वथा पीडितो हि स्यादवध्यान्पीडयन्नणे ॥ ४९
तजग्राह पिता मह्यमब्रवीच्चैव स प्रभुः ।
त्वं वर्षिष्यसि दिव्यानि शस्त्रवर्षण्यनेकशः ।
अनेनास्त्रेण संग्रामे तेजसा च ज्वलिष्यसि ॥ ५०
एवमुक्त्वा स भगवान्दिवमाचक्रमे प्रभुः ।

वध्यत वै (for वध्येदिति). D2 न वध्यादिति मे प्रभो; Ds केनचिद्युधि वै प्रभो; D1 केनवेत्सहितुं प्रभो (sic); Ds केनचिज्जहितुं प्रभो. —^d) G1. 3. 4 M नैनं (for नैतत्).

48 °) Dn2 D2. 1. 5 अथ (for वधः). G1 M संख्ये (for संख्ये). Ś K (Ks missing) Dn2 D1-5 रथस्यैव; B Dc1 Dn1 ध्रुवश्चैव (for द्रव). Ds-8 विक्रमे तिष्ठतश्चापि (Ds 'श्चैव'). —^δ) Ś K (Ks missing) D1 निवर्तनं; Dn2 D2. 5. 6 विसर्जनं; G1 M1. 2 विवर्जनं (for विसं). —[°]) K4 Dn D2. 4-6 प्रयाचतां; B3 (marg.) प्रयातनं; B1 प्रयाचनं; B5 प्रयाचनं (for प्रया).

49 °) B5 Dn2 प्रशामने; D1 प्रशंसने (for प्रशमने). —^δ) Ds G1. 3. 4 M ममास्त्रस्य (for महा). —[°]) D2. 4. 5 पीडिते (for 'तो'). K4 B2-5 Dn2 G4 हिंस्याद्; M3-5 हन्याद् (for हि स्याद्). —^d) D4 अवध्यात् (for 'ध्यान्'). D2. 5. 7. 8 पीडयेद् (for 'यन्'). Ds अवध्यादपि पीडयेत्.

50 °) K4 D1 उज्जग्राह; T G2-4 M1. 2 तं जं (for तज्जं). —^δ) G3. 4 अस्त्रविच् (for अन्नवीच्). —[°]) K4 D1. 7 Ms om. (hapl.) 50^a-51^b. —[°]) K1 कर्षसि (submetric); K2 करिष्यसि; B3-5 वर्षिष्यसि; D1 वर्षिष्यसि; S (Ms om.; Gs missing) धरिष्यसि (for वर्षि). Ś2 [अ]नेकानि; B Dc1 Dn1 सर्वाणि; D2 शस्त्राणि; Ds संग्रामे (for दिव्यानि). D3 वर्षिष्यसि दिव्यानि. —^d) T G2. 4 शरः; G2 ह्यस्त्रं (for शस्त्रं). Ds सर्वाणि (for 'वर्षाणि'). D2 दिव्यानि च अनेकशः. —[°]) Dn2 संग्रामे (for संग्रामे). —^d) Dn2 Ds. 6. 8 S (Ms om.; Gs missing) प्र- (for च). D4 तेजसा प्रज्वलस्त्रिव.

एतन्नारायणादस्त्रं तत्प्राप्तं मम वन्धुना ॥ ५१
तेनाहं पाण्डवांश्चैव पाञ्चालान्मत्स्यकेकयान् ।
विद्रावयिष्यामि रणे शचीपतिरिवासुरान् ॥ ५२
यथा यथाहमिच्छेयं तथा भूत्वा शरा मम ।
निपतेयुः सपत्नेषु विक्रमत्स्वपि भारत ॥ ५३
यथेष्टमश्मवर्षेण प्रवर्षिष्ये रणे स्थितः ।
अयोमुखैश्च विहगैर्द्रावयिष्ये महारथान् ।

परश्वधांश्च विविधान्प्रसक्ष्येऽहमसंशयम् ॥ ५४
सोऽहं नारायणास्त्रेण महता शत्रुतापन ।
शत्रुन्विध्वंसयिष्यामि कदर्थीकृत्य पाण्डवान् ॥ ५५
मित्रव्रह्मगुरुद्वेषी जाल्मकः सुविगर्हितः ।
पाञ्चालापसदश्चाथ न मे जीवन्विमोक्ष्यते ॥ ५६
तच्छ्रुत्वा द्रोणपुत्रस्य पर्यवर्तत वाहिनी ।
ततः सर्वे महाशङ्खान्दध्मुः पुरुषसत्तमाः ॥ ५७

C. 7. 5024
B. 7. 195. 46
K. 7. 196. 49

51 K: D1.7 M3 om. 51^{ab} (cf. v. l. 50). D4 om. 51^b-52^a. —^b) Ś K1-3 D3 विमुः; D5 ततः (for प्रभुः). —^c) D2.6 एवं; D3 एकं (for एतन्). D5 अंशं (for अक्षं). S (G3 missing) एवं नारायणास्त्रं तत्. —^d) S (G3 missing) सं- (for तत्). The portion of the text from मम up to पाञ्चाला (in 52^b) is damaged in Ś2. Dn2 D2.5.6 पित्र (for मम). D1.3 पित्रा प्राप्तं तदा मम. — After 51, D1.3 ins.:

1364* तत्प्रसादान्मया प्राप्तं महाशमिदमुत्तमम् ।

52 D4 om. 52^a (cf. v. l. 51). 52^{ab} is partly damaged in Ś2. —^b) K3 पंचालान् (for पाञ्चालान्). T G1-3 M च स; G4 सह- (for मत्स्य-). Dn D1-3 कैकयान् (for कैक-). —^d) D2 यथा (for इव). — After 52, G1 M1.2 read 56 for the first time, repeating it in its proper place.

53 B1 om. 53^{ab}. —^b) Ś2 K1.2 D1 भूताः (for भूत्वा). Ś K (K3 missing) D1 हि मे (for मम). —^c) D2 शरीरेषु (for सपत्नेषु). —^d) Ś1 K3 विक्रामत्सु; B Dc1 Dn1 D3.6 G1.2 M1.2 निह (Dn1 'हि'तेषु; T G3.4 स्वहतेषु (for विक्रामत्सु). Ś K1-3 D1 [ह]िह (for [अ]पि). M3-5 निहन्त्युरपि भारत. — After 53, G1 M1.2 ins.:

1365* इच्छेयं यदि दूरस्थानिहिन्यन्ति मे शराः ।

54^a) D4 यथेष्ट- (for 'ष्टम्'). Dn2 D5 अक्षः; D4 शक्षः; T G3.4 इषुः (for अश्म-). —^b) B5 वर्षिष्ये च; M3-5 प्रचरिष्ये (for प्रवर्षिष्ये). Ś1 K3 रणेप्रतः; B Dc1 Dn1 पुनः पुनः; D5 रणोत्कटः; G1.3.4 M1.2 रणे स्थितः (for रणे स्थितः). —^c) K1 अयोमुखैश्च (for अयो-). D1 हि (for च). G2 विशिखैस् (for विहगैश्च). —^d) T G2-4 तापयिष्ये (for द्राव-). D2.4.5.7.3 रथोत्तमान् (D4 'मे'); D5 महारणे (for 'रथान्'). —^e) B1 Dc1 Dn1 D2.4-3 परस्वधांश्च; G3.4 'स्वधांश्च (for 'श्वधांश्च). B Dc1 Dn D3 S (G3 missing) निशितान्

(for विविधान्). —^f) Ś2 प्रमोक्ष्ये; K4 B Dc1 Dn1 S (G3 missing) उत्स्र (Dn1 G1 'त्स्र')क्ष्ये (Dn1 'क्षे'); Dn2 प्रसक्ष्ये; D3 प्रसक्ष्ये; D5 उत्स्रक्ष्ये; D4.5 प्रसक्ष्ये; D5 उत्स्रक्ष्ये; D7.3 प्रसक्ष्ये (for प्रसक्ष्ये). Dn2 D5 [s]क्ष्ये; D4 [प]क्ष्ये (for ष्म). D5 कथंचन (for वसंशयम्).

55^a) D2 सोऽहं नारायणेनाथ. —^b) Ś1 K2.4 Dn1 D1.3.4 -तापनः; Dn2 -सूदन; S (G3 missing) -तापिना (for -तापन). —^c) G3.4 शत्रुन्विध्वंसयित्वा च. —^d) G1 M1.2 पार्थिवान् (for पाण्ड-).

56 G1 M1.2 read 56 for the first time after 52. —^a) D5 मिथ्यावादी (for मित्रव्रह्म-). Ś1 (sup. lin.) -कुरु- (for -गुरु-). B Dc1 Dn1 D1.3-3 द्रोही (for -द्वेषी). —^b) K1-3 Dc1 D1 जाल्मिकः; D3 G2 जल्पकः; D5 छद्मकश्च. D5 च (for सु-). D1 जाल्मिकः स विगर्हकः; G1 M1.2 (all first time) अल्पकः स च गर्हितः; G1 M1.2 (all second time) जाल्मः ससु विगर्हितः; M2 जाल्मेष्वपि विगर्हितः. —^c) Ś2 K2.3 G1 (second time). 2.4 M1.2 (last two both times). 2-5 पांचालापसदः (Ś2 'प'दश्च; D2.5 पांचालापसदश्च. D1 चापि; D2.5.7.3 पापो; D5 क्षुद्रो; G1 (first time) निर्व्यः; M1.2 (both first time) राजन् (for चाय). D1 पांचालसदशात्पापो. —^d) K2 Dc1 Dn D1.3.3 विमोक्ष्यसे; D3 न मोक्ष्यते; D5 गमिष्यति (for विमोक्ष्यते). — After 56, G1 M ins.:

1366* एवमुक्त्वा ततो द्रौणिः शङ्खं दध्मौ स मारिष ।
पूरयन्पृथिवीं सर्वां सशैलवनकाननाम् ।
तस्य शङ्खस्वनं श्रुत्वा तव सैन्यानि मारिष ।
न्यवर्तन्त रणायैव भयं त्यक्त्वा महारथाः ।

57^b) D5 संन्यवर्तत वाहिनी. —^d) Ś2 D1 दध्मुः पुरुषसत्तम.

58^a) D5 मेर्यश्च (for मेरीश्च). Ś1 K2 D1 [अ]न्या-

C. 7. 9025
B. 7. 195. 47
K. 7. 196. 45

मेरीश्वर्यहनन्हृष्टा डिण्डिमांश्च सहस्रशः ।

तथा ननाद वसुधा खुरनेमिप्रपीडिता ।

स शब्दस्तुमुलः खं धां पृथिवीं च व्यनादयत् ॥ ५८

तं शब्दं पाण्डवाः श्रुत्वा पर्जन्यनिनदोपमम् ।

समेत्य रथिनां श्रेष्ठाः सहिताः संन्यमन्नयन् ॥ ५९

तथोक्त्वा द्रोणपुत्रोऽपि तदोपस्पृश्य भारत ।

प्रादुश्चकार तद्व्यमस्त्रं नारायणं तदा ॥ ६०

इति श्रीमहाभारते द्रोणपर्वणि षट्षष्ठ्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १६६ ॥

१६७

संजय उवाच ।

प्रादुर्भूते ततस्तस्मिन्ने नारायणे तदा ।

प्रावात्सपृषतो वायुरनग्रे स्तनयित्नुमान् ॥ १

चचाल पृथिवी चापि चुक्षुमे च महोदधिः ।

प्रतिस्रोतः प्रवृत्ताश्च गन्तुं तत्र समुद्रगाः ॥ २

शिखराणि व्यदीर्यन्त गिरीणां तत्र भारत ।

अपसव्यं मृगाश्चैव पाण्डुपुत्रान्प्रचक्रिरे ॥ ३

तमसा चावकीर्यन्त सूर्यश्च कलुपोऽभवत् ।

हनन्; K₁ M₁₋₄ [अ]भ्यहनद्; D₈ व्यहनन्; D₆ [अ]प्यनदन्; T [अ]प्यहनन् (for [अ]भ्यहन्). K₁ G₁ M₁₋₄ हृष्टा; K₂ हृष्टान्; G₄ हृष्टा (for हृष्टा). —⁵) S K₂ दिण्डिमांश्च; K_{1,2} D₁ मिण्डिपालान् (D₁ ला.); K₄ D₁ G_{3,4} दिण्डिमांश्च; D₁ D₄ दिण्डिमांश्च; D₂ मिण्डिमाला; D₃ दिण्डिमांश्च (for मांश्च). —⁶) D₈ T G₂₋₄ ततो (for तथा). —⁷) D₃ रथ- (for खुर-). D_{2,3,7,8} प्रकीर्तिता; D₅ प्रनादिता (for प्रपीडिता). —⁸) D₁ D_{4,5,8} तुमुलः (for तुमुलः). D₁ खं च; D₃ सर्वा; D₈ खं ख्यां (sic); S (G₅ missing) जज्ञे (for खं धां). D₆ दिशश्च प्रदिशः खं च. —⁹) D_{1,7,8} स (for च). D_{2,4-6} व्यनादयन्; T G₂₋₄ [अ]प्यनादयत्; G₁ M_{1,2} [अ]भिनादयन् (for व्यनादयत्). S K₁₋₃ D₁ तुमुलो ह्यन्व (D₁ तु)नादयत् (K_{1,8} न्); M₂₋₅ पृथिवीमभि (M₃ तु)नादयन्.

59 °) D₅ समेता (for समेत्य). —¹) K₄ B₂₋₅ D₁ D₁ G₁ M_{1,2} चाप्यमन्नयन्; B₁ चोपमं; D_{1,2} D₂₋₆. 7.8 सममं; D₆ चाप्यमानयन्; T G₂₋₄ M₂₋₅ चाप्यमन्नयन् (for संन्यमन्न). —

60 °) D_{2,5} तु (for सपि). —²) K₄ B D (except D₁) वारि; G_{1,2} M_{1,2} तत; G_{2,4} तत्र (for तदा). D₆ पाणिना (for भारत). —³) K₄ तथा (for तदा).

Colophon om. in K_{1,2}; K₅ G₆ missing. —Subparvan: B₁ नारायणास्त्रमोक्ष; B₅ नारायणीय. —Day

of Droṇa's Generalship: K₄ पंचमदिवसयुद्धे. —Adhy. name: D₁ अश्वत्थामा क्रुद्धः; D₆ अश्वत्थामागर्जनं; Bom. ed. अश्वत्थामाक्रोधः. —Adhy. no. (figures, words or both): D₁ 196; D₂ G₁ M_{1,2} 189; D₃ 89; T G_{2,3} 190; G₄ 191; M₂₋₅ 188. —Śloka no.: D₁ D₁ 50.

167

This adhy. is missing in K₅ G₆ (cf. v. l. 7. 125. 14; 137. 9).

1 °) S K₁₋₃ तदा (for ततस्). —²) S K₂₋₄ D₁ तथा; B (except B₂) D₁ D₁ G₂ प्रभो; D₃ विभुः; D₆ T G_{1,2,4} M विभो (for तदा). —³) S K_{1,2} प्रायात्; D₆ ववौ (for प्रावात्). B₅ संपृषतो; D₁ D_{2,4-8} सपृष्टतो; G₁ M सपृषितो; G₄ सवृष्टितो (for सपृषतो).

2 °) D_{1,2} om. from पृथिवी up to प्रच (in 3^d). D₆ चैव (for चापि). —¹) D₄ बलोदधिः (for महो). —²) K₁ D_{2,4-6-8} प्रतिश्रोतः (for श्रोतः). —³) K₂ समुद्रगाः.

3 D_{1,2} om. up to प्रच (cf. v. l. 2). —¹) S₂ K_{1,2,4} B D₁ D_{1,6} G_{1,3,4} M व्यशीर्यत; D₅ विशीर्यते (for व्यदीर्यन्त). —²) T G_{2,4} चारु; G₁ M_{1,2} चात्र; G₂ चैव (for तत्र). —³) S₂ अपसव्या-मृगाश्चैव. —⁴) K₄ B D₁ D_{1,6} S (G₅ missing)

संपतन्ति च भूतानि क्रव्यादानि ग्रहृष्टवत् ॥ ४

देवदानवगन्धर्वास्त्रस्ता आसन्विशां पते ।

कथं कथाभवत्तीव्रा दृष्ट्वा तद्व्याकुलं महत् ॥ ५

व्यथिताः सर्वराजानस्तदा ह्यासन्विचेतसः ।

तद्दृष्ट्वा घोररूपं तु द्रौणेरस्त्रं भयावहम् ॥ ६

धृतराष्ट्र उवाच ।

निवर्तितेषु सैन्येषु द्रोणपुत्रेण संयुगे ।

भृशं शोकाभितप्तेन पितुर्वधममृष्यता ॥ ७

कुरुनापततो दृष्ट्वा धृष्टद्युम्नस्य रक्षणे ।

को मन्त्रः पाण्डवेष्वासीत्तन्ममाचक्ष्व संजय ॥ ८

संजय उवाच ।

प्रागेव विद्रुतान्दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान्युधिष्ठिरः ।

पुनश्च तुमुलं शब्दं श्रुत्वा र्जुनमभाषत ॥ ९

आचार्ये निहते द्रोणे धृष्टद्युम्नेन संयुगे ।

निहते वज्रहस्तेन यथा वृत्रे महासुरे ॥ १०

नाशंसन्त जयं युद्धे दीनात्मानो धनंजय ।

आत्मत्राणे मर्तिं कृत्वा प्राद्रवन्कुरयो यथा ॥ ११

केचिद्भ्रान्तै रयैस्तूर्णं निहतपार्थिण्यन्तुभिः ।

C. 7. 9040
B. 7. 109. 12
K. 7. 197. 12

पांडुसेनां; D₂ पांडूस्तत्र (for पाण्डुपुत्रान्).

4 ^a) B₁. 3. 4 D₁ D₁ दिशोन्वकीर्यत (hyper-metric); D₁. 5 वा (D₂ च) प्रकी⁰; D₁. 5 वाप्यकी⁰; S (except G₃; G₃ missing) चाम्यकी⁰ (for चाव⁰). — ^b) K₁ भूयश् (for सूर्यश्).

5 ^b) N (K₅ missing) G₁ M ह्या (K₄ B₁ D₂ त्वा; B₅ चा) सन्. — D₅ om. 5^{ad}. D₅ om. 5^c-6^b. — ^c) D₄ तत्र (for तीव्रा). D₁ कथयति भयं तीव्रं; D₂ कथं कथं भवेत्तीव्रं; D₃ कष्टं तथाभवत्तीव्रं; D₅ कथं कथं भयं तीव्रं; D₇ तदा चिंता समुत्पन्ना; G₁ M₁. 2 तथा तदभवत्तीव्रं; M₃-5 भयं तदाभवत्तीव्रं. — ^d) D₁ D₂ ते; G₁ M₁. 2 च (for तद्). G₃. 4 तत्त्वा (G₄ त्रा) कुलं (for तद्व्या⁰). D₇ नमः (for महत्).

6 D₃ om. 6^{ab} (cf. v. 1. 5). — ^a) D₅ तत्र (for सर्व-). — ^b) Ś K₁-3 D₁. 2. 5. 7 तत्र; K₄ B D₁ D₂. 4 त्रस्ताश्; D₅ सर्वे (for तदा). K₄ B₂. 4 D₂ चासन् (for ह्या⁰). Ś₁ K₃ नराधिप; Ś₂ K₁. 2 D₁ नर-र्षभ; K₄ B D₁ D₂ D₃-5. 7 विशां पते (for विचेतसः). — ^c) D₂. 6. 8 तं; T G₂-4 M₁. 2. 5 ते (for तद्). B D₁ D₂ नै; T G₄ M₁-3. 5 तद्; G₁-3 M₄ तं (for तु). — ^d) D₂ शस्त्रे (for अस्त्रे). Ś K₁-3 D₁ महारमनः; K₄ महारमना (sic) (for भयावहम्). — After 6, G₁ M ins.:

1367* पेतुराकाशगास्तत्र विमनस्का विशां पते ।

रोदसी च वियच्चैव सर्वं ज्वालासमावृतम् ।

[(L. 1) G₁ M₁. 2 पेतुराकाशगान्यत्र (for the prior half). G₁ M₁. 2 विमानानि (for विमनस्का). — M₃-5 om. line 2.]

7 ^a) D₁ सर्वेषु (for सैन्येषु). — ^c) D₄ कोपानि- (for शोकाभिः). D₇ भूतेन (for तप्तेन). — ^d) D₅ अपृच्छता (for अमृष्यता).

8 ^a) M₃-5 उत्पततो (for आप⁰). — D₄ om. (hapl.) 8^d-9^a. — ^b) B₅ संयुगे (for रक्षणे). — ^c) D₅. 3 पांडवस्य (for वेपु).

9 With 9, cf. 1370*. D₄ om. 9^a (cf. v. 1. 8). — ^a) D₅ विद्रुतं (for तान्). D₃ वीक्ष्य (for दृष्ट्वा). — ^b) D₅ धार्तराष्ट्रं. — D₄ om. 9^c-12^d. — ^c) D₁ D₂. 3 तुमुलं (for तुमुलं). D₂ युद्धं (for शब्दं). — ^d) Ś₁ K₃ दृष्ट्वा (for श्रुत्वा). B D (D₄ om.) T G₁-4 M₁. 2 अथाव्रवीत् (for ब्रभाषत).

10 D₄ om. 10 (cf. v. 1. 9). Before 10, B D₁ D₂ ins. युधिष्ठिर उवाच.

11 D₄ om. 11 (cf. v. 1. 9). — ^a) K₄ B D₁ D₂. 3 नाशंसन्तो; D₂ D₁. 1 नाशंसत; D₅ आशंसत (for नाशंसन्त). — ^b) D₅ वीडमाना; G₃ दीनमाना (for दीनात्मानो). Ś₂ नरर्षभ; S (G₅ missing) महारथाः (for धनंजय). — ^c) D₅. 6. 8 त्राण- (for त्राणे). — ^d) K₄ D₂. 1 D₅-3 T G₁-3 M₁. 2 यदा; B₁-3. 5 D₁ D₂ रणात्; B₁ D₃ M₃-5 भयात् (for यथा). D₂ कुरवः प्राद्रवन्त्या.

12 D₄ om. 12 (cf. v. 1. 9). — ^a) D₂. 5 किंचिद् (for केचिद्). Ś₂ तूर्णैर् (for तूर्ण). — ^b) K₄ B D₁ D₂. 1 D₃. 3 G₂ निहतैः; D₁ T निहतः; D₅. 5 निहताः; G₁ M₃ न हत (for निहत). Ś₁ K₂ प्राष्टिः; K₁ प्राष्टिः; K₃ प्राष्टिः; G₁ M प्राष्टिः; G₂. 4 प्राष्टिः (for पार्थिः). Ś₂ K₂ चित्रिभिः; D₂ चर्तिनः; D₅. 1. 3 चर्तिभिः; D₅ चर्तयः (sic) (for यन्तुभिः). — ^c) Ś₂

C. 7. 9040
B. 7. 196. 12
K. 7. 197. 12

विपताकध्वजच्छत्रैः पार्थिवाः शीर्णकृवरैः ॥ १२

भगनीडैराकुलाक्षैराख्यान्ये विचेतसः ।

भीताः पादैर्हयान्केचिचरयन्तः स्वयं रथैः ।

युगचक्राक्षभग्नैश्च द्रुताः केचिद्भयातुराः ॥ १३

गजस्कन्धेषु संस्यूता नाराचैश्चलितासनाः ।

शरार्तिविद्रुतैर्नागैर्हताः केचिदिशो दश ॥ १४

M3-s विपताकाः; D3 T G2-4 निपातित- (D3 'तैर्') (for विपताका); K3 D3-s ध्वजैश्छत्रैः; D6 ध्वजशस्त्रैः. —^a) M3-s पार्थिवैः (for 'वा'); T G3-s जीर्ण- (for शीर्ण-); Dn1 कृवरैः (for 'रै').

13 ^a) S (G5 missing) भगनीडैर् (for 'नीडैर्'). B2 आकुलाक्षैर्; B3 व्याकुलाक्षैर्; Dn2 D1-s आकुलैश्च (for 'लाक्षैर्'). D6 भगनीडाकुलाक्षत्र. —^b) K1 Dn2 प्राख्यान्यान्; B2-s आख्यान्यान्; B3 Dn1 आरुणा- (B3 'भा')न्ये; B1 आरुणाश्च; D2 प्राख्यान्ये; D1.7.8 कौरवाश्च; D3 किडीताश्च (sic); D6 योधाः सर्वे (for आख्यान्ये). B1 D6 विशेषतः (for विचेतसः). — B2.4 Dc1 Dn1 om. 13^{ad}; B3 reads the same on marg. —^c) T G2-1 धीराः (for भीताः). S1 K3 हतैः; S2 K1.2 हताः; Dn2 हयौ; D6 रथैः (for हयान्). —^d) Dn2 G1 M स्वार (Dn2 om. र)यंतः (for स्वर). D3 स्वकार्ण; G2 स्वर्क (for स्वयं). S K (K5 missing) Dn2 D1.3.4 रथान्; B3 तदा; D6 नराः; D7.8 हयान् (for रथैः). B1.3 स्वरयंति स्वयं नराः; D3 'ति रथान्'नराः; D5 'तो रथद्विपान्'. —^e) S2 K1.2.4 D1.6 भग्नैश्च युग(D6 रथ)चक्राक्षैर्; B Dc1 Dn1 भग्नैश्चयुगचक्रैश्च; D2 चक्राक्षभग्नैश्च द्रुतास्. —^f) D2 तत्र (for द्रुताः). D2.3.6 S (G5 missing) भयार्तिवाः (for 'तुराः'). B Dc1 Dn1 व्याकृत्यन्ते (Dn1 व्यकृत्यन्ते) समंततः. — After 13, B Dc1 Dn1 ins.:

1368* रथान्विशिर्णान्मुख्य पद्भिः केचिच्च विद्रुताः ।
— B Dc1 Dn1 cont. : S K (K5 missing) Dn2 D1-s ins. after 13 :

1369* हयपृष्ठगताश्चान्ये कृत्यन्तेऽध्वच्युतासनाः ।

[S1 K3 कृत्यन्तेवच्युताः शराः; S2 K1.2 D1 'ते' विश्वताः शरैः (for the post. half).]

14 ^a) S K1-s Dn2 D1.2.4.5.7.8 स्कन्धैश्च; D6 स्कन्धे च (for स्कन्धेषु). D4 श्रस्यन्ते; D7.8 स्त(D6 स्व)स्यन्तो; G2 निस्यूता; G3.4 च सुता (for संस्यूता). —^b) B2 D6 चलितासनाः. T G2-1 नाराचैश्चापि पीडिताः. —^c) B6 संरक्षैर्; D4 शरार्तिर्; D5 'चिर्' (for 'तैर्').

विशस्त्रकवचाश्चान्ये वाहनेभ्यः क्षितिं गताः ।

संछिन्ना नेमिपु गता सृदिताश्च हयद्विपैः ॥ १५

क्रोशन्तस्तात पुत्रेति पलायन्तोऽपरे भयात् ।

नाभिजानन्ति चान्योन्यं कश्मलाभिहतौजसः ॥ १६

पुत्रान्पितृन्सखीन्प्रातृन्समारोप्य दृढक्षतान् ।

जलेन क्लेदयन्त्यन्ये विमुच्य कवचान्यपि ॥ १७

D6 च द्रुतैर्; M1 विद्रुता (for 'तैर्'). Dn2 शरार्ति- विद्रुतैर्नागैर्; D2 शरार्तिविद्रुता नागाः; T G2-4 'तीः' प्र- द्रुता नागैर्. —^a) K2 D7.8 T G2-1 द्रुताः; B1 गताः; Dc1 D1.2.4.6 हताः (for हताः). Dn2 दशाः; D7 दशः.

15 ^a) D2 विवस्त्रः; D3.6 विस्त्रस्त- (for विशस्त्र-). —^b) T G2-1 समंततः (for क्षितिं गताः). — D7.8 om. 15^c-16^d. —^c) S K1.3 D1 संछिन्ना (for संछिन्ना). Dn2 D1.5 तथा (for गता). K1 B Dc1 Dn1 D2.3 संछिन्ना नेमिभिश्चैव (D3 'भी' रथैर्); D6 रथनेमिपु तत्रान्ये; S (G5 missing) संछिन्ना नेमिभिश्चान्ये. —^d) Dc1 Dn1 सृदिताश्च; D6 G1 M1.2 मदिं; G2 पतिं (for सृदिं). D3 च हयैर्; S (G5 missing) चापरे (for च हय-).

16 D7.8 om. 16^{ad} (cf. v. l. 15). —^a) Dn2 क्रोशन्तस् (for क्रोशन्). S K1-3 D1 मित्रेति (for पु). —^b) S K2-4 D2 पलायन्ते; B2.4 Dn2 D1.5 T G2 'यन्ति'; D3 'यन्त' (for 'यन्तो'). S2 [S]भवन्; B1 damaged (for भयात्). G1.3.4 पलायन्त्रापरे भ (G3 ह)यात्. —^c) D7 वा (for च). B1.3.4 Dc1 Dn1 D6 नाभ्य- जानन्त चान्योन्यं.

17 ^a) D6 M3-s सखीन्पितृन् (by transp.). G3 पुत्रान् (for पितृन्). —^b) S1 K1-3 दृढे; D7 दृढे (for दृढ-). S K3 क्षताः; K1 कृतः; K2 श्रुताः (sic); D1-7 क्षतान् (for क्षतान्). —^c) D1-8 [आ]क्लिदयन्ति (for क्लिद-). —^d) S2 D1.7.8 च; D5 तु; D6 [उ]त (for [अ]पि). K1 B Dc1 D2 विमुच्य कवचानपि (D2 'चानिति'). — After 17, S (G5 missing) ins.:

1370* पलायनपराश्चान्ये योधाः शतसहस्रशः ।

अवस्थितं पुनर्दृष्ट्वा तव पुत्रस्य तद्वलम् ।

धर्मपुत्रो महाराज धनंजयमयावबोत् ।

[(L. 1) G1 M1.2.3 योधाः. — G2 om. lines 2-3.]

18 M3 om. 18^{ad}. —^a) T G1.2 M1.2.4.5 इदंशी (for ता). D6 T G2-4 M4.5 प्राप्ते; G1 M1.2 प्राप्तं (for प्राप्य). —^b) K1 हते; B1 damaged (for हते). B1 हतं बलं; D2.4.5 धुर्व (D4 'वे' बलं; D6

अवस्थां तादृशीं प्राप्य हते द्रोणे द्रुतं बलम् ।
 पुनरावर्तिनं केन यदि जानासि शंस मे ॥ १८
 हयानां हेषतां शब्दः कुञ्जराणां च वृंहताम् ।
 रथनेमिस्त्रिभुवनं विमिश्रः श्रूयते महान् ॥ १९
 एते शब्दा भृशं तीव्राः प्रवृत्ताः कुरुसागरे ।
 सुहृद्सुहृदीर्यन्तः कम्पयन्ति हि मामकान् ॥ २०
 य एष तुमुलः शब्दः श्रूयते लोमहर्षणः ।
 सेन्द्रानप्येष लोकांस्त्रीन्भङ्गादिति मतिर्मम ॥ २१

मन्ये वज्रधरस्यैष निनादो भैरवस्त्रजः ।
 द्रोणे हते कौरवार्थं व्यक्तमभ्येति वासवः ॥ २२
 प्रहृष्टलोमकृपाः स्म संविग्रथकुञ्जराः ।
 धनंजय गुरुं श्रुत्वा तत्र नादं सुमीपणम् ॥ २३
 क एष कौरवादीर्णानिवस्थाप्य महारथः ।
 निवर्तयति युद्धार्थं मृधे देवेश्वरो यथा ॥ २४
 अर्जुन उवाच ।
 उद्यम्यात्मानमुग्राय कर्मणे धैर्यमास्थिताः ।

C. 7. 9C54
 B. 7. 196. 26
 K. 7. 197. 27

बले यथा; G₂ विशां पते (for द्रुतं बलम्). — After 18^{ab}, G₁ M₁ 2 ins.:

1371* एवमेतद्रुतं भद्रं द्रोणे युधि निपातिते ।
 अवस्थानमविन्दन्वै विश्वतः शरपीडितम् ।

— °) D₁ 5 आवर्तनं (for 'वितं'). — °) D₂ D₁ 5 G₂ येन (for यदि). K₂ शंससे (for शंस मे).

19 °) B₂ D₂ हेषतां; D₁ हेषितां; D₃ हेषितां (for हेषतां). G₂ 4 शब्दं (for शब्दः). D₂ हयानां हेषमाणानां. — °) D₁ वृंहितां (for वृंहताम्). — °) D₁ om. 19°-21°. — °) K₁ B D₁ D₂ स्वनैश्च (for स्वनश्च). B₂ चैव; D₃ चापि (for चात्र). — °) D₂ 1 विमिश्रः; T G₂-1 वियति (for विमिश्रः). D₁ 5 महत् (for महान्).

20 °) D₁ om. 20 (cf. v. l. 19). — °) D₁ हते (for एते). D₃ ततः शब्दा महातीव्राः; S (G₂ missing) एताः शब्दोर्मयस्तीव्राः. — °) D₁ सङ्गरे; T G₂ 4 सागरात्; G₂ संगमात् (for सागरे). — °) K₁ B₂-5 D₂ D₃ 3. 7. 8 उदीर्यते; D₁ 5 G₂ 4 र्यतः; G₁ M र्यतः (for र्यन्तः). — °) K₁ B D₁ D₂ S (G₂ missing) [अ]पि; D₃ [इ]ह (for हि). S (G₂ missing) देव (M₁ वि)ताः (for मामकान्). D₃ कम्पयतो वसुंधरां.

21 °) D₁ om. 21^{ab} (cf. v. l. 19). — °) D₁ 5 त (for य). K₂ D₁ D₂ D₃ 3. 7. 8 तुमुलः (for तुमुलः). — °) S (G₂ missing) रोम (for लोम). °) K (K₂ missing) D₃ कुञ्जराणां च वृंहतां (= 19°). — °) D₂ D₁ 6 [ए]व; D₃ च (for [ए]व). — °) K₁ अंजाद्; D₂ 3 प्रसेद्; D₂ 4. 5 अंजेद्; D₃-3 हन्याद् (for भङ्गाद्). S (G₂ missing) व्यथयेतेति (M₂-3 दिति) मे मतिः.

22 °) °) K₁-3 D₁ [ए]व (for [ए]व). — °)

°) K₁ 2. 4 D₁ 2 निनदो (for निनादो). K₄ om. (hapl.) from नैर up to नादं (in 23^d). D₂ 1 भैरवः (for 'व-). G₂ M₂-5 स्वरः (for -स्वनः). D₃ निनदो भैरवश्च. — °) °) K₁-3 B₂ D₁ कौरवाणां (for 'वार्यं).

23 K₁ om. up to नादं (cf. v. l. 22). — °) Some MSS. रोम (for -लोम). B₂-5 D₂ D₃ 4-3 T G₂ M₂ च (for स्म). D₂ 1 प्रहृष्टरूपरूपाः स्म. — °) °) S₁ B D₁ D₂ D₃ 5. 6 G₂ संविग्रः; D₂ 7. 8 संलग्नः; D₁ विसंज्ञा; M₂ सुविग्र (for संविग्र-). K₁ कुञ्जरः; B D₁ D₂ पुंगवाः; D₂ 4. 5. 7. 8 कुवराः (for कुञ्जराः). — °) D₁ 5 भयं श्रुत्वा; D₃ भयं दृष्ट्वा; S (G₂ missing) सुसंनस्ताः (for गुरुं श्रुत्वा). D₂ 8 एवं धनंजयं श्रुत्वा. — °) D₁ 3 व्रतः; G₁ M श्रुत्वा (for तत्र). K₁ D₂ D₃ वि (D₂ D₃ वि)भीपणं (for सुमी). °) K₂ व्रतानां गुरुः (S₂ त्रिपु)भीपणं; K₁ 2 D₁ निनदं त्रिपुवारणं (K₂ D₁ भीपणं); T G₂-4 श्रुत्वा नादं विभीपणं.

24 Before 24, °) K₁-3 D₁ 3 ins. अर्जुन उवाच. — °) °) S₂ एष यः; K (K₂ missing) य एष (for क एष). °) T G₂-4 दीनान् (for दीर्णान्). D₃ य एष कौरवेयाणाम्. — °) D₃ अवस्थायाम् (for अवस्थाप्य). B₂ महारथान्; D₃ च बाहिनीं (for महारथः). — °) °) K (K₂ missing) युद्धार्थं; °) S₂ संग्रामे; D₂ 3 S (G₂ missing) युद्धाय (for र्थं). — °) D₃ दिवि; D₃ युद्धे (for मृधे). D₁ D₂ देवासुरे (for देवेश्वरो). °) युद्धार्थं वज्रभृद्यथा.

25 °) K (K₂ missing) D₁ 3 om. the ref. — °) D₁ उद्यम्यात्मा समग्राय. — °) D₁ 5 कर्मणो; D₃ 'णा (for 'णे). B D₁ D₂ वीर्यम् (for वैर्यम्). °) K₂ 3 D₁-3 आस्थितः. — °) G₁ वमंति (for धमन्ति). — °) D₂ D₁ 4. 5. 7. 8 पश्य (for यस्म). °) B₂ D₁ D₂ G₁ M₁ 3

C. 7. 8054
B. 7. 196. 27
K. 7. 197. 27

धमन्ति कौरवाः शङ्खान्यस्य वीर्यमुपाश्रिताः ॥ २५
यत्र ते संशयो राजन्यस्तशस्त्रे गुरो हते ।
धार्तराष्ट्रानवस्थाप्य क एष नदीतीति ह ॥ २६
हीमन्तं तं महाबाहुं मत्तद्विरदगामिनम् ।
व्याख्यास्यामुग्रकर्माणं कुरुणामभयंकरम् ॥ २७
यस्मिञ्जाते ददौ द्रोणो गवां दशशतं धनम् ।
ब्राह्मणेभ्यो महाहैभ्यः सोऽथ्वात्थामैष गर्जति ॥ २८
जातमात्रेण वीरेण येनोच्चैःश्रवसा इव ।

हेपता कम्पिता भूमिलोकाश्च सकलास्त्रयः ॥ २९
तच्छ्रुत्वान्तर्हितं भूतं नाम चास्याकरोत्तदा ।
अथत्थामेति सोऽद्यैष शूरो नदति पाण्डव ॥ ३०
योऽद्यानाथ इवाक्रम्य पार्षतेन हतस्तथा ।
कर्मणा सुनृशंसेन तस्य नाथो व्यवस्थितः ॥ ३१
गुरुं मे यत्र पाञ्चाल्यः केशपक्षे परामृशत् ।
तत्र जातु क्षमेद्रौणिर्जानन्पौरुषमात्मनः ॥ ३२
उपचीर्णो गुरुर्मिथ्या भवता राज्यकारणात् ।

अपाश्रिताः; B₁ D₂ समाश्रिताः; D₄, 5, 7, 8 समास्थिताः
(for उपाश्रिताः).

26 Before 26, G₂ ins. अर्जुनः. —^b) K₁ व्यस्त-
(for न्यस्त-). T G₈, 4 गते (for हते). —^c) D_{n2} D₁.
7:8 धार्तराष्ट्रम् (for 'राष्ट्रान्'). S K₃ अपाश्रित्य; K₁, 2
D₁ उपाश्रित्य; D₇ अवस्थाय (for 'स्थाप्य'). —^d)
K₂ M₃ इह (for इति). S₂ K₂ च; K₄ B₂, 4 D_{n2}
M₃ हि (for ह). D₅ क एष निनदीति ह; D₇ क एष
ददतीति हा.

27 ^a) B (except B₂) D₁ D_{n1} D₈ श्रीमते (for
ही). —^b) M₄ om. मत्त. S (G₈ missing) मातंग-
(for 'द्विरद-'). S₂ D₂, 6 -विक्रमे (for 'गामिनम्').
— After 27^{ab}, S (G₈ missing) ins.:

1372* इन्द्रविष्णुसमं वीर्यं कोपेऽन्तकमिव स्थितम् ।
बृहस्पतिसमं बुद्ध्या नीतिमन्तं महारथम् ।

[(L. 1) G₁ M इन्द्राविष्णु- (for इन्द्रविष्णु-). M₃-s
कोपे (for कोपे).]

—^c) B D₁ D₈ S (G₈ missing) आख्यास्यामि (for
व्या). K₁ व्याख्यास्यामुग्रकर्माणं (sic); D_{n1} D₈ आ-
(D₈ व्या) व्याख्यास्यामुग्रकर्माणं; D_{n2} D₈ व्याघ्रास्यमु.

28 D₈ repeats 28^{ab} after 28. —^{ab}) S (G₈
missing) transp. ददौ and गवां. D₈ (second time)
गोसहस्रमलंकृतं. —^c) D₈ महर्षिभ्यः (for महाहैभ्यः).
—^d) K₁ [अ]व-; K₂ D_{n2} D₄, 7, 8 [ए]व (for [ए]ष).
— After the second occurrence of 28^{ab}, D₈ ins.:

1373* स एष नदीति द्रोणिर्धर्मान्ते जलदो यथा ।

29 ^b) S₁ K₃ [ह]व हि; S₂ B (except B₅) D₁
D_{n1} यथा (for इव). —^c) B₁, 2 हेपता; D₁ हेपिता;
D₃ हेपया (for हेपता). G₈, 4 क्षपिता (for कम्पिता).
—^d) D₁ D_{n1} कंषिताय; D₈ सजनाय (for सकलाय).

S (G₈ missing) लोकाश्चैव पृथग्विधाः.

30 ^a) B₅ D₁ तं श्रुत्वा; D₃ उत्सृज्य (for तच्छ्रुत्वा).
D₄ [अ]न्तरिक्षं (for [अ]न्तर्हितं). D₇ lacuna; G₂ नार्द
(for भूतं). —^b) K₃ B D₁ D_n तस्य; D₂, 4, 5, 7, 8
यस्य (for चास्य). S K (K₅ missing) D₁, 2, 4, 5, 7, 8 प्रभुः;
D_{n2} प्रभो (for तदा). —^c) B₁ D₅ [S]त्येष; D₈
[S]त्यैव (for स्यैष). —^d) D₅ नदीति; D₈ गर्जति (for
नदति). S₁ K₃ पाण्डवाः; K₄ D₁ माधव; M₁, 2 पाण्डवं
(for पाण्डव).

31 ^a) B D₁ D_n D₂, 4-8 M₃ ह्यनाथ; D₁ हा नाथ
(for अथा). S K (K₅ missing) D₁ योद्या (K₁ योभ्याः;
K₂, 4 D₁ यो ह्य) नाथवदाक्रम्य. —^b) B₁, 3, 5 D₁
D_n D₂, 4-8 तदा; S (G₈ missing) मृधे (for तथा).
—^c) S₂ सुनृशंसेन (for 'सेन'). —^d) S₂ तथा (for
तस्य). D₈ ह्युपस्थितः; T₁ ह्यप (for न्यव).

32 ^a) D₃ S (G₈ missing) मे यच्च; D₈ एव च (for
मे यत्र). D₅ पांचालः. —^b) S₁ K₁, 2, 4 B₃, 5 D₁ परा-
मृपत्; D₁ 'मृशन्'. —^c) D_{n2} तत्र (for तत्र). T
G₁-4 M₁, 2 सहेद् (for क्षमेद्). M₃ न जातु क्षमते
द्रौणिर्. — After 32, G₁ ins.:

1374* स हि तेनैव नः सर्वान्क्षपयेदिति मे मतिः ।

33 ^a) K₁, 2 उपशीर्णो; K₄ D₁ 'दीर्णो'; G₁ 'जीर्णो'
(for 'चीर्णो'). D₈ भक्त्या (for मिथ्या). —^c) D₈
वात (for नाम). —^d) D₅ सोनर्थः (for सोऽधर्मः).
— After 33, K₄ B D₁ D_{n1} D₁, 3, 5 ins.:

1375* चिरं स्थास्यति चाकीर्तिश्चैलोक्ये सचराचरे ।
रामे वालिवधायद्भदेवं द्रोणे निपातिते ।

[(L. 1) D_{n1} त्रैलोक्ये (for 'क्ये'). — (L. 2) D₅
रामे वालिवधायेव (for the prior half). D₃ तथा (for
एवं). D₈ यद्द्रोणे विनिपातितः (for the post half).]

धर्मज्ञेन सता नाम सोऽधर्मः सुमहान्कृतः ॥ ३३
 सर्वधर्मोपपन्नोऽयं मम शिष्यश्च पाण्डवः ।
 नायं वक्ष्यति मिथ्येति प्रत्ययं कृतवांस्त्वयि ॥ ३४
 स सत्यकृञ्चुकं नाम प्रविष्टेन ततोऽनृतम् ।
 आचार्य उक्तो भवता हतः कुञ्जर इत्युत ॥ ३५
 ततः शङ्खं समुत्सृज्य निर्ममो गतचेतनः ।
 आसीत्स विह्वलो राजन्यथा दृष्टस्त्वया विभुः ॥ ३६
 स तु शोकैः चाविष्टो विमुखः पुत्रवत्सलः ।
 शाश्वतं धर्ममुत्सृज्य गुरुः शिष्येण घातितः ॥ ३७

न्यस्तशस्त्रमधर्मेण घातयित्वा गुरुं भवान् ।
 रक्षत्विदानीं सामात्यो यदि शक्रोऽपि पार्षतम् ॥ ३८
 प्रस्तमाचार्यपुत्रेण कुद्धेन हतवन्धुना ।
 सर्वे वयं परित्रातुं न शक्यामोऽयं पार्षतम् ॥ ३९
 सौहार्दं सर्वभूतेषु यः करोत्यतिमात्रशः ।
 सोऽयं केशग्रहं श्रुत्वा पितुर्धक्ष्यति नो रणे ॥ ४०
 विक्रोशमाने हि मयि भृशमाचार्यगृद्धिनि ।
 अवकीर्य स्वधर्मं हि शिष्येण निहतो गुरुः ॥ ४१
 यदा गतं वयो भूयः शिष्टमल्पतरं च नः ।

C. 7. 9072
B. 7. 195. 44
K. 7. 197. 46

— After the above, Ds reads 38-43.

34 The portion of the text from 34^a up to श in (7. 168. 26^a) is lost in S₂ on missing folios. —^b) K₃ स मे (for मम). D₃ स (for च). —^c) D₃ न स (for नायं). K₃ वक्षति; Bom. ed. वदति (for वक्ष्यति).

35 S₂ missing (cf. v. l. 34). —^b) D_{1.3} त्वया; G₁ M_{1.2} सता (for ततो). D₂ वृत्तः; D_{2.3} वृत्तः; D_{4.5.8} नृप (for अनृतम्). —^d) D₃ हत- (for हतः).

36 S₂ missing (cf. v. l. 34). —^a) S₁ K_{1.3} शब्द- (for शङ्ख). G₁ ततः स शङ्खमुत्सृज्य. —^b) D₃ मर्मनो (for निर्ममो). —^c) S₁ K (K₃ missing) D₁ च; B D₁ D₂ D₃ सु; G₁ M_{1.2} नो (for स). —^d) D₂ तथा (for त्वया). S₁ K (K₃ missing) प्रभुः; M₃₋₅ गुरुः (for विभुः).

37 S₂ missing (cf. v. l. 34). —^a) B D₁ D₂ D₃ स तु (D₂ कृत- शोकसमाविष्टो). —^b) D₃ विह्वलः (for विमुखः). B₃ पुत्रवासनः; M₃ lacuna (for वत्सलः). —^c) D₃ तमेव धर्मनिर्मुक्तः. —^d) Bom. ed. शङ्खेन (for शिष्येण). K₂ D₂ पातितः (for घातितः). D₂ D_{2.4.5.7.8} शिष्येण निहतो गुरुः; D₃ शिष्यो गुरु मघातयत्.

38 S₂ missing (cf. v. l. 34). D_{2.4.7.8} om. (hapl.) 38-43; D₃ reads the same after 1375*. —^b) D₃ पातयित्वा (for घातितः). D₃ द्विजं (for भवान्). —^c) S₁ K₃ यदि तु (for रक्षतु). K₃ सामन्यो (for सामात्यो). K_{1.2} D₁ इदानीं रक्षितुं राजन्; D₃ रक्षेदानीं सहामात्यो. —^d) M_{3.5} युधि (for यदि).

B_{1.4} G_{1.4} M_{1.2} शक्रोति; B₂ D₁ D₂ शक्तोति (for शक्रोति). B₂ D₃ पार्थिव; G₁ पार्षत; M₃ lacuna (for पार्षतम्).

39 For the sequence in D₃, cf. v. l. 38. S₂ missing (cf. v. l. 34). D_{2.4.7.8} om. 39 (cf. v. l. 38). S₁ K₃ om. (hapl.) 39. —^b) K_{1.2} D_{1.5} युद्धे नि- (for कुद्धेन). —^c) D₁ D₂ सर्वैरि (D₂ र)यं (for सर्वे वयं). —^d) B D₂ D_{1.6} शक्यामो; D₂ corrupt (for शक्यामो). G₃ [s]त्र (for अत्र).

40 For the sequence in D₃, cf. v. l. 38. S₂ missing (cf. v. l. 34). D_{2.4.7.8} om. 40 (cf. v. l. 38). —^a) D₂ सौहार्दं; D₃ सुहृदं (for सौहार्दं). S₁ K₁₋₃ D_{1.2.5} युद्धेषु; B₂ शिष्येषु; D₃ युद्धेन (for भूतेषु). —^b) B D₁ D₂ D₃ मातुषः (D₃ धं); D₃ युद्धैः; T G₂₋₄ M₃₋₅ मात्रतः (for मात्रशः). —^c) D₃ [s]यं (for अयं). —^d) K₁ D₂ D₃ वक्ष्यति (for धं). B₃ वो (for नो). D₃ प्रतिधक्ष्यति *रणे.

41 For the sequence in D₃, cf. v. l. 38. S₂ missing (cf. v. l. 34). D_{2.4.7.8} om. 41 (cf. v. l. 38). —^a) D₃ च (for हि). —^b) S₁ D₁ गृद्धिनि; K₁ गृद्धिनि (for गृद्धिनि). —^c) K_{1.2} D₁ अवकीर्य; K₃ D₃ G₁ M_{1.2} अपां; D₃ अपं (for अवं). D₂ स्वयं धर्मं (for स्वधर्मं हि). B D₁ D₂ अपाकीर्य स्वकं धर्मं.

42 For the sequence in D₃, cf. v. l. 38. S₂ missing (cf. v. l. 34). D_{2.4.7.8} om. 42 (cf. v. l. 38). —^a) D₃ तदा; D₃ M₃₋₅ यथा (for यदा). D₂ वचो (for वयो). —^b) S₁ K_{1.2.4} D₁ वचः; K₃ (sup. lin.) हि नः; B₃ च तत्; D₃ वयः (for च नः).

C. 7. 9072
B. 7. 198. 44
K. 7. 197. 45

तस्येदानीं विकारोऽयमधर्मो यत्कृतो महान् ॥ ४२
पितेव नित्यं सौहार्दात्पितेव स हि धर्मतः ।
सोऽल्पकालस्य राज्यस्य कारणाग्निहतो गुरुः ॥ ४३
धृतराष्ट्रेण भीष्माय द्रोणाय च विशां पते ।
विमृष्टा पृथिवी सर्वा सह पुत्रैश्च तत्परैः ॥ ४४
स प्राप्य तादृशीं वृत्तिं सत्कृतः सततं परैः ।
अवृणीत सदा पुत्रान्नामेवाभ्यधिकं गुरुः ॥ ४५

अक्षीयमाणो न्यस्तास्त्रस्त्वद्वाक्येनाहवे हतः ।
न त्वेनं युध्यमानं वै हन्यादपि शतक्रतुः ॥ ४६
तस्याचार्यस्य वृद्धस्य द्रोहो नित्योपकारिणः ।
कृतो हनार्यैरस्माभी राज्यार्थे लघुबुद्धिभिः ॥ ४७
पुत्रान्भ्रातृन्पितृन्दाराज्जीवितं चैव वासविः ।
त्यजेत्सर्वं मम प्रेम्णा जानात्येतद्धि मे गुरुः ॥ ४८
स मया राज्यकामेन हन्यमानोऽप्युपेक्षितः ।

— °) G₂-4 M₃-5 कस्य (for तस्य). D₂ corrupt;
S (G₅ missing) विरोधेयं (for विकारोऽयं). — °) K₁. 2
D₅ यः; K₄ B₃. 5 D₁ D₂ D₃ G₂ M₃. 5 [s]यं (for
यत्).

43 For the sequence in D₅, cf. v. l. 38. S₂
missing (cf. v. l. 34). D₂. 4. 7. 8 om. 43 (cf. v. l.
38). — °) G₁ M₁. 2 [ए]व (for [इ]व). S₁ K₃ D₅
हि स (by transp.); K₄ B₁-4 D₁ D₂ M₃ हि च;
M₃. 5 च हि. K₁. 2 D₁. 3 यः (D₃ स) पितेव धर्मतः; B₅
पिता चैवमधर्मवित्; D₅ पितेव स हि धर्मवित्. — °)
D₅ राष्ट्रस्य (for राज्यस्य). — °) K₁. 2. 4 B D₁ D₂
D₁. 2. 5. 6 वा (K₁ D₅ पा) तितो (for निहतो).

44 S₂ missing (cf. v. l. 34). — °) D₇. 8
भीष्मेण (for भीष्माय). D₄ कर्णाय (for द्रोणाय). T
G₂-4 M₃-5 महात्मने (for विशां पते). G₁ M₁. 2 द्रोणाय
धृतराष्ट्रेण भीष्माय च महात्मने. — °) D₅ G₃. 4 M₃. 4
निमृष्टा (for वि').

45 S₂ missing (cf. v. l. 34). D₅ om. 45. — °)
K₂. 4 B D₁ D₂ D₂. 4. 5. 7. 8 G₁. 2 M सं; G₄ तत्
(for स). D₅ वृत्तिं (for वृत्तिं). — °) D₄. 5. 7. 8
सत्कृत्य (for सत्कृतः). — °) K₁. 2 D₁. 7 आवृणीत (for
अवृ'). B₁-4 D₁ D₂ वृणीते सततं पुत्रान्; S (G₅
missing) ब्रवीति सततं पुत्रान्. — °) D₅ तमो वा (sic);
S (G₅ missing) स्वामेव (for मा). K₁ [अ]त्यधिकं;
K₃ M₃ [अ]भ्यधिको (for 'धिकं). D₂ परं; D₅ विमुः
(for गुरुः).

46 S₂ missing (cf. v. l. 34). — °) S₁ K₁. 3 D₁
प्रक्षीयमाणो (S₁ 'नो); K₂ B D₁ D₂ S (G₅ miss-
ing) अवेक्ष (D₁ D₂ G₄ 'क्ष्य)माणः; K₄ अक्षीयमानो;
D₅ प्रक्षीयमाणो (for अक्षीयमाणो). D₂ om. from
न्यस्त up to युद्धमानं (in 46°). K₃ reads from न्यस्तास्त्र
up to हतः (in 46°) twice. K₂ (second time) B
D₁ D₂ S (G₅ missing) स्वां मां च; D₂ न्यस्तास्त्रास्त्र

(for 'स्त्रास्त्र). — °) K₂ (second time) नैष्टुर्न्यद् (sic);
B D₁ D₂ न्यस्तास्त्रास्त्र; D₂. 4 तद्वाक्येन (for त्वद्वा');
S (G₅ missing) मार्दवात्सततं गुरुः. — °) K₁ D₃
T G₄ स्वेवं; D₄-8 हि तं (for त्वेनं). D₃. 5. 7 हि
(for चै).

47 S₂ missing (cf. v. l. 34). — °) B₁ अस्य
(for तस्य). G₁ [अ]कुदस्य; M₃-5 कुदस्य (for [आ]-
चार्यस्य). D₃ तस्मादार्थस्य वृद्धस्य; D₅ तस्माद्गुरोश्च वृ';
T G₂-4 M₁. 2 तस्याकुदस्य वीरस्य. — °) D₅ कृतो द्रोहो-
पकारिणा. — °) D₃ [s]पि (for हि). D₅ कृतं ह्यकार्य-
मस्माभी. — °) D₇ लुब्ध- (for लघु-). — After
47, K₄ B D₁ D₂ D₃ ins. :

1376* अहो वत महत्पापं कृतं कर्म सुदारुणम् ।

यद्वाज्यसुखलोभेन द्रोणेऽयं साधु धातितः ।

[(L. 1) B₁ सुदृक्करं (for सुदारुणम्). — (L. 2)
K₄ D₂ D₁ युधि (for साधु). K₄ D₂ पातितः (for
धा).]

48 S₂ missing (cf. v. l. 34). — °) D₂ पिदन्
(for पुत्रान्). T G₃. 4 transp. भ्रातृन् and दारान्.
D₂ D₄ D₅. 7. 8 सुतान् (for पिदन्). — °) D₅ चापि
(for चैव). — °) S (G₅ missing) अपि (for मम).
— °) K₂. 4 B D₁ D₂ D₃ एवं (for एतद्). D₅ मां
(for मे).

49 S₂ missing (cf. v. l. 34). — °) D₁. 5 न
(for स). D₂ 'कमेण (for 'कामेन). B₁ सोयमथ
महाबाहो. — °) T G₂-5 M₃-5 पात्यमानो (for हन्य').
K₂. 4 D₁. 3 G₁ M₁. 2 [s]भ्युपेक्षितः; B D₁ D₂
5. 6 M₃-5 ह्युपे' (for 'भ्युपे'). D₃ प्रहमाण उपेक्षितः
(sic). — °) G₁ M प्राप्तोपि (M₃-5 'मि) (for प्राप्तो-
सि). B D₁ D₂ D₃. 4. 7 प्रमो (for विमो).

50 S₂ missing (cf. v. l. 34). — °) D₁ ब्रह्माणं
(for ब्राह्मणं). — °) B₂ D₁ D₂ महा- (for यथा).

तस्मादवाक्षिरा राजन्प्राप्तोऽस्मि नरकं विभो ॥ ४९
ब्राह्मणं वृद्धमाचार्यं न्यस्तशस्त्रं यथा मुनिम् ।

घातयित्वाद्य राज्ञ्यर्थे मृतं श्रेयो न जीवितम् ॥ ५०

इति श्रीमहाभारते द्रोणपर्वणि सप्तपञ्चदशतमोऽध्यायः ॥ १६७ ॥

१६८

संजय उवाच ।

अर्जुनस्य वचः श्रुत्वा नोचुस्तत्र महारथाः ।
अप्रियं वा प्रियं वापि महाराज धनंजयम् ॥ १
ततः क्रुद्धो महाबाहुर्भीमसेनोऽभ्यभाषत ।
उत्समयन्निव कौन्तेयमर्जुनं भरतर्षभ ॥ २

मुनिर्यथारण्यगतो भाषसे धर्मसंहितम् ।
न्यस्तदण्डो यथा पार्थ ब्राह्मणः संशितव्रतः ॥ ३
क्षताव्रता क्षताजीवन्क्षान्तस्त्रिष्वपि साधुषु ।
क्षत्रियः क्षितिमाप्नोति क्षिप्रं धर्मं यशः प्रियम् ॥ ४
स भवानक्षत्रियगुणैर्युक्तः सर्वैः कुलोद्बहः ।

C. 7. 906
B. 7. 197. 5
K. 7. 198. 5

— °) D₃ S (G₅ missing) राज्यार्थं (for 'से'). D₃
पातयित्वाद्य संजयसे. — °) T G_{3.4} मृतिः (for मृतं).

Colophon : Ś₂ K₅ G₅ missing. — Sub-parvan :
B₁ नारायणास्त्रमोक्ष. — Day of Droṇa's General-
ship : K₁ पंचमे युद्धदिवसे; K₂ पंचमे दिवसे; K₃
पंचमदिवसयुद्धे. — Adhy. name : B₂ D₃ अर्जुनवाक्यं.
— Adhy. no. (figures, words or both) : D₁ 197;
D₂ 199; D₃ 90; T G_{2.3} 191; G₁ M_{1.2} 190;
G₄ 192; M_{3.5} 189; M₄ 179. — Śloka no. : D₁
D₁ 53.

168

☞ This adhy. is missing in K₅ G₅ (cf. v. l. 7. 14; 125. 137. 9).

1 Ś₂ missing up to श (in 26^a) (cf. v. l. 7. 167. 34). — °) G₂ तस्य (for तत्र). — °) D₂ om.
(hapl.) वा प्रियं. B₂ G₁ च (for वा). D₂ प्रियं वा
अप्रियं वापि.

2 Ś₂ missing (cf. v. l. 1). — °) Ś₁ K_{1.2} D₁
महाराज (for 'बाहुर'). — °) D₂ ह्यभाषत. — D_{2.4.5}
G₃ om. 2^{cd}; D₁ om. 2^c-3^d. — °) K₄ B D₁ D₂
T G_{2.4} M₃₋₅ कुरुसयन्; G₁ M_{1.2} भस्त्रं (for उत्स्रं).
— °) D₃ अर्जुनं पुरुषर्षभं.

3 Ś₂ missing (cf. v. l. 1). D₁ om. 3 (cf. v. l. 2). — °) D_{4.5} गतं (for गतो). — °) K₄ B₂

D₂ D_{1.3.5} भाषते (for 'से'). B₂ D₂ संहितां; D₂
संगतं (for संहितम्). — °) D₁ धर्मो (for दण्डो).
— °) K₁ D₁ D_{1-2.3} संशित- (for संशित-).

4 Ś₂ missing (cf. v. l. 1). — °) K_{3.4} B D₁
D₂ D_{1-2.3} S (G₅ missing; M₅ [sup. lin.] क्षत-
व्रता; D₁ क्षत्रजातान् (for क्षताव्रता). K₁ D₂
क्षताजीवं; B₂ D_{4.5} क्षताजीवः; D₃ क्षतो जीवन्; D₁
क्षसा जीवन् (sic); D₂ क्षता जीवन्; T G_{2.3} क्षता-
जीवी; G₁ M_{1-4.5} (sup. lin.) क्षताजीवः; G₄ क्षता-
जीवी; M₅ (orig.) क्षताजीर्णः (for क्षताजीवन्). — °)
K₃ क्षातस्त्रिषु (sic); K₄ B₁₋₄ D₂ D₂ क्षता स्त्रीषु;
D₁ क्षता त्रिषु; D₄ क्षतस्त्रिषु; T G₂₋₄ M क्षांतस्त्रीषु;
G₁ क्षांतस्त्रीषु (for क्षान्तस्त्रिषु). Ś₁ K (K₅ missing)
पुत्र; D₂ D_{1.2.3.4.5} S (G₅ missing) अय (for अपि).
D₃ क्षांतस्त्रीष्वप्यसाधुषु; D₅ क्षतस्त्रिष्वेत् सा. — °) M_{1.2}
क्षान्तिम् (for क्षितिम्). — °) D_{1.3} प्रियं (for क्षिप्रं). B₁
D₁ G₁ धर्म- (for धर्मं). K₄ B₂₋₅ D₁ D₂ क्षिप्रं
धर्मं (D₁ D₂ D₃ 'मे') यशः प्रियः; D_{2.5} क्षितिं धर्म-
यशस्करी (D₅ 'री'); D_{4.5} क्षत्रघ (D₅ 'त्र घ' मयशस्करी).

5 Ś₂ missing (cf. v. l. 1). — °) K₁ B₂ D_{1.2-5}.
7.8 T G_{1.3.4} M_{1.2} कुलोद्बहः; M₃₋₅ कुरुद्बह (for कुलो-
द्बहः). D₃ युक्तः क्षत्रगुणान्वितः. — °) K₃ T G_{1.2}
M_{1.2} वाच्यं; K₄ B_{1.2-5} D₁ D₂ D₃ G_{2.4} M₅
वाचं; B₂ चारं (for वाक्यं). D₅ अविज्ञाय यथा वाचो.
— °) D₁ नाप- (for नाद्य). — After 5, G₁ M
ins. :

C. 7. 9085
B. 7. 197. 5
K. 7. 198. 5

अविपश्चिद्यथा वाक्यं व्याहरन्नाद्य शोभसे ॥ ५
पराक्रमस्ते कौन्तेय शक्रस्येव शचीपतेः ।
न चातिवर्तसे धर्मं वेलामिव महोदधिः ॥ ६
न पूजयेच्चा कोऽन्वद्य यत्रयोदशवार्षिकम् ।
अमर्षं पृष्ठतः कृत्वा धर्ममेवाभिकाङ्क्षसे ॥ ७
दिष्ट्या तात मनस्तेऽद्य स्वधर्ममनुवर्तते ।
आनृशंस्ये च ते दिष्ट्या बुद्धिः सततमच्युत ॥ ८

1377* वर्तमाने यथा पापे उग्रकर्मणि भारत ।

स्वधर्ममनवस्थाय किमेतानि प्रभापसे ।

[(L. 1) G₁ M_{1.2} वर्तमानो (for 'माने').]

6 Ś₂ missing (cf. v. l. 1). D₂ om. (hapl.) 6-7.
—^a) D₂ विजय (for कौन्तेय). —^o) G₁ M_{1.2} चाति-
वर्तते (for 'से').

7 Ś₂ missing (cf. v. l. 1). D₂ om. 7 (cf. v. l. 6). —^a) D₂-3 सं- (for न). Ś₁ K₁-3 कोपयेत् (for पूजयेत्). K₁ मां; K₂ B D₂ D₃ D₄ D₅ 7 M₂-5 त्वां; D₂ हि (for त्वा). T G_{2.4} M₂-5 ह्यत्र; G₁ M_{1.2} ह्यद्य (for ऽन्वद्य). D_{1.5} संपूजयित्वा कोन्वद्य; G₂ न पूजयित्वा को ह्यत्र. —^b) D₂ T G_{2.4} यस् (for यत्). G₂ वषट्कं; M₂ वार्षिकः. —^o) D₂ न अमर्षं; D₁ स्वमर्षं; D₂ स्वधर्मं; D₂ असत्यं (for अमर्षं). —^d) D_{1.5} अति; T G₂₋₄ अनु- (for अति). K_{1.2.4} D₁ रक्षसे; D₂ D₃ आपसे (for काङ्क्षसे). D₂ सत्यमे-
वाद्य शोचसे. — After 7, D_{2.7} ins.:

1378* अहमावारयिष्यामि गदया सर्वकौरवान् ।

त्वया विना यदि महीं धर्मपुत्राय धीमते ।

न दद्यां पञ्चमे प्राप्ते दिवसे नासि क्षत्रियः ।

8 Ś₂ missing (cf. v. l. 1). —^a) D₄-6 नमस् (for मनस्). —^b) D_{1.5} अनुवर्तसे (for 'वर्तते'). —^o) Ś₁ K₂ M_{1.2} आनृशंस्यं च; D₁-6 शंस्येन; D₇ शंस्येव (for 'शंस्ये च'). D₂ शमे (for च ते). S (G₂ missing) transp. दिष्ट्या and बुद्धिः. D₂ तुभ्यं (for बुद्धिः). D_{7.8} संततम् (for स'). Ś₁ K₂ D₂ G₂ अच्युता; M₂ अच्युत (for अच्युत). D₁ बुद्धिः संततं ते च्युतं (sic). — After 8, G₁ M_{2.4} ins. 1393*, repeating it after 7. 170. 8.

9 Ś₂ missing (cf. v. l. 1). —^a) B (except B₂) D₂ यत्र; G₂ तनु (for यनु). D_{7.8} यनु धर्मो-
प्रवृत्तस्य. —^b) D_{1.7.8} हतं (for हतं). —^o) D₁

यनु धर्मप्रवृत्तस्य हतं राज्यमधर्मतः ।

द्रौपदी च परामृष्टा सभामानीय शत्रुभिः ॥ ९

वनं प्रवाजिताश्चास्म वल्कलाजिनवाससः ।

अनर्हमाणास्तं भावं त्रयोदश समाः परैः ॥ १०

एतान्यमर्षस्थानानि मर्षितानि त्वयानघ ।

क्षत्रधर्मप्रसक्तेन सर्वमेतदनुष्ठितम् ॥ ११

तमधर्ममपाकृष्टमारब्धः सहितस्त्वया ।

पराकृष्टा (for 'मृष्टा'). —^a) D₂ वंशुभिः (for शत्रुभिः).
K₁ समानीय च शत्रुभिः. — After 9, G₁ M ins.:

1379* कथं वृद्धेषु तिष्ठसु धार्मिकेषु महत्सु च ।

द्रौपदी प्रामुखात्केशं वेद्या योषेव भारत ।

किमु तेषां विल्वफलं मुखे ह्यासीन्महात्मनाम् ।

उताहो बधिरा ह्यासन्मूका वापि धनंजय ।

अन्धा वसन्तदा ते तु यैश्च नोक्तं हितं वचः । [5]

अथ तत्र भवेद्धर्मो न चैवान्नास्त्यनार्यकम् ।

अनुरूपं कृतं चापि भीष्मद्रोणकृपादिभिः ।

पुत्रैः शिष्यैश्च यत्साधं संनद्धा योद्धुमाहवे ।

[(L. 3) G₁ केषां (for तेषां). G₁ M_{1.2} फलं तत्र
(for विल्वफलं). G₁ M_{1.2} पार्थं (for मुखे). — (L. 5)
G₁ के (for ते).]

10 Ś₂ missing (cf. v. l. 1). —^a) D₂ वयं (for वनं). B_{1.5} D₂ D₃ M₂ प्रव्रजिताश्च; D₂ प्रवृजिं
(for प्रवाजिं). K₂ B_{2.4} D₂ T G_{1.3} M (except M₂) च स्म (for चास्म). —^b) M₂ चासिनः (for चाससः). —^o) D₂ D₃ तत्तावत् (for तं भावं).
D₂ अनीहमानाह्नाभावांसं. — After 10, S (G₂ missing) ins.:

1380* बहूनि क्षाम्य शत्रूणां सत्यधर्मरता वयम् ।

तथा तन्मर्षयित्वा तु यथा ते उत्पथस्थिताः ।

[(L. 2) G₁ यथा (for तथा). G₁ उपतस्थिताः (sic);
M_{1.4} उत्पथि स्थिताः; M_{2.5} 'थे स्थिताः (for 'यस्थिताः).]

11 Ś₂ missing (cf. v. l. 1). —^b) K₂ B D₂ D₃ मया (for त्वया). M₂ विभो (for [अ]नघ).
—^o) D₂ धर्मं क्षेत्रे; D₂ धर्मक्षेत्र (for क्षत्रधर्म).
D₂ om. सक्तेन. D₂ प्रयुक्तेन (for प्रस').

12 Ś₂ missing (cf. v. l. 1). —^a) Ś₁ K₁-3 तद्;
D₂ त्वम् (for तम्). D₂ अधर्म्यम् (for अधर्मम्).
Ś₁ K₁ D₁ उपाकृष्टम्; K₂ अपाकृष्टं; K₃ उपाकृष्टम्; K₄

सानुबन्धान्हनिष्यामि क्षुद्रान्नाज्यहरानहम् ॥ १२
 त्वया तु कथितं पूर्वं युद्धायाभ्यागता वयम् ।
 घटामश्च यथाशक्ति त्वं तु नोऽद्य जुगुप्ससे ॥ १३
 स्वधर्मं नेच्छसे ज्ञातुं मिथ्या वचनमेव ते ।
 भयादितानामस्माकं वाचा मर्माणि कृन्तसि ॥ १४
 वपन्त्रणे क्षारमिव क्षतानां शत्रुकर्शन ।

विदीर्यते मे हृदयं त्वया वाक्शल्यपीडितम् ॥ १५
 अधर्ममेतद्विपुलं धार्मिकः सन्न बुध्यसे ।
 यच्चमात्मानमस्मांश्च प्रशंस्यान्न प्रशंससि ।
 यः कलां षोडशीं त्वत्तो नार्हते तं प्रशंससि ॥ १६
 स्वयमेवात्मनो वक्तुं न युक्तं गुणसंस्तवम् ।
 दारयेयं महीं क्रोधादिकिरेयं च पर्वतान् ॥ १७

C. 7. 168B
 B. 7. 197. 15
 K. 7. 198. 20

D₃ अपाकृष्टं; B₁ अपाकरोष्टम्; B₂ कष्टम्; Dn₂ समा-
 कृष्टं; D₃ अनाविष्टं; D_{1.5} मयाद (D₅ 'याकृष्टं'; D_{7.8}
 मया कष्टम्; G₁ M उपक्रो (M_{1.2} 'क्र'ष्टम् (for अपा-
 कष्टम्); —^d) K_{2.4} Dn₂ D₃₋₅ स्मृत्वाद्य; D_{7.8} M_{1.2}
 आरब्धं. Ś₁ K₂ D_{1.4.5} सहितं (for 'तस्'). D₁ पुरा
 (for स्वया). K_{1.3} आरब्धमहत् त्वया (sic); D₂ स्मृत्वाद्यं
 सहितं त्वया (sic); D₃ आरब्धं सहितं त्वं. —^e) M₁
 अनुबंधान्. —^d) D₃ क्षिप्रं (for क्षुद्रान्). D₁ अयं.
 S (G₅ missing) क्षुद्रानेतान्सहस्रशः (G₁ M_{1.2} 'न्न
 संशयः).

13 Ś₂ missing (cf. v. l. 1). —^a) B Dc₁ Dn₁
 D₂ हि; D₁₋₃ तु (for तु). B Dn₂ D_{3.5} S (G₅
 missing) कथिते (D₅ 'ता); D₅ (also) व्यथिता (for
 कथितं). Dn₂ पूर्वं (for पूर्व). —^b) K₂ अभ्यागता (sic);
 B₁ G₁ M_{1.2} अभिगता; Dn₂ D_{2.5.7} अभ्युद्यता; D₁
 अभ्युदिता (for अभ्यागता). D₃ युद्धायागता वयं (sic).
 —^e) Ś₁ K₃ घटामस्तु; K₄ B (except B₃) Dc₁ Dn₁
 D_{2.7.8} G₁ M_{1.2} 'महे; Dn₂ D_{1.5} 'म स्त (for 'मश्च').
 —^d) D_{7.8} नाद्य (for नोऽद्य).

14 Ś₂ missing (cf. v. l. 1). —^a) K₄ M_{1.5}
 स्वधर्मं; B₁ D₅ अधर्मं (for स्वधर्मं). K_{3.4} B Dc₁ Dn
 D₃ नेच्छसि; D₅ नेच्छसे (sic) (for ने). D₃ ज्ञातु;
 M₃₋₅ स्थातुं (for ज्ञातुं). Bom. ed. धर्ममन्विच्छसि ज्ञातुं.
 —^b) S (G₅ missing) ब्रूया (for मिथ्या). K₁ अत्र-
 वीत्; D₅ एव च (for एव ते). D₁ परधर्मं तु ज्ञास्यसि.
 —^d) D_{1.5.7.8} मर्म नि- (for मर्माणि).

15 Ś₂ missing (cf. v. l. 1). —^a) K₁ वपद्;
 Dn₂ ददन्; G₂ वपन्; M₃₋₅ दधद् (for वपन्). K₁
 रणे (for व्रणे). G₁ M_{1.2} क्षते विवृजसि त्वं हि. —^b)
 S (G₅ missing) शलाकां (for क्षतानां). Ś₁ K₁₋₃ B₁.
 3.5 D₁₋₃ शत्रुकर्षण.

16 Ś₂ missing (cf. v. l. 1). D₄ om. 16^{ab}. —^a)
 D₃ अधर्म्यम् (for 'र्म्य'). K_{1.2} D_{3.5} T G₂₋₄ एतं;
 K₄ B Dc₁ Dn₁ D₁ एतं; D₅ एव (for एतद्). D₃
 विद्विष्टं (for विपुलं). Dn₂ D₃ अधर्मतत्त्वं विपुलं. —^b)

G_{1.2} M_{1.2} त्वं (for सन्). D₂ पूज्यसे; G₄ बुध्यते
 (for 'से). D_{7.8} धार्मिकस्य न युज्यते. —^e) Dc₁ G₂
 यस्त्वम्; Dn₁ यः स्वम्; D_{2.4-5} नूनम् (for यस्त्वम्).
 —^d) B₁ Dc₁ Dn₂ D₃₋₅ T G₂₋₄ प्रशस्यान्; Dn₁ प्रशं-
 सस्यान् (sic) (for प्रशस्यान्). — After 16^{ad}, N (Ś₂
 K₂ missing; D₄ [reading twice]) ins.:

1381* बासुदेवे स्थिते चापि द्रोणपुत्रं प्रशंससि ।

[D₁ (both times),^e बापि (for चापि). D₁ (second
 time) om. प्रशंससि.]

—^e) N (Ś₂ K₂ missing) पूर्णां (for स्वत्तो). —^f)
 N (Ś₂ K₂ missing) धनंजय न ते (D₁ मे) हति.

17 Ś₂ missing (cf. v. l. 1). —^a) D₃ सर्वथा च
 (for स्वयमेव). K₂ D₅ आत्मना (for 'नो). B Dc₁
 Dn₁ S (G₅ missing) दोषान्; D₂ युक्तं (for वक्तुं).
 —^b) Dn₂ संस्तवे (for 'वम्). B Dc₁ Dn₁ S (G₅
 missing) ब्रुवाणः किं (S [G₅ missing] ब्रुवन्नद्य) न
 लज्जसे; D₅ गुणसंस्तवमहंसि. — T G₁₋₃ M ins. after
 17^{ab}: B Dc₁ Dn D₃ after 18:

1382* मम नागायुतं पार्थ बलं बाह्योर्विधीयते ।

प्रपातयेयं च शरैः सेन्द्रान्देवान्समागतान् ।

सराक्षसगणान्पार्थ सासुरोरगमानवान् ।

[B Dc₁ Dn D₃ om. line 1. G₃ om. (hapl.) from
 बलं up to पार्थ (in line 3). — (L. 2) T G₂ प्रपातयेयं
 (for प्रपात). B Dc₁ Dn D₃ द्रावयेयं शरैश्चापि (for the
 prior half). — (L. 3) B₁ Dc₁ Dn₁ G₂ -मानवान्
 (for -मानवान्).]

—^e) K₁ धारयेयं; D₅ पराजये (for दारयेयं). G₂
 अहं भूमिं (for महीं क्रोधाद्).

18 Ś₂ missing (cf. v. l. 1). —^a) G_{1.3.4} अविध्य.
 B Dc₁ [ए]तां; Dn₁ [ए]तां; T G_{1.2.4} M_{1.2} [इ]यं;
 G₂ M₃₋₅ [इ]मां (for च). B₁ गुर्वी (for गुर्वी).
 Dn₂ D_{2.4.5} आविष्याविष्य च गदां; D_{7.8} आविष्य भीमां
 च गदां. —^b) Dn₂ D_{2.4} (also as in text), 5.7.8
 गुर्वी (for भीमां). M₃₋₅ -श्रुयितां (for -आलिनीम्).

C. 7. 9100
B. 7. 197. 19
K. 7. 198. 21

आविध्य च गदां गुर्वी भीमां काञ्चनमालिनीम् ।
गिरिप्रकाशान्क्षितिजान्भ्रमेयमनिलो यथा ॥ १८
स त्वमेवंविधं जानन्भ्रातरं मां नरर्षभ ।
द्रोणपुत्राद्भयं कर्तुं नार्हस्यमितविक्रम ॥ १९
अथ वा तिष्ठ वीभत्सो सह सर्वैर्नरर्षभैः ।
अहमेनं गदापाणिर्जेष्याम्येको महाहवे ॥ २०
ततः पाञ्चालराजस्य पुत्रः पार्थमथाब्रवीत् ।
संकुद्धमिव नर्दन्तं हिरण्यकशिपुं हरिः ॥ २१
वीभत्सो विप्रकर्माणि विदितानि मनीषिणाम् ।

याजनाध्यापने दानं तथा यज्ञप्रतिग्रहौ ॥ २२
पष्ठमध्ययनं नाम तेषां कस्मिन्प्रतिष्ठितः ।
हतो द्रोणो मया यत्किं मां पार्थ विगर्हसे ॥ २३
अपक्रान्तः स्वधर्माच्च क्षत्रधर्ममुपाश्रितः ।
अमानुषेण हन्त्यस्मान्स्वेषु क्षुद्रकर्मकृत् ॥ २४
तथा मायां प्रयुञ्जानमसह्यं ब्राह्मणञ्च नृम् ।
माययैव निहन्त्याद्यो न युक्तं पार्थ तत्र किम् ॥ २५
तस्मिस्तथा मया शस्ते यदि द्रौणायनी रूपा ।
कुरुते भैरवं नादं तत्र किं मम हीयते ॥ २६

— °) Ś1 K3 Dn2 D2. 5-8 दितिजान्; D4 गिरि (for क्षिति). — °) K1 भ्रमेयम् (for भ्रमे). D3 मनिलो (for ज). — After 18, B Dc1 Dn Ds ins. 1382*.

19 Ś2 missing (cf. v. l. 1). — °) D2. 6 तत्; D4 न (for स). D2 धीर; D2. 5. 7 G2 राजन् (for जानन्). — °) G1 M1. 2 मा (for मां). D6 धनंजय (for नरर्षभ). D2 भ्रातरं भरतर्षभ. — Ds om. 19^{ad}. — °) T G2-4 गंतुं (for कर्तुं). — °) D7 विक्रमः.

20 Ś2 missing (cf. v. l. 1). — °) D3 सर्वैर (for सह). D2 सैवैर; D3 एभिर् (for सर्वैर). B Dc1 Dn1 सहोदरैः; D4. 5 G2 नरर्षभ; M3-5 नराधिपैः (for नरर्षभैः). — °) Ś1 K3 G2. 4 एव; K1. 2 B5 एको (for एनं). — °) K1. 2 D1 एतान्; B5 एनं (for एको). Dn2 महारणे; D2. 4. 5. 7. 8 रणाजिरे (for महाहवे).

21 Ś2 missing (cf. v. l. 1). Dn2 S (G5 missing) transp. 21^{ab} and 21^{cd}. — °) Ś1 तथा (for ततः). B5 Dc1 D4. 6. 8 पंचाल- (for पाञ्चाल-). G1 M1. 2 पांचालराजस्य सुतस्व. — °) T G2-4 M3-5 सुतस्व पार्थम-ब्रवीत्; G1 M1. 2 तं पार्थमिदम्. — °) Ds आक्रंदम् (for संकुद्धम्). K1-3 नंदं (K1 'द' लं). Dn2 गर्जतं (for नर्दन्तं). — °) K5 Ds हरिं (for हृदि). B3-5 Dc1 Dn2 D6 हिरण्यकशिपुर्हरिं (D6 'रि:').

22 Ś2 missing (cf. v. l. 1). Before 22, MSS. ins. धृष्टद्युम्न उवाच; Dn1 धृतराष्ट्र उवाच. — °) Ś1 K1-3 D3 कीर्णानि; D2. 6 कीर्णानि (for कर्माणि). — °) Ś1 K1-3 D1-3. 5-8 विधीयते; D4 वा वीर्यते (for विदितानि). S (G5 missing) विहिं (G2 M5 'दि' तानि मनीषिभिः). — °) Dn2 Ds य (D8 या) जनाध्ययने दानं. — °) D3 यज्ञे; D6 यज्ञः (for यज्ञ-). D5 परि (for

प्रति-). G2-4 तथा यज्ञः प्रतिग्रहः.

23 Ś2 missing (cf. v. l. 1). — °) B1 अध्यापनं (for अध्ययनं). S (G5 missing) कर्म (for नाम). — °) G1 तस्मिन् (for कं). Ś1 K3 M1 प्रतिष्ठितं. — °) K1. 2 यत्तः; K1 D3 यत्तु; B Dc1 Dn1 D1 ह्येवं; D6 यं तत्; S (G5 missing) यन्मास्व (for यत्तत्). — °) S (G5 missing) एवं (for किं मां). M1 पार्थिव (for पार्थ वि-). D1. 5. 7. 8 विगर्हसे; D6 [अ] वगर्हसि (for विगर्हसे).

24 Ś2 missing (cf. v. l. 1). — °) M3-5 अपा-क्रांतः (for अपं). — °) Dn2 D3 क्षात्रधर्मम्; S (G5 missing) बाहुवीर्यम् (for क्षत्रधर्मम्). K1 D2. 4. 5 G2 M1. 2 अ (K1 न्य) पाश्रितः; D6 उपस्थितं (for उपा-श्रितः). B Dc1 Dn1 क्षात्रं (B5 क्षत्रे) धर्मं व्यपाश्रितः. — °) S (G5 missing) अधर्मेण हतस्तस्माद्. — °) D5 कूर (for क्षुद्र-).

25 Ś2 missing (cf. v. l. 1). D4 om. 25-28. — °) D1. 3 मायाः. G1 M1. 2 य (G1 त) तथा मायां प्रकुर्वणम्. — °) Ś1 K1. 3 अशक्यं; D5. 7 असह्यं (for असह्यं). K2 D1. 3 अशक्यं (D3 'सह्यं') ब्राह्मणं ध्रुवं. — °) T G2-4 प्रतिमायी; G1 M3-5 प्रतिमायो; M1. 2 प्रतिमायां (for माययैव). B1 Dc1 Dn1 हि हन्याद्यो; D2. 5 निहतव्यो; D6 निहत्याजौ (for 'न्याद्यो'). — °) K1. 2 Dn2 D1. 5 तत्र पार्थ (by transp.).

26 Ś2 missing up to इ (cf. v. l. 1). D4 om. 26 (cf. v. l. 25). — °) M1. 2 कस्मिन् (for तं). D1. 3 तदा (for तथा). Ś1 K1-3 Dc1 Dn1 D1. 3 शास्ते; D3 शास्ते (for शस्ते). — °) Some MSS. द्रौणायनी (for द्रोण). D6 यदि द्रौणिर्विपौरुषे. — °) D1. 3 कुरुते भैरवाद्वादांस्तत्र किं नाम पौरुषं.

न चाद्भुतमिदं मन्ये यद्द्रौणिः शुद्धगर्जया ।
घातयिष्यति कौरव्यान्परित्रातुमशक्नुवन् ॥ २७
यच्च मां धार्मिको भूत्वा त्रीणि गुरुघातिनम् ।
तदर्थमहमुत्पन्नः पाञ्चाल्यस्य सुतोऽनलात् ॥ २८
यस्य कार्यमकार्यं वा युध्यतः स्यात्समं रणे ।
तं कथं ब्राह्मणं ब्रूयाः क्षत्रियं वा धनंजय ॥ २९
यो ह्यनस्त्रविदो हन्याद्ब्रह्मास्त्रैः क्रोधमूर्छितः ।
सर्वोपायैर्न स कथं वध्यः पुरुषसत्तम ॥ ३०

विधर्मिणं धर्मविद्धिः प्रोक्तं तेषां विषोपमम् ।
ज्ञानन्धर्मार्थतत्त्वज्ञः किमर्जुन विगर्हसे ॥ ३१
नृशंसः स मयाकर्म्य रथ एव निपातितः ।
तन्माभिनन्द्यं वीभत्सो किमर्थं नाभिनन्दसे ॥ ३२
कृते रणे कथं पार्थ ज्वलनार्कविषोपमम् ।
भीमं द्रोणशिरश्छेदे प्रशस्यं न प्रशंससि ॥ ३३
योऽसौ ममैव नान्यस्य बान्धवान्युधि जघ्निवान् ।
छित्त्वापि तस्य मूर्धानं नैवास्मि विगतज्वरः ॥ ३४

C. 7. 917
3. 7. 197. 36
4. 7. 198. 39

27 D₁ om. 27 (cf. v. l. 25). — ^a) D₁ D₂. 6-8
अहं (for इदं). D₁ न चाद्भुततमं मन्ये. — ^b) K₁
B₁. 5 D₁ युद्ध (for शुद्ध). B₂. 5 गर्जनात् (for 'या').
K₁ D₂ D₂. 3. 5 यद्द्रौणिर्युद्धसंज्ञया; D₁ यदि द्रौणिश्च
गर्जति; D₁ 5 यद्द्रौणिः प्रतिगर्जति; T G₃. 4 'णिश्चात्र
गर्जति; G₂ 'णिस्तु गर्जति. — ^c) B₂-4 कौरव्य
(B₁ 'न्य') (for 'व्यान्').

28 D₁ om. 28 (cf. v. l. 25). — ^a) D₁ G₁ M
मा (for मां). — ^b) T पातिनं (for 'घा'). — ^d)
K₁. 2 D₁ S (except G₁; G₃ missing) पाञ्चाल्य (for
पाञ्चाल्यस्य).

29 D₂ om. 29^{ab}. — ^b) D₁ D₁ [s] स्त्रान् (for
स्यात्). G₂ धनंजय (for समं रणे). — ^c) B₁ M₁. 2
तथा (for कथं). D₁ D₁ ब्राह्मणं (for ब्रा). K₁ ब्रूयः;
K₃ D₃ G₁ M ब्रू (M₁ भू) यात्; T G₃ ब्रूयां (for
ब्रूयाः). D₂ G₂ ब्राह्मणं तं कथं वयाः. — ^d) S K₁. 2
D₁. 3 क्षत्रियं च; D₁. 5. 7. 3 क्षत्रं वा त्वं (for क्षत्रियं वा).
G₂ समं रणे (for धनंजय).

30 ^a) D₃ विदं (for 'विदो'). — ^c) M₃ om. स.
D₃ कथं सोद्य (for न स कथं). — ^d) D₂. 5 G₁ M₁
पुरुषसत्तमः. D₃ न वध्यः पाण्डुनन्दन. — After 30, T
G₂-4 M₃. 5 ins.:

1383* विशेषादिपुनरुहन्ता मे न स वध्यः कथं मया ।
योऽयं पापः सुदुर्मैत्र्या बान्धवान्युधि जघ्निवान् ।
तस्य विप्रब्रुववधे कथं पापं भवेन्मम ।

[(L. 2) M₃. 5 अधि- (for युधि). G₃ जघ्निवान् (sic)
(for जघ्नि). — M₃. 5 om. line 3.]

31 ^a) D₁. 3 विधर्मिणो (for 'णं'). B₁-4 D₁ D₁
D₃ धर्मविदां; B₃ विदं; G₁. 3. 4 M विदा (G₂. 4 'दः')
(for धर्मविद्धिः). — ^b) D₃ प्रोक्तम् (for प्रोक्तं). S

K₁. 2 D₁. 3 तेन; D₂ D₁-6 पृथक्; T G₁. 3. 4 M ते
किं (for तेषां). D₂ प्रोक्तमेतद्विद्योधनं; D₁. 3 प्रोक्तास्तेन
विषोपमाः. — ^c) K₁ B D₁ D₁ D₂. 7. 7. 3 G₁ M
-तत्त्वज्ञः; D₂ -तत्त्वतः (for -तत्त्वज्ञः). S K₁. 2 (inf.
lin. as in text). 3 D₁ ज्ञानतत्त्वार्थमज्ञः; D₃ ज्ञानधर्मा-
र्थतत्त्वं तु. — ^d) T G₁ M किं मा (G₁ M₂-5 मां) पार्थ;
G₂-4 किं (G₃ कं) वा पार्थ (for किमर्जुन). K₁ B D₁
D₁ D₃ किं मामर्जुन गर्हसे.

32 ^a) G₂ तथा (for मया). — ^b) D₃ रथादेव;
G₁ M₁. 2 रथमेवं (for रथ एव). — ^c) K₁ स माम-
निन्दो; D₁ D₂ D₂. 3. 6 तन्मा (D₂ तं मा) निन्दो;
D₁ तन्नाभिनन्द्यं; D₁. 5. 7. 3 तस्मादनिन्दं (D₁ 'दं'); M₁.
2. 5 तं नाभिनन्द्यं (for तन्माभि). — ^d) B D₁ D₁
D₂. 4-8 नाभिनन्दसि.

33 ^a) D₂ कृतं (for कृते). K₂ रथं (for कथं).
B D₁ D₁ D₁. 6 S (G₃ missing) कालानलसमं (T G₁-4
M₁. 2 'समे; M₃. 5 'समै; M₁ 'समः) पार्थ; D₁. 7. 3
कृतं रणे कर्म पार्थ; D₃ कृतं कर्म रणे पार्थ. — ^b) D₃
T G₁-4 M₁. 2 -विषोपमे; M₃. 4 'पमै; M₃ 'पमः (for
'पमम्). B₁ ज्वलंतं स्वेन तेजसा. — ^c) B₁ वीक्ष्य;
D₁. 7 भीष्मः; D₂. 5 T G₁. 3. 4 M भीमे; D₁ भीम-
(for भीमं). K₁ -शिरश्छेदे; B D₁ D₁ 'श्छिद्धं;
D₂. 6 'श्छेदे (for 'श्छेदे). — ^d) K₂ M₁. 3 प्रशंस्यं;
K₁ प्रससे (sic); D₁ प्रशंसो; D₂ प्रशस्य; D₃ प्रशस्यन्
(for प्रशस्यं). D₃ त्वं (for न). B₃ प्रशंससि. B₁-4
D₁ D₁ न प्रशंससि मे कथं; D₂ प्रशंस्यन्मम संससि
(sic).

34 ^a) G₃ योसौ द्रोणो महेष्वासो. — ^b) S K₁. 3
D₁ अभि-; D₃ मम (for युधि). D₁. 5. 7. 3 बांधवा-
न्यधमद्रणे. — ^c) G₃ मित्वा (for छित्त्वा). D₃ तु (for
[अ]पि). K₁ श्रुत्वा पितुश्च मूर्धानं (sic).

C. 7. 9118
B. 7. 197. 37
K. 7. 198. 40

तच्च मे कृन्तते मर्म यन्न तस्य शिरो मया ।
निपादविषये क्षिप्तं जयद्रथशिरो यथा ॥ ३५
अवधश्चापि शत्रूणां धर्मः शिष्यतेऽर्जुन ।
क्षत्रियस्य ह्ययं धर्मो हन्याद्वन्येत वा पुनः ॥ ३६
स शत्रुर्निहतः संख्ये मया धर्मेण पाण्डव ।

यथा त्वया हतः शूरो भगदत्तः पितुः सखा ॥ ३७
पितामहं रणे हत्वा मन्यसे धर्ममात्मनः ।
मया शत्रौ हते कस्मात्पापे धर्मं न मन्यसे ॥ ३८
नानृतः पाण्डवो ज्येष्ठो नाहं बाधार्मिकोऽर्जुन ।
शिष्यश्चुङ्गिहतः पापो युध्यस्व विजयस्तव ॥ ३९

इति श्रीमहाभारते द्रोणपर्वणि अष्टपञ्चदशतमोऽध्यायः ॥ १६८ ॥

35 °) D₁ क्षतते (for कृन्तते). D₆ तच्च मे कृन्तमे-
तेन. — °) S K₁₋₃ न च; D₆ यन्तु (for यन्न). — G₂
om. 35nd. — °) D_{n1} निषंद- (for निपाद-). B₅ D₁.
7.8 विषयं (for 'ये). D₆.8 क्षिप्तं (for क्षिप्तं). — °)
D₆ मया (for यथा).

36 D_{n1} om. 36. — °) K₁ अवधे कस्मिन्; B₁.2
T G₂₋₄ 'ध्वे ह्यपि; B₃₋₅ G₁ M 'ध्वे ह्यपि; D_{n2} अथा-
वधेश्च; D₁ अवधं च हि; D₂ अथो वधे च; D₃ अव-
धाच्च हि; D₄.5 अथो वधश्च; D₆ उपपन्नश्च (for अव-
धश्चापि). S K₁₋₃ हि (for [अ]पि). — °) S K₁₋₃
D₁ अधर्मात्; D₄ अधर्मात्; G₅.4 यो धर्मः (for अधर्मः).
K₁ B D₆₁ D_{n2} T G₂ श्रूयते (for शिष्यते). — °)
D_{n2} D₂.4-8 T G₂₋₄ तु; D₃ च (for हि). S₂ K₁.
2.4 D₁.6 [अ]सौ धर्मो; B D₆₁ S (G₅ missing)
धर्मोयं (by transp.); D₂.5.7.8 यो धर्मो. — °) D₆
धर्मेण; T G₁₋₄ M₁.2 वध्येत (for हन्येत). S (G₅
missing) परैः (for पुनः).

37 °) G₁ M संख्ये (for संख्ये).

38 °) D₆ तथा (for रणे). — °) D_{n1} मन्यसे धर्मं
पाण्डव (sic). — °) D₃ ममापि निहतो शत्रौ. — D₄ om.
38th. — °) B₁ D₂.5.7.8 पार्थ; D₆ मम (for पापे).
D₅ अन्यं; D₇.8 मां (D₃ मा) त्वं (for धर्मं). — K₄
B D₆₁ D_n D₁ ins. after 38: D₂.2.5.8 after 39:
D₇ after the second occurrence of 39:

1384* संबन्धावनतं पार्थ न मां त्वं बहु मन्यसे ।
स्वगात्रकृतसोपानं निषण्णमिव दन्तिनम् ।
क्षमामि ते सर्वमेव वाग्यतिक्रममर्जुन ।
द्रौपद्या द्रौपदेयानां कृते नान्येन हेतुना ।

कुलक्रमागतं वैरं ममाचार्येण विश्रुतम् । [5]

तथा जानात्ययं लोको न यूयं पाण्डुनन्दनः ।

[D₇ reads line 1 for the first time after the first
occurrence of 39. — (L. 1) D₄ om. from संबन्धा-
up to मेव (in line 3). K₄ संबन्धिन् च ते पार्थ; B₅ स
युद्धावनतं पार्थ; D₃ सर्वथावनतं पार्थ (for the prior half).
D_{n2} मा (for मां). K₄ D_{n2} वक्तुमर्हसि (for बहु मन्यसे).
— (L. 2) D₅.7.8 सोपान- (for 'नं). D_{n1} निषण्णम्;
D₂.5.7 विषाणम्; D₃.8 निषाणम् (for निषण्णम्). K₄
D₃ दन्तिनः; B₅ D₂.5.8 दन्तिनां (for 'नम्). — (L.
3) D₂.6.7 पतद्; D₃ इदं (for एव). D₃ क्षमामि सर्व-
मेवैतद् (for the prior half). — (L. 5) B₁ वै ह्युतं
(for विश्रुतम्). — (L. 6) D₂.4.6-8 यथा (for तथा).
D₁.7.8 लोके (for लोको). K₄ D_{n1} D₃₋₅ नन्दन.]

39 D₁ om. 39. D₇ reads 39 twice (inserting line
1 of 1384* for the first time, after the first occurrence
of 39). — °) B D₆₁ D_n D₅ S (G₅ missing) नानृती;
D₂ 'तं (for 'तः). K₂ G₂.4 M₁₋₃ पाण्डव-; G₁ पाण्डवं
(for पाण्डवो). — °) S₂ B₁ D₆₁ च; T G₃ न;
G₁ मा (for वा). D₅.6 G₁.2 M₃.4 आधार्मिको; M₁.
2.5 आध- (for वाधा). D₁ न चाहं धार्मिकोऽर्जुन;
D₇.8 न चैवाधमधार्मिकः. — After 39th, TG₂₋₄ ins.:

1385* न क्षत्रिय इति प्रादुर्यो न हन्ति रणाजिरे ।

पितरं वा गुरुं वापि जिघांसुं पुत्रशिष्ययोः ।

जिह्वेन वाप्यजिह्वेन हन्यादेवाविचारयन् ।

इत्युक्तं ब्रह्मणा पूर्वं क्षत्रियाणां द्विपद्वधे ।

तस्माच्छिष्येण निहतः शत्रुर्मे ब्राह्मणब्रुवः । [5]

यः क्षत्रियसुतो हन्यात्पितरं वा गुरुं च वा ।

अनिष्टं क्षत्रियो हन्यात्स वै क्षत्रिय उच्यते ।

१६९

धृतराष्ट्र उवाच ।

साङ्गा वेदा यथान्यायं येनाधीता महात्मना ।
 यस्मिन्साक्षाद्वचुर्वेदो हीनिपेधे प्रतिष्ठितः ॥ १
 तस्मिन्नाकुश्यति द्रोणे महर्षितनये तदा ।
 नीचात्मना नृशंसेन क्षुद्रेण गुरुघातिना ॥ २
 यस्य प्रसादात्कर्माणि कुर्वन्ति पुरुषर्षभाः ।
 अमानुषाणि संग्रामे देवैरसुकराणि च ॥ ३
 तस्मिन्नाकुश्यति द्रोणे समक्षं पापकर्मिणः ।

नामर्षे तत्र कुर्वन्ति धिक्क्षत्रं धिगमर्षितम् ॥ ४
 पार्थाः सर्वे च राजानः पृथिव्यां ये धनुर्धराः ।
 श्रुत्वा किमाहुः पाञ्चाल्यं तन्ममाचक्ष्व संजय ॥ ५
 संजय उवाच ।
 श्रुत्वा द्रुपदपुत्रस्य ता वाचः क्रूरकर्मणः ।
 तूष्णीं बभूवु राजानः सर्वे एव विशां पते ॥ ६
 अर्जुनस्तु कटाक्षेण जिह्वं प्रेक्ष्य च पार्षतम् ।
 सवाष्पमभिनिःश्वस्य धिग्धिग्धिगिति चाब्रवीत् ॥ ७

C. 7. 9132
B. 7. 195. 7
K. 7. 199. 7

— °) D1 शिष्यभुङ्; Ds °दुङ्; T G2.3 शिष्येण (for शिष्यभुङ्). S K2.3 D1.5.7.8 संख्ये; K1 lacuna (for पापो). K1 B Dc1 Dn D2.3 G4 शिष्यद्रोही हतः (Bs तथा) पापो (D2.3 संख्ये). — D2.3.5.6.8 ins. 1384* after 39; D1 ins. it after the second occurrence of 39.

Colophon : Ks Gs missing. — Sub-parvan : Ks नारायणात्मोक्ष. — Day of Droṇa's Generalship : K2.3 पंचमदिवसे; T G3 पंचमेहनि. — Adhy. name : Ks Ds दृष्टधुनवाच्यं. — Adhy. no. (figures, words or both) : Ks 197; Dn1 198; D2 200; Ds 91; T G2.3 192; G1 M1.2 191; G4 193; Ms-3 190. — Sloka no. : Dc1 Dn1 44.

169

☞ This adhy. is missing in Ks Gs (cf. v. 1. 7. 125. 14; 137. 9).

1 °) Ds S (Gs missing) सांगो वेदो. S1 D1 यथान्यायं. — °) Ds S (Gs missing) येना (Gs यो ना) धीतो. — °) Ds यल्य (for यस्मिन्). — °) Ks B Dc1 Dn हीनिपेधे; Ds °धः (for °धे). — After 1, K2 D2 read 4^{ab}.

2 K2 D2 om. 2. Dn2 om. 2^{ab}. K1 transp. 2 and 3. — °) S1 K1.3 Ds चाकुश्यति; D1 चाकुष्यति; D3 ब्रह्मास्त्रविद्; D4 च कुशिते; D1 च कुश्यति (for आकु). Ds तस्मिन् ऋषिते द्रौणिर् (sic). — °) Ds कपेक्ष (for महर्षि). Ds Ms-3 यथा; Ds.3 T G1.4 M1 तथा (for तदा). — K1 repeats 2nd after 3. — °) T G2.4 नीचं कर्म कृतं तेन.

3 K1 transp. 2 and 3. — °) B Dc1 Dn1 कुर्वन्ति कर्माणि (by transp.). D1 न कुर्वन्ति नरर्षभाः; Ds कुर्वन्ति भरतर्षभाः; Ds.3 प्रकुर्वन्ति नरर्षभाः (for °). — °) S K2.4 D1 कुर्वाणा; K1 कर्माणि; Dn2 सर्वाणि (for संग्रामे). — °) Dn1 देवैरपि सुराणि च; G2 दैवान्यप्यासुराणि च. — After 3, K1 repeats 2nd.

4 K1.4 B3 D1 om. 4^{ab}. K2 D2 read 4^{ab} after 1. — °) Dn2 ते स्त्र; D1 तस्मान् (for तस्मिन्). K2 D1 [आ]कुष्यति; D2 [आ]कषिते; Ds [आ]शकुवति (hypermetric) (for [आ]कुश्यति). — °) G1 सपक्षं (for समक्षं). S K2.3 -कर्मणां; B (Bs om.) Dc1 Dn D1.2.4.5.8 M1.2.5 -कर्मणां; D2 G2.4 -कर्मणः. — °) Ds नामर्षयश्च कुर्वन्ति. — °) S K1-3 D1 क्ष (D1 क्षा) त्रं धिग् (by transp.); K1 B Dc1 Dn D2 G1 M1.2 धिक्क्षत्रं. S K2 अमर्षणं; K1 °र्षितः; K1 B (except B2) Dn2 D2.8 T G2 °र्षितां; Ds मनुष्यतां; G1.2.4 M अमर्षितां (for °र्षितम्).

5 °) D4 च (for धे). — °) M1 पांचालं. Ds किमाहुस्त्र पांचाल्यं.

6 D1 om. the ref. — °) Dn2 om. from वाचः up to धिगिति (in 7th). Dn1 तां वाचं; D2 ते वचः (for ता वाचः). — °) D2.4.5.7.8 तूष्णीं (D1 कृष्णा) श्रुतास्त्रदा राजन्; Ds व्यलीकमभ्यमन्यत. — °) Ds राजानो ये समागताः.

7 Dn2 om. up to धिगिति (cf. v. 1. 6). — °) K1 B Dn1 S (Gs missing) विप्रेक्ष्य; Dc1 D2.2.5.7.8 प्रेक्ष (D1 °क्ष्य) त; D2 प्रेक्षत; D3 प्रेक्ष्यति (for प्रेक्ष्य च). S1 K2 एदवं (for पार्षतम्). — K2 om.

G. 7. 9133
B. 7. 100. 7
K. 7. 100. 8

युधिष्ठिरश्च भीमश्च यमौ कृष्णस्तथापरे ।
आसन्सुव्रीडिता राजन्सात्यकिरिदमब्रवीत् ॥ ८
नेहास्ति पुरुषः कश्चिद् इमं पापपूरुषम् ।
भाषमाणमकल्याणं शीघ्रं हन्यान्नराधमम् ॥ ९
कथं च शतधा जिह्वा न ते मूर्धा च दीर्यते ।
गुरुमाक्रोशतः क्षुद्र न चाधर्मेण पात्यसे ॥ १०
याप्यस्त्वमसि पार्थैश्च सर्वैश्चान्धकवृष्णिभिः ।

7^c-8^b. — °) K₁ B₃₋₅ D₀₁ D_{n1} अति-; B₁ D₃ G₁ अपि (for अति-). K₁ B (except B₁) D₀ M_{1.2.5} निधस्य; D_{n1} विशस्य (for निधस्य). — ^a) K₁ D₃ T G₁ M₃ om. the first धिक्. B₃ त्वां (for the second धिक्). K₄ D₀₁ D₃ G₁ M_{1.2} ह्येव; B₃ D_{n1} D₁ इति स (D₁ च); G₄ इति व (for धिगिति). D₁ त्वे च धिधिगीचाब्रवीत् (sic).

8 K₂ om. 8^{ab} (cf. v. l. 7). — °) B₁ D_{n2} सव्री-
डिता; D_{1.5} सं; S (G₅ missing) सु (G₁ सं) व्रीडिता
(for सुव्रीडिता). S₂ सर्वे (for राजन्). D₀ आशंसुव्री-
डिता: सर्वे. — ^a) N (except S K₃ D₀; K₅ missing)
transp. इदं and अब्रवीत्.

9 Before 9, M₃₋₅ ins. सात्यकिरुवाच. — °) D_{n2}
न स्वस्ति; D_{1.5.7.8} न ह्यस्ति (for नेहास्ति). — ^b) D₁
यदुं (for य इमं). K₁ D_{1.5.7.8} पौरुषं (for पूरुषम्).
D₀ यो ह्येनं पापनिश्चयं. — °) D₀₋₃ भाषमाणं गुरोर्नि-
(D₃ रुनिं) दां. — After 9, N (K₅ missing) ins.:

1386* एते त्वां पाण्डवाः सर्वे कुरुस्यन्ति विविरसया ।

कर्मणा तेन पापेन श्रपाकमिव ब्राह्मणाः ।

[(L. 1) S₁ K_{1.2} त्वा; D_{n1} तु (for त्वां). D_{n1}
कुसयंतो. K₁ B₃₋₅ D₀₁ D_{n1} विकुसयता; K₂ विव; D_{n2}
चिकि; D_{1.5.7.8} विधि; D₀ विवित्सवः (for वा).
— (L. 2) S₂ K_{1.2} B_{1.2.4} D_{n2} D₁ [अ]नेन; B₃ D_{n1}
येन (for तेन). S₁ D₀₁ D_{5.6} इव ब्राह्मणः; S₂ K_{1.2.4}
D_{n2} D_{1.2} ब्राह्मणा इव (by transp.).]

— N (K₅ missing) cont.: G₁ M_{1.2} ins. after 12^{ab}:

1387* एतत्कृत्वा महत्पापं निन्दितं सर्वसाधुभिः ।

न लज्जसे कथं वक्तुं समितिं प्राप्य शोभनाम् ।

[(L. 1) G₁ M_{1.2} एवं (for एतत्). D₃ महा- (for
महत्). B_{2.3.5} D_{n2} G₁ निन्दितः. D₀₁ राजभिः (for
साधुभिः). K₄ D₁ निन्दितं साधु साध्विति (for the post.
half). — D_{2.4} om. line 2; B₃ reads it on marg.
— (L. 2) D₀ शोभन (for नां).]

यत्कर्म कलुषं कृत्वा श्लाघसे जनसंसदि ॥ ११

अकार्यं तादृशं कृत्वा पुनरेव गुरुं क्षिपन् ।

वध्यस्त्वं न त्वयार्थोऽस्ति मुहूर्तमपि जीवता ॥ १२

कस्त्वेतच्चयसेदार्यस्त्वदन्यः पुरुषाधमः ।

निगृह्य केशेषु वधं गुरोर्धर्मात्मनः सतः ॥ १३

सप्तावरे तथा पूर्वं बान्धवास्ते निपातिताः ।

यशसा च परित्यक्तास्त्वां प्राप्य कुलपांसनम् ॥ १४

10 D_{2.4} om. 10^a-11^b. D₅ om. 10. — ^a) S K₁₋₃
D_{1.7.8} न; D₃ तु (for च). S₂ D₃ transp. जिह्वा
and मूर्धा. D_{1.8} च (for ते). K₂ जिह्वा (for मूर्धा).
S₁ विदीर्यते; S₂ K (K₅ missing) D_{1.7.8} विशी; B₃ च
जीर्यते; D₃ T G₂ M च शी; D₀ [अ]नुशी; G₁ [अ]-
पि शी; G₃ [अ]वशी (for च दी). — °) D_{n2} आक्रो-
शतां. M₃ क्षिप्रं (for क्षुद्र). K_{1.2.4} D₁ आक्रोशतं
(K₄ D₁ 'शस्ते') गुरुं हत्वा. — ^a) K₁ M₄ धर्मेण (for
[अ]ध). D_{1.8} दीर्यसे (D₃ ते); M₃₋₅ पात्यसे (for
'से'). D₀ न च धर्मेण वध्यसे.

11 D_{2.4} om. 11^{ab} (cf. v. l. 10). — °) S K_{1.2}
याप्यस; K₃ D₁ त्याप्यस; K₄ प्राप्यस; B₁₋₄ D₀₁ D_n
D_{5.7.8} वाच्यस; D₃ T G_{2.4} वध्यस (for याप्यस).
D_{1.8} अपि (for असि). B₃ शोच्यस्त्वमपि पापिष्ठ;
D₀ त्याप्यस्त्वमसि पार्थये. — ^b) D₀ कैकयैश्चैव सोमकैः.
— °) S₁ K₃ यः कर्म; D₀ यत्र त्वं (for यत्कर्म). — ^a)
D₃ S (G₅ missing) राजन्; D₁ येन (for जन). D₀
श्लाघसे रणमूर्धनि.

12 °) D_{n2} D_{1.5.7.8} अनार्यं (D_{n2} 'र्जे') (for अ-
कार्यं). — ^b) S K (K₅ missing) D_{n2} D_{1.2.4.7.8} गुरुं
द्विपन्; D₅ द्विपन्गुरुन्; D₀ गुरुक्षयं (for गुरुं क्षिपन्).
— After 12^{ab}, G₁ M_{1.2} ins. 1387*.

13 D₁ om. 13^a-14^b. — °) D₃ पार्थस; G₂ ना-
न्यस (for आर्यस). — ^b) K₁ B_{1.2.5} D₀₁ D_{5.6} T
G_{1.4} M_{1.2} पुरुषाधम. — ^a) B₄ D₃ विगृह्य (for नि).
D₃ ततः (for सतः). D₀ सर्वधर्मोपपन्नस्य केशान्गृह्य
गुरोर्वधं.

14 D₁ om. 14^{ab} (cf. v. l. 13). — °) K₂ सतां
वरे; G_{1.4} M_{1.2.5} सप्तावरे (for वरे). — ^b) K₃ B
D₀₁ D_{n1} D₀ S (G₅ missing) निमज्जिताः (for निपा-
तिताः). — ^a) B_{1.4} कुलपांसनं; D_{n1} D₁ M₃ सन.

15 °) S₁ K₃ T G₂₋₄ चासि; M₃₋₅ चैव (for

उक्तवांश्चापि यत्पार्थ भीष्मं प्रति नरर्षभम् ।
 तथान्तो विहितस्तेन स्वयमेव महात्मना ॥ १५
 तस्यापि तव सोदर्यो निहन्ता पापकृत्तमः ।
 नान्यः पाञ्चालपुत्रेभ्यो विद्यते श्रुवि पापकृत् ॥ १६
 स चापि मृष्टः पित्रा ते भीष्मस्यान्तकरः किल ।
 शिखण्डी रक्षितस्तेन स च मृत्युर्महात्मनः ॥ १७
 पाञ्चालाश्रयिता धर्मात्क्षुद्रा मित्रगुरुद्वहः ।
 त्वां प्राप्य सहसोदर्यं धिक्कृतं सर्वसाधुभिः ॥ १८

पुनश्चेदीदृशीं वाचं मत्समीपे वदिष्यसि ।
 शिरस्ते पातयिष्यामि गदया वज्रकल्पया ॥ १९
 सात्वतेनैवमाक्षिप्तः पार्षतः परुषाक्षरम् ।
 संरब्धः सात्यकिं प्राह संकुद्धः प्रहसन्निव ॥ २०
 श्रूयते श्रूयते चेति क्षम्यते चेति माधव ।
 न चानार्यं शुभं साधुं पुरुषं क्षेममर्हसि ॥ २१
 क्षमा प्रशस्यते लोके न तु पापोऽर्हति क्षमाम् ।
 क्षमावन्तं हि पापात्मा जितोऽयमिति मन्यते ॥ २२

C. 7. 9152
 B. 7. 199. 17
 K. 7. 199. 27

चापि). K₁ Dn₂ D₂ G₂ यत्पार्थ (D₂ 'र्थ'); D₁ 5
 यत्पार्थ; G₂ यं पार्थ (for यत्पार्थ). —^b) Ś₂ B₁ Dn₂
 M₁ 5 नरर्षभ; D₃ महारथं (for नरर्षभम्). —^c) K₁ 2
 तथातो (for 'न्तो). D₅ तथा तद्विहितं तेन.

16 ^a) D₅ हि स (for तव). K₂ Dn₂ D₃ 5.5 सौ-
 दर्यो; D₁ सैन्या* (for सोदर्यो). —^b) B₅ D₁ कृत्तमः;
 D₅ सत्तमः; G₂ पुरुषः (for कृत्तमः). D₅ निहन्ता ते
 नराधम. —^c) Dn₂ पांचाल्य. —^d) D₅ S (G₅
 missing) लोके विद्यते पापकृत्.

17 ^b) D₂ चिकीर्षया (for करः किल). —^c) B₁ 2
 येन; B₃-5 Dc₁ Dn₁ D₅ [s]नेन (for तेन). —^d) K₁
 D₁ 5. 7. 8 महात्मना.

18 ^a) D₁ पांचालाश्चापि तान्धर्मान्. —^b) D₁ क्षुद्र-
 मित्रः; T G₂-4 क्षत्रधर्मः; G₁ M क्षत्रमित्र (for क्षुद्रा
 मित्र). —^c) D₁ तं (for त्वां). D₅ चापि (for
 प्राप्य). K₁ सहसोदर्यः; D₁-5 'सौदर्य'; D₅ 'सौदर्यैर';
 G₁ M₁ 2 'सोदर्याद्'. B₅ नित्याश्च सह सोदर्यैर. —^d)
 D₅ निकृते; T न्यकृताः; G₁ M धिक्कृताः; G₂ निकृताः;
 G₃ न्यकृताः (sic); G₄ तत्कृताः (for धिक्कृते). B₅
 धिक्कृताः सर्वराजभिः.

19 ^a) Dn₁ चापि; D₃ त्वमी (for चेद्). Ś₁ K₃
 ईदृशं वाचं; Dn₂ D₁ S (G₅ missing) 'शा वाचो (Dn₂
 'च'). —^c) K₁ B Dc₁ Dn₁ T G₁ M पोययिष्यामि
 (for पात). — After 19, K₁ B Dc₁ Dn D₁ 5.5
 ins.:

1388* त्वां च ब्रह्महणं दृष्ट्वा जनः सूर्यमवेक्षते ।
 ब्रह्महत्या हि ते पापं प्रायश्चित्तार्थमात्मनः ।
 पाञ्चालक सुदुर्बल मनैव गुरुमप्रतः ।
 गुरोर्गुरुं च भूयोऽपि क्षिपन्नैव हि लज्जसे ।
 तिष्ठ तिष्ठ सहस्रैकं गदापातमिमं मम । [5]
 तव चापि सहिष्येऽहं गदापातानवेकशः ।

[D₅ om. lines 1-5. — (L. 1) Dn₁ D₅ तु (for
 च). — (L. 2) B₃ Dc₁ Dn₁ D₁ पाप (for पार्ष).
 B₅ ब्रह्महन्नाहि तीर्थानि; D₅ ब्राह्मणं व्याहरन्क्षुद्रं (for the
 prior half). — B₁ om. lines 3-6. — (L. 3) B₁ 2
 Dc₁ Dn₁ पांचालकेषु दुर्बलं; D₅ 'लापसदासायो (for the
 prior half). D₅ [ए]वं (for [ए]व). — (L. 4) D₁ च
 भूयो मे; D₅ चैव भूयः (for च भूयोऽपि). B₅ गुहं चैव
 हि भूयोऽपि; Dn₂ पुरोर्गुरुं योपि (for the prior half).
 Dc₁ Dn₁ वृवन् (for क्षिपन्). B₁ 3.5 Dn₂ D₁ नैवेह;
 Dc₁ Dn₁ नेवेह (sic); D₅ चैव न (for नेव हि).
 — (L. 5) Dc₁ Dn₁ इदं (for इमं).]

20 Before 20, M₃-5 ins. संजय उवाच. —^a)
 D₅ सात्यकेन (for सात्वतेन). G₂ उक्तस्तु (for आ-
 क्षिप्तः). D₅ सात्यकेन तथाक्षिप्तः. —^b) G₁ M₁ 2
 पांचाल्यः (for पार्षतः). Ś₁ K₁ 2 D₂ 4.5.8 पुरुषाक्षरं.
 —^c) K₃ 4 B Dc₁ Dn₂ D₂ 3.8 T G₂-4 संरब्धः; M₃-5
 संकुद्धः (for संरब्धः). —^d) Dn₁ M₃-5 संकुद्धं (for
 'दः'). M₃-5 प्रदहन् (for प्रहसन्). D₅ क्रोधेन प्रह-
 न्वचः.

21 Before 21, MSS. ins. दृष्टुंश्च उवाच. —^a)
 Dn₂ S (G₅ missing) चापि (for चेति). —^b) K₁
 D₁ 5 क्षिप्य (D₁ 'न्ये')ते; D₁ गम्यते; M₃-5 क्षाम्यते
 (for क्षम्यते). B₁ T G₂-4 M₃ चापि (for चेति). D₅
 क्षाम्यते क्षाम्यतेति च; G₁ M₁ 2 क्षाम्यते च पुनः पुनः.
 —^c) D₅ न चाचार्यः; D₅ असज्जनो; S (G₅ missing)
 सर्वानार्यः (for न चानार्य). K₁ [s]जुमः. B Dc₁ Dn₁
 D₂ 4.5 सदानार्योऽजुमः साधुं (Dc₁ Dn₁ D₂ 'भः साधु-
 D₁ 'मं साधु-; D₅ 'मं साधुं). Dn₂ corrupt. —^d)
 Dn₂ lacuna; M₃ परुषं (for पुं). K₄ D₅ अर्हति;
 B Dc₁ Dn D₅ S (G₅ missing) इच्छति (Dn₁ 'सि')
 (for अर्हति).

22 ^a) Ś₁ K₃ प्रशंस्यते (for प्रशं).

C. 7. 8153
B. 7. 198. 17
K. 7. 192. 28

स त्वं क्षुद्रसमाचारो नीचात्मा पापनिश्चयः ।
आ केशाग्रात्राग्रात्राच वक्तव्यो वक्तुमिच्छसि ॥ २३
यः स भूरिश्रवाश्छिन्ने भुजे प्रायगतस्त्वया ।
वार्यमाणेन निहतस्ततः पापतरं नु किम् ॥ २४
व्यूहमानो मया द्रोणो दिव्येनास्त्रेण संयुगे ।
विमुष्टश्चो निहतः किं तत्र क्रूर दुष्कृतम् ॥ २५
अयुध्यमानं यस्त्वाजौ तथा प्रायगतं मुनिम् ।
छिन्नबाहुं परैर्हन्त्यात्सात्यके स कथं भवेत् ॥ २६

निहत्य त्वां यदा भूमौ स विक्रामति वीर्यवान् ।
किं तदा न निहंस्येनं भूत्वा पुरुषसत्तमः ॥ २७
त्वया पुनरनार्येण पूर्वं पार्थेन निर्जितः ।
यदा तदा हतः शूरः सौमदत्तिः प्रतापवान् ॥ २८
यत्र यत्र तु पाण्डूनां द्रोणो द्रावयते चमूम् ।
किरञ्जरसहस्राणि तत्र तत्र प्रयास्यहम् ॥ २९
स त्वमेवंविधं कृत्वा कर्म चाण्डालवत्स्वयम् ।
वक्तुमिच्छसि वक्तव्यः कस्मान्मां परुषाण्यथ ॥ ३०

23 ^a) T G₂₋₄ त्वं (for स त्वं). D₈ स त्वं
क्षुद्रस्त्वमर्यादो. — ^b) B₁ दीनात्मा (for नीचात्मा). K₁
D₁ पूरुषः (for -निश्चयः). — ^c) K₁ D₁ नखाग्राश्च; S
(except G₂; G₅ missing) 'चैव' (for 'ग्राच'). D₃
आ केशाच नखात्वाच. — ^d) D₁ वक्तव्यं (for 'व्यो'). S
K (K₅ missing) D₁ अहंसि (for हृच्छसि). — After
23, S (-G₅ missing) ins.:

1389* वरं हि ते मृतं पाप न च ते वृत्तमीदृशम् ।
श्रोतुं वक्तव्यतामूलं नीचा वक्ष्यन्ति मानवाः ।
पराश्रिपन्ति दोषेण स्वेपु दोषेष्वदृष्टयः ।

[(L. 1) G₁ M₁₋₂ २ परं (for वरं). G₄ ये (for ते).
T G₂ मतिः; G₃ ४ मृतिः; M₃ ४ ५ (marg. as above)
कृतं (for मृतं). T G₁ २ M₃₋₅ पापं (for पाप). G₁ M₁ २
क्षुद्रजीवितं; G₃ ४ वि (G₁ वि) तन्मीदृशं (for वृत्तं). — (L.
2) M₁ वक्तव्यतो मूलं. T G₁₋₄ M₁ (before corr.) २
नीचा (G₃ निरा) चारं च (G₁ M₁ २ 'राश्च' मानवाः (T G₂
'वान्') (for the post. half).]

24 ^a) B₁₋₄ D₁ D₃ S (G₅ missing) यत् (for
यः). G₁ M₁ २ च (for स). K₄ B₅ D₁ D₃ यः स
(D₁ यत्स) भूरिश्रवाश्छिन्न. — ^b) K₄ B D₁ D₃
-भुजः; D₂ २ -भुजः; D₃ भुजि (for भुजे). After
भुजे, D₂ reads 26^{ab} for the first time, repeat-
ing it in its proper place. D₂ om. from प्रायगत
up to नु किम् (in 24^d). D₁ T G₃ प्रायो (for
प्राय-). — ^c) K₄ D₂ हि (for नि-).

25 ^a) K₃ ग्राहमानो; D₈ G₁ M युध्यमानो; T G₃ ४
प्रेषमाणो; G₂ घोषमाणे (for व्यूहमानो). M₃ ततो
(for मया). — ^b) S (G₅ missing) दिव्यान्वास्त्राणि
संयुगे. — ^c) B₅ निस्त्र- (for वि'). D₁ D₃ हि
(for नि). S K₁₋₃ D₁ ४-५ विस्त्रय (K₃ D₁ ३ 'सर्ज्य'
श (S₁ K₃ चा) स्त्राणि हतः. — ^d) D₁ तत्र किं (by

transp.); D₁ तच्च किं. K₁ B₅ G₂ दुष्करं (for
दुष्कृतम्).

26 D₁ om. 26-38. D₂ reads 26^{ab} for the first
time after भुजे (in 24^b). — ^a) B₅ युयुद्धमानः; M₁
अवुध्य' (for अयुद्ध'). D₈ यत्वाजौ; D₈ न्यस्तासि; M₅
यत्वाजौ (for यस्त्वाजौ). — ^b) S₁ K₁ २ D₁ ७ ३ T
G₃ ४ यथा (for तथा). D₁ पार्थगतं (for प्राय').
— ^c) D₈ परं; D₁ ३ मृधे; T G₃ शरैर् (for परैर्).
S K₁ ३ T G₃ M₁ हन्याः (for हन्यात्). — ^d) S₁ K₃
सात्यके (sic). S₂ वदेः; B D₁ D₂ T वदेत् (for
भवेत्). D₁ D₈ स भवेत्क्षुद्रवातकः.

27 D₁ om. 27 (cf. v. 1. 26). — ^a) M₃₋₅ निपात्य
(for निहत्य). S₂ K₁ २ G₁ M₁ २ त्वा (for त्वां).
S₁ K₃ T M₁ ३ यथा; K₄ B₁ (marg. as in text) २.
३ ५ D₁ D₃ पदा (for यदा). D₈ निहंतास्त्वां पुन-
र्भूमौ. — ^b) B D₁ D₃ S (G₅ missing) विकर्षति;
D₃ विक्रमति; D₈ विकीर्षति (for विक्रामति). — K₂
om. (hapl.) 27^c-28^d. — ^c) S₁ M₃₋₅ विहंस्येनं; S₂
निहिं' (for निहं'). D₁ ३ किं तदानीं न हिंस्येनं. — ^d)
B₁ ५ D₈ G₄ -सत्तम.

28 K₂ D₁ om. 28 (cf. v. 1. 27, 26). — ^a) D₂
om. नार्येण up to चमूम् (in 29^b). — ^d) D₂ ५ ६
G₂ सोमदत्तिः.

29 D₁ om. 29 (cf. v. 1. 26). D₂ om. 29^{ab}
(cf. v. 1. 28). — ^a) D₁ D₃ तत्र (for the
second यत्र). D₁ [ह]ति; D₃ ५ ६ च; D₈ हि (for
तु). — ^b) D₁ ३ [स]मिद्रवते; G₃ ४ [स]यं (G₄ चं)
क्रमते (for द्रावयते). D₁ चमूः. — ^d) D₃ चरामि;
D₈ G₁ M व्रजामि (for प्रयासि).

30 D₁ om. 30 (cf. v. 1. 26). — ^a) D₁ एवंघनं
(sic) (for 'विघं'). — ^b) S K₁ २ ४ D₁ पापं (for कर्म)

कर्ता त्वं कर्मणोग्रस्य नाहं वृष्णिकुलाधम ।
 पापानां च त्वमावासः कर्मणां मा पुनर्वद् ॥ ३१
 जोषमास्व न मां भूयो वक्तुमर्हस्यतः परम् ।
 अधरोत्तरमेतद्धि यन्मा त्वं वक्तुमिच्छसि ॥ ३२
 अथ वक्ष्यसि मां मौख्याद्भूयः परुषमीदृशम् ।
 गमयिष्यामि बाणैस्त्वां युधि वैवस्वतक्षयम् ॥ ३३
 न चैवं मूर्ख धर्मेण केवलेनैव शक्यते ।
 तेपासपि ह्यधर्मेण चेष्टितं शृणु यादृशम् ॥ ३४
 वञ्चितः पाण्डवः पूर्वमधर्मेण युधिष्ठिरः ।

द्रौपदी च परिक्लिष्टा तथाधर्मेण सात्यके ॥ ३५
 प्रवाजिता वनं सर्वे पाण्डवाः सह कृष्णया ।
 सर्वस्वमपकृत्यं च तथाधर्मेण बालिश ॥ ३६
 अधर्मेणापकृत्यं मद्राजः परैरितः ।
 इतोऽप्यधर्मेण हतो मीधमः कुरुपितामहः ।
 भूरिश्रवा ह्यधर्मेण त्वया धर्मविदा हतः ॥ ३७
 एवं परैराचरितं पाण्डवेयैश्च संयुगे ।
 रक्षमाणैर्जयं वीरैर्धर्मजैरपि सात्वत ॥ ३८
 दुर्ज्ञेयः परमो धर्मस्तथाधर्मः सुदुर्विदः ।

C. 7. 9170
B. 7. 198. 44
K. 7. 198. 46

K1.2 G1.2.1 M चंडालवत्; Ds स्व[ध]पच (for चाण्डाल-
 ल). — °) Dn1 Ds धर्मज्ञ (Ds 'ज्ञस्य'); Ds वक्तव्यं
 (for 'व्यः'); S K1-3 D1 वक्तुमिच्छ (S1 Ks वक्तुमर्ह-; K2
 कर्तुमिच्छ) व्यवक्तव्यं; D1.3 वक्तुमर्हसि किं वाक्यं. — °)
 Ds तस्मान् (for कं). G1 M1.2.4.5 सु-; M3 स-;
 Bom. ed. त्वं (for मां). K1 पुरुषाणि. Ds कस्मान्मा
 पुरुषान्यथा; D1.3 प (Ds पु) रूपं च सुदुर्लभः; T G2-4
 कस्मात्सु (G2 'स्मात्का') पुरुषो यथा.

31 Ds om. 31 (cf. v. l. 26). — °) Ks Dc1 Dn2
 ह्यस्य; B3 Ds.1.3 यस्य; B4 [s]मेत्यस्य; Ds [s]ज्यस्य
 (for [z]ग्रस्य). B5 कर्ता कर्मणा उग्रस्य (sic). — °) S2
 K1.2 D1 T G1-4 M1.2 transp. पापानां and कर्मणां (G1
 M1.2 कष्टानां). Ks कर्मणां च; M3-5 कुस्तितानां (for
 पापानां च). K1 मां (for मा). B (except B2) Dn1
 D1.3 G1.2 M पुनर्वदीः; Ds 'वदीः' (for 'वद').

32 Ds om. 32 (cf. v. l. 26). — °) B1.3 योष-
 मास्व; B5 जोषमानो (for 'मास्व'). S (except G2;
 G5 missing) मा (for मां). Dn1 Ds जोषमाचर मा
 भूयो. — °) Dn1 Ds.3 S (G5 missing) वक्तुमर्हस्वसु-
 त्तरे. — °) G1 M मां (for मा). S K1-4 B Dc1
 Dn2 D1.2.5 T G2-4 अर्हसि (for इच्छसि). D1.3
 यन्मां वक्तुमिच्छसि.

33 Ds om. 33 (cf. v. l. 26). — °) Dn1 वक्ष्यामि
 (for वक्ष्यसि). K1 G1 M1.2 मा (for मां). Dn1
 Ds transp. मौख्याद् and भूयः. Ds भूयाः (for भूयः).
 K2 Ds-1 G1 पुरुषम् (for पं). — Ks om. (hapl.)
 33°-34°. — °) G1 M1.2 त्वा (for त्वां). Dn1 Ds
 प्रेषयिष्यामि बाणैस्त्वाम्. — °) Dn2 D2.5 युद्धे (for
 युधि). Dn1 Ds अद्यैव यमसादनं.

34 Ks Ds om. 34 (cf. v. l. 33, 26). — °)

B1-4 Dc1 Dn D1.2.5.7.8 S (except M3; G5 missing)
 चैवं; B5 चैव (for चैव). Ds न चैतत्पूर्वधर्मेण. — °)
 B1 Dn1 Ds [इ]ह (for [ए]व). — °) S K1-3 D1
 शक्यतेपि; Dn2 Ds.1.3 एषामपि (for ते). Ds
 एषामपि स्वधर्मेण.

35 Ds om. 35 (cf. v. l. 26). — °) D1.3 T G2.4
 विजितः (for वञ्चितः). S1 K1 वञ्चिताः पाण्डवाः पूर्वम्.
 — °) K1 परिक्लिष्टा; G4 'क्लिष्टा' (for 'क्लिष्टा'). — °)
 B1 [ज]स्येन (for [ज]धर्मेण).

36 Ds om. 36 (cf. v. l. 26). — °) Ds.1.3
 वने; M3-5 वयं (for वनं). — °) Dn1 Ds राज्यमप्य-
 पकृत्यं च.

37 Ds om. 37 (cf. v. l. 26). — °) S2 शल्य
 राजा; K1 Ds मद्राजा. S2 परैर्वृतः; K2 B5 Ds परै-
 रितः; Ds परैरपि; Ds 'रिति'; G2 पराजितः (for परै-
 रितः). — After 37°, N (Ds om.; Ks missing)
 ins.:

1390* अधर्मेण तथा बालः सौमद्रो विनिपातितः ।

[Ks om. पातितः.]

— Ks om. 37°-38°. — °) D1 ततो; D1.3 S (G5
 missing) अतो (for इतो). — °) B Dc1 Dn1 Ds S
 (G5 missing) सीधमः परपुरंजयः. — °) Ds अधर्मेण;
 G1 M1.2 [ज]प्यं (for ह्य). Dn1 Ds भूरिश्रवास्त्व-
 धर्मेण. — °) Ds त्वया धर्मं विहाय सः.

38 Ds om. 38 (cf. v. l. 26). Ks om. 38° (cf.
 v. l. 37). — °) B5 एवं पुरैवाचरितं. — °) B (except
 B5) Dc1 Ds T G2-4 पाण्डवैश्चैव संयुगे. — °) S2 K1
 Ds Gs M रक्षमाणैर् (S2 'यं'). — °) S (G5 missing)
 जय (for जयि). B5 मानवः; Dn2 सत्वत (for सां).

C. 7. 9170
B. 7. 198. 45
K. 7. 199. 46

युध्यस्व कौरवैः सार्धं मा गाः पितृनिवेशनम् ॥ ३९
एवमादीनि वाक्यानि क्रूराणि पुरुषाणि च ।
श्रावितः सात्यकिः श्रीमानाकम्पित इवाभवत् ॥ ४०
तच्छ्रुत्वा क्रोधताम्राक्षः सात्यकिस्त्वाददे गदाम् ।
विनिःश्वस्य यथा सर्पः प्रणिधाय रथे धनुः ॥ ४१
ततोऽपिपत्य पाञ्चाल्यं संरम्भेणेदमब्रवीत् ।
न त्वां वक्ष्यामि परुषं हनिष्ये त्वां वधक्षमम् ॥ ४२
तमापतन्तं सहसा महाबलममर्षणम् ।
पाञ्चाल्यायामिसंकुद्धमन्तकायान्तकोपमम् ॥ ४३

39 °) D1. s M4 दुर्जयः (for दुर्जेयः). K4 Dn2 D2. 4. s स परो (for परमो). Dn1 D3. 6 दुर्विज्ञेयः परो धर्मस. — °) D4. s महात्मा (D5 'म')नः (for तथा धर्मः). K2 B Dc1 Dn1 D2. 4. 6-8 G1 M च (K2 D4 स) दुर्विदः; T G2-4 चतुर्विधः (for सुदुर्विदः). — °) D7. 8 युध्यश्च (sic) (for युध्यस्व). S2 पांडवैः (for कौरवैः). — After 39, S2 B5 ins. an addl. colophon.

40 Before 40, MSS. ins. संजय उवाच. — °) M4 कर्माणि (for वाक्यानि). — °) D4. 7. 8 पुरुषाणि (sic) (for प). — °) D2 अब्रवीत् (for श्रावितः). — °) K4 D1. 4-6 G2 अ (D1. 6 स) कंषित.

41 B3. s read 41^{ab} twice. — °) M4. s (sup. lin.) इत्युक्तः (for तच्छ्रुत्वा). — °) Dn D2-5. 7. 8 च (for तु). S1 K3 [आ]दधे (for 'दे'). — °) S K1-3 D1 विनिःश्वसन्; Dc1 Dn1 D3. 5. 8 विनिःश्वस्य; D7 विनिःश्वस्य (sic). — °) D5 प्रविधाय (for प्रणि). D6 पार्पतोप्याददे गदां.

42 °) D4. 5. 7. 8 [s]मिपद्य (for 'त्व'). D1-6 पांचाल्यः. — °) S2 संरम्भेन; B5 संरुधेन. — °) S2 K1. 2 S (G4 missing) त्वा (for त्वां). K2 D7 पुरुषं; D4 पौ (for प). D5 न त्वाक्षामिति परुषं (sic). — °) Dn1 D6 वधिष्ये (for हनिष्ये). K2 T G1. 2 M त्वा (for त्वां). D5 नराधमं (for वधक्षमम्).

43 °) S2 वेगेन (for सहसा). — °) G1 M महाबाहुम् (for 'बलम्'). B1 Dc1 अमर्षितं (B1 'ण') (for 'र्षणम्'). — °) Dn1 D4. 5 पांचाल्यम्; M5-5 लाय (for 'स्याय'). D5 संकुद्धः. — °) Dn1 D7. 8 स्रुत्यु (Dn1 'स्रु') कालांतकोपमं; G2. 4 M5-5 अंतकाले (G3 'लां')त.

44 °) D3-8 नोदितो (for चो). — °) D4 समवाकरत्; D5 धारयत्; G1 M1. 2 पर्यवारयत् (for सम).

चोदितो वासुदेवेन भीमसेनो महाबलः ।
अवप्लुत्य रथाचूर्णं बाहुभ्यां समवारयत् ॥ ४४
द्रवमाणं तथा कुद्धं सात्यकिं पाण्डवो बली ।
प्रस्कन्दमानमादाय जगाम बलिनं बलात् ॥ ४५
स्थित्वा विष्टभ्य चरणौ भीमेन शिनिपुंगवः ।
निगृहीतः पदे पष्ठे बलेन बलिनां वरः ॥ ४६
अवरुह्य रथात्तं तु हियमाणं बलीयसा ।
उवाच श्लक्ष्णया वाचा सहदेवो विशां पते ॥ ४७
अस्माकं पुरुषव्याघ्र मित्रमन्यन्न विद्यते ।

45 °) S2 B5 ततः (for तथा). D7. 3 T G1-4 M5-5 कुद्धः. B1-4 M1. 2 द्रवमाणस्तथा कुद्धः. — °) B1-4 D7. 3 सात्यकिः पांडवं बली; T G2 पांडवः सात्वतं बली; G1 3. 4 M पांडवं सात्वतो बली. — °) K3 B3 Dc1 Dn2 D2. 3 S (G4 missing) प्रस्कंदमानम्; Dn1 प्रस्कंद**म्; D5 प्रास्कंदमानम्. — °) D5 जग्राह (for जगाम). B4 भुवि; B5 महत्; D6 M5-5 बली (for बलात्). D3 जग्राह बलिनां बली.

46 °) D3 छित्त्वा (for स्थित्वा). — °) K1 D4. 7. 8 शनिपुंगवः (for शिनि). Dn1 D6 भीमसेनेन वै तदा. — °) D7. 8 निगृहीतं. — °) D5 रथिनां (for बलिनां). — After 46, Dn1 D6 ins. :

1391* तथापि भीमादास्मानमामुच्य बलिनोच्छ्रितः ।
जगामानिलवेगेन भीममुन्मुच्य माधवः ।
भीमेनायाशु महता वेगमास्थाय मध्यमम् ।
विष्टभ्य विष्टतो दर्पात्सात्यकिर्दशमे पदे ।

[(L. 1) D6 [s]च्युतः (for [ज]च्छ्रितः). — (L. 3) D6 [अ]पि (for [अ]य). — (L. 4) Dn1 *क्ष्यात् (for दर्पोत्).]

47 °) Dn2 G2 अवप्लुत्य (for 'रुह्य'). B D2 तूर्णं; D4 तं तु (for तं तु). Dn1 D6 अनिवार्यं रथं तं तु; T G1. 3. 4 M1. 2 अवरुह्य (T 'थ्य [sic]') बलात्तं तु. — °) K4 B Dc1 Dn2 D2-5. 7. 8 धि (D3. 5 धी) यमाणं (for हिय).

48 °) Dn2 अन्यत्र (for अन्यन्न). — K1 om. (hapl.) 48°-49°; B3 reads the same on marg. — °) Dn1 D6 तुल्यम् (for परम्). — °) B3 D2 पंचालेभ्यश्च; Dn2 D2. 3 पांचाल्ये. S K3 परंतपः; K2 च सात्वतः; K4 Dn2 D1-5. 7. 8 च मारिषः; Dn1 D6 च

परमन्धकवृष्णिभ्यः पाञ्चालेभ्यश्च साधव ॥ ४८
 तथैवान्धकवृष्णीनां तव चैव विशेषतः ।
 कृष्णस्य च तथासक्तो मित्रमन्यन्न विद्यते ॥ ४९
 पाञ्चालानां च वाष्पेय समुद्रान्तां विचिन्वताम् ।
 नान्यदस्ति परं मित्रं यथा पाण्डवकृष्णयः ॥ ५०
 स भवानीदृशं मित्रं मन्यते च यथा भवान् ।
 भवन्तश्च यथास्माकं भवतां च तथा वयम् ॥ ५१
 स एवं सर्वधर्मज्ञो मित्रधर्ममनुस्मरन् ।
 निचच्छ मन्युं पाञ्चाल्यात्प्रशाम्य शिनिपुंगव ॥ ५२

पार्षतस्य क्षम त्वं वै क्षमतां तव पार्षतः ।
 वयं क्षमयितारश्च किमन्यत्र शमाद्भवेत् ॥ ५३
 प्रशाम्यमाने शैनेये सहदेवेन मारिष ।
 पाञ्चालराजस्य सुतः प्रहसन्निदमब्रवीत् ॥ ५४
 मुञ्च मुञ्च शिनेः पौत्रं भीम युद्धमदान्वितम् ।
 आसादयतु मामेप धराधरमिवानिलः ॥ ५५
 यावदस्य शितैर्बाणैः संरम्भं विनयाम्यहम् ।
 युद्धश्रद्धां च कौन्तेय जीवितस्य च संयुगे ॥ ५६
 किं तु शक्यं मया कर्तुं कार्यं यदिदमुद्यतम् ।

C. J. 9103
B. 7. 190. 62
K. 7. 199. 64

मानद (for च साधव).

49 K1 om. 49 (cf. v. 1. 48). B3 reads 49 on marg. —^δ B Dc1 Dn2 D4.5 तथैव च; D2 तत्रैव च (for तव चैव). —^ε Dn यथासम्भ्यं (Dn2 'त्तो'); D2.4-6 G1-4 M1.2 तथा (D5 न चा)सम्भ्यो (D6 'भ्यं'); M3-5 समोस्माभिः (M3 'सम्भ्यो'; M5 [inf. lin.] 'सम्भ्यं') (for तथासक्तो).

50 ^a Bom. ed. पंचालानां. D5 तु (for च). —^δ S K1-3 B1 Dn2 D1.6-8 समुद्रान्तं. T1 G1.4 M1.2 विचिन्वित् गां; T2 G2.3 M3.5 विचिन्वित् गां; M4 lacuna (for विचिन्वित्ताम्).

51 ^a S K (K5 missing) D1 तथा त्वम्; Dn2 D1.5.7.8 यथा त्वं (Dn2 त्वा)म् (for स भवान्). G2-4 भवतोयं परं मित्रम्. —^δ Dn2 D1 तथा (for यथा). D5 तथा (for भवान्). B Dc1 T G1-4 M1.2 अस्त्यैव (B1-4 Dc1 'प') च तथा तव (T G2-4 भवान्); Dn1 D6 तव चैव तथा वयं; M3-5 अस्त्यैव भवतस्तथा. —^ε T G2-4 भवतश्च (for भवन्तश्च). Dc1 Dn1 D5 S (except G4; G5 missing) तथा (for यथा). —^d S K1.2 Dn2 D1.5.8 (sup. lin. as in text) M4 यथा वयं; D1 यथातथ्यं (for तथा वयम्).

52 Before 52, G2 ins. छट्टयुञ्जः. —^a D1 त्वमेव; D5 त्वमेव; G4 स एव (for स एवं). K4 B Dc1 Dn1 D2.5.6 धर्मज्ञ (B3.4 'ज्ञ') (for 'ज्ञो'). D4 वयं स एव धर्मज्ञ. —^δ Dn1 D5 सर्वं (for मित्रं). —^ε G2 om. 52^a-54^a. —^ε Dn2 D2-5.7.8 M3-5 पांचाल्ये (D1.5.7.8 'ल्य') (for 'ल्यात्'). —^d G1 M1.2 प्रशाम्यं. K1 Dn1 D4.7.8 M1.2 ज्ञ (Dn1 M1.2 शि) निपुंगवः.

53 G2 om. 53 (cf. v. 1. 52). —^a G1 M1.2.5

(before corr.) क्षमस्व त्वं. —^δ K2.3 Dn1 D3.4 क्षम्यतां. S2 K1.2.4 Dn1 D1.3 चापि; Dn2 D2.4-5 S (G2 om.; G5 missing) चैव (for तव). B Dc1 क्षमतां पार्षतश्च ते. —^ε Dn1 M3-5 क्षामयितारश्च. —^d B1.4 Dc1 D3.6 अन्यतु (D3 'द्वा'); Dn1 अन्यत्प्र- (for 'त्र').

54 G2 om. 54 (cf. v. 1. 52). —^δ Dn1 D5 M3.5 पार्षतः (for मारिष).

55 ^a D4.7 शनैः (for शिनेः). Dn1 G1.2 M1.2 पुत्रं (for पौत्रं). —^δ Dn2 om. from युद्ध up to कौन्तेय (in 56^a). D3 मुदान्वितं; D5 'गदा' (for 'मदा'). G1 भीमसेन मुदान्वितं. —^ε B1 एव (for एष). —^d B1 T G3.4 धराधरम्. K4 Dc1 G1 M1.2 [ज]चलं (for [अ]निलः). S K1-3 Dn1 D3.6 M4 धा- (S2 K1.2 M4 ध)राधर इवाचलं; D4.5.7.8 धाराधर-मिवाचलं (D1 'लः').

56 Dn2 om. 56^a (cf. v. 1. 55). —^a D1 यादवस्य (metathesis) (for यावदस्य). D4.7.8 सितैर्; D5 शतैर्. Dn1 D5 मल्लैः (for बाणैः). —^δ S K1.2.4 D1.3.7.8 नाशयामि; Dn1 D2.4-5 पातं (for विनं). —^ε D3 हि (for च). —^d K2.4 B Dc1 Dn2 D1.2 जीवितं चास्य संयुगे.

57 D1 om. (hapl.) 57^a-58^a. Dn1 reads 57^a twice. —^a S K1-3 Dn1 (both times) D3 किं तु; Dc1 किमु; D2 किं न; D4 किं च; D5 किं सु (for किं तु). —^δ Dn1 (both times) D5 तत्कार्यम्; S (G5 missing) यत्कार्यम् (by transp.). K1 उद्यतं (sic); D2 G2 उत्तमं; D1-6.8 उच्यतां; G3 उद्युतं (for उद्यतम्). —^ε Dn2 स्वमहत् (for सुं). —^d B1.2 Dc1 [ए]व (for [ए]ते). Dn1 D5 च; G1 M [स]पि (for हि).

C. 7. 9189
B. 7. 190. 63
K. 7. 199. 64

सुमहत्पाण्डुपुत्राणामायान्त्येते हि कौरवाः ॥ ५७
अथ वा फल्गुनः सर्वान्वारयिष्यति संयुगे ।
अहमप्यस्य मूर्धानं पातयिष्यामि सायकैः ॥ ५८
मन्यते छिन्नबाहुं मां भूरिश्रवसमाहवे ।
उत्सृजैनमहं वैनमेप मां वा हनिष्यति ॥ ५९
शृण्वन्पाञ्चालवाक्यानि सात्यकिः सर्ववच्छ्वसन् ।

भीमबाह्वन्तरे सक्तो विस्फुरत्यनिशं वली ॥ ६०
त्वरया वासुदेवश्च धर्मराजश्च भारिप ।
यत्नेन महता वीरौ वारयामासुस्ततः ॥ ६१
निवार्य परमेष्वासौ क्रोधसंरक्तलोचनौ ।
युयुत्सवः परान्संख्ये प्रतीयुः क्षत्रियर्षभाः ॥ ६२

इति श्रीमहाभारते द्रोणपर्वणि एकोनसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १६९ ॥

१७०

संजय उवाच ।

ततः स कदनं चक्रे रिपूणां द्रोणनन्दनः ।

युगान्ते सर्वभूतानां कालसृष्ट इवान्तकः ॥ १
ध्वजद्रुमं शस्त्रशृङ्गं हतनागमहाशिलम् ।

58 D₁ om. 58^{ab} (cf. v. l. 57). — ^a) Ś₁ अथाहः
Ś₂ यथेना[न]; K₁. 2 D₁ अथैनान् (for अथ वा). K₃. 4
B D (D₁ om.) फाल्गुनः. — ^b) Ś₂ K₁. 2. 4 कौरवान्
(for संयुगे). — ^c) M₃-s संयुगे (for सायकैः).

59 ^{ab}) D₁ बाहुभ्यां (for बाहुं मां). M₃-s किं
मन्यसे छिन्नबाहुं मां भूरिश्रवसं सृधे. — ^c) D₁ D₂
विस्त्रज (for उत्सृज). D₂. 6 [ए]तम् (for [ए]नम्).
K₄ B (except B₁) D (except D₁ D₂) T G₂ M₃-s
च (for वा). D₁ [ए]व (for [ए]नम्). — ^d) Ś K₃ B
D₁ D₁. 3 G₁ वा मां (by transp.); K₁. 2 वा मा;
D₄. 5 मा वा; G₂ वा*.

60 ^a) D₁ D₂ श्रुत्वा (for शृण्वन्). D₁ पांचाल्य.
— ^c) B₁. 2. 5 D₁ D₂. 4 शक्तो (for सक्तो). — ^d)
D₁ D₂ प्रस्फुरति; G₁. 4 M विष्कु* (for विस्कु*). S
(G₂ missing) बलात् (for वली). — After 60, N
(except D₂ D₃; K₃ missing) ins.:

1392* तौ वृषाविव नर्दन्तौ बलिनौ बाहुशालिनौ ।


[K₁-3 नर्दन्तौ (for नर्दन्तौ). D₂ धन्विनौ बलशालिनौ
(for the post. half).]

61 ^{ab}) D₁ D₂ S (G₂ missing) तौ त् G₂ तत्त्वं
(for स्वरया). D₁ D₂ transp. वासुदेवश्च and धर्म-
राजश्च. — ^c) D₃ सुमहा (for महता). D₁ तृणं
(for वीरौ). — ^d) K₄ B₁ D₁. 6 S (G₂ missing)
तदा; D₂ D₂. 4. 5. 7. 8 शृणं (for ततः).

62 ^a) G₁ निवार्य तौ महेश्वासौ. — ^b) K₃. 4 B D₁
D₁ D₁. 6 G₂ कोप- (for क्रोध-). — ^c) D₁ D₂ पुनः
(for परान्). G₁ M₁. 2. 4 संखे (for संख्ये). B₂ युयु-
त्सुनपरान्संख्ये. — ^d) D₂ प्रतीयुः पुरुषर्षभाः.

Colophon om. in Ś₂ K₁. 2; K₅ G₂ missing. — Sub-
parvan : B₁. 3 (marg.) नारायणास्त्रमोक्ष. — Day of
Drona's Generalship : K₄ पंचमदिवसयुद्धे; D₁ G₁
पंचमेहनि; M₁. 2 पंचमेहि. — Adhy. name : D₁ छट-
द्युन्नसाल्यक्योः परस्परं कोपवाक्यानि; Bom. ed. छटद्युन्न-
साल्यकिक्रोधः. — Adhy. no. (figures, words or both):
D₁ 199; D₂ 100; D₃ 92; T G₂. 3 193; G₁
M₁. 2 192; G₂ 194; M₃. 4 191; M₅ 2[1]91.
— Śloka no. : D₁ 70.

170

 This adhy. is missing in K₅ G₂ (cf. v. l. 7.
125. 14; 137. 9).

1 — ^a) D₃ च (for स). — ^b) D₃ शत्रूणां (for
रिपूणां). — ^c) G₂ damaged. D₁ D₁ कालसूर्य;
D₂ क्रुदः काल (for कालसृष्ट).

2 D₂ transp. 2^a and 2^b. — ^a) D₁. 3 रथ- (for
शस्त्र-). D₁ (marg. sec. m.) D₁ संघे; D₂. 4. 5 शंखं
(for शृङ्गं). D₂ शस्त्रशृङ्गध्वजद्रुमं. — ^b) Ś₁ K₃ महो (K₃
हा) पले; D₁. 5. 7. 3 महाशालं (sic); D₂ महाशैलं (for
शिलम्). — ^c) G₂ रथाधपुरुषाकीर्णं. — ^d) D₂ सम-

अश्वकिंपुरुषाकीर्णं शरासनलतावृतम् ॥ २
 शूलकन्यादसंघुष्टं भूतयक्षगणाकुलम् ।
 निहत्य शात्रवान्भलैः सोऽचिनोदेहपर्वतम् ॥ ३
 ततो वेगेन महता विनद्य स नरर्षभः ।
 प्रतिज्ञां श्रावयामास पुनरेव तवात्मजम् ॥ ४
 यस्माद्युध्यन्तमाचार्यं धर्मकञ्चुकमास्थितः ।
 मुञ्च शस्त्रमिति प्राह कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः ॥ ५
 तस्मात्संपश्यतस्तस्य द्रावयिष्यामि बाहिनीम् ।
 विद्राव्य सत्यं हन्तास्मि पापं पाञ्चाल्यमेव तु ॥ ६

सर्वानेतान्हनिष्यामि यदि योत्स्यन्ति मां रणे ।
 सत्यं ते प्रतिजानामि परावर्तय बाहिनीम् ॥ ७
 तच्छ्रुत्वा तव पुत्रस्तु बाहिनीं पर्यवर्तयत् ।
 सिंहनादेन महता व्यपोह्य सुमहद्भयम् ॥ ८
 ततः समागमो राजन्कुरुपाण्डवसेनयोः ।
 पुनरेवाभवत्तीव्रः पूर्णसागरयोरिव ॥ ९
 संख्या हि स्थिरीभूता द्रोणपुत्रेण कौरवाः ।
 उदग्राः पाण्डुपाञ्चाला द्रोणस्य निधनेन च ॥ १०
 तेषां परमहृष्टानां जयमात्मनि पश्यताम् ।

C. 7. 8205
 B. 7. 199. 11
 K. 7. 270. 11

वृत्तं; T Gs. 1 लतायुतं (for लतावृतम्).

3 ^a) Dn2 D2 बलः; D1.5 बलं; D3 छद्मः; D7.3 बह्वः; T G2-1 स्थूलः; G1 M पत्ति (for शूलः). K4 संघुष्टं (sic); Dn2 संघुष्टं; D3 संघुष्टं; D1.7.8 T G1 संघुष्टं; G2 संघुष्टं (for 'ष्ट'). B Dc1 Dn1 क्रव्यादपक्षिसंघुष्टं. — ^b) D3 पक्षिः; G3 damaged (for यक्षः). Dc1 Dn1 गणावृतं; D3 G1 M1.2 समाकुलं; G3 damaged (for गणां). — ^c) G3 damaged (for निहत्य). — ^d) K1 संचिनोद् (for सोऽचिं).

4 ^b) S (G3 missing) transp. विनद्य and स. B3 G2 स नरर्षभः; Dn2 D2.4.7.8 भरतर्षभः; D3 पुरुषर्षभः. D3 स विनद्य नरोत्तमः. — ^c) M3-5 प्रतिज्ञाः.

5 ^a) G3 partly damaged. Dn1 पश्चाद् (for यस्माद्). D3 सशस्त्रम्; G1 M3-5 संमोह्य (G1 'ह्यद्'); M1.2 संयच्छद् (for युध्यन्तम्). M3-5 चाचार्यं (for आ). T G2.4 यदत्र छद्मनाचार्यं. — D1.5.7.8 transp. 5^b and 5^c. — ^b) D4 कुञ्चकम्; D7 कुञ्चु (for कञ्चु). D2-5.7.8 आश्रितः (D3 ताः) (for आस्थितः). — ^a) B1 M3-5 धर्मः (for कुन्ती).

6 ^a) Dn2 om. from पश्य up to यो (in 7^b). — G3 om. (hapl.) 6^c-7^d. — ^c) D2.4.5.7.8 विश्राव्य (for विद्राव्य). K4 B Dc1 Dn1 D3 T G2.4 M3-5 सर्वाङ्गः; D3 सैन्यं; G1 M1.2 सर्वं (for सत्यं). — ^d) K4 B Dc1 Dn1 S (G3 om.; G3 missing) जालम् (for पापं). S2 पांचाल्यम्; G1.4 M1.2 पांचालम् (for 'ल्यम्'). D2.3.8 T G1.2.4 M1-3.5 एव च; M4 आहवे (for एव तु). D3 पांचाल्यं च कुलधर्मं.

7 Dn2 om. up to यो; G3 om. 7 (for both, cf. v. l. 6). — ^a) D3 अद्य सर्वाङ्ग (for सर्वानेतान्).

— ^b) Dn1 जोत्स्यन्ति; M3-5 ते यन्ति (for योत्स्यन्ति). G1 M मा (for मां). — ^d) K4.4 B Dc1 Dn1 D3 S (G3 om.; G3 missing) परिवर्तय; D1 प्रावर्तयत; D3 प्रतिवर्तय (for परां).

S S2 K1.2 D1 om. (? hapl.) 8^a. — ^b) D2.4.5 पर्यवर्तयत्; D3 वर्तत (for 'वर्तयत्'). S1 K3 पर्यवर्तत बाहिनीं. — ^c) D3 व्यनदत् (for व्यपोह्य). G2 M3.4 बलं (for भयम्). — After 8, G1 M (G1 M2.4 reading for the first time after 7. 168. 8) ins.:

1393* मेरीशवादायन्दष्टाः पट्टान्दुन्दुमीश्व ह ।

आडम्बरान्मृदङ्गांश्च शङ्खरीश्वानकानपि ।

मङ्गुकान्पणवान्बीणा दिण्डिमैश्च सहस्रशः ।

सर्वे चैव मदेवासा वभूवुः शङ्खान्महास्त्रान् ।

ततो ननाद वसुधा क्षुरनेमिसमाहता । [5]

स शब्दस्तुमुलः खं च पृथिवीं च व्यनादयत् ।

कुरुणामय तं शब्दं श्रुत्वा घोरं समुत्थितम् ।

पाण्डवाः सोमकैः सार्धं समपद्यन्त विस्मिताः ।

ते तु दृष्ट्वा कुरुनाजबदतो भैरवात्रवान् ।

अभ्यवर्तन्त वेगेन मृत्युं कृत्वा निवर्तन्म् । [10]

[(L. 1) G1 (both times) अवारयन् (for अवादं).]

— (L. 3) G1 (both times) मृदङ्गान् (for मृदुं).]

9 ^b) D1 सैनयोः (for 'से'). — ^c) D3 अपि (for एव). K4 D4 T G2-4 तीव्रं.

10 ^a) D1 M3 स्थिरीभूत्वा; G3 स्थि*** (for स्थिरीभूता). — ^c) S2 K1.2 D1 उदग्राः (for उदग्राः). S2 D3 पांचाल्याः; K3 पांचाला (for पाञ्चाला). — ^d) K2.4 B1 D1 तु (for च).

11 The portion of the text from 11^a to 43^d is lost

C. 7. 8105
B. 7. 109. 11
K. 7. 200. 11

संरब्धानां महावेगः प्रादुरासीद्राणाजिरे ॥ ११
यथा शिलोच्चये शैलः सागरे सागरो यथा ।
प्रतिहन्येत राजेन्द्र तथासन्कुरुपाण्डवाः ॥ १२
ततः शङ्खसहस्राणि भेरीणामयुतानि च ।
अवादन्यन्त संहृष्टाः कुरुपाण्डवसैनिकाः ॥ १३
ततो निर्मथ्यमानस्य सागरस्यैव निखनः ।
अभवत्तस्य सैन्यस्य सुमहानद्भुतोपमः ॥ १४
प्रादुश्चक्रे ततो द्रौणिरखं नारायणं तदा ।

अभिसंधाय पाण्डूनां पाञ्चालानां च वाहिनीम् ॥ १५
प्रादुरासन्ततो वाणा दीप्ताग्राः खे सहस्रशः ।
पाण्डवान्भक्षयिष्यन्तो दीप्तास्या इव पद्मगाः ॥ १६
ते दिशः खं च सैन्यं च समावृण्वन्महाहवे ।
मुहूर्ताद्भास्करस्येव राजल्लोकं गभस्तयः ॥ १७
तथापरे द्योतमाना ज्योतीर्षीवाभ्यरेऽमले ।
प्रादुरासन्महीपाल काष्णायिसमया गुडाः ॥ १८
चतुर्दिशं विचित्राश्च शतघ्न्योऽथ हुताशदाः ।

in G₂ on a missing folio. —^a) Ś₂ K_{1.2.4} B Dc₁
Dn₁ D₁ विशां पते; S (G_{2.5} missing) रणाय वै (for
जिरे).

12 G₂ missing (cf. v. l. 11). —^a) Dc₁ (by
corr.) Dn₁ D₆ शैलोच्चये; D₃₋₅ शिलोच्चयैः (for
चये). Ś K₁₋₃ D₁ शैलः; Dn शैलाः (for शैलः).
—^b) K₄ B₁ Dn₂ सागरैः; B_{2.5} D_{2-4.7.8} S (G_{2.5}
missing) रैः; D₅ रै (for रै). Ś K₁₋₃ सागरैः; B₅
D_{2.7.8} T M₃₋₅ रैः; Dn₂ राः; D₂ रैरै (for रै).
—^c) B₄ प्रतिहार्यैतः; Dn₂ D₁₋₃ हन्यत (for हन्येत).
—^d) D_{2.6} ते (for [आ]सन्).

13 G₂ missing (cf. v. l. 11). — After 13, S
(G_{2.5} missing) ins. :

1394* चुक्षुभे पृथिवी सर्वा दिशश्च प्रतिसखनुः ।
संभ्रान्तानि च भूतानि जलजान्यपि मारिष ।
ते च सर्वे तथा यौधाः संप्रहृष्टा युयुत्सवः ।
वर्तमाने तथा शब्दे रौद्रे तस्मिन्भयानके ।
संपतस्तु रथीयेषु तव तेषां च भारत । [5]

[(L. 2) T G_{2.4} [अ]पि (for च). — (L. 3) T
M₃₋₅ तदा (for तथा). T G_{2.4} यौधाः (for यौधाः).
— (L. 4) M₃₋₅ transp. शब्दे and रौद्रे. G₁ M_{1.2} युद्धे
(for रौद्रे).]

14 G₂ missing (cf. v. l. 11). —^a) Ś K (K₅
missing) Dn₂ D_{1.2.5.7.8} यथा; D₄ तथा (for ततो).
—^b) Ś reads 14^{ab} on marg. —^c) Ś K (K₅ missing)
D_{1.2.4.5.7.8} G₄ तु; D₂ स्त- (for ह्व-). MSS.
निखनः; D₄ निखलः (for निखनः). —^d) K₄ B Dc₁
Dn₁ तव; D₅ सर्व- (for तस्य). Ś₂ K_{1.2} D₁ तथा-
भूदस्य सैन्यस्य; D₆ अभ्यवर्तत सैन्यस्य. —^e) D_{7.8}
सुमहानद्भुतः स्वनः.

15 G₂ missing (cf. v. l. 11). —^a) T G_{1.2.4}

M_{1.2} तदा (for ततो). — D_{2.4.5} om. 15^{ad}. —^o)
D₆ पाण्डूना (for 'नां). —^d) B₅ D₁ पंचालानां.

16 G₂ missing (cf. v. l. 11). —^b) B₁ दीप्ता-
स्याशः; D₇ दीप्ताः; D₈ प्रदीप्ताः (for दीप्ताग्राः). B₁
Dn₂ च (for खे). —^c) K_{3.4} B Dc₁ Dn क्षपयि-
ष्यन्तो; D₇ भक्षयि (sic) (for भक्षयि). —^d) D₂
5.7.8 दीप्ताग्रा (for 'स्या). K₄ B Dc₁ Dn₁ D₆ G₁ M
पद्मगा इव (by transp.). D₄ दीप्ताग्रा इव पद्मगाः.

17 G₂ missing (cf. v. l. 11). —^a) T G_{2.4} दिवं
(for दिशः). — After 17^{ab}, D₆ ins. :

1395* ततोऽन्तरिक्षं खगमैर्नानालिङ्गैः सुभैरवैः ।

— D₆ om. 17^c-19^d. —^d) Dn₂ D₃ लोके; D₅ लोक-
(for लोकं). K₃ B Dc₁ Dn₁ S (G_{2.5} missing) लोके
राजन्गभस्तयः.

18 G₂ missing (cf. v. l. 11). D₆ om. 18 (cf. v. l.
17). D_{1.5} om. 18-19. —^a) K₁ तदा; B₅ अथ
(for तथा). —^b) B₁ Dc₁ Dn₁ D_{7.8} T G_{2.4} M₃₋₅
अमल्लेवरे (by transp.); B₂₋₄ G₁ M_{1.2} अमलाः; B₅
विमलः. D₂ ज्योतिः पीताम्बरेमले. —^c) K_{3.4} B Dc₁
Dn D₈ S (G_{2.5} missing) महाराज (for महीपाल).
—^d) Ś K_{1.2} B₁ Dn₁ D_{2.7.8} T G₄ काष्णाय (D₃ कर्णाय)-
यसमहा- (Dn₁ 'समा' (for 'मया). T G₁ M हुलाः;
G_{2.4} गुडाः (for गुडाः).

19 G₂ missing (cf. v. l. 11). D₁₋₃ om. 19 (cf.
v. l. 17, 19). D₂ om. 19. M₄ om. (hapl.) 19^{ab}.
—^a) Dn₂ चतुर्दिश- (for 'दिशं). B Dc₁ Dn₁ S (M₄
om.; G_{2.5} missing) चतुश्चक्रा द्वि (T G_{1.3.4} M_{1.2} वि-
चक्राश्च. —^b) D_{7.8} शतघ्नोर (for 'ह्यो). K₄ B₂₋₄
Dn₁ D_{7.8} बहुला गदाः; B₁ Dc₁ Dn₂ [s]थ हुला (Dn₂
'डा' गदाः; D₃ मुखला गदाः; T G_{2.4} M_{3.5} [s]थ

चक्राणि च क्षुरान्तानि मण्डलानीव भास्यतः ॥ १९
 शस्त्राकृतिभिराकीर्णमतीव भरतर्षभ ।
 दृष्टान्तरिक्षमाविद्याः पाण्डुपाञ्चालसृङ्गयाः ॥ २०
 यथा यथा ह्ययुध्यन्त पाण्डवानां महारथाः ।
 तथा तथा तदस्त्रं वै व्यवर्धत जनाधिप ॥ २१
 वध्यमानास्तथास्त्रेण तेन नारायणेन वै ।
 दह्यमानानलेनेव सर्वतोऽभ्यर्दिता रणे ॥ २२
 यथा हि शिशिरापाये दहेत्कक्षं हुताशनः ।
 तथा तदस्त्रं पाण्डूनां ददाह ध्वजिनीं प्रभो ॥ २३

आपूर्यमाणेनास्त्रेण सैन्ये क्षीयति चाभिभो ।
 जगाम परमं त्रासं धर्मपुत्रो युधिष्ठिरः ॥ २४
 द्रवमाणं तु तत्सैन्यं दृष्ट्वा विगतचेतनम् ।
 मध्यस्थतां च पार्थस्य धर्मपुत्रोऽब्रवीदिदम् ॥ २५
 धृष्टद्युम्न पलायस्व सह पाञ्चालसेनया ।
 सात्यके त्वं च गच्छस्व वृष्यन्धकयुतो गुहान् ॥ २६
 वासुदेवोऽपि धर्मात्मा करिष्यत्यात्मनः क्षमम् ।
 उपदेष्टुं समर्थोऽयं लोकस्य किमुतात्मनः ॥ २७
 संग्रामस्तु न कर्तव्यः सर्वसैन्यान्व्रवीमी वः ।

C. 7. 9222
 B. 7. 199. 28
 K. 7. 200. 30

हुडा गु (G₃ 'ळां गु)डाः (M₃ s हुळाः); G₁ M₁ s [s]थ
 सहस्रशः (for थ हुताशदाः). B₃ शतश्यासंगला गदाः.
 —^d) D₇ s G₁ च (for [इ]व). — After 19, G₁
 M₁ s ins.:

1396* पाशाश्च विविधाकारा नाराचाञ्जलिकास्तथा ।
 संपतन्तः[] स दृश्यन्ते शतशोऽथ सहस्रशः ।
 यथा युगक्षये घोरे परिभूतं जगद्भवेत् ।
 तद्वासीचदा राज्ञ्योतिर्भूतं नभःस्थलम् ।
 [(L. 3) G₁ वहिभूतं (for परि).]

20 G₂ missing (cf. v. l. 11). —^a) D₁ s अस्त्रा-
 कृतिभिर् (for शं). —^b) D₃ आसीत् (for अतीव).
 K₃ D₂ s D₁ पुरुषर्षभ. —^c) D₃ अंतरीक्षम्. —^d)
 D₁ s पंचाल- (for पाञ्चाल-).

21 G₂ missing (cf. v. l. 11). S₂ om. (hapl.)
 21^{ab}. —^a) D₃ रथा हया (for यथा यथा). K₁ s हि
 युष्यंत; T G₃ स यु (for ह्ययुध्यन्त). —^b) S₁ K₁ s
 D₁ पाण्डुपांचालसृङ्गयाः (= 20^d). —^d) D₂ व्यशीर्यत (for
 व्यवर्धत).

22 G₂ missing (cf. v. l. 11). —^a) B तदस्त्रेण;
 D₁ D₂ s तदा (for तथा). D₃ युध्यमाना यथा-
 स्त्रेण; G₁ M₁ s धक्ष्यमाणस्तदास्त्रेण. —^b) G₃ om. तेन.
 S K (K₃ missing) D₁ च; D₃ s ते (for वै).
 — After 22^{ab}, G₁ M₁ s ins. a passage given in App.
 I (No. 21). D₂ s om. 22^{cd}. —^c) S₁ B₁ D₁
 s T G₃ [अ]नलेनैव; D₃ महास्त्रेण (for [अ]नलेनेव).
 —^d) D₃ व्यथिता; M₃ s ह्यर्दिताः (for अभ्यर्दिता).
 B₃ चम्पू; D₃ शरैः; T G₃ परैः; G₁ s M परे (for
 रणे).

23 G₂ missing (cf. v. l. 11). B₃ om. 23^d-24^a.

—^b) G₁ M दहन् (for दहेत्). S₁ D₁ कक्षं (for
 कक्षं).

24 G₂ missing (cf. v. l. 11). B₃ om. 24^a (cf.
 v. l. 23). B₃ om. (hapl.) 24^{ab}. —^a) D₃ आपूर्य-
 माणे चास्त्रेण. —^b) D₂ क्षिपति; D₁ क्षीयती (for
 'ति). S₂ चाभिभो; K₁ D₂ s चाविभो; K₁ B (B₃
 om.) D₁ D₂ च प्रभो (for चाभिभो). —^d) S₂
 K₁ s कुंतीपुत्रो; D₂ s D₂ s, 1. 8 G₁ s M धर्मराजो (for
 'पुत्रो).

25 G₂ missing (cf. v. l. 11). —^a) S₂ च तत्;
 D₃ ततः; T G₁ M तथा; G₃ तदा; G₁ यथा (for
 तु तत्). —^b) D₃ च (for वि). S₁ K₃ चेतनः;
 D₂ s, 6 T G₃ s M₃ s चेतनं (for 'नम्). —^c) K₁
 D₂ s, 3 मध्यस्थानां (for 'स्थतां). D₃ हि (for च).
 —^d) D₂ s, 4, 7, 8 S (G₂ s missing) धर्मराजो (for
 'पुत्रो).

26 G₂ missing (cf. v. l. 11). —^b) M₃ s पांचाल्य-
 (for 'ल-). —^c) D₃ त्वं हि; D₇ s त्वव- (for त्वं
 च). —^d) K₁ B₃ D₂ s महान्; D₂ s स्वयं; D₂ s,
 4, 7, 8 पुरं; T G₃ s भवान् (for गुहान्). S K₁ s
 D₁ s, 6 वृष्यन्धकयुतः पुरं (D₁ s 'पुरःसरः; D₃ 'निवेशनं).

27 G₂ missing (cf. v. l. 11). —^b) D₂ s आत्म-
 नक्षणं (sic); D₃ रक्षणं; D₃ 'नो हितं (for 'नः क्षमम्).
 —^c) D₁ उपवेष्टुं; D₃ 'देष्टा (for 'देष्टुं). S₂ [s]सी;
 D₃ हि (for स्यं). B D₁ D₂ श्रेयो यु (B₂ s ह्य)पदि-
 शत्येष. —^d) B₃ किमु च (for किमुत).

28 G₂ missing (cf. v. l. 11). —^a) D₃ S (G₂ s
 missing) वो (for तु). —^b) D₂ च (for वः).
 —^c) S K₁ s तु (for हि). B₃ सर्वैः; D₃ सर्व- (for

C. 7. 9222
B. 7. 199. 18
K. 7. 200. 30

अहं हि सह सोदयैः प्रवेक्ष्ये हव्यवाहनम् ॥ २८
भीष्मद्रोणार्णवं तीर्त्वा संग्रामं भीरुदुस्तरम् ।
अवसत्याम्यसलिले सगणो द्रौणिगोष्पदे ॥ २९
कामः संपद्यतामस्य वीभत्सोराशु मां प्रति ।
कल्याणवृत्त आचार्यो मया युधि निपातितः ॥ ३०
येन बालः स सौभद्रो युद्धानामविशारदः ।
समर्थैर्वहुभिः क्रूरैर्घातितो नाभिपालितः ॥ ३१

येनाविवृता प्रश्नं तथा कृष्णा सभां गता ।
उपेक्षिता सपुत्रेण दासभावं नियच्छती ॥ ३२
जिघांसुर्धार्तराष्ट्रश्च श्रान्तेष्वश्वेषु फल्गुनम् ।
क्वचेन तथा युक्तो रक्षार्थं सैन्धवस्य च ॥ ३३
येन ब्रह्मास्त्रविदुपा पाञ्चालाः सत्यजिन्मुखाः ।
कुर्वाणा मज्जये यत्नं समूला विनिपातिताः ॥ ३४
येन प्रव्राज्यमानाश्च राज्याद्वयमधर्मतः ।

सह). Dn2 D8 S (G2 missing) सो (D8 सौ) दयैः;
D4. 1. 7 सौदयैः (for सो).

29 G2 missing (cf. v. 1. 11). —^a) T G1. 3. 4 M
द्रोणार्णवौ (for 'र्णव'). G2 lacuna for तीर्त्वा. —^b)
K2. 4 B Dc1 Dn D1. 2. 4. 6-8 संग्रामे (for 'मं'). D8
भीत (for भीरु). Dc1 Dn D2. 6 दुस्तरैः; D4 दशने
(for दुस्तरम्). D3 संग्रामे भीरुताकरं; S (G2. 6 miss-
ing) मे भीम (M3-5 'रु) दुस्तरौ. —^c) Ś2 D3 G1 M3-5
अवसीदामि; K4 Dn2 D2. 4. 6-8 वि (D8 नि) मज्जिष्यामि;
B1-3 Dc1 अवसंक्षा (Dc1 'क्ष्या) मि; B4 'सन्नोस्मि; Dn1
अवसंक्षाम; D5 विमज्जिष्यामि; T G3. 4 अवपत्स्यामि;
M1. 2 अपव (for अवस). K4 B1-4 D (except D1)
T G1. 2. 4 M3-5 सलिले (for [अ]स). B5 अवशोस्मि
निमग्नोहं.

30 G2 missing (cf. v. 1. 11). —^a) K1 समुद्य-
ताम्; G1 M1. 2 संपत्स्य (for संपद्य). Dn2 D2. 4-8
T G3. 4 M3-5 अद्य (for अत्य). —^b) D3 अद्य (for
आद्य). Dn2 D2. 4. 5. 7. 8 राज्ञो दुर्योधनस्य च. —^c) D1. 5
om. (hapl.) 30°-33°. —^d) K4 B1. 5 D2 वृत्तिर; D3
वृत्तम् (for वृत्त). B1. 2 Dc1 Dn1 D8-8 S (G2. 5
missing) ह्याचार्यो; B4 वाचार्यो (for आचार्यो). Dn2
कल्याणवृत्त्य *चार्यो.

31 G2 missing (cf. v. 1. 11). D1. 5 om. 31 (cf.
v. 1. 30). —^a) Ś2 K2 समर्थो (for 'धैर'). M3
वीरैर (for क्रूरैर). —^b) Dc1 Dn1 नातु; D8 न तु
(for नाभि).

32 G2 missing (cf. v. 1. 11). D4. 5 om. 32 (cf.
v. 1. 30). —^a) Ś2 K1-3 D1 चाहवता; B1. 3 Dn2
T G3. 4 M3-5 विवृता; B4 Dc1 Dn1 D8-8 G1 M1. 2
विवृवती; B5 प्रवृवता (for [अ]विवृ). D8-3 प्रभांस.
—^b) Dn2 D8 T G1. 8 M1. 2. 4 सभागता; G4 सहा-
गता (for सभां गता). D3 तथा कृष्णामिमां गता. —^c)
B1 Dc1 Dn1 T G1. 4 M दासी; D1. 8 दास्य (for

दास्य). Ś1 K3 D8 हि (D8 तु) गच्छती; K1. 2 T G3. 4
M1. 2 निगच्छती (T G3. 4 'ति); Dn नियच्छति; M3-5
च गच्छती (for निय). K4 D1 दासभावेन गच्छती.
— After 32, S (G2. 5 missing) ins.:

1397* रक्षणे च महात्मनः सैन्धवस्य कृतो युधि ।

अर्जुनस्य विद्यार्थं प्रतिज्ञा येन रक्षिता ।

व्यूहद्वारि वयं चैव धृता येन जिगीषवः ।

वारितं च महत्सैन्यं प्राविशत्तथाबलम् ।

[(L. 1) G1 M3 रक्षती (for 'णे). — (L. 2) G3
रक्षता (for रक्षिता). — (L. 3) G1 M3-5 जिगीषता (for
'षवः). — (L. 4) T G4 प्रविशत्तद्; G1 M प्रविशंतं
(for प्राविशत्तद्).]

33 G2 missing (cf. v. 1. 11). D1. 5 om. 33 (cf.
v. 1. 30). —^a) Dn2 धार्तराष्ट्रेषु; D3 'राष्ट्रोसौ; D8
'राष्ट्रैश्च; D1 'राष्ट्रस्य (for 'राष्ट्रश्च). —^b) B4 भ्रातेषु;
Dc1 (sup. lin. as in text) क्रांतेषु (for श्रान्तेषु). B1
D2. 7 M1. 2 अश्वेषु (for अश्वेषु). Ś2 फल्गुणं; K3 B1.
3-5 Dc1 Dn1 D1. 2. 7. 8 फाल्गुनं; K4 Dn2 D2 फाल्गुनः
(for फल्गुनम्). B2 श्रान्ते युद्धेषु फाल्गुनं; D8 श्रान्तं
येन च फा. —^c) D8 मया (for तथा). B Dc1 Dn1
गुप्तो (for युक्तो). —^d) D8 हि (for च).

34 G2 missing (cf. v. 1. 11). D2 om. 34. —^a)
Dn1 विदुषां (for 'पा). —^b) Dc1 Dn1 M1. 2 पां-
चात्याः; Bom. ed. पंचालाः (for पाञ्चाला). —^c) D8
मे (for मज्). D8 नित्यं (for यत्नं). —^d) Ś1 K1. 2
D1 समूलं; D3 सवला; D3 सपत्ना (for समूला). Ś1
विनिपातितः. — After 34, S (G2. 5 missing) ins.:

1398* ग्रहणे च परो यत्नः कृतस्तेन यथा मम ।

विदितं सर्वमेवैतद्भवतां सर्वयोधिनाम् ।

[(L. 2) G4 विदिशः (sic) (for 'तं). M3-5 [र]ह
(for [ए]नर). G1 M1. 2 भवतां शममिच्छतां; M3-5 'तां
शङ्खरनाः (for the post. half).]

निवार्यमाणेनास्माभिरनुगन्तुं तदेपिताः ॥ ३५
 योऽसावत्यन्तमस्मासु कुर्वाणः सौहृदं परम् ।
 हतस्तदर्थं मरणं गमिष्यामि सवान्धवः ॥ ३६
 एवं ब्रुवति कौन्तेये दाशार्हस्तवरितस्ततः ।
 निवार्य सैन्यं बाहुभ्यामिदं वचनमब्रवीत् ॥ ३७
 शीघ्रं न्यस्यत शस्त्राणि बाहेभ्यश्चावरोहत ।
 एष योगोऽत्र विहितः प्रतिघातो महात्मना ॥ ३८

द्विषाश्चस्यन्दनेभ्यश्च क्षितिं सर्वेऽवरोहत ।
 एवमेतन्न वो हन्यादस्त्रं भूमौ निरायुधान् ॥ ३९
 यथा यथा हि युध्यन्ते योधा ह्यस्त्रबलं प्रति ।
 तथा तथा भवन्त्येते कौरवा बलवत्तराः ॥ ४०
 निक्षेप्यन्ति च शस्त्राणि बाहेनेभ्योऽवरोह्य ये ।
 तान्नेतदस्त्रं संग्रामे निहनिष्यति मानवान् ॥ ४१
 ये त्वेतत्प्रतियोत्स्यन्ति मनसापीह केचन ।

C. 7. 923a
 B. 7. 199. 42
 K. 7. 200. 48

35 G₂ missing (cf. v. l. 11). — °) B₁ निवारिताः
 सुपुत्रेण; Dn₂ D₂. 5 निवार्यमाणानां न वयं; D₃ न निवारित-
 वानस्मान्; D₄. 6-8 निवार्यमाणानि (D₀ 'जेन') वयं. — °) G₁. 4 M₁ तदोपितः (G₁ 'ताः; M₁ 'तः'); M₁. 5 तदैपितं;
 M₃. 5 तदैपितं (for 'पिताः'). S K₁-3 D₁ नानुगन्तुं तदै-
 पिणा (S₂ K₂ 'ताः; K₁ 'तः'); B₁ कर्तुं युद्धं तदैपिणः;
 Dn₂ D₁-3 नानुयातास्तदैपिणः (D₁. 3 'णा'); D₂ नानुया-
 तास्तदाक्षिणः; D₃ युद्धं कर्तुं तदैपिणः. — After 35, S
 (G₂. 5 missing) ins.:

1399* वनवासान्निवृत्तानां समये च तथा कृते ।
 स्नेहश्च दक्षितो नित्यं प्रत्यक्षं वो महारथाः ।

36 G₂ missing (cf. v. l. 11). — °) K₂ यो
 माम्; B₁. 3-5 D₁ Dn₁ D₂. 5 सोसाव् (for योऽसाव्).
 Dn₂ D₁. 5. 7. 8 अस्माकं (for अस्मासु). D₂ योसावस्माकम-
 त्यंतं; G₁ M₁. 2 सोपि चार्थतमस्मासु; M₃-5 सोसावत्यंत-
 मस्माकं. — °) B₁ महत् (for परम्). — °) S₂ D₃
 S (G₂. 5 missing) तदर्थः; Dn₂ D₁. 7. 8 तदस्त्रं (for
 'धै'). — °) Dn₂ D₁. 5. 7. 8 करिष्यामि; D₂ करिष्यति
 (for गमिष्यामि).

37 G₂ missing (cf. v. l. 11). Before 37, G₄
 ins. संजयः. — °) D₃ वदति (for ब्रुवति). D₄. 5. 7. 8
 कौरव्ये (for कौन्तेये). — °) D₃. 9 तदा (for ततः).

38 G₂ missing (cf. v. l. 11). — °) D₄ बाहेने-
 भ्यश्च (hypermetrie) (for बाहेभ्यश्च). — °) B₁. 2. 4
 D₁ Dn₁ D₂. 3 T G₁. 3 M प्रतिघाते; D₁ प्रतिघेधे; D₃
 प्रविघातो (for प्रति). D₁ S (G₂. 5 missing) महात्मनः
 (for 'स्मना').

39 G₂ missing (cf. v. l. 11). — °) D₃. 6 T G₁
 M₁. 2 द्विपेभ्यः; G₃. 1 द्विपाच्च (for 'श्च'). G₁ चंदनेभ्यश्च
 (for 'स्यन्दने'). — °) B₁. 3 D₁ Dn₁ D₃ S (G₂. 5
 missing) क्षिप्रं (for क्षितिं). D₂. 4. 5 निपातिताः (for
 'स्वरोहत'). — °) D₃ एवं (for भूमौ). — After 39,
 D₃ ins.:

1400* सायुधान्युच्यमानान्त्रो हन्यादेतानपि ध्रुवम् ।

40 G₂ missing (cf. v. l. 11). — °) S K (K₂
 missing) Dn₂ D₁. 5 ह्ययुध्यंत (K₄ Dn₂ 'ते [sic]');
 Dn₁ D₁ हि युध्यंत; D₂ ह्ययुध्यंत (for हि युध्यन्ते).
 — °) Dn₂ ये वा; D₁. 5 यो वा; G₁ M योधा (for
 योधा). K₃ B D₁ Dn₁ D₂. 6 S (G₂. 5 missing) ह्य-
 (D₀ अस्त्रमिदं; K₄ अस्त्रबलं (for 'ह्यस्त्रं'). — °) D₃
 om. one तथा. — After 40, D₃-5 ins.:

1401* रामेण पृथिवी सर्वा निःक्षत्रियगणा कृता ।
 अनेनास्त्रेण भीमेन क्षत्रमुत्सादितं पुरा ।
 यत्तन्नारायणं तेजः अस्त्रतेजःप्रमर्दनम् ।
 तदस्त्रं निर्मितं पूर्वं विष्णुना प्रमद्विष्णुना ।
 यदा निपातितो दैत्यो हिरण्याक्षो महासुरः । [5]
 तदा नारायणास्त्रं हि पूर्वसृष्टं हि विष्णुना ।
 तं निपात्य महादैत्यं द्वापरान्ते नृपोत्तम ।
 रामेण तप आस्थाय लब्धं पूर्वं महात्मन ।
 देवदेवं समाराध्य विष्णुं त्रिभुवनेश्वरम् ।
 तस्माद्रोणमनुप्राप्तं सर्वांश्चप्रतिवारणम् । [10]
 तथैतद्धि महाशस्त्रं केनचित् निवारयेत् ।
 नारायणास्त्रस्य नृपा एष योगो निवारणे ।

[(L. 1) D₃ निःक्षत्रिय- (for निःक्ष). — (L. 3) D₃
 सर्व- (for अस्त्र). — (L. 4) D₃ सृष्टं हि विष्णुना पुरा
 (for the post. half). — D₃ om. (hapl.) lines 5-6.
 — (L. 5) D₁ भीमो (for दैत्यो). D₃ हिरण्याक्षो महा-
 बलः (for the post. half). — (L. 6) D₃ तदा नारा-
 यणास्त्रस्य (for the prior half). D₃ om. from पूर्वसृष्टं
 up to नृपा (in the prior half of line 12). — (L.
 9) D₃ देवे (for देव-). — (L. 10) D₁ अमुं (for अनु-).
 — (L. 12) D₃ उपयोस्ति निवारणे (for the post. half).]

41 G₂ missing (cf. v. l. 11). D₃ om. 41^a-42^b.
 G₁ M₁. 2 transp. 41 and 42. — °) D₁ निक्षेपन्ति; D₃
 न क्षेप्यन्ति. B₁. 3 D₁ M₃-5 तु (for च). D₃ निक्षिप्ये-

C. 7. 9236
D. 7. 189. 42
K. 7. 200. 48

निहनिष्यति तान्सर्वात्रसातलगतानपि ॥ ४२
ते वचस्तस्य तच्छ्रुत्वा वासुदेवस्य भारत ।
ईषुः सर्वेऽस्त्रमुत्सृष्टुं मनोभिः करणेन च ॥ ४३
तत उत्सृष्टुकामांस्तानस्त्राण्यालक्ष्य पाण्डवः ।
भीमसेनोऽब्रवीद्राजनिदं संहर्षयन्वचः ॥ ४४
न कथंचन शस्त्राणि मोक्तव्यानीह केनचित् ।
अहमावारयिष्यामि द्रोणपुत्रास्त्रमाशुगैः ॥ ४५
अथ वाप्यनया गुर्व्या हेमविग्रहया रणे ।
कालवद्विचरिष्यामि द्रौणेस्त्रं विशातयन् ॥ ४६

पंति चास्त्राणि: T Gs. 4 निक्षिप्यंते तु शस्त्राणि; G1 M1. 2 ये निक्षिप्यंति श. — ^δ K4 D4. 5 ते; T Gs च (for ये). G1 M1. 2 बाहनेभ्योवरोहते. — After 41^{ab}, T Gs. 4 Ms. 5 ins.:

1402* येऽर्जुनं कुर्वंते वीरा नमन्ति च विवाहनाः ।

— ^ο B4 तानेतद् (for तान्ते). S2 तानेव चैतस्संप्रामे.
— ^d S2 वि; B1 न (for नि).

42 G2 missing (cf. v. l. 11). D3 om. 42^{ab} (cf. v. l. 41). G1 M1. 2 transp. 41 and 42. — ^a S1 K4 Dn2 D1. 2 यत् (for ये). D1. 5. 7. 8 [ए]ने (for [ए]तत्). T Gs -योक्ष्यंति (for -योस्त्यन्ति). — ^δ D8 ह; T Gs. 4 हि (for [ह]ह). K2 D1. 7 G2 M3 केन च; G1 तेन च (for केचन). — K2 om. (hapl.) 42^ο-43^d. — ^ο Dn2 हनिष्यति ह; M3 निहनिष्यति (for 'प्यति). D2. 4. 5. 7 हंति क्षिति (D1 om. क्षिति) गतान्सर्वान्.

43 G2 missing (cf. v. l. 11). K2 om. 43 (cf. v. l. 42). — ^a D8 श्रुत्वा तु (for तच्छ्रुत्वा). — ^δ G1 M1. 2 सैनिकाः; Ms. 4. 5 (sup. lin.) भाषितं (for भारत). — ^ο K1 एषु; Dn इषु; D1-8 इषून्; G1 M ऊषु; Gs. 4 ऊषुः (for ईषुः). Ks. 4 B (except B1) D2. 4. 5-8 T G1. 8 M समुत्सृष्टुः; D5 समुत्सृज्य; G4 समुत्सृष्टा (for सस्त्रमुत्सृष्टुं). — ^d S1 मनसा (for मनोभिः). T कारणेन (for करणेन). D6 बाहादवततार च; D7. 8 मनोभिल्ले व्यर्चितयन्; G1 M1. 2 मनोभिः करणैः सह; Gs. 4 Ms. 5 महद्भिः का (Ms क)रणैश्च ह.

44 ^{ab} D1. 8 च (for तान्). S K (K6 missing) D1. 8 तत उत्सृष्टुकामानाम्. Dn2 D8-8 T G1. 2 M1. 2. 3 शस्त्राणि (for अ). D1 lacuna; D3 M1. 2 आलोक्ष्य

न हि मे विक्रमे तुल्यः कश्चिदस्ति पुमानिह ।
यथैव सचितुस्तुल्यं ज्योतिरन्यच्च विद्यते ॥ ४७
पश्यध्वं मे दृढौ बाहू नागराजकरोपमा ।
समर्थौ पर्वतस्यापि शैशिरस्य निपातने ॥ ४८
नागायुतसमप्राणो ह्यहमेको नरोऽपिह ।
शक्रो यथाप्रतिद्वंद्वो दिवि देवेषु विश्रुतः ॥ ४९
अद्य पश्यत मे वीर्यं बाह्वोः पीनांसयोर्युधि ।
ज्वलमानस्य दीप्तस्य द्रौणेस्त्रस्य वारणे ॥ ५०
यदि नारायणास्त्रस्य प्रतियोद्धा न विद्यते ।

(for आलक्ष्य). D1. 5 तत उत्सृष्टवन्तस्तान्यालोक्ष्य पांडवस्तदा (D5 स च पांडवः). — ^ο D8 तत्र (for राजन्). — ^d D8 वै (for सं).

45 ^δ B Dc1 Dn1 D6 S (G5 missing) त्यक्तव्यानि (for मोक्त). D6. 7 ह (for [ह]ह). — ^ο D7 अहमाचारयिष्यामि. — D8 om. (hapl.) 45^d-46^ο. — ^d G2 आहवे (for आशुगैः).

46 D8 om. 46^{ab} (cf. v. l. 45). — ^a K4 Dn2 D2. 4. 5. 7. 8 गद्या (for अथ वा). D3 गद्या; G2 ह्यनया (for [अ]न्य). — Dn1 om. 46^ο-47^δ. — ^ο S1 K3 कालविद् (for 'वद्). K4 B1-3. 5 प्रहरिष्यामि; B1 Dc1 D1 S (G5 missing) प्रचरि; D3 हि च (for विचरि). — ^d D1 विशारयन्; D7 विशां पते (for विशातयन्).

47 Dn1 om. 47^{ab} (cf. v. l. 46). — ^a D8 च (for हि). M3 om. विक्रमे. — ^δ D3 अन्यः (for अस्ति). D8 इति (for ह). — ^ο Dc1 Dn1 तथैव; D7. 8 युध्यैव (for यथैव).

48 ^a Dn2 पश्यध्वे (for 'ध्वं). B Dc1 Dn1 S (G5 missing) पश्यतेमौ (B1 'इय चेमौ) हि मे बाहू. — ^δ D8 राजराजः (for नागः). — ^ο D8 इव (for अपि). K4 D1 पर्वतस्यापि सामर्थ्यो (sic). — ^d Dn1 शिशिरस्य; D1. 5. 7. 8 शिखरस्य (for शैशि). K1 निपातिते; D8 S (G5 missing) निवारणे (for निपातने).

49 ^a D5 शतः (for 'सम-). — ^ο G1 M यथा शक्रो (by transp.). D7. 8 [अ]प्रतिबले (for 'द्वंद्वो).

50 ^ο Dn2 D2. 4-5 पश्यतु; M3-5 पश्यतु (for 'त). — ^δ D5 भीमांसयोर् (for पीनां). D2 सृधे; D8 अपि (for युधि). — ^d D5 अञ्जनि (for अञ्जल्य).

अद्यैनं प्रतियोत्स्यामि पश्यत्सु कुरुपाण्डुषु ॥ ५१
 एवमुक्त्वा ततो भीमो द्रोणपुत्रमरिंदमः ।
 अभ्ययान्मेघघोषेण रथेनादित्यवर्चसा ॥ ५२
 स एनमिपुजालेन लघुत्वाच्छीघ्रविक्रमः ।
 निमेषमात्रेणासाद्य कुन्तीपुत्रोऽभ्यवाकिरत् ॥ ५३
 ततो द्रौणिः प्रहस्यैनमुदासमभिभाष्य च ।
 अवाकिरत्प्रदीप्ताग्रैः शरैस्तेरभिमन्त्रितैः ॥ ५४
 पन्नगैरिव दीप्तास्यैर्वमद्भिरनलं रणे ।

अवकीर्णोऽभवत्पार्थः स्फुलिङ्गैरिव काञ्चनैः ॥ ५५
 तस्य रूपमभूद्राजन्मीमसेनस्य संपुगे ।
 खद्योतैरावृतस्येव पर्वतस्य दिनक्षये ॥ ५६
 तदस्त्रं द्रोणपुत्रस्य तस्मिन्प्रतिसमस्यति ।
 अवर्धत महाराज यथाधिरनिलोद्धतः ॥ ५७
 विवर्धमानमालक्ष्य तदस्त्रं भीमविक्रमम् ।
 पाण्डुसैन्यमृते भीमं सुमहद्भयमाविशत् ॥ ५८
 ततः शस्त्राणि ते सर्वे समुत्सृज्य महीतले ।

C. 7. 9255
 B. 7. 199. 61
 K. 7. 200. 69

51 °) Ś: Dn: D1. 5. 7. 8 अद्य (for अद्य). K1 B
 Dc1 Dn1 D1 [ए]तत्; D2 तं (for [ए]नं). —^d) K6
 पश्यन्तु कुरुपाण्डवाः; G2 तथा पश्यन्तु पाण्डुषु. — K4
 B1. 2. 3 (marg.) Dc1 (marg.) Dn: D1-3 T ins.:

1403* अर्जुनार्जुन वीभर्सो न न्यस्यं गाण्डिवं त्वया ।
 शशाङ्कस्येव ते पङ्को नैर्मल्यं पातयिष्यति ।
 अर्जुन उवाच ।

भीम नारायणास्त्रे मे गोषु च ब्राह्मणेषु च ।
 एतेषु गाण्डिवं न्यस्यमेतद्धि व्रतमुत्तमम् ।

[(L. 1) D1 om. the second अर्जुन. D1 गांविं.
 D1. 3 न्यस्यतो गांविं तव (for the post. half). — (L. 2)
 B1-3 शशाङ्क इव (for 'कस्येव'). Dc1 Dn: D3 T कोरं;
 D1. 3 पङ्कं (for पङ्को). Dn: नैर्मल्ये; D2. 4-5 निर्मले
 (for नैर्मल्ये). Dc1 प्रापयिष्यति (for पात). B1. 3
 नि (B3 नै) मेलो न भविष्यति; D1. 3 निर्मलस्य भविष्यति
 (for the post. half). — (L. 3) B1-3 नारायणास्त्रे;
 Dc1 D1. 1 'यणस्त्रे मे; Dn: 'यणास्त्रे दो (for 'यणास्त्रे मे').
 Dn: ब्राह्मणेषु (for ब्रा). B1-3 D3 ब्राह्मणेषु च गोषु च
 (for the post. half). — (L. 4) D1. 7. 8 गांविं. B1. 3
 गांवीयन्यास एकस्तु; B2 गांविं न्यस्यतो वयं (for the prior
 half). B1. 2 शशाङ्कस्येव मे सदा; B3 नाशदिशे बले सदा
 (sic) (for the post. half).]

52 °) K3. 4 B2 Dn: D1. 3. 5. 6 T उक्तस् (for उ-
 क्त्वा). —^d) B Dc1 Dn1 D2. 5 अरिंदमः; D1 G3. 4
 'दम (for 'दम:). — After 52, S (G3 missing)
 ins.:

1404* कम्पयन्मेदिनीं सर्वां त्रासयंश्च चमूं तव ।
 शङ्कुशब्दं महत्कृत्वा भुजशब्दं च पाण्डवः ।
 तस्य शङ्कुत्वं श्रुत्वा बाहुशब्दं च तावकाः ।
 समन्तात्कोष्ठकीकृत्य शरवातैरवाकिरन् ।

[(L. 3) M3-5 भुज- (for बाहु). — After line 3,

G1 M1. 2 ins.:

1405* समकम्पन्त विवस्ताः शङ्कुन्मं प्रमुञ्चतः ।]

53 °) B2 D3 एवम्; D1 M3-5 एतान्; T G1-4
 M1. 2 एतान् (for एतन्). D1 जालेषु; G2 जालानि
 (for जालेन). —^d) D3 T G1 M लघुना (for
 लघुत्वात्). D1. 7. 8 विभ्रमः; M1 विक्रमे. (for 'म:').
 D3 लघुना शीघ्रकृतमः; G2 वायुना साम्प्रविक्रमः. —^e)
 D1 सोद्यैव; S (G3 mi-sing) आच्छाद्य (for आसा).
 Ś: K3 B2 निमेषमात्रमासाद्य; D3 मात्रे प्राच्छाद्य. —^d)
 K1 [5] न्यवाकिरत्; D3 [5] न्यवा (for सभ्यवा).

54 D2. 4. 5 om. 54^{ab}. —^a) Ś: तत्र (for ततो).
 —^b) B Dc1 Dn द्रवंतम्; D1 उदायन् (sic); S (G3
 missing) उद्वदन् (for उदासम्). —^c) D2. 4. 5 प्रच्छा-
 द्यत्प्रदी (D3 'स दी) सास्त्रैः (D3 'प्रै:). —^d) D1 शस्त्रै-
 स्त्रैर; D3 शस्त्रास्त्रैर (for शरैस्त्रैर). Ś: अस्त्राभिः; D1. 3
 तेनाभि (for तैरभि). D2 अभिसंवृतः.

55 °) D1. 3 सज्जिह्व (for वम). B (except
 B1) उज्जलनं; Dn1 गरलं (for अनलं). Ś: K1. 2. 4 D1
 बहु (for रणे). Dn: D1. 5 मर्मभि (Dn: 'वि) द्विरलं रणे.
 —^e) D2. 3. 7. 8 M3-5 अवाकीर्णो (for अव).

56 °) B1 अत्य (for तस्य). B2 तद्रूपमभवद्राजन्.
 —^e) Dn1 D1 आवृतस्यैव (for 'स्येव).

57 °) D1 तदस्त्रं; M3. 5 तदस्य (for 'स्त्रं). —^b)
 Ś K1-3 Dn: D3. 6 अति (Dn: D3 अति) समस्यति; D4
 प्रतिसमिष्यति; D1. 8 अप्रतिशास्य (D3 'म्य) ति; S (G3
 missing; M3 sup. lin.) प्रतिसमासति; M3 (orig.)
 'समागते (for 'समस्यति). — D3 om. 57^{cd}.

58 °) Ś K1. 2. 4 Dn: D1. 3 प्रवर्धमानम्; D1. 5. 8
 अवर्धं (for विव). M3-5 आलोक्य (for आलक्ष्य).

C. 7. 925
B 7. 199. 61
K. 7. 200. 69

अवारोहत्रथेभ्यश्च हस्त्यथेभ्यश्च सर्वशः ॥ ५९
तेषु निक्षिप्तशस्त्रेषु वाहनेभ्यश्च्युतेषु च ।
तदस्त्रवीर्यं विपुलं भीममूर्धन्यथापतत् ॥ ६०

इति श्रीमहाभारते द्रोणपर्वणि सप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १७०

१७१

संजय उवाच ।

भीमसेनं समाकीर्णं दृष्ट्वास्त्रेण धनंजयः ।
तेजसः प्रतिघातार्थं वारुणेन समावृणोत् ॥ १
नालक्षयत तं कश्चिद्धारुणास्त्रेण संवृतम् ।
अर्जुनस्य लघुत्वाच्च संवृतत्वाच्च तेजसः ॥ २

साश्वसूतरथो भीमो द्रोणपुत्रास्त्रसंवृतः ।

अग्नावग्निरिव न्यस्तो ज्वालामाली सुदुर्दशः ॥ ३
यथा रात्रिक्षये राजङ्घ्योतीर्ण्यस्तगिरिं प्रति ।
समापेतुस्तथा बाणा भीमसेनरथं प्रति ॥ ४
स हि भीमो रथश्चास्य हयाः सूतश्च मारिप ।

—^{ed} Ś K1-3 सैन्याहते; Ś1 (also) सैन्यावृत्ते; B1
De1 Dn2 D3 M1 'नृते' (sic) (for सैन्यसृते). Dn1
पांडुसैन्यान्यभिमात्सुमहद्वयमुपाविशत् (sic).

59 ^a) Ś K1-3 Dn2 D1.2.1.7.8 दिव्यानि (for ते
सर्वे). D5 ततः सर्वाणि शस्त्राणि. —^c) Ś2 Dn1 D5
अवारोहद्; T G2-4 M3-5 अवातरन्; G1 M1.2 'पतत्
(for 'रोहन्'). —^d) Dn2 D2.4.5.7.8 तुरगेभ्यश्च (for
हस्त्यथे). Ś3 K1.2 B1-3 De1 Dn1 च सर्वतः; D5
सहस्रशः (for च सर्वशः).

60 ^a) D7 om. निक्षिप्त. D1.5 तेषु शस्त्रेषु निक्षिप्तं
(D5 'ते'); D5 तेषु शस्त्रेषु क्षिप्तेषु. —^b) D5 वाहनेषु
(for 'नेभ्यश्च'). — After 60^a, D5 ins.:

1406* उपरिष्टाङ्गमन्यत्र यत्र योधानप्रपश्यति ।
गृहीतशस्त्रानारुढान्वाहनेषु मद्वात्मसु ।
यत्र यत्र प्रयाति स्र क्रममाणं रणाजिरे ।
तत्र तत्र विमुकास्ताः सर्वेऽदृश्यन्त संघशः ।
ततोऽपश्यद्ग्रेण भीमं गदाहस्तमरिंदमम् । [5]
असंभ्रान्तं समायान्तं द्रोणपुत्ररथं प्रति ।

—^c) S (G5 missing) सकलं (for विपुलं). B1 तद-
स्त्रमस्त्रं विपुलं; B2-5 De1 Dn D3-5.7 तदस्त्रं (Dn2 'स्त्र')
वीर्येति (B2 D1 'यं वि'पुलं. —^d) D5 असंभ्रमं; T
G2-4 M3 अपातयत्; M1.2 अवापतत् (for अथाप').

61 ^b) D5 पांडवान्भयमाविशत्. —^c) D3.6 अपश्यं-
तस् (for 'इयन्त'). —^d) D5 संवृते (for 'तं'). Ś
K (K5 missing) ततः; D1 तथा; D1 सदा (for तदा).

Colophon om. in Ś1 K1-3: K5 G5 missing.
— Sub-parcan: B1.3 De1 Dn1 नारायणास्त्रमोक्ष.
— Day of Droṇa's Generalship: K1 पंचमदिवसयुद्धे.
— Adhy. no. (figures, words or both): Dn1 200;
D2 202; D3 93; T G2.3 194; G1 M1.2 193; G4
193; M3-5 192. — Śloka no.: De1 61; Dn1 60.

171

—^{ed} This adhy. is missing in K5 G5 (cf. v. l. 7.
125. 14; 137. 9).

1 ^a) D5 अस्त्रेण तु; T G1 M1.2 भीमसेने; G2
M3-5 'सेन' (for 'सेनं'). —^b) D5 दृष्ट्वा भीमं; S (G5
missing) अस्त्रं दृष्ट्वा (for दृष्ट्वास्त्रेण). —^d) T G3.4
M3-5 वारुणेनैव (G3.4 M5 'न'मावृणोत्).

2 ^a) B2-5 D2 तत् (for तं). Dn2 नालक्षयस्ततः
कश्चिद्; D3-5 नालक्षयस्ततः (D3 'दा' क'. —^b)
D1 दारुणास्त्रेण (for वारु'). —^d) G1 सर्वशः (for
तेजसः).

3 ^a) De1 Dn1 D5 अजो (for 'रथो'). B1 साश्व-
सूतश्चरथो; D3 साश्वसूतस्ततो भीमो (sic). —^d) Ś
K1-3 G2.4 [ह]व (for सु). D1.7.8 दुर्लभः (for
दुर्दशः). K4 D1 ज्वालामालीव संवृतं (D1 'तः').

4 ^b) Dn1 D1 ज्योतिषा (for ज्योतींषि). D3.6
T G1-4 M1.5 [अ]स्तं (for [अ]स्त). — B1 reads
4^{ed} on marg. —^c) D5 समीपे तु; S (G5 missing)
समाजगमुस् (for 'पेतुस्'). M4 तदा (for तथा).

संयुता द्रोणपुत्रेण पावकान्तर्गताभवत् ॥ ५
 यथा दग्ध्वा जगत्कृत्स्नं समये सचराचरम् ।
 गच्छेदग्निर्विभोरासं तथास्त्रं भीममावृणोत् ॥ ६
 सूर्यमग्निः प्रविष्टः स्याद्यथा चाग्निं दिवाकरः ।
 तथा प्रविष्टं तत्तेजो न प्राज्ञायत किंचन ॥ ७
 विकीर्णमस्त्रं तद्दृष्ट्वा तथा भीमरथं प्रति ।
 उदीर्यमाणं द्रौणिं च निष्प्रतिद्वंद्वमाहवे ॥ ८
 सर्वसैन्यानि पाण्डूनां न्यस्तश्चाप्यचेतसः ।
 युधिष्ठिरपुरोगांश्च विमुखांस्तान्महारथान् ॥ ९

अर्जुनो वासुदेवश्च त्वरमाणौ महाद्युती ।
 अवमुत्थ रथाद्वीरौ भीममाद्रवतां ततः ॥ १०
 ततस्तद्द्रोणपुत्रस्य तेजोऽस्त्रवलसंभवम् ।
 विगाह्य तौ सुबलिनौ माययाविशतां तदा ॥ ११
 न्यस्तश्चास्त्रौ ततस्तौ तु नादहदस्त्रजोऽनलः ।
 वारुणास्त्रप्रयोगाच्च वीर्यवत्त्वाच्च कृष्णयोः ॥ १२
 ततश्चक्रपतुभीमं तस्य सर्वयुधानि च ।
 नारायणास्त्रशान्त्यर्थं नरनारायणौ बलात् ॥ १३
 अपकृष्यमाणः कौन्तेयो नदत्येव महारथः ।

C. 7. 9271
B. 7. 200. 14
K. 7. 201. 15

— After 4, Ds ins.:

1407* तदस्त्रं वारुणं भक्ता नारायणसमुद्रवत् ।
 प्रजज्ज्वाल पुनर्भीमं संवृत्य तु रणाजिरे ।

5 ^a) Ds च; G₁ M_{1.2} तु (for हि). D_{1.2.3} भीम- (for भीमो). — ^b) Ś₂ K₂ द्वयः (for द्वायाः). K₁ सूताश्च (for तश्च). D₃ repeats मारिद. — ^c) D₁ D_n D₃₋₅ संवृतो (for ता). — ^d) B D_n D₃₋₅ पावकान्तर्गतोभव (D₅ रंता भवे) च; T G₂₋₄ रंता इव.

6 ^a) K₁ D_{n2} D_{1.2.3} जग्ध्वा; D₁ lacuna (for दग्ध्वा). D₃ S (G₅ missing) सर्वं (for कृत्स्नं). — ^c) D₃ अग्निः; Bom. ed. वह्निर् (for अग्निर्).

7 ^a) D₃ तु (for स्यात्). — ^b) D₃ अथ (for यथा). Ś₂ D₃ S (G₅ missing) चाग्निः; D₃ [अ]ग्निं वा (for चाग्निं). D_{n1} D₂ यथा चाग्निर्विवाकरं. — ^c) Ś K₁₋₃ D₁ S (except G₄; G₅ missing) प्रविष्टस् (for 'ष्ट'). — ^d) Dr om. न. K₂ D_{n2} D_{1.2.3} G₁₋₄ M_{1.2.4} प्रज्ञायत (for प्रा). B₁ पांडव; B_{2.3} D₁ D_{n1} S (G₅ missing) पांडवः (D_{n1} वा.); B_{1.3} D₃ पांडवं (for किंचन). — After 7, T G₂₋₄ M_{3.5} (before corr.) ins.:

1408* तदस्त्रं भीमहंकारादपयाति पुनः पुनः ।
 पुनः पुनस्तमायाति हुंकारात् विमुञ्चति ।
 ततो देवा सगन्धर्वा भीमं दृष्ट्वा लुबिखिताः ।
 [(L. 2) M_{3.5} समायाति (for तना).]

8 D_{2.4.5.7.8} om. 8^{ab}. — ^a) T G₁ M_{1.2} निकीर्णम्; G₂ निगीर्णं (for विकी). D₃ T G₂₋₄ तं (for तद्). — ^b) T G_{1.2} M भीमसेन- (for तथा भीम-). — ^d) D₂ तं प्रति; D₁ तिष्ठति (for निष्प्रति-).

9 ^a) Dr. s दृष्ट्वा (for सर्वं). B D₁ D_{n1} D_{2.3} S (G₅ missing) सैन्यं च; D₃ शस्त्राणि (for सैन्यानि). D_{n1} D_{1.3} पाण्डूनां (sic) (for पाण्डूनां). — ^b) Ś₂ K_{1.2.4} D_{n2} D_{1-2.7.8} [अ]नेकशः (for [अ]नेकसः). B D₁ D_{n1} D₃ S (G₅ missing) न्यस्तश्चास्त्रमचेतनं (M₃₋₅ सं). — ^c) D_{2.3-5} पुरोगाश्च (for गांश्च). D₃ ते (for च). — ^d) D₂ विमुखास्त्रे; D₃ विमुखाश्च; D_{1.3} स्वास्त्रे (for स्वांस्तान्). D_{2.3} महारथाः.

10 ^a) B₁ D₃ अवद्युत्थ (for 'द्युत्थ'). D₃ भूमौ; G₂ तूर्णं (for वीरौ). — ^b) Ś K₁₋₃ D_{1.3} दभौ; K₁ D_{n2} D_{2.3-5} तदा; D₁ तथा (for ततः).

11 ^a) D₁ D_{2.3} ते; D_n तौ; D₃ G₁ M_{1.2} तु; D₃ T G_{2.4} तं (for तद्). — ^c) D₃ देवनिभौ (for सुबलिनौ). — ^d) M_{1.2} [अ]विशितां (for शतां). Bom. ed. तथा (for तदा). B₁ D_{n1} D₃ मायाम् (B₁ मा) विशितां तदा.

12 ^a) G₁ तदा (for ततस्). Ś K (K₅ missing) D₁ न्यस्तश्च (D₁ स्त्रौ) तदस्त्रं च; D₃ न्यस्ते शस्त्रे तदस्त्रं तु; D₁ न्यस्तश्चास्त्रस्तत्तौ तौ. — ^b) K₁ B D₁ D_n D₃ सोऽस्त्रजो; T शा; G₁₋₄ M शं (for अस्त्रजो). Ś K₁₋₃ D_{1-5.7.8} प्रशशाम नरपेस (Ś₁ K₃ तदा नृप). — ^c) D_{1.2.3} वारुणास्त्रं (for 'णास्त्र'). K_{1.3} D₁ प्रयो- गाश्च (for गांश्च). D₃ नारायणास्त्रयोगाच्च. — ^d) D₃ स्ववीर्यवत् (for वीर्यवत्). D₃ तेजसः (for कृष्णयोः).

13 ^a) K₁ G₁ M_{1.2.4.5} (sup. lin.) चक्रपतुर् (for चक्रप). — ^b) D₂ Bom. ed. तस्या (Bom. ed. सर्वा) स्त्राययुधानि च. — After 13, D₃ ins.:

1409* पातयामासतुः पुनर्भीमसेनं रणे बलात् ।
 भीमं निरायुधं कृत्वा तदा कृष्णधनंजयौ ।

C. 7. 9271
B. 7. 100. 14
K. 7. 201. 15

वर्धते चैव तद्गौरं द्रौणेरखं सुदुर्जयम् ॥ १४
तमब्रवीद्वासुदेवः किमिदं पाण्डुनन्दन ।
वार्यमाणोऽपि कौन्तेय यद्युद्वात्र निर्वर्त्से ॥ १५
यदि युद्धेन जेयाः स्युरिमे कौरवनन्दनाः ।
वयमप्यत्र युध्येम तथा चेमे नरर्षभाः ॥ १६
रथेभ्यस्त्ववतीर्णास्तु सर्व एव स्म तावकाः ।
तस्माच्चमपि कौन्तेय रथाचूर्णमपाक्रम ॥ १७
एवमुक्त्वा ततः कृष्णो रथाद्धूमिमपातयत् ।

14 Ds om. 14-18. Gs om. 14^a-15^b. —^a) Hypermetric. Śi K₃ B Dc₁ Dn D₂. 4. 7. 8 T आकृ-
प्यमाणः; Ś₂ K₁. 2. 4 D₁ अवकृ; D₃ असृप्य (for
अपकृप्य). — K₃ Ds om. (hapl.) 14^b-15^c. D₄ reads
14^b-17^c (omitting [both times] 15^c-16^b) twice.
—^b) D₂. 7. 8 नदन्नेव (for 'लेव). B Dc₁ G₂ Ms-s
महारव; Dn₁ 'रथ; D₃ 'रथा: (for 'रथ:). Ś K₁-3
D₁. 8 नदन्नेव (D₁ 'वं) महावल: (K₃ 'रवं); D₄ (both
times) योन्यदन्ये महारथा: (sic). —^c) Ś K₁-3 D₁. 8
युयुधे (for वर्धते). B₁ तु (for च). Dc₁ Dn₁ वर्धयन्ने-
(Dn₁ 'रथे)व तद्गौरं; D₂. 4 (both times). 7. 8 युयुत्सुश्चैव
(D₂ 'स्ततश्च) तद्गौरं. —^d) Ś₂ K₁. 2 D₁ अखं द्रौणे:
(by transp.).

15 For the repetition in D₁, cf. v. l. 14. K₄
Ds om. 15^{ab}; Ds om. 15; Gs om. 15^{ab} (for all,
cf. v. l. 14). D₄ om. (hapl.) 15^c-16^b. —^a) D₁
G₃. 4 कौन्तेयो (for कौन्तेय). —^b) D₃ खं युद्वात्र;
D₇. 8 कस्मात्वं; T युद्वात्वं (for यद्युद्वात्र). K₁ नाति-
वर्त्से. T₂ (before corr.) G₁-1 M युद्वायैव मनो दधे.

16 For the repetition in D₁, cf. v. l. 14. Ds
om. 16 (cf. v. l. 14). D₄ om. 16^{ab} (cf. v. l. 15).
—^a) G₂ जेय्यामो (for जेयाः स्युर). —^b) G₂ हारीन्
(for ह्रमे). G₁. 2 M कौरवनन्दन. —^c) Ś युध्याम;
K₁ D₁ युध्यामस; K₂ युद्वामस (sic); D₄ (both
times). 5 युद्धेन; D₇. 8 युद्धेम (sic) (for युध्येम).
—^d) S (Gs missing) [ह]व (for च). Ś₂ K₁. 2. 4 D₁
नराधिपाः; B₃ नरोत्तमाः; M₂-s महारथाः. D₂ तथा
चान्ये महर्षभाः.

17 For the repetition in D₁, cf. v. l. 14. Ds
om. 17 (cf. v. l. 14). —^a) Ś₂ Dn₁ D₁ खवकीर्णाश्च;
D₃ चावकीर्णाश्च (for खवतीर्णाश्च). K₄ B₁-1 Dc₁ Dn
D₄ (both times). 5. 7. 8 स्म; D₂. 3 च (for तु). S

निःश्वसन्तं यथा नागं क्रोधसंरक्तलोचनम् ॥ १८
यदापकृष्टः स रथाद्ध्यासितश्चायुधं भुवि ।
ततो नारायणाखं तत्प्रशान्तं शत्रुतापनम् ॥ १९
तस्मिन्प्रशान्ते विधिना तदा तेजसि दुःसहे ।
वभ्रुर्विमलाः सर्वा दिशः प्रदिश एव च ॥ २०
प्रवबुधश्च शिवा वाताः प्रशान्ता मृगपक्षिणः ।
वाहनानि च हृष्टानि योधाश्च मनुजेश्वर ॥ २१
व्यपोढे च ततो घोरे तस्मिंस्तेजसि भारत ।

(Gs missing) अवतीर्णा रथेभ्यश्च (G₁ M₁. 2 'भ्यस्ते; M₄
'न्वेते). —^b) B₁. 3. 4 Dc₁ Dn D₄. 5. 7. 8 द्वि; D₂
[अ]स्मि; D₃ च (for स्म). —^c) D₃ S (Gs miss-
ing) तथा (for तस्मात्). —^d) G₁ तथा; M₂-s यथा
(for रथात्). Ś₁ K₃ अवातर; K₂ D₂. 4 उपाक्रम;
Dn₁ अपाकुरु; D₅. 8 T G₂. 3 अपक्रम; M₄ अपाक्रम:
(for 'क्रम). D₁ रथाचूर्णपराक्रमः.

18 Ds om. 18 (cf. v. l. 14). —^a) B Dc₁ Dn₁
D₃ T G₂-4 M₂-s तु तं (for ततः). —^b) G₂ M₂-s
तूर्णम् (for भूमिम्). B Dc₁ Dn₁ D₂ अवर्त्तयत्; Dn₂
D₃-5. 7. 8 अ(D₃ उ)पाहरत् (for अपातयत्). Ś K (K₅
missing) D₁ रथाचूर्णमवातरत्. —^c) Some MSS.
निश्चसंतं. D₃ (sup. lin. as in text) तथा (for यथा).

19 ^a) Ś₂ K₁. 2 Dn₁ G₁ M₁. 2. 4 यथा; G₂ तदा
(for यदा). Ds च (for स). D₃ यद्योपकृष्टः स
रथान्. —^b) K₁. 2 प्रति; Dn₂ S (Gs missing) युधि;
Ds बलात् (for भुवि). D₂ आसितश्चायुधो युधि; D₄.
5. 7. 8 न्यासि(D₅ 'शि)तान्यायुधानि च. —^c) Ś₂ K₁. 2
तदा (for ततो). D₃. 6 तु (for तत्). — After 19,
Ś₁ K₃ ins. an addl. colophon [Śloka No.: Dc₁
Dn₁ 19].

20 Before 20, B Dc₁ Dn₁ Ds. 5 S (Gs missing)
ins. संजय उवाच. —^a) D₄. 5. 7. 8 विधिवत्; Ds
बलिनि; G₁ M₁. 2 योगेन (for विधिना). —^b) K₄
B Dc₁ Dn₁ S (Gs missing) तेन; Dn₂ D₄. 5. 7. 8
तथा; D₂ तस्मिन्; D₃ तस्य; Ds महा (for तदा).
S (Gs missing) दुःसहे. — Ds om. 20^a-22^b. —^c)
Ds निर्मलाः (for विमलाः). —^d) S (Gs missing)
विदिश (for प्र). K₃ वा (for च).

21 Ds om. 21 (cf. v. l. 20). —^b) B₂ S (Gs
missing) शांताश्च (for प्रशान्ता). —^c) Dn₂ S (Gs

बभौ भीमो निशापाये धीमान्ध्वर्य इवोदितः ॥ २२
 हतशेषं बलं तत्र पाण्डवानामतिष्ठत ।
 अस्त्रव्युपरमाद्भृष्टं तव पुत्रजिघांसाया ॥ २३
 व्यवस्थिते बले तस्मिन्नेष्टे प्रतिहते तथा ।
 दुर्योधनो महाराज द्रोणपुत्रमथाव्रवीत् ॥ २४
 अश्वत्थामन्पुनः शीघ्रमस्त्रमेतत्प्रयोजय ।
 व्यवस्थिता हि पाञ्चालाः पुनरेव जयैषिणः । २५

अश्वत्थामा तथोक्तस्तु तव पुत्रेण मारिष ।
 सुदीनमभिनिःश्वस्य राजानमिदमब्रवीत् ॥ २६
 नैतदावर्तते राजन्मत्तं द्विर्नोपपद्यते ।
 आवर्तयन्निहन्त्येतत्प्रयोक्तारं न संशयः ॥ २७
 एष चास्त्रप्रतीघातं वासुदेवः प्रयुक्तवान् ।
 अन्यथा विहितः संख्ये बधः शत्रोर्जनाधिप ॥ २८
 पराजयो वा मृत्युर्वा श्रेयो मृत्युर्न निर्जयः ।

C. 7. 9285
 B. 7. 200. 28
 K. 7. 201. 31

missing) प्रहृष्टा (G₂ 'सन्ना'नि (for च ह°). —^d) K₁
 योधश् (for योधाश्). Dn₂ मनुजेश्वरः. B Dc₁ Dn₁
 T G₁₋₄ M₃₋₅ प्रशातेस्ते सुदु (G₁ तु दु) जये; M₁₋₂
 प्रशातेस्तेषु दुर्जये.

22 ^a D₂ om. 22^{ab} (cf. v. l. 20). —^a) D₂ विपाटे
 च; D₅ व्यपयाते (for व्यपये च). D₁ lacuna; S (G₅
 missing) तु (for च). Dn₁ D₃ G₂ तथा; T G₃₋₄
 तदा (for ततो). —^b) K₁ om. from तेज up to दितः
 (in 22^d). B₁ तमसि (for तेजसि). Ś₁ K₃ भासुरे;
 Ś₂ K₂ D₁ भास्वरे; K₁ भास्करे (for भारत). T G₁
 2.4 M तस्मिन्मसि दारुणे; G₃ तस्मिन्मविदारुणे (sic).
 —^c) D₁₋₃ महाबाहुर (for निशापाये). —^d) Ś₁ K₁₋₂
 D₁₋₃ श्रीमान्; D₄₋₅ वने; D₅ दिवि; D₇₋₈ यथा (for
 धीमान्).

23 ^a) D₂ तत्तु (for हत). Dn₂ शेष (for शेषं).
 B Dc₁ Dn₁ S (G₅ missing) तत्तु; D₅ तं तु (for तत्र).
 —^b) D₃ पांचालानाम् (for पाण्डवानाम्). Ś₂ Dn D₁
 अतिष्ठति (Dn₁ 'ते'; G₁ अधिष्ठत; G₂ व्यतिष्ठत;
 M₁₋₂ अतिष्ठतः (for 'ष्ठत). —^c) D₃ शस्त्र (for अस्त्र).
 B₁ G₁ व्युपरमद् (sic). Ś₁ K₃ हृष्टस्. B₁ अस्त्र-
 व्युपरमा ह्येवं; Dn T₁ M अस्त्रव्युपरमं दृष्टा; D₂₋₆ अस्त्रं
 व्युपरमं दृष्टा; D₁₋₅₋₇₋₈ अस्त्राभ्युपरमं दृष्टा; T₂ G₂₋₄
 अस्त्रं ह्युपरमस्मृष्टं. —^d) Ś₁ पुत्रो (for पुत्र).

24 ^a) Ś₁ K₃ व्यवस्थितो (for 'स्थिते). G₁ हते
 (for बले). —^b) Ś₁ K₃ B₂ T तदा (for तथा). D₃
 घोरे तमसि भारत. —^d) Ś₂ K₁₋₂₋₄ D₁ अभाषत (for
 अथाव्रवीत्).

25 ^a) D₁ पुनः (for पुनः). D₂ इदम् (for शीघ्रम्).
 —^b) Dn₂ om. मत्तं. S (G₅ missing) एतदस्त्रं (by
 transp.). —^c) B₂ Dc₁ Dn₁ अवस्थिता (for व्यव).
 D₁₋₇ पांचालाः. —^d) K₁ B Dc₁ D₁₋₅ S (G₅ missing)
 एते (for एव).

26 ^a) D₂ च (for तु). —^b) D₁₋₅₋₇₋₈ पुत्रेण

तव (by transp.). —^c) B₂ D₅ स (D₅ सु) दीर्घम्;
 Dn₂ G₁ M₁₋₂ स दीनम् (for सुदीनम्). Dn₂ T G₂
 अति-; D₅ अथ (for अति-). Some MSS. निश्वस्य.
 D₃ दीर्घसुप्यं च निःश्वस्य.

27 ^a) D₂ तैस्त्रु (for नैतद्). D₁₋₅₋₇₋₈ व्यावर्तते
 (for आव°). —^b) D₁ बुद्धिर्नैव; D₅ द्विर्वास्त्रं च (for
 अस्त्रं द्विर्नैव). B₂ D₃ नोपपद्यते; D₅ S (G₅ missing)
 नो (G₁₋₃ M₁₋₂ वो) पदिश्यते (for 'पद्यते). —^c) B₁₋₃
 Dc₁ Dn₁ आवृत्तं हि (Dn₁ तं) (for आवर्तयन्). Dn₂
 D₂₋₄ विहृत्येतत्; D₁ निर्हृत्येतत् (sic); D₂ हि दृष्टे;
 D₅₋₆ हि हृत्येतत्; T G₁₋₄ M₁₋₂ हि दृष्टेत; M₂₋₅ हि
 हृत्येत (for निर्हृत्येतत्). Ś₂ आवर्तयन्निहृत्येतत्; B₂
 प्रवर्तयन्निवर्तते; B₁ आवृत्तं हि निवर्तते; B₂ आवर्तनं हि
 हृत्येत; D₁₋₃ आवर्तनादि हृत्येतत्. —^d) T G₃₋₄ प्रयो-
 क्तैव; G₁ M₁₋₂ प्रयोक्ता वै (for 'कारं). M₃₋₅ प्रयोक्ता
 नात्र संशयः.

28 ^a) Dn₂ D₂₋₄₋₅ एवं; D₅ अयम् (for एष).
 D₃ अस्त्र (for चास्त्र). Dn₁ M₁ प्रतिघातं; M₁₋₂ प्रती-
 घातः (for 'घातं). —^b) T G₁₋₂₋₄ M केशवोर्यं (for
 वासुदेवः). Ś₁ K₁₋₃ D₁ प्रतापवान् (for प्रयुक्त). G₂
 केशवोर्जुनमुक्तवान्. — After 28^{ab}, S (G₅ missing)
 ins.:

1410* अस्त्रस्य तु ह्येष वेद मानुषेषु न विद्यते ।

पराव्रजो लोकानां न तदस्ति न वेति यत् ।

तदेतदस्त्रं प्रशमं यातं कृष्णस्य मन्त्रिते ।

[(L. 1) G₃₋₄ अस्य तु ह्येष वै दाता (for the prior
 half). M₃₋₅ मानुषेन्द्रो (for 'वेषु). — (L. 2) M₁
 परावशो हि (for 'वशो). — (L. 3) G₁ M तथैव (for
 तदे).]

—^c) Dn₂ D₁₋₅ अतो न; D₅ तथा च; D₇₋₈ द्वि-
 विधो (for अन्यथा). D₅ विद्वत्; D₃ [S] विद्वत् (for
 वि). M₃₋₅ transp. संख्ये (M₁ 'खे) and शत्रोः G₁
 M₁₋₂ संख्ये. Ś₁ K₃ G₁ M₁₋₂ नराधिप (G₁ M₁₋₂ 'पः)

C. 7. 8788
B. 7. 200. 29
K. 7. 201. 32

निर्जिताश्वारयो ह्येते शस्त्रोत्सर्गान्मृतोपमाः ॥ २९

दुर्योधन उवाच ।

आचार्यपुत्र यद्येतद्विरहं न प्रयुज्यते ।

अन्यैर्गुरुणा वध्यन्तामस्त्रैरस्त्रविदां वर ॥ ३०

त्वयि ह्यस्त्राणि दिव्यानि यथा स्युरुयस्वके तथा ।

इच्छतो न हि ते मुच्येत्कुद्वस्यापि पुरंदरः ॥ ३१

धृतराष्ट्र उवाच ।

तस्मिन्नस्त्रे प्रतिहते द्रोणे चोपधिना हते ।

तथा दुर्योधनेनोक्तो द्रौणिः किमक्रतोत्पुनः ॥ ३२

दृष्ट्वा पार्थार्थ संग्रामे युद्धाय समवस्थितान् ।

नारायणास्त्रनिर्मुक्तांश्चरतः पृतनामुखे ॥ ३३

संजय उवाच ।

जानन्पितुः स निधनं सिंहलाङ्गलकेतनः ।

सक्रोधो भयमुत्सृज्य अभिदुद्राव पार्षतम् ॥ ३४

अभिदुत्य च विंशत्या क्षुद्रकाणां नरर्षभः ।

पञ्चभिश्चातिवेगेन विव्याध पुरुषर्षभम् ॥ ३५

धृष्टद्युम्नस्ततो राजकुलन्तमिव पावकम् ।

द्रोणपुत्रं त्रिपथ्या तु राजन्विव्याध पत्रिणाम् ॥ ३६

सारथिं चास्य विंशत्या स्वर्णपुङ्खैः शिलाशितैः ।

हयांश्च चतुरोऽविध्यचतुर्भिर्निशितैः शरैः ॥ ३७

(for जना').

29 Gs om. from the second वा up to स्युर (in 29^b). — ^δ) B Dc1 Dn1 D1.2.8 श्रेयान् (for श्रेयो). D1.8 वा स्युः (for स्युर्न). S K1.2.4 D1 न संशयः; Ds विनिर्जयः; M3-5 हि दुर्जयः (for न ति'). — ^ε) B Dc1 Dn1 D1.8 विजिताश् (for निजि'). S K (Ks missing) निदिता ह्यनयोर्हते (sic); Ds निदिताश् रथा ह्येते. — ^d) Dn1 शत्रोस्संगो; T G2-4 शस्त्रोत्सर्गो (for 'त्सर्गान्').

30 ^δ) Ds [उ]प- (for प्र-).

31 ^a) Ds शस्त्राणि (for ह्). S K (Ks missing) D1 सर्वाणि (for दिव्यानि). Dn2 D2.3.5.7.8 त्वयि दिव्यानि चा (Dn2 व) श्त्राणि. — ^δ) D2.4 G2 तथा (for यथा). Ks [ज]श्चस् (for स्युस्). S1 (orig.) D2.4.7.8 G2 यथा (for तथा). B Dc1 Dn1 त्वय्येके चा (B1 Dn1 चा) मिताजसि; Dn2 तथा स्युरंवेके च. — ^ε) Dc1 यच्छतो (for ह'). Dn2 D1-8 हि न (by transp.). Dn1 मुच्येत (for ते मुच्येत). — ^d) B1.3-5 Dn1 संकुदोपि; B2 Dc1 संकुदो हि; Dn2 कुदो ह्यपि (for कुद्वस्यापि). — For 31^{ca}, S (Gs missing) subst. :

1411* प्रतैतान्मुमहावीर्यं शात्रवान्युदकोविद ।

— After 31, S2 ins. an addl. colophon.

32 ^δ) B2 च विधिना; D2.8 चापधिना (for चोप). D2.8 द्रोणे च विनिपातिते. — ^ε) K2 Dc1 D1.5.8 [उ]क्ते (for [उ]क्तो).

33 ^a) Dn2 D1.5.7.8 तु (for च). — ^δ) B (except B2) D (except D1) युद्धाय समुपस्थितान्. — ^ε) Ds नारायणेन (for 'यणास्त्र'). — ^d) Ds सरथान् (for चरतः). S (Gs missing) विचरंतो (M3 'स्यो') ह्यभीतवत्.

34 ^a) G1 राजन् (for जानन्). Ds स पितुः (by transp.). — ^ε) Ds स क्रोधाद्; T G2-4 सरोपो; M3-5 संकुदो (for सक्रोधो). D1.5.7.8 भृशम् (for भयम्). S K1-3 D1.3 सक्रोधो भृशमुच्छस्य (D3 'यस्य'). — ^d) N (Ks missing) सोभि- (K2 'ति') (for अभि-).

35 ^a) D2.7.8 अभिहृत्य (for अभिदुत्य). Ds सामर्षं पंचविंशत्या; S (Gs missing) तमाहं पंचविंशत्या. — D1 om. (hapl.) 35^b-37^a. — ^δ) S K (Ks missing) D1 समादेयत्; B (except B1) Dc1 Dn1 D2.5.8 T G1.3.4 M नरर्षभ (Dc1 Dn1 'भं'); G2 तथैव च (for नरर्षभः). — D2.8.8 om. (hapl.) 35^{ca}. — ^ε) D1 वेगैस्तु (for वेगेन). Ks B1-4 Dc1 Dn D3.5 पुरुषर्षभः (D3.5 'भ'). S (Gs missing) तच्चाशु भुजवेगेन विचकृतं (G1.2 M 'र्ष') शरासनं.

36 D1 om. 36 (cf. v. l. 35). Dc1 Dn1 om. 36^{ab}. — ^a) Ds धृष्टद्युम्नं ततोविध्यज्. — ^δ) D1 ज्वलतम् (for 'न्तम्'). — After 36^{ab}, Dc ins. a passage given in App. I (No. 22). Ds om. 36^c-46^a. — ^ε) S K1-3 D1 ततः पथ्या; Dn2 चतुःसथ्या (sic); D3 त्रिपथ्या च; Ds.7.8 चतुःपथ्या; G2 तु विव्याध (for त्रिपथ्या तु). — ^d) T विव्याध (for 'ध'). Ks Ds G1 पत्रिणा (for 'णाम्'). G2 त्रिपथ्या चैव पत्रिणां.

37 Ds om. 37^a (cf. v. l. 35). Ds om. 37 (cf. v. l. 36). — ^a) T G2.4 विव्याध; G1.8 M विव्याध (for विंशत्या). — ^δ) D2 स्वर्णपत्रैः (for 'पुङ्खैः'). Dn1 Ds शिलाशितैः; D1 सिताशितैः (for शिलाशितैः). — D2.4 om. 37^{ca}. — ^ε) Ds विद्धा (for उविध्यच्). — ^d) Ds च (for नि.).

विद्धा विद्वानदद्रौणिः कम्पयन्निव मेदिनीम् ।
 आदत्सर्वलोकस्य प्राणानिव महारणे ॥ ३८
 पार्षतस्तु बली राजन्कृतास्तः कृतनिश्रमः ।
 द्रौणिमेवाभिदुद्राव कृत्वा मृत्युं निवर्तनम् ॥ ३९
 ततो वाणमयं वर्षं द्रोणपुत्रस्य मूर्धनि ।
 अवाप्तुजदमेयात्मा पाञ्चालयो रथिनां वरः ॥ ४०
 तं द्रौणिः समरे कुद्वल्लादयामास पत्रिभिः ।
 विव्याध चैनं दशभिः पितुर्वधमनुस्मरन् ॥ ४१
 द्राभ्यां च सुविकृष्टाभ्यां क्षुराभ्यां ध्वजकार्षुके ।

छित्वा पाञ्चालराजस्य द्रौणिरन्यैः समार्दयत् ॥ ४२
 व्यथयत्तरथं चैनं द्रौणिश्चक्रे महाहवे ।
 तस्य चानुचरान्सर्वान्कुद्वः प्राच्छादयच्छरैः ॥ ४३
 प्रदुद्राव ततः सैन्यं पाञ्चालानां विशां पते ।
 संभ्रान्तरूपमार्तं च शरवर्षपरिक्षतम् ॥ ४४
 दृष्ट्वा च विमुलान्योधान्पृष्ट्युग्रं च पीडितम् ।
 शैनेयोऽचोदयत्तूर्णं रणं द्रौणिरथं प्रति ॥ ४५
 अष्टभिर्निशितैश्चैव सोऽश्वत्थामानमार्दयत् ।
 विंशत्या पुनराहत्य नानारूपैर्मर्षणम् ।

C. 7. 9303
 B. 7. 200. 46
 K. 7. 201. 49

38 Ds om. 38 (cf. v. l. 36). —^a Ds व्यध्वा
 व्यध्वा (sic). S K (Ks missing) D1-4.7.8 ततो;
 Dn1 नदन्; T G2-1 पुनर् (for [अ]नदन्). K2.4 Dn2
 D3.4 T G2-1 द्रौणिः. Ds अविध्यत ततो द्रौणिः. —^o
 B (except B5) Dc1 Dn D2.4.5 आददे; D3 प्राददत्
 (for आद). —^d S1 Ks महाहवे (for रणे).

39 Ds om. 39 (cf. v. l. 36). —^a B1 च (for
 तु). S1 Ks रणे; D2 बलाद् (for बली). S (Gs
 missing) पुनश्च पार्षतो राजन्. —^b M3-5 कृतास्तं (for
 'स्तः'). S K1-3 D1 जित (for कृत). K2.4 B Dc1 Dn
 D2-5.7.8 निश्रयः; some MSS. निश्रमः. —^d K2
 D1.5.7.8 कृत्वा मृत्युः; B Dc1 Dn1 D1 M3-5 मृत्युं कृत्वा
 (by transp.).

40 Ds om. 40 (cf. v. l. 36). —^a Ds om.
 मयं.

41 Ds om. 41 (cf. v. l. 36). —^a Ks B
 (except B5) Dn2 कुद्वः; T G2-1 M1 वीरं; G1 M1.3
 राजन्; M3.5 वीरश्च (for कुद्वश्च). —^d Ds पुनर्वि-
 व्याध चाष्टभिः.

42 Ds om. 42 (cf. v. l. 36). —^a S1 सुविशिष्टा-
 भ्यां; K3.4 B Dc1 Dn D1.5.7.8 T1 सुवि (Dn2 स वि)-
 सृष्टाभ्यां; T2 G1-3 M स (G1.3 M सु) विमुद्राभ्यां (for
 सुविकृष्टाभ्यां). D2 द्वाभ्यां राजन्विमुद्राभ्यां. —^b S1 Ks
 मल्लाभ्यां; D1.5 धुद्राभ्यां; D3 एकैके; G1 M शराभ्यां
 (for क्षु). Dn1 कार्मुकं (for 'के). D2 धुद्रकाभ्यां
 हि कार्मुकं; T2 G1-4 ध्वजं कार्मुकमेव च. —^o S K1-3
 D1 भित्त्वा (for छित्वा). S (except G2; G5 missing)
 पुत्रस्य (for राजस्य). —^d B2.4 S (Gs missing)
 सम (B2.4 'मा) र्पयत्; D2 समर्पयेत्; D1.5.7 तमर्दयत्;
 Ds तु मर्दं (for समार्दं).

43 Ds om. 43 (cf. v. l. 36). —^a M3-5 हयं
 (for रथं). K2 B1 Dn2 D2.4.7.8 चैव; Ds चक्रे
 (for चैनं). —^b Ds अन्यैर् (for चक्रे). S1 महारणे;
 Dc1 'रथः (for 'हवे). —^o D1 चानुचरः; D2 तान-
 वरान् (for चानुचं). —^d S2 K1.2 D1.4.5 प्रच्छाद-
 यन् (K1.2 D1 'त्); B Dc1 Dn1 प्राद्रावयन्; D1.3
 प्रा (D2 प्र) द्रावयन् (for प्राच्छादयत्). S (Gs missing)
 द्रौणिव्याधच्छादयन्.

44 Ds om. 44 (cf. v. l. 36). —^a B Dc1 Dn1
 S (Gs missing) ततः प्रदुद्रावे सैन्यं; D2 तदुद्रावयत्
 सैन्यं (sic); Ds तं दुद्राव ततः सैन्यं. —^b Ds D1 पंचा-
 लानां; D2 महात्मनां. B4 भयार्तं सर्वतोदिशं. —^o B1.2.5
 संभ्रस्त (for संभ्रान्त). S K (Ks missing) D1 रूपमात्रं
 (for रूपमार्तं). S2 K2 तु (for च). S (Gs missing)
 संभ्रांतमार्तरूपं च. —^d D1.5.7.8 परिक्षितं (for 'क्ष-
 तम्). B1-3.5 Dc1 Dn1 न परस्परमैक्षत; B1 S (Gs
 missing) परस्परमैक्षत; D2.3 शरवर्षं प्र (D2 'पंम)-
 तिक्षते.

45 Ds om. 45 (cf. v. l. 36). —^a K2.4 B
 Dc1 Dn D3 T G1-4 M1.2.4 तु (for च). D3 घोराद्;
 G1 M यौधान् (for यो). S K1-3 D1 दृष्ट्वा च विमु-
 लं सैन्यं. —^b B1 पार्षतं; G2 मोहितं (for पीडितम्).
 —^o S2 चोदयस्; D2 [s]चालयत्; D3 [s]द्राव;
 D1.3 [s]नोद (for sचोदं).

46 Ds om. 46 (cf. v. l. 36). —^a B1.2.5 Dc1
 Dn1 D2-3.7.8 G1 M अष्टाभिर् (for अष्ट). S2 T G3.4
 M3-5 चापि; B Dc1 Dn1 G1.2 M1.3 बाणैः (for चैव).
 —^b B Dc1 Dn1 D1 G1 अश्वत्थामानम् (for सोऽ-
 श्वत्था). T G1-4 M3-5 नर्दयत् (for नार्दं). —^o

C. 7. 8304
B. 7. 200. 47
K. 7. 201. 49

विष्याध च तथा स्रतं चतुर्भिश्चतुरो हयान् ॥ ४६
सोऽतिविद्धो महेष्वासो नानालिङ्गैर्मर्षणः ।
युयुधानेन वै द्रौणिः प्रहस्तत्वाक्यमब्रवीत् ॥ ४७
शैनेयाभ्यवपत्तिं ते जानाम्याचार्यघातिनः ।
न त्वेनं त्रास्यसि मया ग्रस्तमात्मानमेव च ॥ ४८
एवमुक्त्वा कर्करश्म्याभं सुपर्वाणं शरोत्तमम् ।
व्यसृजत्सात्वते द्रौणिर्वज्रं वृत्रे यथा हरिः ॥ ४९

स तं निर्भिद्य तेनास्तः सायकः सशरावरम् ।
विवेश वसुधां भित्त्वा श्वसन्त्रिलमिवोरगः ॥ ५०
स भिन्नकवचः शूरस्तोत्रादितं इव द्विपः ।
विमुच्य सशरं चापं भूरित्रणपरिस्रवः ॥ ५१
सीदद्बुधिरसिक्तश्च रथोपस्थ उपाविशत् ।
सूतेनापहतस्तूर्णं द्रोणपुत्राद्रथान्तरम् ॥ ५२
अथान्येन सुपुङ्गेन शरेण नतपर्वाणा ।

Śs K₂ आहृत्य; K₁ आहृत्य; G₂ आविष्ट (for 'हृत्य').
—^d) K₁ Dn₂ अमर्षणं; B Dc₁ Dn₁ D₇ 3 अमर्षणः;
D₁ 'पैणैः' (for 'पणम्'). — D₈ om. (hapl.) 46^e-47^b.
—^e) D₂ 4 विष्याधे (D₁ 'धे'); T G₂ विष्याध (for 'ध').
Ś K (K₅ missing) D₁ ततः (for तथा). — After
46, K₁ Dn₂ D₁ 5 ins. a passage given in App. 1
(No. 23).

47 D₈ om. 47^{ab} (cf. v. l. 46). D₈ reads 47-48
after line 32 of App. 1 (No. 23). —^a) B₅ सोपि
(for सोऽति-). —^b) D₁-n G₁ M₁ 2 रूपैर् (for
लिङ्गैर्). —^c) K₃ D₂-8 युयुधानं ततो (K₃ 'नमथो';
D₈ 'ने तु वै' द्रौणिः).

48 For the sequence in D₈, cf. v. l. 47. —^a)
K₁ [अ]स्ववपत्तिं (sic); K₄ B Dc₁ Dn₁ D₂ 3 6 [अ]भ्युप-
पत्तिः; Dn₂ [अ]भ्युपपत्तिः; D₁ 5 7 8 [अ]भ्युपपत्ते (for
[अ]भ्यवपत्तिं). Ś K₁ 3 D₁ 4 5 7 8 त्वां; K₂ त्वं; Dc₁
Dn₁ तु (for ते). G₃ शैनेयेनाभ्यवपत्तिं ते (hypermetric).
—^b) K₂ Dn₁ जानासि (for 'मि'). Ś K₃ Dn₂ D₁.
4 5 7 8 घातिनः; Ś K₁ 2 B₁ 5 D₈ घातिनीं; K₄ B₂ 3
D₂ 6 G₁ M₁ 2 घातिनि (for घातिनः). —^c) Ś K₁-3
D₃ न त्वेव (K₁ 'वं'); K₄ B Dc₁ Dn D₂ न चैनं; D₁
नन्वेवं; D₈ G₂ M₂ 4 न त्वेनं; D₈ नन्वेनं (for न त्वेनं).
D₇ 8 त्रास्यसि; M₅ त्रास्यसि (for त्रास्यसि). T G₂ 4
न त्वेवं (G₃ त्वेनं; G₄ त्वेनं) मृत्युना वेसि. —^d)
D₁ 4 5 7 8 व्रस्तम् (for व्रस्तम्). Ś K₃ lacuna for
आत्मानम्. — After 48, N (except D₈; K₅
missing) T₁ ins.:

1412* शपेऽऽत्मनाहं शैनेय सत्येन तपसा तथा ।
अहत्वा सर्वपाञ्चालान्यथा शान्तिमवामुग्राम् ।
यद्वलं पाण्डवेयानां वृष्णीनामपि यद्वलम् ।
क्रियतां सर्वमेवेह निहनिष्यामि सोमकात् ।

[(L. 1) K₂ (marg.) B₅ Dn₂ D₃ T₁ स्वयं शपेयं;
Dn₁ शपेऽवाह; D₂ शपे ममाह; D₄ 5 7 शपेयं मम; D₈

व्यनयं मम (for शपेऽऽत्मनाहं). D₁ 7 8 सत्येन शैनेय (by
transp.); D₅ सैन्येन शैनेयं. — (L. 2) D₁ पंचालान्
(for पाञ्चालं). B Dn₂ D₁ 2 3 4 5 7 8 T₁ यदि; Dc₁ Dn₁
D₃ न हि (for यथा). K₁ 2 4 Dn₂ अवाप्त्यात्; B₁ 3-5
Dc₁ Dn₁ D₁ अहं लभे; B₂ उपालभे (for अवाप्त्यात्).
— (L. 3) D₁ om. the prior half. Ś K₁-3 D₁ 7 8
कृतं; Ś₂ कृतं (for वलं). — (L. 4) D₁ सर्व- (for
सर्वम्). Ś₂ एवाहं; K₂ एवं हि; D₁ समरे (for एवेह).
D₅ क्रियतां समरे सर्वे (for the prior half). K₄ साय-
कान् (for सोमं). B₁ निहनिष्येपि सोमकान्; Dn₁ D₁ 5
7 8 हनिष्यामि ससोमं (for the post. half).]

49 Before 49, Ś K (K₅ missing) Dn₂ D₁ 3 7 8
ins. संजय उवाच. —^a) K₁ रथ्याभं; B₁ Dc₁ Dn₂ D₂.
5 7 8 रथ्याभं (for रथ्याभं). D₈ ततोर्करश्मिप्रतिभं.
—^b) B (except B₅) Dc₁ Dn₁ सुतीक्ष्णं तं; G₁ सुव-
र्माणं; M₅ (sup. lin.) सुवर्माणं (for सुपर्वाणं). G₁
M₁ 2 सुतेजसं (for शरोत्तमम्). —^c) K₂ व्यजुंभत् (for
व्यसृजत्). B₂-4 Dc₁ Dn₁ G₁ M₃ 5 सायकौ; B₅
पार्षते; D₈ T G₃ M₄ सायके (M₁ 'केर'); G₁ 2 M₁ 3
सत्यके (for सात्वते).

50 ^a) Ś K₁-3 D₁ स तु; D₂ ततो (for स तं).
D₁ तेनास्तः; D₂ तेनासौ; D₁ 5 तेनाशु; G₁ M₁ 2
शैनेयं (for तेनास्तः). —^b) D₈ सायकेः (for सायकः).
Ś₂ lacuna; D₈ स (for सः). D₂ 8 शरासनं; T
G₃ M₃-6 वरः (for वरम्). D₁ 5 सशरं सश (D₈ स
शरासनं. —^c) D₂ तूर्णं (for भित्त्वा). —^d) D₈ S
(G₅ missing) श्वसन्त्रिलमिवोरगः.

51 ^a) B₄ प्र- (for स). —^b) D₈ तोब्राहत इवा-
दितः. —^c) Dn₁ विमुच्य (for विमुच्य). G₂ विमुच्य
सशरावारं. —^d) B परिश्रुतः; Dn D₃-5 7 8 श्रवः
(for 'स्वव'). D₈ मुष्टिदेशान्महारथः.

52 ^a) Ś K₃ दिग्धस्तु (K₅ 'श्च'); Ś₂ सक्तश्च; D₈

आजघान भ्रुवोर्मध्ये धृष्टद्युम्नं परंतपः ॥ ५३
 स पूर्वमतिविद्वश्च भृशं पश्चाच्च पीडितः ।
 ससाद युधि पाञ्चाल्यो व्यपाश्रयत च ध्वजम् ॥ ५४
 तं मत्तमिव सिंहेन राजन्कुञ्जरमर्दितम् ।
 जवेनाभ्यद्रवञ्चूराः पञ्च पाण्डवतो रथाः ॥ ५५
 किरीटी भीमसेनश्च वृद्धक्षत्रश्च पौरवः ।
 युवराजश्च चेदीनां मालवश्च सुदर्शनः ।

पञ्चभिः पञ्चभिर्वाणैरभ्यघ्नन्सर्वतः समम् ॥ ५६
 आशीविषामैर्विशद्भिः पञ्चमिथापि ताञ्छरैः ।
 चिच्छेद युगपद्द्रौणिः पञ्चविंशतिसायकान् ॥ ५७
 सप्तमिश्च शितैर्वाणैः पौरवं द्रौणिरार्दयत् ।
 मालवं त्रिमिरेकेन पार्थ पङ्क्तिर्वृकोदरम् ॥ ५८
 ततस्ते विव्यधुः सर्वे द्रौणिं राजन्महारथाः ।
 युगपच्च पृथक्चैव रुक्मपुङ्खैः शिलाशितैः ॥ ५९

C. 7. 9335
B. 7. 200. 78
K. 7. 201. 80

G₁ 3. 4 M -रक्तश्च (for -सिक्तश्च). D₈ आसीद्बुधिरसिक्तांग-
 —⁶) G₂ इवाविशत् (for उपावि). — B₁ om. 52⁷.
 —⁸) Ś₁ स तेन (for सूतेन). S (G₅ missing) दूरं
 (for तूर्णं). D₈ तं सूतोपाहरत्तूर्णं. —⁹) D₁ D₂
 अनंतरं; D₂ रथांतरे (for रथान्तरम्).

53 ^a) D₂ D₃ स- (for सु-). D₈-3 तस्मिन्नपहृते
 द्रौणिः. —⁶) K₂ 4 B D₁ D₂ 3 T [आ]नत-; D₈
 शित- (for नत-). —⁸) D₈ संमर्दितो (for आजघान).
 K₂ D₂ भ्रुवोर (sic) (for भ्रु-). —⁹) D₈ G₄ धृष्टद्युम्नः
 (for 'द्युम्न-). D₂ 1 परंतप.

54 D₈ om. 54^a-56^b. —^a) D₃ अभि- (for अति-).
 D₃ तु (for च). D₂ 5 स पूर्वपरि (D₈ 'र)विद्वश्च; S
 (G₅ missing) पूर्वमेवानुवि (G₁ M 'व तु वि)द्वश्च. —⁶)
 Ś₁ K₂ D₇ 3 च (D₇ 3 स) मर्षितः; Ś₂ K₁ 2. 4 D₁ अम-
 र्षितः; D₂ 2 सुमर्दितः; D₂ 4 समर्षितः; D₃ समार्दितः;
 G₁ M₁ 2 च पीडितं (for च पीडितः). D₈ चापि प्र- (for
 पश्चाच्च). —⁸) K₁ B₁ 3. 5 D₂ [अ]थ च (B₃ स) (for
 युधि). B₂ 4 आस (B₁ विप)सादाथ पांचाल्यो; D₁
 D₂ 1 समासाद्य स पां. —⁹) Ś K₁-3 D₁ समाश्रयत;
 S (except G₁; G₅ missing) सोपाश्र' (for व्यपाश्र').
 D₁ 5. 7. 3 स; T G₃ 4 वै; M₁ 2 तं (for च). D₁
 ध्वजे (for ध्वजम्). D₃ संप्राप्याश्रयत ध्वजं.

55 D₈ 6 om. 55 (for D₃, cf. v. l. 54). —^a)
 B D₁ D₂ 1 S (G₅ missing) नागम् (for मत्तम्). —⁶)
 D₁ मर्दनं; T G₃ 4 -मर्दिना (for -मर्दितम्). B D₁
 D₂ 1 दृष्ट्वा राजञ्चरार्दितं. —⁸) M₃-3 यौधा: (for शूरा:).
 Ś₂ K₁ 2. 4 D₁ दृष्ट्वा समाद्रवञ्चूराः. —⁹) Ś₂ K₁ 2. 4
 D₁ -पांडुमहा- (for पाण्डवतो). G₁ M यौधा: (M₃-3
 शूरा:) पांचालपांडवाः.

56 D₈ om. 56^a (cf. v. l. 54). —⁶) D₈ वृद्धक्ष-
 त्रश्च (for वृद्धक्ष'). K₁ पौरवः (sic) (for पौरवः). —⁹)
 T G₂ M₁ 2. 5 मालवश्च. D₂ 2 तु (for च). — After
 56^a, K₂ (marg.). 4 B D₁ D₂ D₁ 5. 6 S (G₅ miss-

ing) ins.:

1413* एते हाहाकृताः सर्वे प्रगृहीतशरासनाः ।

वीरं द्रौणायानि वीराः सर्वतः पर्यवारयन् ।

ते विंशतिपदे यत्ता गुरुपुत्रममर्षणम् ।

[(L. 1) D₈ एवं (for एते). D₈ गृहीत- (for प्रगृ-
 हीत-). G₂ -शरादिताः. — (L. 2) D₈ G₁ 4 M₁ 3-5
 वीरा (for वीर-). D₈ वीर-; S (except M₂; G₅ miss-
 ing) शूरं (M₃ 'रा:) (for वीरा:). D₈ सर्वतः समवारयन्
 (for the post. half). — (L. 3) K₁ D₁ -यदा (for
 -ये). D₈ ते विंशतिपदे गत्वा (for the prior half). T
 G₃ अमर्षिण-]

—⁹) S (G₅ missing) आजघ्नुः (for अभ्यघ्नन्). D₈
 द्विजं; D₈ भृशं (for समम्).

57 D₈ om. 57^a. —^a) Ś₁ K₁ B D₁ D₂ 3
 विशल्या; D₈ स्वरितस् (for विशद्भिः). —⁶) D₈
 विद्युद्भिश्च (for पञ्चभिश्च). K₁ D₂ 3 तु (D₂ 3 च) शितैः;
 B₁-4 D₁ तु स ताञ्च; D₂ 1 सितान्च; D₈ चार्दितः;
 T चार्पिताञ्च; G₂ चानिताञ्च (for चापि ताञ्च). S (G₅
 missing) शरान् (for शरैः). B₃ पंचमिस्त्वथ सायकान्;
 D₈ तांश्चापि विशिखाञ्छरैः. —⁹) D₇ 3 पंचविंशतिमाशु-
 गान्.

58 ^a) K₁ B D₁ D₂ 1 तु शितैर; T G₁ 2. 4
 M₁-3. 5 चापि तं; G₂ चैव तं (for च शितैर). D₈ ततस्तु
 सप्तभिर्वाणैः; M₃ सप्तमिश्चापि सद्वाणैः. —⁶) D₂ 2 om.
 from आर्दे up to शिला (in 59^a). B₁ आद्रवत्; D₁ 3
 T G₁-4 M₁ 2 अर्दयत् (for आर्दे). D₈ पौरवो द्रौणि-
 मर्दयत्. —⁸) T G₁ 2 M मालवं. D₈ एवैनं (for
 एकेन). —⁹) D₈ पङ्क्तिः पार्थ (by transp.); D₈ शरैः
 पङ्क्तिर.

59 D₂ 2 om. up to शिला (cf. v. l. 58). —^a)
 D₈ एवं (for ततस्). — K₂ om. 59^a-60^b. —⁸) D₈
 पृथक्त्वेन (for 'क्वचैव). D₈ बाणैरेव महारथानो. —⁹)
 D₁ 7. 8 शिलीमुखैः (for शिलाशितैः).

C. 7. 9326
B. 7. 209. 79
K. 7. 201. 81

युवराजस्तु विंशत्या द्रौणिं विन्याध पत्रिणाम् ।
पार्थश्च पुनरष्टाभिस्तथा सर्वे त्रिभिस्त्रिभिः ॥ ६०

ततोऽर्जुनं पङ्क्तिराजघान

द्रौणायनिर्दशभिर्वासुदेवम् ।

भीमं दशार्धैर्युवराजं चतुर्भि-

र्वाभ्यां छित्त्वा कार्मुकं च ध्वजं च ।

पुनः पार्थं शरवर्षेण विद्धा

द्रौणिर्घोरं सिंहनादं ननाद ॥ ६१

तस्यास्यतः सुनिशितान्पीतधारा-

न्द्रौणेः शरान्पृष्ठतश्चाग्रतश्च ।

60 Śs Ks om. 60^{ab} (for Ks, cf. v. l. 59). Ks damaged for 60^{ab}. —^a) T G2-1 M1.2 युवराजं (for 'राजस्'). B Dc1 Dn D2.4-8 च (for तु). —^b) S (Gs missing) पुनर् (for द्रौणिं). T G2 विन्याध (for 'घ'). K1 D1.5 पत्रिणा; B Dc1 Dn D2.6 G1.2.4 M पत्रिभिः; G2 पंचभिः (for पत्रिणाम्). — For 60^{ab}, Ś1 D1 subst.:

1414* ततस्तानदैयन्सर्वान्द्रौणिर्गुणपदेव हि ।

—^a) Śs पुनश्च; K1 पार्थाश्च; Ds भीमश्च; T G2-1 पार्थं (for पार्थश्च). —^d) G2 पुनः (for तथा). T G2-1 सर्वास् (for सर्वे). G1 M1.2 तथा सर्वे पृथक्पृथक्.

61 ^a) Ds भीमं (for ऽर्जुनं). Ds अयोजघान; Ds अथो महात्मा; D1.8 अभ्याजघान (for अथाज). —^b) Some MSS. द्रोणायनिर् (for द्रौणा). Ds द्रोणाय-निर्विशलै रूकमुल्लैः. —^c) Dn2 भीमं दशार्धं युवराजं; Ds कृष्णार्जुनौ चापि दशार्धसंख्ये. — After 42^{abc}, N (Ks missing) T1 ins.:

1415* द्वाभ्यां द्वाभ्यां मालवपौरवौ च

सूतं विद्धा भीमसेनस्य पङ्क्तिः ।

[(L. 1) Ś1 Ks.4 मालवं; D1 'लवा (for 'लव-). Ś1 K (Ks missing, D1 तु (for च). B Dc1 Dn1 Ds.5 द्वाभ्यां द्वाभ्यां मालवं पौरवं च; Dn2 चतुर्भिर्द्वाभ्यां मालवं पौरवं तु. — (L. 2) Ks.4 Ds सुतं (for सूतं).]

—^c) D1 पार्थं च; Ds भीमं (for पार्थं). Ś1 भित्त्वा; Dn2 lacuna (for विद्धा). —^d) Ds चकार (for ननाद).

62 ^a) Ks B1-4 Dc1 Dn1 तान् (for सु). Bs Dn2

धरा वियद्द्यौः प्रदिशो दिशश्च

छन्ना वाणैरभवन्धोरूपैः ॥ ६२

आसीनस्य स्वरथं तूयतेजाः

सुदर्शनस्येन्द्रकेतुप्रकाशौ ।

भुजौ शिरश्चेन्द्रसमानवीर्य-

स्त्रिभिः शरैर्युगपत्संचकर्त ॥ ६३

स पौरवं रथशक्त्या निहत्य

छित्त्वा रथं तिलशश्चापि वाणैः ।

छित्त्वास्य बाहू वरचन्दनाक्तौ

भल्लेन कायाच्छिर उचकर्त ॥ ६४

Ds-5 G1-1 M3-5 सुशितान्; Ds निशितान् (for सुनि'). Ś K1-3 D1 तस्यास्यतः शितधारान्समंताद्. —^b) Ś1 K1.8 B1 Dn2 Ds M1.5 द्रौणिः (for द्रौणेः). D1.7.8 पार्थश्च (for चाग्र). —^c) K1 D1 धारा वियद्द्यौः (sic); T2 G1-1 M1.2 सर्वा वियद्द्यौः. M3-5 सर्वा दिशः प्रदिशो वै वियच्च. —^d) K1 D1 छित्ता (for छन्ना). K1 B1 D1-3 T2 G3 अभवद् (for 'वन्).

63 ^a) Ks B Dc1 Dn1 T1 आसन्नस्य; Ds अथासीनः (for आसीनस्य). K1.2 D1.6 स्वरथे (D1 'थेर); Dn2 स्वरथैः (for 'थं). Dn2 om. from तुम् up to छित्त्वा (in 61^b). K1.2 तूयतेजाः; K4 B Dc1 Dn1 तीव्रतेजाः; D1.8 T1 उग्रं (for तुम्). Ś1 K3 आसीनस्य स्वरथातेग्र-तेजाः; T2 G1-1 M अथास्यतस्तस्य रथे स्थितस्य. —^c) Śs K2 B1 Ds T G2-1 चन्द्र- (for चेन्द्र-). Ds T G2-1 कल्पं; M3-5 कल्पस् (for 'वीर्यस्). —^d) D1.8 repeat त्रिभिः. B1.2 धुरैर; B1 T G2-1 M1.2 धुदैर (for शरैर). Ds निश्चकर्त; T G2-1 चावकर्त (for संच').

64 Dn2 om. up to छित्त्वा (cf. v. l. 63). Ks reads 64 on marg. —^a) T2 G2-1 M1.2 शर- (for रथ-). Ś K1.8 D1 विभिद्य; Ds.5.8 [अ]भिहत्य (for नि'). Ds ततस्तूर्ण पौरवं चापि राजञ्. —^b) Ds छिन्नो रथस् (for छित्त्वा रथं). B Dc1 Dn1 D2 T1 चास्य; Ds [s]थास्य (for चापि). T2 G1-1 M रथं तथा तिल-शश्चूर्णयित्वा (G1 M 'शः संचकर्त). —^c) K1 छित्त्वा चास्य; K4 B1.3.4 Dc1 Dn D2.4.5.7.8 G1.2 छित्त्वा च; Ds छित्त्वाय; Ds चिच्छेद; T1 छित्त्वा*; G3 भित्त्वास् (for छित्त्वा). Dn2 बाहवर; Ds बाहूवर (for बाहू वर). M3-5 चन्दनाक्तौ (for 'क्तौ). —^d) Ds उच-कर्त वीर; Ds च शिरश्चकर्त (for शिर उच').

युवानभिन्दीवरदामवर्ण

चेदिप्रियं युवराजं प्रहस्य ।

वाणैस्त्वेवरावाञ्ज्वलिताग्निकल्पै-

र्विद्धा प्रादान्मृत्यवे साश्वसूतम् ॥ ६५

तान्निहत्य रणे वीरो द्रोणपुत्रो युधां पतिः ।

दध्मौ प्रमुदितः शङ्खं बृहन्तमपराजितः ॥ ६६

ततः सर्वे च पाञ्चाला भीमसेनश्च पाण्डवः ।

ष्टष्टद्युम्नरथं भीतास्त्यक्त्वा संप्राद्रवन्दिशः ॥ ६७

तान्प्रभभ्रांस्तथा द्रौणिः पृष्ठतो विकिरञ्चरैः ।

अभ्यवर्तत वेगेन कालवत्पाण्डुवाहिनीम् ॥ ६८

ते वध्यमानाः समरे द्रोणपुत्रेण क्षत्रियाः ।

द्रोणपुत्रं भयाद्राजन्दिक्षु सर्वासु मेनिरे ॥ ६९

C. 7. 9398
B. 7. 200. 131
K. 7. 201. 132

इति श्रीमहाभारते द्रोणपर्वणि एकसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १७१ ॥

65 ^a) K₁ दानवर्ण (for 'दाम'). D₈ ततो युवानं वरहेमवर्ण. — ^b) K₁ B Dc₁ Dn D₈ T₁ चेदिप्रभुं (for 'प्रियं'). D₁ पुरराजं (for युवराजं). D₁ om. (hapl.) from प्रहस्य up to साश्वसूतम् (in 65^d). K₃ B Dc₁ Dn D₈ 7 T G₁ 3.4 M₁-1 प्रसह्य; D₂ प्रहस्य; D₄ (also as in text) नरेन्द्र; G₂ प्रपश्य (for प्रहस्य). — ^c) K₁ Dc₁ Dn₂ D₂ प्रज्वलिताग्निकल्पैर्; B₁ ज्वलद-ग्निक; B₂ ज्वलिताग्निकल्पैर्; D₈ ज्वलदकचणैर्; T₂ G₂-1 ज्वलनाग्निकल्पैर्; M₁ ज्वलितेन्द्रकल्पैर् (for ज्वलिता-ग्निक). — After 65, K₁ B Dc₁ Dn D₁ 3.6 T₁ ins. a passage given in App. I (No. 24).

66 B₁ om. 66. B₁ 3 Dc₁ Dn T₁ om. 66^{ab}. — ^a) K₁ B₂ 5 S (T₁ om.; G₂ missing) तं (for तान्). D₈ वीरान् (for वीरो). — ^b) B₂ 5 वरः; D₈ 5 प्रति (sic) (for पतिः). — ^c) S₁ K₁-3 D₁ 3 प्रमुदितः (for 'दितः'). — ^d) S₁ K₁-3 D₁ नदंतम्; D₁ वदंतम् (for बृहन्तम्). Dc₁ Dn₁ अपराजितं. Dn₂ बृदंतं मम गजितैः; D₈ बृदंतं द्रौणिराहवे.

67 ^a) S₁ K₁-3 D₁ स (for च). K₄ D₈ 7 T G₁ 3 M पाञ्चाला (for पाञ्चाला). — ^b) D₂ 7 पांडवाः (for पाण्डवः). — For 67^{ab}, D₈ subst.:

1416* पाञ्चालास्तु ततः सर्वे द्रोणपुत्रशरादिताः ।

— ^c) K₁ 2 ष्टष्टद्युम्नः; D₂ 'द्युम्नो (for 'द्युम्न'). Dn₂ नये; D₂ रणे (for रथं). K₁ B Dc₁ Dn S (G₂ missing) transp. भीताः and त्यक्त्वा. D₈ ष्टष्टद्युम्नेन

सहिता. D₈ द्रुतं (for त्यक्त्वा). D₃ च प्राद्रवन्; T₂ G₃ 4 सर्वेद्रवन्; G₂ सर्वाद्रे (for संप्राद्र). D₈ भयान् (for दिशः).

68 D₈ om. 68-69. — ^a) Dn₂ corrupt; G₂ प्रभभ्रांश्च; M₁ 2.3 तान्प्रभभ्रांश्च (for 'भभ्रांश्च'). K₁ B Dc₁ Dn T G₂-4 M₃-5 ततो; D₈ रणे; G₁ M₂ तदा (for तथा). D₈ द्यूना (for द्रौणिः). — ^b) D₃ विकिरञ्च; G₄ व्यकिं (for विकिं). K₁ B₂ S (except T₁; G₂ missing) शरान् (for शरैः). — ^c) S₁ K₃ अभ्यवर्तत; D₈ 'वर्तत (for 'वर्तत). — ^d) K₂ 4 B Dc₁ Dn D₁ 2 T₁ कालयन् (for 'वत्). T₂ G₂-1 कालव (T₂ G₂ 'य')-त्परसैनिकान्.

69 D₈ om. 69 (cf. v. l. 68). — ^b) K₁ 2 क्षत्रियाः; B Dc₁ Dn₁ पार्थिवाः (for क्षत्रियाः). — ^c) K₃ 4 B₂ Dn₂ D₁ T₁ G₁ M₁ 2.4 द्रोणपुत्रः (for 'पुत्रं). — ^d) K₃ D₃ दिशः (for दिक्षु). B₂ D₁ G₁ M₁ 3 मेजिरे (for मेनिरे). K₄ Dn₂ D₁ T₁ दिशः सर्वाश्च मेजिरे.

Colophon om. in D₁; K₅ G₅ missing. — Sub-
parcan: B₁ नारायणास्त्रमोक्ष. — Day of Droṇa's
Generalship: S₂ पंचमे दिने; K₁ पंचमे युद्धदिवसे;
K₂ पंचमे दिवसे. — Adhy. name: D₈ अश्वत्थामः परा-
क्रमः. — Adhy. no. (figures, words or both): Dn₁
201; D₂ 94; T G₂ 3 195; G₁ M₁ 2 194; G₄
196; M₂-3 193. — Śloka no.: Dc₁ 13; Dn₁ 113.

१७२

C. 7. 9192
B. 7. 201. 1
K. 7. 202. 1

संजय उवाच ।

तत्प्रभयं बलं दृष्ट्वा कुन्तीपुत्रो धनंजयः ।
न्यवारयदमेयात्मा द्रोणपुत्रवधेप्सया ॥ १
ततस्ते सैनिका राजनैव तत्रावतस्थिरे ।
संस्थाप्यमाना यत्नेन गोविन्देनार्जुनेन च ॥ २
एक एव तु वीभत्सुः सोमकावयवैः सह ।
मत्स्यैरन्यैश्च संधाय कौरवैः संन्यवर्तत ॥ ३
ततो द्रुतमतिक्रम्य सिंहलाङ्गलकैतनम् ।
सव्यसाची महेष्वासमश्वात्थामानमब्रवीत् ॥ ४

172

☞ This adhy. is missing in Ks Gs (cf. v. 1. 7. 125. 14; 137. 9).

1 After the ref., Ds ins. :

1417* तान्दृष्ट्वा द्रवतः शूरान्वीभत्सुरपराजितः ।

मत्स्यैश्च सोमकैश्चैव सहितो *** मभ्ययात् ।

— Ds om. 1-3. — ^a) D1 पुत्रं (for पुत्र). B Dc1 Dn1 D3 द्रोणपुत्रं (Dn1 त्र-) जयेप्स (D3 क्ष)या.

2 Ds om. 2 (cf. v. 1. 1). — ^b) S (Gs missing) सर्वे (for नैव). — ^c) Dn2 संवार्यमाणा यत्नेन; Ds. 7. 8 स्थाप्यमानाः प्रय.

3 Ds om. 3 (cf. v. 1. 1). — ^a) S2 B (except B5) Dc1 Dn1 D2 च; T G3.4 हि (for तु). Ds. 7 विभत्सुः (sic). — ^b) D2. 4. 5. 7. 8 G1 M1.2 सोमकैर्यवैः सह; M3-5 'कान्माळवैः सह. — ^c) S2 K1.2 B2-4 Dc1 Dn D1 पौरवैः; K4 D2 G1 M1.2 कौरवान्; D3 कौतेयः; D4. 5. 7. 8 कौरव्यान्. S1 Ks Dn1 G2.4 स न्यवर्तत; Dn2 संन्यवर्तयत्; Ds संनिवर्तत.

4 ^a) K1 B1 Ds T G2-4 M3-5 अभिक्रम्य; D2. 4. 5. 7. 8 G1 M1.2 अभिद्रुत्य (for अतिक्रम्य). — ^c) Ds. 5. 6 महेष्वासो.

5 ^a) K4 वीर्यं ते (by transp.); B1. 2. 4 Dc1 Dn1 D1 विज्ञानं; B2. 5 Ds S (Gs missing) ते ज्ञा (T G2-4 स्थानं). — ^b) B Dc1 Dn1 D1 S (Gs missing) यद्वीर्यं; D2 विज्ञानं; Ds om. (hapl.) (for यज्ञानं). — ^c)

या शक्तिर्यच्च ते वीर्यं यज्ञानं यच्च पौरुषम् ।
धार्तराष्ट्रेषु या प्रीतिः प्रद्वेषोऽस्मासु यश्च ते ।
यच्च भूयोऽस्ति तेजस्तत्परमं मम दर्शय ॥ ५
स एव द्रोणहन्ता ते दर्पं भेत्यति पार्षतः ।
कालानलसमप्रख्यो द्विपतामन्तको युधि ।
समासादय पाञ्चाल्यं मां चापि सहकेशवम् ॥ ६

धृतराष्ट्र उवाच ।

आचार्यपुत्रो मानाहो बलवांश्चापि संजय ।
प्रीतिर्धनंजये चास्य प्रियश्चापि स वासवेः ॥ ७

B1. 3 Dc1 Dn1 विद्वेषो; D3 G2 यद्वेषो. S2 B1. 2 Ds G1. 2 M1-4 यच्च ते; Ds दृश्यते (for यश्च ते). K4 B5 द्वेषोऽस्मासु च यश्च (K4 'च) ते. — ^a) D2 om. च. D1 [s]पि (for स्ति). K3 D3 तत्तेजस् (by transp.); B1 Dc1 Dn1 D2. 4. 5. 7. 8 G1 M ते तेजस्; B2-5 T G3.4 तेजस्ते. S2 यच्च तेजोस्ति भूयस्तत्; Ds यच्च भूयोस्त्रवलं *** — ^c) D2-5. 7. 8 तत्परं (for परमं). K1. 2 समदर्शय (for मम दर्शय). B Dc1 Dn1 Ds T G1-4 M1-3 तत्सर्वं मयि दर्शय; M4. 5 सर्वं मयि निदर्शय.

6 Ds om. 6^{ab}. — ^a) D1 एवं; Ds एको (for एव). K1 द्रोणहर्ता; Dn2 द्रोणं हन्ता. S (Gs missing) एव द्रोणस्य हन्ता ते. — ^b) B Dc1 Dn1 D2. 4. 7. 8 S (Gs missing) भेत्यति; D4 प्राप्स्यति (for भेत्यति). — ^c) K4 B1. 2. 4. 5 Dc1 Dn D2. 3. 6 S (Gs missing) प्रख्यं; B3 प्रेक्ष्यं; D7. 8 प्रख्यौ. — ^d) B Dc1 Dn1 S (Gs missing) अंतकं युधि; Dn2 Ds. 6 'कोपमं; D7. 8 'कौ युधि (for 'को युधि). — ^e) Ds यत्तत्त्वं (for पाञ्चाल्यं). — ^f) Dn1 मां वा; Ds मम (for मां च). Ds प्रायेणैवाव केशवं. — After 6, K1 B Dc1 Dn Ds. 6 ins. :

1418* दर्पं नाशयितास्म्यद्य तवोद्धृतस्य संयुगे ।

7 ^a) K3 lacuna. S1 द्रोणपुत्रो द्विजवरो; S2 अश्व-
त्थामा गुरोः पुत्रो. — ^b) Dn2 पांडवः (for संजय).
— ^c) D7. 8 T G1. 2. 4 M चास्य; G2 चैव (for चापि).
K4 B1. 2. 4. 5 D (except D1) S (Gs missing) महा-
त्मनः (for स वासवेः). B3 प्रियश्च परमात्मनः.

8 ^a) D2. 6 अभूत् (for न भूत्). K1 भूतं पूर्वः;

न भूतपूर्वं वीभत्सोर्वाक्यं परुषमीदृशम् ।
 अथ कस्मात्स कौन्तेयः सखायं रूक्षमब्रवीत् ॥ ८
 संजय उवाच ।
 युवराजे हते चैव वृद्धक्षत्रे च पौरवे ।
 इष्वस्त्रविधिसंपन्ने मालवे च सुदर्शने ॥ ९
 वृष्टद्युम्ने सात्यकौ च भीमे चापि पराजिते ।
 युधिष्ठिरस्य तैर्वाक्यैर्मर्मण्यपि च घट्टिते ॥ १०
 अन्तर्भेदे च संजाते दुःखं संसृत्य च प्रभो ।
 अभूतपूर्वं वीभत्सोर्दुःखान्मन्युरजायत ॥ ११
 तस्मादनर्हमश्लीलमप्रियं द्रौणिमुक्तवान् ।

मान्यमाचार्यतनयं रूक्षं कापुरुषो यथा ॥ १२
 एवमुक्तः श्वसन्क्रोधान्महेष्वासतमो नृप ।
 पार्थेन परुषं वाक्यं सर्वमर्मज्ञया गिरा ।
 द्रौणिशुक्रोप पार्थाय कृष्णाय च विशेषतः ॥ १३
 स तु यत्तो रथे स्थित्वा वार्युपस्पृश्य वीर्यवान् ।
 देवैरपि सुदुर्धर्मस्त्रमात्रेयमाददे ॥ १४
 दृश्यादृश्यान्रिगणानुद्दिश्याचार्यनन्दनः ।
 सोऽमिमन्त्र्य शरं दीप्तं विधूममिव पावकम् ।
 सर्वतः क्रोधमाविश्य चिक्षेप परवीरहा ॥ १५
 ततस्तुमुलमाकाशे शरवर्षमजायत ।

C. 7. 9408
 B. 7. 201. 16
 K. 7. 202. 18

D₁ भूतपूर्वं. S₁ कथं युद्धं समभवद्; S₂ तेनोक्तं गर्हितं तस्य; K₃ lacuna; K₄ नोक्तपूर्वं तु पार्थेन; D₁ अनोक्तपूर्वं पार्थेन; S (G₅ missing) अभूतपूर्वं वीभत्सुर (G₁ M 'त्सोर). —^b) S₁ अतिकारणमीदृशः; S₂ पार्थेन कथमी. —^c) D₁ D₂ D₃ D₄ ३ च (for स). S₂ अकस्मात्स च कौन्तेयः; D₁ कथमस्मात्सकौन्तेय (sic). —^d) S₁ हतवानपि; S₂ इदमुक्तवान्; K₁ रूक्षमब्रवीत्; K₃ lacuna; B D₁ D₂ D₃ रूक्ष (B₃ व्यंग)मुक्तवान्; D₁ वाक्यमब्रवीत्; D₂ रौक्ष्यम्; D₃ परुषम् (hypermetric); S (G₅ missing) क्रूरमुक्तवान् (for रूक्षमब्रवीत्).

9 ^a) D₂ D₃ ६ T G₁ ३. १ M राजन्; G₂ चापि (for चैव). —^b) K₁ B₁ ३. ४ D₁ वृद्धक्षत्रे; D₂ वृद्धक्षत्रे (for वृद्धक्षत्रे). —^c) D₁ ५ अत्यस्त्र- (for इवस्त्र-). S (G₅ missing) बल- (for विधि-). D₂ संपाते (for संपन्ने). —^d) D₂ मालवे; some S MSS. माळवे. G₁ M₁ २ तु (for च).

10 ^a) D₁ च सात्यके; D₂ सात्वते च; D₃ सात्यके च (for सात्यकौ च). —^b) K₁ यमे चापि; D₂ भीमसेने (for भीमे चापि). D₃ निर्जिते युधि भारत. —^c) S₂ तद् (for तैर्). —^d) B₃ वि- (for च). B₁ खंडिते; D₁ घट्टिते; D₂ अर्दिते; D₃ भिद्यते; T G₂ ४ घट्टितः; G₁ M घट्टितैः. D₂ मर्मण्यभिहिते तदा.

11 ^a) S₁ K₁ ३ D₁ अंतर्भूते; D₂ अवभेदे (for अन्तर्भेदे). D₃ ३ संप्राप्ते (for संजाते). —^b) S₂ दुःखे. D₁ संसृज्य (for संसृत्य). K₁ विभो. —^c) K₁ २ D₁ ६ S (G₅ missing) अभूतपूर्वं. —^d) D₁ D₂ दुःखः; S (G₅ missing) अति- (for दुःखान्). D₃ मृत्युर (for मन्युर).

12 ^a) S₁ K₁ ३ D₁ अह्वीवन्; D₂ अश्लिष्टम्; S (G₅ missing) अशिवम् (for अश्लीलम्). —^b) D₂ अब्रवीत् (for उक्तवान्). —^c) S (G₅ missing) क्रूरं (for रूक्षं). K₁ २. ४ T G₂ ४ कापुरुषं. D₂ रूक्षं परुषया गिरा.

13 ^a) B₁ ३ D₁ D₂ च स; B₁ ५ D₁ ३ तु स; D₁ ५ तु सं- (for श्वसन्). D₂ द्रोणपुत्रस्तु संक्रोधान्. —^b) D₂ महेश्वरसमो नृपु; S (G₅ missing) 'व्वासोस-मो नृपु. —^c) D₂ om. 13^{ad}. —^d) B D₁ D₂ मर्मभिदा; D₁ 'च्छिदा; G₂ 'ज्ञया (for 'ज्ञया). —^e) D₁ ५ च कोपं (for चुकोपं). D₂ चुकोप पार्थाय नृपु; T G₁ २. ४ M चुकोप द्रौणिः पार्थाय. —^f) K₁ विशां पते (for विशेषतः). D₂ भीमाय च विशां पते; S (G₅ missing) स कृष्णा (G₂ पुत्रा) य विशां पते.

14 ^a) K₁ स तु युक्तो; D₂ १. २. ३. ४ स च (D₂ तु) यस्माद्; T G₁ २. ४ M₁ २ संयत्तो द्वै; G₃ संयुक्तोश्चै; M₃ ५ स यत्तो वै (for स तु यत्तो). S₁ K₁ २. ४ B₁ ३ D₁ D₂ रणे (for रथे). D₂ संयत्तो द्वैरथे तिष्ठन्. —^d) S₁ K₂ ४ D₁ आदधे. D₂ ४. ५ अक्षं ब्रह्म (D₁ भीम) शिरो ददे (D₂ 'धे); D₂ अक्षं ब्रह्मशिरस्ततः.

15 ^a) D₂ आददेरिगणान्संख्ये. —^b) S₂ आदिश्य; D₂ उद्यम्य (for उद्दिश्य). —^c) D₁ विधूम इव पावकः. —^d) G₂ ४ M₂ ५ क्रोधम् (for क्रोधन्). S (G₅ missing) उद्दिश्य (for आविश्य).

16 ^a) K₁ ततस्तु (hypermetric) (for ततस्). D₁ ३ तुमलम्. —^b) S (G₅ missing) विनेदुरभि (M₁ २ 'ति) संगताः (= the post. half of line 4 in 1419*). — After 16^{ab}, N (K₅ missing) ins.:

C. 7. 9410
B. 7. 101. 20
K. 7. 102. 20

ववुश्च शिशिरा वाताः सूर्यो नैव तताप च ॥ १६
चुकुशुर्दानवाश्चापि दिक्षु सर्वासु भैरवम् ।
रुधिरं चापि वर्षन्तो विनेदुस्तोयदाम्बरे ॥ १७
पक्षिणः पशवो गावो मुनयश्चापि सुव्रताः ।
परमं प्रयतात्मानो न शान्तिमुपलेभिरे ॥ १८
भ्रान्तसर्वमहाभूतमावर्जितदिवाकरम् ।
त्रैलोक्यमभिसंतप्तं ज्वराविष्टमिवानुरम् ॥ १९
शरतेजोऽभिसंतप्ता नागा भूमिशयास्तथा ।

निःश्वसन्तः समुत्पेतुस्तेजो घोरं मुमुक्षवः ॥ २०
जलजानि च सत्त्वानि दह्यमानानि भारत ।
न शान्तिमुपजग्मुर्हि तप्यमानैर्जलाशयैः ॥ २१
दिशः खं प्रदिशश्चैव भुवं च शरवृष्टयः ।
उच्चावचा निपेतुर्वै गरुडानिलरंहसः ॥ २२
तैः शरैर्द्रोणपुत्रस्य वज्रवेगसमाहितैः ।
प्रदग्धाः शत्रवः पेतुरग्निदग्धा इव दुग्धाः ॥ २३
दह्यमाना महानागाः पेतुरुर्व्या समन्ततः ।

1419* पावकाचिः परीतं तत्पार्थमेवाभिपुद्बुवे ।
उल्काश्च गगनारवेतुर्दिशश्च न चकाशिरे ।
तमश्च सहसा रौद्रं चमूमुपगतं ताम् ।
रक्षांसि च पिशाचाश्च विनेदुरभिसंगताः ।

[(L. 1) D₂ पतंगाचिः (for पावका*). S₂ तं (for तत्). D₂ D₁ पावकोचिः परीतस्तु (for the prior half). B₅ D₅ [अ]भिपुद्बुवे (for *पुद्बुवे). — (L. 2) K₂ D₁ न दिशश्च (by transp.). S₂ K₂ न च (by transp.). D₃ प्रकाशिरे. — (L. 3) D₅ D₁ D₄ ततश्च (for तमश्च). D₁ om. from द्र up to सर्वा (in 17^b). D₂ 4-6 तीव्रं (for रौद्रं). S₂ K₁-3 D₁ अवततान्; D₃ तताप (for *ततार). D₂ चमूमुपगतं तं; D₅ चमूमुपगतं च ह (for the post. half). — (L. 4) B₄ विनेदुर (for विनेदुर्). S₂ K (K₅ missing) D₁ 5 अति- (for अभि-). D₅ D₁ संघताः (for -संगताः).]

— D₄ om. 16°. — °) K₂-4 B₂ 5 D₅ D₁ D₂ 3 [अ]शिशिरा; B₁ 5 4 D₅ D₁ D₂ 5 [अ]प्यशिवा; S (G₅ missing) परुषा (for शिशिरा). — °) D₃ G₁ नाति; T G₂ 3 M नापि; G₄ नाभि- (for नैव). D₅ ह (for च).

17 D₁ om. up to सर्वा (cf. v. l. 1419*). — °) D₂ वायसाश्च; D₄ 5 देवताश्च (for दानवाश्च). D₅ तत्र (for चापि). B D₅ D₁ D₂ 5 G₁ M वायसा. (D₅ G₁ M दानवा)श्चापि चाक्रंदन् (G₁ *दुर); T G₂-4 दानवैश्चापि चाक्रंदे. — °) B₁ पार्थिव; S (G₅ missing) भारत (for भैरवम्). D₅ रक्षाणि वचनानि च. — °) S₂ K₁ 2 D₂ 3 चाभि- (for चापि). T G₁-4 M₁ 2 ववर्ष रुधिरं चंद्रो; M₃-5 रुधिरं च ववर्षेन्द्रो. — °) D₁ 5 7 3 ते तदा (for तोयदा). K₂ 4 D₂ 3 T दिवि (for [अ]म्बरे).

18 °) D₂ om. गावो. D₃ पशवः पक्षिणो गावो.

— °) K₄ B₁ 3 5 D₂ विनेदुश्च (for मुनयश्च). S₂ K₁ 2 D₁ M₃-5 सुव्रत. — °) B₁ D₅ D₁ G₂ 4 परम- D₅ ऋषयः परमात्मानो; G₁ M₁ 2 परमप्रियमापन्ना; M₃-5 परप्रियहितात्मानो.

19 °) D₂ D₅ 6 भ्रान्तं (for भ्रान्त-). D₂ D₅ सर्व-; D₅ 7 3 सत्त्व- (for -सत्त्व-). — °) K₂ 4 B₂ 4 5 D₂ 3 T G₂-4 आवर्तित- (for *जित-). — After 19^{ab}, D₃ reads 21^{ab} for the first time, repeating it in its proper place. — °) D₃ अपि (for अभि-). D₅ त्रैलोक्यमभवत्ततः; S (G₅ missing) *मभितस्तापं (G₁ M₁ 2 *त; G₄ M₁ *प-). — °) S₂ K₁ 2 D₁ ज्वराविष्टम्; D₄ *मिष्टम् (for *विष्टम्). K₄ B D₅ D₁ [अ]भवत् (for [आ]तुरम्).

20 °) S₂ शरतेजोभिः; K₃ B D₅ D₁ D₂ S (G₅ missing) अश्वतेजोभि- (for शर-). D₂ 4 5 7 3 तप्तगां (D₄ *गो) (for -संतप्ता). — °) D₂ तदा (for तथा). — °) Some MSS. निश्वसन्तः. — °) G₁ 3 4 M राक्षै (for घोरं).

21 D₃ reads 21^{ab} for the first time after 19^{ab}. — °) D₄ 5 सु-; G₁ M₁ 2 [अ]पि (for च). D₃ (first time) त्रैलोक्ये सर्वभूतानि. — °) D₅ सर्वशः (for भारत). — °) S (G₅ missing) च (for हि). — °) D₁ चेष्टानैर (for तप्य-). T G₁ 3 4 M₁ तप्यमाने जलाशये.

22 G₁ M om. 22^a-24^b. — °) D₂ च (for खं). B D₅ D₁ D₂ T G₂-4 दिग्भ्यः प्रदिग्भ्यः खाद्भ्यः. — °) K₄ भुवश्च; B D₅ D₁ सर्वतः; D₂ स्वयं च; D₅ दिवं च; T G₂-4 दिवश्च (for भुवं च). D₂ शरवृष्टिभिः. — °) T G₂-4 च संपेतुर् (for निपेतुर्वै). D₅ D₁ हि; D₃ च (for वै). — °) G₂ वेगिनः (for -रंहसः).

23 G₁ M om. 23 (cf. v. l. 22). — °) S₂ K₁

नदन्तो भैरवान्नादाञ्जलदोपमनिखनान् ॥ २४
 अपरे प्रद्रुतास्तत्र दह्यमाना महागजाः ।
 त्रेमुस्तथापरे घोरे वने दावाग्रिसंवृताः ॥ २५
 द्रुमाणां शिखराणीव दावदधानि मारिष ।
 अश्ववृन्दान्यदृश्यन्त रथवृन्दानि चाभिभो ।
 अपतन्त रथौघाश्च तत्र तत्र सहस्रशः ॥ २६
 तत्सैन्यं भगवानग्निर्ददाह युधि भारत ।
 युगान्ते सर्वभूतानि संवर्तक इवानलः ॥ २७

दृष्ट्वा तु पाण्डवीं सेनां दह्यमानां महाहवे ।
 प्रहृष्टास्तावका राजन्सिंहनादान्वितेदिरे ॥ २८
 ततस्तूर्यसहस्राणि नानालङ्घानि भारत ।
 तूर्णमाजग्निर हृष्टास्तावका जितकाशिनः ॥ २९
 कृत्स्ना ह्यश्वौहिणी राजन्सन्वसाची च पाण्डवः ।
 तमसा संवृते लोके नादृश्यत महाहवे ॥ ३०
 नैव नस्तादृशं राजन्दृष्टपूर्वं न च श्रुतम् ।
 यादृशं द्रोणपुत्रेण सृष्टमस्त्रममर्षिणा ॥ ३१

C. 7. 9425
B. 7. 201. 38
K. 7. 202. 35

ते (for तेः). —^δ Ks D2.3.5 -वेनैः (for -वेग-). S2
 वज्रवेगसमुत्थितैः; Ks B Dc1 Dn T G2-4 "वेगैः समाहताः
 (B5 "हितः); D6 वज्रेणैव समाहताः. —^ε B Dc1
 Dn1 रिपवः; T G2-4 शत्रवाः (for शत्रवः). —^δ S2
 K2.4 D1 द्रुमा इव (by transp.). — After 23, Ds
 reads 31 followed by :

1420* कृष्णार्जुनौ हतावय द्रोणपुत्रस्य मायया ।
 इति स सर्वे यो ["वैयो] धानां मतमासीत्तदानव ।

24 G1 M om. 24^{ab} (cf. v. 1. 22). Ds om. 24-28.
 —^a D3 तथा (for महा). —^ε T G1-4 M1.2
 रुवंतो (for नदन्तो). T G2.3 भैरवं नादं. —^δ Some
 MSS. -निःखनान्; B Dc1 Dn1 M3-5 -नि (B1.4 Dc1
 Dn1 M3-5 -निःखनान्).

25 Ds om. 25 (cf. v. 1. 24). —^a D2 प्रहृतास्
 (for प्रद्रु). B2-4 Dc1 Dn1 D1 नागा (for तत्र).
 —^δ B2-4 Dc1 Dn1 D1 भयत्रस्ता विशां पते. —^ε Ks
 B2-5 Dc1 Dn1 D1.2 त्रेमुदिशो यथापूर्वं (B5 यथा घोरे);
 B1 D1.3 त्रेमुस्तथा यथा घोरे; Dn2 D1.3 पेतु (Dn2
 त्रेषु) स्त्रस्ता यथा घोरा; Ds त्रेमुस्तथा महाघोरे; T G2-4
 पेतुस्तत्र महारण्ये; G1 M त्रेमुस्तत्र यथारण्ये. —^δ S
 (Gs missing) नागा (for वने).

26 Ds om. 26 (cf. v. 1. 24). S2 partly damaged
 in 26^a. —^ε D1.3 दृश्यते (for [अ]दृश्यन्त). —^δ
 K1.4 D1 चाभिभो; B1.2.5 च प्रभो; B3.4 भारत;
 Dc1 Dn1 मारिष; Dn2 D1.3 वा विभो; D2.7.8 चाभि-
 भोः (for चाभिभो). —^ε D1.3 T G2-4 आपतंति (D1.5
 'त). D2.4.5.7.8 S (Gs missing) नरोवाश्च.

27 Ds om. 27 (cf. v. 1. 24). —^a D4 सर्वं
 (for सैन्यं). Dn2 दीर्घा (sic); D2.4.5.7.8 वहिर
 (for अग्निर). B Dc1 Dn1 S (Gs missing) तत्सैन्यं
 युधि (B Dc1 Dn1 भय-) संविभं. —^δ S1 Ks सांव-

तंक; G3.4 संवर्ताग्निर (for संवर्तक).

28 Ds om. 28 (cf. v. 1. 24). D3 om. 28-30.
 G2 om. (hapl.) 28^a-30^a. Ks om. (hapl.) 28^a-31^a.
 —^δ B1 सिंहनादं; Ds दह्यमानान्. Dn2 विनेस्वरे
 (sic); D1.3 विनेदिरे.

29 Ks Ds G2 om. 29 (cf. v. 1. 28). —^a T2
 (before corr.) G1.3.4 M ततस्तूर्यनिनादोभूवानावादित्र-
 मिश्रितः. —^δ Dn1 जयकाशिनः. — After 29, Ds
 ins.:

1421* हाहाकारे ततः सैन्ये पाण्डवेयेषु भारत ।
 रथसंघाश्च दह्यन्त हयानां प्रयुतानि च ।
 तथा हयानां वृन्दानि पत्तयश्चाप्यनल्पकाः ।
 गुरुपुत्राश्चवृध्यंत [? खल्यं] मेकञ्जालमभूदलम् ।
 वस्त्रैराभरणैश्चैः केतुमिश्रोदतानलैः । [5]
 धावमानैश्च पुरुर्येदेहवदैरिवाग्निभिः ।
 नादह्यमानः पाण्डूनां कश्चित्सैन्ये व्यदृश्यत ।
 उदीर्णं द्रोणपुत्रं च दृष्ट्वा पार्थः परंतपः ।
 गाण्डीवं ज्यां च वाणांश्च सोऽनुमन्य महाबलः ।
 सज्जं प्र [? जोष] तिमं दिव्यमस्त्रं ब्राह्ममातिस्वरम् । [10]

30 Ks Ds G2 om. 30 (cf. v. 1. 28). Ds om.
 30. —^a T G1.3.4 M1.2.4 ह्यश्वौहिणी. —^δ S2
 धनंजयः (for च पाण्डवः). —^δ B D1.3 S (G2 om.;
 Gs missing) नादृश्यत; D1 दृश्यंत स.

31 Ks om. 31^a (cf. v. 1. 28). Ds reads 31
 followed by 1420* after 23. —^a Ds न च (for
 नैव). Ds युद्धं (for राजन्). —^δ Ds सृजतास्त्रम्
 सृष्टम्). D1.5 अमर्षणं. D1.8 कृतं हि कदनं महत्;
 M3-5 सृष्टे स्त्रे चाल्यमर्षिणा.

32 Ds om. 32^{ab}. —^δ K1.3 उदीरयेत्; Ks B2
 Dc1 Dn1 D1-4.7.8 T G2.4 Ms (sup. lin.) उदीरयत्;

C. 7. 9426
B. 7. 201. 36
K. 7. 202. 36

अर्जुनस्तु महाराज ब्राह्ममन्त्रमुदैरयत् ।
सर्वास्त्रप्रतिघाताय विहितं पद्मयोनिना ॥ ३२
ततो मुहूर्तादिव तत्तमो व्युपशशाम ह ।
प्रववौ चानिलः शीतो दिशश्च विमलामवन् ॥ ३३
तत्राद्भुतमपश्याम कृत्स्नामक्षौहिणीं हताम् ।
अनभिज्ञेयरूपां च प्रदग्धामस्त्रमायया ॥ ३४
ततो वीरौ महेश्वासौ विमुक्तौ केशवार्जुनौ ।
सहितौ संप्रदृश्येतां नभसीव तमोनुदौ ॥ ३५

Ds G1.2 M1.2.4 उदैरयन्. — °) B Dc1 Dn1 D2.6 S (Gs missing) प्रतिघातार्थः; Dn2 (also as in text) विघाताय (submetric). — °) K2 विदितं (for विहितं). D2.6 ब्रह्म (for पद्म).

33 °) D1.7.8 अपि तत्; Ds तत्सर्वं (for इव तत्). Ds तत्स्तु तत्तमो राजन्. — °) Ds क्षणाद्; G1 M तेजो (for तमो). Dn1 D2.4.7.8 [S] व्युपशशाम; T G2.4 [S] व्युप (for व्युप). Ds क्षणेनाभ्युपशाम ह (sic). — °) S K1-3 D1.3 आववौ (for प्र). Ds शीतो (for शीतो). — °) S1 K3 B1-4 Dc1 Dn D2-5.7.8 वभुः; Ds शुभाः (for [अ]भवन्).

34 °) G1 M1.2 ततो (for तत्र). Dc1 Dn1 D4-8 अपश्यामः. — °) G2.4 M1.2 अक्षौहिणी. D2.4.5.7.8 इमाः S (Gs missing) मृधे (for हताम्). — °) S K1.3.4 D1 ज्ञात- (for ज्ञेय-). S1 K2.4 D2 रूपं. Dn2 द्रोणपुत्रेण सहसा. — °) D2.4.5.7.8 चास्त्र- (for अस्त्र-). B Dc1 Dn S (Gs missing) तेजसा (for मायया).

35 °) Ds तौ च मुक्तौ (for ततो वीरौ). — °) Ds सहितौ (for विमुक्तौ). — °) D2.4-8 समरे (for सहितौ). S K1-3 Dn2 D1.3 समदृश्येतां; K4 B1-3.5 Dc1 Dn1 D2.4-8 प्रत्यदृश्ये (Dc1 Dn1 'युधे' तां; B1 तत्र ह' (for संप्रदृश्ये). — °) S K1.3 D1.4.7.8 तमसीव (D1 'सा च' (for नभ'). — After 35, Dn2 D2.4-8 ins.:

1422* ततो गाण्डीवधन्वा च केशवश्चाक्षताडुभौ ।

36 °) D2.4.6-8 हयौ; T G2.4 M2-8 रथः; M1 वरः (for हयः). Dn2 सपताकाध्वजहयः; G1 M2 काध्वजवरः. — °) G1 M1.2 सानुकर्षा. D1.6-8 वरायुधौ; G2.4 परायुधः (for वरा). — °) S K (Ks missing) B1-3.5 D1.5 युक्तस् (for मुक्तस्). D2.4.6-8 विमुक्तौ शरसं पाताद्; G2 प्रवभौ स रथासक्तस्. — °) D2.4.6-8 दृष्टा

सपताकाध्वजहयः सानुकर्षवरायुधः ।
प्रवभौ स रथो मुक्तस्तावकानां भयंकरः ॥ ३६
ततः किलकिलाशब्दः शङ्खभेरीरवैः सह ।
पाण्डवानां प्रहृष्टानां क्षणेन समजायत ॥ ३७
हताविति तयोरासीत्सेनयोरुभयोर्मतिः ।
तरसाभ्यागतौ दृष्ट्वा विमुक्तौ केशवार्जुनौ ॥ ३८
तावक्षतौ प्रमुदितौ दध्मतुर्वारिजोत्तमौ ।
दृष्ट्वा प्रमुदितान्पार्थास्त्वदीया व्यथिताभवन् ॥ ३९

(D1.8 तदा) शत्रुभयंकरौ.

37 °) D2.4.6-8 तृणं (for ततः). S (Gs missing) किलकिलाशब्दः. — °) B Dc1 Dn स्वनैः सह; D2.4.6-8 महाध्वनिः (D1 'नैः'); Ds S (Gs missing) विमिश्रितः; Ds महास्वनैः (for रवैः सह). — D3 om. 37°-38°. — After 37, D2.4-6 ins.:

1423* पाण्डवान्मुदितान्दृष्ट्वा सर्वानिव स्वसैनिकान् ।

दुर्योधनपुरोगास्तु कौरव्या व्यथिताभवन् ।

इत्थं द्रौणिमहेश्वासं पार्थमप्रतिमं रणे ।

युद्धायोदीर्णमनसमप्रपृच्यं सुरैरपि ।

आवृण्वानं दिशः सर्वा बाणजालैः समन्ततः । [5]

दृष्ट्वा गाण्डीवनिर्मुक्तैः शरैराशीविपोपमैः ।

आदित्यमिव दुष्येक्ष्यं दहन्तमहितात्रणे ।

[(L. 1) D2 पार्पंत; D1 पार्पंतश्च (hypermetric); Ds पार्थास्तु (for पाण्डवान्). D2 मुदितं. D2 एनांश्च (for एव रथ-). Ds स- (for स्व-). — (L. 2) D1.3 पुरो-गांश्च. D2 कौरवा. D1.5 कौरव्यान्व्यथितात्र (Ds 'ता र'णे (for the post. half). — Ds om. lines 3-4. — (L. 3) D1 इच्छे (for इत्थं). D2.4 महेश्वासः. D1 पार्थिव-प्रतिमं. — (L. 4) D1 मनसास् (for 'सन्). — (L. 5) D2 आवृण्वंत; D1 'णानां. — (L. 7) D2 दहन्तम्.]

38 Ds om. 38° (cf. v. 1. 37). D2.4.6 om. 38-41. — °) B Dc1 Dn1 Ds ह (B1.2.5 Ds हि) तत्रासीत्; S (Gs missing) च तत्रा' (for तयोरा'). — °) Dn1 अपि (for मतिः). — °) D1 उरुसा (for तरसा). B Dc1 Dn1 तम (B2-5 तेज)सा संवृत्तौ दृष्ट्वा; Ds तेजसा च पृत्तौ दृष्ट्वा; S (Gs missing) तेजसा ह्य (G1.3 M1.2 'साभ्य')धिकौ दृष्ट्वा. — °) K4 B Dc1 Dn Ds S (Gs missing) सहितौ; Ds विश्रांतौ (for विमुक्तौ).

39 D2.4.6 om. 39 (cf. v. 1. 38). — °) Dn2

विमुक्तौ च महात्मानौ दृष्ट्वा द्रौणिः सुदुःखितः ।
 मुहूर्तं चिन्तयामास किं त्वेतदिति मारिप ॥ ४०
 चिन्तयित्वा तु राजेन्द्र ध्यानशोकपरायणः ।
 निःश्वसन्दीर्घमुष्णं च विमनाश्चाभवत्तदा ॥ ४१
 ततो द्रौणिर्धनुर्न्यस्य रथात्प्रस्कन्द्य वेगितः ।
 धिग्धिकसर्वमिदं मिथ्येत्युक्त्वा संप्राद्वद्रणात् ॥ ४२
 ततः स्निग्धाम्बुदाभासं वेदव्यासमकल्मषम् ।
 आवासं च सरस्वत्याः स वै व्यासं ददर्श ह ॥ ४३

तं द्रौणिरग्रतो दृष्ट्वा स्थितं कुरुकुलोद्बह ।
 सन्नकण्ठोऽब्रवीद्वाक्यमभिवाद्य सुदीनवत् ॥ ४४
 भो भो माया यदृच्छा वा न विप्रः किमिदं भवेत् ।
 अन्नं त्विदं कथं मिथ्या मम कश्च व्यतिक्रमः ॥ ४५
 अधरोत्तरमेतद्वा लोकानां वा पराभवः ।
 यदिमौ जीवतः कृष्णौ कालो हि दुरतिक्रमः ॥ ४६
 नासुरामरगन्धर्वा न पिशाचा न राक्षसाः ।
 न सर्पयक्षपतगा न मनुष्याः कथंचन ॥ ४७

C. 7. 942
B. 7. 201. 52
K. 7. 202. 51

corrupt; D₃ दध्मंतौ (for दध्मन्तुः). D₁.s वारिजौ तदा (for 'जोत्तमौ'). — °) T G₂-4 M₁-3.5 च (for प्र-). D₂ दृष्ट्वा प्रसुदिताः पार्थात्. — °) D₂ D₃ नृशं; D₅ तथा (for [अ]भवन्).

40 D₂.4.6 om. 40 (cf. v. 1. 38). — °) D₁.s द्रौणिर्दृष्ट्वा (by transp.). — °) B D₁ D₂ D₃ एतद्; T G₂.4 M₅ न्वेतद् (for स्वेतद्).

41 D₂.4.6 om. 41 (cf. v. 1. 38). — °) S K₁-3 B₁.5 D₁ D₂ D₃ च (for तु). — °) K₁.2 D₁ ध्यानालोकः; D₅ ध्यायन्शोकः; M₁.s (sup. lin.) ध्याना-वेश- (for ध्यानशोक-). — °) Some MSS. निश्चस्नः; D₁ D₂ निश्चस्नः. — °) B₁-3 D₁ D₂ दुःखार्तश्च (for विमनाश्च). D₂ D₃ T ततः (for तदा). B₅ विमना-श्चाभ्यवर्तत. — After 41, S (G₅ missing) ins. an addl. colophon [Adhy. no.: T G₂.s 196; G₁ M₁.s 195; G₁ 197; M₃-s 194].

42 Before 42, S (G₅ missing) ins. संज्ञय उवाच. D₂ reads 42 twice (42^{as} and 42^{ad} transposed second time). D₁.s transp. 42^{as} and 42^{ad}. D₁.s repeat 42^{as} after 42^{ad}. — °) D₂ (second time). 4.5.7.3 (last two second time) अन्नस्थामा (for ततो द्रौणिर्). B D₁ D₂ (both times). 4.5.7.3 (last two second time) S (G₅ missing) त्यक्त्वा (for न्यस्य). — °) D₅.7.3 (last two first time) वेगतः. D₂ (second time). 4.7.3 (last two second time) संप्राद्वत दुर्भनाः. — K₂ om. 42^{ad}. — °) D₁.s धिग्धिक्यम्; D₁ धिग्धि-किम्; M₃-s धिग्धिग्वलम् (for 'क्सवम्'). D₃ सत्पौरुषं (for सर्वमिदं). D₂ (second time) दग्धं कृत्स्नमिदं मिथ्या; D₃ धिग्धिग्वलं च मिथ्येति. — °) D₂ (second time). 3-5 भयात् (for रणात्).

43 °) D₂ स्निग्धांबुदाकारं; D₂.4-3 स्निग्धांजन (D₂.6

'वर'इयामं. — °) S₁.2 (by corr.) K₁.3 D₅ वेदामासम्; S₂ K₂ D₁ वेदान्यासम्; K₁ B D₁ D₂ D₃ वेदा (D₂ वेदासम्; D₁ वेदेदव्यासम् (sic) (for वेद'). — °) S K (K₅ missing) D₂ D₃ वेदव्यासं (for आवासं च) and वासं (for स वै). B D₁ D₂ D₃ व्यासं द (D₁.s गच्छन्द्) दर्शं पुरतः साक्षादसंमिव (B₁-3 D₁ D₂ 'मं व्यव-; D₁.5.7.3 'ममुप- स्थितं).

44 °) D₂.4-3 व्यासं दृष्ट्वा ततो द्रौणिः. — °) K₁ B₁.5 D₂ D₃ G₁.2 M 'कुलोद्बहं. — °) B₁ (marg.) अश्रुकण्ठो; B₅ समुत्कण्ठो; T G₂-4 M वाक्पण्ठो (for सन्न). — °) S K₁-3 D₁ च; D₁ D₂ तु (for सु-). D₂.4-3 M₅ विनी (D₁ च नी; M₁ सुनी) तवत्. (for सुदीन').

45 °) B₅ सुने; S (G₅ missing) किं नु (for भो भो). D₂ S (G₅ missing) [इयं; D₃ च (for वा). D₁.5.7.3 भो भो किमेतत्संवृत्तं. — °) S (G₅ missing) दैवं वा (for न विप्रः). D₂.4-3 दैवं तु किमिदं सुने. — After 45^{as}, D₁.s ins.:

1424* पृच्छामि स्वामहं तात संदेहं तं वदस्व मे ।

— °) S₂ अन्नमिदं; S (G₅ missing) एतदन्नं (for अन्नं त्विदं). G₂.s सामकश्च (for मम कश्च). D₁.4-3 व्यतिक्रमो वा कश्चिन्मे (D₃ 'न्नो) व्यर्थमन्नं ततोभवत्.

46 °) D₂.5.6 S (G₅ missing) प्रवृत्तं हि (D₂.5.6 किं); D₃ च वृत्तं किं; D₁ एतद्वाक्यं (all hypermetrio) (for एतद्वा). — °) D₂.5 च; D₁ lacuna (for वा). D₃ पराजयः. — °) S₁ K₁.3 D₁ जीवितौ.

47 °) K₅ B D₁ D₂ D₃ नासुरा न च; K₁ नासुरः सुरः; D₁ न सुरासुर (for नासुरामर-). S₂ K₁.3 गंधर्व-; D₃ गंधर्वा न दिशश्चास्य. — °) S K (K₅ missing) D₁ पिशाचोरगराक्षसाः; D₃ न देवासुरदानवाः. — °) K₁ B₅ D₁ D₂ D₃ सर्पाः; S (G₅ missing) नाग-

C. 7. 9443
B. 7. 201. 53
K. 7. 202. 52

उत्सहन्तेऽन्यथा कर्तुमेतदस्त्रं मयेरितम् ।
तदिदं केवलं हत्वा युक्तामशौहिणीं ज्वलत् ॥ ४८
केनेमौ मर्त्यधर्माणौ नावधीत्केशवार्जुनौ ।
एतत्प्रब्रूहि भगवन्मया पृष्ठो यथातथम् ॥ ४९
व्यास उवाच ।
महान्तमेतमर्थं मां यं त्वं पृच्छसि विस्मयात् ।
तत्प्रवक्ष्यामि ते सर्वं समाधाय मनः शृणु ॥ ५०

(for सर्पः). D1. 5. 7. 8 न सर्पयक्षा नो नागा.

48 °) D2. 5-8 G1 वृथा (for सन्यथा). — °) S1 K3 अस्त्रमेतत् (by transp.). D2 उदीरितं (for मये). — °) K1 D1 यद् (for तद्). S2 K1 केवलां. S (G5 missing) तदिमं (M1 कामिकां) केवलां हत्वा. — °) S1 K2. 8 D3 युक्तम्; K1 B Dc1 Dn D2 शातम्; D1. 5. 7. 8 यावद्; D6 यत्नाद्; T G2-1 एकाम् (for युक्ताम्). G2 M1. 2 अशौहिणी. D2. 5. 6 G1 M1-1 ज्वलन्; D3 हमां; D1. 8 महत् (for ज्वलत्). — After 48, N (K5 missing) ins. :

1425* सर्वधाति मया मुक्तमस्त्रं परमदारुणम् ।

[S K1 D1 युक्तम् (for मुक्तम्).]

49 °) Dn2 D2. 4-8 मातुष- (for [ह]मौ मर्त्यः). S (G5 missing) कथं मातुष (G2 कपट) धर्माणौ. — °) T G2-1 M1-2. 5 नाधाक्षीत् (for नावधीत्). — °) D3 मे (for प्र-). — °) D3 यथा (for मया). — After 49, B Dc1 Dn D2. 4-8 ins. :

1426* श्रोतुमिच्छामि तत्त्वेन सर्वमेतन्महामुने ।

D2. 4 cont. :

1427* संजय उवाच ।

ततः समापयौ व्यासो दृष्ट्वा स्त्रं समुदीरितम् ।
तं प्राप्तं पूजयित्वा तु द्रौणिः पप्रच्छ संशयम् ।
यस्मिन्मत्तं महाक्षेत्रे न दग्धौ केशवार्जुनौ ।
केनोपायेन निर्मुक्तौ तन्मे त्वं ब्रूहि तत्त्वतः ।

[D1 om. the ref. — (L. 2) D2 तत्प्राप्तं मुंजयित्वाथ (for the prior half). — (L. 3) D2 तद् (for न). — (L. 4) D2 मुन्न (for तत्त्वतः).]

50 °) K1. 2 D1 एतद्; K1 Dn2 D2. 4. 5 एवम्; Dc1 Dn1 एनम्; D3 om. (for एतम्). S2 वा; Dn2 D1 G1 M मा (for मां). — °) K1. 2 B2. 4. 5 Dn2

योऽसौ नारायणो नाम पूर्वपामपि पूर्वजः ।
अजायत च कार्यार्थं पुत्रो धर्मस्य विश्वकृत् ॥ ५१
स तपस्तीव्रमातस्ये मैनार्कं गिरिमास्थितः ।
ऊर्ध्वबाहुर्महातेजा ज्वलनादित्यसंनिभः ॥ ५२
पष्टिं वर्षसहस्राणि तावन्त्येव शतानि च ।
अशोषयत्तदात्मानं वायुमक्षोऽम्बुजेक्षणः ॥ ५३
अथापरं तपस्तप्त्वा द्विस्ततोऽन्यत्पुनर्महत् ।

D1. 2. 4-8 T G2 यत् (for यं). Dn1 तं; D6 मां (for त्वं). D1. 5 विस्मयः; S (G5 missing) संशयात् (for विस्म-). — °) K3. 1 B Dc1 Dn D3 तं (for तत्). S (G5 missing) तं ते (T G2. 1 तत्ते; G3 ततो) हं संप्रवक्ष्यामि. — °) S2 K1-3 D1 समाहितमनाः शृणु.

51 °) M3 पुरा (for योऽसौ). — After 51^{ab}, T G2-1 M3. 5 ins. :

1428* आदिदेवो जगन्नाथो लोककर्ता स्वयं प्रभुः ।
आद्यः सर्वस्य लोकस्य अनादिनिधनोऽच्युतः ।
व्याकुर्वते यस्य तत्त्वं श्रुतयो मुनयश्च ह ।
अतोऽजययः सर्वभूतैर्मनसापि जगत्पतिः ।
तस्मादिमं जेतुकामो अज्ञानतमसा वृतः । [5]
मा शुचः पुरुषस्यात्र विद्धि तद्ब्रदिहार्जुनम् ।
तस्य शक्तिरसौ पार्थस्तस्माच्छोकमिमं त्यज ।
विश्वेश्वरोऽथ लोकादिः परमात्मा ह्यधोक्षजः ।
सहस्रसंमितादंशादेकांशोऽयमजायत ।
देवानां हितकामार्थं लोकानां चैव सत्तम । [10]

— °) D8 [ए]व (for च). D6 उत्पन्नः स हि कार्यार्थः; S (G5 missing) व्यजायत स (G3. 4 च) कार्यार्थं (T G2 सकार्यश्च; M3 स कामार्थं). — °) K4 D1 विस्मयात्; B (except B1) T विश्वशृक्; Dc1 G1 M1. 2 'सृक्; D6 धर्मवित्; G3. 4 M3-5 विश्वशृक् (for 'कृत्). G3 पुत्रो विश्वस्य विश्वशृक्.

52 °) T G2-1 परम् (for तीव्रम्). B5 आतिष्ठन्; S (G5 missing) आस्थाय (for आतस्थे). — °) K3 Dn2 D2. 4. 5. 7. 8 शि (D1 शौ) शिरं (for मैनार्कं). D3-5. 1. 8 T G1 M आस्थितः (for आस्थितः). — °) S1 ज्वलद्वादित्य-.

53 °) Dn1 D1. 1 पष्टिः; Dn2 D1-3. 5. 8 G1 पष्टि-
— °) Dn3 D1 अशोषयत्; S (G5 missing) व्यशो (for अशो). — °) D3 वायुमक्षोऽम्बुमेक्षणः; D6 'क्षः शतं

द्यावापृथिव्योर्विवरं तेजसा समपूरयत् ॥ ५४
 स तेन तपसा तात ब्रह्मभूतो यदाभवत् ।
 ततो विश्वेश्वरं योनिं विश्वस्य जगतः पतिम् ॥ ५५
 ददर्श भृशदुर्दर्शं सर्वदेवैरपीश्वरम् ।
 अणीयसामणीयांसं बृहद्भ्यश्च बृहत्तरम् ॥ ५६
 रुद्रमीशानमृषभं चेकितानमजं परम् ।
 गच्छतस्तिष्ठतो वापि सर्वभूतहृदि स्थितम् ॥ ५७

दुर्वारणं दुर्दर्शं तिग्ममन्युं
 महात्मानं सर्वहरं प्रचेतसम् ।
 दिव्यं चापमिषुधी चाददानं
 हिरण्यवर्माणमनन्तवीर्यम् ॥ ५८
 पिनाकिनं वज्रिणं दीप्तशूलं
 परश्वर्धिं गदिनं स्वायतासिम् ।
 सुभुं जटामण्डलचन्द्रमौलिं

C. 7. 8455
 B. 7. 201. 65
 K. 7. 202. 68

समाः; G₂ 'क्षोजितश्रमः.

54 ^a) Ś₂ Dn₂ D₂. 1. 5 तथापरं; D₃ ततः परं. — ^b) D₁ स्वतोन्वत्; D₁. 3 तावत् (for ततोऽन्वत्). B Dc₁ Dn₁ पुरा (for महत्). — ^a) K₁ D₁ समपूरयत्; D₃ 'पूर्यत (for 'पूरयत्).

55 D₃ reads 55 on marg. — ^a) Dc₁ Dn₁ स-
 ह्येन (for स तेन). Ś K₁. 2 D₁-6 तत्र; D₁. 3 युक्तो
 (for तात). — ^b) M₃-5 यथा (for यदा). — ^c)
 Dc₁ Dn₁ तदा; D₁ om. (for ततो). D₃ देवं; D₁. 3
 स्थाणुं; S (G₃ missing) योगी (for योनिं). — G₃
 om. 55^a-57^c. — ^a) B Dc₁ Dn₁ D₃ S (G₃ om.;
 G₃ missing) प्रभुं (for पतिम्).

56 G₃ om. 56 (cf. v. l. 55). — ^a) D₃ सुर- (for
 भृश-). Ś₂ K₁. 2 B Dc₁ D₁. 3 ० 'दुर्धर्षं (for 'दुर्दर्शं).
 — ^b) D₃ G₂ सर्वभूतैर् (for 'देवैर्). B Dc₁ Dn₁ D₃
 अभिष्टुतं (for अपीश्वरम्). Ś K (K₃ missing) D₁
 सर्वदेवेश्वरेश्वरं; Dn₂ D₂. 1. 5. 7. 8 'देवे (D₂ 'वै) शपीश्वरं;
 D₃ 'दैवतमीश्वरं. — ^c) D₁ अणियांसम्; D₁ अणीयांसम्
 (for 'यसाम्). D₁ om. from णीयांसं up to चेकितान
 (in 57^b). K₁ B Dc₁ Dn₁ D₂. 3. 5-8 अणीयांसमणुम्यश्च.
 — ^a) K₁ संवृहद्भ्यः; D₃ महद्भ्यश्च (for बृहद्). B₁-4
 Dc₁ Dn₁ D₃ बृहत्तमं; Dn₂ D₃ महत्तरं (for बृहद्).
 — After 56, Dc₁ (sec. m.) ins.:

1420* अस्तावीतसमुप्यायन्महादेवं बृहत्तरम् ।

57 G₃ om. 57^{ab} (cf. v. l. 55). D₁ om. up to
 चेकितान (cf. v. l. 56). K₁ om. 57^a-58^a. M₃ reads
 57^{ab} twice. — ^a) Dn₂ D₂ ईषानवृषभं. — After
 57^a; Ś₂ B Dc₁ (marg. sec. m.) Dn₁ D₁. 3 ins.:

1430* हरं शंभुं कपार्दिनम् ।

[Ś₂ नहं तपसः परं.]

— Dc₁ om. 57^{ab}. — ^b) K₁ D₃ चेकितानां; D₁ चकि-

तानं. D₂. 5. 7. 8 read अजं परं twice (with var.). Ś
 K₁-3 B Dn₁ D₁. 2 (second time). 3-5. 7. 8 (last three
 second time) परं (D₂ 'रे) योनिं; D₂ (first time)
 परं ययुः; D₃ (first time) परं मतिं; D₁ (first
 time) परं गतिं; D₃ (first time) पतिं गतिं; T
 G₂ अजं वरं (for अजं परम्). — ^c) K₂ Dn₁ D₂. 5. 7. 8
 च (submetric) (for वापि). Ś₁ K₁. 3 D₁. 6 ति (D₃
 पृ) ष्टतो गच्छतश्च (submetric); Ś₂ B Dn₂ D₁. 3 तिष्ठतो
 गच्छतश्च ह. — Ś K₁-3 B Dn₁ D₁-3 om. 57^d.

58 K₁ om. 58^a (cf. v. l. 57). — ^a) B₁ दुर्नि-
 वारणं (for दुर्वां). Ś₂ Dn₁ दुर्दर्शं; D₁-7 दुर्दर्शं. — ^b)
 D₃ महान्तं वै (for महारमानं). B₁ (marg. as in text)
 सर्वसहं; D₁. 5 'करं (for 'हरं). D₁. 5 विचेतसं. — ^c)
 K₁ om. from पुषी up to वीर्यम् (in 58^d). Ś B₁
 चादधानं. — For 58^{ab}, S (G₃ missing) subst.:

1431* दुर्वारणं सुदुर्धर्षं दुर्निरीक्ष्यं दुरासदम् ।

अतिमन्युं महात्मानं सर्वभूतप्रचेतसम् ।

तं देवदेवं परमाणुमीक्ष्यं

संख्ये दिव्याविषुधी जाददानम् ।

[(L. 1) T G₂-4 दुर्निरीक्ष्यं. — (L. 2) G₁ M तिग्म-
 (for अति-). — (L. 4) G₁. 2 M (except M₃) संखे.
 G₁. 2 M₃-5 चाददानं.]

59 ^a) D₁ वज्रीणं (sic). D₃ शूलदीप्तं; D₃ काल-
 दीप्तं (for दीप्तशूलं). Ś₁ K₃ पिनाकिं वज्रपाणिं दीप्तशूलं;
 Ś₂ K₁. 2. 4 पिनाकिं (K₃ धूर्जटिं) न वज्रपाणिं सशूलं; D₁
 पिनाकपाणिं वज्रपाणिं सशूलं. — K₄ om. 59^{ab}. — ^b)
 Ś₂ ३३० धं; D₂. 4. 5 परस्वधं; B Dc₁ Dn₁ 'स्वधिनं;
 Dn₁ 'स्वधीनं; D₂-3 'स्वधिं; G₃ M₃ 'स्वधं (for
 'स्वधिं). B₁-4 Dc₁ Dn₁ D₂ चायतासिं; B₃ चापपाणिं;
 D₁ स्वायतायसं; S (G₃ missing) व्यायतासिं (for
 स्वाय-). D₃ परस्वधिनं गदिनं चापि पाशिनं. — D₁
 om. 59^{cd}. — ^c) Ś K₁-3 धूर्जटिं सुभुं (K₃ 'स) लि चद्र-

C. 7. 9453
B. 7. 201. 69
K. 7. 202. 69

व्याघ्राजिनं परिधं दण्डपाणिम् ॥ ५९

शुभाङ्गदं नागयज्ञोपवीतिं

विश्वैर्गणैः शोभितं भूतसंघैः ।

एकीभूतं तपसां संनिधानं

वयोतिगैः सुष्ठुतमिष्टवाग्भिः ॥ ६०

जलं दिवं खं क्षितिं चन्द्रस्यौ

तथा वाय्वग्री प्रतिमानं जगच्च ।

नालं द्रष्टुं यमजं भिन्नवृत्ता

मौलिः; B सुभ्रं (B₁ सुभ्रं; B₁ सुभ्रं) जटिलं सुप (B₁ 'स') लिनं चंद्रमौलिः; D₀₁ शत्रुजयं जटिलं चंद्रं; D₀₁ D₂ सुयुजं सुशलिं (D₂ 'लं') शूलपाणिः; D₀₂ सभ्रं सर्वं सज-
टिलं शूलपाणिः; D₃ सुभ्रं जटिलं सुशलिनमिदुमौलिः; D₁.
6-8 सुभ्रं (D₁. 6 'भ्र') जटिलं सुशलं (D₁. 8 'लिं') शूलपाणिः;
D₂ सुभ्रवं जटिलं शूलपाणिः; T G₂-1 वभ्रं (G₂ 'भ्र') जटा-
मंडलिं (G₂ 'लं') चंद्रमौलिः; G₁ M₁. 2 सभ्रं जटिलं मेखलिं
ताम्रमौलिं. — ^a) K₁ T G₁. 3. 4 M₁. 2 परिधिः; K₁ B₂-4
D₀₂ D₂. 5 G₂ M₃ परिधिं (K₁ 'णि'); D₀₁ (marg.)
सपरिधं; D₃ M₃ (sup. lin.) परिधिं; M₄ परमं (for
परिधं).

60 ^a) D₁. 8 शुभांगदां; G₁ M शुभांगदं. S₂ K (K₅
missing) B₁. 2. 4. 5 D₀ D₁-8 G₂. 4 यज्ञोपवीतं. B₃ D₀₁
शुभांगदिनं नागयज्ञोपवीतिनं (hypermetric). — ^b) D₃
विश्वैर्गणैः. D₀ विश्वेश्वरं शोभितं विश्वसंघैः; S (G₅ miss-
ing) विश्वेशानं भूषितं भूतसंघैः. — ^c) S₂ damaged. K₄
एकभूतं. K₁ तमसां; D₁ तपसा; D₀ तपसः. — ^d)
S₁ K₃ वर्तियोगैः; K₁ वाचोतिगैः (sic); D₁ वर्तिष्णुभिः;
D₂ दासोतिगैः (for वयो). K₁ D₃ संस्तुतम् (for सुष्ठु).
S₂ स्तुर्वति यं कवय इष्टवाग्भिः; S (G₅ missing) वाचो-
धिक्कैः (M₃ 'च्छासैः') सुष्ठुतं साधु (G₁ दृष्ट; M₁. 2 मृष्ट;
M₃-5 दृष्टि) वाग्भिः.

61 ^a) B₅ दिवं जलं (by transp.). K₁ D₀₂
G₂. 4 दिशं; B₁ D₀₁ (both marg.) दिशः (for
दिवं). K₁ दिशं; D₀₁ D₁. 6 क्षितिः (for क्षितिं).
D₂. 4. 5. 7. 8 जलं क्षितिं (D₂ दिशः; D₃ दिशं) खं दिशं
(D₂ क्षितिः; D₃ क्षितिः) सूर्यचंद्रौ. — ^b) S₂ partly
damaged. D₀₂ वाय्वग्री. S₁ K₃ B D₀₁ D₀₁ C₀
प्रमि (B₁ D₀₁ 'ति') माणं (for प्रतिमानं). D₄ तथा
वाय्वनीतो प्रतीमानं जगच्च; S (G₅ missing) हुताशवा-
युप्रतिमं सु (G₂ प) रेशं. — ^c) B₁ (marg.) प्रष्टुं; D₀₂
द्रष्टुं (sic); D₁ दृष्टं (for द्रष्टुं). K₁ भिमजं (sic); B₁

ब्रह्मद्विपन्नममृतस्य योनिम् ॥ ६१

यं पश्यन्ति ब्राह्मणाः साधुवृत्ताः

क्षीणे पापे मनसा ये विशोकाः ।

स तन्निष्ठस्तपसा धर्ममीड्यं

तद्भक्त्या वै विश्वरूपं ददर्श ।

दृष्ट्वा चैनं वाञ्छनोऽनुद्धिदेहैः

संहृष्टात्मा सुमुदे देवदेवम् ॥ ६२

अक्षमालापरिक्षिप्तं ज्योतिषां परमं निधिम् ।

यमजो; D₂ यमलं; Bom. ed. यं जना (for यमजं).
S₂ B₂. 3 D₀₁ (by corr.) D₂ भिन्नवृत्तिं (S₂ [marg.] B₂
D₂ 'त्तं'); B₁ D₃ 'वृत्तो'. S (G₅ missing) नालं द्रष्टुं
भिन्नवृत्ता नरा वै. — After 61^{ab}, T G₂-1 M₃-5 ins.:

1432* ये चानृता नास्तिकाः पापशीलाः ।

[G₂ om. ये चानृता.]

— ^a) K₁ द्विपदसमृतस्य (sic); S (G₅ missing) द्विपो-
वाण्यम्* (for 'द्विपन्नममृत').

62 ^a) S₂ damaged. T G₂-1 ये (for यं). G₁ M
पश्यत्येनं (for यं पश्यन्ति). D₃ योगयुक्ताः (for साधु-
वृत्ताः). — ^b) D₀₂ D₁. 5 यं (for ये). B D₀₁ D₀
D₂ S (G₅ missing) वीतशोकाः (for ये वि). — ^c)
K₄ B₂. 3. 5 तं निष्पतंतं; B₁ D₂. 4 तं ति (B₁ नि) पतंतं;
B₁ D₀₁ D₀ D₃ तं निष्ठपतंतं (D₀₁ D₀₁ 'यांतं'); D₃ सं-
तिष्ठतंतं; D₁. 8 यत्तद्विष्टं (for स तन्निष्ठस्). D₀ तं तिष्ठतंतं
तपसां योनिमीड्यं (sic); T G₂. 1 M₁. 5 (sup. lin.) तं
निष्ठात्मा त (M₁ 'घानस्त') पसा देवमीड्यं; G₁ M₁. 2 निष्ठा-
त्मानस्तपसा देव; G₂ तं निष्ठात्मानं तपसा वेद; M₃. 5
(orig.) तं निष्ठात्मानस्तपसा देव. — After 62^{ab}, G₁
M₁. 2 ins.:

1433* नारायणो देवमेवप्रभावम् ।

— ^a) S₂ damaged. T G₂-1 M₁. 2 तं (for तद्). S₁
K₁-3 B₁. 3 D₀₁ D₀₁ D₁. 3. 6 भक्तो. — ^b) S₂ देहे (for
देहैः). — D₁. 8 read 62' twice. — ^c) K₄ B D₀₁
D₀ D₂. 3. 6 वासुदेवः; D₃ T G₁-1 M₁. 2 देवदेवः (D₃
'व'). D₁. 8 (both first time) संतुष्टावप्रगतो धर्मपुत्रः.

63 ^a) S₂ damaged. S (except G₂; G₅ missing)
दिव्य- (for अक्ष-). M₃-5 मात्य- — ^b) T G₁-1 M₁. 2
तेजसां (for ज्योतिषां). D₃ ज्योतिषां पतिमीश्वरं; M₃-5
परमं तेजसां निधिं. — D₀ om. (? hapl.) 63^{cd}. — ^c)
B (except B₂) D₀₁ D₀ S (G₅ missing) रुद्रं (for

ततो नारायणो दृष्ट्वा वन्दे विश्वसंभवम् ॥ ६३

वरदं पृथुचार्चङ्ग्या पार्वत्या सहितं प्रभुम् ।

अजमीशानमव्यग्रं कारणात्मानमच्युतम् ॥ ६४

अभिवाद्याथ रुद्राय सद्योऽन्धकनिपातिने ।

पञ्चाक्षस्तं विरूपाक्षमभितुष्टव भक्तिमान् ॥ ६५

त्वत्संभूता भूतकृतो वरेण्य

गोप्तारोऽद्य भुवनं पूर्वदेवाः ।

आविश्येमां धरणीं येऽभ्यर्क्ष-

न्पुरा पुराणां तव देव सृष्टिम् ॥ ६६

सुरासुराभ्यर्क्षःपिशाचा-

नरान्सुपर्णानथ गन्धर्वविक्षान् ।

पृथग्विधान्भूतसंघांश्च विश्वां-

स्त्वत्संभूतान्विच सर्वास्तथैव ।

ऐन्द्रं याम्यं वारुणं वैत्तपाल्यं

मैत्रं त्वाष्ट्रं कर्म सौम्यं च तुभ्यम् ॥ ६७

रूपं ज्योतिः शब्द आकाशवायुः

C. 7. 9466
B. 7. 101. 74
K. 7. 102. 78

ततो). D₁ देवो; D_{2.1} देवं; D₃ देव (for दृष्ट्वा).
—^d) S (G₃ missing) वन्दे विश्व (G₂ देव)मीश्वरं.

64 S₂ partly damaged. —^{as}) D_{2.1.2.3.7.8} सुसुदे
(for वरदं). D₂ वृषपृष्ठितं***. S (G₃ missing)
वरदं सह पार्वत्या प्रियया दयितं प्रियं. — After 64^{as}, B
D₁ D₂ D_{3.6} ins. :

1434* क्रीडमानं महात्मानं भूतसंघनैर्द्वैतम् ।

[D₂ -समावृत्तं (for -गणैर्द्वैतम्).]

—^o) B (except B₂) D₁ D_{2.1} D_{3.8} T G₂₋₁ अन्यक्तं
(for 'ग्रं). —^d) B₁ S (G₃ missing) अन्ययं (for
अच्युतम्).

65 " D₃ सोभि. (for अभि). —^b) B सोथ (for
सद्यो). K₂ B₁ D_{1.5} -निपातिने. D₃ स्वाध्यायांधकवातिने.
— For 65^{as}, S (G₃ missing) subst. :

1435* स जानुभ्यां महीं गत्वा कृत्वा शिरसि चाञ्जलिम् ।

—^o) S₁ K₃ पञ्चाक्षहस्तं (hypermetric); D_{1.2.3.7.8}
पञ्चाक्षं (D₁ 'क्षयः') स (for 'क्षस्तं). —^d) D_{1.8} बलि-
(for अभि). G₂ बुद्धिमान् (for भक्ति').

66 Before 66, K₁ (marg. sec. m.) B (except B₂)
D₁ D₂ D_{3.3.5-8} S (G₃ missing) ins. नारायण उवाच;
D₁ वासुदेव उ". —^o) T G₂₋₁ -भूता वै (for -संभूता).
K₁ भूतकृतो. K₂ B₁ D₃ वरेण्यो (B₃ 'ण्य'); D_{1.7.8}
G₁ M वरेण्या (D₃ 'ण्या'). —^b) S₂ partly damaged.
K₁ [s]स्य (for स्य). K₁ B₃ पूर्वदेव (B₃ 'व'); B₃
सर्वदेवाः (for पूर्व). D₂ D_{2.1.2.3.7.8} गोप्तारो यां (D₂
D₂ 'रोस्य) भुवन (D₂ D₂ 'न'स्यादिदेव; D₃ गोप्तारो ये
भुवनं सर्वदेवाः; S (G₃ missing) गोप्तारो ये (T G₂ 'रो-
स्य) भुवनस्यास्य गोपाः (G₁ M_{1.2.4} देवाः). —^c) S₁ K_{1.2}
D₁ प्रविश्य; D₂ अप' (for आवि'). B₁ भुवनं; G₁
M₁ 2 हरिणीं (for धरणीं). S₂ [s]श्च रक्षन्; K₁ [s]-

त्यर'; K₂ T G_{2.4} हर'; D₃ [s]मिर' (for अभ्यर').
G₂ आविश्येमां खं धरणीं हरक्षन्. —^d) D₁ नवां; D₂
om.; D₃ पुरात् (for पुरा). K₁ D_{1.6} पुराणं; K₁ B
D₁ D₂ D_{3.3} S (G₃ missing) पुराणीं (T G_{2.3} 'णी').
D₂ om.; D₃ परमे (for तव). D₂ om.; D₁ देवस्य;
G₁ M_{1.2.4} देवेश (for देव). K₁ दृष्टि; D_{1.6.7} सृष्टे;
T G_{2.3} सृष्टि; M_{3.5} सृष्टां.

67 S₂ partly damaged. —^o) D₂ नागयक्षाः; D₃
'धक्षः (sic) (for 'रक्षः). S (G₃ missing) सु' (G₂
पु) रासुरा यक्षरक्षःपिशाचा. —^d) om. 67^{as}. —^b)
K₁ D₁ नराः; D₂ D_{1.7} असुरान् (for नरान्). K₁
सुपर्वां. S (G₃ missing) नागाः सुपर्णाः सह गंधर्व-
सिद्धैः (G₁ M 'द्धाः). —^c) B₁ प्रयग्दत्तान्; B₃ प्रथ-
ग्विधान् (sic); D_{1.7} प्रथग्विधा. D₂ om. च and D₃
om. च विश्वान्. S₁ K₃ विश्वं; K_{1.2.4} D₁ विश्वे. D₂ S
(G₃ missing) पृथग्विधा भूतसंघाश्च (D₂ 'संघाः स; T G₂
'संघाश्च) विश्वे (D₃ 'व्याम्). —^d) D₃ विद्धि (for
विद्य). S₁ K₃ मा***स्त्वां; S₂ damaged; K₁
सात्मा मुहुस्त्वं; K₂ माम्मुहुस्त्वं (for सर्वास्तथैव). K₃
D₁ त्वत्संभूतान्विद्ध (D₁ 'द्धि) मां प्राहस्त्वं; D_{2.4} त्वत्संभू-
(D₁ स त्वं भू) तान्विद्धि मा ममुहुस्त्वं; D₃ त्वत्संभूतं विद्यदे
मा मुहुस्त्वं; D₃ 'तान्विद्धितान्मा मुहस्त्वं; D_{1.8} 'तानेव-
माहुर्नमस्ते; S (G₃ missing) 'ता ये मनो मोहयन्ते. —^c)
D₂ एवं (for ऐन्द्रं). D₂ प्रयाम्यं; D₃ om.; D₃ वायव्यं
(for याम्यं). K₁ वारुणि; K₂ वरुणं; D₁ वारुण्यं
(for वारुणं). D₂ om. from वैत्तपाल्यं up to तुभ्यम्
(in 67'). S₁ K (K₃ missing) D₁ वित्तपालि; D₁
D₂ D₃ वित्तपाल्यं; D₂ चापुपाल्यं (sic); D_{2.3} वैत्तपालं
(D₂ 'ळं); D₃ वैत्तपालं (sic); D_{1.8} वित्तपालं; S (G₃
missing) वैश्रवण्यं (for वैत्तपाल्यं). —^c) K₁ B₂₋₅ D₁
D₂ D₃ पैत्रं; B₁ G₁ om.; D_{2.5} पैत्र्यं; D_{1.8} पित्र्यं
(for मैत्रं). D₃ सौम्यं (for सौम्यं). D₃ च तुभ्यं; T
G₂₋₁ च रौद्रं (G₃ 'द्रौ'); G₁ M चतुर्थं (for च तुभ्यम्).

C. 7. 8468
D. 7. 201. 74
K. 7. 202. 79

स्पर्शः स्वाद्यं सलिलं गन्ध उर्वी ।

कामो ब्रह्मा ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च

त्वत्संभूतं स्थास्तु चरिष्णु चेदम् ॥ ६८

अद्भ्यः स्तोका यान्ति यथा पृथक्त्वं

ताभिश्चैक्यं संक्षये यान्ति भूयः ।

एवं विद्वान्प्रभवं चाप्ययं च

हित्वा भूतानां तत्र सायुज्यमेति ॥ ६९

— After 67, D₂ reads 7. 173. 29^a-65^b and D₁, 7. 173. 30^a-65^b.

68 D₁.s om. 172. 68^a-173. 29^a. — ^a) Ś₂ D₁ (both) partly damaged. Ś₁ K₁.s B₁ D₂.s.० शब्दम्. D₄ आकाशं. D₁.s G₁.s.३ M वायु (for वायुः). — ^b) Ś₁ K₁.s स्पर्शं स्वादे (K₁ 'लं'); K₂ स्पर्शं स्वाद्यं; D₂ स्पर्शस्त्वाद्यं; D₅.० स्पर्शस्त्वाद्यं (sic); S (G₅ missing) दिव्यं स्पर्शं (for स्पर्शः स्वाद्यं). Ś₂ K₂ D₂.s.० गंधमुर्वी (D₅ 'र्वि'); K₁ गंध गुर्वी; D₀1 संगंध उर्व्याः; D₁ गंध उर्वी (sic). — ^c) B₁-4 D₀1 D_n D₅ कालो; B₅ om.; D₄ विष्णु (for कामो). K₁ om.; B₅ ब्रह्म; S (G₅ missing) धर्मो (for ब्रह्मा). K₁ ब्रह्मणाश्च (sic); D₃ सत्यमेव. — D₃ om. 68^a-69^a. — ^d) Ś₁ K₁-s D₁ सत्त्वं भूतं; D₅ त्वं संभूतं; S (G₅ missing) त्वत्संभूताः (G₁ M 'ता'). Ś₂ D₀1 D₁.० स्थाणु; D_n1 D₅ स्थाणु (for स्थास्तु). D₅ च (for चेदम्).

69 D₁.s om. 69; D₂ om. 69^a (cf. v. l. 68). — ^a) D₁ अभ्येतया (sic); T G₁.s.३ M अद्भि (M₁.s.३ यामि) लोका (for अद्भ्यः स्तोका). Ś₁ K₃ तथा (for यथा). G₂ येमिलोका या धरा या पृथक्त्वं. — ^b) D₃ भूत्वा (for ताभिश्च). D₅ संक्षयं. — ^c) K₁.s G₁ विद्वन्. Ś₂ damaged; B₁.s (marg. as in text) D_n D₁-6 G₁.s.३ M₁-4 चाप्ययं. D₃ *जंतूनां प्रभवो *स्ययं च. — ^d) K₄ B₂.s D_n D₂.s G₁ M मत्वा भूतानां; B₁.s.३ D₀1 D_n1 महाभूः; T G₂.s त्वत्संभूतं; G₂ मत्वा संभूतं (for हित्वा भूतानां). K₄ B₂-s D₂.s S (G₅ missing) तव (for तत्र). D₅ मत्वा भूता तत्र सोऽज्योतिमेति (sic).

70 D₁.s om. 70 (cf. v. l. 68). — ^a) Ś₁ K₁-s D₄ दिव्याभिलौ; B₁ 'बुभौ; B₅ D₀1 D_n1 D₂-4 T G₂ 'सृत्तौ; D₅ 'वेत्तौ (for 'वृत्तौ). K₂ D₄ मनसौ. D₁ तौ; G₂.s द्वा (for द्वौ). — ^b) Ś₁ K₃ D₁-4 वाचः (D₃ 'चं) शाखाः; K₁.s.३ B₂ D_n D₅ वाचा शाखाः; B₁.s-5 D₀1 D_n1 D₅ बहुशाखः (B₃-s 'खाः); G₁ [अ]पां शाखां; M₂ [अ]वाकशाखां; M₅ अवाकशाखः (for अवाकशाखः).

दिव्यावृत्तौ मानसौ द्वौ सुपर्णा-

ववाकशाखः पिप्पलः सप्त गोपाः ।

दशाप्यन्ये ये पुरं धारयन्ति

त्वया सृष्टास्ते हि तेभ्यः परस्त्वम् ।

भूतं भव्यं भविता चाप्यधृष्यं

त्वत्संभूता भुवनानीह विश्वा ॥ ७०

भक्तं च मां भजमानं भजस्व

Ś₁ K (K₅ missing) B (except B₁) D_n D₁-3.३ पिप्पलाः (D₂ 'लं'); Ś₂ damaged; D₃ पिप्पली. Ś₃ K (K₅ missing) D₁ गोदाः; B₁.s D₀1 D_n D₃ G₁.s.३ M गोप्ता (D₃ G₂ 'प्ता'); T G₂.s गोपः (for गोपाः). — ^a) K₁.s दशान्यपे; D_n दश चान्ये; D₂.s.३ दिशश्चान्ये; D₃ दशाप्येन्ये; D₅ दिव्याश्चान्ये (for दशाप्यन्ये). Ś₁ K₁-s D₁ ये (for ये). Ś₂ पुरा; D_n पुरः (for पुरं). B₂ पालयति (for धार*). — ^d) K₁ सृष्टस्. K₄ B D_n D₂.s त्वं (for ते). D₁ परं. B D_n1 हि; D_n D₅ च (for त्वम्). — For 70^a, S (G₅ missing) subst.:

1436* वाचश्चार्था देवता लोकपाला

लोकानन्ये ये पुरा धारयन्ति ।

गता हि तेभ्यः परमं तत्परं च

त्वत्संभूतास्ते च तेभ्यः परस्त्वम् ।

[G₁ M read line 2 twice. — (L. 2) T G₂-4 धार (T राध) यित्वा (for 'यन्ति). G₁ M (all second time) दशाप्यन्ये ये पुरा धारयित्वा (cf. 70^a). — (L. 3) G₁ M तत्परं (for तत्परं). — (L. 4) M₃-s ये (for ते).]

— ^a) D₁.s भूत- (for भूतं). S (G₅ missing) भावि यच् (for भविता). Ś₁ K₁-s D₁ [अ]प्यदृश्यं; D₀1 D_n D₂.s T G₂-4 [अ]प्रपृष्यं; D₅ [अ]प्यधृष्यं (sic) (for [अ]प्यधृष्यं). — ^c) D₁ त्वत्संभूता. Ś₁ K₁.s भूर्वनानि; K₄ D₅ भुवनान्. Ś₁ K₂.s D₁.० विश्वा; K₁ विश्वः. S (G₅ missing) त्वत्संभूताः सप्त चेमे हि लोकाः. — After 70, G₁ M₁.s ins.:

1437* स्वतो भावाः सर्व एवाभिवृत्ताः ।

71 D₁.s om. 71 (cf. v. l. 68). — ^a) Ś₁ K₂ च मा; B₁ तु मां; M₃-s मां त्वं (for च मां). D₀1 भजनीयं; D_n1 om.; D₅ भजमानं (for भज*). D₅ यजस्व. — ^b) B₅ मा रीरितो; D_n D₄ मा रीरित्यो (D₄

मा रीरिपो मामहिताहितेन ।

आत्मानं त्वामात्मनोऽनन्यभावो

विद्वानेवं गच्छति ब्रह्म शुक्रम् ॥ ७१

अस्तौषं त्वां तव संमानमिच्छ-

न्विचिन्वन्वै सवृषं देववर्ष ।

सुदुर्लभान्देहि वरान्ममेष्टा-

नभिष्टुतः प्रतिकर्षीश्च मा माम् ॥ ७२

तस्मै वरानचिन्त्यात्मा नीलकण्ठः पिनाकधृक् ।

अर्हते देवमुख्याय प्रायच्छदपिसंस्तुतः ॥ ७३

नीलकण्ठ उवाच ।

मत्प्रसादान्मनुष्येषु देवगन्धर्वयोनिषु ।

अप्रमेयबलात्मा त्वं नारायण भविष्यसि ॥ ७४

न च त्वा प्रसहिष्यन्ति देवासुरमहोरगाः ।

न पिशाचा न गन्धर्वा न नरा न च राक्षसाः ॥ ७५

न सुपर्णास्तथा नागा न च विश्वे वियोनिजाः ।

न कश्चित्त्वां च देवोऽपि समरेषु विजेष्यति ॥ ७६

न शस्त्रेण न वज्रेण नाग्निना न च वायुना ।

नार्द्रेण न च शुष्केण त्रसेन स्थावरेण वा ॥ ७७

C. 7. 8476
B. 7. 201, 83
K. 7. 202, 88

°च्ये); Ds मरीचिनौ (for मा रीरिपो). Ds मम (for माम्). S K (Ks missing) D1 अहिताहिते च (S: 'तेषु); B Dc1 Dn अपि त्वं हि वेद्य (B: तेन); Ds अहिताहितः; Ds. 5. 6 'हितेश (for 'हितेन). B1 (marg.) मानार्हो मामपि त्वं हितेषु; S (Gs missing) प्रीत्या मां वै (Ms-s 'त्यात्मानं) लोकपितामहेश. — °) Ds om. (hapl.) from आत्मानं up to संमान (in 72^a). Ks Ds. 6 आत्मनोनन्य (Ks 'नो न न्य'योधं; B Dc1 Dn1 Ds आत्मनान (B1. 2 Dc1 Dn1 'ना'न्यभावो; Dn2 Ds 'नान- (Ds 'ना'न्ययोधं; Cd आत्मनो नान्यभावः (for 'नोऽनन्य-भावो). T G1. 3. 4 M त्वा (Ms. 5 त्व) मात्मानात्मानमनन्य-भावं; G2 त्वामात्मनामात्मभावस्वरूपं. — °) S K1. 3 विद्वान्वै; D1 'नेनं (for 'नेवं). S1 K1. 3 B1 (marg.). 3-s शुक्रं; Gs प्रकाशं (for शुक्रम्).

72 Dr. s om. 72 (cf. v. l. 68). Ds om. up to संमान (cf. v. l. 71). — °) K1. 2 Ds अस्तौषं त्वां (Ks त्वा); Dn2 अस्तौ श्रुत्वा (for अस्तौषं त्वां). Ds M1 त्वा (for त्वां). S1 Dn1 सन्मानम्; S2 K1. 2 D1 संघा; Ds समा' (for संमा). Ds इच्छति; Ds इत्थं (for इच्छन्). — °) S K1-3 D1. 3 विद्वान्सं वै (Ds तं); B Dc1 Dn1 विद्वान्वै; Ds विचितये त्वां (for विचिन्वन्वै). Ks Dn2 D1. 2. 4 T1. 2 (before corr.) सदशं; Dn1 वृषभं; Ds देववृषं; Ds स्ववृषं; Ds वरदं; Ms-s संवृतं (for सवृषं). Bs Ds. 6 देवव (Ds 'वी'र्यं; S (Gs missing) 'मीड्यं (for 'वर्य). — °) K1 सुदुर्ल-भतरं; Ds 'लभं. K1 ब्रूहि (for देहि). G2 असीष्टान् (for ममे). — °) Ks प्रतिकर्षीश्च; Ks Dn2 D1. 3. 5. 6 प्रविकर्षीश्च; B1 प्रत्य' (for प्रति). B4 त्वमेव (for च मा माम्). S K2. 3 D1 मा मा; K2. 4 Ds मायां; B1. 2. 5 Dc1 Dn मा इ; Bs मां हि; Ds मानं (for मा माम्). T G2-4 अभिष्टुतो यानकर्षीरिह त्वं; G1 M 'तः

प्रकरिष्ये महात्मन्.

73 Dr. s om. 73 (cf. v. l. 68). Before 73, MSS. ins. व्यास उवाच. — °) T Gs. 4 देवदेवः (for नील-कण्ठः). S1 Ks पिनाकधृक्; S2 Ks Ds 'भृत्; K1 प्रतापवान्. — °) S (Gs missing) विष्णवे (for अर्हते). Dn2 Ds. 4. 5 अर्हते (D2. 4 'तो) वायुदेवाय (D1 'वस्य). — °) Ds 'संयुतः (for 'संस्तुतः). G2 प्रायच्छदरमुत्तमं.

74 Dr. s om. 74 (cf. v. l. 68). D2. 4 om. the ref.; B1. 3-s Dc1 Dn1 Ds. 5. 6 S (Gs missing) सग-वान्; B2 देव (for नीलकण्ठ). S K1-2 om 74^b-75^c. — °) B Dc1 Dn1 'भोगिषु (for 'योनिषु). — °) S (Gs missing) च (for त्वं).

75 Dr. s om. 75 (cf. v. l. 68). S K1-3 om. 75^{ab} (cf. v. l. 74). — °) Ks B D (except Dn2; Dr. s om.) T G2 त्वां (for त्वा). — Ds om. 75^c-76^b. Ds transp. 75^d and 76^b. — °) S K2-4 D1 देवा; K1 B Dc1 Dn1 D2 यक्षा; G2 [अ]सुरा (for नरा).

76 Dr. s om. 76 (cf. v. l. 68). Ds om. 76^{ab} (cf. v. l. 75). — °) S K1-3 D1 न वा (for तथा). — Ds transp. 75^d and 76^b. — °) Ds विश्वे च (by transp.). Ds विश्वेश (for विश्वे वि). S K1-3 Bs D1 न यक्षा विश्वयोनिजाः; S (Gs missing) न विश्वा (Ms. 5 'क्षे' विश्वयोनयः. — °) S K1. 2 D1 तु; Ds हि (for च). Ds न दैत्या नापि देवोपि; Ds न च कश्चित्त्वां देवाः (submetric). — °) Ds विनेष्यति (for विजे).

77 Dr. s om. 77 (cf. v. l. 68). — °) Ds चास्त्रेण (for वज्रेण). — °) S (Gs missing) वारिणा (for वायुना). — °) K1 नार्द्रेण. Ks Ds शुष्केण. B Dc1 Dn D2. 4-5 G1 M1. 2 न चार्द्रेण न शुष्केण. — °) S K

C. 7. 9477
B. 7. 201. 64
K. 7. 202. 69

कश्चित्तव रुजं कर्ता मत्प्रसादात्कथंचन ।

अपि चेत्समरं गत्वा भविष्यसि ममाधिकः ॥ ७८

व्यास उवाच ।

एवमेते वरा लब्धाः पुरस्ताद्विद्धि शौरिणा ।

स एष देवश्चरति मायया मोहयज्जगत् ॥ ७९

तस्यैव तपसा जातं नरं नाम महामुनिम् ।

तुल्यमेतेन देवेन तं जानीह्यर्जुनं सदा ॥ ८०

(Ks missing) D1 नाश्मना; B1.4.5 Dc1 Dn2 T G3.4 चरेण (Dn2 न); Dn1 रसेन; D3 त्रिमुना; D5 जंगम- (for त्रसेन). K3 B (except B1) D (except D1.6; D1.8 om.) T G2-4 M3-5 च (for वा). — After 77, S (G5 missing) ins.:

1438* न हस्तेन न पादेन न काष्ठेन न लोष्ठुना ।

78 D1.8 om. 78 (cf. v. l. 68). —^a) Ś1 K3 M3-5 रुजः; K4 B2.3.5 Dn2 D2-5 T रुजां; Dc1 (by corr.) रणं (for रुजं). D5 कुर्यान्; T G1.2 M1.2 कर्तुं (for कर्ता). —^b) B5 कदाचन (for कथंचन). —^c) K1 B Dc1 Dn1 D2.6 G3 वै (for चेत्). T G1-4 M1.2.4 प्राप्य; M3.5 (inf. lin.) प्राप्ते (for गत्वा). —^d) D5 G1 M1.2 भविष्यति. Dn2 समाधिकः; D5 जया (for ममा).

79 D1.8 om. 79 (cf. v. l. 68). MSS. om. the ref. —^a) K3 लब्धा. K1 D5 S (G5 missing) एव-मादीन्व (K1 D5 मेते व) राल्लब्धा; B Dc1 Dn1 मेता-न्वराल्लब्धान् (B1.5 Dc1 Dn1 ष्वा); Dn2 एवमेते पुरा लब्धा. —^b) Dn2 D5 वरास्ते (for पुरस्ताद्). S (G5 missing) प्रसादादथ (G1 M1.2 पि) शूलिनः. —^c) Ś2 K1.2 D1 य (for स). D4 स्वरति (for चरति). —^d) G3 मोहितं (for मोहयन्).

80 D1.8 om. 80 (cf. v. l. 68). —^a) B3.5 Dc1 Dn1 D5 तपसो. S (G5 missing) जातो. —^b) D5 त्विह (for नाम). S (G5 missing) नरो नाम महामुनिः (G3 बलः). —^c) Ś2 त्वलम् (for तुल्यम्). S (G5 missing) तुल्यस्तेनैव देवेन. —^d) Ś K1.2 Dn2 D1-6 G2 त्वं (for तं). Dc1 जानीष्व; Dn1 जानीय. B3.4 Dc1 Dn1 तथा (for सदा).

81 D1.8 om. 81 (cf. v. l. 68). —^a) G3 तद् (for तात्). Ś2 K3 एवं (for एतौ). D5 भवतौ सर्व-देवानां. —^b) B1 S (G5 missing) परमावाचित्वावृषी;

तावेतौ पूर्वदेवानां परमोपचितावृषी ।

लोकयात्राविधानार्थं संजायेते युगे युगे ॥ ८१

तथैव कर्मणः कृत्स्नं महतस्तपसोऽपि च ।

तेजोमन्युश्च विद्वंस्त्वं जातो रौद्रो महामते ॥ ८२

स भवान्देववत्प्राज्ञो ज्ञात्वा भवमयं जगत् ।

अवाकर्षस्त्वमात्मानं नियमैस्तत्प्रियेप्सया ॥ ८३

शुभमौर्वं नवं कृत्वा महापुरुषविग्रहम् ।

Dc1 Dn1 परमौ भाविता; D3 परमावुदिता. — 81^a = (var.) 6. 26. 8^a. — After 81^a, S (G5 missing) ins. (cf. 6. 26. 8^b):

1439*

दानवानां वधाय च ।

धर्मसंस्थापनार्थाय.

—^a) K3 संजायेत; B1 येतां. B5 युगक्षये (for युगे युगे). D2 corrupt.

82 D1.8 om. 82 (cf. v. l. 68). —^a) K4 Dn2 D2.4.5 कर्मणा. Ś K1-3 कर्तुं; B5 कृत्वा; Dn2 D2.4.5 तृणं; D1 कर्तुर्; S (G5 missing) तात (for कृत्स्नं). —^b) D5 om. from तस्तपसो up to स्वं (in 82^c). Dc1 Dn1 [S]पि वा; D3 मुने (for अपि च). S (G5 missing) तपसो महतोपि च. —^c) T G2-4 तेजोवा-रभ्यश्च; G1 M तेजोवद्भव (M1.2 ङि)श्च (for तेजोम-न्युश्च). Ś K1-3 D1 तु (for च). Ś2 B1 Dc1 Dn1 G2 विद्वांस्त्वं; K2 विद्वंस्तु; B3-5 विद्वांस्त्वां; D5 विभ्रंस्त्वं; T विध्वस्तं; M2 विविधं (for विद्वंस्त्वं). K4 B2 Dn2 D2.3.5 तेजोमन्युं च विभ्रंस्त्वं. —^d) D1 जातौ; D4 जाते. D1 रौद्रौ; S (G5 missing) रुद्रान् (for रौद्रौ). Ś2 K1.2 D1.6 महाद्युते; Dn2 D2.4.5 मुने (for मते).

83 D1.8 om. 83 (cf. v. l. 68). —^a) G4 भगवान्; M3 स महान् (for स भवान्). D1 om. from न्देवव-त्प्राज्ञो up to पतिमन्ययम् (in 7. 173. 29^a). Ś2 K1.2 B1.4 Dc1 Dn1 देहवान्; D3 मोहवान्; S (G5 missing) ज्ञानवान् (for देववत्). —^b) G4 कर्ममयं (for भवं). —^c) Ś K1-3 D1 स च कर्पस्त्व (K1.2 त्व) मात्मानं; B1.5 Dc1 Dn1 अवा (Dc1 प) कर्षत चा; D3 अवकर्षस्त्वमा; D5 अवाकर्ष स्वमा; D5 अधिकर्ष-स्तदा; T G4 अवकर्षस्त्वमा (sic); G1 M कुरु कर्म तदात्मीयं; G2 अवाकृततदात्मानं (sic). —^d) Ś2 K3 त्वत् (for तत्). Ś K1-3 D1 प्रियेच्छया (for प्सया).

84 D1.8 om. 84 (cf. v. l. 83, 68). —^a) M1

ईजिवांस्त्वं जपैर्होमैरुपहारैश्च मानद ॥ ८४
 स तथा पूज्यमानस्ते पूर्वदेवोऽप्यतूतुपत् ।
 पुष्कलांश्च वरान्प्रादात्तत्र विद्वन्हृदि स्थितान् ॥ ८५
 जन्मकर्मतपोयोगास्तयोस्तत्र च पुष्कलाः ।
 ताभ्यां लिङ्गेऽर्चितो देवस्त्वयार्चायां युगे युगे ॥ ८६
 सर्वरूपं भवं ज्ञात्वा लिङ्गे योऽर्चयति प्रभुम् ।

आत्मयोगाश्च तस्मिन्चै शास्त्रयोगाश्च शाश्वताः ॥ ८७
 एवं देवा यजन्तो हि सिद्धाश्च परमर्षयः ।
 प्रार्थयन्ति परं लोके स्थानमेव च शाश्वतम् ॥ ८८
 स एष रुद्रभक्तश्च केशवो रुद्रसंभवः ।
 कृष्ण एव हि यष्टव्यो यज्ञैश्चैव सनातनः ॥ ८९
 सर्वभूतभवं ज्ञात्वा लिङ्गेऽर्चयति यः प्रभुम् ।

C. 7. 5409
 B. 7. 201. 96
 K. 7. 102. 101

(by corr.) s (sup. lin.) शुभमार्तं (for 'मौर्व'). S K (Ks missing) Ds शुभ (Ks Ds 'अ') मत्र भवं मत्वा (Ds ज्ञात्वा); B Dn1 शुभं (B1 'भं') स तु भवान्कृत्वा; Dc1 मुंच मन्तुं भवान्ज्ञात्वा; Dn2 D2.5 शुभमत्र (D2 'भमत्र'; Ds 'अमत्र') हविः कृत्वा; D1 शुभमाभुमवे सत्वा; Ds शुभं स तु तपः कृत्वा. —^a) Ds मानदं; G1 M1.2 मरिप (for मानद).

85 D1.7.8 om. 85 (cf. v. l. 83, 68). —^a) S K (Ks missing) D1.6 G2 तदा (for तथा). S K1-3 च (for ते). —^b) S K1.2 सर्व- (for पूर्व-). S K1-3 B Dc1 Dn1 -देहेपु; K1 Dn2 D1-3.5 -देहेपि; G1 -देहेपि (for -देवोऽपि). S2 [अ]भूतपत्; K1 तूतुपत्; B1 [अ]नु-त्तमः; Dn1 (marg.) [अ]तूतुपत् (for 'तुपत्'). Ds पूर्वदेहे ह्यरूपपत्. —^d) S K1.2 D1 तित्यं (for विद्वन्).

86 D1.7.8 om. 86 (cf. v. l. 83, 68). —^a) S K1.3 Ds G1 M -तपोयोगांस्. —^b) S2 D1 च तव (by transp.). S K1-3 Ds पुष्कलात् (Ds 'ल:'); Ds केवलाः (for पुष्कलाः). G1 M महिना तव पुष्कलः. —^c) B2 S (Gs missing) आभ्यां (G1 'चां') (for ताभ्यां). K2 Ds लिगार्चितो. —^d) Dn2 M3-5 चायं (for [अ]र्चायां). — After 86, S K (Ks missing) B Dc1 Dn D1-3.5 read 89^{ab}, S1 repeating it in its proper place. Ds ins. after 86 :

1440* चतुर्दश्यष्टमीतिव्ये लिङ्गं नक्तेन योऽर्चयेत् ।
 यावज्जीवन्मत्तधरः समदेशचरो भवेत् ।
 स एष विष्णुरुद्रश्च शंकरो विष्णुसंभवः ।
 शरीरमेकमेताभ्यां योगादर्थे द्विधाकृतम् ।
 सर्वे विष्णुमया देवाः सर्वविष्णुमया गणाः । [5]
 सर्वं वै विष्णुना व्याप्तं त्रैलोक्यं सत्त्वाचरम् ।
 सूर्ययस्तस्य देवस्य ब्रह्माविष्णुमहेश्वराः ।
 अनन्तस्य महाबाहो यच्चान्यदपि किंचन ।

[For line 3, cf. 89^{ab}.]

— On the other hand, S (Gs missing) ins. after 89^{ab} :

1441* देवदेवस्त्वचिन्त्यात्मा अजेयो विष्णुसंभवः ।

87 D1.7.8 om. 87 (cf. v. l. 83, 68). B Ds G4 om. 87^{ab}. —^a) Ds सर्वभूत- (for 'रूप'). G1 M1.2 शिवं (for भवं). —^b) K2 G1 M3-5 लिगे योचति तं प्रभुं; Dn2 Ds लिगमर्चयते (Ds 'ति') प्रभुं; T G2.3 लिगेर्चयति तं प्रभुं; M1.2 लिगयोगोर्चयन्प्रभुं. — After 87^{ab}, M3-5 read 90^{ab} for the first time, repeating it in its proper place. S1 K1.2 D1 repeat 87^{ab} after 90^{ab}. —^c) Dc1 आत्मयोगाच्च. Ds यस्मिन्. S (Gs missing) आत्मयोगाच्चमीशानं. —^d) S1 (both times). 2 K1 (second time). 3 शाश्वतान्; K1 (first time) 'तः'; K2 (both times) 'तान्'; Ds पुष्कलाः (for शाश्वताः). Dc1 Dn1 शास्त्रयोगश्च शाश्वतः; S (Gs missing) शास्त्रयोगाच्च शाश्वतं.

88 D1.7.8 om. 88 (cf. v. l. 83, 68). —^a) B1 Dc1 पतं (for एवं). G1 जयंतो (for यजन्तो). S K (Ks missing) Dn2 D1-3.5 एव (K1.2 'न:'); Dn2 'त'-मेवाचयं (Dn2 D2.3.5 'यज' नदेवाः; Ds एवं देवं यजते हि. — Ds reads 88^{ab} twice. —^c) Ds प्रार्थयंतः; Ds प्रार्थयंतः (for 'यन्ति'). Ds पदं (for परं). S K1-3 प्रार्थयंतः (K2 'ते') पराल्लोकान्; K4 B1 D1 प्रार्थयंतं (D1 'तः') परं लोकं; Dc1 (before corr.) Dn1 Ds (first time) प्रार्थयंतोपरं लोकं (Dn1 'के'); Ds (second time) अर्चयंति सदा विष्णुः; T G2-4 प्रार्थयंतं परं लोके. —^d) Ds सर्वकृत् (for शाश्वतम्). S Ks स्थावरा * सर्वकृत्; K1.2 B1 Dc1 Dn1 Ds (second time) स्थानमेव (K1 B1 'व') हि सर्वकृत्; K4 D1 अयं स्थानं च सर्वकृत्; B2-3 Dn2 D2.5 स्थानमेकं स सर्वकृत्; Ds (first time) देवा ब्रह्मर्षयोमलाः.

89 D1.7.8 om. 89 (cf. v. l. 83, 68). S1 (for the first time). 2 K (Ks missing) B Dc1 Dn D1-3.5 read 89^{ab} after 86. For 89^{ab} in Ds, cf. line 3 of 1440* and in S (Gs missing), cf. 1441*. —^a) B2 एव (for एष). —^c) M3-5 एवं. B1 द्रष्टव्यो (for यं). —^d) S1 K1.2 B2-3 Dc1 Dn1 G2-4 M यज्ञः; B1

C. 7. 949
B. 7. 201. 96
K. 7. 202. 101

तस्मिन्नभ्यधिकां प्रीतिं करोति वृषभध्वजः ॥ ९०

संजय उवाच ।

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा द्रोणपुत्रो महारथः ।

नमश्कार रुद्राय बहु मेने च केशवम् ॥ ९१

हृष्टलोमा च वश्यात्मा नमस्कृत्य महर्षये ।

वरूथिनीमभिप्रेत्य अवहारमकारयत् ॥ ९२

ततः प्रत्यवहारोऽभूत्पाण्डवानां विशां पते ।

कौरवाणां च दीनानां द्रोणे युधि निपातिते ॥ ९३

युद्धं कृत्वा दिनान्पञ्च द्रोणो हत्वा वरूथिनीम् ।

ब्रह्मलोकं गतो राजन्ब्राह्मणो वेदपारगः ॥ ९४

इति श्रीमहाभारते द्रोणपर्वणि द्विसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १७२ ॥

यज्ञाश्च. K_{2,4} B Dn₂ D_{2,3,5} G₃ चैव; G₂ एष (for चैव). B₁ सनातनाः. — After 89, D₆ ins.:

1442* चिन्त्यते योगिभिर्नित्यं तद्विष्णोः परमं पदम् ।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिलोके प्रवर्तते ।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजत्यसौ ।

मत्स्यः कूर्मो वराहश्च नृसिंहो वामनो हरिः ।

साधो नारायणो विष्णुः कश्यपस्यात्मसंभवः । [5]

रामो रामश्च रामश्च वासुदेवश्च यादवः ।

कल्की भविष्यते विप्रो युगे क्षीणे पुनर्हरिः ।

एकैवात्मना विश्वं स्थावरं जङ्गमं च यत् ।

तत्सर्वं विष्णुना सृष्टमनन्तेन महात्मना ।

तप एष प्रकुरुते लोकानां हितकाम्यया । [10]

तपःप्रधानेन कृतो लोकश्चापि प्रवर्तते ।

अतो निमित्तं हि हरिस्तपश्चरति नित्यशः ।

वरांश्च प्रार्थयत्यस्मात्प्रधानाद्देवसत्तमात् ।

वदरीं समुपागम्य विष्णुना विष्णुना सह ।

तपश्चरिष्ये विशालायामेतत्ते कथितं मया । [15]

[Lines 2-3 = (var.) 6. 26. 7.]

90 D_{1,7,8} om. 90 (cf. v. l. 83, 68). — ^a) S K (K₃ missing) B (except B₁) D₁ रूपं भवं; D₂ T भूतमयं (for 'भवं'). — ^b) G₁ तं प्रभुः (for यः प्रभुम्). S K_{1,3} Dn₁ लिंगम (K₁ 'नं यो' चयति प्रभुं; K₂ B_{1,2} D₁ लिंगे यो (B₁ 'नैर्यो'; B₂ 'नं यो' चयति प्रभुं; K₄ B₃₋₅ D₁ Dn₂ D_{2,3,5} लिंगमर्चति यः प्रभुं; D₆ लिंगमर्चितवान्प्रभुः; G₁ लिंगेचयति तं प्रभुः. — After 90^{ab}, S₁ K_{1,2} D₁ repeat 87^{ab}. M₃₋₅ read 90^{ab} for the first time after 87^{ab}. — ^c) K_{1,2} अत्यधिकां (for अभ्यं).

91 D_{1,7,8} om. 91 (cf. v. l. 83, 68). G₂ M₁ om. the ref. — ^a) M_{1,2} मनश्च (by metathesis) (for नमश्च).

92 D_{1,7,8} om. 92 (cf. v. l. 83, 68). — ^a) Some MSS. रोमा. B₅ चै (for च). — ^b) B D₁ सोमिवाद्य; D₃ T G₂₋₄ नमश्चक्रे (for 'स्कृत्य'). D₆ हरिं पुनः (for महर्षये). — ^c) K₁ अभिप्रीत्या; K₂ Dn₂ D_{2,5} अभिप्रेद्य; D₆ चाभिगम्य; T G₂₋₄ अथाविश्य; G₁ M चाभिपत्य (for अभिप्रेत्य). D₃ वरूथिनीं पुरस्कृत्य. — ^d) S₂ K_{2,4} B₅ D_{2,3,5} (avoiding hiatus) ह्यवहारम्; B₁ व्यव'; D₆ S (G₃ missing) सोप' (for अव'). S₁ K₃ अवहारयत्; B₁ अकंप' (for अकार').

93 D_{1,7,8} om. 93 (cf. v. l. 83, 68). — ^a) G_{3,4} प्रत्यवहारो. — ^b) D₆ महात्मनां (for विशां पते). — G₂ om. 93^{ab}. — ^c) G₁ M_{1,2} चेदीनां (for दीनानां).

94 D_{1,7,8} om. 94 (cf. v. l. 83, 68). — ^a) S K₁₋₃ D₁ पंच दिनं; M₁ दिनं पंच (for दिनान्पञ्च). — ^c) Dn₁ ब्रह्मलोके.

Colophon om. in D_{1,7,8}; K₅ G₅ missing. — Subparvan: D₆ नारायणात्मोक्ष. — Day of Droṇa's generalship: S₂ पंचमे दिने; K_{1,2} पंचमे युद्धदिवसे; D₁ पंचमो दिवसः; D₆ पंचमो युद्धदिवसः. — Adhy. name: D₆ द्रोणरथयुद्धदिवसाः; D₆ संजयवाक्यं; Bom. ed. व्यासवाक्यं. — Adhy. no. (figures, words or both): B₁ 166; Dn₁ 202; D₂ 203; D₃ 95; T G_{2,3} 197; G₁ M_{1,2} 196; G₄ 198; M₃₋₅ 195. — Śloka no.: Dn₁ 101.

१७३

धृतराष्ट्र उवाच ।

तस्मिन्नतिरथे द्रोणे निहते तत्र संजय ।

मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वन्तः परम् ॥ १

संजय उवाच ।

तस्मिन्नतिरथे द्रोणे निहते पार्थेन वै ।

कौरवेषु च भग्नेषु कुन्तीपुत्रो धनंजयः ॥ २

दृष्ट्वा सुमहदाश्चर्यमात्मनो विजयावहम् ।

यदृच्छयागतं व्यासं पप्रच्छ भरतर्षभ ॥ ३

संप्राप्ते निन्नतः शत्रून्शरौघैर्विमलैरहम् ।

अग्रतो लक्ष्ये यान्तं पुरुषं पावकप्रभम् ॥ ४

ज्वलन्तं शूलमुद्यम्य यां दिशं प्रतिपद्यते ।

तस्यां दिशि विशीर्यन्ते शत्रवो मे महामुने ॥ ५

न पद्भ्यां स्पृशते भूमिं न च शूलं विमुञ्चति ।

शूलाच्छूलसहस्राणि निष्पेतुस्तस्य तेजसा ॥ ६

तेन भग्नानरीन्सर्वान्मद्भग्नान्मन्यते जनः ।

तेन दग्धानि सैन्यानि पृष्ठतोऽनुदहाम्यहम् ॥ ७

भगवंस्तन्ममाचक्ष्व को वै स पुरुषोत्तमः ।

शूलपाणिर्महान्कृष्ण तेजसा धूर्यसंनिभः ॥ ८

173

☞ This adhy. is missing in Ks Gs (cf. v. l. 7. 125. 14; 137. 9).

1 D₁ om. 1^a-29^d (cf. v. l. 7. 173. 83). D₁. 3 om. 1^a-29^d (cf. v. l. 7. 173. 68). D₂ om. 1. —^d) K₁ B D₁ D₂ D₃. 5 निहते पार्थेन वै (= 2^b). —^d) Ś₂ D₁ D₂ D₃ G₁ M₁. 2 ततः (for अतः). K₂ D₃ किमकुर्वन्त संजय; D₂ किमकुर्वन्तस्ततः परं (sic).

2 D₁. 7. 8 om. 2 (cf. v. l. 1). K₂ D₃ om. the ref. D₃ om. 2^{ab} with the ref. —^d) T G₁. 4 पार्थेन निपातिते. —^c) K₁ om. च. D₁ D₂ D₃ कौरवे-येषु भग्नेषु; G₂ पप्रच्छ समरे व्यासं.

3 D₁. 7. 8 om. 3 (cf. v. l. 1). G₂ om. 3. —^a) D₂ स (for सु). — After 3^{ab}, T G₁. 4 M₁. 3 ins.:

1443* मुनिं क्षिप्राम्बुदाभासं वेदव्यासमकल्मषम् ।

[= (var.) 173. 43^{ab}.]

—^d) Ś₂ D₁ D₂ D₃ G₁ M₁. 2. 5 भरतर्षभः; M₁ पुरुषर्षभः (for भरतर्षभ).

4 D₁. 7. 8 om. 4 (cf. v. l. 1). Before 4, MSS. ins. अर्जुनः. —^a) K₃. 4 D₂ D₃ न्यहन्व; B₂. 3. 5 निहन्व; D₁ निवहन् (for निन्नतः). S (G₃ missing) संप्राप्ते शत्रवास्त्रिभन्. —^b) K₂ विपुलैर; D₁ D₂ जमं (for विमं). Ś K₁-3 D₁ मम (for अहम्).

5 D₁. 7. 8 om. 5 (cf. v. l. 1). —^a) Ś₂ ज्वलन्ति- (for ज्वलन्तं). —^b) D₃ यां दिशं प्रत्यपद्यते. —^c) Ś₁ B₁. 3 D₁ D₂ D₃. 5 विदीर्यन्ते (B₁ D₂ 'त'); B₁ प्रशी-र्यन्ते; D₃ विशीर्यन्ते (for 'यन्ते'). —^d) T G₂-4 M₁-5 महामते (for 'मुने').

6 D₁. 7. 8 om. 6 (cf. v. l. 1). K₂. 4 D₃ G₁ M₁. 2 om. 6; B D₁ D₂ D₃ read it after 8. D₂. 6 transp. 6^{ab} and 6^{cd}. —^a) T G₂-4 M₁-5 पद्भ्यां न (by transp.). Ś₂ K₁ स्पृशते (for स्पृशते). —^b) D₂ शूलं. Ś₃ प्रमुञ्चति (for विमु). —^d) Some MSS. निपेतुस्. Ś₂ K₁ D₁ T G₂-4 M₁-5 निष्पतंत्यस्य तेजसा (K₁ 'सः').

7 D₁. 7. 8 om. 7 (cf. v. l. 1). —^a) Ś₂ transp. भग्नान् and सर्वान्. —^b) Ś₁ मद्भग्नैर; Ś₂ मद्भकार्; K₂ स भग्नान् (for मद्भ). — D₂ om. 7^a-8^d. —^c) K₁ B (except B₂) D₁ D₂ D₃. 5 T G₂ भग्नानि (for दग्धानि). —^d) Ś K₂-4 [s] नुददामि; B₁. 2 (marg.; orig. as in text). 3-5 D₃ 'नुदामि; D₁ D₂. 3 'व्रजामि (for 'दहामि').

8 D₂ D₁. 7. 8 om. 8 (cf. v. l. 7, 1). —^a) B₂ (marg.) G₁. 4 M₁. 2 त्वं (for तत्). —^b) D₁ D₂ वैष; D₃ [s] ये स (for वै स). — Before 8^{cd}, T G₁ ins. व्यासः. —^c) Ś K₁-3 D₁ M₁ महान्कृष्णस्; K₁ D₁ (marg.) D₂. 5 मया दृष्टस्; B₁ महा-कृष्टस्; B₂-5 D₁ D₂. 6 'कृष्णस्; G₁ 'कृष्ण (for 'कृष्ण). — After 8, B D₁ D₂ D₃ read 6.

C. 7. 1500
B. 7. 202. 7
K. 7. 203. 7

C. 7. 6502
B. 7. 202. 9
K. 7. 203. 9

व्यास उवाच ।

प्रजापतीनां प्रथमं तैजसं पुरुषं विभुम् ।
भुवनं भूर्भुवं देवं सर्वलोकेश्वरं प्रभुम् ॥ ९
ईशानं वरदं पार्थ दृष्टवानसि शंकरम् ।
तं गच्छ शरणं देवं सर्वादिं भुवनेश्वरम् ॥ १०

9 Ds. 7. 8 om. 9 (cf. v. l. 1). T Gs om. the ref. — ⁶ K1 तेजसं (for तैजसं). S1 K1-3 परमं; S2 प्रथमं (for पुरुषं). N (except S1; Ds. 7. 8 om.; Ks missing) प्रभुं (for विभुम्). S (Gs missing) तेजसां प्रवरं प्र (T M1-3 वि)भुं. — S2 Ds om. (hapl.) 9^{ad}. — ⁴ Ks परं (for प्रभुम्). T G2-4 सर्वलोकमेश्वरं.

10 Ds. 7. 8 om. 10 (cf. v. l. 1). K4 om. 10. — ^a K1 पुरां च (for ईशानं). Ds सांगवेदगतिं पार्थ; T G2-4 ईशानमीश्वरं देवं. — ⁶ Ds दृष्टवान् (for दृष्ट). — ⁷ Ds G1 M1.2 वरदं (for शरणं). G1 M वीर (for देवं). T G2-4 शरणं प्राप्य कौतिय. — ⁴ B Ds Dn D2 T G2-4 M2-5 वरदं; Ds. 6 देवादिं; Ds G1 M1.2 शरणं (for सर्वादिं). — After 10, D2 ins. 1444*; while Ds reads line 2 of the same.

11 Ds. 7. 8 om. 11 (cf. v. l. 1). D2 om. 11. — ^a Ks महात्मानं महादेवम्. — ⁶ Bom. ed. विभुं (for शिवम्). T Gs. 4 ईश्वरं वरदं प्रभुं. — ⁷ Dn2 अक्षं (for त्र्यक्षं). K1 चक्रं; Ds-6 रौद्रं; T G2-4 वीरं (for रुद्रं). — ⁴ T G2-4 जटिलं (for शिखिनं). K1 वासिनं (for वाससम्). — After 11^{ad}, S K (Ks missing) B Ds Dn Ds. 3. 5. 6 Bom. ed. ins.: D2 after 10:

1444* देवदेवं हरं स्थाणुं वरदं भुवनेश्वरम् ।
जगत्प्रधानमजितं जगत्पतिमधीश्वरम् ।
जगद्योनिं जगद्बीजं जयिनं जगतो गतिम् ।
विष्वात्मानं विश्वसृजं विश्वमूर्तिं यशस्विनम् ।
विश्वेश्वरं विश्वयोनिं विश्वकर्माणमीश्वरम् । [5]
शंभुं स्वयंभुं भूतेशं भूतभव्यभवोद्भवम् ।
योगं योगेश्वरं सर्वं सर्वलोकेश्वरेश्वरम् ।
सर्वश्रेष्ठं जगच्छ्रेष्ठं वरिष्ठं परमेश्वरम् ।
लोकत्रयविधातारमेकं लोकत्रयाश्रयम् ।
सुदुर्जयं जगन्नाथं जन्ममृत्युजरातिगम् । [10]
ज्ञानात्मानं ज्ञानगम्यं ज्ञानज्ञेयं सुदुर्विदम् ।

[Ds. 6 om. line 1. — (L. 1) B Ds Dn महादेवं (for देवं). Ds वरदं शंभुमीश्वरं (for the post. half).

महादेवं महात्मानमीशानं जटिलं शिवम् ।

त्र्यक्षं महाभुजं रुद्रं शिखिनं चीरवाससम् ।

दातारं चैव भक्तानां प्रसादविहितान्वरात् ॥ ११

तस्य ते पार्षदा दिव्या रूपैर्नानाविधैः विभोः ।

वामना जटिला मुण्डा हस्त्रग्रीवा महोदराः ॥ १२

— Ds reads line 2 after 10. — (L. 2) Ds अधिकं (for अजितं). K4 B3-5 Dn2 जगत्प्रीतिम् (for त्वत्तिम्). D2 जगद्भक्तिमेश्वरं; Ds द्रष्टृमेश्वरं (for the post. half). — (L. 3) Ds जगतां (for जयिनं). S K (Ks missing) B5 D1 जयिनं (S K3 यतां) जगतां (B5 तः) पतिं; Ds जगतां गतिमागतिं (for the post. half). — (L. 4) Dn2 om. from मूर्ति up to योगेश्वरं (in line 7). D2. 6 om. (hapl.) from मूर्ति up to योगिनि (in line 5). — (L. 5) B1 विश्वचरं; B2. 3 Ds1 Dn1 Ds तं; B4 गतिं; Bom. ed. तं (for योगिनि). B Ds1 Dn1 Ds. 6 कर्मणा (Ds र्माण) भीश्वरं प्रभुं (Ds om. प्रभुं) (for the post. half). — (L. 7) S1 K1. 3. 4 शंभुं; S2 K2 शान्तं; Ds शवं (for सर्वं). S2 K2 सर्वदेवेश्वरेश्वरं (for the post. half). — (L. 8) B1 सर्वश्रेष्ठं; Ds श्रेष्ठं (for श्रेष्ठ). S1 K1. 3 ज्येष्ठं (for श्रेष्ठ). Dn1 om. वरिष्ठं. Dn1 परमेश्वरं (for मेश्वरम्). Ds परमेश्वरमेश्वरं (for the post. half). — After line 9, K4 Ds Bom. ed. ins.:

1445* शुद्धात्मानं वरं भीमं वशिनं विश्वरेतसम् ।

शाश्वतं भूधरं देवं सर्ववागीश्वरेश्वरम् ।

[[Ks om. line 1. — (L. 1) Bom. ed. भवं (for वरं). Bom. ed. शशांककृतशेखरं (for the post. half). — (L. 2) Ds वरदं (for भूधरं). Ds सर्वरोगेश्वरेश्वरं (for the post. half).]]

(L. 10) D2 काम- (for जन्म-). K2 जगन्नि (for तिगम्). — (L. 11) K2 Ds1 ज्ञानं (for ज्ञान-). K4 B Ds1 Dn D2. 5 ज्ञानश्रेष्ठं; D3 गम्यं (for ज्ञेयं). Ds सुदुर्विदं.]

— ^a G4 दातारं (for दा). — ⁷ Ds प्रसादविहितांतरं.

12 Ds. 7. 8 om. 12 (cf. v. l. 1). — ^a G1 M1. 3. 5 om. ते. K1. 2 Ds T G2 ते (T G2 वै) पार्षता; B Ds1 Dn D2. 5 G2. 4 पारिषदा; M2 पार्षदा (sic); M3 पौरुषदा (for ते पार्षदा). — ⁶ S1 K2 प्रभोः; S2 K1. 3 B2 Ds1. 3. 5 T G2. 4 प्रभोः; B1. 3. 5 Ds M2-3 विभो (for विभोः). G2 नानारूपधराः प्रभोः. — ⁷ M3 जटिला वामना मुण्डा. — ⁴ T G2-4 कंबु (for हस्त्र-).

महाकाया महोत्साहा महाकर्णास्तथापरे ।
 आननैर्विकृतैः पादैः पार्थ वेपैश्च वैकृतैः ॥ १३
 ईदृशैः स महादेवः पूज्यमानो महेश्वरः ।
 स शिवस्तात तेजस्वी प्रसादाद्याति तेऽग्रतः ।
 तस्मिन्धोरे तदा पार्थ संग्रामे लोमहर्षणे ॥ १४
 द्रोणकर्णकृपैर्गुप्तां महेष्यासैः प्रहारिभिः ।
 कृतां सेनां तदा पार्थ मनसापि प्रधर्षयेत् ।
 ऋते देवान्महेष्यासाद्रुरूपान्महेश्वरात् ॥ १५
 स्थातुमुत्सहते कश्चिन्न तस्मिन्ग्रतः स्थिते ।
 न हि भूतं समं तेन त्रिषु लोकेषु विद्यते ॥ १६

गन्धेनापि हि संग्रामे तस्य कुद्वस्य शत्रवः ।
 विसंज्ञा हतभूयिष्ठा वेपन्ति च पतन्ति च ॥ १७
 तस्मै नमस्तु कुर्वन्तो देवास्तिष्ठन्ति वै दिवि ।
 ये चान्ये मानवा लोके ये च स्वर्गजितो नराः ॥ १८
 ये भक्ता वरदं देवं शिवं रुद्रमुपातिम् ।
 इह लोके सुखं प्राप्य ते यान्ति परमां गतिम् ॥ १९
 नमस्कुरुष्व कौन्तेय तस्मै शान्ताय वै सदा ।
 रुद्राय शितिकण्ठाय कनिष्ठाय सुवर्चसे ॥ २०
 कपर्दिने करालाय हर्यक्षणे वरदाय च ।
 याम्यायाव्यक्तकेशाय सद्गते शंकराय च ॥ २१

C. 7. 9521
 B. 7. 207. 50
 K. 7. 203. 30

13 Di. 7. 3 om. 13 (cf. v. l. 1). —^a) T G₂₋₄ M₃₋₅ महानासा; G₁ M₁₋₂ महाकर्णा (for महोत्साहा). —^b) G₁ M₁₋₂ महानासास् (for 'कर्णास्'). —^c) D₃ आयतैर्; G₃₋₄ अनेकैर् (for आननैर्). D₃ विविधैः (for विकृतैः). T G₂₋₄ चान्यैः (for पादैः). —^d) Ś K₁₋₃ B₁₋₂ D₂ D₁ वेदैश्च; D₃ वीर्यैश्च (for वेपैश्च).

14 Di. 7. 3 om. 14 (cf. v. l. 1). —^a) K₁ दुष्टैश्च; K₂ दुष्टैश्च; D₂ D₃ M₃₋₅ ईदृशः (for ईदृशैः). K₁₋₂ च (for स). —^b) Ś K₁₋₃ D₁ स ईश्वरः (for महै). —^c) D₃ reads 14^{ab} twice. —^d) D₃ शिवः स्वाम् तेजस्वी; D₃ (first time) स शिवस्तातसमाजने. —^e) D₃ (second time) S (G₅ missing) प्रसन्नो (for प्रसादाद्). D₃ (first time) यदि ने श्रुतः; D₃ (second time) द्योततेऽग्रतः (for याति तेऽग्रतः). —^f) D₃₋₆ अस्मिन् (for तं). K₁ B₂₋₃ D₁ D₂ सदा पार्थ; D₃₋₆ तथा पार्थ; T G₂₋₄ महारौद्रे (for तदा पार्थ). —^g) S (G₅ missing) रोम- (for लोम-).

15 Di. 7. 3 om. 15 (cf. v. l. 1). —^a) K₄ B₁₋₂₋₄ D₂₋₅ द्रौणि- (for द्रोण-). —^b) Ś₂ तथा; T G₂₋₄ नरः (for तदा). —^c) Ś K₁₋₃ प्रबाधयेत् (for प्रधर्ष-). —^d) D₂ om. from ऋते up to अग्रतः (in 16^b).

16 = (var.) B. 13. 160. 7. Di. 7. 3 om. 16 (cf. v. l. 1). D₂ om. up to अग्रतः (cf. v. l. 15). —^a) D₃ कश्च (for कश्चिन्). —^b) D₃ एतस्मिन् (for न तं).

17 = (var.) B. 13. 160. 8. Di. 7. 3 om. 17 (cf. v. l. 1). —^b) D₃ यस्य (for तस्य). M₃₋₅ देवस्य (for कुद्वस्य). —^d) Ś K₁₋₃ D₁ (by corr.) D₁₋₃₋₆ वेपते (for वेपन्ति). B₃ च तपन्ति; D₃ निपतन्ति (for

च पतन्ति).

18 Di. 7. 3 om. 18 (cf. v. l. 1). —^a) Ś₁ K₃ ननांसि; Ś₂ नमः प्र-; D₃₋₆ G₁ M₁₋₂ नमोस्तु (for नमस्तु). T G₃ कुर्वाणा (for कुर्वन्तो). D₃ नमस्तु तस्मै कुर्वन्तो. —^b) G₄ ये (for वे). —^c) G₂₋₄ दानवा (for मा). Ś₂ त्वेके; D₁ (before corr.) D₂ लोका (for लोके). —^d) G₁ M ते (for ये). K₁₋₂ D₃ M₃ स्वर्गजिता; D₃ गता; M₃ विदो (for विजितो).

19 Di. 7. 3 om. 19 (cf. v. l. 1). —^b) B₃ उमा तितं (sic) (for 'पतिम्'). — After 19^{ab}, Bom. ed. ins.:

1446* अनन्यभावेन सदा सर्वेशं समुपासते ।
 while, T G₂₋₄ M₃₋₅ ins.:

1447* संग्रामेषु जयं प्राप्य पालयन्ति महीमिमास् ।
 — G₂ om. 19^{cd}. —^d) D₁ परत्र च परां गर्दि; D₂ ते यांति परमे पदे.

20 Di. 7. 3 om. 20 (cf. v. l. 1). —^b) D₁ D₂ तदा (for सदा). — K₄ om. 20^a-21^a. —^d) B₂ (marg.)₃ D₁ वरिष्ठाय; T G₂₋₄ इन्द्रानाय (for कनिष्ठाय).

21 Di. 7. 3 om. 21 (cf. v. l. 1). K₄ om. 21^{ab} (cf. v. l. 20). —^a) T G₂₋₄ कनिष्ठाय; G₁ M करा- लाय (for 'लाय'). —^b) Ś K₂ D₂ D₃ हर्यक्षे; K₃ B₁ D₁ D₂ D₃₋₅ 'क्ष- (for 'क्षणे). —^c) G₂ शाम्याय (for यां). Ś K₁₋₃ D₃ G₃ व्यक्त- (for [अ]- व्यक्त-). B₁ रूपाय (for 'केशाय'). —^d) Ś₁ सद्गते; D₃ सुवृत्ते (for सद्गते). D₂ संगताय (for

C. 7. 8922
B. 7. 202. 30
K. 7. 203. 31

काम्याय हरिनेत्राय स्थाणवे पुरुषाय च ।
हरिकेशाय मुण्डाय कृशायोत्तरणाय च ॥ २२
भास्कराय सुतीर्थाय देवदेवाय रंहसे ।
बहुरूपाय शर्वाय प्रियाय प्रियवाससे ॥ २३
उष्णीषिणे सुवक्राय सहस्राक्षाय मीढुषे ।
गिरिशाय प्रशान्ताय पतये चीरवाससे ॥ २४
हिरण्यवाहवे चैव उग्राय पतये दिशाम् ।
पर्जन्यपतये चैव भूतानां पतये नमः ॥ २५

वृक्षाणां पतये चैव अपां च पतये तथा ।
वृक्षैरावृतकायाय सेनान्ये मध्यमाय च ॥ २६
सुवहस्ताय देवाय धन्विने भार्गवाय च ।
बहुरूपाय विश्वस्य पतये चीरवाससे ॥ २७
सहस्रशिरसे चैव सहस्रनयनाय च ।
सहस्रवाहवे चैव सहस्रचरणाय च ॥ २८
शरणं प्राप्य कौन्तेय वरदं भुवनेश्वरम् ।
उमापतिं विरूपाक्षं दक्षयज्ञनिर्वहणम् ।

शंकराय). T G₂₋₄ त्रिने (G₃ 'णे')त्राय कपर्दिने; M₃ s (sup. lin. as in text) सद्भुत्ताय कपर्दिने.

22 D₁. 7. s om. 22 (cf. v. l. 1). D₆ om. (hapl.)
22. —^a) B₁ हरिकेशाय; D₁ 'वृत्ताय (for 'नेत्राय).
— T G₂ s om. (hapl.) 22^{ab}. D₂ om. (hapl.) 22^{cd}.
—^c) B₁ हरिनेत्राय (for 'केशाय). —^d) T G₂ s
मुंडाय (for कृशाय). K₁ B D₆ D₁ D₂ D₁ s. s G₁ s. s
M₁ उत्तरणाय (for उत्तर).

23 D₁. 7. s om. 23 (cf. v. l. 1). —^a) D₃ भास्-
राय; T G₂ भासु (for भास्क). K₁ सुतीक्ष्णाय; D₆
सुदीप्ताय (for सुतीर्थाय). G₂ स्वांतावनाय तीर्थाय. —^b)
D₁ महादेवाय (for देव). — M₃ om. (hapl.) 23^{cd}.
—^c) S₂ K₁ B (except B₁) D₁ D₂ D₁ s सर्वाय (for
श). —^d) D₁ om. प्रियाय. D₂ प्रियवासिने (for
'ससे). S (M₃ om.; G₅ missing) विष्णु (T G₂₋₄ प्रिय)-
रूपाय वेधसे.

24 D₁. 7. s om. 24 (cf. v. l. 1). —^a) B₁ सुर-
काय; D₁ सवस्त्राय (sio); T G₂ सुवक्राय; G₃
[s] रिशकाय (for सुवक्राय). —^b) K₁ सहस्रा*य. G₂
तस्थुषे (for मीढुषे). — After 24^{ab}, T G₃ ins.:

1448* नमो वृक्षाय सेनान्ये मध्यमाय नमो नमः ।

—^c) S₁ K₁ D₁ s. 6 T G₂ गिरिशाय; D₅ गीरी* (for
गिरि). D₂ s. 6 सुशान्ताय (for प्र). —^d) K₁ B₁
D₆ यतये (for प). D₃ कृत्ति- (for चीर).

25 D₁. 7. s om. 25 (cf. v. l. 1). T G₂ s om.
(hapl.) 25-27. —^a) S K (K₅ missing) D₁ D₂ D₁ s.
s. 6 राजन्; B₅ नित्यं (for चैव). B₁₋₄ D₆ D₁ कप-
र्दिने करालाय. — G₁ M₃ s om. (hapl.) 25^{ab}. —^b)
D₃ नमः (for दिशाम्). — After 25^{ab}, D₃ ins.:

1449* दिशां दिग्दन्तिनां चैव दिक्कालपतये नमः ।

—^c) B₅ नित्यं; D₃ तुभ्यं (for चैव). —^d) K₂
G₁₋₄ M तथा (for नमः).

26 D₁. 7. s T G₂ s om. 26 (cf. v. l. 1, 25).
K₂ s B₁ G₁ om. 26^{ab}. —^a) D₁ D₂ D₅ वृषाणां;
D₃ वृक्षानां (for 'णां). D₃ चैव पतये (by transp.).
—^b) S K₁ s B (B₁ om.) D (D₁. 7. s om.) गवां (for
अपां). B (B₁ om.) D₆ D₁ D₃ नमः (for तथा).
—^c) B₁ केशाय; G₁ M₁ s कायाय; M₃ कामाय
(for कायाय). D₂ वृक्षौघैरावृतांगाय. —^d) G₁ M₁ s
सेनान्ये (for 'न्ये). D₃ मध्यमायाय च.

27 D₁. 7. s T G₂ s om. 27 (cf. v. l. 1, 25). —^a)
B (except B₅) D₆ (before corr.) D₁ D₂ s. 6 भुव-
न; G₁ धूप- (for सुव). — After 27^{ab}, D₃ reads 28^{cd}.
—^c) D₃ s विश्वाय; G₁ s M पतये (for विश्वस्य). —^d)
D₁ प्रभवे; G₁ s M पार्वत्याश् (for पतये). K₁ D₁
D₂ s सुज- (for चीर). D₃ विश्वस्य पतये नमः.

28 D₁. 7. s om. 28 (cf. v. l. 1). —^a) T G₂ s
राजन् (for चैव). — B₁ reads 28^{bc} on marg. —^b)
D₂ S (G₅ missing) चरणाय (for नयनाय). — D₆
reads 28^{cd} after 27^{ab}. —^c) T G₂ s तुभ्यं; G₁ s
M नित्यं (for चैव). —^d) S₁ K₃ D₆ G₁ M₃ s नय-
नाय; T G₂ s M₁ s वदनाय (for चरणाय). — For
28^{cd}, D₃ subst.:

1450* सहस्रबाह्वोरूपादाय नमोऽसंख्येयकर्मणे ।

29 D₁ om. 29^{ab}; D₁ s om. 29^{ab} (cf. v. l. 1).
—^a) K₁ B D₆ D₁ D₂ गच्छ; D₃ व्रज (for प्राप्य).
D₂ गच्छ कौन्तेय वरदं. —^b) D₂ महेशं (for वरदं).
— D₂ reads 29^c-65^d after 7. 172. 67. —^d) B₃
D₃ T G₂ s दक्षयज्ञविनाशने. —^c) D₆ जनानां (for
प्रजानां). —^d) D₃ ईश्वरं (for अय्ययम्).

प्रजानां पतिमव्यग्रं भूतानां पतिमव्ययम् ॥ २९
 कपदिनं वृषावर्तं वृषनाभं वृषध्वजम् ।
 वृषदर्पं वृषपतिं वृषशङ्खं वृषर्षभम् ॥ ३०
 वृषाङ्गं वृषभोदारं वृषभं वृषभेक्षणम् ।
 वृषायुधं वृषशरं वृषभूतं महेश्वरम् ॥ ३१
 महोदरं महाकायं द्वीपिचर्मनिवासिनम् ।
 लोकेशं वरदं मुण्डं ब्रह्मण्यं ब्राह्मणप्रियम् ॥ ३२
 त्रिशूलपाणिं वरदं खड्गचर्मधरं प्रभुम् ।

पिनाकिनं खण्डपरशुं लोकानां पतिमीश्वरम् ।
 प्रपद्ये शरणं देवं शरण्यं चीरवाससम् ॥ ३३
 नमस्तस्मै सुरेशाय यस्व वैश्रवणः सखा ।
 सुवाससे नमो नित्यं सुव्रताय सुधन्विने ॥ ३४
 सुवहस्ताय देवाय सुखधन्वाय धन्विने ।
 धन्वन्तराय धनुषे धन्वाचार्याय धन्विने ॥ ३५
 उग्रायुधाय देवाय नमः सुरवराय च ।
 नमोऽस्तु बहुरूपाय नमश्च बहुधन्विने ॥ ३६

C. 7. 9537
 B. 7. 202. 46
 K. 7. 203. 49

30 For the sequence in D₂, cf. v. 1. 29. D₁ reads 30^a-65^b after 7. 172. 67. —^a) Ś₂ वृषा-
 यांतं; K₂ D₁ 'वृते'; D₄ om. (for वृषावर्त). —^b)
 B₅ वृषयानं (for 'नाभं'). —^c) D₁ वृषद्वयं (sic);
 D₅ वृषाद्वयं; D₆ वृषभादि; D₇ वृषायुधं (D₃ 'ध')
 (for वृषदर्पं). D₂ 4. 5. 7. 8 वृषपतिं (for 'पति'). —^d)
 D₃ वृषोद्धवं; D₆ वृषध्वजं (for 'र्षभम्').

31 For the sequence in D₂, cf. v. 1. 29, 30.
 —^a) D₁ 5. 7. 8 वृषाक्षं (for वृषाङ्गं). —^b) D₃ om.
 वृषभं. —^c) D₁ वृषधरं (for 'शरं'). —^d) K₃ वृषेश्वरं
 (for 'महेश्वर').

32 For the sequence in D₂, cf. v. 1. 29, 30.
 D₂ om. 33^a-33^b. —^a) G₂ 4 द्वीपः (for द्वीपि).
 —^b) M₄ 5 देवेशं (for लोकेशं). D₃ T G₂-1 पुण्यं
 (for मुण्डं).

33 For the sequence in D₂, cf. v. 1. 29, 30.
 D₂ om. 33^a (cf. v. 1. 32). —^a) D₃ सुखदं (for
 वरदं). —^b) D₃ परं; D₁ 5. 7. 8 शुभं; G₁ M विसुं
 (for प्रभुम्). —^c) Hypermetric. Ś₁ K₂ खप (K₂
 च प)खुं; Ś₂ सपुरुषं; K₁ खपुरुषं; K₃ 4 D₂ D₂
 4-3 T G₁ खड्गध (D₁ 7 'प' रं; B₃ 5 खड्गप*खुं; D₁
 परखुं; G₂ M₁ 3 खड्गपरखुं (for खड्गप). G₂ 4
 पिनाकखड्गपरखुं. — After 33^a, D₃ ins.:

1451* निपङ्गिनं परशुहस्तं धर्माणां च प्रकाशकम् ।

—^a) D₂ 4-8 प्रपद्ये देवमीशानं. —^b) Ś₁ K₃ वरेण्यं
 (for शरण्यं). K₁ शरण्यं चीरवासिनं; M₂-5 द्वीपिचर्म-
 निवासिनं (= 32^b).

34 For the sequence in D₂, cf. v. 1. 29, 30.
 D₁ reads 34^a after 36^a. —^a) Ś₂ परेशाय (for
 सुरेश्वर). —^b) T G₂-4 गणानां (G₂ लोकानां) पतये नमः.

—^a) K₁ D₂ तुभ्यं; D₇ 8 विस्यं (for नित्यं). —^d)
 D₁ 1. 3 सुव्रतापि- (D₁ 'पे') (for सुव्रताय). Ś₁ K₃ D₁
 सुधन्वने; D₁ D₁ सुधाधिने; D₂ सधन्विने (for
 सुध). T G₂ 4 सुव्रताय सुधन्वने. — After 34, D₃
 T G₂-1 ins.:

1452* उग्रायुधाय देवाय सुव्रताय भवाय च ।

[Prior half = 36^a. D₃ सुवहस्ताय धन्विने.]

35 For the sequence in D₂, cf. v. 1. 29, 30.
 B₁ 4 D₁ D₁ om. (hapl.) 35^a. G₁ M om. (hapl.)
 35. K₁ 3 D₁ 5-7 read 35^a twice. —^a) K₂
 ध्रुवहस्ताय; K₃ (first time) सुवह'; D₁ शवह'; D₅
 (first time) धनुर्द'; D₅ 9 (both second time) ध्रुवह';
 D₃ सुहस्ताय च (for सुवहस्ताय). D₃ ध्येयाय (for
 देवाय). D₂ 4. 7 (second time) 3 सुवहस्ताय (for
 'धन्वाय'). D₃ प्रियधन्वाय कविकने; D₅ (first time)
 खड्गहस्ताय धन्विने; D₅ (second time) ध्रुविहस्ताय ध'
 (for 'ध'). K₁ 3 (both second time) T G₂-4 धनुर्धराय देवाय
 D₁ 7 (last two second time) T G₂-4 धनुर्धराय देवाय
 D₃ om. (hapl.) 35^a-36^a. —^c) B₁ धनुर्धराय (for
 धन्वन्त'). —^d) Ś₁ K₃ धन्वाचाराय; D₁ 'वाराय;
 D₇ 8 धन्वा (D₃ 'न्व')वाराय; T G₂-4 धन्वा (G₂ 'न्व')
 क्षाय च (for धन्वाचार्याय). B D₁ D₁ ते नमः (for
 धन्विने).

36 For the sequence in D₂, cf. v. 1. 29, 30.
 D₃ om. 36 (cf. v. 1. 35). —^a) B₂ शरचराय (for
 सुरवराय). — After 36^a, D₁ reads 34^a. D₅
 om. (hapl.) 36^a-39^a. —^c) D₁ बाहु- (for बहु-).
 — T G₂ 8 om. (hapl.) 36^a-37^a. —^d) B D₁ D₁
 G₁ M₁ 2 नमोऽस्तु (for नमश्च). D₂ नमस्ते सुधन्विने
 (submetric); D₄ नमस्तेस्तु धन्विने (submetric);
 D₅ 1. 3 नमस्तेस्तु सुधन्व (D₇ 8 'न्वि')ने.

C. 7. 9530
B. 7. 202. 46
K. 7. 203. 47

नमोऽस्तु स्थाणवे नित्यं सुव्रताय सुधन्विने ।
नमोऽस्तु त्रिपुरघ्नाय भगघ्नाय च वै नमः ॥ ३७
वनस्पतीनां पतये नराणां पतये नमः ।
अपां च पतये नित्यं यज्ञानां पतये नमः ॥ ३८
पूष्णो दन्तविनाशाय त्र्यक्षाय वरदाय च ।
नीलकण्ठाय पिङ्गाय स्वर्णकेशाय वै नमः ॥ ३९
कर्माणि चैव दिव्यानि महादेवस्य धीमतः ।
तानि ते कीर्तयिष्यामि यथाप्रज्ञं यथाश्रुतम् ॥ ४०

37 For the sequence in D_{2.4}, cf. v. l. 29, 30. D₈ om. 37; T G_{2.8} om. 37^{ab} (for both, cf. v. l. 36). K₂ D₈₁ D_n D_{2.4}, 5.7.8 om. (hapl.) 37^{ab}. —^a) D₃ तुभ्यं (for नित्यं). —^b) K₄ सुवृत्ताय; B G_{1.4} M नमस्तस्मै (for सुव्रताय). D₃ कपालिने; M₃₋₅ सुधन्वने; Bom. ed. तपस्विने (for सुधन्विने). —^d) D_{n2} om. भगघ्ना. M₄ जनघ्नाय (for भग^०). D₃ च ते नमः; G₁ M नमोस्तु ते (M_{3.5} 'स्तु च'). S₂ भगनेत्र-हराय च.

38 For the sequence in D_{2.4}, cf. v. l. 29, 30. D₈ om. 38 (cf. v. l. 36). —^b) M₃₋₅ रुद्राणां (for नराणां). — B D₈₁ D_{n1} D₃ ins. after 38^{ab}: S K (K₅ missing) D_{n2} D₁ after 38:

1453* मातृणां पतये चैव गणानां पतये नमः ।

[D₃ नित्यं (for चैव). D₃ खगानां (for गणानां).]

— B D₈₁ D_{n1} read 38^d twice. —^c) B D₈₁ D_{n1} (all first time) S (G₅ missing) गवां (for अपां). D₄ *ये (for पतये). D₃ तुभ्यं (for नित्यं). —^d) B D₈₁ D_{n1} (all second time) देवानां (for यज्ञानां).

39 For the sequence in D_{2.4}, cf. v. l. 29, 30. D₈ om. 39^{ab} (cf. v. l. 36). —^a) D₃ दत्त (for दन्त). —^b) M₄ त्र्यक्ष (for त्र्यक्षाय). —^c) D₈ यज्ञाय; M₃₋₅ देवाय (for पिङ्गाय). D_{2.5.7.8} हराय नीलकण्ठाय (D₅ 'केशाय'); D₃ बराहनीलकण्ठाय. —^d) D_{n1} सुपर्णाय च; D₄ सुपर्णकेशाय (hypermetric); D₅ नीलकण्ठाय (for स्वर्णकेशाय).

40 For the sequence in D_{2.4}, cf. v. l. 29, 30. —^a) K₄ B D₈₁ D_n यानि (for चैव). S (G₅ missing) घोरानि (for दिव्यानि). —^b) D₃ वेधसः; T G₂₋₄ घन्विनः (for धीमतः). —^d) S₂ K₂ यथायज्ञं (for 'प्रज्ञं'). S K₁₋₃ D_{1.5} यथाश्रुति (D₃ 'ति'); D₈₁ D_{n1}

न सुरा नासुरा लोके न गन्धर्वा न राक्षसाः ।
सुखमेधन्ति कुपिते तस्मिन्नपि गुहागताः ॥ ४१
विव्याध कुपितो यज्ञं निर्भयस्तु भवस्तदा ।
धनुषा वाणमुत्सृज्य सघोरं विननाद च ॥ ४२
ते न शर्म कुतः शान्तिं लेभिरे स्म सुरास्तदा ।
विद्रुते सहसा यज्ञे कुपिते च महेश्वरे ॥ ४३
तेन ज्यातलघोषेण सर्वे लोकाः समाकुलाः ।
बभूवुर्वशगाः पार्थ निपेतुश्च सुरासुराः ॥ ४४

*सुखं (for 'श्रुतम्').

41 = (var.) B. 13. 160. 10^c-11^d. For the sequence in D_{2.4}, cf. v. l. 29, 30. —^a) B₁ सर्वे (for लोके). T G₂₋₄ नासुरा नामरा लोके. —^c) D_{n2} सुपम् (for सुखम्). —^d) S K₁₋₃ D₁ गुहागते; B₅ गुहागते (for गुहागताः). — After 41, N (K₅ missing) ins.:

1454* दक्षस्य यजमानस्य विधिवत्संभृतं पुरा ।

[Cf. B. 13. 160. 11^{cd}. D_{1.5.7.8} यज्ञकामस्य (for यजमानस्य). D₁ lacuna for संभृतं पुरा.]

42 = B. 13. 160. 12. For the sequence in D_{2.4}, cf. v. l. 29, 30. —^a) T G₂ विव्याध (for 'ध'). —^b) B₁₋₄ D₈₁ D_{n2} M₃₋₅ स (for तु). B₅ सभयं; D_{n1} संभवस्य; D_{2.3.8} त्वभवत् (D₃ 'स्') (for तु भवत्). K₄ D_{1.5.7} निर्दय (D_{4.7} निर्भय) स्वभवत्तदा. —^d) B₁ सुघोरं; B₁ G₁ M_{1.2} सघोरं (for 'ध'). B_{3.5} D₈₁ D_{n1} D₂ ह (for च).

43 = (var.) B. 13. 160. 13. For the sequence in D_{2.4}, cf. v. l. 29, 30. —^a) M_{1.2} कर्म (for शर्म). D_{2.4.5} तेन सर्वं कृतं शां (D₂ आं) तं; D₈ तेन संवीक्षिताः शान्तिं (sic). —^b) D_{1.5.7.8} लभते (for लेभिरे). D₈ न; T G₂₋₄ च (for स्म). S₂ तदा सुराः (by transp.); B₁ सुरासुराः; D₂ सुरास्तथा; D_{1.5} सुराः सदा. —^c) S₁ B_{2.4} D₈₁ D_{n1} विद्रुते (for विद्रुते). G₁ M_{1.2} स महा- (sic) (for सहसा). D_{2.4-8} सैन्ये (for यज्ञे).

44 = (var.) B. 13. 160. 14. For the sequence in D_{2.4}, cf. v. l. 29, 30. K₂ om. 44^{ab}. —^a) D₃ तस्य (for तेन). —^b) D_{1.7} T G_{2.4} M₃₋₅ सर्वे- (for सर्वे). D_{2-5.7.8} देवाः (for लोकाः). K₁ G₂ सर्वलोकः समाकुलः (G₂ 'गतः'). —^c) G₄ M_{1.2} विवशाः (for वशगाः). D₅ तत्र (for पार्थ).

आपश्चुभिरं सर्वाश्चरम्पे च वसुंधरा ।
 पर्वताश्च व्यशीर्यन्त दिशो नागाश्च मोहिताः ४५
 अन्धाश्च तमसा लोका न प्रकाशन्त संवृताः ।
 जन्निवान्सह सूर्येण सर्वेषां ज्योतिषां प्रभाः ॥ ४६
 चुक्षुर्भयभीताश्च शान्तिं चक्षुस्तथैव च ।
 ऋषयः सर्वभूतानामात्मनश्च सुखैषिणः ॥ ४७
 पूषाणमभ्यद्रवत शंकरः प्रहसन्निव ।

पुरोडाशं भक्षयतो दशनान्वै व्यशातयत् ॥ ४८
 ततो निश्चक्रमुर्देवा वेपमाना नताः स तम् ।
 पुनश्च संदधे दीप्तं देवानां निशितं शरम् ॥ ४९
 रुद्रस्य यज्ञभागं च विशिष्टं ते न्वकल्पयत् ।
 भयेन त्रिदशा राजञ्शरणं च प्रपेदिरे ॥ ५०
 तेन चैवातिकोपेन स यज्ञः संधितस्तदा ।
 यत्ताश्चापि सुरा आसन् यत्ताश्चापि तं प्रति ॥ ५१

C. 7. 1555
 B. 7. 202. 63
 K. 7. 203. 63

45 = (var.) B. 13. 160. 15. For the sequence in D_{2.4}, cf. v. l. 29, 30. —^a) K₂ D_{2.5} D_{2.6} चक्षुभिरं; D₄ च चुक्षुभे; D₇ तु क्षुभिरं (for चुक्षु). —^b) Ś₁ K₃ चुक्षुभे; D₃ च कपेच (for चक्षु). — D₁ D₁ om. 45^a-46^a. —^c) Ś₂ K₂ D_{2.5} विशीर्यन्त (D₁ 'ते') (for व्यशीर्यन्त). —^d) T दिशा (for दिशो).

46 = (var.) B. 13. 160. 16. For the sequence in D_{2.4}, cf. v. l. 29, 30. D₁ D₁ om. 46 (cf. v. l. 45). —^a) B₅ D_{2.5} D_{2.4-3.5} T G₂₋₄ लंघेन (for अन्धाश्च). K₂ लोके (for लोका). M_{1.2} अतश्च तमसा लोके. —^b) Ś₁ K_{2.4} B_{4.5} T G_{3.4} न प्रा (T G_{3.4} व्य)काशंत; Ś₂ K_{1.2} नाप्रकाशंत (for न प्रका). —^d) D_{2.2} प्रभो; D_{2.3.5.6.8} प्रभां; D_{1.7} प्रभा (for प्रभा).

47 = (var.) B. 13. 160. 17. For the sequence in D_{2.4}, cf. v. l. 29, 30. —^a) Ś₂ damaged. K₂ चक्षुर्भय (sic); D₁ D₁ D_{1.2.4.5.7.8} G_{2.3} चुक्षुभुर (for चुक्षुभुर). T G_{2.4} M₃₋₅ भव (for भय). G₁ पीताश् (for भीताश्). —^b) T G₂₋₄ M_{1.2} चक्षुः शान्ति (by transp.); M₃₋₅ चेहः शान्ति. —^d) B₂ (marg.; orig. as in text) सुखैषिणः; G₁ M_{1-3.5} हितै; M₁ जयै (for सुखै).

48 = (var.) B. 13. 160. 19. For the sequence in D_{2.4}, cf. v. l. 29, 30. Ś₂ partly damaged. —^a) B₅ D₅ अभ्यद्रवत (D₅ 'च्च' पूषाणं. —^c) M₁ पुरोडाशान् (for 'डाशं). —^d) T G₂₋₄ च (for वै). D_{1.5.7.8} व्यनाशयत् (for व्यशात).

49 = (var.) B. 13. 160. 20. For the sequence in D_{2.4}, cf. v. l. 29, 30. D₁ om. 49^a-50^a. —^a) B₂ निश्चक्रमुर् (for निश्चक्रमुर). —^b) Ś₂ damaged; K₁ D_{2.5-8} T G_{1.2} M भयादिताः; K₂ **स तं; D₁ Bom. ed. नताः स तं (Bom. ed. ते); D₃ ततस्ततः; G_{2.4} भया स्म ते (G₃ om. स्म ते). —^c) Ś₂ partly

damaged. G₁ M स (for च). K₁ B D₁ D₁ दी-
 सान्; M₁ शीघ्रं (for दीप्तं). —^d) K₁ B D₁ D₁
 निशिताञ्शरान् (K₁ 'रं'). — After 49, N (D₁ om.;
 K₂ missing) ins.:

1455* सधूमविस्फुलिङ्गानं विद्युतोयदसंनिभम् ।

तं दृष्ट्वा तु सुराः सर्वे प्रणिपत्य महेश्वरम् ।

[(L. 1) D_{2.5-3} सधूमं (for 'न'). K₁ B D₁ D₁
 सधूमस्तस्फुलिङ्गाश्च (for the prior half). K₂ (sup.
 lin. as above) D₃ निःशः (D₃ 'श्च' नं; K₁ B D₁
 D₁ संनिभान् (for 'भम्'). D₅ विद्युन्निभं पावकं (for the
 post. half). — (L. 2) D₅ नवादिताः (for महेश्वरम्).]

50 = (var.) B. 13. 160. 23. For the sequence in D_{2.4}, cf. v. l. 29, 30. D₁ om. 50^a (cf. v. l. 49). —^a) D₃ रुद्रस्य भागं यज्ञेषु; D₅ 'स्य यज्ञे भागं तु. —^b) Ś₂ K₂₋₄ B₁ D_{2.5} D_{2.6-8} T G₂₋₄ तु; D₂ हि (for तु). B₁ कल्पयत्; D₃ अकल्पयत्. G₁ M विशिष्टं समकल्पयत्. —^d) D₂ तं; D₁₋₃ ते (for च). D₃ T G₁₋₄ M_{1.2} शरणं प्रतिपेदिरे.

51 = (var.) B. 13. 160. 24. For the sequence in D_{2.4}, cf. v. l. 29, 30. —^a) T G_{1.2.4} M_{1.2} चैव हि; M₃₋₅ [एव चापि (for चैवाति). D₁ तेन चैवा-
 तिकोप्रेण; D_{1.5.7.8} तेन वैतानिकीव D₃ 'कोपे'न. —^b) D₃ सहतस; D₅ क्षिति; T G_{1.2.4} M_{1.2} संधि (for संधि). K₂ तथा; D₂ पुनः (for तदा). D₁ स-
 यज्ञाः संधितास्तदा. —^c) K_{2.4} D_{2.5} D_{2.6} भग्नश्च; D₃
 ब्रह्माश्च; D₄ यलाश् (sic); G₅ यलाश् (for यत्ताश्).
 D_{2.5.7.8} M₃₋₅ ह्यसन्; D₁ चापि; D₃ चासन्; G₂
 राजन् (for आसन्). —^d) K₁ यत्तश्च; K₂₋₄ D_{2.5}
 D_{2.6} भीताश्; B₁ आताश्च; D₁ वृताश्च; D₃ नताश्च;
 D₄ पला; D₅ भकाश्च; G₁ रक्ताश्च (for यत्ताश्). D₁
 5.7.8 अद्यापि; T G₁₋₄ M_{1.2} चान्येपि (for चाद्यापि). D₃
 संधयेत्; M₂ तान्प्रति (for तं प्रति). M₃₋₅
 सयत्तश्चापि तान्प्रति.

C. 7. 9553
B. 7. 202. 64
K. 7. 203. 64

असुराणां पुराण्यासंस्त्रीणि वीर्यवतां दिवि ।
आयसं राजतं चैव सौवर्णमपरं महत् ॥ ५२
आयसं तारकाक्षस्य कमलाक्षस्य राजतम् ।
सौवर्णं परमं ह्यासीद्विद्युन्मालिन एव च ॥ ५३
न शक्तस्तानि मघवान्भेतुं सर्वायुधैरपि ।
अथ सर्वेऽमरा रुद्रं जग्मुः शरणमर्दिताः ॥ ५४

52 = (var.) B. 13. 160. 25. For the sequence in D_{2.4}, cf. v. l. 29, 30. —^a) D₆ पुरा हि (for पुराणि). —^b) M₃₋₅ सुवि (for दिवि). G₂ त्रीणि वीर्यास्थितानि द्वे. —^c) D_{1.6} राजसं (for 'तं'). —^a) B D₆₁ D_n D₆ T G₂₋₄ परमं (for अपरं). S₁ K_{1.2} D (except D₆₁ D_n) तथा (for महत्). S₂ K₁ सौवर्णं रजतं त (K₁ 'तत्त')था. — After 52, D₃ reads 54^{ab}.

53 For the sequence in D_{2.4}, cf. v. l. 29, 30. G₁ M_{1.2.4} om. 53. —^a) D_{2.4.6-8} तारकाक्षस्य; D₃ 'क्रांतस्य; D₅ तारकाक्षस्य (for तारकाक्षस्य). S K (K₅ missing) B D₆₁ D_n सौवर्णं कमला (S₁ K₃ मकरा; S₂ K_{1.2} राजताक्षस्य; D₁ सौवर्णं रजताक्षस्य. —^b) S₁ K₃ रजताक्षस्य; S₂ K_{1.2} D_{1.6} मकरा; K₄ B_{1.3-5} D₆₁ D_{n1} तारकाक्षस्य; D_{2.4.6.7} मकराक्षस्य (for कमलाक्षस्य). B₂ राजतं पुंकरस्य च; D₃ राजतं द्वितीयस्य च. —^c) D_{2-4.6-8} अपरं; M₅ परमम् (for 'मं'). D_{2.4-8} चासीद्; T G₂₋₄ M_{3.5} चापि (for ह्यासीद्). S K₁₋₄ B D₆₁ D_n D₁ तृतीयं तु पुरं (S₂ B₂ D_{n2} तु परं; B₁ च परं) ह्यासीद् (K₄ B D₆₁ D_n तेषां). —^d) K₄ D_{3.5} विद्युन्मालिनम् (for 'लिन'). B D₆₁ D_n आयसं (for एव च).

54 = (var.) B. 13. 160. 26. For the sequence in D_{2.4}, cf. v. l. 29, 30. D₃ reads 54^{ab} after 52. —^a) K_{1.2} D₁ G₁ M_{1.2} नाशकम् (for न शक्तम्). S₂ B_{1.2} D₆₁ D_n D_{1.5} M_{1.2} मघवा; D₃ 'वन् (for 'वान्). —^b) M₃₋₅ जेतुं (for भेतुं). —^c) K₄ B D₆₁ D_n D_{2.4-8} G₁ M_{1.2} सुरा; D₃ G₂₋₄ महा- (for अमरा). T G_{1.4} M_{1.2} राजन् (for रुद्रं).

55 = (var.) B. 13. 160. 27^a-28^b. For the sequence in D_{2.4}, cf. v. l. 29, 30. —^a) D₆ महात्मानः. —^b) G_{3.4} सर्वे- (for सर्वे). B_{1.2.4.5} D₆₁ D_{n1} T₂ (before corr.) G₁₋₄ M समागताः (for सवासवाः). — After 55^{ab}, N (K₅ missing) ins. :

1456* ब्रह्मदत्तवरा ह्येते घोरास्त्रिपुरवासिनः ।

ते तमूचुर्महात्मानं सर्वे देवाः सवासवाः ।
रुद्र रौद्रा भविष्यन्ति पशवः सर्वकर्मसु ।
निपातयिष्यसे चैनानसुरान्भुवनेश्वर ॥ ५५
स तथोक्तस्तथेत्युक्त्वा देवानां हितकाम्यया ।
अतिष्ठत्स्थाणुभूतः स सहस्रं परिवत्सरान् ॥ ५६
यदा त्रीणि समेतानि अन्तरिक्षे पुराणि वै ।

पीडयन्त्यधिकं लोकं यस्मात्ते वरदार्पिताः ।
त्वद्वते देवदेवेश नान्यः शक्तः कथंचन ।
हन्तुं दैत्यान्महादेव त्वं हन्ता च सुरद्विपाम् ।

[K₁ om. lines 1-2. — (L. 1) D_{1.7.8} हीमे (for ह्येते). — (L. 2) D₃ पीडयति (for 'यन्ति). S₁ बलद-
र्पिताः; D₃ वरदार्पिताः. — (L. 3) D₄ वदंते (for त्वद्वते).
D₆ विद्यते देवदेवस्य (for the prior half). — (L. 4) K₁
हर्तुं (for हन्तुं). K_{1.2} हतां च; D₂₋₃ च हन्ता (by
transp.). K₁ D₃ -द्विषं (for -द्विपाम्). K₄ B D₆₁
D_n जदि तांस्वं सुरद्विषः (B₂ 'पां') (for the post.
half).]

—^c) D_{n2} न (for नि-). K_{3.4} B_{3.5} D_n D_{2-4.6-8}
चैतान्; D₅ चैव (for चैनान्). B₁ निपातयिष्यसि
चैनान्; G₁ M निपातयैनान्भगवन्.

56 For the sequence in D_{2.4}, cf. v. l. 29, 30. D₁ om. 56^{ab}. —^a) = B. 13. 160. 28^c. —^b) S (G₅ missing) विष्णुं कृत्वा शरोत्तमं (cf. B. 13. 160. 28^d). — After 56^{ab}, N (K₅ missing) ins. a passage given in App. 1 (No. 25). On the other hand, after 56^{ab}, S (G₅ missing) ins. :

1457* शरयमर्षिं च वै कृत्वा पुङ्खे सोममपां पतिम् ।
स कृत्वा धनुर्गोकारं सावित्रीं ज्यां महेश्वरः ।
हयांश्च चतुरो वेदान्सर्ववेदमयं रथम् ।
प्रजापतिं रथश्रेष्ठे विनियुज्य स साराथिम् ।

[(Cf. B. 13. 160. 29). — (L. 1) T G₂₋₄ मुक्षे
(for पुङ्खे). — (L. 3) M₃ repeats from the post.
half up to साराथिम् (in the post. half of line 4)
after 56^{cd}. T G₂₋₄ चतुर्वेद- (for सर्ववेद-). — (L.
4) T G₂₋₄ च (for स).]

—^c) B₄ प्राविष्ट- (for अति-). D_{n1} M_{1.2} स्थासु-
भूतः. D_{n1} च; T G₂₋₄ M₃ सन् (for स). B₂
अतिष्ठत्स स्थाणुभूतः. —^d) T G₂₋₄ M₃₋₅ सहस्र- (for

त्रिपर्वणा त्रिशत्येन तेन तानि विभेद सः ॥ ५७

पुराणि न च तं शेकुर्दानवाः प्रतिवीक्षितुम् ।

शरं कालाग्निसंयुक्तं विष्णुसोमसमायुतम् ॥ ५८

बालमङ्कगतं कृत्वा स्वयं पञ्चशिशं पुनः ।

उमा जिज्ञासमाना वै कोऽयमित्यब्रवीत्सुरान् ॥ ५९

बाहुं सवच्चं शक्रस्य कुद्वस्यास्तम्भयत्प्रभुः ।

C. 7. 9577
B. 7. 102. 85
K. 7. 203. 85

*खं). K1.2 B2 प्रतिवत्सरान्; G1 M परिवत्सरं.

57 For the sequence in D2.4, cf. v. l. 29, 30. —^a) K2 यथा (for यदा). M3 सद्व्राणि (for समेतानि). —^b) Ś K1-3 D1.3 ह्यंतरिक्षे; D2 अंतरिक्षे (for 'रिक्षे). B (except B1) Dc1 Dn Ds च (for वै). — 57^a = B. 13. 160. 30^d. —^d) K1 B Dc1 Dn2 T G2-4 तदा; D1 om. (for तेन). Dn1 तदा तानि विचेतसः.

53 For the sequence in D2.4, cf. v. l. 29, 30. —^a) D2.4-5 महाबला (D2 'बला; D3 om. बला) न ते शेकुर्. — K1 om. 58^a. —^c) D1.3 हरं (for शरं). Dn2 कामाग्निः (sic) (for काला). —^d) Ś K1-3 D1 धाम्ना (for 'सोम-). G1 M1 विष्णुतेजोभिः संयुतं; M2 तेजो भ्रमायुतं. — B3 Dc1 (marg.) Dn2 D1.3.5 ins. after 58: K1 after 58^a:

1458* पुराणि दग्धवन्तं तं देवी याता प्रवीक्षितुम् ।

[D3 त्रिपुराणि दग्धवन्तं (for the prior half). D3 देवा (for देवी).]

— Ds cont.: D1.1.5 ins. after 58:

1459* सुमोच भगवान्द्रोणः पुराण्यदिश्य वीर्यवान् ।
ततो दैत्या महाभाग सपुत्राः सपरिप्रदाः ।
भस्मीभूना दुरात्मानो भिन्नाश्च त्रिपुरे पुरा ।
हत्वा दैत्यान्महादेवः सर्वदेवैः समाजितः ।
ऋषिभिः संस्तुतश्चैव परां सुदमुपागमत् । [5]
ततो ब्रह्मा सुरैः सार्धं बृहस्पतिपुरोगमैः ।
स्तुतिमारेभिरे कर्तुं भिन्ने त्रिपुरमन्दिरे ।

[(L. 1) D1.3 पुराण्यदिश्य (for 'प्रादिश्य). — (L. 2) Ds महात्मानः; D3 दुरात्मानः (for महाभाग). Ds सपुत्राः; D3 सोरराः (for सपुत्राः). — D1.3 om. lines 5-7. — (L. 5) D1 अपागमत् (for उपा).]
On the other hand, T G2-4 ins. after 58:

1460* देव्याः स्वयंवरे वृत्तं शृणुष्वान्यद्वनंजय ।

59 = (var.) B. 13. 160. 32. For the sequence in D2.4, cf. v. l. 29, 30. —^a) K1 बाणम् (for बालम्). B (except B3) Dn1 T G2-4 M3-5 दृष्ट्वा (for कृत्वा). —^b) B1 पंचशिशः (for 'शिश्वं). —^c) G2 उमां. K2

B1 D1.1 जिज्ञासमानो. M3-5 तु (for वै). Ś K3 D1.3 G1 M1.2 उमां जिज्ञासमानो वै (G1 M1.2 'नस्तु). —^d) B1 सोयम् (for कोऽयम्). B2 स तां (for सुरान्). G2 कोयमित्यब्रवीत्सुराः. — After 59, N (K3 missing) ins.:

1461* असूयतश्च शक्रस्य वज्रेण प्रहरिष्यतः ।

[B1 (marg. as above) प्रत्यावतश्च; D1.5 अश्व* (for अश्व*). D3 स (for च). Dn1 शक्रेण (for शक्रस्य).]

60 60^a = (var.) B. 13. 160. 33. For the sequence in D2.4, cf. v. l. 29, 30. —^a) B Dc1 Dn D2 तं तस्य; D1 ईद्रेद्रः; D2-3 ईद्रेद्रस्य (for शक्रस्य). D3 स बाहुवज्रं रुद्रस्य. —^b) K2 रुद्रस्य; D3 कुद्वश्च; T G3 सहसा (for कुद्वस्य). D3 [अ]स्तम्भयत् (for 'यत्). M2-5 विभुः (for प्रभुः). Dn1 कुद्वः स्यात्स्तम्भयत्प्रभुः; G2 तदा संस्तम्भयत्प्रभुः. — After 60^a, N (K3 missing) ins.:

1462* प्रहस्य भगवांस्तृणं सर्वलोकेश्वरः शिवः ।

ततः संस्तम्भितभुजः शक्रो देवगणैर्द्वैतः ।

जगाम शरणं तृणं ब्रह्माणं प्रभुमच्ययम् ।

ते तं प्रणम्य शिरसा प्रोचुः प्राज्ञल्यस्तदा ।

किमप्यङ्कगतं ब्रह्मन्पार्वत्या भूतमद्भुतम् । [5]

बालरूपधरं दृष्ट्वा नास्मामिस्त्र च लक्षितम् ।

तस्मात्त्वां प्रष्टुमिच्छामो निर्जिता येन वै वयम् ।

अयुध्या हि बालेन लीलया सपुर्दराः ।

तेषां तद्वचनं श्रुत्वा ब्रह्मा ब्रह्मविदां वरः ।

ध्यात्वा स शंभुं भगवान्बालं चामिततेजसम् । [10]

उवाच भगवान्ब्रह्मा शक्रादींश्च सुरोत्तमां ।

चराचरस्य जगतः प्रभुः स भगवान्हरः ।

तस्मात्परवरं नान्यत्किंचिदस्ति महेश्वरात् ।

यो दृष्टो ह्युमया सार्धं युष्माभिरभितथुतिः ।

स पार्वत्याः कृते देवः कृतवान्बालरूपताम् । [15]

ते मया सहिता यूयं प्रपद्यथं तमेव हि ।

[(L. 1) B Dc1 Dn विभुः (for शिवः). Ds सर्वलोकेश्वरः (for the post. half). — (L. 2) D1 ततं (for ततः). K1 B2-5 D2.3 स संस्तम्भित- (for संस्तं). D1.5 1.3 ततस्तु संस्तम्भिते हस्ते (for the prior half). — D2.4 om. lines 3-6. — (L. 3) K1 Dc1 (before corr.

C. 7. 8595
B. 7. 202. 64
K. 7. 202. 93

स एष भगवान्देवः सर्वलोकेश्वरः प्रभुः ॥ ६०

न संबुधुधिरै चैनं देवास्तं भुवनेश्वरम् ।

सप्रजापतयः सर्वे वालार्कसदृशप्रभम् ॥ ६१

अथाभ्येत्य ततो ब्रह्मा दृष्ट्वा च स महेश्वरम् ।

अयं श्रेष्ठ इति ज्ञात्वा वचन्दे तं पितामहः ॥ ६२

ततः प्रसादयामासुरुमानं रुद्रं च ते सुराः ।

as above) Dn² सत्तुव; D⁵ स तत्तु (for शरणं). D^{7.8} भूयः (for तृणं). Ś² ब्राह्मणं (for ब्राह्मणं). D^{7.8} परमात्मानमन्वयं (for the post. half). — (L. 4) K¹ ततः; D⁸ सुराः; D^{7.8} स्थिताः (for तदा). — (L. 5) Ś¹ K⁸ D¹ ब्रह्मा; D⁸ दृष्ट्वा (for ब्रह्मन्). B² (marg.) उत्तमं (for अद्भुतम्). Ś² K^{1.2} D¹ तस्येदं (Ś² तं भेदं; K¹ तस्येदं दृष्टमद्भुतं (for the post. half). — Ś K (K⁸ missing) D¹ om. lines 6-7. — (L. 6) B² तं च लक्षितं; B¹ अमिलक्षितः; Dn² अभिवादितः; D⁸-8 अभिनन्दितः (for तच्च लक्षितम्). — (L. 7) B^{1.2.4} तं (for त्वां). B^{1.2.4} द्रष्टुम् (for प्र). Dn¹ इच्छामि (for 'नो'). — (L. 8) D^{1.7.8} अयुतानि च बालेन (for the prior half). Ś¹ K¹ B¹-8 D¹ (before corr.) Dn D^{1.2.4-6.8} सत्तुवदरः. — (L. 9) D² तु (for तद्). D⁸ om. ब्रह्मा. D⁸ वेद- (for ब्रह्म). D⁵ ब्रह्मा लोकपितामहः (for the post. half). — (L. 10) D^{1.7.8} ज्ञात्वा (for ध्यात्वा). B D¹ Dn¹ स्वयंभूरः; D⁴ स शुभं (for स शुभं). D^{8.4} वा (for च). B D¹ Dn¹ तानुमेमितेजसः (D¹ Dn¹ 'विक्रमः' (for the post. half). — B D¹ Dn¹ om. line 11. — (L. 11) D^{1.8} स (for च). D⁸ सुरेश्वरः. — (L. 13) K¹ नास्ति; D² भूरः (for नान्यत्). K¹ अन्यन् (for अस्ति). D^{2.8} परं परात् (for महेश्वरात्). D⁴ किं वेदस्त परं परात् (sic) (for the post. half). — (L. 14) Ś¹ D⁸ [s]. लुमया; D^{1.7.8} [s] व मया (for लुमया). Ś² क्षमित- (for अं). — (L. 15) Ś² K¹ D¹ Dn¹ D^{1.5.7} पार्वत्या (K¹ D^{1.6} 'त्वा'). D^{4.6} महाः; D⁸ कृतं (for कृते). Ś¹ देवाः; K⁸ देवान्; B D¹ Dn¹ द्य (B^{1.8} स) रैः (for देवः). D⁴ वाच *** (for बालरूपताम्). — (L. 16) K⁴ सहितं (for 'ता'). K^{8.4} B⁸ प्रापयधं (for प्रप). D^{1.5.7.8} च (for हि).]

— °) B⁸ D^{1.6} M⁸-8 एव (for एष). — °) Dn² om. (hapl.) from प्रभुः up to श्वरम् (in 62⁸). Ś² T G²⁻¹ सर्वलोकमहेश्वरः; M⁸-8 'लोकेश्वरेश्वरः'. — After 60, M⁸ reads 62⁸ for the first time, repeating it in its proper place; whereas, after 60, K¹ ins. :

1463* एवमुक्ता गता देवा यत्र देवो महेश्वरः ।

On the other hand, D^{7.8} ins. after 60 :

1464* अथान्येन स्वरूपेण ब्रह्मा दृष्ट्वा तमव्ययम् ।

61 = (var.) B. 13. 160. 34. For the sequence in D^{2.4}, cf. v. 1. 29, 30. Dn² om. 61 (cf. v. 1. 60).

— °) B² तं (for सं). B^{2.4} G⁴ चैव; G¹ M^{1.3} देवं; M⁸ देवा (for चैनं). — °) K² देवत् (for देवात्). Ś K (K⁸ missing) D¹ त्रि- (for तं). M⁸ वचन्दे तं पितामहः (= 62⁸). — Ś K²⁻⁴ D¹ om. (hapl.) 61⁸-62⁸. — °) D^{1.5.7.8} तं (for स). K¹ सप्राज्ञा यतयः सर्वे. — °) B^{2.5} D^{1.5.7.8} वालार्कस (D⁴ 'लकं स' दशं प्रभुं; G¹ M वालमर्कलमप्रभं).

62 = (var.) B. 13. 160. 35. For the sequence in D^{2.4}, cf. v. 1. 29, 30. Ś K²⁻¹ Dn² D¹ om. 62⁸ (cf. v. 1. 61, 60). D⁸ om. 62⁸. — °) D^{1.5.7} चैनं; T G^{3.4} तु स; Bom. ed. स च (by transp.). G² दृष्ट्वा तु भुवनेश्वरं. — D⁸ om. 62⁸. M⁸ reads 62⁸ for the first time after 60. — °) D⁸ तं वचन्दे (by transp.). — After 62, N (K⁸ missing; D⁸ after 62⁸) ins. :

1465*

ब्रह्मोवाच ।

त्वं यज्ञो भुवनस्यास्य त्वं गतिस्त्वं परायणम् ।

त्वं भवस्त्वं महादेवस्त्वं धाम परमं पदम् ।

त्वया सर्वमिदं व्याप्तं जगत्स्यावरज्जगम् ।

भगवन्भूतमव्ययेन लोकनाथ जगत्पते ।

प्रसादं कुरु शक्य त्वया क्रोधादितस्य वै । [5]

व्यास उवाच ।

पद्मयोगेनैव च श्रुत्वा ततः प्रीतो महेश्वरः ।

प्रसादाभिमुखो भूत्वा चादृष्ट्वा समधाकरोत् ।

[(L. 1) D^{1.7.8} मतिष्ठ; D⁸ धृतिष्ठ (for नं). K¹ B²⁻⁴ D⁸-5 परायणः. — (L. 2) Ś K^{2.3} D^{1.5} मतिष्ठ; D^{1.7.8} गतिष्ठ; D⁸ पतिष्ठ (for भवत्). Ś² K² D^{1.5.7.8} महदेव (for 'देवत्'). D^{7.8} धाता (for धाम). — (L. 3) D⁸ ततम् (for सर्वम्). Ś² प्राप्तं. — (L. 4) B² नमोस्तु ते (for जगत्पते). — (L. 5) D⁸ त्वया क्रोधादितः प्रभो (for the post. half). Ś K^{2.3} D^{1.7.8} om. the ref. — (L. 6) B²⁻⁵ D¹ Dn¹ D⁸ पद्मयोगि (for 'नेर'). B² प्राह (for प्रीतो). D¹ Dn¹ वृषध्वजः (for महेश्वरः). — B Dn¹ om. line 7; D¹ reads it on marg. — (L. 7) Ś² वेद्यात् (for भूत्वा). D⁸ प्रश्रयामिमुखो भूत्वा (for the prior half). K¹ D⁴ सदादृष्ट्वात्; K^{8.4} D¹ Dn¹ D⁸ अदृष्ट्वात् (D⁸ 'त्यम्'); D^{2.5-8} सोष्ट (for चादृष्ट्वात्). Ś K^{2.3} D^{1.3.4.6-8} अकारयत् (for अथाकरोत्).]

63 = (var.) B. 13. 160. 36. For the sequence

अभवच्च पुनर्वाहुर्थाप्रकृति वज्रिणः ॥ ६३
 तेषां प्रसन्नो भगवान्सपत्नीको वृषध्वजः ।
 देवानां त्रिदशश्रेष्ठो दक्षयज्ञविनाशनः ॥ ६४
 स वै रुद्रः स च शिवः सोऽग्निः शर्वः स सर्ववित् ।
 स चेन्द्रश्चैव वायुश्च सोऽश्विनौ स च विद्युतः ॥ ६५
 स भवः स च पर्जन्यो महादेवः स चानघः ।
 स चन्द्रमाः स चेशानः स सूर्यो वरुणश्च सः ॥ ६६

स कालः सोऽन्तको मृत्युः स यमो रात्र्यहानि च ।
 मासार्धमासा ऋतवः संध्ये संवत्सरश्च सः ॥ ६७
 स च धाता विधाता च विश्वात्मा विश्वकर्मकृत् ।
 सर्वासां देवतानां च धारयत्यवपुर्वपुः ॥ ६८
 सर्वैर्देवैः स्तुतो देवः सैकधा बहुधा च सः ।
 शतधा सहस्रधा चैव तथा शतसहस्रधा ॥ ६९
 ईदृशः स महादेवो भूयश्च भगवानजः ।

C. 7. 9602
 B. 7. 202. 110
 K. 7. 223. 110

in D2.4, cf. v. l. 29, 30. —^a) M2-s तत्र (for ततः). —^b) Ś K1-3 D1.4-3 तदा (for उमां). K1 वने (for च ते). —^d) K1 Dn2 D3.6 प्रकृतिस्थो हि वज्रिणः.

64 For the sequence in D2.4, cf. v. l. 29, 30. G2 partly damaged. —^b) G1 M महेश्वरः (for वृषध्वजः). —^c) D1 partly damaged. D3.7.8 देवानां दैत्यभयानां.

65 = (var.) B. 13. 160. 39. For the sequence in D2.4, cf. v. l. 29, 30. —^a) D1 शिवः सर्वः (for स च शिवः). D1.8 स वै रुद्रांशसंभूतः. —^b) K1 B1-4 Dc1 Dn1 D3.5.6 सर्वस्य; K2 B5 Dn2 D1 G2 सर्वः स; K1 D2.4 सर्वश्च (D1 om. च) (for शर्वः स). Ś1 K3 विश्ववित्; D1.5.7.8 सर्वगः; S (G6 missing) सर्वकृत् (for 'वित्'). —^c) D1 partly damaged. D1.8 स च (for चैव). D2 सोमश्च; D3 वातश्च (for वायुश्च). Ś1 K3 स एवेन्द्रश्च वायुश्च. —^d) Ś2 K4 B1 D1 T G2-4 M3.6 च स (by transp.). Dn2 वैद्युतः (for वि').

66 ^a) K1 नयः (for भवः). Ś1 K3 च स (by transp.); D6-8 सर्वैः. —^b) B Dc1 Dn1 D5 सनातनः; D6 G1 M स चानघ (for स चानघः). —^c) 66^{ca} = B. 13. 160. 40^{ab}. —^d) G2 damaged. B1 स च (by transp.).

67 = B. 13. 160. 40^a-41^b. Ś K2.3 om. (hapl.) 67. —^b) B2-4 Dc1 Dn1 तु; T G2.4 स; G3 सा (for च). —^c) K1 D5 -मासौ; Dc1 Dn1 D1.5.7.8 -मास- (for -मासा). Dn2 D1 ऋतवः (for ऋ'). —^d) K1 D3.6 संध्या; D1.8 संधिः; T G2-4 स च; G1 M पक्षौ (for संख्ये). K1 D3.6 तु स; D1.5.7.8 च यः; G1 M1.2 च ह (for च सः). Dn2 संख्ये संवत्सराणि च.

68 68^{ab} = (var.) B. 13. 160. 41^{ca}. —^a) Ś1 K3 D1.8 स धाता च (D1.8 स); Ś2 धाता स च (by transp.); K1 B5 D5 धाता चैव; K2.4 B1-4 Dc1

Dn D1-3 धाता च स. D1 स धाता विधाता चैव. — After 68^{ab}, the sequence in G1 M1.2 is: 72^a-74^b, 68^a-70^b, 75^{ab}, 83^{ab}, 70^a-71^a, 74^{ca}, 77^{ca}, 85^a-87^b, 80^{ab}, 88-89, 82, 75^a-77^b, 85^{ab}, 78-79, 87^{ca}, 80^a-81^b, 90; while M3-s read 72-73 after it. —^c) T G2-4 विश्वेषां (for सर्वासां). —^d) B1 धारयन् (for 'यति'). D1.5.8 [उ]त्तमन् (for [अ]वपुर्). K1 धारयत्यवपुर्वपुः; D2 धारयन्स पुनर्वपुः.

69 For the sequence in G1 M1.2, cf. v. l. 68. —^a) K1 स वै; B1.5 D2 सर्वः; D1 सर्वे (for सर्वैर). —^b) B (except B5) Dc1 Dn1 सर्वथा; T G1-4 M1.2 एकधा; M3-s सप्तधा (for सैक). — 69^{ca} = (var.) B. 13. 160. 43^{ca}. —^c) Hypermetric. T G2-4 तथा सहस्रधा (T 'या' चैव. —^d) G2 damaged. B Dc1 Dn1 भूयः (for तथा). K1 D5 -सहस्रधाः (for 'धा'). — After 69, N (K5 missing) ins.:

1468* द्वे तन् तस्य देवस्य वेदज्ञा ब्राह्मणा विदुः ।
 घोरा चान्या शिवा चान्या ते तन् बहुधा पुनः ।
 घोरा तु या तनुस्तस्य सोऽग्निर्विद्युस्त आस्करः ।
 सोमार्धं पुनरेवास आपो ज्योतीषि चन्द्रमाः ।
 वेदाङ्गाः सोपनिषदः पुराणाध्यात्मनिश्चयाः । [5]
 यदत्र परमं गुह्यं स वै देवो महेश्वरः ।

[Lines 1-4 = (var.) B. 13. 161. 3-4. — (L. 1) Ś1 K2.3 D1 द्वे न; Dn1 द्वितन् (for द्वे तन्). D3 देवः; D1.5.7.8 तस्य (for तस्य). D3 वेदज्ञा (for देवस्य). D5 om. from वेद up to तस्य (in line 3). Ś1 K2.3 D1.4 द्वे (D1 द्वे) ब्रह्मा; D3 देवस्य (for वेदज्ञा). — (L. 2) K3 तत्र; D1 तत्र (for तन्). Ś2 [अ]ग्नि नः; D2 तुरः; D1.7.8 स्मृता (for पुनः). — (L. 3) B5 च या; D1.7.8 या च (for तु या). Dc1 D5 तनुः. Ś2 K3 D5 घोरा तु वायुधानस्य (for the prior half). K2 B Dc1 Dn D2.4.5.7.8 विष्णुः (for विद्युत्). D1.5.7.8 च (for स). — (L. 4) K1.4 B5-8 Dn2 D2.3.6-8 सोमा तु (D5 -तु);

C. 7. 9502
B. 7. 202. 110
K. 7. 203. 110

न हि सर्वे मया शक्या वक्तुं भगवतो गुणाः ॥ ७०

सर्वैर्गृहीतान्चै सर्वपापसमन्वितान् ।

स मोचयति सुप्रीतः शरण्यः शरणागतान् ॥ ७१

आयुरारोग्यमैश्वर्यं वित्तं कामांश्च पुष्कलान् ।

स ददाति मनुष्येभ्यः स चैवाक्षिपते पुनः ॥ ७२

सेन्द्रादिषु च देवेषु तस्य चैश्वर्यमुच्यते ।

B₁ (marg.) मामार्थ (for सोमा). — (L. 5) D₂ स-
वेदाः; D₃ वेदाश्च (for 'ज्ञा:'). S₂ K₁ D₃ सोपनिषदाः.
K₄ B₃ 5 D₁ 5. 7. 8 वेदाः सांगोपनिषदः (D₅ 'दा:') (for
the prior half). S₂ B₁ -निश्चयः; K₁ -निश्चला: (for
'या:'). D₁ 5. 7. 8 पुराणान्यात्मनिश्चयः (for the post. half).
— (L. 6) S₂ देवो वै (by transp.).]

70 = (var.) B. 13. 160. 44. For the sequence
in G₁ M₁ 2, cf. v. l. 68. — ^a) G₂ damaged. D₃
सदशः; D₄ 7. 8 ईशश्च (for ईशदशः). S₁ K₂ 3 D₁ तु;
S₂ K₄ D₂ D₂ 5. 6 च (for स). S (G₅ missing;
G₂ damaged) शिवो (for महा). M₃-s भूयो (for
देवो). — ^b) S₂ K₂ 3 भूयस्तु; B₁ D₂ D₂ भूयांश्च (for
भूयश्च). D₂ 2 अतः; D₃ भवः (for अजः). — ^c) M
न हि शक्या (M₁ 2 शक्या) मया वक्तुं. — ^d) M सर्वे
(for वक्तुं). K₁ भगवन्तो गुणानघ. — After 70, K₁ 4
D (except D₂ D₂ D₂) ins. :

1467* अपि वर्षसहस्रेण सततं पाण्डुनन्दन ।

71 = (var.) B. 13. 161. 25^a-26^b. For the
sequence in G₁ M₁ 2, cf. v. l. 68. — ^a) B₂ 3 सर्व-
(for सर्वैर्). G₁ M₁ 2 उपेतांश्च (for गृहीतान्). D₁ 5
ये; D₁ 3 G₁ M च (for वै). — ^b) D₂ प्रतापितान्;
D₁ 5. 3 G₁ समन्विता: (for 'न्वितान्'). — ^c) B₂ स
निर्मोचयति प्रीतः.

72 = (var.) B. 13. 161. 26^c-27^d. For the
sequence in G₁ M₁ 2, cf. v. l. 68. M₃-s read 72-73
after 68^a. — ^b) S₂ G₂ partly damaged. S₂ K₂ 3
D₁ 3 वित्त- (for वित्तं). D₁ कामं च (for कामांश्च).
D₂ 2 om. from पुष्क up to व्याप्तो (in 75^b). K₁ D₁-s
चित्तकानां च मातृपान् (D₁ 5 'पा'). — 72^c is damaged
in G₂. — ^d) K₁ D₃-s. 7. 8 वै च (K₁ वा) (for चैव).
S₂ क्षिपते; G₂ 4 [आ]क्षीयते (for [आ]क्षिपते). K₁
D₁-s नरः (for पुनः).

73 = (var.) B. 13. 161. 27^e-28^f. For the
sequence in G₁ M, cf. v. l. 68. D₂ 2 om. 73

स चैव व्याहृते लोके मनुष्याणां शुभाशुभे ॥ ७३

ऐश्वर्याचैव कामानामीश्वरः पुनरुच्यते ।

महेश्वरश्च भूतानां महतामीश्वरश्च सः ॥ ७४

बहुभिर्वहुधा रूपैर्विश्वं व्याप्नोति वै जगत् ।

अस्य देवस्य यद्वक्तं समुद्रे तदतिष्ठत् ॥ ७५

एष चैव श्मशानेषु देवो वसति नित्यशः ।

(cf. v. l. 72). — ^a) T G₁ 2. 4 M₁ 2 हि; M₃-s
[अ]पि (for च). K₁ D₁-3 पुनः (D₃ om. पुनः) सेन्द्रादि-
देवेषु; D₃ सर्वैर्द्रादिषु दे. — ^b) S₂ तथैव; K₁ 2 D₁
तस्य वै; D₁ तस्यैव (for तस्य च). — ^c) S₂ damaged.
K₂ D₁ न (for स). K₁ D₂-1. 6. 3 व्यावृत्तो (D₂ 'ते');
B D₂ D₂ D₂ M₃ व्यावृत्तो; M₁ 2 व्याहृते (for
व्याहृते). T G₂-1 स चैव वेत्ति लोकेषु. — ^d) S₂ D₃-s.
7. 3 S (G₅ missing) मानुषाणां (for मनुष्याणां). D₁
शुभाशुभैः (for 'शुभे').

74 = B. 13. 161. 28^g-29^h. For the sequence
in G₁ M₁ 2, cf. v. l. 68. D₂ 2 om. 74 (cf. v. l.
72). M₃-s om. 74^{ab}. — ^a) K₁ D₃ ऐश्वर्यस्यैव; D₂
'यदिषु; D₁ 5 'यांश्चैव; M₁ 2 'यं चैव (for 'यांचैव').
— After 74^a, B₂ 3 read 74^d, repeating it in its
proper place. S₂ K₂-1 B₁ D₂ D₁ om. 74^{bc}. — ^b)
K₁ D₁-s सह; B₁ D₂ D₃ च सः B₂ सम्यग् (for
पुनर्). — ^c) Bom. ed. महतां भूतानां (by transp.).
G₂ damaged from रश्च up to व्याप्तो (in 75^b).

75 = (var.) B. 13. 161. 29^{iel}. For the sequence
in G₁ M₁ 2, cf. v. l. 68. D₂ 2 om. up to व्याप्तो
(cf. v. l. 72). G₂ damaged up to व्याप्तो. — ^a)
T G₂ 4 बहुभ्यो (for 'भिर'). — ^b) S₂ damaged.
G₁ M₁ 2. 3. 5 (sup. lin.) व्याप्नोति (for व्याप्नोति वै).
— After 75^{ab}, the sequence in M₃-s is: 77^{cd},
83^{ad}, 85^e-86^d, 89, 87^{ab}, 80^{ab}, 88, 82, 75^e-77^b,
83^{ab}, 78-79, 87^{cd}, 80^e-81^d, 90 followed by 82^a-83^b
(r), 83^e-84^d, 85-87 (r), 88^{cd} (r), 91 in M₃ 5
only. — ^c) B D₂ D₂ D₂ तस्य (for अस्य). S₂
K₂ 3 तद् (for यद्). D₂ यश्च रूपश्च यद्वक्त्रं. — ^d) S₂
K₃ यदतिष्ठत्; K₁ D₁-s तदभिष्टु (D₃ 'च्यु') तं; K₂ D₁
यदि तिष्ठत् (D₁ 'त:'); K₃ B₁-3. 5 T G₂-1 M₃-s तद-
धिष्ठितं (B₁-3. 5 'त'); D₂ 2 तदतिष्ठति (sic); D₂ 7. 3
तद्धि (D₁ 8 'च.') तिष्ठति; D₃ तत्तु तिष्ठते (for तद-
तिष्ठत्). — After 75, K₁ B D₂ D₂ D₂ 5. 7. 3 M₁ 2
ins. :

यजन्त्येनं जनास्तत्र वीरस्थान इतीश्वरम् ॥ ७६
अस्य दीप्तानि रूपाणि घोराणि च वहूनि च ।
लोके यान्यस्य कुर्वन्ति मनुष्याः प्रवदन्ति च ॥ ७७
नामधेयानि लोकेषु वहून्त्यत्र यथार्थवत् ।
निरुच्यन्ते महत्वाच्च विभुत्वात्कर्मभिस्तथा ॥ ७८
वेदे चास्य समाम्नातं शतरुद्रीयमुत्तमम् ।
नाम्ना चानन्तरुद्रेति उपस्थानं महात्मनः ॥ ७९

स कामानां प्रभुर्देवो ये दिव्या ये च मानुषाः ।
स विभुः स प्रभुर्देवो विश्वं व्याप्नुवते महत् ॥ ८०
ज्येष्ठं भूतं वदन्त्येनं ब्राह्मणा मुनयस्तथा ।
प्रथमो ह्येष देवानां मुखादस्यानलोऽभवत् ॥ ८१
सर्वथा यत्पशून्पाति तैश्च यद्रमते पुनः ।
तेषामधिपतिर्यच्च तस्मात्पशुपतिः स्मृतः ॥ ८२
नित्येन ब्रह्मचर्येण लिङ्गमस्य यदा स्थितम् ।

C. 7. 96/6
B. 7. 202, 124
K. 7. 203, 124

1464* वडवामुखेति विख्यातं पितृत्तयमयं इतिः ।

[K1 D1.8 निवसति (K1 'ते') (for [र]ति विख्यातं).
D3 वडवाश्चेति विक्षिप्तः (for the prior half). K1 D3.7.8
पितृम् (for पितृ).]

— After 75, the sequence in T G2-4, on the other
hand, is 87^{ad}, 88^{ad}, 80^{ad}, 88^{ad}, 88^{ad} (r), 87^{ad}
(r), 89, 76-79, 87^{ad}, 80^{ad}-86^{ad}, 90.

76 = (var.) B. 13. 161. 19. For the sequence
in S (G5 missing), cf. v. l. 68, 75. —^a) B1
एवं (for एष). B2 वा (for च). —^b) D2 D3
रुद्रो (for देवो). T G2-4 निर्दहन्; G1 M निर्भयः
(for नित्यशः). —^c) S2 partly damaged. S1 K
(K5 missing) D1.5.7.8 T G2-4 यजते (D3 'ति') तं;
D2 यजत्येवं; D6 जयति ते (for यजन्त्येनं). G1 M1.2
सदा (for जनास्). D1 जयंती तद्रतास्तत्र. —^d) S
D1 देव- (for वीर-). K1 वीरं स्थापुं मुनीश्वरं; D1.8
वीरस्थाणुमधीश्वरं; S (G5 missing) 'स्थाननिवासिनं'.

77 = (var.) B. 13. 161. 21. For the sequence
in S (G5 missing), cf. v. l. 68, 75. —^a) B1 तस्य
(for अस्य). S2 अस्य रूपाणि दीप्तानि. — B1 D3 om.
77^{ad}. —^c) K1 D2 D3.5 पृथ्यंते; G1 M रूपाणि
(for कुर्वन्ति). S1 K2.3 D1 स्तुवंति यानि लोकेस्य; S1
स्तुवंति या ****. —^d) S2 partly damaged. T G2-4
मानुषाः (for मनुष्याः). D1-8 प्रसवंति (for प्रवदन्ति).

78 = (var.) B. 13. 161. 22. For the sequence
in S (G5 missing), cf. v. l. 68, 75. —^a) G1.2
M1.2 लोकेस्मिन् (for 'पु'). —^b) B1 यथार्थतः (for
'वत्'). —^c) S K1-3 D1.7 निरुच्यंते; B5 निरयतो;
D1.8.8 निरुच्यंते (for 'च्यन्ते'). D1 महत्वाच्च (for
महत्वाच्च). —^d) S2 damaged. K1 प्रमुखात्; G1
M1.2 बहु (for विभु). S1 K (K5 missing) D
(except D1 D2) कर्मणस्; G3 कर्मणस् (for कर्म-

मिस्). K1 तदा (for तथा).

79 = (var.) B. 13. 161. 23. For the sequence
in S (G5 missing), cf. v. l. 68, 75. —^a) D1.7
देवे; D3 देवे (for वेदे). S K2-4 D2 D1 समाख्यातं;
K1 'प्रातं' (sic); D3 'प्यातं' (sic) (for 'ग्नातं'). —^b)
S K2.3 B2.4 D1 D2 D1.3.5.7.8 M1 रुद्रियम्. T
G3.4 उच्यते (for उत्तमम्). — 79^{ad} is damaged in
G2. —^c) S K1-3 B1.2 D1 D2 D1 नाम्ना (K1 B1
D1 'ज्ञां') चानन्तरं रुद्रम् (B1.2 D1 D2 'द्र'); D3 नाम्ना
चानन्तरुद्रस्य; D1.8 नाम्नां चानन्तरणम्. —^d) K1 B
D1 D2 D2.5 T G2-4 ह्युपस्थानं (for उप).

80 Cf. B. 13. 161. 24. For the sequence in
S (G5 missing), cf. v. l. 68, 75. —^a) D1.8 लोकानां
(for कामानां). S1 विभुर (for प्रभुर). D2 दिव्यो
(for देवो). —^b) S2 G2 मानवाः (for मानुषाः).
—^c) T G2-4 विभुः (for विभुः). —^d) N (K5
missing) व्या (K2 प्रा)प्नोति वै (for व्याप्नुवते). K1
D3.5-8 महान्; G1 M1.2 जगत् (for महत्).

81 = (var.) B. 13. 161. 24^{ad}-25^{ad}. For the
sequence in S (G5 missing), cf. v. l. 68, 75. —^a)
S2 damaged; K1 D1 D2 D2.5-8 G1.3.4 ज्येष्ठ (for
ज्येष्ठ). B1 [इ]मं; D2.3 [अ]न्ये (for [ए]नं). —^b)
K1 तदा (for तथा). —^c) G1 M1.2 (marg. before
corr.) प्रथमो; G2 अवमो (for प्रथमो). —^d) S2 B1.2
D2 [अ]निलो (for [अ]नलो). G2 अनिलस्यानि [न]लो-
भवत्.

82 = (var.) B. 13. 161. 14. For the sequence
in S (G5 missing), cf. v. l. 68, 75. —^a) K1 D3
सर्वथा यः; B1 'थायः'; B2 सर्वदा यत्; T G2.4 M2.5
(last two second time) सर्वान्यच्च; G2 स यदावत् (for
सर्वथा यत्). K1 याति; D3 अन्यांश्च (for पाति). D1
सर्वथा यत्सुतानि; D3 सर्वस्यापत्यस्यानि. — 82^{ad}

C. 7. 9616
B. 7. 202. 124
K. 7. 203. 124

महयन्ति च लोकाश्च महेश्वर इति स्मृतः ॥ ८३

ऋषयश्चैव देवाश्च गन्धर्वाप्सरसस्तथा ।

लिङ्गमस्यार्चयन्ति स्म तच्चाप्यूर्ध्वं समास्थितम् ॥ ८४

पूज्यमाने ततस्तस्मिन्मोदते स महेश्वरः ।

सुखी प्रीतश्च भवति प्रहृष्टश्चैव शंकरः ॥ ८५

is damaged in Gs. — ^b) Ds [अपि (for यद्). Bs तस्य यो व्रसते पुनः (sic); D1 वैश्वदुमते पुनः (sic). — ^c) T Gs. 4 अपि (for अशि-). K1 यज्ञस; K2. 3 Bs Dn2 Ds. 6 यश्च (for यच्च).

83 = (var.) B. 13. 161. 15. For the sequence in S (Gs missing), cf. v. l. 68, 75. — ^a) K1 Ds नित्ये (Ds 'त्यं' च; Dn2 यद्वयं (sic); D2 दिव्येन; T Gs. 4 Ms. 5 (last two second time) सत्येन; Bom. ed. दिव्यं च (for नित्येन). — D1 repeats (without var.) 83^b after सोमार्धं च (in 95^b). — ^b) K1. 4 B1. 3. 5 Dn2 D1-8 T Gs. 4 Ms. 5 (last two second time) यथा; G1 Ms (first time). 4. 5 (first time) सदा (for यदा). K1 D1. 6 [उ]स्थितं (for स्थितम्). — Ds om. 83^c-84^b. G1 M1. 2. 4 om. (hapl.) 83^c-84^d. — ^c) S1 Ks Ds मोहयन्ति (for सह). Ds लोकांश्च. D7. 3 तं (for च). S1 K1. 2. 4 D1 मोहः (S1 'द' यन्सर्वलोकांश्च (K1 'कानां; D1 'काश्च); B1. 3-5 Dc1 Dn D2. 3 महय (Bs Dc1 Dn1 मोहय; Ds मोहयं)त्येष लोकांश्च; B2 पराणां य स लोकाणां; T Gs. 4 Ms. 5 त (T Gs स) मर्चयन्ति लोकांश्च. — ^d) Dn2 स्थितः (for स्मृतः). S1 K3 तेन महेश्वरः स्मृतः.

84 = (var.) B. 13. 161. 17. For the sequence in S (Gs missing), cf. v. l. 68, 75. Ds om. 84^a; G1 M1. 2. 4 om. 84 (cf. v. l. 83). — ^a) S1 K1-3 D1-5. 7. 8 हि (for [पु]व). — ^a) S1 K2 तथा (for तच्च). K1 Ds [अ]पूर्वं; Dn2 [अ]न्यर्धं; Ds. 7 पूर्वं (for [अ]न्यूर्ध्वं). Ds न्यवस्थितं; D1. 6-8 समाश्रिताः; Ds 'श्रितं' (for 'स्थितम्'). — After 84, T Gs. 4 Ms. 5 ins.:

1469* उर्ध्वलिङ्गस्ततश्चोक्तो भगवान्ब्राह्मणैः सदा ।

[Ms. 5 सह (for सदा).]

85 = (var.) B. 13. 161. 18. For the sequence in S (Gs missing), cf. v. l. 68, 75. 85^a is partly damaged in Gs. — ^a) B2 तत्र (for ततस्). T Gs. 4 Ms. 5 (last two second time) पूज्यमाने च तस्मिन्; G1 M (Ms. 5 first time) तेषु संपूज्यमानेषु. — ^b) Dn2 च (for स). T Gs. 4 Ms. 5 (last two second time)

यदस्य बहुधा रूपं भूतभन्व्यभवत्स्थितम् ।

स्वावरं जङ्गमं चैव बहुरूपस्ततः स्मृतः ॥ ८६

एकाक्षो जाज्वलन्नास्ते सर्वतोऽक्षिमयोऽपि वा ।

क्रोधाद्यश्चाविश्लोकांस्तस्माच्छर्व इति स्मृतः ॥ ८७

धूमं रूपं च यत्तस्य धूर्जटिस्तेन उच्यते ।

पूज्यते च महेश्वरः. — ^a) S1 K2. 3 Ds. 6 सुखं; Dn2 स्वयं; T Gs. 4 Ms. 5 (last two second time) सुखं (for सुखी). Gs. 4 M1-3. 5 (last two second time) प्रीतिश्च (for प्रीतश्च). Ms (second time) भवत (for 'ति). — ^d) T Gs. 4 Ms. 5 (last two second time) प्रभवश्च (for प्रहृष्टश्च).

86 = (var.) B. 13. 161. 11^a-12^b. For the sequence in S (Gs missing), cf. v. l. 68, 75. — ^a) S1 K2. 3 D1 यदत्र; D2 यथास्य (for यदस्य). — ^b) Dc1 भन्व्यं. S1 K3. 4 B (except B4) Dc1 Ds भवस्थितं (S1 'ति'); K1 -समाहितं; D2 -भविष्यतः; D4-3 -समा (D4 'म' स्थितं (for -भवत्स्थितम्). Dn1 भूतं भन्व्यं भवस्थितं; Dn2 भूतं भन्व्यमवास्थितं; S (Gs missing) भूतं भन्व्यं (M1 om. भन्व्यं) भवत्तथा (Gs Ms. 5 'दा'). — ^d) G1 M1. 2 बहुरूपं (for 'रूपस'). K1 Ds Gs ततः (for स्मृतः).

87 87^a = (var.) B. 13. 161. 13^a. For the sequence in S (Gs missing), cf. v. l. 68, 75. Ds om. (hapl.) 87-88. — ^a) K1 Dn1 जज्वलन्; Ds. 4. 5. 7 यज्ज्वं; T Gs. 4 (all first time) Ms. 5 (both second time) विज्वं (for जाज्वं). Bs स्व[?] स्वा]स्ते (for आस्ते). — ^b) = 91^b. Dn2 om. from सर्वतो up to विश्वे देवा (in 88^c). S1 K3 यः; K2 D1 सः; Ds च (for वा). D2 सर्वतोऽक्षिमयोऽक्षते (sic); T (both second time) G1. 2-4 (last three second time) M1. 2. 3 (first time). 4. 5 (first time) 'क्ष इवेक्षते; T Gs. 4 (all first time) Ms. 5 (both second time) सर्वतः शोभनं विशेष (Ms. 5 व्रजेत्). — Ds om. (hapl.) 87^c-91^b. — ^c) B1 Dc1 Dn1 D1. 2 यच्च; Ds यापि (for यश्च). Ds क्रोधे ह्यास्यादि दि] श्लोका; T Gs. 3 क्रोधमस्याविश-लोकास; G1 M1. 2 क्रोधाद्यच्छति य्लोकं; G1 Ms. 5 (last two second time) क्रोधाद्यमा (G1 'म') विश्लोकांस (Ms. 5 'न्शोकांस); M1. 5 (first time) क्रोधाद्यच्छति यत्शोक्तं. — ^d) S1 K2. 3 D1 T Gs. 4 तेन (for तस्माद्). K1. 4 B1-3. 5 D2-3 सर्वं (for शर्वं).

88 88^a = (var.) B. 13. 161. 9^a. For the sequence in S (Gs missing), cf. v. l. 68, 75. Dn2 om. up

विश्वे देवाश्च यत्तस्मिन्विश्वरूपस्ततः स्मृतः ॥ ८८

तिस्रो देवीर्यदा चैव भजते भुवनेश्वरः ।

ग्रामपः पृथिवीं चैव व्यम्बकश्च ततः स्मृतः ॥ ८९

समेधयति यन्नित्यं सर्वार्थान्सर्वकर्मसु ।

शिवमिच्छन्मनुष्याणां तस्मादेव शिवः स्मृतः ॥ ९०

सहस्राक्षोऽयुताक्षो वा सर्वतोऽक्षिमयोऽपि वा ।

यच्च विश्वं महत्पाति महादेवस्ततः स्मृतः ॥ ९१

दहत्यूर्ध्वं स्थितो यच्च प्राणोत्पत्तिस्थितश्च यत् ।

स्थितलिङ्गश्च यन्नित्यं तस्मात्स्थानुरिति स्मृतः ॥ ९२

विषमस्यः शरीरेषु समश्च प्राणिनामिह ।

C. 7. 8630
B. 7. 102. 129
K. 7. 203. 139

to विश्वे देवा; Ds. s om. 88 (all cf. v. l. 87). K1 D1 om. (hapl.) 88. D1 om. (hapl.) 88-89. —^a) K3.4 B2-5 Dc1 Dn1 D2.3 T G2-4 धृज् (for धृज्). D3 द्वि (for च). —^b) Ś K2.3 D1 [इ]त्यतः; S (Gs missing) पुनर् (for तेन). K1 B Dc1 Dn1 D2.3 चोच्यते (for उ). — 88^a = B. 13. 161. 12^a. —^c) Ś K3 वसंत्यस्मिन्; D1 च संत्यस्मिन्; G3 (first time) M3.5 (both second time) श्रयंत्यस्मिन् (M3.5 'स्माद्'); G4 (first time) श्रयंत्यस्माद्; M1.2 च यत्तस्मिन् (for च यत्तस्मिन्). Dn1 विश्वे देवाश्च रूपयो; T G2 (all first time) विश्वे देवाश्च यत्तस्मिन् (sic). —^d) Ś1 K3 D3 T G2-4 (last five first time) M3.5 (both second time) इति (for ततः). — After 88, D3 reads lines 9-10 of 1470*.

89 For the sequence in S (Gs missing), cf. v. l. 68, 75. D1.6 om. 89 (cf. v. l. 88, 87). Dn2 reads 89 after 91. —^a) B Dc1 Dn1 S (Gs missing) देव्यो (for देवीर्). B1-3.5 Dc1 Dn1 T G2.3 यदा (T G2.3 'या' चैनं; G1 M [s]पि यच्चैनं (for यदा चैव). D3 तिस्रो देवेव भजते (sic). —^b) B2 Dc1 Dn1 S (Gs missing) भजते (for भजते). B Dc1 Dn1 D1 T G1.3.4 M भुवनेश्वरं; G2 यं महेश्वरं (for भुवनेश्वरः). —^c) B2-5 Dc1 Dn1 S (Gs missing) पृथिवी (for ग्राम्). B2-5 Dc1 D1 S (Gs missing) पृथिवी (for 'वी'). —^d) Ś2 K2 स; B1.2.4 Dc1 Dn1 तु (for च).

90 = (var.) B. 13. 161. 9^a-10^b. For the sequence in S (Gs missing), cf. v. l. 68, 75. Ds om. 90 (cf. v. l. 87). D2 om. (hapl.) 90-91. T G2-4 om. 90^a. —^a) G1 M यो (for यत्). —^b) K1 सर्वतः; D1.3 सर्वथा; D1 सर्वार्थो (for 'र्थान्'). —^c) T G2-4 कुर्वन् (for इच्छन्). —^d) Ś K3 D1.3.7 शिव इति; T G2-4 देवः शिवः (for एष शिवः).

91 For the sequence in S (Gs missing), cf. v. l. 68, 75. D2 om. 91 (cf. v. l. 90). Ds om. 91^a (cf. v. l. 87). 91^a = (var.) B. 161. 13^a. —^b) Ś1 K3

यः (for वा). S (Gs missing) सर्वतोऽक्ष इवेक्षते (Gs 'वेक्ष्ये'; G1 'वोच्यते'). — 91^a = (var.) B. 13. 161. 8^a. —^c) Ś2 K1.3 D1.5.7.3 यश्च; G1 M यस्माद् (for यच्च). Ś1 K1 D1-3 महान् (for महत्). K1 D1.5 याति; D1.3 G3 जाति (for पाति). —^d) K1 B2 D1-3 G1 M इति (for ततः). D1 स्मृताः. — After 91, Dn2 reads 89; while D1.6 ins. 1470*.

92 = (var.) B. 13. 161. 10^a-11^b. D1.6 om. (hapl.) 92. —^a) Ś1 K1 Dc1 Dn D2.3 महत्पूर्व; Ś2 K2.3 D1 महत्पूर्व; Ś2 'दृ' ध्वं; B1-3.5 दहत्यूर्ध्वं (B2 'ध्वं'); B1 दहत्यूर्ध्वं (for दहत्यूर्ध्वं). K1.2 B2 Dc1 Dn D2.3 यच्च (for यच्च). —^b) D3 प्राणोत्पत्ति; G2 'त्यचो' (for 'त्पत्ति'). Dn2 G1 M -स्थितिश्च; D3 -स्थितेश्च (for -स्थितश्च). Ś1 K1.3 Dn2 D2.3.5 G1 M1.2 यः; D1.3 सः (for यत्). T G2.4 प्राणवत्तत्स्थितं च यत्. —^c) Ś2 K1.2 Dn1 D1.5 M2 स्थिति; Dn2 M1.4 स्थितं; D1.3 T G2-4 M3.5 स्थिरः; G1 स्थिति (for स्थित-). K1 G1 M1.2.4 -लिंगं (for -लिङ्गश्च). —^d) G2 damaged. K1 D1.3 च सं (for इति). — After 92, N (Ks missing; D1.6, after 91) ins.:

1470* सूर्याचन्द्रमसोलोके प्रकाशान्यंशवश्च ये ।
ते केशाः संज्ञितास्तस्य स्योमकेशस्ततः स्मृतः ।
कपिः श्रेष्ठ इति प्रोक्तो धर्मश्च वृष उच्यते ।
स देवदेवो भगवान्कीर्त्यते वै वृषाकपिः ।
ब्रह्माणमिन्द्रं वरुणं यमं घनदमेव च । [5]
निगुह्य हरते यस्मात्तस्मादर इति स्मृतः ।
निमीलिताभ्यां नेत्राभ्यां बाल्यादेभ्यां महेश्वरः ।
ललाटे नेत्रमसृजतेन व्यक्षः स उच्यते ।
भूदे भव्यं सवित्यच्च सर्वं सर्वमशेषतः ।
भव एष ततो यस्मान्नृतमव्यमवोद्धवः । [10]

[B1 Dc1 Dn1 om. (hapl.) lines 1-2. — (L. 1) D2.6 'सूर्याचन्द्रमसौ' (for 'मसौ'). Dn2 प्रकाशते (for 'शति'). K1 Ds [आ]श्वश्च (for [अ]श्वश्च). Ś K2-4 तु (for च). B2 वाः (for वे). B2 D1.7 प्रकाशतं-श्वश्च ये; D1 'त्याश्वश्च ये; D2 'तेश्वरस्तु ये; D3 'लत-श्वश्च ये; Ds 'ते रुचश्च वाः (for the post. half).

C. 7. 9430
B. 7. 202. 119
K. 7. 23. 139

स वायुर्विषमस्थेषु प्राणापानशरीरिषु ॥ ९३

पूजयेद्विग्रहं यस्तु लिङ्गं वापि समर्चयेत् ।

लिङ्गं पूजयिता नित्यं महतीं श्रियमश्नुते ॥ ९४

ऊरुभ्यामर्धमाग्रेयं सोमार्धं च शिवा तनुः ।

— (L. 2) K₁ B₁₋₃ D_{2,3} ते (B₁ ताः) केश-; B₅ D₅ ताः केशाः; D_{2,3} ताः केशं (for ते केशाः). K₄ B (B₄ om.) D_{2,3} D_{2,3} स उपक्षे (for तस्य). K₁ D_{1,6-8} केशाश्च संवत्तारुक्षे (for the prior half). Ś₁ (sup. lin. as above) व्यापि- (for व्योम-). Ś₁ K₃ इति; D_{4,7,8} च स (for ततः). — B₁₋₃ om. lines 3-4. B₁ D₁ read lines 3-8 after 98. — (L. 3) D₃ कपि- (for कपिः). — (L. 4) B_{1,5} [s] तो; D₁ D₁ स; D_{2,3} [s] लाद (for ५). — B_{2,3} read lines 5-6 on marg. — (L. 5) B_{1,2} ब्रह्माणमिन्द्रावरुणो (for the prior half). — B_{2,3} om. 7-10. — (L. 7) B_{1,5} D₁ उमीलितान्त्र्यां (for निमी). K₁ वायुदेव्या; K_{3,4} B_{1,5} D₁ D_{2,3} ६ बलाद्देवो (K₃ व्या); D₃ बली देवो; D_{1,8} अन्यदेव्या (for वात्स्यादेव्या). — (L. 8) D_{1,6-8} तस्मात् (for तेन). D₂ त्र्यवक; D₃ त्रिनयन (for उपक्षः स). D₅ तस्माद्वक्ष इति रमृतः (for the post. half). — B_{1,5} D₁ D₁ om. lines 9-10; D₅ reads the same after 88. — (L. 9) D₂ देहे भूतं (for भूतं भवः). K_{1,4} B_{2,3} D_{2,3} D_{2,3} भविष्यं (for ५च). D₂ भवः; D₃ भवेत्; D_{1,8} शर्वः (for सर्व). K₄ D_{2,3} सर्व जगदशेषतः; B₁ यच्च सर्वं संशेषतः (for the post. half). — (L. 10) K_{3,4} B₁ D_{2,3} D_{2,3} भव एव; D₁ भवत्येव (for भव एव). D₂ तस्माद्. K₁ भगवत्परः; D₃ भवोद्भिदः (for भवोद्भवः).]

93 = (var.) B. 13. 161. 20. The portion of the text from 93^a up to the end of the adhy. is lost in Ś₂ on a missing folio. —^a) G₂ damaged. K₁ D_{1,5} विषमस्थं; D₃ विषमश्च; D₅ मज- (sio); D_{1,8} G₂ मस्थ- (for मस्थं). K₂ च घोरेषु (for शरी). —^o) K₁ रक्षेयः; B₁ G_{2,4} समस्थः; D₁₋₃ समस्तः; G₂ damaged (for श्र). D₃ वरः (for इह). —^o) D₁ partly damaged. K₁ D_{3,7,8} प्राणिनां; G_{2,4} समायुर (for स वायुर). G₁ M_{1,2} स वायुः सर्वभूतेषु. —^a) K₁ प्राणापानाश्च; K_{3,4} B₁₋₄ D₁ D₂ T G₁ M_{1,2} प्राणोपानः; B₅ D₁ D_{2,6} प्राणापानः; D_{1,8} G₂₋₄ प्राणायामः (G_{2,4} म-); M₃₋₅ प्राणपालः (for प्राणापान-). D₃ शरीरेषु च (for शरीरिषु).

94 = (var.) B. 13. 161. 16. Ś₂ missing (cf. v. l. 93). —^b) K₄ D_{3,6} च (for वा). D₄ समर्चयेत्;

आत्मनोऽर्धं च तस्याग्निः सोमोऽर्धं पुनरुच्यते ॥ ९५

तैजसी महती दीप्ता देवेभ्यश्च शिवा तनुः ।

भास्वती मानुषेभ्यस्तनुर्धोराग्निरुच्यते ॥ ९६

ब्रह्मचर्यं चरत्येव शिवा यास्य तनुस्तया ।

S (G₂ missing) महात्मनः (for समर्चयेत्). B D₁ D₁ लिङ्गं वापि महात्मनः. —^o) K₁ D_{3,6} लिङ्गपूजाप्रभावेन. G₂ तस्माद्वजयिता नित्यं. —^a) K₁ D_{3,6} मानवः; G₂ damaged (for महती).

95 Ś₂ missing (cf. v. l. 93). —^a) Ś₁ K_{2,3} आग्नेयी (for ५ं). T G₂ तनुपश्चार्धमाग्नेयं. —^b) Ś₁ सोमार्धं; D₁ M_{2,4} सोमोर्धं; D₂ सौम्यार्धं (for सोमार्धं). K₁ om.; D₃ तु (for च). — After सोमार्धं च, D₄ repeats 83^b. T G₂₋₄ सौम्यार्धं च शिवं स्मृतं. — D_{3,7} om. (hapl.) 95^c-96^b. 95^c = (var.) B. 13. 161. 5^{ab}. —^o) D₃ आत्मनोर्धं; T G_{2,3} ततो रूपं (for आत्मनोऽर्धं). K₁ च यत्तस्य; K₄ B_{2,5} D₁ D_{2,3} तथा (D_{2,3} अथ) चाग्निः; D₄ damaged (for च तस्याग्निः). —^a) G₂ damaged. Ś₁ K₃ सोमः; K₁ तस्यार्धं; K₂ B D₁ D₁ D_{1,5,6,8} सोमार्धं; D_{2,3} सोमोर्धं (for सोमोऽर्धं). D₄ स्पर्धेषु पुनरुच्यते.

96 Ś₂ missing (cf. v. l. 93). D_{3,7} om. 96^{ab} (cf. v. l. 95). D₃ repeats 96^a after 96^d. —^a) K₁ D_{1,5} M₃₋₅ तेजसी; D₂ तेजो वै (for तेजसी). D₃ दीप्तिर; M_{3,4,5} (sup. lin. as in text) प्रोक्ता (for दीप्ता). —^b) Ś₁ K_{2,3} सा; K₄ B₁₋₄ D₁ D₁ [s] त्व; M_{1,2} तु (for च). M₁ तन्. B₅ देवाश्चास्य शिवा तनुः; D₂ दिव्या चास्य महातनुः; T G₂₋₄ M₃₋₅ देवी या च (M₃₋₅ यच्च) शिवा तनुः. —^o) K₁ शाश्वती (for भास्वती). K₁ D₁ D₁₋₅ मानुषेभ्यश्च; B₅ वेयस्य (for वेयस्य). —^a) D_{1,8} ननु (for तनुर्). D₃ अग्निम् (for अग्निर्). M_{3,5} उद्भवा; M_{1,5} (sup. lin.) उद्भवा (for उच्यते). T तनुर्धोराग्निरुच्यते.

97 = (var.) B. 13. 161. 5^c-6^b. Ś₂ missing (cf. v. l. 93). —^a) D_{2,3} ब्रह्मचर्यं (for चर्यं). K₁ D₁ D_{1-5,8} T G₂₋₄ M₃₋₅ [ए]वा (for [ए]व). —^b) G₁ यस्य; M₃₋₅ यच्च (for यास्य). Ś₁ K_{2,3} D₁ च या; D₃ T G_{1,2} M तथा (for तया). —^o) K₁ D₃ M₃₋₅ यस्य; B₂ या सा; D₃ यास्तन् (for यास्य). B_{1,2} D₁ D₁ G₁ M_{1,2} घोरतमा (for तारा). T G₃ अघोरस्य च घोरा याः; G₂ सौम्यस्वरूपा सा मूर्तिः. —^a) K₁ सुरेश्वरी; B₃ महेश्वरः (for तयेश्वरः). D₄ सर्वमति- तयेश्वराः; D₅ सर्वलमितयेश्वरः; D_{1,8} सर्वमति तयेश्वरी;

यास्य घोरतरा मूर्तिः सर्वानत्ति तयेश्वरः ॥ ९७
यन्निर्दहति यत्तीक्ष्णो यदुग्रो यत्प्रतापवान् ।
मांसशोणितमज्जादो यत्ततो रुद्र उच्यते ॥ ९८
एष देवो महादेवो योऽसौ पार्थ तवाग्रतः ।
संग्रामे शात्रवान्निघ्नंस्त्वया दृष्टः पिनाकधृक् ॥ ९९
एष वै भगवान्देवः संग्रामे याति तेऽग्रतः ।
येन दत्तानि तेऽस्त्राणि यैस्त्वया दानवा हताः ॥ १००

धन्यं यश्चसमायुष्यं पुण्यं वेदैश्च संज्ञितम् ।
देवदेवस्य ते पार्थ व्याख्यातं शतरुद्रियम् ॥ १०१
सर्वार्थसाधकं पुण्यं सर्वकिल्बिषनाशनम् ।
सर्वपापप्रशमनं सर्वदुःखभयापहम् ॥ १०२
चतुर्विधमिदं स्तोत्रं यः शृणोति नरः सदा ।
विजित्य सर्वान्शत्रून्स रुद्रलोके महीयते ॥ १०३
चरितं महात्मनो दिव्यं सांग्रामिकमिदं शुभम् ।

C. 7. 9642
B. 7. 202. 151
K. 7. 229. 151

T G₂. 3 सर्वाननुचरेत्सदा; M₃. 4. 5 (sup. lin.) सर्वानिह-
तयेश्वरः; M₅ सर्वानत्यथ सेश्वरः.

98 = B. 13. 161. 7. S₂ missing (cf. v. l. 93).
—^a) S₁ K₂. 3 D₁ निर्दहति (for निर्दहति). K₁ D₁. 5.
7. 3 या; B₅ M₃-5 यस् (for यत्). D₂ तीक्ष्णा; D₃
तीक्ष्णो; D₅ तीक्ष्णे (for तीक्ष्णो). —^b) D₁ य उग्रो;
D₂ यदुग्रं (for यदुग्रो). D₂ T यः; G₂ damaged
(for यत्). G₃ यदुच्छायः प्रतापवान्. —^c) G₂ partly
damaged. B₅ मज्जाय; D₁. 3. 3 G₁ M मज्जादो (D₃
'दि' (for 'दो'). K₁ D₁ मांसशोणितमन्मेदो. —^d) K₁
यत्ततो (sic); D₁. 3 यत्ततो (for यत्ततो). B₅ ततो
रुद्रः स उच्यते; T G₂. 3 रुद्र इत्यभिधीयते. — After
98, B₁ D₁ read lines 3-8 of 1470*, while K₁
ins. 1472*.

99 S₂ missing (cf. v. l. 93). —^a) D₃ एवं (for
एष). G₁ M स एष भगवान्देवो. — G₂ om. (hapl.).
99^b-100^a. —^b) T G₃. 4 असौ (for योऽसौ). K₁ D₁
तवाग्रतः (for 'ग्रतः'). — D₂ om. (hapl.). 99^b-100^b.
—^c) D₂ सततं (for संग्रामे). —^d) D₁ दृष्टः (for
दृष्टः). S₁ K₂. 3 D₁ T पिनाकधृक्. — After 99, S₁
K (K₁ missing) D₁ (marg. sec. m.) D₂ D₁. 3-3
ins.:

1471* सिन्धुराजवधार्थाय प्रतिज्ञाति स्वयानव ।

[D₁ D₂ प्रतिज्ञावत् (for 'ज्ञाते').]

— D₁ (marg. sec. m.) D₂ D₃. 5. 6 (marg.) cont.:
K₁ ins. after 98:

1472* कृष्णेन दर्शिते स्वप्ने यत्ने शैलेन्द्रमूर्धनि ।

[Cf. 7. 57. 34. D₁ D₂ D₃ तु (for ते).]

100 S₂ missing (cf. v. l. 93). D₂ om. 100^a;
G₂ om. 100^a (cf. v. l. 99). —^a) S (G₂ om.; G₃
missing) स एष (for एष ते). —^b) G₁. 4 M सर्व-
लोकेश्वरः प्रभुः. —^c) S₁ K₂. 4 D₂ D₁. 3 तेन (for

येन). B₁ G₁ M तेन तेऽस्त्राणि दत्तानि.

101 S₂ missing (cf. v. l. 93). D₂ transp. 101^a
and 101^d. —^a) D₂ वन्यं (for धन्यं). —^b) D₁
देवैश्च (for वेदैश्च). D₁ संमत् (for संज्ञितम्). —^d)
K₁ शतरुद्रयं (sic).

102 S₂ missing (cf. v. l. 93). 102^a is damaged
in G₂. —^a) B D₁ D₂ D₃ साधनं (for 'कं').
—^b) G₁ M शत्रुवि- (for किल्बिष-). — D₅ reads
102^d after 103. —^d) D₂ विनाशनं (for भया-
पहम्). — After 102, G₁ M ins.:

1473* अश्वमेधसहस्रस्य राजसूयशतस्य च ।

इष्टस्य फलमाप्नोति दुराचारोऽपि मानवः ।

गवां कोटिशतस्यापि दानस्य फलमश्नुते ।

[(L. 3) G₁ M₁. 2 दत्तस्य (for दानस्य).]

103 S₂ missing (cf. v. l. 93). —^a) D₁. 4-3 G₁
इमं (for इदं). —^b) G₁ M सदा नरः (by transp.).
B₁ यः पदेऽन्यतः शुचिः. — K₁ D₁ om. (hapl.) 103^a-
105^b. —^c) S₁ K₂. 3 च; D₅ lacuna (for स). K₁
B₃ विजित्य सर्वया शत्रून्; B₁. 2. 4 D₁ 'त्य शत्रून्सर्वान्स'
(B₁ 'वाँश्च'); B₅ D₃ 'त्य सर्वेशत्रून्स (D₃ 'न्यै'); D₁
स विजित्य रणे शत्रून्; S (G₅ missing) विजित्य शा-
(G₁ 'श' ब्रवान्सर्वान् (G₃ 'न्महान्'). — After 103, D₅
reads 103^d.

104 S₂ missing (cf. v. l. 93). K₁ D₁ om. 104
(cf. v. l. 103). —^a) Hypermetric. D₂ प्रोक्तः; G₄
एतं (for चरितं). D₂ D₃ महात्मनो (for 'ह्मनो'). D₅
होदः; T G₂ M₃-5 नित्यं (for दिव्यं). D₁ चरंतीह
महात्मानो; D₁. 3 चरितं देवदेवस्य; G₃ 'तं महादाश्वयं'.
—^b) K₁. 3 D₂ D₃ संग्रामिकम् (for संग्रामं). Bom.
ed. स्मृतं (for शुभम्). D₁. 3 दिव्यं सं (D₃ सो) ग्रामिकं
शुभं; D₁ दिव्यं संग्रामिकमिदं शुभं (hypermetric).
— 104^d is partly damaged in G₂. —^c) K₁ D₁.

C. 7. 9642
B. 7. 202. 151
K. 7. 203. 151

पठन्वै शतरुद्रीयं शृण्वंश्च सततोत्थितः ॥ १०४

भक्तो विश्वेश्वरं देवं मानुषेषु तु यः सदा ।

वरान्स कामाल्लभते प्रसन्ने त्र्यम्बके नरः ॥ १०५

गच्छ युध्यस्व कौन्तेय न तवास्ति पराजयः ।

यस्य मन्त्री च गोप्ता च पार्श्वतस्ते जनार्दनः ॥ १०६

संजय उवाच ।

एवमुक्त्वार्जुनं संख्ये पराशरसुतस्तदा ।

जगाम भरतश्रेष्ठ यथागतमरिंदम ॥ १०७

इति श्रीमहाभारते द्रोणपर्वणि त्रिसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १७३ ॥ ॥ समाप्तं नारायणास्त्रमोक्षपर्वं ॥

॥ समाप्तं द्रोणपर्वं ॥

1. 8 पठेद् (for पठन्). D₁ रुद्रीयं (for रुद्रीयं). —^d
D₁ यः शृण्वन्; D₂ प्रातश्च; D₃ यः शृण्वंश्च (hyper-
metric); D₄ यः शृणुयात्; D₅ शृणुयात् (for शृण्वंश्च).
K₁ यः शृणोति तथोत्थितः; D₂ शृण्वंश्च सततं नरः; G₁
M सर्वपापैः प्रमुच्यते. — After 104, D₃ ins.:

1474* यः शृणोति नरो भक्त्या यश्चापि परिकीर्तयेत् ।

दिवा वा यदि वा रात्रौ ब्रह्महत्यां व्यपोहति ।

105 S₂ missing (cf. v. l. 93). K₁ D₁ om. 105^{ab}
(cf. v. l. 103). —^a) D₂ भक्तो विश्वेश्वरे देवे. —^b)
B₂ D₃ च (for तु). —^c) D₂ सर्वान् (for वरान्).
K₁ B₁ 2. 1. 5 D₂ D₃ कामान्स (by transp.); D₃
अभीष्टां. —^d) K₁ D₃ 4. 5 प्रसन्ने त्र्यम्बकेश्वरः (D₂ "रे").

106 S₂ missing (cf. v. l. 93). —^b) D₂ तत्र
(for तव). D₃ पराभवः (for "जयः"). — D₄ om.
106^a—107^b. —^c) K₁ पद्य (for यस्य). D₂ पार्श्वस्थस्
(for गोप्ता च). T G₂—1 यस्य गोप्ता च मन्त्री च. —^d)
S₁ K₁ 2. 3 D₁ पार्श्वस्थश्च; K₁ D₂ D₃ 5 "स्थो हि";
T G₂—4 पालकस्ते (for पार्श्वतस्ते). K₁ D₂ (marg. sec.
m.). 1. 8 पार्श्वस्थो (D₂ तिष्ठते) मधुसूदनः.

107 S₂ missing (cf. v. l. 93). D₁ om. 107^{ab}
(cf. v. l. 106). D₂ T G₂ om. the ref. G₁ M₁ 2
वैशंपायन (for संजय). —^a) G₁ M₁ 2. 4 संख्ये (for
संख्ये). —^b) D₂—3 परास (D₁ "सु") र. (for "शर").
S (G₂ missing) प्रभुः (for तदा). —^c) D₁ सुवनः;
G₂ भारत (for भरत). —^d) K₁ D₁ अरिंदमः;
M₃—5 उदारधीः (for अरिंदम). — S₁ K₂—1 D₁—2. 5
ins. after 107: B D₂ D₃ after the colophon:

1475* संजय उवाच ।

युद्धं कृत्वा महाघोरं पञ्चाहानि महाबलः ।

ब्राह्मणो निहतो राजन्ब्रह्मलोकमवासवान् ।

अधीते यत्फलं वेदे तदस्मिन्नपि पर्वणि ।

क्षत्रियाणामभीरूणां विशुद्धं ख्याप्यते यदाः ।

[S₁ K₂—1 D₁ om. the ref. — (L. 1) B₂ D₂ D₃
महद् (for महा-). — (L. 2) K₂ D₁ निहतो ब्राह्मणो
राजन् (for the prior half). D₂ D₃ 5 इतो गतः (for
अवासवान्). — (L. 3) S₁ K₂—1 D₁ 5 स्वधीने (for अ°).
D₂ स्वधीयीत इदं पर्वं सदा पर्वणि पर्वणि. — (L. 4) D₂
क्षत्रियः सन् (for "वाणान्"). D₃ 5 कुलोनानां (for अभी-
रूणां). K₁ B D₂ D₃ D₄ यु (B₁ D₂ D₃ उ) क्तमत्र
महद्यशः; D₂ सशुभ्र ख्यापयेयतः (sic); D₃ सुशुभं ख्यापये-
यतः (for the post. half).]

— B D₂ D₃ cont.:

1476* य इदं पठते पर्वं शृणुयाद्वापि नित्यशः ।

स मुच्यते महापापैः कृतैर्वीरैश्च कर्मभिः ।

[D₂ om. line 1. — (L. 1) B₁ सर्व (for पर्वं).
— (L. 2) B₂ पर्वभिः (for कर्मभिः).]

— B₂ D₃ cont.: S₁ K₂—1 D₂ D₃ 2. 5 cont. after
1475*:

1477* इदं पठेत्सर्वमहार्थसंयुतं

रणे जयं पाण्डववृष्णिर्हिदयोः ।

सदा शुभं यः शृणुयात्तथा नरः

स मुच्यते पापकरोऽपि कर्मभिः ।

[(L. 1) B₂ D₂ D₃ 5 पठेदिर (D₂ "मं") (by transp.).
B₂ D₂ D₃ 2. 5 पर्वं (for सर्व-). K₁ D₁ महास्त्र (for
"य-"). D₂ संपदः; D₃ 5 युक्तं (for संयुतं). — (L. 2)
D₂ जये (for जयं). — (L. 3) S₁ (sup. lin. as
above) K₂ स चाशुभं नः; D₃ 5 सदाशुभं (for सदा
शुभं यः). K₁ om. तथा. B₂ D₂ D₃ 5 च तत्परः;
D₂ च नित्यशः (for तथा नरः). — (L. 4) D₂ प्र (for

स). K₂, 1 D₁ पापकरैश्च; B₅ Dn₂ D₂, 3, 6 'कृतैः स्व-
(for 'करोसि').]

— Ś₁ K₂-1 B₅ Dn₂ D₁-3, 6 cont.: B₁-4 Dc₁ Dn₁
cont. after 1476*:

1478* यज्ञावाप्तिर्वाह्यस्येह नित्यं

युद्धे नित्यं क्षत्रियाणां जयश्च ।

शेषौ वर्णौ काममिष्टं लभेते

पुत्रान्पौत्रान्नित्यमिष्टान्स्थैव ।

[(L. 1) K₂ यज्ञावाप्ति; K₁ 'वाप्ति (for 'वाप्तिर).
— (L. 2) B Dc₁ Dn₁ बोरे युद्धे; Dn₂ स्वातिमित्यं;
D₂ नित्यं युद्धे (by transp.); D₃ स्वातं नित्यं; D₅ युत्वा
चेरं. Dn₁ D₂ यज्ञश्च (for जयश्च). — (L. 3) Ś₁ K₂
शिष्टौ (for शेषौ). D₁ लभेते. B Dc₁ Dn शेषा वर्णौ:
काममिष्टं (B₅ सर्वकामं) लभं (Dn₂ 'भे)ते. — (L. 4) B₁
कामम् (for नित्यम्). Ś₁ K₂, 3 D₁ [इति (for [ए]व).
Dn₂ D₃, 6 पुत्रान्पौत्रान्नित्य (Dn₂ 'न्द्रव्य)मिष्टैस्तथैकम्.]

— On the other hand, S (except M₁; G₅ missing)
ins. after 107 :

1479* एतदाख्याय वै सूतो राज्ञः सर्वं तु संजयः ।

प्रयातः शिविरायैव द्रष्टुं कर्णस्य वैशसम् ।

[(L. 2) G₃, 4 प्रयातः; M₃, 5 प्रयाति (for प्रयातः).]

Colophon: Ś₁ K₅ G₅ missing. — Sub-parvan: B₁
नारायणास्त्रमोक्ष. — Day of Droṇa's Generalship: K₂
पंचमे युद्धदिवसे. — Adhy. name. Ś₁ K (K₅ miss-
ing) Dn₂ D₁-3 शतरुद्ध्यं समाप्तः; B S (G₅ missing)
शतरुद्ध्यं; B₃, 4 (both also) द्रोणवधः. — Adhy. no.
(figures, words or both): T G₂, 3 198; G₁
M₁, 2 197; G₁ 199; M₃-5 196.

— After the last colophon, Ś₁ concludes with :

संपूर्णं द्रोणपर्वं ॥ अस्यानु कर्णपर्वं भविष्यति । यस्यायमाद्यः
श्लोकः —

श्रीवैशंपायन उवाच ।

ततो द्रोणे हते राजन्दुर्योधनमुखा नृपाः ।

भृशमुद्विग्नमनसो द्रोणपुत्रमुपागमन् ॥

अध्यायाश्चास्मिन्पर्वणि ॥ द्रोणाभिषेकः । भगदत्तवधः । अभि-
मन्युवधः । अर्जुनप्रतिज्ञा । सात्यकिप्रवेशः । भीमसेनप्रवेशः ।
भूरिश्रवसो वधः । जयद्रथवधः । रात्रियुद्धं । घटोत्कचवधः ।
आचार्यधनुर्न्यासः । द्रोणवधः । शतरुद्ध्यमिति ।

समाप्तं भारतं पर्वं महदेतदुदाहृतम् ।

अत्र ते पृथिवीपालाः प्रायशो निधनं गताः ।

द्रोणपर्वणि ये शूरा निर्दिष्टाः पुरुषपंभाः ॥

अत्राध्यायशतं प्रोक्तमध्यायाः सप्ततिस्र्यः ।

नवश्लोकसहस्राणि नवश्लोकशतानि च ॥

श्लोका नव तथा चात्र संख्यातास्तत्त्वदर्शिना ।

पाराशर्येण मुनिना संचित्य द्रोणपर्वणि ॥

इति शुभं ॥

जयो नामेतिहासोऽयं सर्ववेदोपबृंहितः ।

कार्णस्तु पञ्चमो वेदो यन्महाभारतं स्मृतम् ॥

धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ ।

यदिहान्ति तदन्वयं यन्नेहान्ति न तत्कचित् (1.56.33) ॥

वेदशैलावतीर्णेन कुतकैतरुहारिणा ।

व्यासवाक्यजलौघेन नीरजस्का मही कृता ॥

द्वैपायनोऽष्टपुटनिःसृतमप्रमेयं

पुण्यं पवित्रमयं पापहरं शिवं च ।

यो भारतं समधिगच्छति वाच्यमानं

किं तस्य पुष्करजलैरभिषेचनेन ॥

ॐ नमः कमलदलविपुलनयनाभिरामाय नारायणाय । ॐ नमः
श्रीभगवतै श्रीसुन्दर्यै । श्रीकृष्णद्वैपायनाय नमः । गुरुभ्यो
नतयो नुतयश्च ।

K₁ concludes with :

समाप्तं द्रोणपर्वं पुस्तकं ॥ शुभमस्तु ॥ द्रोणपर्वणः सार्धदश-
साहस्राः श्लोकाः व्यासेनोक्ताः । १५००० ॥

— K₅ concludes with :

समाप्तं संपूर्णं द्रोणपर्वं पञ्चमो युद्धदिवसः समाप्तः । अस्यानु
कर्णपर्वं भविष्यति । तस्यार्थं प्रतिसंक्षिप्तः ।
वैशंपायनः ।

ततो द्रोणे हते राजन्दुर्योधनमुखा नृपाः ।

भृशमुद्विग्नमनसो द्रोणपुत्रमुपागमन् ॥

द्रोणपर्वण्यमी वृत्तान्ताः । द्रोणाभिषेकः । भगदत्तवधः । अभि-
मन्युवधः । अर्जुनप्रतिज्ञा । सुमद्रा तै । सात्यकिप्रवेशः । भीम-
सेनप्रवेशः । भूरिश्रवसो वधः । आचार्यधनुर्न्यासः । द्रोणाचार्य-
वधः । शतरुद्ध्यमिति ॥

समाप्तं भारतं पर्वं महदेतदुदाहृतम् ।

यत्र ते पृथिवीपालाः प्रायशो निधनं गताः ।

द्रोणपर्वणि ये शूरा निर्दिष्टाः पुरुषपंभाः ॥

अध्याया सप्ततिस्र्यः ।

..... श्लोकाप्रमपि मे श्रेणु ।

नवश्लोकसहस्राणि नवश्लोकशतानि च ।

श्लोकाना शतसंख्या ।

श्लोक ग्रंथ ॥ ११०९ ॥

पाराशरेण मुनिना संचित्य द्रोणपर्वणि ।
जयो नामेतिहासोऽयं सर्ववेदोपबृंहितः ।
... पञ्चमो वेदो यन्महाभारतं स्मृतम् ॥
धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे ... तर्पभ ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यज्ञेहास्ति ... ॥
वेदशैलावतीर्णेन कुतर्कतरुहारिणा ।
व्यासवाक्यजलाद्यै...रजस्का मही कृता ॥
द्वैपायनोष्ठ.....मप्रमेयं

पुण्यं पवित्रमथ पापहरं शिवं च ।
यो भारतं समधिगच्छति पाण्डवानं
किं तस्य पुष्करजलैरभिषेचनेन ॥
समाप्तं द्रोणपर्वेति शुभं ।

शुभमस्तु लेखकपाठकयोः । संवत् १६९७ । वैशाखवदि १४
शुक्रदिने । श्रीरामाय नमः ॥

लिखितोऽयं पुस्तकः काश्मीर प्रह्लादराजनक गौमतब्राह्मणकृते
लिखितोऽयं पुस्तकः कल्याणदासेन ।

द्रोण शिवापतेः कृत्वा होमं ब्राह्मणान्भोजयित्वा वस्त्रं ...
दक्षिण... कृतं न लब्ध्वा मुक्ति मुक्ति लभेत ॥

— Ks concludes with :

समाप्तमिदं द्रोणपर्वं । अस्यानन्तरं कर्णपर्वं भविष्यति ।
यस्यायमाद्यः श्लोकः ।

वैशंपायन उवाच ।

ततो द्रोणे हते राजन्दुर्योधनमुखा नृपाः ।

भृशमुद्विग्नमनसो द्रोणपुत्रमुपागमन् ॥

अध्यायाश्चास्मिन्पर्वणि । द्रोणाभिषेकः । भगदत्तवधः । अभिमन्यु-
वधः । अर्जुनप्रतिज्ञा । सात्यकिप्रवेशः । भीमसेनप्रवेशः । भूरिश्र-
वसो वधः । जयद्रथवधः । रात्रियुद्धं । घटोत्कचवधः । आचार्य-
धनुर्न्यासः । द्रोणवधः । शतरुद्रीयमिति ।

समाप्तं भारतं पर्वं महदेतदुदाहृतम् ।

अत्र ते पृथिवीपालाः प्रायशो निधनं गताः ।

द्रोणपर्वणि ये शूरा निर्दिष्टाः पुरुषर्षभाः ॥

अत्राध्यायशतं प्रोक्तमध्यायैः सप्तभिस्त्वया ।

नवश्लोकसहस्राणि नवश्लोकशतानि च ।

श्लोका नव तथा चात्र संख्यातास्तत्त्वदर्शिना ॥

पाराशर्येण मुनिना संचित्य द्रोणपर्वणि ।

जयो नामेतिहासोऽयं सर्ववेदोपबृंहितः ।

कार्णस्तु पञ्चमो वेदो यन्महाभारतं स्मृतम् ॥

धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ ।

यदिहास्ति तदन्यत्र यज्ञेहास्ति न तत्कचिद् ॥

वेदशैलावतीर्णेन कुतर्कतरुहारिणा ।

व्यासवाक्यजलौघेन नीरजस्का मही कृता ॥

द्वैपायनोष्ठपुटनिःसृतमप्रमेयं

पुण्यं पवित्रमथ पापहरं शिवं च ।

यो भारतं समधिगच्छति वाच्यमानं

किं तस्य पुष्करजलैरभिषेचनेन ॥

शुभमस्तु लेखकपाठकयोः ॥

— B1 concludes with :

समाप्तं चेदं द्रोणपर्वेति । अस्यानन्तरं कर्णपर्वं । तस्यायमाद्यः
श्लोकः ।

वैशंपायन उवाच ।

ततो द्रोणे हते राजन्दुर्योधनपुरोगमाः ।

भृशमुद्विग्नमनसो द्रोणपुत्रमुपागमन् ॥

नगेन्द्रनन्दिनीपदं सुरपद्मैः प्रयुजितं

समालिखत्सुधीमनःसुरज्जकं द्विजात्मजः ।

प्रणम्य शाकहायनं बाणवारिदैर्मते

नमो * * तदाञ्जकं दिनं द्विजोत्तमा इदम् ॥

कालीचरणविप्रेण द्रोणपर्वाभिधः कृतिन् (sic) ।

षण्मासैर्लिखितः सौम्ये दिने रात्रिमुखेऽमुना ॥

नाटाग्रामस्थितो विप्र इदमामाद्य वालकः ।

कनिष्ठद्वय (sic) शोकार्तो द्रोणपर्वाल्लिखल्लघु ॥

— B2 concludes with :

वैशंपायन उवाच ।

ततो द्रोणे हते राजन्दुर्योधनपुरोगमाः ।

भृशमुद्विग्नमनसो द्रोणपुत्रमुपागमन् ॥

— B3 concludes with :

वैशंपायन उवाच ।

ततो द्रोणे हते राजन्दुर्योधनपुरोगमाः ।

भृशमुद्विग्नमनसो द्रोणपुत्रमुपागमन् ॥

श्री रामः । श्री हरिः ॐ ।

— B4 concludes with :

वैशंपायन उवाच ।

ततो द्रोणे हते राजन्दुर्योधनपुरोगमाः ।

भृशमुद्विग्नमनसो द्रोणपुत्रमुपागमन् ॥

सेनदृष्टनिवासिनोः श्रीगंगाप्रसादशर्मणो लिपिरेषा ।

— D01 concludes with :

द्रोणपर्वं समाप्तं ॥ अस्मिन्पर्वण्यमी वृत्तान्ताः ॥ धृतराष्ट्र-
चिन्ता । द्रोणाभिषेकः ॥ दुर्योधनवरप्रदानं । न्यूहरचना । भग-
दत्तवधः । शकटन्यूहरचनं । युधिष्ठिरशोकः । षोडशराजन्योपा-

ख्यानं । अर्जुनप्रतिज्ञा । विस्मृतपाशुपतास्त्रदानं । महादेवदर्शनं च । शतरुद्रीयं । अर्जुनप्रवेशः । सात्यकिप्रवेशः । भीमसेनप्रवेशः । भूरिश्रवाबाहुच्छेदनं । जयद्रथवधः । रात्रियुद्धं । घटोत्कचवधः । द्रोणोत्क्रमणं । महानारायणास्त्रयुद्धं । सर्वघातिमहासंवर्तकास्त्रयुद्धं । अश्वत्थामाविरतिः । व्यासदर्शनं । महादेववर्णनं । शतरुद्रीयं । इति द्रोणपर्वणि वृत्तान्ताः । अतः परं कर्णपर्वं भविष्यति । तस्यायमभिसंधिः श्लोकः ।

ततो द्रोणे हते राजन्दुर्योधनपुरोगमा इत्यादि ॥

— D₁ adds on marg. :

आदौ द्रोणस्याभिषेकः संशसकवधस्ततः ।
अभिमन्योर्वधो जिष्णोः प्रतिज्ञा सैन्धवं प्रति ॥ १ ॥
व्यूहस्य रचना तत्र प्रवेशः सव्यसाचिनः ।
सात्यकेर्युद्धशौण्डस्य प्रवेशो मारुतेस्तथा ॥ २ ॥
जयद्रथस्य च वधः पार्थेन बहुविस्तरः ।
रात्रियुद्धं च तत्रापि राक्षसालम्बुपक्षयः ॥ ३ ॥
घटोत्कचस्य च वधो मत्स्यपाञ्चालयोरपि ।
आचार्यस्य च विप्रस्य द्रोणस्य निधनं तथा ॥ ४ ॥
द्रौणेनारायणास्त्रस्य मोक्षणं तत्प्रतिक्रिया ।
आग्नेयास्त्रस्य विन्यासात्तत्प्रतीघात एव च ॥
वेदव्यासेन पार्थाय कथितं शतरुद्रीयम् ।
सर्वपापप्रशमनं सर्वेषामन्तस्ततः ।
अस्मिन्पर्वणि संख्यानं कथितं तत्त्वबुद्धिना ॥
अत्राध्यायशतं प्रोक्तमध्यायाः सप्ततिस्रश्च ।
नवश्लोकसहस्राणि तथा नवशतानि च ॥
श्लोका नव तथाशीतिः संख्यातास्तत्त्वदर्शनाः ।
द्रोणपर्वणि विप्रेभ्यो भोजनं परमाचितम् ॥
शराश्च देया राजेन्द्र चापान्यसिखरास्तथा ।
अश्वा रथा गजाश्चैव वासांस्त्याभरणानि च ॥

शुभमस्तु ॥

— D₁ concludes with :

द्रोणपर्वं समाप्तं । अस्मिन्पर्वण्यमी वृत्तान्ताः । धृतराष्ट्रचिन्ता । द्रोणाभिषेकः । दुर्योधनवरप्रदानं । व्यूहरचना । भगदत्तवधः । शकटव्यूहरचनं । युधिष्ठिरश्लोकः । षोडशराजन्वयोपाख्यानं । अभिमन्युवधः । अर्जुनप्रतिज्ञा । अर्जुनस्वप्नदर्शनं । वेदव्यासगमनं । युधिष्ठिरव्यासयोः संवादः । विस्मृतपाशुपतास्त्रदानं । महादेवदर्शनं च । शतरुद्रीयं । अर्जुनप्रवेशः । सात्यकिप्रवेशः । भीमसेनप्रवेशः । अर्जुनयुद्धं । अश्वपानं । भूरिश्रवावधः । भूरिश्रवसोत्पत्तिः । जयद्रथवधः । रात्रियुद्धं । अलम्बुसवधः । अल्युसवधः । घटोत्कचवधः । द्रोणोत्क्रमणं । महानारायणास्त्रयुद्धं । सर्वघातिमहासंवर्तकास्त्रयुद्धं । अश्वत्थामाविरतिः । व्यासदर्शनं । महादेववर्णनं । शतरुद्रीयं । इति द्रोणपर्ववृत्तान्तानि ।

अतः परं कर्णपर्वं भविष्यति ॥ तस्यायमभिसंधिः श्लोकः ।

ततो द्रोणे हते राजन्दुर्योधनपुरोगमा इत्यादि ॥

एवं ग्रन्थसंख्या मूल १०६०० । टीका ११६०

— D₂ concludes with :

समाप्तमिदं द्रोणपर्वं । अस्यानन्तरं कर्णपर्वं भविष्यति । यस्यायमाद्यः श्लोकः ।

वैशंपायन उवाच ।

ततो द्रोणे हते राजन्दुर्योधनमुखा नृपाः ।

भृशमुद्विग्नमनसो द्रोणपुत्रमुपाद्रवन् ॥

अथ द्रोणपर्वणि वृत्तान्ताः ।

आदौ द्रोणस्याभिषेकः संशसकवधस्ततः ।
अभिमन्योर्वधो जिष्णोः प्रतिज्ञा सैन्धवं प्रति ॥
व्यूहस्य रचना तत्र प्रवेशः सव्यसाचिनः ।
सात्यकेर्युद्धशौण्डस्य प्रवेशो मारुतेस्तथा ।
जयद्रथस्य च वधः पार्थेन बहुविस्तरः ॥
रात्रियुद्धं च तत्रापि राक्षसालम्बुपक्षयः ।
घटोत्कचस्य च वधो मत्स्यपाञ्चालयोरपि ॥
आचार्यस्य च विप्रस्य द्रोणस्य निधनं तथा ।
द्रौणेनारायणास्त्रस्य मोक्षणं तत्प्रतिक्रिया ॥
आग्नेयास्त्रस्य विन्यासात्तत्प्रतीघात एव च ।
वेदव्यासेन पार्थाय कथितं शतरुद्रीयम् ॥
अस्मिन्पर्वणि संख्यानं कथितं तत्त्वबुद्धिना ।
अत्राध्यायशतं प्रोक्तमध्यायाः सप्ततिस्रश्च ॥
नवश्लोकसहस्राणि तथा नवशतानि च ।
श्लोका नव तथाशीतिः संख्यातास्तत्त्वदर्शनाः ॥

इति द्रोणपर्वं संपूर्णं समाप्तं । लिपितं ब्राह्मणचत्रभुजवासका-
माकोमिति । चैत्र सुदि ६ बुधवार संवत् १८४६ ।

— D₁ concludes with :

समाप्तं चेदं द्रोणपर्वं । अस्यानु कर्णपर्वं भविष्यति । यस्यायं
प्रतिसंधिः श्लोकः ।

ततो द्रोणे हते राजन्दुर्योधनमुखा नृपाः ।

भृशमुद्विग्नमनसो द्रोणपुत्रमुपागमन् ॥

द्रोणपर्वण्यमी वृत्तान्ताः । द्रोणाभिषेकः । भगदत्तवधः । अभिमन्युवधः । अर्जुनप्रतिज्ञा । सुमद्राष्ट्रासनं । सात्यकिप्रवेशः । भीमसेनप्रवेशः । भूरिश्रवसो वधः । रात्रियुद्धं । घटोत्कचवधः । आचार्यधनुन्यासः । द्रोणवधः । शतरुद्रीयमिति ।

समाप्तं भारतं पर्वं महदेवदुदाहृतम् ।

यत्र ते पृथिवीपालाः प्रायशो निधनं गताः ।

द्रोणपर्वणि ये शूरा निर्दिष्टाः पुरुषर्षभाः ॥

अत्राप्यायशतं प्रोक्तमध्यायाः ससतिस्तथा ।
महर्षिणा तु निर्दिष्टाः श्लोकाग्रमपि मे शृणु ॥
नवश्लोकसहस्राणि नवश्लोकशतानि च ।
श्लोका नव तथा चात्र संख्यातास्तत्त्वदर्शिना ।
पराशर्येण मुनिना संचिन्त्य द्रोणपर्वणि ॥
जयो नामेतिहासोऽयं सर्ववेदोपबृंहितः ।
कार्णस्तु पञ्चमो वेदो यन्महाभारतं स्मृतम् ॥
धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ ।
यदिहास्ति तदन्त्यत्र यज्ञेहास्ति न तत्कचित् ॥
वेदशैलावतीर्णेन कुतर्कतरुहारिणा
व्यासावाक्यजलोधेन नीरजस्का मही कृतौ ॥

लिपिकृतं मिश्र हरनारायण नगरभरथपुरमध्ये लिपायतं सदा-
नंदजी आत्मपठनार्थं शुभमस्तु श्रीरस्तु कल्याणमस्तु संवत् १८२८
का शके १६९२ का वर्षे मिति अ[आ]पाठमासे शुक्लपक्षे तिथौ
६ बुधवासरे संपूर्ण शुभमस्तु ॥ श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री ॥

— D₂ concludes with :

द्रोणपर्व समाप्तं ॥ ७ ॥ श्रीः ॥ अस्यानु कर्णपर्व भविष्यति ।
तस्यायमाद्यः श्लोकः—ततो द्रोणेति । श्रीरस्तु ॥ शुभं भवतु ॥
संवत् १७४० रुधिराद्वारी नाम संवत्सरे आश्विन वदि पञ्चम्यां
गणेशसुतसुंदरपतदशपुत्रेण लिखितमिदं द्रोणपर्वं संपूर्णं ॥ स्वार्थं
परोपकारार्थं च ॥ शुभं भवतु । ग्रंथसंख्या १२५००

— D₃ concludes with :

द्रोणवधः पूर्वसमाप्तः १९७ ॥ अस्यानु कर्णपर्व भविष्यति । यस्या-
यमादिश्लोकः ॥

वैशंपायन उवाच ।

ततो द्रोणे हते राजन्दुर्योधनपुरोगमाः ।

भृशमस्त्रिधमनसो द्रोणपुत्रमुपागमन् ॥

संवत् १८५० शके १७१५ मिति असाढ वदि ८ भौमवासरे लिखितं
मिश्र राधाकृष्णगोपालगढमध्ये महाराजि श्रीरणजीतसिंघजी राज्ये
शुभमस्तु ।

यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं लिखितं मया ।

यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयताम् ॥

— D₁ concludes with :

समाप्तमिदं द्रोणपर्वं ॥

यः शृणोति नरो भक्त्या यश्चापि परिकीर्तयेत् ।

नाशुभं प्राप्नुयात्किंचित्सोऽमुत्रेह च मानवः ॥

दिवा वा यदि वा रात्रौ संध्योरुभयोरपि ।

यः शृणोति नरो भक्त्या ब्रह्महत्यां व्यपोहति ॥

अस्मिन् पर्वण्यमी वृत्तान्ताः । द्रोणाभिषेकः । भगदत्तवधः । अभि-
मन्युवधः । अर्जुनस्य रात्रौ स्वप्नं । शतरुद्रियं । अर्जुनप्रवेशः ।
सात्यकिप्रवेशः । भीमसेनप्रवेशः । भूरिश्रवसो वधः । जयद्रथवधः ।
रात्रियुद्धं । घटोत्कचवधः । आचार्यधनुर्न्यासः । द्रोणवधः ।
अश्वत्थाम्नोतिक्रोधः । नारायणाख्यमुक्तिः । शतरुद्रियं । एवं
वृत्तान्ताः । शुभं भवतु ॥ छ ॥ श्रीः ॥

आदर्शदोषान्मतिविभ्रमाच्च यदत्र हीनं लिखितं मयात्र ।

तत्सर्वमार्थैः परिशोधनीयं प्रायेण दृग्मुद्रति लेखकानां ।

— D₅ concludes with :

अस्मिन्पर्वणि वृत्तान्ताः । द्रोणाभिषेकः । १ भगदत्तवधः । २
अभिमन्युवधः । ३ अर्जुनप्रतिज्ञा । ४ स्वप्नं । ५ शतरुद्रियं । ६
अर्जुनप्रवेशः । ७ सात्यकिप्रवेशः । ८ भीमप्रवेशः । ९ भूरिश्रवसो
वधः । १० जयद्रथवधः । ११ रात्रियुद्धं । १२ घटोत्कचवधः । विरा-
टद्रुपदवधः । १३ आचार्यधनुर्न्यासः । १४ द्रोणवधः । १५ नारा-
यणाख्यमुक्तिः । १६ शतरुद्रियं चेति । १७

अतः कर्णपर्व ।

ततो द्रोणे हते राजन्दुर्योधनमुखा नृपाः ।

भृशमुद्विग्नमनसो द्रोणपुत्रमुपागमन् ॥

॥ गणेशभट पुराणीक ॥

— D₆ concludes with :

समाप्तं द्रोणपर्वं ॥ अस्यानु कर्णपर्व भविष्यति ॥ यस्यायं
प्रतिसंधिश्लोकः ॥

वैशंपायन उवाच ।

ततो द्रोणे हते राजन्दुर्योधनमुखा नृपाः ।

भृशमुद्विग्नमनसो द्रोणपुत्रमुपागमन् ॥

यः शृणोति नरो भक्त्या यश्चापि परिकीर्तयेत् ।

नाशुभं प्राप्नुयात्किंचित्सोऽमुत्रेह च मानवः ॥

दिवा वा यदि वा रात्रौ संध्योरुभयोरपि ।

यः शृणोति नरो भक्त्या ब्रह्महत्यां व्यपोहति ॥

अस्मिन्पर्वण्यष्टादश वृत्तान्तानि (sic) । कुणकुण (sic) ।
द्रोणाभिषेकः । भगदत्तवधः । अभिमन्युवधः । अर्जुनप्रतिज्ञा ।
स्वप्नं । अर्जुनप्रवेशः । सात्यकिप्रवेशः । भीमसेनप्रवेशः । भूरि-
श्रवसो वधः । जयद्रथवधः । रात्रियुद्धं । घटोत्कचवधः । आचार्य-
धनुर्न्यासः । द्रोणवधः । अश्वत्थाम्नोतिक्रोधः । नारायणाख्यमुक्तिः ॥
शतरुद्रियं तवेति (sic) । एवं अष्टादश वृत्तान्ताः ॥ समाप्तं चेदं
द्रोणपर्वं । शुभं भूयात् ॥

— D₇ concludes with :

समाप्तं द्रोणपर्वणि ॥

यः शृणोति नरो भक्त्या यश्चापि परिकीर्तितं ।

नाशुभं प्राप्नुयात्किंचित्सोऽमुत्रेह च मानवः ॥ १ ॥

दिवा वा यदि वा रात्रौ संध्योरुभयोरपि ।

यः शृणोति नरो भक्त्या ब्रह्महत्यां व्यपोहति ॥ २ ॥

अस्मिन्पर्वणि वृत्तान्तानि ॥ द्रोणाभिषेकः । भगदत्तवधः । अभि-
मन्युवधः । अर्जुनप्रतिज्ञा । स्वप्नम् । शतरुद्रियं । अर्जुनप्रवेशः ।
सात्यकिप्रवेशः । भीमसेनप्रवेशः । भूरिश्रवसो वधः । जयद्रथवधः ।
रात्रियुद्धं । घटोत्कचवधः । आचार्यधनुर्न्यासः । द्रोणवधः । अश्व-
त्थामोत्तिक्रोधः । नारायणास्त्रमुक्तिः ॥ शतरुद्रियं चेति ॥ द्रोण-
पर्वणि ग्रन्थसंख्या ॥ ९९०० लक्ष्यं तं संख्या ॥ छ ॥ श्रीरस्तु ॥
कल्याणमस्तु ॥

— Ds concludes with :

द्रोणपर्व समाप्तं ॥

यः शृणोति नरो भक्त्या यश्चापि परिकीर्तयेत् ।

नाशुभं प्राप्नुयात्किंचित्सोऽमुत्रेह च मानवः ॥ १ ॥

दिवा वा यदि वा रात्रौ संध्योरुभयोरपि ।

यः शृणोति नरो भक्त्या ब्रह्महत्यां व्यपोहति ॥ २ ॥

अस्मिन्पर्वणि वृत्तान्तानि ॥ द्रोणाभिषेकः । भगदत्तवधः । अभि-
मन्युवधः । अर्जुनप्रतिज्ञा । स्वप्नम् । शतरुद्रियं । अर्जुनप्रवेशः ।
सात्यकिप्रवेशः । भीमसेनप्रवेशः । भूरिश्रवसवधः । पौंड्रराजकु-
लीयं । मृत्युंश्चरत्तिकथनं । जयद्रथवधः । रात्रियुद्धं । घटोत्कच-
वधः । आचार्यधनुर्न्यासः । द्रोणवधः । अश्वत्थामोत्तिक्रोधः ।
नारायणास्त्रमुक्तिः । शतरुद्रियं चेति ॥ एवं विंशतिवृत्तान्ताः ॥

समाप्तं द्रोणपर्वं ॥ लेखकपाठयोः शुभं भूयात् ॥ शुभं
भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥ श्रीरस्तु ॥ श्रीः ॥ श्रीः ॥

संवत् १९९२ वर्षे भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे दशम्यां श्रृणुवासे
लिखितमिदं द्रोणपर्वं ॥

वंशीविभूषितकरास्त्रवनीलदाभा-

त्पीताम्बरादरुणविम्बफलाधरोष्ठात् ।

पूर्णैन्दुसुन्दरमुखादरविन्दनेत्रा-

रकृष्णात्परं किमपि तत्त्वमहं न जाने ॥ १ ॥

यो गोशतं कनकशृङ्गमयं ददाति

विप्राय वेदविदुषे सवहुश्रुतोऽयम् ।

पुण्यां च भारतकथां शृणुयाच्च नित्यं

तुल्यं फलं भवति तस्य च तस्य चेति ॥ २ ॥

द्वैपायनोष्ठपुटनिःसृतमप्रमेयं

पुण्यं पवित्रमथ पापहरं शिवं च ।

यो भारतं समधिगच्छति वाच्यमानं

किं तस्य पुष्करजलम[स्या]भिषेचनेन ॥ ३ ॥

मूकं करोति वाचालं पङ्क्तुं लङ्घयते गिरिम् ।

यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाश्रयम् ॥ ४ ॥

श्रीः ॥ श्रीः ॥ करकृतमपराधं क्षन्तुमर्हन्ति सन्तः ॥ छ ॥ छ ॥

— T1 concludes with :

सप्तमं भारते पर्वं महत्येतदुदाहृतम् ।

अध्यायानां शतं प्रोक्तमध्यायाः सप्ततिस्र्यथा ॥

दशश्लोकसहस्राणि नवश्लोकशतानि च ।

श्लोका नव तथैवात्र संख्यातास्तत्त्वदर्शिना ॥

ॐ ॥ नमः परमकल्याण नमस्ते विश्वमंगले ।

वासुदेवाय शान्ताय यदूनां पतये नमः ॥

भग्नपृष्ठकटिग्रीवः स्तब्धदधिरधोमुखः ।

कष्टेन लिखितं ग्रन्थं यत्नेन परिपालयेत् ॥

करकृतमपराधं क्षन्तुमर्हन्ति सन्तः ।

द्रोणपर्व समाप्तम् ॥

— T2 concludes with :

सप्तमं भारते पर्वं महत्येतदुदाहृतम् ।

अध्यायानां शतं प्रोक्तमध्यायाः सप्ततिस्र्यथाः स्मृताः ॥

दशश्लोकसहस्राणि नवश्लोकशतानि च ।

श्लोका नव तथैवात्र संख्यातास्तत्त्वदर्शिना ॥

श्रीकृष्णदेवाय नमः ॥

ॐ नमः परमकल्याण नमस्ते विश्वमंगले ।

वासुदेवाय शान्ताय यदूनां पतये नमः ॥

श्रीवेदव्यासाय नमः ॥ श्रीवासुदेवार्पणमस्तु ॥

— G1 concludes with :

द्रोणपर्वं समाप्तं । श्रीगुरुभ्यो नमः । श्रीशुभमस्तु ॥

— G2 concludes with :

नागराजमुखैर्देवैर्नमितं नागभूषणम् ।

नाथं समस्तलोकानां नागपुण्ड्रं नमाम्यहम् ॥

इति द्रोणपर्वं समाप्तम् ॥

— G3 concludes with :

समाप्तं द्रोणपर्वं ॥

सप्तमं भारते पर्वं महत्येतदुदाहृतम् ।

अध्यायानां शतं प्रोक्तमध्यायाः सप्ततिस्र्यथाः स्मृताः ॥

दशश्लोकसहस्राणि नवश्लोकशतानि च ।

श्लोका नव तथैवात्र संख्यातास्तत्त्वदर्शिना ॥

पाराशर्येण मुनिना संचिन्त्य द्रोणपर्वणि ॥

हरिः ॐ ॥

— G4 concludes with :

द्रोणपर्वं समाप्तं ॥

करकृतमपराधं क्षन्तुमर्हन्ति सन्तः ।

कीलकवर्षं आवणि मासं २० ते दि तारीख एळिदि मुडिजद
(विलिख्यावसितं) श्रीनिवासयंगारलिखितं ।

— M₁ concludes with :

द्रोणपर्व समाप्तम् । शुभमस्तु ॥

— M₂ concludes with :

द्रोणपर्व समाप्तम् । गुरुभ्यो नमः ।

१०२१ कोल्लवर्षे मेघमासं २५ तम दिने बुधवासरे अकत्तरण्डर
अटि आकुंबोळ (शरीरच्छाया २३ पादप्रमाणा आसीत्तस्मिन्काले)
कौवन्धजातिकणयाजात् उरच्चाणूरकळरिक्कल (family name)
रामेण लिखितं द्रोणमूलं व्याख्यानं ग्रन्थं ।

— M₃ concludes with :

द्रोणपर्व समाप्तं ।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा

बुद्ध्यात्मना वानुसृतस्वभावम् ।

करोमि यद्यत्सकलं परस्मै

नारायणायेति समर्पयामि ॥

१०१६ कोल्लवर्षे धनुर्मासं १४ तम दिने रामङ्गण्डत्तकुञ्जिकृष्णेन
लिखितं द्रोणपर्व । शुभम् ॥

— M₄ concludes with :

द्रोणपर्व समाप्तं ॥

अस्मिन्नक्षरहानिर्मात्रांशशोऽथ वान्यथा लिखितम् ।

मोहाज्जातं ग्रन्थे ततः क्षान्ताः शोधयन्तु विद्वांसः ॥

— M₅ concludes with :

द्रोणपर्व समाप्तम् ।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा

बुद्ध्यात्मना वानुसृतस्वभावम् ।

करोमि यद्यत्सकलं परस्मै

नारायणायेति समर्पयामि ॥

व्यासायप्रतिमेतिहासरचनोऽस्माय दुर्वासिनां

त्रासायासकराय ससुकृतविश्वासाय दोषद्विषे ।

भासा यामुनरभ्यतोयसदृशा या सायमासेविने

दासायाभयदायि मध्यगुरुद्विदासाय तुभ्यं नमः ॥

व्यासाय भयनाशाय श्रीशाय गुणराशये ।

हृदाय शुद्धविधाय मध्वाय च नमो नमः ॥

कृष्णः पूतनिकारिरस्तशकटो वातान्तकः पादप-

च्छेत्ता वत्सवकाभिजिह्वतगिरिगोपीष्टदोऽरिष्टहृत् ।

केशिघ्नो हतमल्लकं स यवनक्षमाजादिराचायलाः

साहस्रोऽर्जुनसारथिः कुरुवलं हत्वा ररक्ष क्षितिम् ॥

कौसल्यासुत ताटकामत मखत्रातमुंनिस्त्रीहित-

च्छिन्नेव्वासनजानकीवृत् वनावासिन्खराद्यन्तकः ।

मारीचघ्न हनूमदिष्ट रविजार्तिच्छेद वद्धाशुधे

सेनाभ्रातृसमेत रावणरिपो सीतेष्ट रामाव माम् ॥

अनेन द्रोणपर्वलेखनेन श्रीमन्मध्वान्तर्गतश्रीपूर्णत्रयीशात्मक-
श्रीगोपालकृष्णमूर्तिः प्रीयतां । श्रीगोपालकृष्णार्पणमस्तु । अयं
ग्रन्थः मळशेरि (family name) नामकस्य वर्तते ॥

APPENDIX I

This Appendix comprises a series of additional passages found in different MSS. which were either too long to be included in the foregoing footnotes to the constituted text, or not sufficiently connected with the main thread of the narration, or were otherwise deemed not important enough for being included in the main critical apparatus.

The variants cited below these Appendix passa-

ges are of the same order as those cited below the additional (star) passages in the footnotes to the constituted text, so that, in both of them, corrupt readings, discrepant readings of single MSS. and minor variants are generally ignored, and obvious scribal errors silently corrected. Furthermore, the variants of the short prose formulaic references (such as संक्षय उवाच) have been uniformly ignored here.

I

After 7. 4. 1, Ds. 7. 8 ins. :

रहितं विष्णुमालोक्य समुत्सार्थं च रक्षिणः ।
 पितेव पुत्रं गात्रेयः परिष्वज्यैकबाहुना ।
 एहोहि भो स्पर्धसे त्वं मया सार्धं हि सूतज ।
 यदि मां नाधिगच्छेथा न ते श्रेयो भवेद्बुधम् ।
 कौन्तेयस्त्वं न राधेयो न तवाधिरथः पिता । [5]
 सूर्यतस्त्वं महाबाहो विदितो नारदान्मन ।
 कृष्णद्वैपायनाच्चैव केशवाच्च न संशयः ।
 मानहा भव शत्रूणां मित्राणां शोकहा भव ।
 कृष्णद्वैपायनश्चैव तेजसा च न संशयः ।
 न च द्वेषोऽस्ति मे कर्णं त्वयि सार्धं ब्रवीमि ते । [10]
 तेजोवधनिमित्तं तु परुषं चाहमबुधम् ।
 अकस्मात्पाण्डवान्हि त्वं द्विषसीति मतिर्मम ।
 तेनासि बहुशो रुक्षं श्रावितः कुरुसंसदि ।
 हन्तासि समरे वीरान्द्रुपक्षक्षयंकर ।
 ब्रह्मण्यता च शौर्यं च दाने वा परमो निधिः । [15]
 कुलमेदभयाच्चाहं सदा परुषमबुधम् ।
 इष्वश्वे वीर संधाने लावणेऽस्त्रवलेऽपि च ।
 सदशः फल्गुनस्यापि कृष्णस्य च समो बले ।

2

Ds. 7. 8 ins. after 7. 4. 7 : Dn1 after the second occurrence of it :

ब्रह्मण्यः सत्यवादी च तेजसाकौ न संशयः ।
 देवगर्भोऽजितः संख्ये मनुष्येभ्योऽधिको युधि ।
 व्यपनीतोऽद्य मे मनुष्यैस्त्वां प्रति पुरा कृतः ।

1

(L. 1) D1 विष्णुयाम्; Ds विष्णम् (for विष्णुयम्).
 —(L. 3) D1 स्पर्धसे (for स्पर्धते). —(L. 4) D1 नातः
 (for न ते). Ds इति (for इवम्). — Ds om. (hapl.)
 lines 8-9; D1 reads the same twice. —(L. 11)
 Ds पुरुषं (for पं). D1 त्वा; Ds तु (for च).
 D1 अत्रवं. —(L. 12) Ds तव (for त्वम्). —(L. 13)
 Ds lacuna for श्रावितः. —(L. 14) Ds अयंकरं
 (for *कर). —Line 16 is partly damaged in Ds.
 —(L. 18) MSS. फल्गुनस्य.

दैवं पुरुषकारेण न शक्यमतिवर्तितुम् ।
 सौदर्याः पाण्डवा वीर भ्रातरस्तेऽसिद्मन् । [5]
 गच्छैकत्वं महाबाहो मम चेद्विच्छसि प्रियम् ।
 मया भवतु निर्द्वैतं वैरमादित्यनन्दन ।
 पृथिव्यां सर्वराजानो भवन्त्वद्य निरामयाः ।
 कर्ण उवाच ।

जानास्येत्तन्महाबाहो कौन्तेयोऽसि न सूतजः ।
 परित्यक्तसत्त्वहं कुन्त्या सूतेन च विवर्धितः । [10]
 भुक्त्वा दुर्योधनैश्चैव न मिथ्या कर्तुमुत्सहे ।
 वसु चैव शरीरं च पुत्रदारास्तथा यशः ।
 सर्वं दुर्योधनस्याथैव त्यक्तं मे श्रुदिदक्षिण ।
 नेष्यति व्याधिरक्षणं क्षत्रियस्येति कौरव ।
 कोपिताः पाण्डवा नित्यं मयाश्रित्य सुयोधनम् । [15]
 अपरावर्तिनो येऽर्थास्ते न शक्या निवर्तितुम् ।
 दैवं पुरुषकारेण को निवर्तितुमुत्सहेत् ।
 पृथिवीक्षयं शंसन्ति निमित्तानीह भारत ।
 भवद्भिर्हि पुरा दृष्ट्वा कथितानि च संसदि ।
 अजेयाः पुरुषैरन्यैरिति तांश्रोत्सहामहे । [20]
 अनुजानीहि मां तात युद्धाय प्रीतिमानसम् ।
 अनुज्ञातस्त्वया वीर युध्येयमिति मे मतिः ।
 दुरुक्तानि च वाक्यानि संरम्भाच्चापलादपि ।
 यन्मया ते कृतं किञ्चित्यज तद्भरतर्षभ ।

3

After 7. 9. 69, S ins. :

पितुर्धमाहुः पितरं वासुदेवं द्विजातयः ।

2

(L. 3) Ds वत् (for यम्). —(L. 4) Ds. 7 अनि-
 वर्तितुं (for अति*). —(L. 5) Dn1 सौदर्याः (for सौ*).
 —(L. 6) Dn1 एवैकत्वं (for गच्छै*). —(L. 9) Dn1
 संशयः (for सूतजः). —(L. 12) Dn1 वसुनेव (for वसु
 चैव). Dn1 तस्यो (for तथा). —(L. 13) Ds
 [s]क्षयं (for स्वधत्तं). —(L. 17) Dn1 D1 उत्सहेत्
 (hypermetric) (for उत्सहेत्). —(L. 18) Ds. 7. 8
 पृथिवीक्षयंसीति (for the prior half). —(L. 19)
 D1 om. हि. —(L. 20) Ds. 8 अजेया (for *वाः).

स एष नियतः कृष्ण आपदर्थं धनंजये ।

संन्यते यदानर्थं धातराष्ट्रस्य संजय ।

स्थातारं नाधिगच्छामि प्रत्यमित्रं सहौजसम् ।

संकर्षणगदौ चोभौ प्रयुज्योऽथ विदुरकः । [5]

आशावहश्च सास्यश्च दृग्निवीराः प्रहारिणः ।

एते वै विहितास्तत्र पाण्डवार्थं जिगीषवः ।

केशवो यत्र तत्रैते यत्रैते तत्र केशवः ।

अर्जुनः केशवस्यात्मा कृष्णश्चात्मा किरिटिनः ।

अर्जुने तु जयो नित्यं कृष्णे कीर्तिश्च शाश्वती । [10]

प्राधान्यादपि भूयांसो अमेयाः केशवे गुणाः ।

मोहानु वञ्चिनं कृष्णं न सर्वो वेत्ति माधवम् ।

मोहितो देवपाशेन शृत्युपाशपुरस्कृतः ।

न वेद कृष्णं दाशाहमर्जुनं जयतां वरम् ।

आदिदेवौ महात्मानौ नरनारायणभूभौ । [15]

मनसापि हि दुर्धर्षौ सेनामेतां तरस्विनौ ।

नाशयेतामिहेच्छन्तौ मानुषत्वानु नेच्छतः ।

युगस्येव विपर्ययो भूतानामिव मोहनम् ।

इति मां प्रतिभात्येतद्भीष्मद्रोणेन निपातनम् ।

लोकस्य स्थविरौ वीरौ मन्त्रज्ञौ मन्त्रधारिणौ । [20]

भीष्मद्रोणौ हतौ युद्धे मनुष्यान्मोहयित्यतः ।

यां तां श्रियमसूयामि पुरा दृष्ट्वा युधिष्ठिरे ।

अद्य तामनुजानामि भीष्मद्रोणौ यदा हतौ ।

अथ वा मत्कृते प्राप्तः कुरुणामेष संक्षयः ।

पक्षानां हि वधे सून वज्रायन्ते तृणान्यपि । [25]

4

After 7. 15. 18, 8 ins.:

आरद्वाजमसूयश्च विक्रमश्च समाविशत् ।

समुद्धृत्य निपट्टाच्च धनुर्ज्यामवसूय च ।

महाशरधनुर्मानियन्तारमिदमवधीत् ।

सारथे याहि यत्रैव पाण्डरेण विराजता ।

श्रियमाणेन छत्रेण राजा तिष्ठति धर्मराट् । [5]

तदेतदीर्यते सैन्यं धातराष्ट्रमनेकधा ।

एतत्संलभयिष्यामि प्रतिवार्यं युधिष्ठिरम् ।

न हि मामभिवर्षन्तं संयुगे तात पाण्डवाः ।

मात्स्यपाञ्चालराजानः सर्वे च सहसोमकाः ।

अर्जुनो मत्प्रसादाद्दि महाबाणि समाप्तवान् । [10]

न मानुषस्ते तात न भीमो न च सात्यकिः ।

मत्प्रसादाद्दि वीमत्सुः परमेष्वासतां गतः ।

ममैवास्त्रं विजानानि वृष्टयुज्योऽपि पार्षतः ।

— (L. 21) Dn1 तांश्च (for मां). Dn1 मानसम् (for मानसम्). — (L. 24) D4 समः (for मया ते).

3

Line 1 = (var.) 7. 10. 32^{ab}. — (L. 2) G1 M1. 2. 1. 5 निहितः (M1. 2. 1. 5 नित्यं); G5 नियतः; M5 निहतः (for नियतः). — (L. 3) = (var.) 7. 10. 33^{ab}. — (L. 4) T G2-5 प्रत्यनीकाम् (G3. 1. 5 के नः; G5 ते न दीवसि (for the post. half)). — (L. 5) G3-5 विदुरकः (for रकः). — (L. 6) G1 M1. 2. 1. 5 आशावहश्च; G5 अशावहश्च; M5-5 आशावहश्च (for आशा). — (L. 7) T G2-4 सहिताम् (for विहि). G5 प्रहारिणः; G3-5 जिगीषवः (for पवः). — Lines 9-15 = (var.) 7. 10. 38^a-41^d. — (L. 9) T G2 कृष्णस्यात्मा (for आत्मा). — (L. 10) G5 च (for तु). G1 M1. 2. 1. 5 नित्यः; M1. 2. 1. 5 नित्यः (for नित्यं). — (L. 11) M1. 2. 1. 5 (inf. lin. as above) एव (for अपि). — (L. 12) G1 M वेद (for वेत्ति). G1 मानवः (for माधवम्). — (L. 13) M1 देव (for देव). — (L. 14) G1 M अर्जुनं वेद पाण्डवं

(for the post. half). — Lines 16-19 = (var.) 7. 10. 42-43. — (L. 16) G3. 4. 1. 5 च (for हि). G5 एतां (for एतां). G1 M यशस्विनी (for तर). — (L. 17) G1 M च (for तु). — (L. 18) G5 विपर्ययो (for योसो). — (L. 19) G1 M ने (for मां). T G2-5 निपातनात् (for तनम्). — Lines 20-25 = (var.) 7. 10. 45-47. — (L. 21) G2. 4. 1. 5 मानुष्यान् (for मनुष्यान्). M1 मोहयिष्यन् (for तः). — (L. 22) M3 वं (for यां). G1. 2. 1. 5 मृताद्; M3 वृत्तौ (for दृष्टा). — (L. 23) M1. 2. 1. 5 ताम् (for ताम्). T G2 यथा (for वदा). — (L. 24) M1. 2. 1. 5 संक्षयं (for वः). — (L. 25) G5 पार्थानां (for पक्षानां). M1 om. हि.

4

(L. 1) G1 M अमर्षम् (for अम). — (L. 3) T G5 महाशरं (for शर). — (L. 5) T2 M1. 2. 4 श्रीयमाणेन (for श्रि). — (L. 8) T1 G5 वर्षति; T2 G5 वर्षति (for वर्षन्तं). G1 M न हि ना धर्षयिष्यति (for the prior half). — (L. 9) M3-5 मत्स्यः (for मात्स्य).

नायं संरक्षितुं कालः प्राणांस्तत जयैषिणा ।
याहि स्वर्गं पुरस्कृत्य यशसे च जयाय च । [15]

संजय उवाच ।

एवं संचोदितो यन्ता द्रोणमभ्यवहत्ततः ।
तदाश्वहृदयेनाश्वानभिमन्त्रयाशु हर्षयन् ।
रथेन सवरूथेन भास्वरेण विराजता ।
तं करुणाश्व मत्स्याश्व चेदयश्च ससात्वताः ।
पाण्डवाश्च सपाञ्चालाः सहिताः पर्यवारयन् । [20]

5

After 7. 22. 63, N (Ś₂ missing) T G₃ ins.:

संजय उवाच ।

अतीव शुशुभे तस्य ध्वजः कृष्णाजिनोत्तरः ।
कमण्डलुमहाराज जातरूपमयः शुभः ।

ध्वजं तु भीमसेनस्य वैदूर्यमणिलोचनम् ।
आजमानं महासिंहं राजतं दृष्टवानहम् ।
ध्वजं तु कुरुराजस्य पाण्डवस्य महौजसः । [5]
दृष्टवानस्मि सौवर्णं सोमं ग्रहणान्वितम् ।
सृष्टङ्गौ चात्र विपुलौ दिव्यौ नन्दोपनन्दकौ ।
यत्रेणाहन्यमानौ च सुखनौ हर्षवर्धनौ ।
शरभं पृष्ठसौवर्णं नकुलस्य महाध्वजम् ।
अपश्याम रथेऽप्युग्रं भीमयानमवस्थितम् । [10]
हंसस्तु राजतः श्रीमानध्वजो घण्टापताकवान् ।
सहदेवस्य दुर्धर्पो द्विपतां शोकवर्धनः ।
पञ्चानां द्रौपदेयानां प्रतिमारथभूषणम् ।
धर्ममास्तशकाणामधिनाश्च महात्मनोः ।
अभिमान्योः कुमारस्य शार्ङ्गपक्षी हिरण्मयः । [15]
रथे ध्वजवरो जैत्रस्तसचामीकरोज्ज्वलः ।

M₃ -राजानौ (for 'नः'). — G₄ om. lines 11-12. — (L. 13) G₂ तमेवास्त्रं स जानाति (for the prior half). M₁ हि (for स्मि). — (L. 14) M₃-s जयैषिणां. — (L. 15) G₆ सह- (for याहि). — After line 15, G₂ ins. au addl. colophon [Adhy. No. 15]. — (L. 17) G₁ M अभि- (for आशु). — (L. 18) G₅ विराजिताः (for 'जता'). — (L. 19) G₂-s मात्स्याश्व (for म'). G₁-s M सप्त (G₅ M₁ 'सा'त्यकाः; G₂ सप्तोमकाः (for सप्तात्वताः). — ((L. 20) G₅ प्रत्यवारयन् (for पर्य').

5

MSS. om. the reference. — (L. 1) Ś₁ K (except K₃) D₁. 4. 5. 7. 8 ह्यस्य; D₆ G₃ यस्य (for तस्य). T G₃ ध्वजः कृष्णाजिनोत्तमः (for the post. half). — (L. 2) Ś₁ corrupt. — D₂ om. lines 3-4. — (L. 3) D₂ तद् (for तु). D₁-s वैदूर्य- K₁ B T G₃ वैद- (K₁ G₃ 'दू')धर्मगिरो (B₃-s 'लो')वनं; D₂ D₃-s विच-त्कमलो (for the post. half). — (L. 4) D₆ D₁ यथा (for महा-). K₁-s B₁ राजतं. B₁ (marg.) D₂ पृ (D₁ दृ)ष्टवानहं (for दृष्टवानहम्). — (L. 5) Ś₁ कुरुराजेंद्र. K (except K₅) D₁ T G₃ महात्मनः (for महौजसः). — (L. 6) Ś₁ K (except K₅) D₁-s om. (hapl.) from सोमं up to सौवर्णं (in line 9). D₆ D₂ सोम- (for सोमं). B₃-सप्तमन्वितं (for 'गणा'). D₂ नकुलस्य महाध्वजं (= post. half of line 9) (for the post. half). — (L. 7) K₅ G₃ चित्र- (for चात्र). D₄-s T G₃ निमलो

(for विपुलौ). C_v विष्णुग्लोहितचर्मणौ (for the prior half); post. half as above. — (L. 8) D₆ D₁ D₃. 7. 8 T G₃ हन्यमानौ; C_d [आ]हन्य- (as above). K₅ B₂-s D₂-s सुखनौ (B₁ 'रं'); D₂ D₆ सुखनौ. — (L. 9) D₂ D₃. 7. 8 शरभं; D₆ शरभी- (for शरभं). T G₃ घृष्ट- (for पृष्ट-). D₂-s महाध्वजे (for 'ध्वजम्'). — (L. 10) D₆ अपश्यत; K₁-3 D₃. 4. 7. 8 T G₃ रणे; D₁ रथं (for रथे). Ś₁ D₂ D₃. 5. 6 व्यग्रं; K (except K₅) D₁ T व्याघ्रं; B₁ तृयं; D₁ [5]लथं (for सऽप्युग्रं). K₁-3 B₁-s D₁. 2. 6 भीमयानम्; D₁ भीष्मं यानम्; D₅ भीपमानम्; T भीमयानम् (for भीपया'). Ś₁ K₁. 2 D₁. 5. 7. 8 इव (for अव-). G₃ corrupt. — (L. 11) B₁ D₆ D₁. 2. 7. 8 ध्वजे; D₁ T G₃ ध्वज- (for ध्वजो). Ś₁ दृष्टः; B₃ (marg. as above) दंड- (for घण्टा-). K₁-3 ध्वजो दृष्टः प्रतापवान् (for the post. half). — (L. 12) B₃ महादेवस्य (for सह-). — (L. 13) K₅ पांचालानां (hypermetric); D₅ पांचाल- (for पञ्चानां). K₅ B D₆ D₁ D₆ -ध्वज- (for -रथ-). Ś₁ D₆ G₃ -भूषणः; K₁-3. 5 D₂ D₁-s. 7. 8 T -भूषणाः (for 'णम्'). — (L. 14) D₂. 7. 8 महात्मनां (D₂ 'नः'); D₁ रथाः (for 'त्मनो'). — (L. 15) Ś₁ K₁. 3 B₂. 4. 5 D₃ C_d शार्ङ्गः पक्षी. — D₆ reads lines 16-29 on marg. — (L. 16) D₁ रथ- (for रथे). K₅ B₁ ध्वजरो (B₁ 'रथो') (for 'वरो'). B D₆ D₂ राजंस् (for जैत्रम्). D₂ रथध्वजवरो जैत्र- (for the prior half). K (except K₅) D₁ -चामीकरप्रभः (for 'करोज्ज्वलः'). T G₃ रथोदतरजोलोलजै (G₃ 'जै')प्रचामीकरोज्ज्वलः. — Ś₁ K₁. 3. 4 B D₁ om. lines 17-28. — (L. 17) T G₃ रथे (for ध्वजे).

घटोत्कचस्य राजेन्द्र ध्वजे गृध्रो व्यरोचत ।

अश्वाश्च कामगास्तस्य रावणस्य यथा गुरा ।

माहेन्द्रं च धनुर्दिव्यं धर्मराजे युधिष्ठिरे ।

वायव्यं भीमसेनस्य धनुर्दिव्यमभून्नृप ।

[20]

त्रैलोक्यरक्षणार्थाय ब्रह्मणा सृष्टमायुधम् ।

तद्विषयमजरं चैव फल्गुनार्थाय वै धनुः ।

वैष्णवं नकुलायाथ सहदेवाय चाश्विजम् ।

घटोत्कचाय पौलस्त्यं धनुर्दिव्यं भयानकम् ।

रौद्रमाग्नेयकौबेरं याम्यं गिरिशमेव च ।

[25]

पञ्चानां द्रौपदेयानां धनुर्नानि भारत ।

रौद्रं धनुर्वरं श्रेष्ठं यं लेभे रोहिणीसुतः ।

तं तुष्टः प्रददौ रामः सौभद्राय महात्मने ।

एते चान्ये च बहवो ध्वजा हेमविभूषणाः ।

ददृशुस्तत्र शूराणां द्विपतां शोकवर्धनाः ।

[30]

तदभून्नृजसंवाधमकापुरुषसेवितम् ।

द्रोणानीकं महाराज पटे चित्रमिवापितम् ।

शुशुबुर्नामगोत्राणि वीराणां संयुगे तदा ।

द्रोणमाद्रवतां राजन्स्यंवर इवाह्वये ।

Colophon.

6

After 7. 40. 5, K₂ (marg.) ins. :

पुनः कर्णः] प्रविष्याथ शरैराशीविपोपमैः ।

विष्याथ दशभिः शूरो अस्मिन्सु महाबलम् ।

अप्राप्तानेव तान्सर्वान्श्चिच्छेद लघुहस्तवत् ।

स्यन्धनुश्छित्त्वा (submetric) राधेयस्य महाबलः ।

ह्यांश्च जग्ने त्वरितो ध्वजं सारथिना सह ।

[5]

राधेयं विरयं कृत्वा सौमद्रो वाक्यमप्रवीत् ।

मया जितोऽसि राधेय विरयोऽसि महामते ।

अन्यं रथं समारुह्य युध्यस्व च महाबलः ।

भृत्योऽसि सुतुष्टोऽसि वैडालव्रतिकः सदा ।

पाण्डवैः सह पैशुन्यं नित्यं त्वं कृतवानसि ।

[10]

D₁ G₃ विरोचत (for व्यरोच). — (L. 18) K₅ D₂ तु (for च). T₁ G₃ रोमशास् (for कामगास्). K₂ वरुणस्य (for रावणस्य). K_{2.5} D_{2.5} transp. यथा and गुरा. — (L. 19) K₅ D_{4.5} महेंद्र; D₃ नाहे-द्रश्च. D_{2.5} D_{1.7.8} हि; T G₃ तु (for च). — (L. 20) D_{2.5} D_{1.7.8} महात्मनः; T G₃ अभून्नृप (for नृप). — (L. 21) K₅ [उ]त्सृष्टम् (for सृष्टम्). T G₃ अद्भुतं (for आयुधम्). — (L. 22) K₅ दिव्यमजरं चैव (sic); T G₃ यद्विषयमक्षयं चैव (for the prior half). MSS. फाल्गु-नार्थाय. D_{2.5} D_{1.7.8} T G₃ गांडीवं फा (T G₃ फ) ल्गुनाय (D_{2.5} T G₃ नस्य) च (for the post. half). — (L. 23) K₅ D₃ नकुलार्थाय; T G₃ लस्याथ (for लायाथ). K₅ D_{2.5} D_{2.5} चाश्विनं. T G₃ सहदेवस्य चाश्विनं (for the post. half). — (L. 24) T G₃ घटोत्कचस्य. — (L. 25) K₂ D_{2.5} D_{2.5} कौबेर्यं (for कौबेरं). K₅ रौद्रमा-ग्नेयकौबेर्यं (sic); T G₃ रौद्रं कौबेरमाग्नेयं (for the prior half). D_{2.5} T G₃ याम्यंगिरि (D₃ रि) समेव च (for the post. half). — (L. 26) K₅ पांचारु (for पञ्चानां). K₂ D_{2.5} D_{2.5} धनुः (K₂ D₂ नुः) (for धनुः). D₂ एतानि (for रत्नानि). D_{2.5} D₂ T G₃ धनुः (D₃ G₃ नुः) रत्नं वृ- (T G₃ न) हत्तरं; D₁ धनुर्दिव्यं महत्तरं; D₁ corrupt (for the post. half). — (L. 27) K₂ D₄ G₃ धनुर्वरं (for वरं). D_{2.5} लेभे (for श्रेष्ठं). K_{2.5} D_{2.5} D_{2.5} लेभे यं (D_{2.5} D_{2.5} यद्) (by transp.); D_{2.5} श्रेष्ठं यद्; T G₃

यलेभे. — (L. 28) K₅ D_{2.5} D_{2.5} G₃ तनुष्टः; T संतुष्टः. — (L. 29) K₂ B D_{2.5} D_{2.5} विभूषिताः; K₅ वने (for वनाः). S₁ रथा ध्वजविभूषणाः (for the post. half). T G₃ एतांश्चान्यांश्च सुबह्वर्धनांश्चापान्श्च तोषि-तान्. — (L. 30) B D_{2.5} D_{2.5} तत्रा (B₁ तदा; B₂ यत्रा) हृदयं शूराणां (for the prior half). K_{1.3.4} T G₃ शोकवर्धनः (T G₃ नान्). — (L. 31) K₅ D₁ उदभृद्; D_{2.5} तद्भृत् (for उदभृद्). D_{2.5} D_{2.5} T G₃ तदद्भुतम् संवाधम् (T₁ बद्धं; T₂ G₃ बद्धं) (for the prior half). D₁ सेवने (for सेवितम्). B D_{2.5} D_{2.5} T G₃ महापुरुषसेविनं; D_{2.5} वीराणामभिने (for the post. half). — (L. 32) D₁ पाटः; D₃ पारः (for पटे). — (L. 33) K₅ D_{2.5} D_{2.5} अष्टु (D_{2.5} षु) वत्; T G₃ श्रुदने (for शुद्धवत्). T G₃ सतां (for शूराणां) (for वीराणां). K₅ D₃ तथा; T G₃ सतां (for तदा). — (L. 34) B₁ आह्वयतां; D₄ आह्वयतां (for आह्वयतां). D_{2.5} D_{2.5} स्वयंवरम्. D₃ इह (for इव). T G₃ आह्वये (for आह्वये).

Colophon. — Sub-parvan : Omitting sub-parvan name, K_{1.3} mention only द्वितीयविभूषिते; K₅ D₁ द्वितीयवु- (D₁ ये वु) द्विदिवसे. — Adhy. name : K₅ D_{2.5} D_{2.5} रथध्वजविभूषणं; D_{2.5} D₂ सेनावर्णनं (D_{2.5} नः); D₂ सेनाबलवर्णनं; D₄ ध्वजवर्णनं; T G₃ अश्ववर्णनं. — Adhy. no. : K_{2.5} D_{2.5} D_{2.5} T G₃ 22 (as in text). — Śloka no. : D_{2.5} 97.

सभां नीत्वा च पाञ्चाली विवक्षा कारिता त्वया ।
 तत्तद्रूपान्यनेकानि वासांसि सुबहूनि च ।
 दृष्टानि तत्र युष्माभिः कुरुभिश्च दुरात्मभिः ।
 तत्फलं संप्रदृश्यामि यदि नोत्सहसे रणम् ।
 युष्माभिश्च कृतोऽद्यैव चक्रव्यूहो दुरात्मभिः । [15]
 कुलीना ये च राजानो धर्मिष्ठाः सत्यसंगराः ।
 चकार्यं च न कुर्वन्ति व्यूहं पापिष्ठकारितम् ।
 कौञ्जाः सुपर्णा हंसाह्वा मुशला गारुडास्तथा ।
 एते व्यूहाश्च शूराणां धर्मिष्ठानां महात्मनाम् ।
 यूयं दैत्याशसंभृताः सर्वे तत्र न संशयः । [20]
 इत्येवमुक्त्वा स तदा महात्मा
 कर्णं सुभद्रातनयो महाबलः ।
 स योद्धुकामः कुरुभिर्नृवीरो
 महाबलः सत्यवतां वरिष्ठः ।

Colophon.

7

After 7. 48. 13^{ab}, K₂ (marg.) ins. :

पौरुषं च समालम्ब्य किञ्चिन्मूर्च्छामवाप सः ।
 एवं तदा महावीरः कुरुवंशविवर्धनः ।
 युध्यमानस्तृषाकान्तः सुकुमारो महाबलः ।
 क्षुधासंपीडितो राज्ञीपन्मूर्च्छामवाप सः ।
 ईपद्भ्रममाने ते चक्षुषी समदृश्यत (sic) । [5]
 क्षणोपविष्टोऽथ तदा वाक्यं चेदमुवाच ह ।
 शृण्वन्तु कौरवाः सर्वे वाक्यं धर्मार्थसंहितम् ।
 अर्जुनस्य न [? च] दायदो भागिनेयो महात्मनः ।
 कृष्णस्य चाहं दुर्मेधा यथा कापुरुषस्तदा ।

8

Bs Gs om the ref. — (L. 1) B₁, 2, 4, 5 Dn₂ D₂-6
 अथैनं (D₃ 'वं') विलपन्तं तं (Dn₂ तु; D₂ च); B₃ Dc₁
 D₁ तथैवं विलपन्तं तं (Dc₁ तु); Dn₁ D₇, 8 एवं विलपिते
 वीरे (for the prior half). B Dc₁ Dn₂ D₁-6 कुंतीपुत्रं
 युधिष्ठिरं (for the post. half). — (L. 2) S प्रादुर्भूतो
 (for आजगाम). B₂ महाबुतिः (for 'नृपिः'). — After
 line 2, S ins. :

अथ दृष्ट्वा महात्मानं पाण्डुपुत्रो युधिष्ठिरः ।
 मुक्तासनो दीनमनाः पूजां चक्रे महात्मनः ।

सुभद्रानन्दनो भूत्वा किं चापि न कृतं मया । [10]
 सर्वे यूयं जीवमाना अस्मद्भोग[ह]परायणाः ।

एवं ब्रुवाणः स तदासिमन्युः

प्रतापयुक्तोऽपि रणे प्रनष्टः ।

श्रुत्वा गृहीतः स तदा महात्मा

मूर्छान्वितो विह्वलतां जगाम । [15]

दिशो विलोकयन्सर्वाः कोपेन स महाबलः ।

तस्मिन्वै वीरशयने सौभद्रः प्रापत्तनुवि ।

हत्वा तान्सुबहून्वीराल्लक्ष्मणादीन्महाबलः ।

कोटिं हत्वा रथानां च गजानां च तथैव च ।

हयानामयुद्धं पूर्णं स्वयमेकं पदातिनाम् । [20]

एतान्युधि विमर्द्यैवमभिमन्युर्दिवं गतः ।

तथास्तगत आदित्ये द्वावेतौ युगपद्गतौ ।

8

After 7. 49, N (except Ś₁ K) S ins. :

संजय उवाच ।

एवं विलपमाने तु कुन्तीपुत्रे युधिष्ठिरे ।

कृष्णद्वैपायनस्तत्र आजगाम महानृपिः ।

तमर्चित्वा यथान्यायमुपविष्टं युधिष्ठिरः ।

अब्रवीच्छोकसंतप्तो भ्रातुः पुत्रवधेन सः ।

अधर्मयुक्तैर्बहुभिः परिवार्य महारथैः । [5]

युध्यमानो महेष्वासैः सौभद्रो निहतो रणे ।

बालश्चाबालबुद्धिश्च सौभद्रः परवीरहा ।

अनुपायेन संप्राप्ते युध्यमानो विनाशितः ।

मया प्रोक्तः स संप्राप्ते द्वारं संजनयस्व नः ।

प्रविष्टे च परांस्तस्मिन्सैन्धवेन स वारिताः । [10]

[(L. 1) G₈-5 माहात्मानं (for महा^a).]

— (L. 3) B₁ Dn₂ D₁-3, 6, 8 अर्चयित्वा; T G₂-5 तं
 समर्च्य; G₁ M₁, 2 तमर्च्यं तु (for 'र्चित्वा'). S उपातिष्ठ
 (for उपविष्ट). — (L. 4) Dn₁ D₇, 8 भ्रातुः (for भ्रातुः).
 D (except Dc₁ D₁) च (for सः). — Before line 5,
 T G₁-4 M₈ ins. युधिष्ठिरः. — (L. 5) D₁ धर्मार्थः (for
 अधर्मः). Dn₁ D₈ S युद्धे (for युक्तैर्). D₁ महारथः
 'रथैः'. — (L. 6) Dn₂ युद्धेयु नो; D₈ 'ध्वनेर्'; D₆
 युध्यमानैर्; T 'माने (for 'मानो). Dn₁ D₇, 8 महेष्वासः
 (for 'ज्वासे'). D₁ युधि (for रणे). D₃ हतोभिमन्युः

[1070]

ननु नाम समं युद्धमेष्टव्यं युद्धजीविभिः ।
इदं चैवासमं युद्धमीदृशं प्रकृतं परैः ।
तेनास्मि भृशसंततः शोकवाष्पसमाकुलः ।
शमं नैवाभिगच्छामि चिन्तयानः पुनः पुनः ।
तं तथा विलपन्तं वै शोकवाष्पसमाकुलम् । [15]
उवाच भगवान्भ्यासो युधिष्ठिरमिदं वचः ।
युधिष्ठिर महाप्राज्ञ सर्वेशास्त्रविशारद ।
व्यसनेषु न सुखान्तिं त्वादृशा भरतर्षभ ।

स्वर्गमेव गतः शूरः शत्रुहृत्वा बहुव्रणे ।
अवालसदृशं कर्म कृत्वा वै पुरुषोत्तमः । [20]
अनतिक्रमणीयो वै विधिरेव युधिष्ठिर ।
देवदानवगन्धर्वास्त्रुहुरिति भारत ।
युधिष्ठिर उवाच ।
इमे वै पृथिवीपालाः शेरते पृथिवीतले ।
निहताः पृतनामध्ये मृतसंज्ञा महाबलाः ।
नागायुतबलाश्चान्ये वायुवेगबलास्तथा । [25]

समद्वान्युप्यमानो विशेषतः. — (L. 7) B Dn1 Ds Gs. १
वाल- (for [अ]वाल-). Dn1 Dr. १ S बीरश्च (for सौमद्रः).
— (L. 8) Ds अनुपायेन (for 'पायिन'). B1. २ (orig.).
३-५ Dn2 D1-३ Gs विशेषतः; B2 (marg.) De1 विशेष-
यितः; Dn1 Dr. १ निपातितः (for विनाशितः). — (L.
9) B1. ३, 4 De1 Dr. १ सुक्तः; B2 Dn1 [अ]सुक्तः; B3
युक्तः; D1 [इ]युक्तः; D1 प्राप्ता; G1 M चोक्तः (for
प्रोक्तः). T G2-५ नयापि चोक्तः संश्रामे (for the prior
half). Ds ३ च (for नः). — (L. 10) D1 प्रविष्टः.
B3 om. च. B2 for [S]भ्यन्तरे; De1 G2 च परास्; D3
Gs च परैस्; D5 चापरास्; G1 M1. २ च वरास् (for
च परास्). Dn1 Ds प्रावेशपरस् (Ds 'रा'स्तस्मिन्; Dr
प्रवेशनपरस्) (for the prior half). De1 च वारिताः;
Dn1 Dr. १ निवां; Dn2 Gs [अ]सि वां; D1 स वां; D2
निवारितः; D3-५ T Gs [आ]स वारिताः (for स वां). — (L.
11) B5 न तु (for ननु). Ds. १ युद्धे. S (except Gs)
जीविना (Gs 'नां') (for -जीविभिः). — Dn1 Dr. १
read line 12 twice. — (L. 12) Dn1 S (except
G1) विपमं (for [ए]वासमं). Dn1 Dr. १ (all second
time) ईदृशं विपमं युद्धम्; Dr. १ (both first time) इदं च
विपमं युद्धे (for the prior half). B2 प्राकृतं; B3 प्रह्वं;
De1 (before corr.) Dn2 D2-५ यत्कृतं; D1 प्राकृतैः;
Dn1 Dr. १ (all second time) विहितं; G1 (inf. lin.)
विपमं (for प्रकृतं). Dn1 Dr. १ (all first time) नेष्टव्यं
युद्धजीविभिः; T G2-4 ईदृशं बहुभिः कृतं; M3-५ ईदृशं प्रति
भाति मे (M4. ५ [inf. lin.] मा) (for the post. half).
— (L. 13) Dn1 D2 असिन् (for असि). Ds चाक्व-
(for वाष्प-). — (L. 14) T G1. ३-५ M3-५ वै न; M1. २
तु न (for नैव). Dn1 Ds [अ]सि- (for [अ]पि-). Dn1
चितया च; Dn2 D2-५ चिं Ds चिं त्वमानः (Ds 'नं');
D2 चितयामि (for चिन्तयानः). Dn2 om. the second
पुनः. — Before line 15, B D Gs. 4 ins. संजय उवाच-
— Ds om. line 15. — (L. 15) B2. ५ Dn2 D1 शोकवेगः;
De1 (marg.) शोकव्याधिः; D3 'वाक्च' (for 'वाष्प-').
Dn2 परिपुष्टं (for -समाकुलम्). D2. ५ शोकव्याकुलमानसं; S

शोकवेगवेगसं (G1 M 'नं') (for the post. half).
— Before line 17, B2. ५ De1 Dn1 D1. 4 G1. ५ M ins.
व्यासः. — (L. 17) D1. ३ महाप्राज्ञः (for 'प्राज्ञ'). — (L.
18) Dn1 Dr. १ S स्वद्विवाः (S पुरुषाः) पुरुषपंथ (Dn1
'माः') (for the post. half). — Gs om. lines
19-20. — (L. 19) Dn1 D1. ५ एव; Dr. १ एवं
(for एव). Dn1 Dr. १ शत्रुं (for शत्रून्). Dn1 Dr. १
महाव्रणे; T G1. २. ५ M1-4 रणे बहुन् (by transp.); M3
रणे विपुन्. — (L. 20) Dn2 D2. 4-५ अवालः; D3
अवाल- (for अवाल-). M2 -सदृशः (for 'दं'). D1 [ए]व;
D3 च (for वै). D1. ५. ५ पुरुषोत्तमः; S (Gs om.) पुरु-
षपंथः (G1 M1-३ 'म'). — (L. 21) T G M1. २ हि
(for वै). Dn1 निलम्बः; Dr. १ विधिनिर्णयं (for विधि-
रेव). T G2-५ सनातनः (for युधिष्ठिर). — (L. 22)
Dn1 D1 -नंचर्वः; D3 T G2-५ -नंचर्वा (for 'नंचर्वा'). Ds
अहंति (for हरति). D1 मारतः. Dn1 Dr. १ मनुष्योत्तर-
क्षसाः; T G2-५ मृत्युं गच्छन्ति भारत (for the post. half).
— After line 22, Dn1 Dr. १ ins.:

मृत्योः केचिन्न मृत्युर्न मृतग्रामे चतुर्विधे ।

— With the मृत्युपत्तिकथन and the story of अकम्पन,
cf. 12, 248ff. Lines 23-25 = (var.) 12, 248, 1^a-2^b.
— (L. 23) B2 *ने; Dn1 Dr. १ S य इमे (for इमे वै).
Dn1 शतवः (for शेरते). Dn1 M4 पृथिवीरते (for 'तले').
— (L. 24) Dn2 om. (hapl.) from पुनना up to निहता
(in the extra line after line 25). G1 पृथिवी- (for
पुनना). T G3. ५ मृत्यु- (for मृत-). — After line
24, Dn1 Dr. १ S ins.:

एकैकशो मीनबला नागायुतशतोपमाः ।

[Gs महीपाला (for मीनबला). Dn1 Dr. १ -सना बले;
G1 M -बलोपमाः (for -शतो).]

— Dn1 om. line 25. — (L. 25) Dr. १ उपवेगः; S
ओषवेग (for नागायुत-). — After line 25, B D ins.:

त एते निहताः संख्ये ह्यस्वरूपा नरैर्नरैः ।

नैपां पश्यामि हन्तारं प्राणिनां संयुगे कवित् ।

विक्रमेणोपपन्ना हि तेजोबलसमन्विताः ।

अथ चेमे हताः प्राज्ञाः शेरते विगतायुषः ।

मृता इति च शब्दोऽयं वर्तते च गतार्थवत् ।

इमे मृता महीपालाः प्रायशो भीमविक्रमाः । [30]

राजपुत्राश्च संरब्धा वैश्वानरमुखं गताः ।

अत्र मे संशयः प्राप्तः कुतः संज्ञा मृता इति ।

कस्य मृत्युः कुतो मृत्युः केन मृत्युरिमाः प्रजाः ।

हरत्यमरसंकाश तन्मे ब्रूहि पितामह ।

संजय उवाच ।

तं तथा परिपृच्छन्तं कुन्तीपुत्रं युधिष्ठिरम् । [35]

आश्वासनमिदं वाक्यमुवाच भगवानृषिः ।

अत्राप्युदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम् ।

अकम्पनस्य कथितं नारदेन पुरा नृप ।

स चापि राजा राजेन्द्र पुत्रव्यसनमुत्तमम् ।

अप्रसह्यतमं लोके प्राप्तवानिति मे मतिः । [40]

तदहं संप्रवक्ष्यामि मृत्योः प्रभवमुत्तमम् ।

ततस्त्वं मोक्ष्यसे दुःखात्स्नेहबंधनसंश्रयात् ।

पुरा वृत्तमिदं तात शृणु कीर्तयतो मम ।

[Dn1 D1.8 य एते; D3 पतंते; D6 एतत्ते (for त एते). B2 तुल्यरूपैर्; D2.8 रूप- (for रूपा). B3 नरे-
श्वर; Dn1 D1.8 नरा (D1 नरो) नरैः (by transp.); D1
नरर्षभ; D6 [अ]मरैर्नरैः.]

— Lines 26-30 = (var.) 12. 248. 3^a-5^b. — (L. 26)
D1.8 संग्रामे; G1 M1.2.4.5 हतारं (for हन्तारं). D1.8
प्राणिनः; G1 M प्राणानां (for प्राणिनां). — (L. 27)
Dn1 क्रमेणैव (for विक्रमेण). B5 D2 [उ]पसंपन्नास्; D3
[उ]पपन्ना वै (for पन्ना हि). B5 Dn2 D3-8 तपोबल-;
D2 दृष्टा बल- (for तेजोबल-). — After line 27, B D
ins.:

जेतव्यमिति चाभ्यासं येषां नित्यं हृदि स्थितम् ।

[Dc1 Dn1 D1.7 नित्यं येषां (by transp.). D8 ये* *
हृदि संस्थितं (for the post. half).]

— (L. 28) Dn1 D1 वेमे; Dn2 वै नि-. Dn1 D1.8 T
G M1.2 महा- (for हताः). D1.8 G1 M1.2 प्राज्ञ-
M3-5 कथमेते महाप्राज्ञाः (for the prior half). Dn1 हि
मृता युधि; D1.6 विगतायुषाः; D1 हि मि[मि]तायुषाः; D8
हि गतायुषाः; S च गतायुषः (for विगता). — (L.
29) D1 च इति (by transp.). B1 नु; D1.8 हि (for
च). Dc1 D1.6 यथार्थवत्; Dn1 D1.8 G1.5 M1-3.5
(sup. lin.) गताध्वस्तु; Dn2 D2.5 ततोर्थवत्; T G2.4
M4.5 गतायुषां (M1 पु); G2 corrupt (for गतार्थवत्).
— After line 30, B D ins.:

निश्चेष्टा निरभीमानाः शूराः शत्रुवशं गताः ।

[Dn2 न विष्टा (for निश्चेष्टा). Dn1 D1.8 निरहंकाराः;
D5 निरभीमानाः (for निरभी).]

— Dc1 om. (hapl.) line 31; B3 reads the same
on marg. — (L. 31) Dn1 D1.8 S सप्तप्रभाः; D4
मुखे गताः. — Lines 32-34 = (var.) 12. 248. 5^c-6^d.
— (L. 32) Dc1 D5 अतो; T G1.2.4 M1.2 तत्र (for

अत्र). Dn1 D1.8 संग्रामे संक्षयं प्राप्ताः; M3-5 अत्र संश-
यतां प्राप्तः (for the prior half). — (L. 33) D2
G2 कश्च (for कस्य). G5 om. केन मृत्युः. Dn1 D1.8
इह (for इमाः). B Dc1 Dn2 D1-6 कथं संहर्ते प्रजाः
(for the post. half). — (L. 34) Dc1 Dn2 D2.3.
5.6 संकाशं (Dn2 शां); T G शास्; M1.2 श्व
(for संकाश). Dn1 D1.8 आहृत्यमरप्रख्य (for the prior
half). Dn1 D1.8 एतद् (for तन्मे). Dn1 D1.8 om.
the ref. — (L. 36) Dn1 G1 M आश्वासयन्; D5 सि-
तम् (for संनम्). — Before line 37, B Dc1 Dn2
D1-6 G1 M ins. व्यास उवाच; Dn1 D1.8 कृष्णद्वैपायन
उवाच. — (L. 38) G5 महात्मना (for पुरा नृप). — (L.
39) D1 राज- (for राजा). G5 वासवस्यम् (for व्यसनम्).
— D5 om. (hapl.) lines 40-41. — (L. 40) M3.5
(sup. lin.) अप्रसह्यतमं (for अप्रसह्य). Dn1 D1.8 S मे
(S नः) क्षुतं (for मे मतिः). — (L. 41) Dn1 D1.8 S
त (G5 य) तैहं (for तदहं). — (L. 42) Dc1 अतम् (for
ततम्). Dn2 D1.8 सं- (for त्वं). Dn1 D1.8 मुच्यसे;
D2-4.6 मोक्षसे. T G2-4 देह- (for लेह-). Dn1 D1.8
स्नेहबंधन संशयः (for the post. half). — (L. 43) D3
कृतम् (for वृत्तम्). D2 समस्तपापराशिघ्नं (for the prior
half). S transp. शृणु and मम. — (L. 44) D1
S धर्म्यम् (for धन्यम्). Dn1 D1.8 धन्यमाश्वासनायुक्तं (for
the prior half). D1 युधि (for युधि). — After line
44, B D ins.:

पवित्रमरिसंधं मङ्गलानां च मङ्गलम् ।

यथैव वेदाध्ययनमुपाख्यानमिदं तथा ।

श्रवणीयं महाराज प्रातर्नित्यं नृपोत्तमैः ।

पुत्रानायुष्मन्तो राज्यमीहमानैः श्रियं तथा ।

[(L. 1) D1.8 पुत्रीयम् (for पवित्रम्). — D4 om.
(hapl.) lines 3-4. — (L. 3) B3.5 श्रावणीयं (for
श्रव*). D1 दिज्ञोत्तमैः (for नृपो*). — (L. 4) D1.8

धन्यमाख्यानमायुष्यं शोकं पुष्टिर्धनम् ।

पुरा कृतयुगे तात आसीद्राजा ह्यकम्पनः । [45]

स शत्रुवशमापन्नो मध्ये संग्राममूर्धनि ।

तस्य पुत्रो हरिर्नाम नारायणसमद्युतिः ।

श्रीमान्कृतास्त्रो मेधावी युधि शक्यसमो बली ।

स शत्रुभिः परिशृतो बहुधा रणमूर्धनि ।

व्यस्यन्वाणसहस्राणि योधेषु च गजेषु च । [50]

स कर्म दुष्करं कृत्वा संग्रामे शत्रुतापनः ।

शत्रुभिर्निहतः संख्ये पृतनायां युधिष्ठिर ।

स राजा प्रेतकृत्यानि तस्य कृत्वा शुचान्वितः ।

शोचन्नहनि रात्रौ च नालभत्सुखमात्मनः ।

तस्य शोकं विदित्वा तु पुत्रव्यसनसंभवम् । [55]

अथाजगाम देवर्षिर्नारदोऽस्य समीपतः ।

स तु राजा महाभागो दृष्ट्वा देवर्षिसत्तमम् ।

पूजयित्वा यथान्यायं कथामकथयत्तदा ।

तस्य सर्वं समाचष्ट यथा वृत्तं नरेश्वर ।

शत्रुभिर्विजयं संख्ये पुत्रस्य च वधं तथा । [60]

मम पुत्रो महावीर्यं इन्द्रविष्णुसमद्युतिः ।

नायुध्नतो (for आयु). Dn1 Dr. s राजन् (for राज्यन्).
D3 द्विधं (for द्विधं). B1 तदा (for तथा).]

— Lines 45-47 = (var.) 12. 248. 7^a-8^b. — (L. 45) Dn3 कृतो युगे; D4 युगकृते (for कृतयुगे). Dn1 Dr. s विकम्पनः (for ह्यकम्पनः). S (G3 [by corr.]) राजा आसीदकम्पनः (for the post. half). — G1 Mi. 2 om. line 46. — (L. 46) D1. s -वधम् (for -वशम्). Dr आमोति (for आपन्नो). — After line 46, T G3 read for the first time line 1 of the extra passage ins. after line 49. — D1 om. (hapl.) line 47-49. — (L. 47) B D (D1 om.) -समो बले (for -समद्युतिः). — (L. 48) G1 M हीमान् (for शो). B Dn1 Dn2 D1-3. s. s शक्तोपमो (for शक्यसमो). Dn1 Dr. 1. 3 बले (D2 'ले') (for बली). — After line 49, S ins.:

योषयामास तान्सर्वान्तर्वाङ्मुखो बली ।

वर्षन्वाणसहस्राणि शत्रुष्वभित्तिक्रमः ।

पदातिरथनागाश्वाङ्गप्रममाथ महाबलः ।

तदुरीणं बलं सर्वं हत्वाहीनरिभूदन् ।

विविष्टपं यथा शकः प्रविदेश पुरोत्तमम् । [5]

स दृष्ट्वा वितरं युद्धे तदवस्थं महाद्युतिः ।

अभिनत्यित्वा मरणं शत्रुमध्यदेशितस्तदा ।

स शरैराचितश्चित्रैर्गदाभिर्मुसलैरपि ।

मृदन्नपतहस्राणि रथांश्च ह्यवारणान् ।

परानीकं विभिन्नाजौ मोक्षयित्वा च तं नृपम् । [10]

पुनरेवाकरोयुद्धं शत्रुमध्ये गतो बली ।

ततस्ते रथिनः सर्वे सपेल्य पुनराहरे ।

अमुस्तं परिवार्यैकं तोमरैरिव कुञ्जरम् ।

[(L. 1) T G3 (all first time) बलान् (for तान्स-
वान्). T G2. 3 (all [except G3] first time) बद्धासी-
दकम्पनः (for the post. half). — T repeat and
G2 M3-5 read lines 2-5 after the extra passage
following line 52 ins. by S. — (L. 2) T (both

second time) G2 M3-5 वर्षे शरवर्षाणि (for the prior
half). G2 -विक्रमं. — (L. 4) T (both second
time) G1. 5 M अरेर् (for अरीन्). G2 अरिभूदन्; G3
रिभूदन्; M1. 2 [अ]रिभूदन्. — (L. 6) G2 महा-
द्युति (for 'द्युतिः'). — (L. 7) T G3. 4 सुतः (for तदा).
G2 शत्रुमध्यगतो बली; G3 'मयं' ततोदिशद् (for the post.
half). — G2 om. (hapl.) lines 8-11. — (L. 8)
G2 शलैर्; G3 चकैर् (for चित्रैर्). G1 M स शरैरावसे-
श्चकैर् (for the prior half). — (L. 9) G1 Mi. 2
नरांश्च (for रथांश्च). G5 पदानान्वाविवारणान् (for the
post. half). — (L. 10) G3. 4 मोक्षयामास (for 'यित्वा
च'). — (L. 11) G1. 5 M -नध्यः; G2 -मध्यं (for
-मध्ये).]

— (L. 50) Dn2 D3 व्यस्यद्; Dr. 3 वरन्. D1 वा
(for the second च). — (L. 51) D1 मृदन्नपते; G3
शत्रुर्हन्तः (for 'तापनः'). — (L. 52) S (except G2)
शुने (for संख्ये). — After line 52, S ins.:

द्विपङ्क्तिर्निहतं दृष्ट्वा द्विधं पुत्रमकम्पनः ।

अनर्पजनितक्रोध आहवं सहसा गतः ।

[(L. 2) M3-5 अनर्पा (for अनर्पः). G2. 4. 5 आहवान्
(for आहवं).]

— (L. 53) M3-5 राजन् (for कृत्वा). Dn1 Dr. s द्विधां
पते (for शुचान्वितः). — (L. 54) Dn1 Dr. S न लेभे;
D3 न लेभेत् (for नाकम्पन्). G1 Mi. 2 शान्तिम् (for
सुखम्). — (L. 55) D1 [अ]य (for दु). Dn1 Dr. 3
पुत्रव्यसनतो भवं (for the post. half). — (L. 56) D2. 5
आजगामाथ (by transp.). G3 नारदः सुमहात्मनः (for the
post. half). — (L. 57) G3 महाबाहो (for 'भागो').
Dn1 लब्ध्वा (for दृष्ट्वा). D1 S दृष्ट्वा देवर्षिनागतं (for the
post. half). — (L. 58) Dn1 Dr. 3 कथयामास तच्छा
(for the post. half). — (L. 59) Dn1 Dr. 3 S
पुत्रस्य (T G2-4 तदस्ते; G1. 5 M स तस्ते) सर्वमाचष्ट (for the
prior half). B (except B1) Dn1 Dn2 D1. 2. 3. 5 नरेश्वरः;

शत्रुभिर्वहुभिः संख्ये पराक्रम्य हतो बली ।
 क एष सृष्टुर्भगवन्किर्वीर्यबलपौरुषः ।
 एतदिच्छामि तत्त्वेन श्रोतुं मतिमतो वर ।
 तस्य तद्वचनं श्रुत्वा नारदो वरदः प्रभुः । [65]
 आख्यानमिदमाचष्ट पुत्रशोकापहं महत् ।
 नारद उवाच ।

शृणु राजन्महाबाहो आख्यानं बहुविस्तरम् ।
 यथा वृत्तं श्रुतं चैव मयापि वसुधाधिप ।
 प्रजाः स्रष्टा तदा ब्रह्मा आदिसर्गे पितामहः ।
 असंहृतं महातेजा दृष्ट्वा जगदिदं प्रभुः । [70]

तस्य चिन्ता समुत्पन्ना संहारं प्रति पार्थिव ।
 चिन्तयन्न ह्यसौ वेद संहारं वसुधाधिप ।
 तस्य रोपान्महाराज खेभ्योऽग्निरुदतिष्ठत ।
 तेन सर्वा दिशो व्याप्ताः सान्तर्देशा दिधक्षता ।
 ततो दिवं भुवं खं च ज्वालामालासमावृतम् । [75]
 चराचरं जगत्सर्वं ददाह भगवान्प्रभुः ।
 ततो हतानि भूतानि चराणि स्थावराणि च ।
 महता क्रोधवेगेन त्रासयन्निव वीर्यवान् ।
 ततो हरो जटी स्थाणुर्निशाचरपतिः शिवः ।
 जगाम शरणं देवं ब्रह्माणं परमेष्ठिनम् । [80]

Dn1 Dr.8 जनेश्वरः; S (Gs damaged) युधिष्ठिर (for नरेश्वर). — D1 om. line 60. — (L. 60) Dn1 विजये; Ds विजितं; T G2-5 निजितं; G1 M1.2 निहतः; M3-5 निर्जयं (for विजयं). G1.5 M1-3.5 संख्ये; Gs संखे (for संख्ये). D1 वचनं (for च वयं). T G2-5 तदा (for तथा). Dr.8 शत्रुमायां युधिष्ठिर (for the post. half). — Before line 61, S ins. अकंपनः. — (L. 61) T G2 इंद्राविष्णुः (for इंद्रं). B3.4 Dn1 Dr.8 समो (for सम-). B1 Dr.8 युधि; Dn1 बली (for युतिः). — (L. 62) Dn1 Dr.8 निहतः (for बहुभिः). G1 M संखे; Gs संखे (for संख्ये). Dr.8 हरिर् (for हतो). S (except G2) युधि (for बली). — After line 62, S ins.:

शृणोमि प्राणिनां चापि सृष्टुः प्रभवते किल ।

[G1.5 शृणु मे (for शृणोमि).]

— (L. 63) D1.7 भगवान्; Ds बलवान् (for भगवन्). S क एष बल (G1 M भगवान्मृत्युः (for the prior half). Dr.8 स्वदीर्य- (for क्रिं). Dr.8 M2 पौरुषं (for पौरुषः). — (L. 64) Dn1 Dr.8 कथितं तपतां वर (Ds रः); S कथितुं (G1.5 M1.2 तं) द्विजसत्तम (for the post. half). — Lines 65-69 = (var.) 12. 248. 11^a-13^d. — Before line 65, T G2-5 M3-5 ins. व्याप्तः. — (L. 65) D1 [s] प्यवदत् (for वरदः). Dn1 Dr.8 नारदोऽथ तपोधनः; S दो भगवान्पुः (for the post. half). — (L. 66) Dn1 Dr.8 ततः (for महत्). — S om. the ref. — (L. 67) Dn1 Dr.8 त्वं शृणुष्व महेश्वास; T G1.2.3.5 M राजञ्शृणु ममेदं त्वम्; Gs एतदिच्छामि मेदं त्वम् (for the prior half). Gs युधि (for बहु-). — (L. 68) Gs चापि (for चैव). — (L. 69) Dn1 Dr.8 G1.5 M महाराज (Dn1 Gs ङः); Ds तथा ब्रह्मा; T G2-5 महाराज (for तदा ब्रह्मा). Dn1 Dr.8 T G2-4 M प्रजासर्गे; G1 प्रजाः सर्वे; Gs सर्वलोकः (for आदिसर्गे). — (L. 70) M1.2 असंहृतं (for असंहृतं). Ds महत्

(for प्रभुः). Lines 71-84 = (var.) 12. 248. 15-21. — (L. 71) Dn2 D3-5 समान्ना (for समुत्पन्ना). — (L. 72) Dn1 Dr.8 स च नो (for न ह्यनौ). S भित्तयन्नास-सादैव (M3-5 दैवं) (for the prior half). G1 M3-5 संहारं प्रति पार्थिव (for the post. half). — (L. 73) Dn2 Ds मुखे (for खेभ्यो). B1 उपपन्न (for उदतिष्ठत). Dn1 Dr.8 चक्षुर्भ्यो (Dn1 पो) स्मिरभूत्तदा; D1 मुखारस्मि-तिष्ठत; T G2-5 मुखेभ्योस्मिरजायत; G1 M खेभ्योऽग्निः सम-जायत (for the post. half). — Ds om. line 74. — (L. 74) Ds सप्तदेशा; Ds सर्वे देशा; Ds सान्तर्देशान्; T G1.3.4 M सर्वान्देशान्; G2.5 सर्वदेशं (for सान्तर्देशा). Ds G1 M1.2 दिधक्षतः (for तां). — (L. 75) D1 दिशं; Ds मुखं (for भुवं). B1.3.5 Dn1 (before corr. as above; by corr.) D2 चैव (for खं च). T G2-4 ततो भुवं दिवं (T दिशं) चैव (for the prior half). T G1 M सर्व-; G3-5 सर्व (for ज्वाला-). B2 Dn1 D2.3 समाकुलं; Dn1 Dr.8 समावृणोत् (for वृतम्). T G1.3.5 M सर्वं ज्वालाभिः संवृतं; G2 ज्वाला-मालाभिसंवृतं (for the post. half). — (L. 76) S ब्रह्मणः परवीरहन् (for the post. half). — G4 om. (hapl.) lines 77-80. — (L. 77) Dn1 Dr.8 ददाह; D2 हि तानि (for हतानि). S (G4 om.) कोपो दहति भूतानि (for the prior half). D1 ब्रह्मानि (sic) (for चराणि). Dn1 Dr.8 S (G4 om.) जंगमानि ध्रुवाणि च (for the post. half). — (L. 78) T G2.3.5 कोप- (for क्रोध-). — After line 78, B3 ins.:

वासुदेव दयाशील लीलया मां समुद्धर ।

धरोद्धारे समयोऽसि ममोद्धारे कियान्धनः ।

— (L. 79) Dn1 Dr. हरिर्; Bom. ed. रुद्रो (for हरो). Gs (inf. lin.) शिव- (for जटी). Dn2 lacuna; Bom. ed. हरः (for शिवः). — (L. 80) Dn2 दिव्यं (for देवं). Dn1 Dr.8 G1 M1.2 परवीरहा; T G2.3.5

तस्मिन्नापतिते स्थाणौ प्रजानां हितकाम्यया ।

अब्रवीत्परमो देवो ज्वलन्निव महामुनिः ।

किं कुर्म कामं कामार्हं कामाज्जातोऽसि पुत्रक ।

करिष्यामि प्रियं सर्वं ब्रूहि स्थाणो यदिच्छसि ।

Colophon.

स्थाणुरुवाच ।

प्रजासर्गमित्तं हि कृतो यत्नस्त्वया विभो । [85]

त्वया सृष्टाश्च वृद्धाश्च भूतप्राप्ताः पृथग्विधाः ।

तास्तवेह पुनः क्रोधात्प्रजा दहन्ति सर्वशः ।

ता दृष्ट्वा मम कारुण्यं प्रसीद भगवन्प्रभो ।

ब्रह्मोवाच ।

न कुप्ये न च मे काम एतदेवं भवेदिति ।

पृथिव्या हितकामानु ततो मां मन्युराविशत् । [90]

इयं हि मां सदा देवी भारता समचूचुदत् ।

संहारार्थं महादेव भारेणाभिहता सती ।

ततोऽहं नाधिगच्छामि तप्ये बहुविधं तदा ।

संहारमग्रमेयस्य ततो मां मन्युराविशत् ।

स्थाणुरुवाच ।

संहारार्थं प्रसीदस्व मा रूपो विबुधाधिप । [95]

मा प्रजाः स्वावराश्चैव जह्ममाश्च व्यनीनशन् ।

M3-s 'हन्' (for परमेष्ठिनन्). — (L. 81) B1 Ds S (except G2) निपतिते; B5 चाप' (for आप'). — (L. 82) T G2-s महामुनिः (for 'मुनिः'). — Before line 83, S (except G2) ins. ब्रह्मा. — (L. 83) B3 कर्म; D2 कर्तुं; D5 कुर्वे; D8 कुर्मः (for कुर्म). D4 कामार्हं. Dn1 Dr.3 करोमि कमर्हं कामं; S कं (G3-s किं) कुर्मि (G5 कर्म) कामं कामारे (for the prior half). Dn1 Dr.3 S कामाहोसि मनो मन (for the post. half). — (L. 84) Dn1 Dr.3 करिष्ये ते (for 'ध्यामि'). D3-s च तत् (for प्रियं). S करिष्ये ते प्रियं कामं (for the prior half). Dn1 Dr.3 यमिच्छसि; G1 M1.2.4 यदी' (for यदि'). Colophon. — Sub-parvan: B1.2.4 अभिमन्यु-वध. — Adhy. name: B1.3 मृत्युपञ्चापतिसंवादे मृत्युरास्थानं; B1 Dc1 मृत्युरास्थानं; Dn1 D2 षोडशरात्रकीर्त्यं; T मृत्युसंवादे रुद्राभिगमनं; G2-s मृत्युसंवादे ईश्वराभिगमनं; G5 ईश्वराभिगमनं. — Adhy. no.: B1 Dn1 D3 G2.5 50; T G1.3.4 M 49. Lines 85-96 = (var.) 12. 249. 1-6. T G3 रुद्रः (for स्थाणुः). — (L. 85) Dn1 प्रजासर्गं. Dn1 Ds-s G2 नित्तं च (D3 ह; G2 तु); T G1.3-s M नित्ति-त्तत्वात् (for 'त्तं हि'). G2 गतो (for कृतो). B1 पुरा; Dn1 Dr.3 T G2-s M3-s प्रभो; G5 [अ]-नय (for विभो). — (L. 86) D1 सृष्टा च (for सृष्टाश्च). Dn1 त्वया सृष्टश्च वृद्धश्च; Dr.3 'ष्टं च वृद्धं च; T G2-s M3-s त्वया विष्ट (M3-s हि सृष्टा वृद्धास्तु; G1 M1.2 त्वया सृष्टा विष्टास्तु (for the prior half). M3.4.5 (sup. lin. as above) चतुर्विधाः (for पृथग्विधाः). Dn1 Dr.3 भूतप्राप्तं च (Dn1 'नश्च)तुर्विधं (for the post. half). — Dr.3 read line 87 twice. — (L. 87) B1 Dr.3 (both second time) तास्तवेव; Dr.3 (both first time) त्वमेव च; T G2-s M3-s तास्तवेव; G1 M1.2 चतुर्विधाः (for तास्तवेह). S नश्यंति (for दहन्ति). G1 M1.2 सर्वतः (for 'शः'). Dr (first time) विनाशयति सर्वशः (for the post.

half). — (L. 88) Dn1 तन्; D1.5 G3.4 तान्; D3 T G2 M3 तां (for तत्). G1 कारुण्यात् (for 'प्य'). B5 om. the ref.; Dn1 Dr.3 G5 विनाशः (for ब्रह्मा). — (L. 89) D2 संहर्तुं (for न कुप्ये). G1.5 M1.2 कामन्. B Dc1 नाकुप्ये न च कामो मे; Dn1 Dr.3 न क्रोधेन न कामेन; Dn2 Dr.2.3.5 संहर्तुं न च (D3.5 चैव) कामो मे; D3 नाहं क्रुद्धो न कामो वा (for the prior half). Dn1 एतदेव; G5 'देतद् (for 'देदं'). Dn1 Dr.3 कृतं (for इति). — D3 om. lines 90-91. — (L. 90) Dn1 पृथिवी- (for 'व्या'). B Dc1 Dn2 Dr.3.5 G2 कामं तु; Dn1 Dr.3 कामेन; G5 (sup. lin.) कामार्थं (for कामानु). G1 M ना (for मां). — (L. 91) T G1.3-s M सदा; G2 सा तु; M1 (inf. lin.) धरा (for हि मां). Dn3 om. (hapl.) from सदा up to सदा (in line 94). G2 धरा (for सदा). Ds-s भारता समचूचुदत्; S भारती (M3-s 'रती) नामचूचुदत् (for the post. half). — (L. 92) Dn1 Dr.3 नया (for महा-). G5 अपि (for अभि-). Dn1 Dr.3 भवानभिहितो नृधं (for the post. half). — (L. 93) Dn1 Dr.3 तेनाहं; D4 तानहं; S ततो वै (for ततोऽहं). B2 नया (for तपे). Dn1 Dr.3 S बुद्ध्या बहु विचारयन् (for the post. half). — (L. 94) B1.3 अग्रमेयं वै; Dc1 (marg. as above) 'देयं च; Dn1 Dr.3 S 'नेयार्त्तं (G5 'र्थ)स्त् (for 'नेदस्व). D4 संहारास्त-दपश्यंतं (for the prior half). Dn1 Dr.3 मे; G1.5 M ना (for मां). B1.2.4.5 Dn2 D2-3.1 रुद्र उवाच; D1 हर उवाच (for स्थाणुः). — (L. 95) T G1.2 M ना क्रुद्धो; G3.4 ना क्रुधो; G5 मा क्रोधो (for ना रूपो). B1-3.5 Dc1 Dn2 Dr.3.5 ना रूपो वदुधाधिप (for the post. half). — (L. 96) T1 G2 स्यादरे; T2 G1.3-s M 'राश (for 'राश). T1 G2 चैदं (for चैव). T G1.4.5 (sup. lin.) M जगमाश्च; G5 महाश्चैव (for जह्ममाश्च). B1.2

तव प्रसादान्नगवन्निदं वर्तेत्रिधा जगत् ।
 अनागतमतीतं च यच्च संप्रति वर्तते ।
 भगवान्क्रोधसंदीप्तः क्रोधादग्निं समासृजत् ।
 स दहत्यश्मकृतानि दुर्मांश्च सरितस्तथा । [100]
 पल्वलानि च सर्वाणि सर्वं चैव तृणोलपाः ।
 स्थावरं जङ्गमं चैव निक्षेपं कुरुते जगत् ।
 तदेतद्भस्मसाद्भूतं सर्वं जगदनाविलम् ।
 प्रसीद भगवन्स त्वं रोपो न स्याद्द्रो मम ।
 सर्वे हि नष्टा नेष्यन्ति तव देव कथंचन । [105]

तस्मान्नवर्ततां तेजस्वरूपेवेह प्रलीयताम् ।
 उपायमन्यं संपश्य प्रजानां हितकाम्यया ।
 यथेमे प्राणिनः सर्वे निवर्तेरस्तथा कुरु ।
 अभावं नेह गच्छेयुस्त्वन्नजनाः प्रजाः ।
 अधिदैवे नियुक्तोऽस्मि त्वया लोकेषु लोकहन् । [110]
 मा विनश्येज्जगन्नाथ जगत्स्थावरजङ्गमम् ।
 प्रसादाभिमुखं देवं तस्मादेवं प्रवीम्यहम् ।
 नारद उवाच ।
 श्रुत्वा हि वचनं देवः स्थाणोर्निहतपाप्मनः ।

Dn D3-s T G1. 3-s M व्यनीनशः; D0 नशत्; G2 नशम् (for नशत्). D7 जंगमाश्चापि नीनशैः; D3 जंगमाश्चापि निलशः (for the post. half). — (L. 97) Dn2 G5 M6 प्रसादाद् (for प्रसादाद्). Dn1 D1.8 त्वत्प्रसादादि भगवन् (for the prior half). B1 (marg.) भक्ते; Dn1 D1.8 S (except G5) जातं; D2 यत्ते; D3 वृत्तं (for वर्तत्). B1 इदं सर्वं चराचरं (for the post. half). — (L. 98) B (except B5) D1 यत्तु; D2 यत्तु (for यत्तु). D6 संप्रति (for संप्रति). — (L. 99) B Dn1 D1.7.8 S (except M3-s) भगवन् (for वान्). D1 om. दीप्तः क्रोधा. B1.3 D1 अवासृजः; B2.4.5 अवासृजत् (for समा). Dn1 D1.8 क्रोधादग्निः समुत्थितः (for the post. half). — (L. 100) B1-3 स दहति (sic); D3.6 G2 संदहति (for स दहति). B1 संघाश्च (for कृतानि). Dn1 स दहत्यश्मकृतानि (for the post. half). M1.2 सति. Dn1 दुर्मानश्मकृतानि (for the post. half). — (L. 101) Dn1 D1.8 समुद्रं च (for च सर्वाणि). Dc1 सर्वाश्च (for सर्वे). B1 तृणोलपाः; B1 पमाः; D1 तृणलाः; D5 लुपाः; D6 पलाः (for लपाः). B3 Dn2 सर्वाश्चैव तृणोलपाः (Dn2 लुपान्); Dn1 D1.8 सर्वं चैवावृत्तं जगत्; D4 S सर्वं चैव तृणोलपं (T G2 M3.5 लपं) (for the post. half). — Dn1 Dr om. (hapl.) line 102. Dn2 D2-6 om. line 103. — (L. 103) B3 तदेव (for तदेतद्). B Dc1 D1 जगत्स्थावरजङ्गमं; Dn1 (marg.) निक्षेपं कुरुते जगत् (for the post. half). — (L. 104) B1 शर्वः; B3 T G M1.2.4.5 देवः; D1.3 सर्वः; M3.2 (inf. lin.) मष्टं (for स त्वं). Dn1 D1.7.8 प्रसीद भगवान्स्थाणो (D1 न्मष्टं) (for the prior half). D1.8 एष (for रोपो). D1 महान् (for मम). — (L. 105) B1.5 D1 नश्यन्ति; D5 व्रश्यन्ते; T G3-s तप्यन्ते; G1.2 M1.2 तप्यन्ति (for नेष्यन्ति). Dc1 D2 सर्वे हि सृष्टा नश्यन्ति; Dn1 D1.8 सर्वे विनष्टा नेष्यन्ति; M3-s सर्वे पुनर्देव नष्टा (for the prior half). D1 तदा; T G2-4 सर्वे; G1.5 M1.2 पुनर् (for तव). T G M1.2 देवाः (for देव). G5 कथं जनाः

(for कथंचन). M3-s स्थापयन्ति कथंचन (for the post. half). — (L. 106) M2-s निवर्त्यतां. B1.2.4.5 Dc1 D1.8.4 त्वय्येवेदं; Dn1 D1.8 यथेव सं-; T त्वयि वैतत्; G1.5 M1.2 त्वयि चैव; G2-4 M3-s त्वयि चैतत् (for त्वय्येवेह). — (L. 107) B Dc1 Dn2 D1-6 तत्पश्य देव (B1 तव देवस्य) समुद्रं (for the prior half). — B1 repeats line 108 after line 111. — (L. 108) M3 न नश्येरन्; M1.5 न नश्येयुम् (for निवर्तेरन्). — (L. 109) T G M1.2 नैव; M3 नो न (for नेह). B1-3 D2.8.5 उच्छन्न- (for उत्सन्न). Dn1 D1.8 G1 M उच्छ- (G1 M त्व) उच्छन्नाः प्रजाः; T G2-4 उत्पन्ना वृद्धाः (G2 वृद्धाः) प्रजाः; G5 उत्पन्नाः सज्जनाः प्रजाः (for the post. half). — (L. 110) B5 D2.8 आधिदैवे (D2.3 व-); Dc1 Dn2 D1 अधिदैवः (D1 वै) (for दैवे). Dn1 D5 अधिदैवः (D5 वै) येन युक्तोऽस्मि (for the prior half). Dn D1 लोककृतः; D1.8 चैव हि (for लोकहन्). — For line 110, S subst.:

भयता हि नियुक्तोऽहं प्रजानां पालने विभो ।

[T G2-s [अ]भि- (for हि). G3.4 M1.2 प्रभो.]

— After line 110, S ins.:

दया तेन ममोत्पन्ना प्रजासु विदुषेश्वर ।

[G3-s यदा (for दया). G5 समुत्पन्ना (for ममो).]

— (L. 111) D1.8 न भवेद्धि यथानर्थो; S यन्मया ना- (M3.5 मया तत्रा) धव्येदे (for the prior half). D7.8 जंगमे (D5 म). — (L. 112) D1.8 प्रसादेह (D5 इ) गुरुं देवं; S प्रसाद हि (G2 सीद हि; G5 पदेहं) गुरुं देवं (for the prior half). Dn2 om.; D3 तस्मादेवं; T G2-s M3-s दैतद् (for तस्मादेवं). — (L. 113) T G1.8.4 M तु; G2 तद् (for हि). Dn2 देवः; S स्थाणोर् (for देवः). S निलं (for स्थाणोर्). T G M1.2 निहित- (for हत-). T G3.5 (inf. lin. as above) पालनः; G5 फालगुनः (for पाप्मनः). B D (except D1.8) प्रजानां हित-

तेजः संवेष्टयामास पुनरेवान्तरात्मनि ।
 ततोऽग्निमुपसंहृत्य भगवान्लोकसंस्कृतः । [115]
 प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च कल्पयामास वै प्रभुः ।
 उपसंहरतस्तस्य तमग्निं रोषजं तथा ।
 प्रादुर्बभूव विश्वेभ्यः खेभ्यो नारी महात्मनः ।
 कृष्णा रक्ताम्बरधरा रक्तजिह्वास्त्रलोचना ।
 कुण्डलाभ्यां च राजेन्द्र तप्ताभ्यां समलंकृता । [120]
 सा विनिःसृत्य वै खेभ्यो दक्षिणां दिशमाश्रिता ।
 स्मयमानेव चावैश्वदेवौ विश्वेश्वराबुभौ ।
 तामाहूय तदा देवो लोकादिनिधेश्वरः ।
 मृत्यो इति महीपाल जहि चेमाः प्रजा इति ।
 त्वं हि संहारयुक्ताय प्रादुर्भूता रूपो मम । [125]

तस्मात्संहर सर्वास्त्वं प्रजाः सज्जदपण्डिताः ।
 मम त्वं हि नियोगेन ततः श्रेयो ह्यवाप्स्यसि ।
 एवमुक्ता तु सा तेन मृत्युः कमललोचना ।
 दध्यौ चात्यर्थस्यवला प्रहरोद च सुस्वरम् ।
 पाणिभ्यां प्रतिजग्राह तान्यश्रुणि पितामहः । [130]
 सर्वभूतहितार्थाय तां चाप्यनुनयत्तदा ।

Colophon.

नारद उवाच ।

विनीय दुःस्वमवला आत्मन्येव प्रजापतिम् ।
 उवाच प्राज्ञलिभूत्वा लतेवावर्जिता पुनः ।
 त्वया सृष्टा कथं नारी इन्द्री वदतां वर ।

कारणे (D₂ °णः; D₄ °ण) (for the post. half). — D₇. 3 om. lines 114-115. — (L. 114) B D (D₇. 3 om.) G₁ M तेजः संधार(G₁ M °दम)यानास (for the prior half). — Lines 115-131 = (var.) 12. 249. 7-22. — (L. 115) G₅ M₁. 2 -संगृह्य (for -संहृत्य). D₈ -आवनः (for -सत्कृतः). — (L. 116) B D प्रवृत्तं च निवृत्तं च (for the prior half). B D₁ D_n D₁-s कल्पयामास (for कल्प°). — (L. 117) M₃-s -संहारतम् (for -संह°). T G₂-s उपसंहारवान्महा (for the prior half). B₂ D₇. 3 तदा (for तथा). — (L. 118) B D₁ D_n D₁-n गोभ्यो (for खेभ्यो). T G₂-s महाननाः (for °त्मनः). D₃ चक्षुष्यस्रो महात्मनः (for the post. half). — (L. 119) B D₁ D_n D₁-s कृष्णा र(B₂ °णर)क्ता तथा पिता; D₇. 3 रक्तकृष्णांवरधरा (for the prior half). G₂ रक्तगंधा-मुलेपना (for the post. half). — (L. 120) B D तप्ताभ्यां तप्तभूषणा (for the post. half). — (L. 121) T G₂-s विनिर्गल्य (for विनिःसृत्य). D₃ संखेभ्यो; D₈ खेभ्यो (for वै खेभ्यो). B₁. 2. 4 D_n D₂ सा निःसृत्य तथा (B₁ सुखे; D_n २ भृशं) खेभ्यो; B₈ D₁ सा निःसृत्य च खेभ्यो (D₁ °भ्यो यद्); B₈ साभिनिःसृत्य खेभ्यो; D₁ सा निःसृत्य च सर्वेभ्यो; D₃ सा विनिःसृत्य संखेभ्यो; D₁ स निःसृत्य वचस्तेभ्यो; D₈ सा निःसृत्य च वै खेभ्यो; D₇. 3 सा चक्षुष्यो विनिःसृत्य (for the prior half). D₄ om. (hapl.) from शमाश्रिता up to लोकारि (in line 123). D₁. 6 आसिता; D₇ आश्रिता; S आश्रयत् (for °श्रिता). — (L. 122) B₂ ख्यमाना (for सय°). B₁ सा (for च). B₁-3. 5 D₁ D_n D₁. 6 [इ]व सावेक्ष्य; D_n D₂. 3. 5 च सावे(D_n °वीक्ष्य; G₁ M [इ]व चावेक्ष्य (G₁ M₁. 2 °वेक्ष्य) (for [इ]व चावेक्षद्). D₃ देवी (for देवौ). — (L. 123) D₂ ततो (for तदा). D_n 2 देवी (for देवो). D₇. 3 तानाह वरदो

देवो; S ता(G₁ त)माहवत्तदाविलो (G₁ M₁. 2 °दा देवो) (for the prior half). — After line 123, S ins.:

तां तु तत्र तदा देवीं ब्रह्मा लोकपितामहः ।

उक्तवाग्मधुरं वाक्यं संलपयित्वा पुनः पुनः ।

— (L. 125) B₄ -बुद्धयै; D₇. 3 -बुद्ध्या हि (for -बुद्धयाय). D_n D₇. 3 ह्या (for रूपो). S प्रादुर्भूता नया योगात्वे हि संहारयुद्धिना. — (L. 126) D_n 2 D₄. 5 सज्जनपं(D_n 2 °मं)-दिताः; D₂. 6 भूमागमंदिताः; T G₁. 4 M सज्जनपंदिताः (for सज्ज°). — After line 126, D₇. 3 S ins.:

अविशेषेण वै त्वं प्रजाः संहर मामिनि ।

[D₇. 3 निविशेषेण (for अवि°).]

— (L. 127) T G₂-s M₃ तत्र (for ततः). T [5] न्य-वाप्स्यसि (for ह्यवा°). — Before line 128, S ins. नारदः. — (L. 128) T G₁ M₁. 2 उक्त्वा (for उक्ता). D₇. 3 -नालिनी (for -लोचना). — (L. 129) B₂ (marg. as above) D₁. 5 च सत्वरं; B₁ च सुस्वरं; D₃ वसुंधरा (for च सुस्वरम्). S प्रातश्चारात् (M₁-3. 5 °क्षु) विद्वः (for the post. half). — (L. 130) G₂ परिजग्राह (for प्रति°). D₇. 3 तस्य (for तानि). — (L. 131) D₁. 2. 3. 8 M₂-s अनुनयंस्; T अन्ननयद् (for अनु°). D₇. 3 S मृत्युं (for तदा). — Colophon: Sub-parcan: B₁. 2. 4 अभिमन्युवध. — Adhy. name: B₁. 2. 4 D₁ D_n मृत्युपासवानं; T G₂-s मृत्युसंनयः. — Adhy. no.: B₁. 2 D_n 1 Da G₂. 5 51; T G₁. 3. 4 M 50. — Śloka no.: D_n 23. — Lines 132-135 = (var.) 12. 250. 1^a-3^a. — (L. 132) D₂. 6 संजय (for नारद). D₂. 6 सा वाद्या; D₇ अचला (for अबला). B₁. 2-3 D₁ आत्मना; D₁ D_n आत्मना; D₇. 3 सान्य (for आत्मनि). D₇. 3 एवं (for एव). — (L. 133) D₇. 3 लतेवाकंपिता स्म ह; S वानिलकंपिता

कूरं कर्माहितं कुर्यां मृडेव किमु जानती । [135]

विभेस्यहमधर्मादि प्रसीद भगवन्प्रभो ।

प्रियान्पुत्रान्वयस्याश्च भ्रातृन्मातुः पितृन्पतीन् ।

अनुध्यास्यन्ति ये देव मृतांस्तेषां विभेस्यहम् ।

कृपणानां हि रुदतां ये पतन्त्यश्चुविन्दवः ।

तेभ्यो हि बलवद्भीता शरणं त्वाहमागता । [140]

यमस्य भवनं देव न गच्छेयं सुरोत्तम ।

प्रसादये त्वा वरद मूर्ध्नोदग्रनखेन च ।

एतदिच्छाम्यहं कामं त्वतो लोकपितामह ।

इच्छेयं त्वत्प्रसादाद्देवं तपस्तप्तुं प्रजेश्वर ।

प्रदिशेमं वरं देव त्वं मह्यं भगवन्प्रभो । [145]

त्वया युक्ता गमिष्यामि धेनुकाश्रममुत्तमम् ।

तत्र तप्स्ये तपस्तीव्रं तवैवाराधने रता ।

न हि शक्यामि देवेश प्राणान्प्राणभृतां प्रियान् ।

हंतुं विलपमानानामधर्मादभिरक्ष माम् ।

ब्रह्मोवाच ।

मृत्यो संकल्पितासि त्वं प्रजासंहारहेतुना । [150]

गच्छ संहार सर्वास्त्वं प्रजा मा ते विचारणा ।

भविता त्वेतदेवं हि नैतज्जात्वान्यथा भवेत् ।

भवत्वनिन्दिता लोके कुरुष्व वचनं मम ।

नारद उवाच ।

एवमुक्ताभवद्भीता प्राञ्जलिर्भगवन्मुखी ।

(for the post. half). — Before line 134, MSS. ins. मृत्युर्वाच. — (L. 134) D₂ मया (for त्वया). B₃ (marg.) सुदृशी; D₁ S मादृशी (for ई°). — (L. 135) D₂ D₃-s कूर-; D₂ ब्रुहि (for कूरं). G₁ M₁.2 ईदृशं (for अहितं). D₂ D₃.4.7.8 G₁ M कुर्यात् (for कुर्यां). B₁.3 D₁ D₂ D₁.4-6 तदेवं; B₂.4.5 D₂.3 °व (for मृडेव). D₁.3 निमु (D₃ °य) जा सती; G₁ M किमजानती (for किमु जा°). — (L. 136) D₁ अयमस्य; T G₂-5 अधर्माय (for °दि). — Lines 137-144 = (var.) 12. 250. 5-8. — (L. 138) B D₁ D₂ D₁-6 अप- (for अनु-). D₁ (by corr.) -धास्यन्ति (for -या°). B D₁ D₂ D₁-1.6 मे; D₅ चेद् (for ये). D₁.3 अवस्थाः संति ये देव (for the prior half). B D₁ D₂ D₁-3.4.6 मृतेभ्येभ्यो; D₁ मृतांस्तेषां (for मृतांस्तेषां). — (L. 139) D₁ वि- (for हि). D₁.3 S कृपणाश्चुरिक्कुदात् (D₁.3 °रुशत्; G₁.5 °कुशत्) (for the prior half). D₅ om. ये. D₁.3 S पतेयं (D₁.3 पतेयुः; G₁.5 तोयं) शाश्वतीः समाः (for the post. half). — D₅ om. lines 140-141. — (L. 140) S [s]ति- (for हि). B D (except D₁.3; D₅ om.) तेभ्योहं भगवन्भीता (for the prior half). D₁.3 तु (for त्वा). B₁ M₁.2 शरणं त्वाभुमागता; B₃.4 D₁ °नं त्वाहं गता (for the post. half). — (L. 141) D₂ भगवन्; T G₂-4 सदनं (for भवनं). G₅ चैव (for देव). B₂.5 D₁ D₂ गच्छेयं न (by transp.). T G₂-5 M₃ (orig.) प्रजा रोद्धुं (M₃ बोद्धुं न चोत्सहं; G₁ M (M₃ sup. lin.) यातना स्वर्गमुत्तमं (for the post. half). — (L. 142) B₁.3.5 D₁ D₂ D₁.3-5 त्वां; B₁ [s]हं (for त्वा). D₂ D₃.5.6 G₂ वरदं (for °द). B₂ D₂ कायेन विनयोपेता (for the prior half). D₁.3 दश- (for [उ]दग्र-). B₁ D₁ D₂ -मुखेन (for -नं). S मूर्ध्ना देववर प्रभो (for the post. half). — (L. 143) T G₂.4 M₃-5 एवम् (for एतद्). D₁.3 वै; T G M₃-5 मे; M₁.2 ते (for

[अ]हं). D₃.6 दत्तं (for त्वतो). — (L. 144) D₁ इच्छेहं (for °यं). B D₂ D₂-6 -प्रसादादि; G₁ M₁.2 °देन (for °दादौ). D₃.6 जनेश्वर (for प्रजे°). — (L. 145) D₁.4.7.8 प्रादिश (for प्र°). D₁.3 एवं (for इमं). — (L. 146) S त्वयोक्ताहं (for त्वया युक्ता). D₁ D₂ धेनुकारणम् (for °श्रमम्). D₁.3 धेनुग्राममनुत्तमं (for the post. half). — (L. 147) B₂ om. ने रता. T G₂-1 तवैवाराधनेन हि (for the post. half). — (L. 148) B₂ om. from न हि up to संहार (in line 151). D₁.5 T G₃ शक्यामि. G₂ अहं (for प्रियान्). — (L. 149) D₅ हंतुं (for हंतुं). B₁.3 D₁ D₂ D₁.3-6 त्वमि-; D₁ चापि; D₁.3 चाभि- (for अभि-). D₂ -रक्षतां (for -रक्ष मां). S अयमं चापि रक्षितुं (for the post. half). B₂ om. the ref. — Lines 150-155 = (var.) 250. 9-11. — (L. 150) D₃ G₁ मृत्योः (for मृत्योः). D₁.3 वै; T G M₃-5 मे (for [अ]सि). M₁.2 मृत्योः संकल्पितामर्थं (for the prior half). S प्रजासंहारेण तु (G₂ °णाय; M₃-5 °नेत्रं) वै (for the post. half). — (L. 151) D₃.6 मात्र (for मा ते). — (L. 152) D₁ reads from त्वेतद् up to भीता (in line 154) on marg. D₃ भावितेति; D₁.3 भविष्यति (for भविता तु). G₁ M₁.2 एवमे- तद् (by transp.). T G₂-4 M₃-5 न तज्ज; G₁ M₁.2 तत्र (for नैतज्ज). — (L. 153) B₃ भवेस्तु (for भवतु). D₁ लोके. D₁.3 त्वमात्मनिरिता लोके; S तस्मादनिरिते (G₅ °ता) काले; G₅ (before corr.) तस्मादनिरिता काले (for the prior half). B₂ G₃ om. the ref. — (L. 154) D₃ M₁.2 उक्त्वा (for उक्ता). B₂ D₂ G₁ M₁.2 प्रीता; D₂ lacuna (for भीता). T G₂-5 एवमुक्ता भगवता (for the prior half). D₅ प्राञ्जलीस्तनवाश्चुखी; T G₂-5 M₃ (inf. lin.) °लिश्वाप्यवाश्चुखी; G₁ M °लिर्भ- गवतोन्मुखी (for the post. half). — B₁ om. lines

संहारे नाकरोद्धि प्रजानां हितकाम्यया । [155]

तृणीमासीत्तदा देवः प्रजानामीश्वरेश्वरः ।

प्रसादं चागमस्त्रिप्रमात्मन्येव पितामहः ।

स्यमानश्च लोकेशो लोकान्सर्वानवैक्षत ।

लोकाश्चासन्यथापूर्वं दृष्टास्तेनापमन्युना ।

निवृत्तरोपे तस्मिन् भगवत्यपराजिते । [160]

सा कन्यापि जगामाथ समीपात्तस्य धीमतः ।

अपसृत्याप्रतिश्रुत्य प्रजासंहरणं तदा ।

त्वरमाणा च राजेन्द्र मृत्युर्धेनुकमभ्ययात् ।

सा तत्र परमं तीव्रं चचार व्रतमुत्तमम् ।

समाहितैकपादेन तस्थौ पद्मानि षोडश । [165]

पञ्च चान्यानि कारुण्यात्प्रजानामभयैपिणि ।

इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यः प्रियेभ्यः संनिवर्त्य सा ।

ततस्त्वेकेन पादेन पुनरन्यानि सप्त वै ।

तस्थौ पद्मानि षट् चैव सप्त चैकं च पार्थिव ।

ततः पद्मायुतं तात मृगैः सह चचार सा । [170]

पुनर्गत्वा ततो नन्दां पुण्यां शीतामलोदकाम् ।

अप्सु वर्षसहस्राणि सप्त चैकं च सातयत् ।

धारयित्वा तु नियमं नन्दायां वीतकल्मसा ।

सा पूर्वं कौशिकीं पुण्यां जगाम नियमे घृता ।

तत्र वायुजलाहारा चचार नियुतं पुनः । [175]

पञ्चगङ्गे च सा पुण्ये कन्या वेतसकेषु च ।

155-160. G₁ om. lines 155-157. — (L. 155) G₁ M_{1.2} संहाराय (for संहारे न). — Lines 156-158 = (var.) 250. 12^c-13^d. — (L. 156) D_{1.3} ततो (for तदा). D_{1.4.5.7} M_{1.2} देव (for देवः). G_{1.5} M (M₃ sup. lin. also as above) प्रजानामीश्वरः प्रभुः (for the post. half). — (L. 157) G₁ M_{1.2} अगमत्; G₂ (by corr.) चागमत् (for चागपत्). D_{1.3} आत्मना (for आत्मनि). B₂ D₂ आत्मनैव प्रजापतिः (for the post. half). — (L. 158) D₂ S (except G₂) देवेशो (for लोकेशो). B (B₁ om.) D_{2.1} D₂ D_{1.3} अवैक्षत (D₂ 'क्ष' च (for अवैक्षत). — (L. 159) B₂ D_{2.5} तु; M_{3.3} हि (for च). D_{2.3} D₃ लोकावाप्तं यथापूर्वं (for the prior half). D_{3.6} दृष्टात् (for दृ°). D₁ (before corr.) दृष्टास्तेनापमन्युना; G₁ M_{1.2} 'मन्युना (for the post. half). — Lines 160-165 = (var.) 250. 14-16. — (L. 160) M₁ 'रोपे (for -रोपे). B₁ तस्मिन्निवृत्तरोपे तु (for the prior half). — (L. 161) B_{1.3.4} D_{2.1} D₂ D₁ कन्याप-; D_{3.6} च कन्या; D₁ कन्या*; D₂ कन्या च (for कन्यापि). D_{1.3} सा तु कन्या उप-काता (for the prior half). — (L. 162) D_{1.7.8} G_{1.5} प्रतिश्रुत्य (for [अ]र°). D_{2.3} D_{3.5} अथ मृत्युः प्रतिश्रुत्य (for the prior half). D_{1.5} 'संहरणात्; G₁ 'संहरणं (for 'संहरणं). B₂ D_{2.3} तथा (for तदा). D₃ प्रजानां हरणं तदा (for the post. half). — (L. 163) G₁ M_{1.2} [अ]य (for च). B_{3.5} D_{2.1} D₂ D₂ अन्वयात् (for 'यात्). — (L. 164) D_{2.1} D_{2.1} G₂ M_{3.5} चकार (for चचार). D_{1.3} T G_{3.5} चक्रा (D₁ 'चा'र तप उ T तपमु)त्तमं (for the post. half). — (L. 165) B D_{2.1} D₂ D_{1.3} सा तदा (D₁ 'या' ह्येकपादेन; D_{1.3} सा मनस्येकं; T G समाणा-मेकं (for the prior half). — (L. 166) B_{2.4.5} D₁ चावदानि; D₂ D_{2.3} [अ]न्यानि तु; D_{1.3} त्वान्यानि (for

चा°). B D_{2.1} D₂ D_{1.3} तु (D₁ च) द्वितीयो; G₂ (inf. lin. as above) अद्वैतीयो (sic) (for अमद्वै°). — (L. 167) D₁ त्रिद्वैत्यः (for [इ]न्द्रिया°). T G_{2.5} संनिवर्त्ये (for संनिवर्त्यं). — (L. 168) D₁ स च (for तु). S (except G₂) ततस्त्वेकपादेनैव (for the prior half). D_{2.1} तस्थौ पद्मानि; D₂ पुष्पाधारणानि (for पुनरन्यानि). — Lines 169-171 = (var.) 250. 19-20. — (L. 169) B₂ (marg.). 2.4 D_{2.3} D_{3.6} षट् द्वौ च; D_{1.3} पंचैव (for षट्चैव). D₁ सप्त (for सप्त). D₂ तु (for च). T G_{2.4} सप्त पंचैव वै नृप; G_{1.2} M सप्तकं चैव वै नृप (G₁ M_{1.2} पुनः) (for the post. half). — (L. 170) G₁ M तत्र (for ततः). T G_{2.5} तत्र वर्षायुतं चैव (G₂ तात) (for the prior half). D_{1.3} मेरो सन्धक्चचार ह (for the post. half). — (L. 171) D_{2.3} D_{3.5.6} नद्यां; T G_{2.4} गंगां (for नन्दां). D_{2.1} D₁ पुण्य- (for पुण्यां). D_{2.3} तोया पुण्यामलोदकौ (sic); S पुण्यां शीतजलां शिवां (G_{1.5} M शुभां) (for the post. half). — (L. 172) D₃ अत्र (for अप्सु). D₁ वा (for च). B₁ चारयत्; D_{1.3} T G_{2.5} M_{3.5} सातयत्; G₁ M सातयत्; M₂ सातयत् (for सातयत्). — (L. 173) D_{1.3} S तं पार (G₁ M_{1.2} तत्पार-; M_{3.4} तं बार)यित्वा नियमं (for the prior half). T G_{2.5} गंगायां (for नन्दायां). — (L. 174) B₂ पूर्वा; D_{1.3} पूर्वे; S पुनः (for पूर्व). B₂ D₂ नियमैश्विना; D_{2.1} नियमे वृता; D₂ T G_{1.4} M 'मैश्विना (T G₂ 'तां); G₂ 'मैश्विना (for नियमे वृता). — (L. 175) D₁ मित्र- (for वायु-). D_{2.3} D₃ 'जलाधारा; G₁ 'हारे (for 'हारा). B D नियमं; G₁ M_{1.2} नियतं (for नियुतं). B₁ (also as above) ततः (for पुनः). — (L. 176) D_{2.1} G₂ पंचगंगेयव; G₂ 'गंगेयि (for 'गङ्गे च). B_{3.5} D_{2.1} D₂ D₁ पुण्या (for पुण्ये). D_{2.3} पंचगंगावृता पुण्या; D_{2.3.5} 'गंगेयु सा पुण्या; D₁ 'कन्येव सा पुण्या;

तपोविशेषैर्बहुभिः कर्शयद्देहमात्मनः ।
 ततो गत्वा महागङ्गां महामेरुं च केवलम् ।
 तस्थौ चाश्मेव निश्चेष्टा प्राणायामपरायणा ।
 पुनर्हिमवतो मूर्ध्नि यत्र देवा पुरायजन् । [180]
 तत्राङ्गुष्ठेन सा तस्थौ निखर्वं परमा शुभा ।
 पुष्करेष्वथ गोकर्णे नैमिषे मलये तथा ।
 अकर्शयत्स्वकं देहं नियमैर्मनसः प्रियैः ।
 अनन्यदेवता नित्यं दृढभक्ता पितामहे ।
 तस्थौ पितामहं चैव तोषयामास धर्मतः । [185]
 ततस्त्वाभ्रवीत्प्रीतो लोकानां प्रभवोऽव्ययः ।
 मृत्यो किमिदमत्यर्थं तपांसि चरसीति ह ।

ततोऽभ्रवीत्पुनर्मृत्युर्भगवन्तं पितामहम् ।
 नाहं हन्यां प्रजा देव स्वस्थाश्चाक्रोशतीस्तथा ।
 एतदिच्छामि सर्वेश त्वत्तो वरमहं प्रभो । [190]
 अधर्मभयभीतास्मि ततोऽहं तप आस्थिता ।
 भीतायास्तु महाभाग प्रयच्छाभयसव्यय ।
 आर्ता चानागसी नारी याचामि भव मे गतिः ।
 ताम्रवीत्ततो देवो भूतभव्यभविष्यवित् ।
 अधर्मो नास्ति ते मृत्यो संहरन्त्या इमाः प्रजाः । [195]
 मया चोक्तं मृषा भद्रे भविता न कथंचन ।
 तस्मात्संहर कल्याणि प्रजाः सर्वाश्चतुर्विधाः ।
 धर्मः सनातनश्च त्वा सर्वथानुप्रवेक्ष्यति ।

Ds. 1. 8 'गंगे महा (D. 8 सदा) पुण्ये (for the prior half). D. 1 गंगा (for कन्ता). B. 1 (marg.) 3. 4 वैतसकेषु च; B. 3 (marg.) वैतसकेषु च; D. 8 वैतसके पुनः; T Gs-5 वे (Gs वे) तसिक्केषु च; G. 1 M वैतसकेषु च; G. 2 वैप्रांक (for वैतसकेषु च). — (L. 177) D. 8 S निमिषैः (for बहुभिः). B. 1. 8 Dc. 1 D. 1 कर्ष (Dc. 1 Dn 'र्ष) नी; B. 2. 4. 5 Dn. 2 D. 2. 5. 6 कर्षयद्; D. 3. 4 कर्षयन्; T Gs. 4 M. 4 कर्षयन्; G. 1 M. 1. 2 'वेद् (for कर्षयद्). D. 8 कर्ष (Ds 'र्ष) यतीव (Ds 'तीव) मात्मनः (for the post. half). — Lines 178-181 = (var.) 250. 23^a-23^b. — (L. 178) B Dc. 1 Dn D. 1 (before corr.) 2-8 तु (B. 1 च) सा गंगा; D. 1 (by corr.) तु गंगां तां; T Gs-5 महाभागं (for 'गङ्गां). Ds अद्यमेकं (for महामेरुं). M. 3. 5 पर्वतं (for केवलम्). — (L. 179) Dn. 1 चाश्मेव; D. 3 चासौ च; D. 8 T Gs-1 M. 5 अश्मेव (for चाश्मेव). Dn. 2 तस्थौ चाश्मे (sic) निनिश्चेष्टा; G. 5 तसिक्केषु च निश्चेष्टा (for the prior half). — (L. 180) S ततो (for पुनर्). B. 1. 8 D. 1. 5 (before corr.) [अ]जयन्; D. 1 [अ]जयन् (for [अ]यजन्). — (L. 181) D. 1 om. सा. D. 2. 6 तस्थौ च (for सा तस्थौ). G. 1. 2 M परमं शुभा (G. 1 'भं); G. 2 'नांगना (for 'भा शुभा). Dn. 1 D. 1. 3 निखर्वाणां परं शतं (Dn. 1 शुभं); D. 2. 6 नित्यं यूपोत्तमा शुभा; T Gs. 4 निर्वाणं परमं गतं (for the post. half). — (L. 182) Ds पुष्करेष्वथ (for 'एथ). D. 8 नैमिषेः परकटके; S नैमिषे (G. 2 'पे) मलयेषु च (for the prior half). — (L. 183) B D अगर्षयत्; M. 2. 3 अकर्षयत् (for अकर्शयत्). B. 1 Dn. 1. 4 मा (D. 1 म) नतः; Ds G. 1 M. 2 मनसि (for 'सः). Dn. 1 सह; Ds श्रियैः (for प्रियैः). — (L. 184) Dn. 2 Ds सानन्य- (for अनन्य-). Dn. 2 Ds. 6 दृढं; D. 3 बाढम् (for दृढ-). Dn. 3 शक्त्या; D. 1. 8 -मक्त्या; D. 2 G. 1 M -भक्तिः; D. 3 उक्ता (Ds 'क्ता) (for -भक्ता). — Lines 185-189 = (var.)

250. 23^a-23^b. — (L. 185) Gs (inf. lin.) दृष्टौ (for तस्थौ). D. 1 सा चैवं तोषयामास (for the prior half). T Gs-1 यत्नतः (for धर्मतः). D. 1 सर्वतः कामरूपिणी; M. 3 तोषयती सधर्मतः (for the post. half). — (L. 186) Ds प्रीत्या (for प्रीतो). D. 8 पुरुषो (for प्रभवो). — After line 186, B D ins.:

सौम्येन मनसा राजन्प्रीतः प्रीतमनास्तदा ।

[Dn. 1 महता (for मनसा). D. 1 om.; D. 8 प्रीत्या (for प्रीतः).]

— (L. 187) D. 8 एतद् (for इदम्). B. 2-5 Dn. 2. 3. 5. 6 अत्यंतं (for अत्यर्थं). Dn. 1 G. 1 चरति (for 'सि). G. 1 इह (for इति). B. 1 Dn. 2. 5 हि; Dn. 1 [इ]ह; D. 3 च; G. 1 वै; G. 3 नः (for ह). — (L. 188) Gs सा च (for ततो). — (L. 189) S स्वस्थाश्च क्रोशतीः प्रभो (for the post. half). — (L. 190) D. 1 G. 2 देवेश (for सर्वेश). D. 8 वरं त्वत्तः परं प्रभो (for the post. half). — (L. 191) D. 8 तपसा स्थिता (for तप आ). — (L. 192) G. 2 भीतायां (for 'यासु). D. 1. 5 S वे (for तु). B. 1. 5 उत्तमं; Dc. 1 Dn D. 1-6 अव्ययं (for अव्यय). D. 8 प्रयच्छानामयं यथा; S प्रदेहि वरमव्ययं (T Gs M. 5 'य) (for the post. half). — (L. 193) D. 1. 5 S च त्वां (T G. 1 M. 1. 2 त्वा) (for नारी). G. 5 याचामि त्वापरां गतिं (for the post. half). — Lines 194-195 = (var.) 250. 32. — (L. 194) S तदा (for ततो). D. 8 ब्रह्मा (for देवो). Ds. 6-8 S -भविष्यकृत् (for 'वित्). — Before line 195, S ins. ब्रह्मा. — (L. 195) D. 1 भद्रे (for मृत्यो). Dn. 2 D. 1. 5 संहरन्त्या; D. 8 'रस्व (for संहरन्त्या). Ds इमां (for इमाः). — (L. 196) Dn. 2 माधवोक्तं (for मया चोक्तं). D. 2 G. 2 कदाचन (for कथं). — Dc. 1 reads lines 197-198 on marg. sec. m. — (L. 197) Dn. 2 D. 3 अस्मात् (for

लोकपालो यमश्चैव सहाया व्याध्यस्तथा ।

अहं च विबुधाश्चैव पुनर्दास्यामि ते वरम् । [200]

यथा त्वमेनसा मुक्ता विरजाः स्यातिमेव्यसि ।

सैवमुक्ता महाराज कृताञ्जलिरिदं विभुम् ।

पुनरेवाप्रवीद्वाक्यं प्रसाद्य शिरसा तदा ।

यद्येवमेतत्कतं मया न स्याद्विना प्रभो ।

तवाज्ञा मुक्तिं मे न्यस्ता यत्ने वक्ष्यामि तच्छृणु । [205]

लोभः क्रोधोऽभ्यसूयेर्ष्या द्रोहो मोहश्च देहिनाम् ।

अहीश्वान्योन्यपरुषा देहं भिन्दुः पृथग्विधाः ।

ब्रह्मोवाच ।

तथा भविष्यते मृत्यो साधु संहर वै प्रजाः ।

अधर्मस्ते न भविता नापध्यास्याम्यहं शुभे ।

यान्यश्रुविन्दुनि करे समासते [210]

ते व्याधयः प्राणिनामात्मजाताः ।

ते मारयिष्यन्ति नरान्गतासू-

ब्राधर्मस्ते भविता मा स्य मैषीः ।

धर्मो मृत्यो मारणे प्राणिनां ते

त्वं वै धर्मस्त्वं हि धर्मस्य चेष्टा । [215]

धर्म्या मृत्वा धर्मनित्या धरित्री

तस्मात्प्राणान्सर्वेधेमाश्रियच्छ ।

सर्वेषां वै प्राणिनां कामरोपौ

संत्यज्य त्वं संहरस्वेह जीवान् ।

त). G₂ चतुर्वर्गा इमाः प्रजाः (for the post. half). — (L. 198) B Dc1 Dn D1-s G₂-s M₂.4 त्वां (for त्वा). G₂ सर्वथा. D1-s धर्म सनातनं च त्वं (for the prior half). Dc1 Dn D1-s सर्वथा पात्र (Dc1 पात्र; Dn₂ D₃.6 पाल) विध्यति; D1-s 'था प्रापयित्वा (D₃ 'व्य)सि (for the post. half). — (L. 199) B₂ (marg. also as above) Dc1 लोकपाला; D1-s S स (G₂ स) वैः कालो (for लोकपालो). B Dc1 Dn₁ D1.7.3 S च ते (G₂ ये) (for तथा). — Line 200 = (var.) 12. 250. 28^{ed}. — (L. 200) B₂ अयं (for अहं). B₂ (marg. as above). 3 दास्यामि (for 'म). T G₂.4 वरान्. D1-s G₁.2.5 M पुनर्दास्यामि ते (D1-s G₂ 'महे) वरान् (for the post. half). — Dc1 om. lines 201-202. — (L. 201) B₁.3 D1.6 लक्ता; Dn D₃-s युक्ता (for मुक्ता). D1 यैस्त्वमुक्तैर्न सा मुक्ता; D₃ यैस्त्वं युक्तैर्न सा मुक्ता; S यैस्त्वं यु (G₂ तु) क्ता भयान्मु (G₂ 'यामु) क्ता (for the post. half). — (L. 202) B₁.3 Dn₁ S (G₂ lacuna) प्रभुः; D1-s वनः (for विभुः). — Before line 204, S (except G₂) ins. मृत्युः. — (L. 204) T G₁.3-s M एतदेवं (by transp.); G₂ एवमेव. B₁. 4.5 विभो (for प्रभो). D1-s मया तन्नान्यथा भवेत्; S धर्मतो (G₁ M₁ इति मे; G₂ M₂-s इह मे; M₂ इति इ) नास्त्वतो भवं (for the post. half). — (L. 205) D1-s त्वदाक्यं (for तवाज्ञा). D1-s न्यस्तं; M₁.2 [S]-यत्तु (for न्यस्ता). B₁.3 Dc1 D1 S तु; D1-s च (for ते). — (L. 206) D₂.6 कामः (for लोभः). Dn₁ D₂ क्रोधा; T क्रोधि (for क्रोधो). T G₂-4 ह्यसूयेर्ष्या (for 'स्य'). D1-s द्रोहमोहाश्च; T G₂-4 मोहो द्रोहश्च (by transp.). Dc1 Dn₁ D1 द्वेषो; G₂ damaged (for द्रोहो). D₂.6 लोभश्च (for मोहश्च). B₁.5 देहिनाः; G₂ 'नं (for 'नान्). — (L. 207) D₃ पतेश्च (for अहीश्च). Dc1 Dn₁ D₂-s

पुरुषा; D1-s -जनिता (for -यक्षा). S (except G₂) अध्रियान्योन्यजनिता (T G₂ 'तान्) (for the prior half). B₁.3-s D1.5 T G₂-s देहान् (for देहं). Dn₂ D1-3.9-3 भिन्दुः; D₂ भिन्दुः (for भिन्दुः). D₃ पृथग्विधं. Dc1 Dn₁ G₁ M देहान्भिन्दुः (Dc1 'हान्भिन्दुः; Dn₁ 'हान्भिन्त्वा) पृथग्विधान् (for the post. half). — Lines 203-212 = (var.) 250. 32-33. — (L. 208) G₂ M₂-s भविष्यति (M₂ 'ते) तथा मृत्यो (for the prior half). D₂ भो; D₃ ते; Bom. ed. भोः (for वै). D₂ प्रजां (for प्रजाः). — (L. 209) B₂ D₁ नापध्यास्यामहे शुभे; Dc1 तापाध्यास्यामहे शुभे (sic); Dn₁ तथा ध्यास्यामहे शुभे; Dn₂ मा वध्यास्यामहे शुभे; D₂ नापध्यास्यामहे प्रभो; D₃ तदिहास्यामहे प्रभो; D1-s तथा ध्या (D₃ वा) स्यामहे शुभे; S तथा ध्या (G₂-s 'था दा) स्यामि (G₂ 'म) ते भवं (G₁ M शुभं) (for the post. half). — (L. 210) B Dc1 Dn₁ D1-s नमासंश्च; D₂ corrupt; S तवासंश्च (for समासते). — (L. 211) D1.5 तद् (for ते). D₂ om. (hapl.) from प्राणिना up to मारणे (in line 214). D1-s ते व्याधयः प्राणविनाशनाय; S ते व्याधयः प्राणिनां देहजाः स्युः. — (L. 212) B₂ (marg.). 4 संहरिष्यन्ति (for मारयिष्यन्ति). Dn₂ reads from नरान् up to धरित्री (in line 216) twice (without var.). M₁.2 इतामृत्. — (L. 213) B Dc1 Dn D1-3.5.6 नाश्च (B₂ नाश्च; D₃ नाश्च) मृत्यो भविता प्राणिनां वै (B₂ Dc1 वैत्); G₂ धर्मो न मृत्यो मरणे प्राणिनां वै. — (L. 214) D1-s हरणे (for मारणे). B D₂ वै (for ते). — (L. 215) D₃ तं (for त्वं). T G₂.4 सर्वस्य; G₂ विश्वस्य (for धर्मस्य). B₂.4 Dc1 Dn D₂.5.5 चेष्टा; B₂ वेगः; D₁ वैषा; D₂ वैषः; D1-s देशः; T देशः; G₂.5 चेष्टा (for चेष्टा). — (L. 216) Dn₂ D1-s S (except G₂) धर्मो; D₂ धर्मो (for धर्म्या). B₂ धर्मनिष्ठा; D₃ भूता; D1-s नित्यो; M₁ भूता (for नित्या). D₂

एवं धर्मस्ते भविष्यत्यनन्तो [220]

मिथ्यावृत्तान्मारयिष्यत्यधर्मः ।

तेनात्मानं पावयस्वात्मानं त्वं

पापेऽऽत्मानं मज्जयिष्यन्त्यसत्त्वाः ।

तस्मात्कामं रोषमप्यागतं त्वं

संत्यज्यातः संहरस्वेह जीवान् । [225]

नारद उवाच ।

सा वै भीता मृत्युसंज्ञोपदेशा-

च्छापाद्वीता बाढमित्यव्रीत्तम् ।

सा च प्राणान्प्राणिनामन्तकाले

कामक्रोधौ त्यज्य हरत्यसक्ता ।

मृत्युस्तेषां व्याधयस्तथसूता [230]

व्याधी रोगो रुज्यते येन जन्तुः ।

सर्वेषां वै प्राणिनां प्रायणान्ते

प्राणा गत्वा संनिवृत्तास्तथैव ।

वायुर्भीमो भीमनादो महौजा

परित्र्यां (for धरित्री). — (L. 217) Dc1 Dn1 D1 प्राणिनः; D5 सर्वा (for प्राणान्). D3 एतान्; D1.8 एषां (for इमान्). G5 [अ]भिगच्छ (for नियच्छ). — After line 217, S ins.:

पाप्मा तथा ते भविता कदाचि-

देवं मया वै विनियुज्यसे त्वम् ।

[(L. 1) G1 M न चान्यथा; G6 ततोऽन्यथा (for पाप्मा तथा). T G2.4 नो (for ते). G1 M1.2.4 कथंविद्. — (L. 2) G1 M1.2.4 जैव (for वै वि-). Ms. 6 विनियोज्यसे.]

— (L. 218) Dn2 D3.6 om.; D4 च (for वै). G5 कामकारान्; Ms. 5 हर्षरोषी (for काम). — (L. 219) B2 संयुज्य (for संत्यज्य). D2 [अ]नः (for त्वं). B2 G1 संहरस्वेव (sic); B3 Ms. 5 'स्वेव; Dn2 'स्वेह (sic); D1.8 'स्लेप; T G2-5 संहर सर्व- (G5 'र्व); M1.2 'सेव (sic) (for 'स्वेह). B4 Dn2 D1.8.5.6 जीवं (for जीवान्). — (L. 220) T G4 येषां; G5 एषां (for एवं). B Dc1 Dn1 D1-6 G2 त्वां; Dn2 D5 (also as above) सं- (for ते). B1 भजिष्यति; D4 भविष्यत; T G4 भविष्यति (for 'व्यति). D4 धृत्वा (for [अ]नन्तो). — (L. 221) Dn2 मिथ्या वृत्तान् (sic); D3 प्रजाः सर्वा; G2 मिथ्यावृत्तो (for 'वृत्तान्). Dc1 Dn1 सादयिष्यति; D5 मानथि (for मारयि). D4 अयमेतः; G2 अनन्तः (for अधर्मः). — (L. 222) Dc1 पावयस्व; Dn1 D1 पावयेक्ष (D1 'च); D4 पातयस्व; T G1.3.4 M (Ms orig.) ध्यावयस्व; G2 Ms (inf. lin.) पाल; G6 (inf. lin. as above) पावयित्वा (for पावयस्व). B1.3-5 Dc1 [अ]लये त्वं; Dn1 [आ]त्मने त्वं; D1 [आ]त्मदेहं; D5 'पापः; T G1-4 M व्यपेक्षं; G5 स्ववैश्य (for [अ]त्मना त्वं). D1.8 तेनाथ (D1 'न थ) र्म पावयस्याव्यये त्वं. — (L. 223) B1.5 पापात्मानं; B4 D5 T G1.3-5 M पापात्मानो; Dn1 पापिष्वात्मानं; Dn2 D1.6 पापेना; D1.8 पाप्मानं वै; G2 अपाप्मानो (for पापेऽऽत्मानं). B1 मज्जयिष्यति; Dc1 Dn1 D3-5.7.8 T 'यिष्यति (for मज्ज-

यिष्यन्ति). B Dc1 Dn1 D3 असत्यात्; Dn2 D5 G1-4 M असंतः; D1 सत्यात्; D1.8 अधर्मः; T अनन्तः; G5 संतः; G5 (inf. lin.) अधर्मः (for असत्त्वाः). — (L. 224) Dc1 Dn1 तथा (for तस्मात्). B1.2.5 Dc1 D4.6 शेषम्; B4 corrupt (for रोषम्). D1 अध्यागतं; D4 अप्यामतं (for 'गतं). M1.2 च (for त्वं). — (L. 225) B Dn2 D3 अंतः; D5 आशां; D1.8 S उभौ (for अतः). B4.5 D6 संहरस्वेति; D4 'स्वेव; D5 'त्रैव; D1.8 'स्वेव; T G2-5 Ms-5 संहर सर्व-; G1 M1.2 संहरः सर्व- (for संहरस्वेह). D5 जीवं; D1.8 भीरु (for जीवान्). — Lines 226-248 = (var.) 250. 35-41. — (L. 226) S सा चैवमुक्ता मृत्युसंज्ञापदेशात्. — (L. 227) B4 च (for तम्). — (L. 228) B4 तु (for च). B1 (marg. as above). 2.5 Dn2 D1-4.6 प्राणं (for प्राणान्). D1.8 G2 प्रायणान्ते; T G1.3-5 Ms-5 प्रायणान्ते; M1.2 प्रायणान्ते (for अन्तकाले). — (L. 229) Dc1 (before corr.) संत्यज्य (for त्यज्य). Dn1 संहृत्य (for हरति). B1-3 D5 अशक्ता; B5 Dn2 D3 अशक्त्या (for अस्क्ता). S कामक्रोधौ संहरत्येव हित्वा (G2 मुक्ता). — (L. 230) D1.8 त्वेवं; T G2.3 त्वेषां (for तेषां). B1 [आ]त्मप्रसूता; B2.3.5 Dn1 सुप्रसूता; B4 स्वप्रसूता; Dn2 D1.8.5-8 तं प्रसूता; D4 च प्र; T G2-5 तत्र सूता; G1 M1.2 तं प्र (for तत्प्र). — (L. 231) D5.8 रोगौ; T G2-5 रोगैर् (for रोगो). Dc1 Dn1 D1 T G2.4 युज्यते; D1.5 रुज्यते (for रुज्यते). D1.8 S देहः (for जन्तुः). — D5 om. line 232. — (L. 232) B2 D2 T G2-5 च; Dn2 om. (for वै). B4 प्राणान्ते; Dn2 D4 M1.2 प्राणय- (Dn2 'यां) ते; D2 प्राणभीते; D1.8 प्राणकाले (for प्रायणान्ते). — After line 232, B D ins.:

तस्याच्छोकं मा कृथा निष्फलं त्वं

सर्वे देवाः प्राणिभिः प्रायणान्ते ।

[D5 om. line 1. — (L. 1) D4 त्वा (for त्वं). — (L. 2) B1.8 Dc1 Dn D1-4.6.7 प्राणिनां (for प्राणिभिः). B4 D1.2.7 प्रायणान्ते; Dn1 प्रायणान्ते; D4

मेत्ता देहान्प्राणिनां सर्वगोऽसौ । [235]
 नैवावृत्तिं नानुवृत्तिं कदाचि-
 ध्यामोत्युग्रोऽनन्ततेजा विशिष्टः ।
 सर्वे देवा मर्त्यसंज्ञा विशिष्टा-
 स्तस्मात्पुत्रं मा शुचो राजसिंह ।
 स्वर्गं प्राप्नो मोदते त्वत्तनूजो [240]
 नित्यं रम्यान्वीरलोकानवाप्य ।

त्यक्त्वा दुःखं संगतः पुण्यकृद्भि-
 रेपा मृत्युर्देवदिष्टा प्रजानाम् ।
 प्राप्ते काले संहरित्री यथाव-
 त्स्वयं कृता प्राणहरा प्रजानाम् । [245]
 आत्मानं वै प्राणिनो प्रप्तिं सर्वे
 नैनं मृत्युर्दण्डपाणिर्हिनस्ति ।
 तस्मान्मृताश्चानुशोचन्ति धीरा-

प्राणयति; Ds प्रापणात्ते (for प्रायणान्ते). Ds ते च प्राणा-
 न्प्राणिनः प्रीणयन्ते.]

— (L. 233) B D ग (D2 म) त्वा वृत्ताः; M1.2 प्राणान्दत्त्वा;
 Ms (*inf. lin.*) प्राणा गताः (for प्राणा गत्वा). — After
 line 233, B D ins. :

एवं सर्वे प्राणिनस्तत्र गत्वा
 वृत्ता देवा मर्त्यवद्राजसिंह ।

[(L. 1) B2 Dn2 D2 प्राणिनां (for 'नम्'). Dn2
 D2 आशु गत्वा; D4 चाशु गत्वा; D5 तत्तु गत्वा; D7.8
 संनिवृत्ता (for तत्र गत्वा). — (L. 2) D4 देवा; D5
 भूत्वा; D7 गत्वा; Ds om. (for वृत्ता). D4 दैत्वा (for
 देवा). Ds मर्त्यतां (for 'वद्'). D1 राजसिंहः; D5
 याति भूयः (for राजसिंह).]

— On the other hand, S ins. after line 233 :

एवं मृत्युः प्राणिनां तत्र गत्वा
 भूत्वा देवी मर्त्यतां याति भूयः ।

[(L. 1) G2 प्राणिनस् (for 'नां'). — (L. 2) G2
 [*sup. lin.*] मृत्वा (for भूत्वा). T देवि; G1.2.5 M
 देवा (for देवी). G1.5 M (Ms [*inf. lin.*] as above)
 याति (for याति).]

— (L. 234) D7.8 भीष्म- (for भीम-). — (L. 235)
 D1.4 भित्त्वा (for भेत्ता). B3 Dc1 (before corr.) Dn1
 देहं; D7.8 देहे (for देहान्). D1.4 प्राणिना (D4 'नः'
 (for 'नां'). D7.8 S देह (Gs 'हि' भूतः (for सर्वगोऽसौ).
 — D3 om. lines 236-237. — (L. 236) D4.7.8 G1.2
 M1.2 नैवावृत्तिः (D7.8 'वा वृ'त्तिर्; Bom. ed. नो वा वृत्ति
 (for नैवावृत्ति). B Dc1 Dn D1.2.6 नैव (D2 'व' वृत्ति;
 D4.7.8 नानुवृत्तिः; D5 नात्र वृत्तिः; S नातिवृत्ति (G1.2
 M1.2 'त्तिः') (for नानुवृत्ति). — (L. 237) Dn1
 प्राप्नोत्वन्तं; Dn2 D7.8 Ms.4 प्राप्नोत्युग्रो; Ds प्राप्नो ह्युग्रो
 (for प्राप्नोत्युग्रो). B2 (marg. as above). 4.5 Dc1 Dn1
 Gs Ms.4.5 (*inf. lin.* as above) [S] नन्ततेजो; Dn2
 नष्टनेजा (for 'नन्त'). — (L. 238) B1 ****हा (for

सर्वे देवा). B2 मृत्युः (for मर्त्य-). — After line 238,
 D7.8 S ins. :

सर्वे मर्त्या देवसंज्ञा विशिष्टाः ।

[Ms.5 मृत्युसंज्ञा (for देव').]

— (L. 239) G4 सर्व (for पुत्रं). T G2 राजसिंहः.
 — (L. 240) D1 स्वर्गः; D7.8 स्वर्ग- (for स्वर्ग).
 G1 M1.2 प्राप्नो. B2 Dc1 Dn2 D2-6 ते (for त्वत्).
 — (L. 241) D7 नित्यं रम्यां लोकवीरानवाप्य. — (L.
 242) Dn2 D3.5 सं (Dn2 om. सं) गतं; D4 पुण्यजं;
 D5 स्वर्गजं; D7.8 संहरं (for संगतः). — (L. 243)
 Dn2 S एवं (for एषा). Dn2 D1.2.5 देव- (for देव-).
 D4.6 दृष्टा; D4.7.8 S सृष्टा (for दिष्टा). — (L.
 244) D7.8 काले प्राप्ते (by transp.). B1.3 D2.4.5
 संहरंती; B5 'रति; D7.8 'रते (for 'रित्री). S काले
 प्राप्ते संहरत्वेव जन्तु. — After line 244, D7.8 S ins. :

रोगा क्षेते व्यापयो देहजाश्च ।

[D7.8 क्षेपां (for क्षेते). D7.8 देहजाताः; G2 देवजाश्च
 (for देह').]

— (L. 245) Dn2 कृत्वा (for कृता). D7.8 S स्वयं
 कृताः प्राणह (D7.8 'हा' राः प्रजानां. — (L. 246) D2
 (before corr.) क्रोधादयः; Ds (by corr.) क्रोधारयः (for
 आत्मानं वै). Dn2 D3 प्राणिनां; S (except G2) देहिनी
 (for प्राणिनो). — (L. 247) B2 नैव; B5 S नैवान्
 (for नैवं). D7.8 निर्वृति (for हिनस्ति). — (L. 248)
 D4 मृतान्; D7.8 मृत्युः; G1 M1.2 वृत्तान् (for मृतान्).
 — (L. 249) B1.2 Dc1 Dn D2-6 सर्वः; B3.5 Dc1
 (marg. sec. m.) D2 मृत्युः; B4 D1 सर्वः; D7.8 सर्वः;
 T तं (for तत्त्वं). D4 धर्मसृष्टं; D7 देव'; D3 देव'
 (for ब्रह्म'). — After line 249, Dn2 D2.4.5 ins. :

इत्थं सृष्टि देवकृतां विदित्वा

पुत्राश्चाप्यशोकमाशु त्यजत् ।

[D2.5 om. line 1. — (L. 1) Dn2 देवकृतां (for
 देव'). — (L. 2) D4 त्यज त्वं (for त्यजस्व).]

स्तत्त्वं ज्ञात्वा निश्चयं ब्रह्मसृष्टम् ।

व्यास उवाच ।

एतच्छ्रुत्वाथैवद्वाक्यं नारदेन प्रकाशितम् । [250]

उवाचाकम्पनो राजा सखायं नारदं तदा ।

व्यपेतशोकः प्रीतोऽस्मि भगवन्नृपिसत्तम ।

श्रुत्वेतिहासं त्वत्तोऽद्य कृतार्थोऽस्म्यभिवादेय ।

तथोक्तो नारदस्तेन राजा ऋषिवरोत्तम ।

जगाम नन्दनं शीघ्रं देवर्षिरमितात्मवान् । [255]

पुण्यं यशस्यं स्वर्ग्यं च धन्यमायुष्यमेव च ।

अस्येतिहासस्य सदा श्रवणं श्रावणं तथा ।

एतदर्थपदं श्रुत्वा विज्ञाय त्वं च पाण्डव ।

क्षत्रधर्मं च विज्ञाय शूराणां च परां गतिम् ।

Bi-3.5 Dci Dni Dr द्रैपायन उवाच; D1 नाकैपायन (sic) उवाच; D3 वैशं (for व्यास उवाच). — (L. 250) B1 आत्मवद्; D2 अथैवद् (for 'वद्'). Dr.3 S प्रभाषितं (for प्रकाशितम्). — (L. 251) T सहायान्; G2 सभायां; G3 सहायं (for सखायं). B2.5 Dn2 Di-5.8 G2.5 तथा (for तदा). — (L. 252) B1 मुनि- (for ऋषि-). — (L. 253) Bi-3 Dci Dni च; B1.5 Dn2 Di-6 तु; G1 [S]पि (for सव). Dr.3 कृतकृत्योभवं त्वहं (for the post. half). — Before line 254, Dni Dr ins. द्रैपायन उवाच. — (L. 254) Di.7.8 राज (D1 ऋषि)वरोत्तम; S देवर्षिसत्तमः (for ऋषिवरो*). — (L. 255) B2 मन्दरं; Dni Dr.3 [अ]नंतरं (for नन्दनं). M2-3 पुण्यम् (for शीघ्रं). Dni Dr.3 देवर्षिरपि नारदः; S अशोकवनमात्मनः (for the post. half). — Before line 256, B1 ins. व्यास उवाच. — (L. 256) S आयुष्यं (for स्वर्ग्यं च). S स्वर्गायि धन्य (G1.6 'न्व')मेव च (for the post. half). — (L. 257) G1 (inf. lin. as above) M1.2 यदा; G2 कथा; G3 M1 तदा (for सदा). Dni Dr.3 अथेति यः सदा राजन्; Dn2 D3.6.6 अत्येतिहासश्रेष्ठस्य (for the prior half). G1.6 श्रावयेत्; M1.2 'यत्' (for 'ण'). G3 तदा; M1.2 ततः (for तथा). — (L. 258) Dni Dr.3 एत (D3 'न')मर्थं परं श्रुत्वा; S एव (G1 M2-3 'त')मर्थं हि संश्रुत्य (for the prior half). B2 (marg.) स्यात्सा तर (sic); T G2-8 ज्ञात्वा चैव; M2-3 विज्ञायैव (for 'य त्वं'). Dr M1 च पाण्डव; T G2.3 स पाण्डव (G2 'व'); G3.5 हि पाण्डव (for च पां). B Dci Dn2 Di-5 तदा राजा (B1 सुतो भव) युधिष्ठिरः (B1 'र'); G1 M1.2 विज्ञात्वा चैव पाण्डव (for the post. half). — (L. 259) Dr.3 कृत्स्न (D3 'त्वं')मर्थं च; G3 (sup. lin.) क्षत्रधर्मं हि; G3 (orig.) श्वर्ग्यं चैव हि (for श्वत्रधर्मं च). D1 परागति.

संप्राप्तोऽसौ महावीर्यः स्वर्गलोके महारथः । [260]

अभिमन्युः परान्हुत्वा प्रमुखे सर्वधन्विनाम् ।

युध्यमानो महेश्वासो हतः सोऽस्मिन्मुखो रणे ।

असिना गदया शक्त्या धनुषा च महारथः ।

तस्मात्परां धृतिं कृत्वा भ्रातृभिः सह पाण्डव ।

अग्रमत्तः सुसंनद्धः शीघ्रं योद्धुमुपाक्रम । [265]

Colophon.

संजय उवाच ।

श्रुत्वा मृत्युसमुत्पत्तिं कर्माण्यनुपमानि च ।

धर्मराजः पुनर्वीर्यं प्रसाद्यैनमथाप्रवीत् ।

गुरवः पुण्यकर्माणः शक्रप्रतिमविक्रमाः ।

— (L. 260) T G1.3.4 M संप्राप्नोति; G2.5 'प्तोति- (for संप्राप्तोऽसौ). D1 **वीर्यः; Dr.3 G2 महावीरः (for 'वीर्यः'). B3 सुदुर्गमं (for महारथः). — (L. 261) B3 -धर्मिणां; D2.6 -धन्विनं (for -धन्विनाम्). — (L. 262) D1 **श्वासो; G2.5 महेश्वासम् (G3 'सांस्') (for 'श्वासो'). Dci Dni Dr.3 हतो हि; T G2 M2-3 ल्यक्तात्मा; G1.3.4 M1.2 ल्यक्तात्मा; G3 ल्यक्त्वा हि (for हतः सो). — After line 263, B D ins.:

विराजः सोमसूनुः स पुनस्तत्र प्रलीयते ।

[B2 (marg.) अभिमन्युः; B1 **पुत्रश्च; Dni Dr.3 सोमपुत्रश्च (for 'सूनुः'). B3.4 Dci च; Dni Dr.3 तु (for स). Dni व्यलीयत; Dr 'ल्यत्' (for प्रलीयते). B1 स पुनस्तत्र लीयते (for the post. half).]

— (L. 265) Dni तु संवृत्तः; Dr.3 सुसंयत्तः; T G2-4 'कुद्धो; G1.5 M 'रन्ध्रः (for 'नद्धः'). Dci क्षिप्रं (for शीघ्रं). B3 D2.1 उपाक्रमत्; Dn2 D1 'क्रमः; D3 उपक्रमे; D3 उपाक्रमात् (for 'क्रम'). Dni Dr.3 शीघ्रं युद्धमुपक्रम; S राजन्युध्यस्व शत्रुभिः (for the post half). — Colophon: — Sub-paroan: B1 D1 अभिमन्युवध. — Adhy. name: B1.3.5 Dni मृत्युशास्त्रानं; B2.3 (also) Dci Dn2 Di.2 मृत्युप्रजापतिसंवादः; B1 प्रजापतिमृत्युसंवादः; D3.5-8 मृत्युसंवादः; D1 युधिष्ठिरविषादः; G3 व्यासयुधिष्ठिरसमागमः. — Adhy. no.: B1.2 Dni D3 G2.5 52; Dci 58; D2 48; T G1.3.4 M 51. — Śloka no.: Dni 58. — B3 reads line 266 twice. — (L. 266) D3.6 S मृत्योः (for मृत्यु). — (L. 267) S (except G2) व्यासं (for वाक्यं). Dni Dr.3 S [उ]त्तरम्; D3 तमथ (for [ए]तमथ). — Before line 268, B Dci Dn2 Di-6.3 G1.3 M2-3 ins. युधिष्ठिर उवाच. — (L. 268) Dni

पूर्वराजर्षयो ब्रह्मन्क्रियन्तो मृत्युना हताः ।

भूय एव तु मां तथैवैवोमिरिमिद्वह्य । [270]

राजर्षीणां पुराणानां समाश्वासय कर्मभिः ।

क्रियत्यो दक्षिणा दत्ताः कैश्च दत्ता महात्मभिः ।

राजर्षिभिः पुण्यकृद्भिस्तद्भवान्प्रवर्ततु मे ।

व्यास उवाच ।

श्रित्यस्य नृपतेः पुत्रः सृज्यो नाम भूमिपः ।

सुसुखाः; Dr. 8 सुखाः; T G2-5 सुखः; G1 M
सुखाः (for सुखः). — (L. 269) B D स्थाने; T
G2-5 पूर्व (for पूर्व-). Di-6 राजन् (for ब्रह्मन्). Dr. 8
अयत्नान् (sic) (for क्रियन्तो). B Dc1 Di-3 अनवाः
सत्यवादिनः (for the post. half). — (L. 270) D2
तथैर्मा (by transp.); S (except G2. 5) मा तथैर्. B3
T G2-5 उपबृंहय; Dc1 सम; Dn1 Dr. 8 अभिवर्धय; D4
परिवृंहय; D6 अनु (for अभि). — (L. 271) D1 om.
(hapl.) from. णां पुराणानां up to राजर्षि (in line 273).
— Dn2 G6 om. line 272. — (L. 272) B2. 3 Dc1
Dn1 D2. 6. 8 G2 क्रियत्यो; D4. 5. 7 G4 क्रियतो (for क्रि-
यत्यो). D5. 5. 6 कैश्चिद्; S (G5 om.) काश्च (for कैश्च).
Dr वद (for दत्ता). — (L. 273) T G1. 2. 4 M1. 2
राजभिः पुण्यकृद्भिस्तु (for the prior half). Dn2 प्रवर्ततु;
D1 'वीहि (for 'वीतु). Dn1 Dr. 8 मां; Dn2 ते (for मे).
— After line 273, S ins.:

व्यास उवाच ।

अन्येऽपि यज्वनां लोका अन्ये चापि तपस्विनाम् ।

क्षमावतां च श्रील्लोकाञ्चूरा गच्छन्ति भारत ।

क्षत्रियस्य तु संग्रामे शत्रुहृत्वा हतस्य वा ।

फलमत्यन्तमित्याहुर्ममशास्त्रविदो जनाः ।

वेदविद्याव्रतस्नाता यज्वानः पुत्रिणश्च ये । [5]

तेभ्यः परार्था यज्वानो यज्वभ्यश्च तनुलजः ।

स वीरो यज्वनो नित्यं क्षत्रियानां जुनिर्गणः ।

लोकाङ्गुण्यतमानिष्टानि विदि विशां पते ।

सर्वेषां नृपसिंहानां शृणु यज्ञानृपोत्तम ।

तानातिक्त्रम्य गच्छन्ति स्वर्गकामास्तनुलजः । [10]

सुषिष्ठिर उवाच ।

सर्वेषां यज्वनां यज्ञं श्रोतुमिच्छामि सुव्रत ।

दक्षिणाश्वानुरूपेभ्यो दत्ता राजर्षिसत्तमैः ।

[(L. 1) G1 M यज्वनां (for यज्वनां). G2 [S] पि
च (by transp.). — (L. 2) G1 M3-5 चाति; M1. 2
चापि (for च श्रील्ल). — (L. 4) M3. 1. 5 (sup. lin.)
विशारदाः (for -विदो जनाः). — (L. 5) G2 क्षत्रियाश्च

सखायौ तस्य चैवोभौ ऋषी नारदपर्वतौ । [275]

तौ कदाचिद्गृहं तस्य प्रविष्टौ तद्विद्वक्ष्या ।

विधिवश्चाचितौ तेन प्रीतौ तत्रोपतुः सुखम् ।

तं कदाचित्सुखासीनं तान्मां सह जुविस्मिता ।

दुहिताभ्यागमत्कन्या सृज्यं वरवर्णिनी ।

नारद उवाच ।

कस्येयं चपलापाङ्गी सर्वलक्षणसंमता । [280]

(for पुत्रिणश्च). — (L. 6) G1 M परार्थाः; G2 'थौ
(for 'थ्या). G1 M3-5 यज्वभ्यश्च; M1. 2 यज्वन्यश्च (for
यज्वभ्यश्च). — (L. 7) M3-5 स वीरो यज्वनोतीत्य (for
the prior half). T G2 क्षत्रियाद् (for 'यान्). G2
M1 अजुनिर् (sic). — (L. 9) G1-4 M नृपर्षणां (for
'सिंहानां). — (L. 10) G1. 2 M यान् (for तान्). G2
स्वर्गपते; G3. 1 'निच्छेत्; M3-5 'मार्ग (for 'कामात्).
— G2 om. the ref. — (L. 11) G1 M सर्वेषां यज्वनां
यज्ञात् (for the prior half). — (L. 12) M1. 2
दक्षिणाश्च (for 'याश्च). M1. 2 अपि; M3-5 अभि- (for
अनु). G1 M1. 2 प्राप्ता (for दत्ता).]

— (L. 274) B1 (before corr.) 3 (marg.) ध्वनस्य;
Dc1 D3 श्वेतस्य; Dn1 D2-5 श्वेतस्य; Dn2 सेव्यस्य;
D1. 2 सितस्य; Dr T G2-5 चैवस्य; M3-5 श्वेतस्य (for
श्वितस्य). D2 संजयो. B Dc1 Dn2 D1. 2-5 नायतः (for
भूमिपः). D2 संजयो नायतः पुरा (for the post. half).
— (L. 275) B2 (marg.) चैवैतात्; Dn1 Dr. 8 चास्तां
द्वौ; D2 द्वे चोभौ; S चाभूताम् (for चैवोभौ). B2. 5 D
(except Dn1 D1. 1) ऋषी पर्वतनारदौ (for the post.
half). — (L. 276) G1 M1. 2 वद् (for तद्). — (L.
277) D5 चार्थितौ; M1. 2 साधितौ (for चाधितौ). Dn1
Dr. 8 प्रीतौ नारदपर्वतौ (for the post. half). — (L.
279) Dn1 Dr चायमत्; M3-5 [अ]प्यन (for [अ]प्यन*).
Dn1 तस्य; Dr. 3 तत्र (for कन्या). Dn1 D2 संजयं; M3
(sup. lin.) पितरं (for सुजयं). Dn1 Dr. 3 सं (Dn1 सं-
जयं वाक्यमन्ववीत्; T 'यं वर्णिनी तदा (for the post. half).
— After line 279, B D ins.:

तथाभिवादितः कन्यामभ्यनन्दयथाविधि ।

तत्सल्लिङ्गमिराशीर्भिरिष्टाभिरभितः स्थिताम् ।

तां निरीक्ष्याम्रवीदायं पर्वतः प्रहसन्निव ।

[(L. 1) Dn2 [अ]भिवादितौ; Dr. 3 चावादितः (for
[अ]भिवा*). Dn1 D2 तथाभिवादिनीं कन्याम् (for the prior
half). Dn2 अभिनन्द (for अभ्यनन्दद्). — (L. 2)
Dr. 3 साल्लिङ्गाभिर. Dc1 Dn1 D1. 2 आशीर्भिर (for आशी-
र्भिर). Dn1 Dr. 3 अभिनन्द च; Dn2 D2 अभितः स्थिता

उताहो भास्विर्कस्य ज्वलनस्य शिखा त्वियम् ।

ह्रीः श्रीः कीर्तिर्धृतिः पुष्टिः सिद्धिश्चन्द्रमसः प्रभा ।

व्यास उवाच ।

एवं ब्रुवाणं देवर्षिं नृपतिः सृज्योऽब्रवीत् ।

ममेयं भगवन्कन्या मत्तो वरमभीप्सति ।

नारदस्त्वब्रवीदेनं देहि मद्यमिमां नृप । [285]

भार्यार्थं सुमहच्छ्रेयः प्राप्तुं चेद्विच्छेदजन्य ।

ददानीत्येव संहृष्टः सृज्यः प्राह नारदम् ।

पर्वतस्तु सुसंकुद्धो नारदं वाक्यमब्रवीत् ।

हृदयेन मया पूर्वं वृतां वै वृतवानसि ।

यस्माद्भुता त्वया विप्र मा गाः स्वर्गं यथेच्छया । [290]

एवमुक्तो नारदस्तं प्रत्युवाचोत्तरं वचः ।

मनोवाग्बुद्धिसंभाषाः सत्यं तोयमथाग्नयः ।

पाणिग्रहणमन्त्राश्च प्रथितं वरलक्षणम् ।

न त्वेषा निश्चिता निष्ठा निष्ठा सप्तपदी स्मृता ।

अनुत्पन्ने च कार्यार्थे मां त्वं व्याहृतवानसि । [295]

तस्मात्त्वमपि न स्वर्गं गमिष्यसि मया विना ।

अन्योन्यमेवं शप्त्वा वै तस्थुस्तत्र तौ तदा ।

(for 'तः स्थिताम्). — (L. 3) D₆ स (for प्र-).]

— B D om. the ref. — (L. 280) D₆ M₆ कन्येयं (for कन्येयं). B D₆ D₁ D₁-3.5-8 चंचलापांगी; T G₂-4 त्वायतापांगी (G₂ 'गा'); G₁ M₆ चायतापांगी (for चपलापांगी). S -संपदा (for -संमता). — (L. 281) S उपा स्विद् (for उताहो). B D₂ भाः स्विद्; D₁ नो स्विद्; D₂ D₄ वा स्विद्; D₆ बास्विद्; D₈ चास्विद्; G₄ का स्विद् (for भास्विद्). D₁ त्विषा; D₅ प्रभा (for शिखा). D₁ D₇ 8 [अ]पि वा; G₁ M₁ 2 स्वयं; M₃ 4 त्विष; M₆ त्विह (for त्वियम्). — (L. 282) B (except B₃) D₆ D₁ 2 श्रीर्हीः (by transp.). G₁ M₁ 2 कृतिर्; M₃ om. (for कीर्तिर्). D₁ D₇ 8 S सिद्धिस्तुष्टिश्च (for पुष्टिः सिद्धिश्च). MSS. om. the ref. — (L. 283) D₄ (before corr. as above) देवर्षिर् (for 'पि'). D₁ D₂ 6 संजयो (for सं). — (L. 284) S वत्सा (for कन्या). D₇ 8 वयं; S वयां (for मत्तो). D₁ D₇ 8 इहंप्सति; D₂ D₅ 6 G₁ M₆ अभीप्सती (for 'प्सति'). — (L. 285) D₂ D₃ 5.6 M₁ 2 एनां (for एनं). D₅ सत्यं (for मद्यम्). D₂ D₃ 5 सुतां (for इमां). T G₂-4 इति (for नृप). — D₃ 6 om. line 286. — (L. 286) T G₁ M₃-5 भार्यार्थं; M₁ 2 'र्थी' (for 'र्थे'). T G₂ 4 त्वं (for सु-). G₂ तेजः (for श्रेयः). D₄ भार्यार्थं समनुश्रेयः (for the prior half). D₂ प्राप्तं. B₁-4 D₆ D₂ D₁ 2.6 G₂ नृप; B₂ (marg.). 5 प्रभो; D₄ पदं (for स्रज). — (L. 287) D₁ D₂ 4.5.7.8 ददामि (for 'नि'). T G₁ 3.4 M₆ सुप्रीतः (for संहृष्टः). G₆ ददामीत्यब्रवीत्प्रातः (for the prior half). D₆ (before corr.) D₁ D₁ 2.7 संजयः; S प्रांजलिः (for स्रजयः). — After line 287, S ins.:

व्यास उवाच ।

एवमुक्ते नृपतिना क्रोधपराङ्मुलेक्षणः ।

— (L. 288) D₁ D₇ 8 च (for तु). D₄ om. सु.

— (L. 289) D₁ D₇ 8 पूर्वं मम हितं विंदन् (D₇ 8 वि-

धन्) (for the prior half). D₁ D₇ 8 भार्या न (for वृतां वै). — (L. 290) D₄ तस्माद् (for यं). D₄ मया. D₅ पूर्वं (for विप्र). D₁ D₇ 8 यस्मात् विवृता पूर्वं (for the prior half). B₂ D₂ D₁-3.5 यथेप्सया (for यथेच्छया). D₁ D₇ 8 तस्मात्स्वर्गं न (D₁ 'स्वर्गात्' यात्य-सि (D₈ 'ति' (for the post. half). — For lines 289-290, S subst.:

पूर्वं ममेमां मनसा विद्धि भार्या वृतामृषे ।

तस्मादवोचस्त्वं तस्मात्स्वर्गमार्गं न गच्छसि ।

[(L. 1) T₁ मयैव; G₁ M₁ 2 मयेयं; M₃-5 मयेमां (for ममेमां). — (L. 2) G₁ M₆ तस्मादवाचरस्तस्मात् (for the prior half).]

— (L. 291) D₁ D₇ 8 त्वसौ राजन् (for नारदस्तं). — (L. 292) D₁ D₇ 8 -संभाषात् (D₇ 'न्'); D₂ -संदत्ता; G₂ -संभाषा; M₁ 2 -संभाष्यं (for 'षा'). B D₆ D₂ D₁-6 दत्ता चोदकपूर्वकं; D₁ D₇ 8 सत्यं नोपम- (D₁ नापि म) या कृतं (for the post. half). — Lines 293-294 = (var.) Manu. 8. 227. — (L. 293) D₂ D₅ 6 -मंत्रश्च. D₁ प्राप्तं (for प्रथितं). B₁ D₁ D₇ 8 S दार- (for वर-). — (L. 294) B₁ D₆ G₆ न त्वेषा; D₆ D₇ 8 नन्वेषा; T G₂-4 न तेषां (for न त्वेषा). D₆ निश्चिता (for निश्चिता). D₁ सा च (for निष्ठा). B₄ सप्तपदे; D₄ G₁ M₆ सप्तपदी. D₅ सतां; D₅ सताः (for स्मृता). T G₂-5 त्वया सा मनसा स्मृता (for the post. half). — (L. 295) D₆ D₅ अनुत्पन्नेव. B₁ 2 (marg.). 3 D₆ भार्यार्थं; B₂ निष्ठार्थं; D₂ कार्यार्थं (for 'र्थे'). D₁ D₇ 8 S एवं विद्वांस्तु (D₁ D₇ 8 'दान्त' मां (T G₂ 4 M₁-8.5 मा) यस्माद् (for the prior half). D₅ मतो; D₆ मा त्वं; S अनु (for मां त्वं). D₁ D₇ 8 अद्यानाच्छप्तवानसि (for the post. half). — (L. 296) D₁ D₇ 8 विना मया (by transp.). — (L. 297) B₁ अन्योक्तम् (for 'यम्'). B₁ एव (for एवं). B₁ 3.5 D₆ (marg. as above) D₁ D₇ 8 G₁ M

सृज्यो ह्यपि वै विप्रान्पानाच्छादनभोजनैः ।
 पुत्रकामः परं शक्त्या यत्नेनोपाचरच्छुचिः ।
 तस्य प्रसन्ना विप्रेन्द्राः कदाचित्पुत्रमीप्सवः । [300]
 तपःस्वाध्यायनिरता वेदवेदाङ्गपारगाः ।
 सहिता नारदं प्राहुर्देह्यस्मै पुत्रमीप्सितम् ।
 तथेत्युक्त्वा द्विजैरुक्तः सृज्यं नारदोऽब्रवीत् ।
 वरं वृणीष्व भद्रं ते यादृशं पुत्रमीप्सितम् ।
 तथोक्तः प्राञ्जली राजा पुत्रं वने गुणान्वितम् । [305]

तावुक्त्वा; T G2-5 उक्त्वा तु (G5 om. तु) (for शब्दा वै). B2 तु (for वै). B1.3.5 Dc1 (marg. as above) जगन्तुः स्वगृहं प्रति; Dn1 Dr.3 S तत्र स (T G2-4 यथा स) कृत-मूपतुः (for the post. half). — (L. 298) Dn2 om. from यो ह्यपि up to चित् (in line 300). D3 अथ सो (for सृज्यो). B4 [s]पि हि तान्; T G2-4 [s]र्षयद्; G1 M1.2 [s]र्षय्यन्; G5 [s]र्षय्यन्; M3-5 [s]र्षय्यन् (for ह्यपि वै). Dn1 Dr.3 तौ विप्रौ (for वै विप्रान्). B2 D1.2.3-6 अथ सोपि नृपो विप्रान्; Dc1 संजयो ह्यपि नृपो विप्रान् (hypermetric) (for the prior half). S खाना-च्छादनभोजनैः (for the post. half). — (L. 299) B3 भक्त्या (for शक्त्या). B2.4 D2 यत्नाच्च; Dn1 Dr.3 कालेन (for यत्नेन). Dc1 D6-8 उपचरत्; T G1-4 M अहरत्; G5 आहारयत् (for उपाचरत्). B5 शिवैः; D5 शनैः (for शुचिः). — (L. 300) S पुत्रदंशिनः (for 'मीप्सवः'). — D4 om. lines 301-303. — (L. 302) S वरम् (for पुत्रम्). Dn2 ईप्सते (for ईप्सितम्). — (L. 303) Dn1 Dr.3 हि देवर्षिः; S द्विजैश्च (G1 M1.2 'स्तु') (for द्विजैरुक्तः). D2.5 संजयं. — After line 303, B D (D4 om.) ins.:

तुभ्यं प्रसन्ना राजर्षे पुत्रमीप्सन्ति ब्राह्मणाः ।

[B2 (marg.) दिस्तिंति; B2 (orig.) इच्छन्ति (for ईप्स-न्ति). D2 वरमीप्सन्ति भूराः (for the post. half).]

— Before line 304, T G3-5 ins. नारदः. — (L. 304) Dn1 Dr.3 ईप्सते; S इच्छति (for ईप्सितम्). — (L. 305) B1 अथोक्तः; Dn2 D5.6 तप्तोक्तः. — (L. 306) Dn1 Dr.3 अनिदितं (for अरिंदमम्). S दर्शनीयमनिदि (M1.2 'तंदि') (for the post. half). — (L. 307) M1.2 यत्र (for यस्य). D5.6 मूत्र- (for मूत्रं). B1.3 Dc1 D3.6 कुंदसे (B3 'स्ता')रो; Dn2 D4 कुंदस्तेदं; S स्तेदं कुंदं (for कुंदः स्तेदश्). — After 307, Dn1 Dr.3 S ins.:

सर्वं भवेत्प्रसादादौ तादृशं तनयं वृणे ।

तथा भविष्यतीत्युक्ते जज्ञे तस्येप्सितः सुतः ।

काञ्चनस्याकरः श्रीमान्प्रायच्छदसु कांक्षितम् ।

यशस्विनं कीर्तिमन्तं तेजस्विनमरिंदमम् ।
 यस्य मूत्रं पुरीषं च कुंदः स्तेदश्च काञ्चनम् ।
 सुवर्णंष्टीविरित्येव तस्य नामाभवत्कृतम् ।
 तस्मिन्वरप्रदानेन प्रवर्धयामिते धने ।
 कारयामास नृपतिः सौवर्णं सर्वमीप्सितम् । [310]
 गृहप्राकारदुर्गाणि ब्राह्मणावसथान्यपि ।
 शय्यासनानि यानानि स्थाली पिठरभाजनम् ।
 तस्य स राज्ञो यद्वैष्णव ब्राह्मणोपस्कराश्च ये ।

रुदतस्तस्य नेत्रान्म्यां वमनः शीवतोऽपि वा ।

मूत्रं स्तेदः पुरीषं च सर्वं भवति काञ्चनम् । [5]

[(L. 1) M3-5 भवत् (for भवेत्). Dn1 Dr.3 G3 त्वप्रसादाद् (for प्रसादादौ). Dn1 Dr.3 पुत्रदंशं वृणोम्यहं (for the post. half). — (L. 2) G2-5 M3-5 उक्त्वा (for उक्ते). Dn1 जातम्; D1 वृणे (for जज्ञे). — (L. 3) Dn1 Dr.3 कांचनः सागरः (for 'नस्याकरः'). G1.2 M1.2.3.5 प्रादाच्च (for प्रायच्छद्). Ms (sup. lin.) कांचनं (for कांक्षितम्). T G3-5 Ms प्र (Ms प्रा)सादाच्च सुकांक्षितः (Ms 'तं') (for the post. half). — (L. 4) T G2-4 अपतत् (for रुदतम्). Dn1 नत्र (for तस्य). D3 रुदि-तस्य च नेत्रान्म्यान् (for the prior half). D1 वमन- (for 'नः'). D2 स्तीवतो; D3 कुं' (for शी'). T G2-4 रुद-तस्तस्य नेत्रां; G1.5 M अपतत्तत्र (G5 'स्य') नेत्रां (Ms कांचनं) (for the post. half). — (L. 5) S पुरीषं स्तेदं (G2-5 'दश्') (for स्तेदः पुरीषं). G1 M1.2 सुवर्णमभवत्तनः (for the post. half).]

— (L. 308) D5 स्वर्णं (for सुवर्णं). B Dc1 Dn2 D1-2.5 एवं (for एव). D1 सुवर्णंष्टीविनं स्तेदं; G5 सुवर्ण-हनमित्येवं (for the prior half). Dn1 Dr.3 तदा; Dn2 D3-5 क्षितौ (for कृतम्). — (L. 309) B2-प्रदाने तु; Dn1 Dr.3-प्रसादेन (for-प्रदानेन). B (B2 marg.) Dc1 D4.6 वर्धयति; Dn2 वर्धयति; D3 प्रवर्धयति (for प्रवर्धति). D3.5 वर्धयत्यमिते धनं; S प्रवृद्धस्त्वमितेर्धनेः (for the post. half). — (L. 310) G2.5 सर्वं सौवर्णं (by transp.). — (L. 311) S-प्रा (T-प्र)साद- (for-प्राकार-). G2-दुर्गाणि (for-दुर्गाणि). Dc1 Dn1 Dr.3 M3.4 च (for [अ]पि). T G2-4 Ms ब्राह्मणावसथानपि (for the post. half). — (L. 312) Dn1 दुर्गाणि; D5 G5 पानानि (for वा'). Dr.3 शिष्यासनानि दुर्गाणि (for the prior half). B1-2.5 D1.2.3.4.7.8 T G1.2 M पीठरः; D3.6 पीठानि; D1 पीठं च (for पिठर-). — (L. 313) B2.3.5 Dn2 D1.2 राक्षोपि; M3-5 राक्षसु (for स राज्ञो). T G M3-5 तद्; M1 त्वद् (for यद्). Dn1 Dr.3 तस्य राज्ञोरोदेदम (for the prior half). T G2-5

सर्वं तत्काञ्चनमयं कालेन परिवर्धितम् ।
 अथ दस्युगणाः श्रुत्वा दृष्ट्वा चैनं तथाविधम् । [315]
 संभूय तस्य नृपतेः समारब्धाश्चिकीर्षितुम् ।
 केचित्तत्राशुवज्राः पुत्रं गृह्णीम वै स्वयम् ।
 सोऽस्याकरः काञ्चनस्य तस्य यत्नं चरामहे ।
 ततस्ते दस्यवो लुब्धाः प्रविश्य नृपतेर्गृहम् ।
 राजपुत्रं ततो जडुः सुवर्णटीविनं बलात् । [320]
 गृह्णीमनुपायज्ञा नयित्वाथ वनं ततः ।
 हत्वा विशस्य नापश्यन्सुलुब्धा वसु किंचन ।
 तस्य प्राणैर्विमुक्तस्य नष्टं तद्वरदं वसु ।

चाभ्यन्तराश्च (for जोपस्काराश्च). G1 M बाह्यं चा (M1 'ह्यमा)-
 स्यन्तरं च यत् (for the post. half). — (L. 315) Gs
 सर्वं (for श्रुत्वा). Ds चैनं; T G1.3.4 M चैव (for
 चैनं). B2 दृष्ट्वा चैवं तथाविधं; Gs दृष्ट्वा चैव तथागतं (for
 the post. half). — (L. 316) Dn1 Dr.8 संभूतं; S
 अशुभं (for संभूय). B1.8-5 Dn1 चिकीर्षितं (for 'र्षितुम्).
 Dn1 Dr.8 समारंभवि (Dn1 'मं चि) कीर्षितं (for the post.
 half). — (L. 317) S कश्चित्तत्राशुवज्राः (for the
 prior half). D2.8 T G2 गृह्णाम (for गृह्णीम). Dn1
 Dr.8 S वयं (for स्वयम्). — (L. 318) B4 यो (for
 सो). T G2-4 [S] स्याकरः; G1 ह्याकरः; M1.2 ह्याकरः
 (for स्याकरः). B2 सुवर्णस्य (for काञ्चनस्य). D1 तत्र
 (for तस्य). Dn2 D4-5 करामहे; D3 च कुर्महे (for चरा-
 महे). B1.8 Dc1 प्रयत्नं करवामहे; B2 तत्र तत्र चरामहे;
 Dn1 Dr.8 तस्य मूलं हरामहे; S तसिन्स्य (Gs 'साय) न्नं तु
 (G2 च) कुर्महे (for the post. half). — (L. 319) S
 प्रविष्टा (for 'इय). — (L. 320) B1.2.5 Dc1 तदा;
 B2.4 तथा (for ततो). — (L. 321) Dn1 Dr.8 ते ह्ये-
 नम्; D4 गृह्णीवम् (for 'नम्). Dn2 अनुपाजन्मुर (for
 'पायज्ञा). B D नीत्वारण्य (Dr.8 'त्वा वन) मचेतसः (for the
 post. half). — (L. 322) Dn1 Dr.8 [अ]पि तस्य; Ds
 विशिष्य (for विशस्य). B D (except Dr.8) च ('for
 न). B Dc1 Dn2 D1-5 लु (D1 ल) ब्धा वसु न किंचन (for
 the post. half). — (L. 323) D4 S विमुक्तस्य (for
 विमु). Ds तु (for तद्). B4 वरजं (for वरदं). Dn1
 Dr.8 न किंचिद्दृश्युर्बहुः; Ds.8 नष्टं चैवामवदुः; S नष्टं
 तत्काञ्चनं प (G1.5 M1.2 व) रं (for the post. half). — (L.
 324) Gs ततो (for तदा). Dn1 Dr.8 हत्वा; S जग्मुस्
 (for जहृत्). S लम्बता (for मूर्खा). Gs विचेतसं (for
 'सः). — (L. 325) T Gs-5 कुष्टाः; G1.2 M रुष्टाः
 (for नष्टाः). D4 हत्वा परमसरंभ्याः (for the prior half).
 D4 वसुः (for सुवि). S कुमारं चाशुतममं (Gs 'तं प्रियं)

दस्यवश्च तदान्योन्यं जहृर्मूर्खा विचेतसः ।
 हत्वा परस्परं नष्टाः कुमारं चाशुतं सुवि । [325]
 असंभाव्यं गता धोरं नरकं दुष्टकारिणः ।
 तं दृष्ट्वा निहतं पुत्रं वरदत्तं महातपाः ।
 विललाप सुदुःखार्तो बहुधा करुणं नृपः ।
 विलपन्तं निशम्याथ पुत्रशोकहतं नृपम् ।
 प्रत्यदृश्यत देवर्षिर्नारदो नृपसंनिधौ । [330]
 उवाच चैनं दुःखात् विलपन्तमचेतसम् ।
 सृज्यं नारदोऽभ्येय तन्निबोध युधिष्ठिर ।
 कामानामवितृप्तस्त्वं सृज्येह मरिष्यसि ।

(for the post. half). — (L. 326) Dn1 Dr.8 Gs
 तदा; G1 M1.2 गतं (for गता). Dn2 सद्यो (for धोरं).
 S मोघ- (for दुष्ट). Dn1 Ds.7.8 G1-3.5 M1.2 चारिणः
 (for -कारिणः). — (L. 327) Ds वरं (for वर-).
 Dr.8 -दानं (for -दत्तं). B2 (marg.) महामनाः; Dn1
 Dr.8 'त्मनाः; G1 'नृपाः; M3-5 'वशाः (for 'तपाः).
 — (L. 328) D4 स (for सु). Gs सृज्यः (for बहुधा).
 Gs M3-5 नृप. — B4 om. line 329. — (L. 329)
 G4 -शोकहतं; Gs -शोकगतं (for 'हतं). — (L. 330)
 M1.2 प्रत्यपश्यत (for 'दृश्यत). B5 D2 तस्य (for नृप-).
 — (L. 331) Dn1 [प]नं सु- (for चैनं). — (L. 332)
 D1.2.1 संजयं (for सृज्यं). Dn1 पुत्रः; Ds [S] र्ततं; S
 यष्ट (for सभ्येय). Dn1 -दर्शनोत्कृष्टं नृपं (for the
 post. half). — After line 332, Dn1 ins.:

उवाच नारदश्चैनं पुत्रं षोडशराजकम् ।

शोकापनोदकेनैतत्तं निबोध युधिष्ठिर ।

while S ins.:

नारद उवाच ।

त्यज शोकं महाराज वैकुण्ठं त्यज बुद्धिमन् ।

न मृतः शोचतो जीवेन्मुक्तो वा जनाधिप ।

त्यज मोहं नृपश्रेष्ठ न शोचन्ति भवद्विधाः ।

धीरो भवान्महाराज ज्ञानबुद्धोऽसि मे मतः ।

[(L. 1) G2 बुद्धिमान् (for 'मन्). — (L. 2) M1.2
 मुक्तः (for मृतः). Gs नराधिप (for जना'). — (L.
 3) Gs M3-5 शोकं (for मोहं). M3-5 मुह्यन्ति (for
 शोचन्ति). T G M1.2 न हि मुह्यन्ति त्वद्विधाः (Gs तत्पराः)
 (for the post. half). — (L. 4). T G1.2 M1.2.4.5
 भव; Ms भवन् (for भवान्).]

— (L. 333) D2 संजय. T Gs मरिष्यसि (for मरि').
 — B2 om. line 334. — (L. 334) Gs र्ते (for

यस्य चैते वयं गेहे उपिता ब्रह्मवादिनः ।

आविक्षितं मरुत्तं च मृतं सृज्य शुभ्रम् । [335]

संवर्तो याजयामास स्पर्धया यं बृहस्पतेः ।

यस्यै राजर्षये प्रादाद्वरं स भगवान्प्रभुः ।

हेमं हिमवतः पादं यियश्चोर्विविधैः सवैः ।

यस्य सेन्द्रा मरुद्गणा बृहस्पतिपुरोगमाः ।

देवा विश्वसृजः सर्वे यजान्हुर्महात्मनः । [340]

यज्ञवाटस्य सौवर्णाः सर्वे चासन्परिच्छदाः ।

यस्य सर्वे तदा ह्यन्नं मनोऽग्निप्रायगं शुचि ।

कामतो बुभुजुर्विप्राः सर्वे चान्नार्थिनो जनाः ।

ययो दधि घृतं क्षौद्रं भक्ष्यं भोज्यं च शोभनम् ।

यस्य यज्ञेषु सर्वेषु वासांस्वामरणानि च । [345]

हंसितान्युपतिष्ठन्ति प्रमृतान्देदपारगान् ।

मरुतः परिवेष्टारो मरुत्स्यामवन्गृहे ।

आविक्षितस्य राजर्षेर्विश्वे देवाः सभासदः ।

यस्य वीर्यवतो राज्ञः सुबृष्टया सत्यसंपदः ।

हविर्भिक्षर्पिता येन सम्यक्कृत्सैर्दिवौकैः । [350]

ऋषीणां च पितॄणां च देवानां सुखजीविनान् ।

ब्रह्मचर्यश्रुतसुतैर्यज्ञेदानेन चानृणः ।

शयनासनयानानि स्वर्णराशीश्च दुस्त्यजाः ।

यस्य). D₁ डैते; T G₂. 1 ते ये; G₁ M ते वै; G₅ येन (for डैते). M₃-5 स्वयं (for वयं). B₅ तस्य दैवत-
वंशेह (for the prior half). B₅ शनायाविक्षितं कृतं;
Dn₁ D₇ तु (D₇ तु) दमाना इहास्महे; Dn₂ D₈-3 किं करि-
ष्यसि (Dn₂ D₈ °ष्यति; D₃ °ष्यति) वै विभो; D₃ सदा-
न्नादा इहास्महे; S अशनादा उपास्महे (for the post. half).
— (L. 335) D₁. 4 T अविक्षितं; D₅ G₁. 3-s M आवि°
(for आवि°). B₁ D₁ D₂. 6 चेन्; D₃ वै (for च).
D₅. 6 संजय (for सृज्य). D₁. 2. 5 S (except M₅) शुभ्रम्:
(for °म). Dn₁ D₄. 7. 8 मृतं शुभ्रम् संजय (for the post.
half). — (L. 336) B₅ संमतो (for संवर्तो). B Dn₂
D₁-6 वै; Dn₁ D₇. 8 स (for वं). D₁ देवाचैव बृहस्पतेः
(for the post. half). — (L. 337) B₁-3 D₁ D₂. 2 धनं
स; Dn₁ D₇. 8 वरं वै; D₃. 6 वरदो; S सुप्रतो (for
वरं स). B₅ प्रतो; S (M₁ sup. lin. as above) भवः
(for प्रभुः). — (L. 338) Dn₁ D₇. 8 हेमे; D₁ हेमः;
G₂ भोमं (for हेमं). D₃ पार्थे; D₇. 8 S पादे (for पादं).
T दिपक्षोर; M₅ (sup. lin. as above) इयक्षोर (for यिय°).
D₂ मखे; D₃. 6 सवैः (for सवैः). — (L. 339) B₁. 3
(marg.) सुरगणा; B₂. 4. 5 Dn₂ D₁. 3-s [अ]मर°; Dn₁
D₇. 8 S सवरणा (for मरुद्गणा). — (L. 340) D₂ पार्थे (for
सर्वे). T G₃-5 M₃-5 आहुर् (for ऊहुर्). B₁. 5 यजं (B₅
यजं) ते च महीप (B₁ °म) ते; B₂-4 D₁ D₁. 3-s यजनाते समा-
सते; Dn₁ D₄. 5. 7. 8 यजनां (D₄. 5 °नं) ते महीपते (Dn₁ D₅
°ते); Dn₂ यजतेयुर्महीपते; G₂ स ज्ञाताहुर्महात्मनः (for
the post. half). — (L. 341) B₅ यज्ञराजस्य सौव-
र्णाः; Dn₁ D₄. 7. 8 G₂-5 यज्ञवाटस्य सौवर्णः (G₂-4 °णाः);
G₁ M °वाटं च सौवर्णं (for the prior half). D₄. 7. 8
वासन्; S चान्ये (for चासन्). — (L. 342) Dn₁ D₇. 8
यस्य संपन्नमप्यन्नं (D₈ om. (hapl.) मप्यन्नं); S उपन्यासेषु
(G₁ M °न) वस्यान्नं (for the prior half). B₁ G₅
[s]मिप्रायकं; D₈ T G₂-4 °प्रायजं (for °प्रायगं). — (L. 343)
S कामं बुभुजिरे विप्राः (for the prior half). D₃

om. सर्वे. D₄ M₃ वात्रार्थिनो; G₄ चान्यार्थिनो; G₅ पाना°
(for चात्रा°). B₄ Dn₁ D₄. 7. 8 T G₂-5 M₃-5 दिवाः
(for जनाः). G₁ M₁. 2 सर्वे चान्ये पृथग्जनाः (for the
post. half). — (L. 344) Dn₂ D₂. 2. 3-5 भक्ष्यं (for
भक्ष्यं). Dn₁ सुशोभनं; Dn₂ च भोजनं (for च शोभनम्).
— (L. 345) Dn₁ चात्रानि; D₃ वासांसि (for सर्वेषु).
B₄ D₄ यस्य सर्वेषु यज्ञेषु (for the prior half). D₃
रत्नानि (for वासांसि). — (L. 346) B₂-5 D₁. 2 उप-
तिष्ठते. B₁. 2 D₂ प्रमृष्टं; B₁. 2 (both marg.) प्रमृष्टं; B₃
प्रमृष्टं; B₄. 5 D₁. 3 प्रमृष्टान्; D₁ Dn₁ प्रमृष्टं; Dn₂
प्रमृष्टान्; D₄ प्रमृष्टं (sic); D₅ प्रविष्टान्; D₇. 8 प्रविष्टान्;
M₃-5 प्रविष्टान् (for प्रस°). Dn₁ D₇. 8 -पारगाः; D₄. 5
-पारगैः (for °गान्). — With lines 347-348, cf. 12.
29. 19. — (L. 347) G₃ om. from मरुतः up to राजः
(in the prior half of line 349). Dn₁ D₄. 7. 8 S
(G₃ om.) [अ]वसन् (for [अ]भवन्). — (L. 348) Dn₁
M₁ अविक्षितस्य; G₄ M₃-5 आ (M₂ अ)वी° (for आवि°).
Dn₁ कृत्सोक्षिर्; D₇. 3 क्षिप्तोक्षिर्; T G₁. 2. 4. 5 M₁. 2
क्षत्ताक्षिर्; M₃-5 यजतो (for राजर्षेर्). — (L. 349) B₅
D₄ तस्य (for यस्य). S (G₃ om.) राजन् (for राजः).
Dn₁ संवृष्टा; D₄ सुष्ट°; D₇. 8 सुवृष्टाः (for सुवृष्ट्या).
B₄ शश्व- (for तस्य-). D₁ -संपदा. — (L. 350) Dn₁
D₇. 8 देवाः (for येन). M₂ धनं (for सम्यक्). Dn₁
D₁. 5 T G₂-5 M₃-5 तृप्ता; Dn₂ D₃ तृप्तेर्; D₂ तृप्तेर्;
D₅ तृप्तेर्; D₇ तृप्ते (for कृत्तेर्). — (L. 351) D₄
D₇. 8 ब्रह्मचर्यं; S उपजीविनां (for सुखजीविनां). — (L. 352) Dn₁
(D₅ °म)क्षेर्; G₂ -युत्पन्नैर्; G₅ -युत्पन्नैव (for -युत्पन्नैर्).
Dn₂ om. from यज्ञे up to इच्छया (in line 354). T
G₃. 4 धर्मेर्; G₂ युतेर् (for यज्ञेर्). G₂ वायुर्; G₅ वा
नृपाः (for चानृणः). B D सर्वदां (D₁ नवैदां; D₅. 6 सर्वदां;
D₇. 8 सर्वे दा)नेश्च सर्वदा (for the post. half). — (L.
353) Dn₁ D₃. 5. 6 -यानानि; D₂ -यानानि (for -यानानि).

तत्सर्वममितं वित्तं दत्त्वा विप्रेभ्य इच्छया ।
 सोऽनुध्यातस्तु शक्रेण प्रजाः कृत्वा निरामयाः । [355]
 श्रद्धधानो जिताल्लोकान्गतः पुण्यदुहोऽक्षयान् ।
 स चेन्ममार सञ्जय चतुर्भद्रतरस्त्वया ।
 पुत्रात्पुण्यतरस्तुभ्यं मा पुत्रमनुतप्यथाः ।
 अयज्जानमदाक्षिण्यमधि शैलेत्युदाहरत् ।

Colophon.

नारद उवाच ।

सुहोत्रं नाम राजानं मृतं सञ्जय शुश्रुम । [360]

Dn1 Dr. 3 -राक्षस (for -राक्षीक्ष). B5 दुस्त्यजान्. B1.
 2. 4 Dc1 Ds. 4. 6 S स्वर्णराक्षी (G2 'शी-; G5 'जी)श्च दुस्त्य-
 जान् (for the post. half). — (L. 354) B3 तं (for
 तत्). Dn1 Dr. 8 अनिशं (for अमितं). Ds इक्ष्यं (for
 वित्तं). B Ds दत्तं (for दत्त्वा). S ईप्सितं (for इच्छया).
 Dn1 Dr. 8 विप्रेभ्यो दत्तमीप्सया (for the post. half).
 — B5 om. 355-357. — (L. 355) Dn1 Dr. 3 सोनुज्ञा-
 तश्च; Dn2 सर्वध्यातस्तु; T G2-5 स्वर्धमानः स; G1. 2 M
 वः स्वर्धमानः (for सोऽनुध्यातस्तु). Ds निरापदः (for 'मयाः).
 — (L. 356) Dn2 श्रद्धा-न. T G2-5 श्रिया विनिजिता-
 ल्लोकान्; G1 M श्रद्धया निजिताल्लोकान् (for the prior
 half). S कामदुहो (G1. 5 'घो) (for पुण्यदुहो). Dn1
 Dr. 8 संपातोसावहा (Ds 'हो)क्षयान् (Dn1 'त) (for the
 post. half). — After line 356, B1-4 D ins.:

सप्रजः सनुपामालः सदारापलवान्धवः ।

यौवनेन सहस्रांश्च मरुतो राज्यमन्वशात् ।

[(L. 1) Ds. 6 -नुपामालाः; D4 -सुतामालाः (for -नुपा).
 Dn1 Dr. 8 ताः प्रजाः सनुपामालाः (for the prior half).
 Dn1 Dr. 1. 3 सदारापलवांधवाः; Ds सदारा मूलवांधवः (for
 the post. half). — (L. 2) Dr. 8 युवा शतं (for
 यौवनेन). Some MSS. मरुतो (for 'तो).]

Lines 357-358 = 12. 29. 21. — (L. 357) D2 संजय.
 — (L. 358) T G2. 3 पुण्यतरं; G4 'तमस्; G5 'तमं
 (for 'तरस्). T G2. 3. 5 Ms (sup. lin. as above)
 मत्वा (for तुभ्यं). Ds अनुतप्यथा (for 'तप्यथाः). — (L.
 359) S (except Gs Ms) अदक्षिण्यम् (for अदा). B
 Dc1 Dr. 6 Gs अभि; Dn2 Dr. 8 अति (for अधि). Dc1
 (by corr.) Gs शैल्य; D1 शैल्य; D3-6 शैल्य (Ds 'व्य);
 D1 शिल; Ds शिल (for शैल्य). B Dc1 Dn2 Dr. 6
 व्याहरन्; Dr. 8 [अ]वाहरं; G2-4 [उ]दाहरन् (for
 'हरत्). Dn1 अभि शिले स व्याहरन् (for the post.
 half). — Colophon. — Sub-parvan : B1 अभिमन्व-

एकवीरमनाष्टप्यमसिन्नगणमर्दनम् ।

यः प्राप्य राज्यं धर्मेण ऋत्विग्ब्रह्मपुरोहितान् ।

अपृच्छदात्मनः श्रेयः पृष्ट्वा तेषां मते स्थितः ।

प्रजानां पालनं धर्मो दानमिज्या द्विपञ्चयः ।

एतत्सुहोत्रो विज्ञाय धर्मेणैच्छद्दानागमम् । [365]

धर्मेणाराधयद्देवान्वाणैः शत्रूञ्जयंस्तथा ।

सर्वाण्यपि च भूतानि स्वगुणैरप्यरञ्जयत् ।

योऽभुङ्क्तेमां वसुमतीं स्लेच्छादविकवजिन्ताम् ।

यस्मै ववर्ष पर्जन्यो हिरण्यं परिवत्सरम् ।

हिरण्योदास्तथा नद्यः सुहोत्रस्य महात्मनः । [370]

वध. — Adhy. name : B (except B5) Dn2 Ds. 6
 षोडशराजि (Ds 'जी)कं; Dn1 D2. 1. 3 षोडशराजकीयं; D1
 G2 षोडशराजकं; T G3 षोडशराजके मरुत्तयश्चकथनं; G1. 4. 5
 M1. 2 षोडशराजके मरुत्तवरितं. — Adhy. no. : B1. 2 Dn1
 G2. 4. 5 53; D2 50; T G1. 3 M 52. — Śloka no. :
 Dn1 54. — Line 360 = (var.) 12. 29. 22^{ab}. — (L.
 360) S (G2 damaged) सुहोत्रं पार्थिवं चापि (for the
 prior half). D2. 5 संजय (for सञ्जय). D2 S (except
 Ms) शुश्रुमः (for 'म). — (L. 361) B1. 4 Dc1 Dn2
 D3-6 अमित्रैराभिवीक्षितं (Dc1 Dn2 Ds. 6 'तुं); B2. 3. 5
 D1. 2 अमरैरभिवी (D1. 2 'पि वी)क्षितुं (B3. 5 'तं); Dn1
 Dr. 8 [अ]प्य (Dn1 'था)मित्रैः परिक्षितं (D1 'क्षतः; Ds 'क्षितः)
 (for the post. half). — (L. 362) Dn2 सर्वान्;
 Ds सर्वान् (for ऋत्विग्). T G M1. 2. 4. 5 -मंत्रि;
 Ms -मंत्र (for -मन्त्र). Dn2 Ds. 5 Gs M1. 2 -पुरोगमान्
 (for 'हितान्). — (L. 363) Dn1 Dr. 8 समानाव्य;
 S संमान्य च (for अपृच्छद्). Gs चैषां (for तेषां).
 — (L. 364) D1. 5 पालने; Ds 'नो (for 'नं).
 Gs द्विषां (for द्विपञ्च). — (L. 365) Dn1 Dr. 8
 धर्माशैः सुधनागमं; Ds om.; S धर्म्यैश्छद्दानागमं (for
 the post. half). — (L. 366) B2-5 Dn2 Ds. 6
 आराधयन्. B5 Ds शत्रु-; Dn2 Ds. 4 शत्रुं (for
 शत्रून्). Dn1 Dr. 8 S अजी (Dn1 'जि)जयत् (for जयं-
 स्तथा). — Ms om. (hapl.) line 367. — (L. 367)
 G1 M1. 2 [ए]व (for [अ]पि). Dc1 Ds. 5 अप्य (D4 'ल-
 रंजयन्; Dn1 वानुरंजयन्; Dr. 8 अनुरंजयत्; S (Ms
 om.) अन्व (for अप्य). — (L. 368) S सो (for
 यो). Ds Ms. 4 मुक्त्वा; Ds मुक्ते (for स्मुक्त्वा). Dn2
 स्लेच्छादविविजितां; G4 'दपि च वजिन्तां (for the post.
 half). — (L. 369) B2 वसिन्; S तस्मै (for वस्मै).
 Dn1 Dr. 8 ववर्षति (for ववर्ष). Ds. 6 प्रति- (for परि-).
 B D (except Dn1 Dr. 8) वत्सरान् (for 'रम्). — (L.

यस्मिन्कूर्मान्कटकान्मत्स्यांश्च विविधान्वहन् ।
कामान्वर्षति पर्जन्यो रूपाणि विविधानि च ।
सौवर्णान्यप्रमेयानि वाप्यश्च क्रोशसंमिताः ।
स तत्र शतसाहस्राक्षकान्मकरकच्छपात् ।
सौवर्णान्पतितान्दृष्ट्वा ततोऽस्सयत वैऽतिथिः । [375]
तत्सुवर्णमपर्यन्तं राजर्षिः कुरुजाङ्गले ।
ईजानो वितते यज्ञे ब्राह्मणेभ्यो ह्यमन्यत ।
सोश्चस्मेधसहस्रेण राजसूयशतेन च ।
पुण्यैः क्षत्रिययज्ञैश्च प्रभूतवरदक्षिणैः ।
काम्यनैमित्तिकाजस्रैरिष्टां गतिमवाप्तवान् । [380]

स चेन्ममार सृज्य चतुर्भद्रतरस्त्वया ।
पुत्रासुप्यतरस्तुभ्यं मा पुत्रमनुतप्यथाः ।
अयज्जानमदाक्षिण्यमधि श्वेत्येत्सुदाहरत् ।

Colophon.

नारद उवाच ।

राजानं पौरवं वीरं मृतं सृज्य शुभ्रम् ।
यः सहस्रं सहस्राणां श्वेतानश्वानवासृजत् । [385]
तत्स्याश्मेधे राजर्षेर्देशादेशास्समेयुषाम् ।
क्षिशाक्षरविधिज्ञानां नासीत्संख्या विपश्चिताम् ।

370) G₁ M₁.s तदा; G₅ ततो (for तथा). — For line 370, B D subst.:

हेरिण्यास्तत्र वाहिन्यः स्रैरिण्यो व्यवहन्पुरा ।

[B₄ partly damaged. Dn₂ Ds. 6 अंबु- (for तत्र). B₁. 3-5 Dc₁ सरितः (for वाहिन्यः). Dn₁ Dr. 3 हिरण्या-
ख्यास्त (D₁. 3 'ण्याता'स्तदा नचो; D₄ हेरण्यांबुवहा नचः; D₅
'नि ह भूतानि (for the prior half). B₁. 3 Dn₂ ह्यम-
वन्; B₅ भगवन्; Dc₁ Ds. 6 खवहन् (for व्य'). B₅
दैरथ्योस्त्ववहन्पुरा; Dn₁ Dr. 3 भूरिण्यो ह्यमवन्पुरा (Dn₁
'त्युनः) (for the post. half).]

— (L. 371) Dr. 3 यसै; G₅ तस्मिन् (for य'). T₁
क्रान्. B Dc₁ Dn₂ D₁. 6 ग्राहान्क (Dn₂ D₁. 6 'इक'कं-
टकांश्चैव; Dn₁ यसै कूर्मान्कटकांश्च (for the prior half).
— Dr om. line 372. — (L. 372) Ds. 3 M₁. 2 कामाद्
(for कामान्). Dn₁ Ds. 3 ववर्ष (for वर्षति). G₁. 5
M₃. 5 कामं ववर्ष पर्जन्यो (for the prior half). G₂ रूप्याणि.
— (L. 373) Ds. 5. 6 चक्रे च; T G₅. 4 को (T₂ को) शशु-
(for च क्रोश). Dn₁ Dr. 3 वाप्यः क्रोशेन संमिताः (Dr om.
संमिताः); Dn₂ वाप्यश्चक्रे स्वसंमिताः; D₄ वाप्यश्चक्रे सुसंगताः;
G₁ M₁. 5 वाप्यः क्रोशसमन्विताः; G₂ वापीः क्रोशशतं मतं; G₅
वाप्यः क्रोशसुनिमित्तं; M₅ (inf. lin.) वाप्यः क्रोशसुसंमिताः
(for the post. half). — (L. 374) G₅ सुपुत्र- (for स
तत्र). G₅ (sup. lin.) तु प्रयुत- (for तत्र शत). B D
सहस्रं वा (Dr. 3 'स्रवा'मनान्कृत्वा (Dn₂ 'व'न् (for the prior
half). B₂ मद्वान् (for नक्रान्). — (L. 375) Ds. 6
सौवर्ण- (for सौवर्णान्). B Dc₁ Dn₂ D₁. 6 विहि (D₅ 'ह')-
तात् (for पति). B Dc₁ Dn₁ D₁. 3 तदा; Dn₂ सदा;
T G₂. 5 मिथः; M₃. 5 [स]तिथिः (sic) (for इतिथिः).
— Lines 376-377 = (var.) 12. 29. 26. — (L. 376)
D₄ सौवर्णम्; S हिरण्यम् (for सुवर्णम्). Dn₁ अपयार्ति (for
'यन्ते). D₁. 7. 8 -जंगले (for -जाङ्गले). — (L. 377)
Dn₁ Dr. 3 ईजानो विविधैर्षज्ञैर् (for the prior half). M₁. 2

[S]भ्यमंहत (sic) (for ह्यमन्यत). — (L. 378) Ds अश-
मेध- (for सोऽश'). D₁ S सहस्राणि (for 'स्रेण). Dn₁
Dr. 3 G₁ M (Ms sup. lin.) वाजपेय- (for राजसूय).
— (L. 379) G₅ -यमैश्च (for -यमैश्च). Dn₂ -लक्षणेः (for
-दक्षिणैः). — (L. 380) Dn₁ Dr. 3 काम्यनैमित्तिका इष्टिः;
Ds 'सिकैर्ष्यैर् (for the prior half). B₅ इष्टा; D₅
इष्टं (for इष्टां). D₁. 5 अवाप्तवान् (for अवाप्तवान्). S
(except M₁. 2) इष्टेष्टा गतिमाप्तवान् (for the post. half).
— (L. 381) Ds वै (for चेन्). D₂ संजय (for सृज्य).
— (L. 382) T G₂. 3 Ms (sup. lin. as above) पुण्य-
तमस् (for 'तरस्'). Dn₁ Dr. 3 वैद (for तुभ्यं). Ds
अनुतप्यथ (for 'तप्यथाः). — (L. 383) S (except G₂
Ms) अदक्षिण्यं (for अदा'). B Dc₁ D₁. 1 अग्निः; Dn₂
अग्निः; T अग्निः; M₂ अग्नि (for अग्नि). Dc₁ D₂ G₂
श्वेतः; Ds. 5 श्वेतः; D₄ श्वेतः; D₅ श्वेतः; Dr श्वितः;
T₂ G₂. 3 श्वेत (for श्वेत). B Dc₁ Dn₂ D₁. 5 व्याहरन्;
Dr अवाहरः; G₅ सुदाहरत् (for उदाहरत्). Dn₁ अग्नि-
श्वितेलवाहरः; Ds अग्निश्वित्वे वा हर (for the post. half).
— Colophon om. in T₂. — Sub-parvan: MSS. अग्नि-
मनुवध. — Adhy. name: B Dc₁ Dn₂ षोडशराजिकं; Dn₁
D₂. 5 षोडशराजकीयं; D₁. 5 G₁ M₁. 2 षोडशराजिकं; T₁
G₂. 5 षोडशराजके सुश्रीवाहात्म्यकथनं; G₅ षोडशराजके सुश्रीव-
चरितं. — Adhy. no.: B₁. 2 Dn₁ D₂ G₂. 5 54; D₂
51; T₁ G₁. 3. 4 M 53. — Sloka no.: Dn₁ 12.
— (L. 384) B₂ नृपं च; Dn₁ S अंगं वै (S च);
Dn₂ Ds. 5. 5 नृपं चेत् (for राजानं). Dr. 3 अंगं वै पौरवं
राजन् (for the prior half). D₂. 5. 7 संजय (for
सृज्य). Dn S (except G₅) युष्मत् (for 'म'). — (L.
385) B₂ Dc₁ D₁. 2. 5 सहस्रं यः (by transp.). G₁
अपासृजत् (for अवा'). — (L. 386) Dn₁ Ds दस्य (for
तस्य). D₁. 2. 4. 5 राजर्षे (for 'र्षे'). D₁ देशादेशात्;
D₄. 6 देश (D₅ 'शे' देशे (for देशादेशात्). B D₂ समी-

वेदविद्याव्रतस्नाता वदान्याः प्रियदर्शनाः ।

सुभक्षाच्छादनगृहाः सुशय्यासनवाहनाः ।

नटनर्तकगन्धर्वैः पूर्णकैर्बर्धमानकैः । [390]

नियोधकैश्च क्रीडन्निस्त्र स परिहर्षिताः ।

यज्ञे यज्ञे यथाकालं दक्षिणाः सोऽत्यकालयत् ।

द्विपा दशसहस्राख्याः प्रमदाः काञ्चनप्रभाः ।

सध्वजाः सपताकाश्च रथा हेममयास्थाः ।

यः सहस्रं सहस्राणि कन्याहेमविभूषिताः । [395]

धूर्युजाश्चगजारूढाः सगृहक्षेत्रगोशताः ।

शतं शतसहस्राणि स्वर्णमालानथर्षभान् ।

गवां सहस्रानुचरान्दक्षिणा अत्यकालयत् ।

हेमशृङ्गयो रौप्यखुराः सवत्साः कांस्यदोहनाः ।

दासीदासखरोष्ट्राश्च प्रादादजाविकं बहु । [400]

रत्नानां विविधान्कूटान्विविधानन्नपर्वतान् ।

तत्सर्वं वितते यज्ञे दक्षिणा अत्यकालयत् ।

तत्रास्य गाथा गायन्ति ये पुराणविदो जनाः ।

युपां; Dn1 D1.8 समागताः (for समेयुषां). S सर्वे देवाः (G2 वेदाः) समाययुः (for the post. half). — (L. 387) Dn1 D1.7.8 आसीत् (for ना°). Dn1 D1.8 तस्य (for संस्था). — (L. 388) Dn1 D1.8 ते स (for वेद-). D5 स्नातान् (for स्नाता). D1 वदान्याः सत्यमापिणः; D5 न्यान्प्रियदर्शनान् (for the post. half). — (L. 389) B D G1 M1.2 सु (D2 स) भिक्षा (Dn1 भक्ष्या) च्छादन-गृहाः (D5 न्) (for the prior half). T स (for सु-). Dc1 शिक्षासन- (for शस्था°). D4 शय्यासनवासनाः (for the post. half). — (L. 390) D1.2 T G2-4 नर्तन- (for नर्तक-). G5 न नर्तकैश्च गन्धर्वैः (for the prior half). Dn2 D3.5.6 S पुर्वकै (T1 G2 'मे-; M3-6 'नैर्); D4 पूर्वकैर्; D7.3 सपकैर् (for पूर्णकैर्). B4 पूर्णकैर्बर्धमानकैः (for the post. half). — (L. 391) B Dc1 Dn1 D1.2 निलोयोगैश्च; Dn2 D5 संनियोगैश्च; D3.4.6 स (D4 वि-; D5 नि) योगकैश्च (for नियोध°). Dc1 Dn1 क्रीडन्ति; S क्रीडन्ति (for क्रीडन्तिस्). Dn2 D3.5.6 [आ]स; D7.3 [ऊ]युः (for स). S तत्रोपुः परमाचिताः (for the post. half). — D1 om. lines 392-394. — (L. 392) D4.3 तथाकालं; G5 यथाकामं (for कालं). B1 Dc1 Dn D3.5.6 दक्षिणां (for णाः). B5 Dn2 D3.5 सोम्यकाल (B5 'र)यत्; D4.6 सोम्यकल्पयत्; D7.3 चाभ्यकालयत् (for सोऽत्य°). — (L. 393) B5 विप्रा (for द्विपा). D3 चैव (for दश-). D4 द्विपाश्च दशसाहस्राः; D7.8 द्विरदा दशसाह-स्राः; S द्विपान्दशसहस्राख्यान् (T 'ख्यो; M1.2 'ख्यां) (for the prior half). D7.8 प्रमदाः काञ्चनावृताः; S अद (T न द-; M1.2 ह्यद) दाकाञ्चनावृतान् (for the post. half). — (L. 394) S सध्वजान्सपताकांश्च (for the prior half). D7.8 रथा हेमसुकल्पिताः; T G1-4 M1.2 स्वारूढा-न्सायु (G4 'हेम) कल्पितान्; G5 सुवस्त्रान्सायुकल्पितान्; M3.5 सुरूपान्सायुकल्पितान् (for the post. half). — Line 395 = (var.) 12. 29. 29^{ab}. — (L. 395) B4 D3.4.6-8 सह-स्राणां (for णि). S सहस्रं च सहस्राणां (for the post. half). — (L. 396) B1.3 Dc1 Dn1 धू (Dn1 धु) धुजोश्च; B5 संर-क्षाश्च; D1.2 धूर्युजाश्च; D3-6 सुवस्त्राश्च; D7 चतुर्थजः; D8

चातुर्थज- (for धूर्युजाश्च-). S चतुर्थजरारूढाः (for the prior half). B D1.2.3 G5 स्व- (for स-). Dn1 D3 -गृहाः; D3 G5 गृहे (for -गृह-). S -गोशताः (for -गोशताः). — Lines 397-398 = (var.) 12. 29. 30. — (L. 397) D4 सहस्राणां (for णि). B1.2 (marg.) D1.2 4-8 स्वर्णमाली; B2 Dc1 Dn1 मालां; B3-5 Dn2 D3 माला (Dn2 'लि-) (for मालान्). B1.3-5 D महात्मनां; B2 कृतां; T अर्षभान्; G1.2.5 M नरर्षभान् (for अर्षभ°). — (L. 398) D7 गावः; D8 गावः (for गवां). Dn2 D5.6 सहस्रानुचरां; D1.7.3 'नुचरा (for 'नुचरान्). B D दक्षिणाम्. Dn2 D4-6 अभ्यकाल (D4.6 'कल्प)यत्; D3 G5 सोम्य (G5 'त्य)कालयत् (for अत्यकाल°). — D5 om. (hapl.) lines 399-402. — (L. 399) G1 -शृङ्गो; G4 -शृङ्गा; G5 -शृङ्ग्य- (for -शृङ्गयो). D3.7.8 S रूप्यखुराः (for रौप्य°). — (L. 400) Dn2 D1.3.4.6 खरोष्ट्राश्च; D2 सहस्रांश्च; T G2-5 M1.2 -खरोष्ट्रं (for -खरोष्ट्रांश्च). D7.8 G1 M3-5 दासीदासं खरोष्ट्रं च (for the prior half). D7 अजा-विकं; T1 चैवा°; G1.2 M चाजा°; G5 चाप्या° (for आज्ञा°). B4 बहु प्रादादजाविकं; Dn2 प्रादाद्राजाविकं बहु; T2 G4 प्रदाच्च (G1 'चा)*विकं बहु; G3 प्रददा-चाविकं बहु (for the post. half). — (L. 401) B D (D5 om.) रत्नानां (D7.3 भक्ष्याणां) विविधानां च (for the prior half). B D1.2 चात्र- (for अन्न-). Dc1 Dn D3.4.6-8 विविधानाश्चपर्वताः (for the post. half). — (L. 402) B2 D1.2 M1.2 तस्मिन्- (for तत्सर्वं). B Dc1 Dn D1-4.6.7 M1.2 दक्षिणाम्. B1.5 Dn2 D3.4.6 G5 अभ्य (G5 त्वत्य)काल (D4 'र)-यत् (for अत्य°). D3 दक्षिणाकालमत्ययत् (for the post. half). — (L. 403) D5 G1.5 M3-5 तत्र स; D7.3 तथास्य; T2 G2-4 अ (G3.4 त) त्रापि (for तत्रास्य). D4 तत्रास्य गायन्ति च ये (for the prior half). D5 ते (for ये). — After line 403, S ins.:

अङ्गस्य यजमानस्य अपि. विष्णुपदे वयम् ।

अमावादिन्द्रः सोमेन दक्षिणाभिर्द्विजातयः ।

अङ्गस्य यजमानस्य स्वधर्माधिगताः शुभाः ।

गुणोत्तरास्ते कृतवस्तस्यासन्सार्वकामिकाः । [405]

स चेन्ममार सृज्य चतुर्भद्रतरस्त्वया ।

पुत्रापुण्यतरस्तुभ्यं मा पुत्रमनुत्पन्थाः ।

अयज्वानमदाक्षिण्यमधि श्वैलेत्युदाहरत् ।

Colophon.

नारद उवाच ।

शिविमौशीनरं चापि सृष्टं सृज्य शुश्रुम ।

य इमां पृथिवीं सर्वां चर्मवत्पर्यवेष्टयत् । [410]

देवमानुषगन्धर्वाश्चात्यरोचन्त दक्षिणाः ।

[= (var.) 12. 29. 31, 32nd. — (L. 1) Ms. 3 तदा; M₁ तस्य (for अपि). T G₁ 4 परं; G₂ वरं; M₂-5 गिरौ (for वयम्). G₁ M₁ 2 अधि विष्णुपदं गिरि (for the post. half). — (L. 2) G₁ M₁ 2 प्रसर्पकाः (for दिजा-तयः). — (L. 3) G₁ M₁ 2 अरिच्यंत (for अरोचन्त).] — (L. 404) S (G₂ inf. lin. also as above) धर्मानु-गताः (for 'धर्माधि'). D₁ धर्माधिकरता शुभा (for the post. half). — (L. 405) B D₁ D₁ 2 तु (for ते). D₁ 3 कुरवस् (for कृतवस्). T G₂-4 तत्र (for तस्य). D₁ D₁ D₁ 2. 5-8 T G₁ 2 M सर्व- (for सर्व-). D₁ कामकाः; D₂ om.; D₁ 3 S कामदाः (for 'कामिकाः'). — D₂ om. line 406. — (L. 406) D₁ 2 संजय (for सृज्य). D₁ D₁ चतुर्भद्र- (for 'भद्र-'). D₁ तव (for त्वया). — (L. 407) D₂ om. (hapl.) from पुत्रात् up to पुत्रम्. T G₁ 4 पुण्यतमस् (for 'तरस्'). — (L. 408) T G₁ 3-5 M₁ 3 अदक्षिण्यम् (for अदा). B D₁ D₁ D₁ 4. 6-8 अभि; D₁ 2 अति; T अयि (for अपि). D₁ D₁ 2. 6 श्वै (D₁ श्वै) त्व; D₁ 4 श्वैव्य; D₁ 5 चैत्य; D₁ 3 श्वि (D₁ श्वि) त्व; T₂ G₂ 3 श्वैत्य (for श्वैत्य). B D₁ D₁ D₁ 8. 3 व्याहरत् (D₁ 'त्'); D₁ अवाहरत् (for उदा-हरत्). — Colophon om. in D₁. — Sub-parvan : MSS. अभिमन्युवध. — Adhy. name : B₁-4 D₁ D₁ D₁ 6. 6 षोडशराजिकं; D₁ D₁ 2 षोडशराजकीयं; D₁ 3 षोडश-राजकं; T G₁ 3 षोडशराजके अंगचरितं. — Adhy. no. : B₁ 2 D₁ 1 G₂ 5 55; D₂ 52; T G₁ 3 M 54; G₁ 50. — Sloka no. : D₁ 13. — Lines 409-410 = (var.) 12. 29. 35. — (L. 409) D₁ शिनिम् (for शिविम्). D₁ D₁ औशिनरं (for औशी). D₁ 1 संजय (for सृज्य). D₁ 4 सुश्रुम; S शुश्रुमः (for 'म'). D₁ 5. 6 सृष्टं शुश्रुम (D₂ 'त' [sic]) संजय (for the post. half). — (L. 410) D₁ D₁ 3 वर्मवत् (for चर्म). B₁ 2. 4. 5 D₁ D₁ D₁ 3 समवेष्टयत्; D₁ पर्यवेष्टयत्; D₂

साद्रिद्रीपाणववनां रथवेषेण नादयत् ।

स शिविवं रिपुश्रित्यं मुख्यान्निष्पन्नपरनजित् ।

तेन यज्ञैर्बहुविधैरिष्टं पर्याप्तदक्षिणैः ।

स राजा वीर्यवान्भीमानवाप्य वसु पुष्कलम् ।

सर्वमूर्धावसिक्तानां संमतः सोऽभवद्युधि । [415]

अयजन्नाश्रमेधैर्यो विजित्य पृथिवीमिमाम् ।

निरगलैर्बहुफलैर्निष्ककोटिसहस्रदः ।

हस्त्यश्चपशुमिधान्यैर्भृगैर्गोत्राविमिलया ।

विविधैः पृथिवीं पूर्णां शिविब्राह्मणसात्करोत् ।

यावत्यो वर्षतो धारा यावत्यो दिवि तारकाः । [420]

G₁ 4 M₁ 2 परिवेष्टयत् (for परं). — After line 410, D₁ reads line 415. D₁ om. lines 411-412. — (L. 411) D₁ सद्रिद्रीपाणववनां; D₁ 3 साद्रिद्रीपाणववती (for the prior half). — (L. 412) D₁ नाश्रित्यं; D₁ 2 स गिरि (for स शिवि). D₁ 3 सोरिमिर्बहुमन्वि-च्छन्; T G₂-5 स शिविवं (G₁ वशी य) पुष्कलम्; M (except M₁) स शिविवं अन्विच्छन् (sic) (for the prior half). T G₂-5 M₁ 2 मुख्यः सर्व-; M₂ 5 मुदा सर्व- (for मुख्यान्निष्पन्न). D₁ 3 बलात्विनात् (for सपत्नित्व). — (L. 413) D₁ सर्व- (for तेन). D₁ 3 यज्ञै (for यज्ञै). T G₂-4 यज्ञैर्बहुविधैरिष्टं (for the prior half). D₁ 5. 6 इष्टैः; G₂-4 तेन; G₁ इष्टा (for इष्ट). T तेनाप्योत्तदक्षिणैः (for the post. half). — (L. 414) B₁ 3 D₁ D₁ D₁ 3 श्रीमान् (for श्री). T G₁-4 M अविविधं जं (G₁ 4 'स्यज') नानन्यान्; G₁ अविपक्ष जनादन्वाद् (for the prior half). S अवाप (for 'व्य'). — (L. 415) D₁ om. from बलि-क्तानां up to पशुमिधां (in line 418). B D₁ D₁ D₁ 2. 5 G₁ सर्वमूर्धावसिक्तानां (for the prior half). T G₁ 4 धियः (for युधि). — (L. 416) D₁ अवयंश्च (for अव-जन्). D₁ अयजन्नश्रमेधैर्यो (for the prior half). B₁ वद्वधान् (for पृथिवीन्). — (L. 417) B₁ 2 (marg. as above). 3 D₁ D₁ यज्ञवदेर; D₁ 5. 6 अवि (D₁ 'व') च्छ-देर; D₁ 3 महामक्ष्यै (D₁ 'क्षै') र् (for बहुमक्ष्यै). T G₁ निरगलं सराब्ध्यां (G₁ 'थान्'); G₁ M 'ब्रान्सवाख्या' (M₁ [sup. lin.]. 2 'ह्या'न्; G₂ 'लं' स जारुद्धां (for the prior half). D₁ D₁ D₁ 3 सहस्रशः (for 'दः'). B₁ S निष्ककोटि-स (G₁ M 'कोटीः स'; G₂ 5 'कोटि' सहस्रदः (for the post. half). — After line 417, S ins.:

विभर्ति दक्षिणा यत्न गङ्गायाः स्रोत आमुपोत् ।

[G₁ M₁ 3-5 विभक्ता; M₁ (sup. lin.). 2 विक्रान्ति (for विभर्ति). G₁ गङ्गास्रोत (for गङ्गायाः स्रोत).]

तावतीरददद्वा वै शिबिरीशीनरोऽध्वरे ।
 नो यन्तारं धुरस्तस्य कंचिदन्यं प्रजापतिः ।
 भूतं भन्यं भविष्यं वा नाप्यगच्छन्नरोत्तमम् ।
 तस्यासन्विविधा यज्ञाः सर्वकामैः समन्विताः ।
 हेमयूपासनगृहा हेमप्राकारतोरणाः । [425]
 शुचित्वाद्भक्षणानाश्च ब्राह्मणाः प्रयुतायुताः ।
 नानाभक्षोच्चयतटाः पयोदधिमधुहृदाः ।
 तस्यासन्धश्चवाटेयु नद्यः शुभ्रास्त्रपर्वताः ।
 पिबत ज्ञात खादध्वमिति यत्रोच्यते जनैः ।

यस्मै प्रादाद्वरं रुद्रस्तुष्टः पुण्येन कर्मणा । [430]
 अक्षयं ददतो वित्तं श्रद्धा कीर्तिस्तथा क्रियाः ।
 यथोक्तमेव भूतानां प्रियत्वं स्वर्गमुत्तमम् ।
 एतोल्लङ्घ्या वरानिष्टाञ्छिविः काले दिवं गतः ।
 स चेन्ममार सृज्य चतुर्भद्रतरस्त्वया ।
 पुत्रात्पुण्यतरस्तुभ्यं मा पुत्रमनुत्पन्याः । [435]
 अयज्वानमदाक्षिण्यमपि शैत्येयुदाहरत् ।

Colophon.

— (L. 418) B D1. 7. 8 यानैर्; G5 चान्यैर् (for धां).
 T G2-4 इत्यथैवेदुमिवां (G2 'वं')न्यैर् (for the prior half).
 D1. 7 गोजीविमिष् (for गोजां). — (L. 419) B Dc1
 Dn D1-8 विविधा; D7. 8 विजिल (for विविधैः). B2
 (marg. as above). s-8 Dc1 Dn D1-4. 6-8 पुण्या; D8
 रम्या (for पूर्णा). — (L. 420) D1 यावन्तो; D2. 3. 5-8
 T G1. 2 M4. 6 'वल्लो. G5 यावलो वर्षभाराः स (for
 the prior half). D1-3. 5-7 T G1. 2. 5 M3-8 यावलो.
 — After line 420, B D ins.:

यावत्यः सिकता गाक्ष्यो यावन्मेरोर्महोपलाः ।

उदन्वति च यावन्ति रत्नानि प्राणिनोऽपि च ।

[(L. 1) D1-3. 5-8 यावलो. Dn2 यावत्यः सिकता गाक्ष्यो
 (for the prior half). D4 om. from महोपलाः up to
 ध्वरे (in line 421). — D7. 8 om. line 2.]

— With lines 421-423, cf. 12. 29. 37-39. — (L.
 421) T G1. 2. 6 M आददाद्. Dn D3. 6 गावः; D7. 8
 S (except G5) गाः स (for गा वै). T शिविकाशी-
 नरोध्वरे (for the post. half). — (L. 422) D1. 2
 धुरं (for धुरम्). B1 नोषता च धुरं तस्य; B1. 5 नान्-
 गाध्वरं तस्य; Dc1 नोषता धुरिं तस्य; Dn1 नोषतीतं धुरं
 तस्य; Dn2 नोषता स्वां धुरं तस्य; D3. 6 नो गंता च धुरं
 तस्य; D4. 6 नोषतां तां धुरं तस्य; D7 न धंतरं धुरं तस्य;
 D8 न धुत्तरं तस्य कश्चिद्; S नोषता (M3 'त')रं धुरं तस्य (for
 the prior half). B1. 2. 4 Dn2 D3-7 T G3. 8 कश्चिद्;
 D8 om. (for कंचिद्). B1. 4 Dn2 D3-8 अन्यः (for
 अन्यं). D7. 8 प्रजायते; G5 'पति'; M3. 4 प्रजाः प्रति (for
 प्रजापतिः). — (L. 423) Dn2 om. from भन्यं up to
 नाप्य. B2. 3. 6 Dc1 D1. 3 भन्यं वा; D3. 6 भवच्चैव; D7
 भविष्यच्च; D8 'यं च; M3. 4. 8 (inf. lin.) 'प्यद्वा (for
 भविष्यं वा). Dn1 भूतं भवं भविष्यंतं; D5 भूतभन्यमभवच्चैव;
 D6 भूतं भवद्वा भन्यं वा (for the prior half). B1-4 Dc1
 Dn D4-8 नरेश्वराः (B3 Dc1 D3 'रं; Dn D7 'रः')
 (for नरोत्तमम्). D3 अभ्यगच्छन्नरेश्वराः; S दध्व (G1 M1. 2

अप्य-; G5 अभ्य-; M3-6 प्रत्य)गच्छन्नरेश्वरं (G2. 4 'रः') (for
 the post. half). — (L. 425) G1 M1. 2. 4. 5 हेम- (for
 हेम-). — (L. 426) D5-आददाद्- (for-स्वाददाद्-). B Dc1
 Dn1 D1. 2. 5-पानं (for-पानाश्). G5 शुचित्वाद्भक्षणानाश्च (for
 the prior half). — (L. 427) B Dc1 Dn D1-6 नाना-
 भक्ष्यैः (D1. 4 'क्षैः') प्रियकथाः; D7. 8 'भक्ष्याः पयःकुल्याः (for
 the prior half). B Dc1 Dn D1-6 महाहृदाः (for
 मधु). — (L. 429) D7. 8 पिबध्वं (for 'त'). D5 S
 [अ]शीतः; D7 वत (for स्वात). G1 M जनः (for जनैः).
 B D G5 इति यद्रोचते (D7 यत्प्रोचिरे; D8 यत्प्रोचिरे) जनाः
 (D4 G5 'नः') (for the post. half). — (L. 430)
 S तस्यै (for यस्यै). T G M1. 2. 5 वरान् (for वरं). G5
 विप्रस् (for रुद्रस्). Dn2 D3. 5. 6 पुष्टेन (for पुण्येन).
 — (L. 431) D3 ददते; D7. 8 प्रददो; T G3. 4 च ददो
 (for ददतो). D5 चित्रं (for वित्तं). B2 Dc1 Dn1
 शुत्वा (for श्रद्धा). B1-3. 6 Dn D2. 4. 5 क्रिया; D7. 8
 [अ]क्षयाः (D5 'य-') (for क्रियाः). T G1. 3-6 M1. 2
 श्रद्धां की (G5 'द्वाकी')ति ततोव्यं (G1 M1. 2 'थान्य')यां; G5
 श्रद्धां कीर्तिं ततोव्ययं; M3-5 कीर्तिं श्रद्धां ततोव्ययां (for the
 post. half). — D4 om. lines 432-434. — (L. 432)
 S यथार्थम् (for यथोक्तम्). D7 एनद्; D8 एतद् (for एव).
 Dn2 यथोक्तमेव भूतानां (for the prior half). — (L.
 433) Dn2 D3. 6 उच्चान् (for लङ्घ्या). G5 एतानिष्टा-
 न्वरौल्लङ्घ्या (for the prior half). G5 कालवशं (for
 काले दिवं). — D5 om. lines 435-436. — (L. 435)
 G5 पुण्यतमम् (for 'तरस्'). D7 चैव (for तुभ्यं). — (L.
 436) T G M1-3 अदक्षिण्यं (for अदा). B Dc1 Dn1
 D1-4. 6-8 भविः; Dn2 अति; T अयि (for अयि). Dc1
 D1. 2 क्षे (D1 क्षे ल्य); Dn2 सैन्य; D3. 4 शैव्य; D5 शैव;
 D8 चिल; T G2. 3. 5 शैल्य (for शैल). B Dc1 Dn
 D1-4. 6 व्याहरन् (D2. 4 'त'). D7 corrupt; D8 अवाहर
 (for उदाहरन्). — Colophon: Sub-parvan: MSS.
 अभिमन्युवध. — Adhy. name: B Dc1 D4-6 योडशराजिकं;
 Dn1 D2 'राजकीयं; Dn2 D3 'राजियं; D1 'राजकं;

नारद उवाच ।

रामं दाशरथिं चैव मृतं सृज्य शुश्रुम ।
यं प्रजा अन्वमोदन्त पिता पुत्रानिवौरसान् ।
असंख्येया गुणा यस्मिन्नासन्नमिततेजसि ।
यश्चतुर्दशवर्षाणि निदेशात्पितुरच्युतः । [440]
वने वनितया सार्धमवसलक्ष्मणानुगः ।

T G₃ 'राजके शिविचरितं; G₂ शिविचरितं. — *Adhy. no.*: B_{1,2} Dn₁ D₃ G_{2,5} 56; D₂ 53; T G_{1,3,4} M 55. — *Sloka no.*: Dn₁ 15. — (L. 437) Dr T G_{2,5} M₃₋₅ चापि (for चैव). D_{3,5,6} शुश्रुम सृज्य (by transp.). D_{1,2} संजय. D₃ S (except G₂) शुश्रुमः (for 'म). — D₃ om. lines 438-440. — (L. 438) D₂ यः (for यं). B₂ यं प्रजा हनुमोचंति (for the prior half). D_{4,7,8} S मा (T G₂ पि) नापुत्रमिवौरसं (for the post. half). — (L. 440) Dr₃ स चतुर्दश; T G_{2,5} चतुर्दश च (G₅ हि) (for यश्चतुर्दश). D_{4,5,7} निर्देशात् (for निदेश). D₃ अच्युत (for 'तः). — (L. 441) Dr₃ न्यवसल; M_{1,2} अवसल (for अवसल). B D₁ Dn Di-6 लक्ष्मणाग्रजः (for 'नुगः). — D₃ om. lines 442-444. — (L. 442) Dr om. च. M_{1,2} राक्षसं. B_{1,3} D_{1,3,4,5} मनुजर्षभ; Dr S 'जाधिपः. — (L. 443) D₃ च रक्षार्थ; D₄ रक्षणार्थ (for 'णार्थ). S तपस्वि (T G₂ M₁ 'स्त्री) जनरक्षार्थ (for the prior half). — (L. 444) Dn₁ वरः (for नाम). D₄ G₅ रावणो राक्षसेश्वरः; G₂ (marg. as above) 'णो राक्षसाधिपः (for the post. half). — (L. 445) Dn₂ D_{3,5,6} संमोह च; Dr₃ वंचयित्वा; G₃ संमोहानु (for 'होन). D₅ महानुजं (for सहानुजम्). — After line 445, B D ins.:

तमागस्कारिणं रामः पौलस्त्यमजितं परैः ।

[(Dn₂ D₃₋₆ सुरैः (for परैः). Dr om. the post. half.]

While S ins.:

रामो हतां राक्षसेन भार्यां शुत्वा जटायुषः ।
आतुरः शोकसंतप्तोऽगच्छद्रामो हरीश्वरम् ।
तेन रामः सुसंगम्य वानरैश्च महाबलैः ।
आजगामोदयेः पारं सेतुं कृत्वा महर्षिणैः ।
तत्र हत्वा तु पौलस्त्यान्समुद्रं प्रपन्नान्धवान् । [5]
मायाविनं महाघोरं रावणं लोककण्टकम् ।

[(L. 1) T G₂ रामां हतां; G₁ M तामाहतां (for रामो हतां). G₂ शुत्वा रामो (for भार्यां शुत्वा). — (L. 2) G₂₋₅ transp. [s]गच्छद् and रामो. — (L. 3) G₁

जवान च जनस्थाने राक्षसान्मनुजर्षभः ।
तपस्विनां रक्षणार्थं सहस्राणि चतुर्दश ।
तत्रैव वसतस्तस्य रावणो नाम राक्षसः ।
जहार भार्यां वैदेहीं संमोहिनं सहानुजम् । [445]
जवान समरे क्रुद्धः पुरेव प्र्यम्बकोऽन्धकम् ।
सुरासुरैरवध्यं तं देवब्राह्मणकण्टकम् ।

M_{1,2} तु (for सु-). — (L. 5) G_{1,2} M तत्वा (for हत्वा). G₁ M₃₋₅ पौलस्त्यं. G₁ M_{2,5} 'राषभं. — (L. 6) G₁ राक्षसं (for रावणं).]
— T G₂₋₅ om. line 446. — (L. 446) Dr om. from जवान up to चातुः (in the prior half of line 448). — (L. 446) M_{2,3} पुरेव. G_{1,2} M 'देवकोतकः. D₄ मुनीनां बाधकारकं (for the post. half). — (L. 447) M₃₋₅ तु (for तं). — (L. 448) B₂ सु- (for स). G₂ समरे रावणं रणे (for the post. half). — After line 448, B D ins.:

स प्रजानुग्रहं कृत्वा त्रिदशैरभिपूजितः ।

व्याप्य कृत्वा जगत्प्रीत्यां सुरार्पणमस्तुतः ।

[(L. 1) D₂ अपि (for अभि-). — (L. 2) Dn₁ कृत्वा (for कृत्वां). D_{1,2} 'सेवितः (for 'सकृतः).]

— On the other hand S ins. after line 448:

हत्वा तत्र रिपुं संख्ये भार्यया सह संगतः ।
लङ्केश्वरं च चक्रे स धर्मज्ञं तं विभीषणम् ।
भार्यया सह संयुक्तस्ततो वानरसेनया ।
अयोध्यामागतो वीरः पुण्यकेण विराजता ।
तत्र राजन्प्रहृष्टः सन्नयोध्यायां महाबलाः । [5]
मादूर्ववस्यान्सचिबान्त्विजः सपुरोहितान् ।
शुश्रूषमाणः सततं मन्त्रिमिश्रानभिपूजितः ।
विसृज्य हरिराजानं हनुमन्तं सहास्रदम् ।
भ्रातरं भरतं वीरं शत्रुघ्नं चैव लक्ष्मणम् ।
पूजयन्परया प्रीत्या वैदेह्या चाभिपूजितः । [10]
दशवर्षसहस्राणि दशवर्षशतानि च ।
चतुःसागरपर्यन्तान् पृथिवीमन्वशासत ।
अश्वमेधशतैरजि क्रतुमिर्मूर्तिदक्षिणैः ।
यश्च विप्रप्रसादिनं सर्वान्कामानवाप्स्य च ।

[(L. 1) T₁ G_{1,2} M संखे. — (L. 2) G₂ [s]व (for स). G₂₋₅ स च लङ्केश्वरं चक्रे (for the prior half). G₂₋₅ धर्मोत्तमानं (for धर्मज्ञं तं). — G₄ om. lines 3-6. — (L. 3) G₁ संयुक्तम् (for संयुक्त). — (L. 5) M राजा (for राजन्). G_{2,5} प्रविष्टः (for

जवान स महाबाहुः पौलस्त्यं सगणं रणे ।
 संप्राप्य विविधद्राज्यं सर्वभूतानुकम्पकः ।
 आजहार महायज्ञं प्रजा धर्मेण पालयन् । [450]
 निरर्गलं सजारूढ्यमश्वमेधशतं विभुः ।
 आजहार सुरेशस्य हविषा सुदमावहन् ।
 अन्यैश्च विविधैर्यज्ञैरीजे बहुगुणैर्नृपः ।
 क्षुत्पिपासेऽजयद्रामः सर्वरोगांश्च देहिनाम् ।

सततं गुणसंपन्नो दीप्यमानः स्वतेजसा । [455]
 अति सर्वाणि भूतानि रामो दाशरथिर्बभौ ।
 ऋषीणां देवतानां च मानुषाणां च सर्वशः ।
 पृथिव्यां सहवासोऽभूद्रामे राज्यं प्रशासति ।
 नाहीयत तदा प्राणः प्राणिनां न तदन्यथा ।
 प्राणापानसमानाश्च रामे राज्यं प्रशासति । [460]
 दीर्घायुषः प्रजाः सर्वा युवा न त्रियते तदा ।

प्रहृष्टः). T G₁ M स (for सन्). — (L. 6) G₁ M_{1.2} भ्रातृन् (for मातृन्). G₂ वयस्याः. G₁ M आचार्यस्त्रिक्; G₂ ऋत्विग्भिः स- (for ऋत्विजः स-). — (L. 7) G₂ मंत्रिभिः सह राघवः (for the post. half). — (L. 8) M₃₋₅ आगतं (for अङ्गदम्). — (L. 9) M_{1.2} पितरं (for मरतं). G M च स- (for चैव). — (L. 10) G₂ मत्स्या (for प्रीत्या). T G₂ चापि. — (L. 12) G₂ महीं रक्षन्महाबलः (for the post. half). — (L. 14) G_{1.2} M अवाप्तवान् (for 'प्य च').]

— (L. 449) B Dn₁ D_{1.2.5.7.8} स (for सं-). B_{1.2} (marg.). 3.5 Dc₁ Dn₁ D_{1.2} विविधं (for विविधद्). M_{3.4} राजा (for राज्यं). G₂ स रामोधारयद्राज्यं (for the prior half). Dn₁ D_{4.7.8} T G₂₋₅ M₃₋₅ सर्वभूतानुकम्पनः (for the post. half). — Dn₃ om. lines 450-452. D₇ repeats line 450 after line 451. — (L. 450) D₇ (both times). 8 महायज्ञैः. S सर्वेद्वी (G₁ M 'वीन्द्रो-). पानवप्यन् (for the prior half). — (L. 451) B₁ (marg.) सर्वरथम्; D₁ सजारूढ्यम्; D₂ स राजा तु; D₃ स जातुकम् (sio); D_{4.5} सजारूढ्याम्; D₆ समारूढ्यम् (for सजारूढ्यम्). B₁ Dc₁ Dn₁ D₇ निरर्गलान्सजारूढ्या (Dc₁ Dn₁ 'प्यान्; D₈ 'लान्सदा यज्ञान्; T G_{3.4} स निरर्गल (G_{3.4} 'ल) जं मुख्यम्; G₁ स निरर्गलकान्मोहाख्यानं; G₂ यो नाम बहुलं मुख्यम्; G₅ स निरर्गलजान्मुख्यानं; M_{1.2} स निरर्गलकान्मुख्यानं; M₃₋₅ निरर्गलं (M₃ 'लं) सजारूढ्याम् (for the prior half). G₅ अश्वमेधं (for 'मेध-). D_{7.8} सुवि; S प्रभुः (for विभुः). B₁ अश्वमेधं सदा सुवि; D₂ 'मेधे वृद्धं विभुः (for the post. half). — (L. 452) D₇ om. from the prior half up to the prior half of line 453. B₁ स जहार; D₂ आजुहाव (for आजहार). S [अ]मरेशस्य (for सुरे"). B_{1-3.5} आहरन्; D₁ आवहत्. D₄ ह विपादमुदावहन्; T G M_{1.2} हविषाचां च सर्वदा; M₃₋₅ हविषा तुष्टिमादधत् (for the post. half). — (L. 453) Dn₁ यज्ञैश्च (for अन्यैश्च). Dn₁ अत्रैर्; D₂ यज्ञैर् (for इजे). B₅ वृत्तः; D_{1.4} नृपः. D_{7.8} T G₁₋₄ M_{1.2} दक्षिणानु (D₇ 'णाः सु; D₈ 'णाः स; G₁ M_{1.2} 'णान्) एणोदि- (G₂ 'सि) तैः; G₅ दक्षिणा ** णोदितैः; M₃₋₅ दक्षिणान्नयुणो-

त्तैः (for the post. half). — D_{7.8} om. line 454. — (L. 454) S [S] वधीद् (for ऽजयद्). — After the prior half of line 454, S ins.:

सर्वराज्यं प्रशासति ।

आधिमप्यवधीद्रामः

[(L. 1) G₁ M_{1.2} सर्वं राज्यं प्रसीदति; M₃₋₅ सर्वेषां प्राणिनां तदा. — (L. 2) G_{1.2} M आधीन् (for 'धिम्). M₃₋₅ चापि (for अपि).]

— (L. 455) T G_{3.4} समस्त- (for सततं). Dn₂ om. स्व. — (L. 457) B₁ D_{5.7.8} मनुष्याणां (for मानुषाणां). G₅ तेजसा (for सर्वशः). — (L. 458) D_{7.8} समवायो (for सहवासो). — D_{5.7.8} M₃ om. lines 459-460. — (L. 459) D₄ न हीयते (for नाहीयत). B₁ तेजः; Dn₃ प्राणे (for प्राणः). S (M₃ om.) नाही (G_{1.5} M₃ न ही) यत (G₅ 'ति) तदा (G₄ सदा; M₂ तथा) प्राणाः (for the prior half). Dn₂ तु तदन्यथा; D_{4.6} मृतवपथा; G_{1.5} M_{1.2.4.5} (sup. lin.) न तदा (G₁ M_{1.2} 'था) न्यथा (G₅ 'थाः) (for न तदन्यथा). T G₂₋₄ M₅ अपानाः प्राणिनां तथा (for the post. half). — (L. 460) B_{1.2} Dn₁ D₁ -समानश्च; B₂ (marg.) D_{3.6} -समानानां (for 'नश्च). B_{4.5} Dc₁ प्राणोपा (Dc₁ 'णापा) नः समानश्च; Dn₂ D₃ प्राणापानः समानानां (D₂ 'नाश्च); D₄ प्राणापान-समानानां; S प्राणापानौ समा (M₂ तथा) वास्तां (for the prior half). Dn₂ राज्ये (for राज्यं). — After line 460, B Dc₁ Dn D₁₋₈ ins.:

पर्यदीप्यन्त तेजांसि तदनर्थान्श्व नामवन् ।

[Dn₃ D_{3.6} तेजस्वी (for तेजांसि).]

On the other hand, D_{7.8} ins. after line 460:

स्त्रियो निलं हविषवा दीर्घायुष्याश्च मानवाः ।

— (L. 461) D_{7.8} सहस्रवार्षिकाः सर्वे (for the prior half). M_{1.2} तथा (for तदा). T G₂₋₅ युवानो न मृतास्तदा (T₁ G_{2.5} 'था) (for the post. half). — (L. 462) B₅ D_{2.6} देवैश्च; D₈ वेदाश्च (for वेदैश्च). B₂ (marg. 25

वेदैश्चतुर्भिः संप्रीताः प्राप्नुवन्ति दिवौकसः ।
 हृद्यं कथ्यं च विविधं लिप्पूर्तं हुतमेव च ।
 अदंशमशका देशा नष्टव्यालसंरीमृषाः ।
 नाप्सु प्राणभृतां मृत्युर्नाकालं ज्वलनोद्ग्रहत् । [465]
 अधर्मरुचयो लुब्धा मूर्खा वा नाभवंस्तदा ।
 शिष्टेष्टप्राज्ञकर्मणः सर्ववर्णास्तदाभवन् ।
 स्वधामूर्जं च रक्षोभिर्जनस्थाने प्रणाशिते ।
 प्रादाञ्चिहत्य रक्षांसि पितृदेवेभ्य ईश्वरः ।
 सहस्रपुत्राः पुरुषा दशवर्षशतायुषः । [470]
 न च ज्येष्ठाः कनिष्ठेभ्यस्तदा श्राद्धान्यकारयन् ।

श्यामो युवा लोहिताक्षो मत्तमातङ्गविक्रमः ।
 आजानुबाहुः सुभुजः सिंहस्कन्धो महाबलः ।
 दशवर्षसहस्राणि दशवर्षशताणि च ।
 सर्वभूतमनःकान्तो रामो राज्यमकारयत् । [475]
 रामो रामो राम इति प्रजानामभवत्कथा ।
 रामाद्रामं जगदभूद्रामे राज्यं प्रशासति ।
 चतुर्विधाः प्रजा रामः स्वर्गं नीत्वा दिवं गतः ।
 आत्मानं संप्रतिष्ठाप्य राज्यं वंशमिहाधृत्वा ।
 स चेन्ममार्म सृज्य चतुर्भद्रतरस्त्वया । [480]
 पुत्रांस्पुण्यतरस्तुभ्यं मा पुत्रमनुत्पत्तयाः ।

above). 1 Dn2 D3-s S संप्राप्ताः (D1 M3-s 'तान्'); B2 सुप्रीताः (for संप्रीताः). G1 M3-s वक्षन्नागान् (for प्राप्नुवन्ति). G2 दिवं तदा (for दिवौकसः). — (L. 463) B1 D1.8 S विविधत् (for विविधं). Dc1 लिप्पूर्तः; D2 लिप्पूर्तः; S पूर्तानि (for लिप्पूर्तं). Dn2 D4.5 हितम् (for हुतम्). D4 T G3 वा (for च). Dn1 D1.8 अश्नन्ति पितृदेवताः (for the post. half). — Lines 464-465 = (var.) 12. 29. 49. — (L. 464) S (except G2.5) नष्टव्यालः. — (L. 465) D4 om. from the prior half up to the prior half of line 471. B1 D1.8 S प्राणभृतां (for 'भृतां'). D1.8 मृज्यन्; T G2-s मृज्यन्; G1 M मृज्यन् (for मृज्यन्). D2 न कायं; T G M1.2 अकार्यं (G3-s 'वैर') (for अकार्यं). D2 दहनो (for ज्वलनो). B1 Dn1 D2 देहेत् (for सद्देहत्). — (L. 466) G2 transp. लुब्धा and मूर्खा. D1.8 मूढा (for लुब्धा). D1 मनुष्याः; M3-s मूर्खा वै. D2 तथा (for तदा). — (L. 467) D1.8 G2 शिष्टेषु (for 'ष्ट'). B1-3 Dc1 Dn1 D2.6 यक्षः; Dn2 D2 प्रजाः; D2 प्राज्यः; D1.8 पुण्यः; T G M1.2 जुष्टः; M3-s शुभः (for प्राज्ञः). B1.5 D1.7.8 T M4 सर्वं (for सर्वं). — D1 om. lines 468-473. — (L. 468) B1.2.3 (marg.) Dc1 स्वधामूर्जा (B3 'जा'); B3 स्वधामूर्जा; B1 स्वधास्त्राहे; B2 D1.2 स्वधां पूजां; Dn1 स्वधामिष्टां; Dn2 'मिष्ट्यां; D3.5 'मिष्ट्यां; D2 सद्धमिष्ट्यां; D2 स्वधा मूर्जा; G2 (sup. lin.) स्वधामूर्जा; G2 'भूमं (for 'मूर्जं). D2 हि (for च). Dn2 विनाशिते; D2 प्रणाशितैः (for 'ते). — (L. 469) D2 प्रायो (for प्रादान्). D2 प्रापयन्निह वञ्चये (for the prior half). — G1 M1.2 ins. after line 467 : M3-s after line 468 : T G3-s after line 469 :

अप्यत्र गाथा गायन्ति ये पुराणविदो जनाः ।

[G3-s गाथा.]

— (L. 470) D2 दशसहस्रायुषस्तथा (for the post. half).

— (L. 471) S कुर्वते (for [अ]कारयन्). — After line 471, S ins. :

न तत्करा वा व्याधिर्वा विविधोपद्रवाः कश्चित् ।

अनाद्युष्टिनयं चात्र दुर्मिक्षो व्याधयः कश्चित् ।

सर्वं प्रसन्नमेवासीदत्यन्तसुखं सयुद्धम् ।

एवं लोकोऽभवत्सर्वो रामे राज्यं प्रशासति ।

[(L. 1) G1 M3-s व्याजाः; M1.2 राजा (for व्याधिर्). T G2.3 न तत्करमयाः संति (G3 'तो'); G4 न तत्सुरभयाः संतो (for the prior half). G1 M1.2 तथा (for कश्चित्). M3-s उपधा विविधाः कश्चित् (for the post. half). — G2 om. (hapl.) line 2. — (L. 2) G2 चापि; M3 नात्र (for चात्र). — (L. 3) G1 M अत्यन्तं (for अत्यन्तः). — (L. 4) M3-s लोके (for लोको). T M3-s सर्वं; G2 सर्वं (for सर्वो).]

— T G2.3 cont. :

अत्रापि गाथा गायन्ति ये पुराणविदो जनाः ।

[T1 अप्यत्र (for अत्रापि).]

— (L. 472) S गानगानानिवर्षमः (for the post. half). — D2 om. lines 473-474. — (L. 473) Dn2 S (G2 damaged) सुभुजः (for सुभुजः). T G2-4 महाभुजः (for 'बलः). — (L. 475) G2 अपालयत् (for अकारं). — (L. 476) G2 अभवत् (for 'वत्). D1 G3.4 कथाः. D1 प्रजाः समभजन्तयाः; D2 सप्रजाः सभजन्तयाः (for the post. half). — (L. 477) D3.6 रामं; D1.8 T G3-s M रामः; G1 रामो (for रामाद्). S भूतं (for रामं). D2 रामवद्रामं जगदभूद् (hypermetric) (for the prior half). — (L. 478) Dn2 D2 राजन् (for रामः). D2 सर्वान् (for सर्वं). D1.8 तु वत्सलः (for दिवं गतः). — (L. 479) B1.2 (marg.) Dc1 Dn1 आत्मनः सं; Dn2 D3.5 'त्मानं च (Dn2 सं); D1 आत्मश्रेष्ठाः; D2 आत्मश्रेष्ठः; S आत्मश्रेष्ठा (for आत्मानं सं).

अयञ्जानमदाक्षिण्यमभि शैत्येतुदाहरत् ।

Colophon.

नारद उवाच ।

भगीरथं च राजानं मृतं सृजय शुश्रुम ।

येन भागीरथी गङ्गा चयनैः काञ्चनैश्चिता ।

यः सहस्रं सहस्राणां कन्या हेमविभूषिताः । [485]

राजश्च राजपुत्राश्च ब्राह्मणेभ्यो ह्यमन्यत ।

S राजवंशान् (for 'वंशम्'). Dr. 8 राजानः (D₈ 'ज्ञः सं-')
स्याप्य चाप्यथ (for the post. half). — (L. 480) D₂
संजय. D₃ तथा (for तया). — (L. 481) G₄ पुण्यतमस्
(for 'तरस्'). B₅ om. from पुत्र up to तुदाहरत् (in
line 482). D₁ अनुतप्यथा. — (L. 482) D₆ T
G₁. 3-5 M₁-4 अदक्षिण्यम् (for अदा'). B₁-4 D₁ D₁
D₁. 3-8 अभि; D₂ अति; D₂ एभिस्; T अयि (for
अपि). D₂ सैव्य; D₁. 6 श्वे (D₈ श्वे)य; D₂. 5 चैल्य;
D₃ शैव्य; D₄ शौन्य; D₇ श्रिल्य; D₈ चिल्य; T G₂. 3
शैल्य (for शैल्य). B₁-4 D₁ D₁ D₂-5 व्याहरन् (D₂. 6
'त्'); D₇. 3 अवाहर (for उदाहरत्). — Colophon om. in
B₅ T₁. — *Sub-parvan*: MSS. अभिमन्युवध. — *Adhy.*
name: B₁-4 D₁ D₂ D₃. 4 षोडशराजिकं; D₁ D₂
'राजकीयं'; D₁. 5. 6 'राजकं'; T₂ G₁. 3. 4 M₁. 2 'राजके राम-
चरितं'; G₂ श्रीरामचन्द्रचरितं. — *Adhy. no.*: B₁. 2 D₁
G₂. 5 57; D₂ 53; T₂ G₁. 3. 4 M 56. — *Sloka no.*:
D₁ 26. — Line 483 = 12. 29. 56^{ab}. B₅ om. lines
483-484; B₁ reads the same on marg. — (L.
483) D₁-6 चेद् (for च). D₂ संजय. D₃ S (except
G₂) शुश्रुमः. D₂ D₃. 5. 6 मृतं शुश्रुम संजय (for the
post. half). — After line 483, S ins.:

परित्राणाय पूर्वेषां येन गङ्गावतारिता ।

यस्वेन्द्रो बाहुवीर्येण प्रीतो राज्ञो महात्मनः ।

सोऽश्मेषशतैरीजे समासवरदक्षिणैः ।

हविर्मन्त्राक्षसंपन्नैर्देवानामादपो मुदम् ।

यस्वेन्द्रो विततो यज्ञे सोमं पीत्वा मदोत्कटः । [5]

असुराणां सहस्राणि बहूनि च सुरेश्वरः ।

अजयद्राहुवीर्येण भगवान्लोकपूजितः ।

[(L. 2) G₂ महात्मना. — (L. 3) G₂ अश्वमेध- (for
सोऽश्व). — (L. 4) T G₂ आ (T₂ अ) दधान्; G₁
M आदधन् (for 'धौ'). — G₁. 2. 5 M₁-4 om. lines
5-7.]

— (L. 484) D₆ पुण्या (for येन). D₄ यजनैः (for

सर्वा रथगताः कन्या रथाः सर्वे चतुर्युजः ।

रथे रथे शतं नागाः पश्चिनो हेममालिनः ।

सहस्रमश्वश्चैकैकं गजानां पृष्ठतोऽन्वयुः ।

अश्वे अश्वे शतं गावो गवां पश्चादजाविकम् । [490]

तेनाक्रान्ता जनौघेन दक्षिणा भूयसीर्ददत् ।

उपह्वरेऽतिव्यथिता तस्याङ्गे निपसाद ह ।

तथा भागीरथी गङ्गा उर्वशी चाभवत्पुरा ।

दुहितृत्वं गता राज्ञः पुत्रत्वमगमत्तदा ।

चयनैः). D₅ यन्नाद्या चावनि गता; S (G₂ damaged)
ऋषिभिः सर्वतो वृता (for the post. half). — Line 485
= 12. 29. 58^{ab}. — (L. 485) B₅ om. the prior half.
Dr. 8 सहस्राणि (for 'गां'). B₁ -विभूषणाः (for 'पिताः').
— (L. 486) D₆ राजभ्यो; D₈ राजानो; S राजन्याम्
(M₄ 'न्यो') (for राजश्च). D₁ M₃. 4 -पुत्राश्च; D₅ -पुत्रेभ्यो
(for -पुत्रांश्च). T ह्यमदत्; G₁. 3. 4 ह्यमसत; G₂ ह्यमस्त
च; G₆ [S] मंस्यत; M₁. 2 ह्यमस्यत; M₄ ह्यमस्यतः (for
'न्यत'). — Lines 487-493 = (var.) 12. 29. 59-61.
— (L. 487) D₄. 6 चतुर्युजः (D₈ 'जाः'); D₅. 7. 8 'युजाः'.
— (L. 488) B D₁ D₁ D₁-6 सर्वे वै; G₂. 5 पत्तिनो
(for पश्चिनो). T G₃ -शालिनः (for -मालिनः). — (L.
489) D₁ एकैकः; M₁. 2 'नं' (for एकैकं). Dr. T G₂-5
M₄ हस्ति (T G₂ 'स्ती'नां); D₈ G₁ M₁-3. 5 हस्तिनं (for
गजानां). T G₃ ययुः (for ऽन्वयुः). — (L. 490) S
अश्वे गोसहस्रं तु (for the prior half). B₁. 8 D₁ D₁
D₃. 6 पंच तु; D₄ पंच हि; D₅ पंचम् (for पश्चाद्). S
तथैव च अजाविकं (for the post. half). — (L. 491)
B₄ D₁ D₄. 6-3 G₃. 4 M₃. 5 क्रांता (for [अ]क्रान्ता).
B₂ D₁ D₁ D₃-6 जलौघेन (for जनौ). D₂ दक्षिणा.
B₃ ददौ; B₅ दधत्; D₂ D₂-4. 6 ददत् (for ददत्).
Dr. 8 S दक्षिणाभिश्च भूयसा (Dr. 8 च [also सं in
Dr.] भूरिशः) (for the post. half). — (L. 492)
B₅ (marg.) नदीवाले (for उपह्वरे). D₁ D₁ निवसतम्;
D₂ D₃. 6 च व्यथिता; D₄ व्यथिता सा; D₅ च प्रथिता;
D₃ तिष्ठतश्च (for ऽतिव्यथिता). D₂ D₅ T G₃. 4 अंगे;
D₄ अंते (for अङ्गे). — (L. 493) D₂ तस्य; D₅
तस्याद्; Dr. 8 S ततो (for तथा). D₄ नाम (for गङ्गा).
D₄ गंगा वै; T G₂-5 M₅ (sup. lin. as above) ऊर्ध्वगा
(for उर्वशी). D₄ वा; T G₁-4 M₁. 2. 5 हि; G₅
[अ]पि; M₃. 4. 5 (sup. lin.) [इ]ति (for च). D₁
D₃. 6 तदा (for पुरा). — (L. 494) D₄ राजा; D₅
राजन्. D₄ पुत्रित्वम्; D₅ पितृत्वम् (for पुत्रं). D₂
D₃. 5. 6 अभवत् (for अगमत्). Dr. 8 पुत्रवद्भावतः
स्थिता; S पुत्रि (G₁ M₁-3 पुत्र; G₂ पितृ-; G₅-5 M₅

तत्र गाथां जगुः प्रीता गन्धर्वाः सूर्यवर्चसः । [495]

पितृदेवमनुष्याणां शृण्वतां वल्गुवादिनाम् ।

भगीरथं यजमानमैक्ष्वाकुं भूरिदक्षिणम् ।

गङ्गा समुद्रगा देवी वने पितरमीश्वरम् ।

तस्य सेन्द्रैः सवरुणैर्देवैर्यज्ञः स्वलङ्कृतः ।

सम्यक्परिगृहीतश्च शान्तविघ्नो निरामयः । [500]

यो य इच्छेत विप्रो वै यत्र यत्रात्मनः प्रियम् ।

भगीरथस्तदा प्रीतस्तत्र तत्राददद्दशी ।

नादेयं ब्राह्मणेष्वासीदस्य किञ्चिप्रियं धनम् ।

सोऽपि विप्रप्रसादेन ब्रह्मलोकं गतो नृपः ।

येन याता मल्लमुखे दिशाशाविह पादपाः । [505]

तेनावस्थानुमिच्छन्ति तं गत्वा राजमीश्वरम् ।

स चेन्ममार सृज्य चतुर्भद्रतरस्त्वया ।

पुत्रायुष्यतरस्तुभ्यं मा पुत्रमनुवप्यथाः ।

अयज्वानमदाक्षिण्यमपि शैत्येयुदाहरत् ।

Colophon.

नारद उवाच ।

दिलीपं चेदैलविलं मृतं सृज्य शुश्रुम । [510]

यस्य यज्ञशतेष्वास्त्युतायुतशो द्विजाः ।

पुत्री)वक्षोपवर्ति (G₁ 'धि')ता (for the post. half). — (L. 495) B₂₋₅ D₀₁ D_n D_{1-4,6} तां तु; D₅ तां च (for तत्र). G_{1,8} M गाथा. T G₂₋₄ गंधर्वाप्सरस्तस्या; G₁ M₃₋₅ 'वाप्सरसां गणाः (for the post. half). — (L. 496) B_{1,2,4,6} D_{1,3} वल्गुवादिनः; D_{n2} 'वादिति; D₃₋₅ ब्रह्मवादिनां (for वल्गु). — (L. 497) D₁ व्यजमानन्; D₁ जय'; T G_{3,4} हि यज्वानन्; M₃ याजमानन् (for यज'). D_{1,3,6} T G₃ ऐक्ष्वाकं; D_{1,3} G_{1,2,5} M इक्ष्वाकं (for ऐक्ष्वाकुं). B₁ तेजसम् (for दक्षिणम्). — (L. 499) B_{1,3} (marg.). D₀₁ D_{n1} यस्य (for तस्य). B_{1,5} D_{1,2} सुरगणैर्; B₂₋₄ सवरुणौ. D_{1,3} तस्य सेन्द्रा सवरुणा; S सेन्द्रैः सवरुणैर्देवैर् (for the prior half). D_{1,3} S यस्य य- (T₁ अन्यय)ज्ञाः स्वलङ्कृताः (for the post. half). — (L. 500) D_{n2} D₅₋₈ चापि (for परि). D_{3,6} -गृहीतस्तु; D_{1,3} S 'ताश्च (for 'तश्च). D₁ नरापिपः (for निरामयः). D_{1,3} S शान्तविघ्ना निरामयाः (for the post. half). — (L. 501) D_{n2} D_{3,4,6} यम् (for य). D₂ यो यषदिच्छेद्विप्रो वै; D₅ यथायमिच्छेद्विप्रो वै; D_{1,3} यो यषदिच्छेद्विप्रो वै; S यो यषदिच्छेते विप्रो (for the prior half). T G₂₋₄ M₃₋₅ यच्च यस्य; G₁ M_{1,2} यस्य यच्च; G₅ यच्च यसां (for यत्र यत्र). G₅ मनः (for [अ]त्मनः). — B₅ om. line 502. — (L. 502) D₇ om.; D₃ स राजा धनंनिरतस्य; S (G₅ damaged) तत्तद्भगीरथः प्रादात् (for the prior half). T G_{1,3,4} M अनयो; G₂ damaged; G₅ आत्मनो (for अददत्). D₃ वली; D_{1,6} वली (for वशी). — (L. 503) B₅ D_{1,2,3} ब्राह्मणस्य (for 'जेयु). B D₀₁ D_{n1} D_{1-3,6} यस्य यत्स्यात्; D_{n2} यत्स्यात्तिथि-; D₄ यस्य यस्य; D₅ यषत्स्याति-; D_{1,3} G₄ य (G₄ त)स्य किञ्चित् (for अस्य किं). G₅ प्रयोजनं (for प्रियं धनम्). — (L. 504) D_{1,3} G_{1,5} M यश्च; T G₂₋₄ यच्च (for सोऽपि). D_{n2} G₅ ब्रह्मलोक- (for 'लोकं). B₁ D₁ G₁ M₁₋₃ नृप; M₅ (sup. lin.) वशी (for नृपः). — (L. 505) D_{1,3} M₃₋₅ ये नु (D₃ तु) (for येन). D_{1,4} [अ]नीता; D₆ [अ]नीतो (for याता).

D₁ मल्लमुखौ; S (except G₅) त्वमिमुखा (for मल्लमुखे). B D₀₁ D_n D_{3,5} येन यातो मल्लमुखौ (for the prior half). D_{1,4} त्रिदिवादिह (D₁ 'व'); D₅ दिशाशाविह; D₅ दि- दशादिह; D_{1,3} दिशमपि हि; S दिशमथापि (for दिशा- शाविह). — (L. 506) T G₁₋₄ M आनतास्त्युरिच्छन्म् (T G₃ 'तं'); G₅ अनेत्रस्तस्युरिच्छन्म् (for the prior half). D₁ मत्वा राजन्; D_{1,3} मत्वा गंतुम्; S अन्वा- गंतुम् (for गत्वा राजन्). — (L. 507) D₁ तथा (for त्वया). — (L. 508) G_{4,5} पुण्यतमम् (for 'तरम्). D₅ त्वेय (for तुभ्यं). — (L. 509) D_{n2} आयज्वानम् (for अ'). T G M₁₋₃ अदक्षिण्यम् (for अदा'). B D₀₁ D_{n1} D_{1,3-5} अमि; D_{n2} अमि; D₃ एमिश्च; T अमि (for अमि). D_{2,5} चैल; D_{3,4} शैल्य; D₅ शैवो; D₁ श्विल; D₃ चिल; T G_{2,3} शैल (for शैल). B D₀₁ D_{n1} व्याहरन् (D_{2,4} 'त्'); D_{1,3} [अ]वाहर (for [उ]दाह- रत्). — Colophon. Sub-paran: MSS. अभिमन्युवध. — Adhy. name: B D₀₁ D_{1,3-6} षोडशरात्रिकं; D_{n1} D₁ 'राजकीयं; D_{n2} 'रात्रीयं; T G_{2,3} 'राजके भगीरथ- चरितं. — Adhy. no.: B_{1,2} D_{n1} D₃ G₂ 58; D₂ 54; T G_{1,3,4} M 57; G₅ 59. — Śloka no.: D₀₁ 14; D_{n1} 13. — Line 510 = 12. 29. 64^{ab}. — (L. 510) B₅ चैवैलविलं; D_{n2} चैलविलं तं; D₃ चैदौल्विदुर्; D₅ देवविहितं; D_{1,3} चैवैलविलं; T G_{1,2} M चैव (G₂ M₃₋₅ चापिलविलं (for चापि) राजानं; G_{4,5} चैवैलविलं; G₅ चापिलविलं (for चैदेवैलविलं). D_{3,6} तं दिलीपं चैलविलं (for the prior half). D_{2,5} संजय (for सृज्य). D_{n2} D_{1,3} S शुश्रुमः. D_{2,5} मृतं शुश्रुम संजय (for the post. half). — (L. 511) D_{1,6} अयुतायुतशो द्विजाः (for the post. half). — D₅ om. lines 512-513. — (L. 512) B₄ G₁ तंत्र; D₁ ते च (for तस्य). D_{1,3} T G₂₋₅ M वेदवेदांगतत्त्वज्ञा (for the prior half). G₅ यज्वानो भूरिदक्षिणाः (for the post. half). — After line 512, S ins.:

सच्छन्दाः पुण्यगन्धाश्च सुमसा हेममालिनः ।

तत्त्वज्ञानार्थसंपन्ना यज्वानः पुत्रपौत्रिणः ।
 य इमां वसुसंपूर्णां वसुधां वसुधाधिपः ।
 ईजानो वितते यज्ञे ब्राह्मणेभ्यो ह्यमन्यत ।
 दिलीपस्य च यज्ञेषु कृतः पन्था हिरण्मयः । [515]
 तं धर्म इव कुर्वाणाः सेन्द्रदेवाः समागमन् ।

यस्य कर्माणि भूरीणि कथयन्ति मनीषिणः ।

[G₁. 2. 5 M₁-1 om. line 2.]

— Line 513 = (var.) 12. 29. 65^a. — (L. 513)
 B₁ स (for य). S य (G₅ स) इमां पृथिवीं पूर्णां (G₅
 पूर्वा) (for the prior half). D₈ om. ; G₁ M₁. 2
 वसुभिर् (for 'वा'). D₄. 8 G₅ M₁. 2 वसुधाधिप (D₄ 'पाः').
 — (L. 514) S (G₂ damaged) [s] स्तु (M₁. 2 व्य)-
 पादरत् (for ह्यमन्यत). — After line 514, T G₃. 4
 ins. :

यस्य वै यजमानस्य यज्ञे यज्ञे पुरोहितः ।

सहस्रं वारणान्देमान्द्रक्षिणा अत्यकाल्यत् ।

— Lines 515-517 = (var.) 12. 29. 67^a-68^b. — (L.
 515) G₂ damaged for the prior half. B₁-3. 5 D₂
 D₁-6 तु (for च). B₁ यज्ञेभूत् (for यज्ञेषु). — D₇. 8
 S ins. after line 515 : D₂ after line 516 :

सहस्रं यत्र मातङ्गा गच्छन्वै पर्वतोपमाः ।

सौवर्णं चाभवत्सर्वं सदा परम्भास्तरम् ।

रसानां चाभवत्कुशाः कण्ठद्रवाः समन्ततः ।

सहस्रव्यामा नृपते यूपश्चासन्धिरण्मयाः ।

[T G₂. 4 om. line 1. — (L. 1) G₁. 2. 5 M यस्य
 (for यत्र). D₂ ब्रह्मन्तः ; D₇ 8 गच्छन्ते ; Bom. ed.
 गच्छन्ति (for गच्छन्वै). G₂ गच्छन्वै हेममालिनः (for the
 post. half). — (L. 2) M₁ (orig.) : 2 पूर्व ; M₁ (sup.
 lin.) पूर्ण (for सर्व). G₁. 5 M₃-5 सदः (for सदा).
 — (L. 3) D₂ D₇. 8 चाभवत् (for चाभवन्). D₂
 D₇. 8 मध्या (D₈ 'क्षा') गां चावर्षताः (for the post. half).
 — (L. 4) T G₂. 4 सहस्रसंमिता यूपसः ; G₁ M₁. 2 'सं
 व्यामतो (G₁ 'को') यूप ; G₂ 'स्रस्तिनो यूपसः ; G₅ 'क्षा-
 यामको यूपसः ; M₃-5 'सं व्याममुद्रिद्रो (for the prior
 half). T G₂-5 तस्य. चा (G₅ आ) सन्धिरण्मयाः ; G₁ M₁. 2
 आसीत्तत्र हिरण्मयः ; M₃-5 यूप आसीद्धिरण्मयः (for the
 post. half).]

— D₂ reads lines 516-517 twice. — (L. 516)
 B₁. 3. 4 D₂ D₂ (first time) तं नर्म ; D₂ (second
 time) D₇. 8 ते नर्म ; D₃. 6 तत्कर्म (for तं धर्म). S
 तत्कर्म (G₁ M तं नर्म) बहु कुर्वाणा (for the prior half).

चपालं प्रचपालं च यस्य यूपे हिरण्मये ।

यद्योपा हेमसंछन्ना सत्ताः पथिषु शेरेते ।

तदेतदद्भुतं मन्ये अन्वैर्न सदशं नृपैः ।

यदप्सु युध्यमानस्य चक्रे न परिपेततुः । [520]

राजानं दृढधन्वानं दिलीपं सत्यवादिनम् ।

D₂ (second time) समुच्छ्रयात् ; D₄ समागमत् ; D₅
 समुन्नमं ; D₇. 8 G₁. 5 M समुच्छ्रयन् (for समागमन्). T
 G₂-4 यूप देवाः समुच्छ्रयन् (for the post. half). — (L.
 517) B₁ उल्लुखलं प्रचपाः ; S चपालप्रचपालेषु (G₁ M₃-5
 'ले तु) (for the prior half). D₂ D₇. 8 तस्य ; S
 तस्मिन् (for यस्य). D₁ सुर्धौ (for यूपे). B₁ यूपं चापि
 हिरण्मयं (for the post. half). — After line 517,
 D₂ D₇. 8 S ins. = (var.) 12. 29. 68^a-70^b :

नृत्त्यन्तेऽप्सरसस्तत्र पट्सहस्राणि सप्तधा ।

यत्र बीणां वादयति प्रीत्या विश्वावसुः स्वयम् ।

सर्वभूतान्यमन्यन्त मम वादयतीति तम् ।

इमं दिलीपस्य नृपा यज्ञैर्नान्योऽनुचक्रिरे ।

[(L. 1) S नृत्त्यन्तेऽप्सरसो यत्र (G₁ M₃-5 'स्य') (for the
 prior half). T G₁ M₁. 2 सप्त च (for सप्तधा). — (L.
 2) S अवादयच्च तं (G₁ M₁. 2 य) त्रास्य (for the prior
 half). — (L. 3) S अमोदन्तं (for अमन्यन्त). D₂
 D₇. 8 [अ] यं (for तम्). Bom. ed. राजानं सत्यशीलिनं
 (for the post. half). — (L. 4) T G₁. 3-5 इत्थं ;
 G₂ M इदं (for इमं). S यज्ञे (G₅ 'ज्ञ') (for यज्ञैर्).
 D₂ यं नातुः ; G₁. 8-5 नान्ये तु ; M₁. 2 नान्ये सुः ; M₃-5
 नान्योप (for नान्योऽनु-).]

— Line 518 = (var.) 12. 29. 70^a. — (L. 518)
 T G₂. 4 याम- (for हेम-). B₁-3. 5 D₂ D₂ D₁-6
 रागखां (B₁-3 D₂ D₁ रागधाः ; B₅ वासपां) डवभोज्यैश्च ;
 B₁ वाससा उरुभोज्यैश्च ; G₂ damaged (for the prior
 half). D₂ D₇. 8 महा- ; T G₂. 4 मर्त्याः ; G₂
 damaged (for मत्ताः). — (L. 519) D₅ तदेनं नाहुपं
 मन्ये ; S तदेव चाद्भुतं मन्ये (for the prior half). D₂
 D₇. 8 चान्यैर्. D₂ D₇. 8 S असदृशं (for न स*). D₁
 अन्येन सदृशं नृपः (for the post. half). — (L. 520)
 B₂ D₂ D₇. 8 यत्रास्य ; D₂ D₁. 5 यत्रासुः ; D₁ यदस्य ;
 G₁. 5 M यस्यासु (for यदसु). T G₂. 4. 5 यस्याप्ययुध्य-
 मानस्य (for the prior half). D₄. 5 चक्रौ न ; D₅
 चक्रेण (for चक्रे न). T G₂-5 M₅ (inf. lin.) परिमर्दनं ;
 G₁ M *मज्जतः (for 'पेततुः). — Lines 521-526
 = (var.) 12. 29. 71-73. — (L. 521) B₂ वर- ;
 D₂ D₇. 8 चक्र- ; D₂ राज- ; S चोग्र- (for दृढ-).
 D₁ धन्वानो. D₅ राजानं राजवृत्तीनं (for the prior half).

येऽपश्यन्भूरिदाक्षिण्यं तेऽपि स्वर्गजितो नराः ।

त्रयः शब्दा न जीर्यन्ते खट्वाङ्गस्य निवेशने ।

स्वाध्यायघोषो ज्याघोषः पिबताक्षीत स्वादृत ।

स चेन्ममार सृजय चतुर्भद्रतरस्रया । [525]

पुत्रात्पुण्यतरस्तुभ्यं मा पुत्रमनुत्पद्यथाः ।

अयज्वानमदाक्षिण्यमधि श्वेत्येत्पुदाहरत् ।

Colophon.

नारद उवाच ।

मान्धाता चैयौवनाश्वल्लैलोक्यविजयी मृतः ।

यं देवावधिनौ गर्भादिन्युः पूर्वं चकर्मतुः ।

सृगायां विचरन्नाज्ञा नृपितः क्लान्तवाहनः । [530]

धूमं दृष्ट्वागमत्सत्रं वृषदाभ्यमवाप सः ।

तं दृष्ट्वा युवनाश्वस्य जठरे स्मृतो गतम् ।

गर्भादि जहत्तुर्देवावधिनौ मिषजां वरौ ।

तं दृष्ट्वा पितुरुत्सङ्गे शयानं देववर्षसम् ।

मामेवायं धयस्वमे इति ह स्नाह वासवः । [535]

ततोऽङ्गुलिभ्यो हीन्द्रस्य प्रादुरासीत्पयोऽमृतम् ।

मां धास्यतीति कारुण्याद्यिन्द्रो ह्यन्यकम्पयत् ।

— (L. 522) B1-3.5 Dn Dr.5 S (except G5) दक्षिण्यं (B1-3 Dn2 °जं). B4 ***ति महात्मानं (for the prior half). G5 स्वर्गविदो (for °जितो). B1 G1.5 M जनाः (for नराः). T G2.3 (inf. lin. as above). 4 तेषि स्वर्गमितो गताः (for the post. half). — (L. 523) B5 यत्र; D1.2 पंच; S इमे (for त्रयः). B2 D2 जीर्यति; Dn2 D5 हीर्यते; G1 M शीर्यते (for जीर्यन्ते). B1 (marg. also as above) कट्वाङ्गस्य; D1.5 S (G2 damaged) दिलीपस्य (for खट्वाङ्गस्य). — (L. 524) S (G2 damaged) स्वाध्यायशब्दो ज्याशब्दः (for the prior half). D5 मोदत (for खा). Dn1 Dr.5 पिबतामथ स्वादृतां (for the post. half). — (L. 525) D2 संजय (for सृजय). — (L. 526) T G3.5 पुण्यतमम् (for 'त-रत्'). — D2 om. line 527. — (L. 527) T G1.3-5 M1-4 अदक्षिण्यम् (for अदा). B Dc1 Dn1 D1.3-5.7.8 अभि; Dn2 अति; T अयि (for अयि). Dn1 Dr. 5 धिल; D1 श्वेत्य; D3.4 श्वेत्य; D5 चैल; D8 धिल; T G2.3 श्वेल (for श्वेत्य). B Dc1 Dn2 D1.3-5 व्याहरन् (Dc1 D1 'त'); Dn1 Dr.5 [अ]वाहर (for [उ]दाहरत्). D5 अभिश्वेवोयि व्याहरन् (sic) (for the post. half).

— Colophon: — Sub-parcan: MSS. अभिमन्युवध. — Adhy. name: B Dc1 D1.3-5 षोडशराजिकं; Dn1 D2 षोडशराजिकं; T G3 षोडशराजके दिलीपचरितं. — Adhy. no.: B1.2 Dn1 59; D2 T G1.3-5 M 58. — Sloka no.: Dn1 15. — B1 om. lines 528-532. — (L. 528) B5 यौवनाश्व. B1.2 (marg. as above).3 Dc1 Dn D2-5 मांघातारं (Dn1 'ता वै) यौवनाश्व; D1 'ता वै यौवनाश्वो; D2 'ता यौवनाश्वो वै; Dr 'ता चैव यौवनाश्व; D3 यौवनाश्व मांघाता; T G2-4 मांघाता यौवनाश्व (for the prior half). — After the prior half of line 528, B1-3.5 Dc1 Dn D1-5 ins.:

मृतं सृजय शुश्रुम ।

देवासुरमनुष्याणां.

[(L. 1) Dn1 D1 शुश्रुमः. Dn2 D5 मृतं शुश्रुम संजय; D2 मृतः संजय शुश्रुम. — Dn1 om. line 2.]

B (B1 om.) Dc1 D1-2.1.5 नृपः; Dn2 D4 T G2.4 नृप (for मृतः). Dr.3 त्रैलोक्यवधिनो नृपः (for the post. half). — (L. 529) G1 M1-4.5 (sup. lin.) तं (for यं). Dn1 Dr.5 गर्भे; D5 S गर्भे (for गर्भात्). Dn1 पार्श्वे (for पूर्वे). D2.7.8 S पितुः पार्श्वे (Dr.3 'श्वे नि'; M1.2 'श्वे नि') (G2 'नृ'द्वुः (for the post. half). — (L. 530) Dn2 व्यचरद्; D1.5 विचरद्; G5 विहरन् (for विच). D2 श्रान्तः; T1 श्रान्तः; T2 G M श्रान्त (for क्लान्त). — (L. 531) D3 [आ]गमन् (for 'त'). Dn1 Dr.5 G5 तत्र; D4 छत्रं; D5 सत्रं (for सत्रं). D5 G2.5 पिबच्च; T G2.4 M3-5 पिबेच्च; G1 M1.2 पिबेच्च (for अवाप). — (L. 532) D1.4 तद् (for तं). B2 (marg.) स्रवतां (for स्मृतानां). Dn1 Dr.5 जठरे ऋषिसत्तमो; Dn2 D5 'रे सनुगामवत्; T G3-5 'राद्र' G5 'रे र'विंसनिमः; G1 M3-5 'रे राजसत्तम (G1 'मः); G2 'राद्र'पितृसत्तमाः; M1.2 'राद्र'पितृसत्तमं (for the post. half). — (L. 533) B1-5 Dc1 D1.4 निजहत्तुर्; B4 निजहत्तुर्; B5 निर्वन्मत्तुर्; Dn2 तं जहत्तुर् (for हि जहत्तुर्). Dn1 Dr.5 S गर्भे निरुद्ध (Dn1 'रुद्ध'तुर्देवाव; D2.6 गर्भे जनयितुं देवाव; D5 गर्भे तं जहत्तुर्देवाव (for the prior half). — With lines 534-537, cf. 12. 29. 76-77. — After line 534, B D ins.:

अन्योन्यमनुवन्देवाः कमयं धास्यतीति वै ।

— (L. 535) Dr om. मामेवायं. B2 धास्यतु; D4 *वति; Dr वयानु (for धं). Dn1 वयं त्वंगुष्ठमग्ने तु; Dn2 मामेयं चाश्वनीत्यग्ने; D3 मामयं धास्यतीत्यग्ने; D5 मामयं धास्यतीत्यग्ने; S मामे (G1.2.4 M2.4 नमै; G5 नामे)वायं धयस्वंगम् (G3 'न') (for the prior half). — (L. 536) Dc1 Dn1 D1-6 ततोऽङ्गुलिभ्यो. Dn1 Dr.5 तु (for हि). S देवैर्द्रव्य ततोऽङ्गुलिभ्यो (for the prior half). — After line 536, Dn1 Dr.5 T G2-5 M3-5 ins.:

तदभ्युत्थेन नास्त्रस्य मान्धातेति प्रवक्षिरे ।

तस्मात्स मान्धातेत्येवं नाम तस्याद्भुतं कृतम् ।
 ततस्तु धाराः पयसो घृतस्य च महात्मनः ।
 तस्यास्यै यौवनाश्वस्य पाणिरिन्द्रस्य चाक्षवत् । [540]
 अपिबत्पाणिमिन्द्रस्य स चाप्यह्नाभ्यवर्धत ।
 सोऽभवद्वाद्दशसमो द्वादशाहेन वीर्यवान् ।
 इमां च पृथिवीं कृत्स्नामेकाह्ना स व्यजीजयत् ।
 धर्मात्मा धृतिमान्वीरः सत्यसंधो जितेन्द्रियः ।
 जनमेजयं सुधन्वानं गर्यं पूर्णं बृहद्रथम् । [545]
 असितं चैव रामं च मान्धाता मनुजोऽजयत् ।

उदेति च यतः सूर्यो यत्र च प्रतितिष्ठति ।
 तत्सर्वं यौवनाश्वस्य मान्धातुः क्षेत्रमुच्यते ।
 सोऽश्वमेधशतैरिष्ट्वा राजसूयशतेन च ।
 अददद्देहितान्धान्ब्राह्मणेभ्यो विशां पते । [550]
 हैरण्यान्योजनोत्सेधानायताञ्शतयोजनम् ।
 बहुप्रकारान्सुस्वादून्भक्ष्यभोज्यान्नपर्वतान् ।
 अतिरिक्तं ब्राह्मणेभ्यो भुञ्जानो हीयते जनः ।
 भक्ष्यान्नपाननिचयाः शुशुभुस्त्वन्नपर्वताः ।
 घृतहृदाः सूपपक्का दधिफेना गुडोदकाः । [555]

[Gs नाम्ना च; Ms-8 नामास्य (for नाम्नास्य). Dn1 Dr.8 तं तदातं (Dr.8 'नं' दुधास्यंतं; G2 कवयस्तेन नामास्य (for the prior half). Gs Ms-3 [र]ति (for प्र-). Dr.8 मांघातरिति चक्रिरे (for the post. half).]
 Ds om. lines 537-538. — (L. 537) S धयतु (for धास्यति). Dr.8 om. इति. Dn1 कार्ण्यं (for 'ण्याद्'). Bs Dc1 D1 हनु (Bs 'न'कंपत. Dn1 Dr.8 यदिद्रो हनु-कंपया; S यदि (G1 M 'मि')द्रोप्यन्वकंपत (for the post. half). — (L. 538) G2 partly damaged. Bs om.; Bom. ed. तु (for स). Dn1 Dr.8 G1 M तस्मान्मांघात-रिल्लेवं (G1 M1.2 'व'); D4 मांघातेत्येव तस्मात्स; T Gs-5 तं मांघातायमिल्लेवं (Gs 'व') (for the prior half). S [अ]भवत् (for [अ]भुत्तं). B1-3.5 Dc1 नामास्य भुवि वि-भुत्तं (for the post. half). — Lines 539-544 = (var.) 12. 29. 78-80. — (L. 539) B1 च; Ds सु; T Gs.4 स (for तु). Bs Ds T1 Gs.4 धारां; Dc1 Dn2 D1.2.5 T2 G2 धारा (for धाराः). Dn1 Dr.8 सुतास्तस्य (for घृतस्य च). — (L. 540) G1 M1.2 तस्य चास्येष्टतरसाः (for the prior half). Bs चाभवत्; Dn1 Dr.8 प्राप्त (Dr.8 'अ')वत्; D2 चाश्वयत्; Ds.6 चाश्ववत्; D4 वाश्ववत्; T2 चासुवत्; Gs चाद्र' (for चाक्ष'). Ds पाणिरिन्द्रेण भाषितः (for the post. half). — (L. 541) S स पिबन् (Gs 'त्' (for अपिबत्). B2 समां सघो; D1.2.5 स मासाद् (for स चाप्याह). Dn1 Dr.8 व्यवर्धत (for [अ]भ्य'). B1.3 Dc1 समाः सघो (Bs 'दा' व्यवर्धत; Bs Dn2 Ds स मासाद्भ्यवर्धत; D4 तमासाच व्यवर्धत; Ds समासाच विवर्धत; T G2-4 सम (G2.4 'मा' महा च वर्धते; G1.5 M समामहा व्य (G1 M1.2 'ह्राभि')वर्धते (for the post. half). — (L. 542) Dc1 Dn1 D1.4-1 वादशसमो; M1.2 द्वादशसमा (for 'समो). — (L. 543) B4 यः (for च). B2 (marg.) सं-; Dn Ds-8 [अ]ती (for स). Ds व्यजयेत् (sic). B1 एकाह्ना व्यजयद्वली; S 'ह्राप्य' (G1.5 M1-4 'हा व्य'जयश्च सः (for the post. half). — Ds om. (hapl.) lines 544-546. — (L. 545) Dr जन्मेजयं. D1

5-1 पूर्णं (for पूर्णं). — (L. 546) B4 damaged; Ds अशितं; Ds असितं (for 'तं'). B2 (marg. also as above) S नामागं; Dn Ds.8-8 नागं (Dr.8 'मं' च (for रामं च). Bom. ed. असितं च नृगं चैव (for the prior half). B1 G2 मानुषो (G2 'पं'); B2.3 Dc1 मनुजान्; Dn1 Dr.8 सानुगान्; T Gs-5 मानुषान्; M3-5 धनुषा (for मनुजो). Dn1 जयेत् (for सजयत्). Ds मांघाता समजीजयत्; Dn2 Ds.6 मांघाताम (Ds 'त्')नुसंजयत्; G1 M1.2 मांघाता ऋ-जयत्परा (for the post. half). — Lines 547-553 = (var.) 12. 29. 83-85. — (L. 547) T G M1.2 याव-त्सूर्यं उदेति स (G1.5 'तिष्यद्'); M3-5 उदयादेति यः स (M4 यत्सु; Ms यं स)यो (for the prior half). Dn1 Dr.8 यत्र वा; T G M1.2 यावच्च (for यत्र च). Gs प्रतितप्यते (for 'तिष्ठति). — (L. 548) D1 सर्वं तद् (by transp.); Ms.4 तं सर्वं. — (L. 549) T G M3-5 -शतेन (for -शतेर). Dn2 Ds-6 वाजपेय- (for राजसूय). B4 -शतेस्तथा (for -शतेन च). — (L. 550) S (except Gs) अददाद्. B Dc1 Dn D1.3.4.6-8 मत्स्यान् (for अश्वान्). D2 अददाद्देहितान्वत्सान् (for the prior half). T2 G1.3-5 M1.2 विशां पतिः. — (L. 551) Dn1 Dr.8 हैमाहु (Dn1 'त्री')प्यान् (for हैरण्यान्). B4 S दश- (for शत). B1.2 (marg. as above).s Dc1 Dn1 D1.7.8 -योजनान्. — (L. 552) Dc1 Ds सुखादान्; Ds सुखदान्; Ds स्वादूश्च (for सुस्वादून्). Ds बहु-प्रकारं सुखादं; Dr 'राः सुखदान् (for the prior half). D2.7.3 Gs भक्ष- (for भक्ष्य-). Dr -पर्वताः (for 'तान्). — (L. 553) Bs Ds S अतिरिक्तान्; Dn1 Dr.8 अद-दात्तं; Ds अतिवित्तं (for 'रिक्तं). B1.3.5 Dc1 ब्राह्म-णानां (for 'नेष्यो). B (except B4) Dc1 भुञ्जतां दीयते जनैः; Dn1 Dr.8 भुञ्जते हीतरे जनाः; Dn2 Ds भुञ्जते हियता (D1 'तो')जनाः; D1.2.6 भुञ्जन्नाहीयते जनः (D1 'नैः'); D2.6 भुञ्जतां दीयतां जनैः; S भुञ्जते सेतरे जनाः (G2 प्रजाः) (for the post. half). — (L. 554) Dc1 भक्त्यान्न-; D1.4 भक्षान्न-; D1.5 -निचयाञ्. Dn1 Dr.8

रुरुधुः पर्वताद्भ्यो मधुस्रीरवहाः शुभाः ।

देवासुरा नरा यक्षा गन्धर्वोरगपक्षिणः ।

विप्रास्तत्रागताश्चासन्वेदवेदाङ्गपारगाः ।

ब्राह्मणा ऋषयश्चापि नासंस्तत्राविपश्चितः ।

समुद्रान्तां वसुमतीं वसुपूर्णां तु सर्वतः । [560]

स तां ब्राह्मणसाकृत्वा जगामास्त्वं तदा नृपः ।

गतः पुण्यकृतां लोकान्याप्य स्वयशसा दिशः ।

स चेन्ममार सृज्य चतुर्भद्रतरस्त्वया ।

पुत्रात्पुण्यतरस्तुभ्यं मा पुत्रमनुत्पन्थाः ।

अयज्जानमदाक्षिण्यमधि श्वेत्येत्युदाहरत् । [565]

Colophon.

नारद उवाच ।

ययातिं नाहुषं चैव सृतं सृज्य शुश्रुम ।

राजस्यशतैरिद्धा सोऽश्वमेधशतेन च ।

पुण्डरीकसद्वस्त्रेण वाजपेयशतैस्तथा ।

मक्षा (Dn1 °क्ष्वा) वपर्वताश्चैव; S मक्षा (G2.3 °क्ष्वा) वपान-
निचयान् (for the prior half). Dn1 Dr.3 सु (Dr. शु-
शुभा हि (for शुशुभस्तु). Ds °वर्तान्. Dn2 सुसुमे
स्ववपर्वतान्; S सुसुमीनवपर्वतान् (for the post. half).
— (L. 555) Dn2 वृत्कुल्याः (for वृत्तहृदाः). Dn1
सपकारा; M1.2 °कांश्च (for °यक्षा). Ds वृत्तहृदाम्पर्वकान्
(for the prior half). B1 दधिकुल्याः; D1 °कृदा; G2
°केन (for °केना). Dn1 गुडाचयाः; Dn2 गुलोच्चयान्;
Ds.1.3 गुडोच्चयान् (Dr.3 °याः); S गुडोच्चयाः (for
गुडोदकाः). — (L. 556) Dn1 Dr.3 तानुङ्गः; Ds
रुरुधुः (for रुरुधुः). Dn2 Ds.3.5 पर्वता; D1.6 °तो;
Dr °वान् (for पर्वतान्). S ता ऊ (G5 ताङ्गुः) सर्वतो नद्यो
(for the prior half). S दधि- (for मधु-). Ds शुभान्;
S शिवाः (for शुभाः). — (L. 557) Dn1 Ds.3.5
देवासुर- (for °सुरा). Ds S °राक्षसाः (for °पक्षिणः).
— (L. 559) Ds.6 नासीत् (for नासत्). D1 आसं-
स्तत्र विपश्चिताः; Ds नासीत्तत्र विपश्चितः (for the post-
half). — For lines 558-559, Dn1 Dr.3 subst.:

विप्रवर्या भूतगणास्तस्य यज्ञमुपासते ।

ब्राह्मणा ब्रह्मपुत्राश्च प्राज्ञागुणविपश्चिताः ।

while for lines 558-559, S subst.:

विप्राश्चैवामितगुणा यस्य यज्ञानुपावसन् ।

ब्रह्मणे ब्रह्मपुत्राय प्रादाद्योऽपि विपश्चिते ।

[(L. 2) T G5 ब्राह्मणे.]

— (L. 560) Ds सुभद्रां तां (for समुद्रान्तां). B1.3.5 Dn1
Ds वसुपूर्णा; Ds वसुसंपूर्णा; Ds वसुसंपूर्णा (for वसुमती).
B1 वसुपूर्णा समुद्रान्तां (for the prior half). Dn1
Dr.3 विचारणे; D1.4 च सर्वतः (D1 °शः); T G1-4
M महाम (G2 °शु) तिः; G5 महीपतिः (for तु सर्वतः).
B1.3.5 Dn1 पृथिवीं सर्वतस्तदा; B1 Ds.6 पृथिवीं (B1 °वी
चा) पि सर्वतः; Ds वसुपूर्णमपि सर्वतः (for the post. half).
Dn2 समुद्रवसुपूर्णान्वसुपूर्णमपि सर्वतः. — (L. 561) Ds.6
उ (for तां). Dn1 Dr.3 S जगाम स्वगृ (S स्वान्गृ) हान्यति

(for the post. half). — After line 561, Dn1 Dr.3
S ins.:

राजा च विविधैर्वैरिद्धा वपशतायुतान् ।

[T G1-4 M हि; G5 [अपि (for च). S इडा वक्षे
(by transp.). Dn1 वपशतायुतं; T G2-5 विविध-
दक्षिणैः; G1 M वपशतान्वहन्.]

— (L. 562) Ds.4 पुण्यकृतान् (for °कृतां). Dn1
Dr.3 प्राप्य पुण्यवतां लो (Dn1 °तान्) लो (Dn1 °तान्); S ततः (G1
M1.2 प्रातः; M2 [sup. lin.]) पुण्यतमाहो (G2.4 °तान्-
लो) कान् (for the prior half). B1.3 Dn1 Ds व्याप्याय;
B2 °तम्; D1 स वाप्य (sic); T G1-4 प्राप्नोति; G5
प्राप्याति; M2-5 व्याप्याति (for व्याप्य स्व-). Dn1 Dr.3
शाश्वतान्मुनहायशः (for the post. half). — (L. 563)
Dr च; Ds वै (for चेन्). Dn1 Ds.6 संजय (for
सृज्य). — (L. 564) T G2-5 पुण्यतमम् (for °तम्).
— Ds om. line 565. — (L. 565) S (except
G2 M2) अदक्षिण्यन्. B Dn1 Dn1 Dr.3 अधि;
Dn2 अति; T अयि (for अधि). Dn1 Dr क्षित्य;
Dn2 T G2.3 श्वेत्य; Ds.4.5 श्वेत्य; Ds चेत्य; Ds
क्षित्य (for श्वेत्य). B Dn1 Dn2 Dr.3-5 व्याहरत्; Dn1
Dr.3 [अ]वाहर (for [उ]वाहरत्). — Colophon. — Sub-
parvan: MSS. अभिमन्युवच. — Adhy. name: B Dn1
Ds.3.5 षोडशराजि (Ds °जी) कं; Dn1 Ds °राजकीयं; Dn2
°राजीयं; D1 °राजकं; T G5 षोडशराजके मांषानुचरितं.
— Adhy. no.: B1.2 Ds T G1.3.4 M 59; Dn1 G2.5
60; D2 54. — Śloka no.: Dn1 20. — B1
G2.5 om. lines 566-587. — Line 566 = 12. 29.
87^{ab}. — (L. 566) S (G2.5 om.) चा (M2-5 अ) पि
(for चैव). D1.5 S (G2.5 om.) शुश्रुमः. Ds.6 सृते
शुश्रुम संजय (for the post. half). — After line 566,
S (G2.5 om.) ins. (= (var.) 12. 29. 87^a-88^a):

य इमां पृथिवीं जित्वा ससुभद्रां सपर्वताम् ।

शम्याः प्रासेन निर्माय वेदीः संनतदक्षिणाः ।

इवानः क्रतुभिः पुण्यैः पर्यगच्छत्प्रदक्षिणम् ।

अतिरात्रसहस्रेण चातुर्मास्यैश्च कामतः ।

अग्निष्टोमैश्च विविधैः सत्रैश्च प्राज्यदक्षिणैः । [570]

अब्राह्मणानां यद्विद्वत् पृथिव्यामस्ति किञ्चन ।

तत्सर्वं परिसंख्याय ततो ब्राह्मणसात्करोत् ।

व्यूढे देवासुरे युद्धे कृत्वा देवसहायताम् ।

चतुर्धा व्यभजत्सर्वां चतुर्भ्यः पृथिवीमिमाम् ।

यज्ञैर्नानाविधैरिष्टा प्रजामुत्पाद्य चोत्तमाम् । [575]

देवान्यानां चौशनस्यां शर्मिष्ठायां च धर्मतः ।

देवारण्येषु सर्वेषु विजहारामरोपमः ।

आत्मनः कामचारेण द्वितीय इव वासवः ।

यदा नाथ्यगमस्तोऽन्तं कामानां सर्ववेदवित् ।

ततो गाथामिमां गीत्वा सदारः प्राविशद्वनम् । [580]

यत्पृथिव्यां व्रीहियवं हिरण्यं पशवः स्त्रियः ।

नालमेकस्य तत्सर्वमिति मत्वा शमं व्रजेत् ।

एवं कामान्परित्यज्य ययातिर्धृतिमेत्य च ।

पूरं राज्ये प्रतिष्ठाप्य प्रयातो वनसीश्वरः ।

स चेन्ममार सृज्य चतुर्भद्रतरस्त्वया । [585]

पुत्रात्पुण्यतरस्तुभ्यं मा पुत्रमनुत्पत्स्याः ।

अयज्वानमदाक्षिण्यमधि श्वेत्येयुदाहरत् ।

Colophon.

[— (L. 2) G₁ M शम्याः क्षेपेण निर्माणो (M₆ 'य') (for the prior half). T₂ वेदी-; M_{2.4} वेदि (for वेदी-). G₁ M सतत- (for संतत-). M_{2.4} दक्षिणां (for 'णा-).]

— (L. 567) S (G_{2.5} om.) इडा क्रतुसहस्रेण (for the prior half). D_{7.8} G₁ M_{1.2} अश्व-; T G_{3.4} हय-; M₂₋₅ वाजि- (for सोऽश्व-). — M_{2.4} om. line 568.

— (L. 568) T G_{1.3.4} पाँडरीक- D₆ S (G_{2.5} M_{2.4} om.) वाजपेयशतेन च (for the post. half). — (L. 569) D₁ सहस्रैस्तु (for 'लेण). — (L. 570) B₂ (marg.) प्रचुर-; B₁ च प्रति-; D₁ D₆₋₈ च प्राप्त-; D₂ ब्राह्मण-; D₃ च ब्रह्म-; T G_{1.3.4} M_{1.2} नित्याप्त- (for च प्राज्य-). M₂₋₅ यज्ञैर्मुखात्सदक्षिणैः (for the post. half). — (L. 571) T G_{2.4} M₂ वित्तं यत् (by transp.); M_{2.4} यमितां. — (L. 572) D₁ D_{7.8} संपरिक्षा (D_{7.8} 'ह्या)य; D₂ परिसंख्याय (for परित-). T G_{3.4} स तद्; G₁ M स्वतो (for ततो). — After line 572, D₆ T G_{1.3.4} M ins.:

सरस्वती पुण्यतमा नदीनां

तथा समुद्राः सरितः साद्रयश्च ।

ईजानाय पुण्यतमाय राजे

यत् पयो दुदुडुङ्गुपायाः ।

[(L. 2) G₁ M_{1-3.5} चाद्रयश्च; G_{2.4} M₂ [S]द्रयश्च (for साद्र). T तथा समुद्राः सरितोदधिश्च.]

— Lines 573-574 = (var.) 12. 29⁹. 90. — (L. 573) D₁ D_{7.8} वृत्ते (for व्यूढे). D₁ D_{5.7.8} S (G_{2.5} om.) जित्वा दैत्या (D₁ D_{7.8} देवा)न्सदानवान्; D₄ कृत्वा देवाः सवाहृतः (for the post. half). — (L. 574) S (G_{2.5} om.) वर्णैर्भ्यो (for चतुर्धा). M_{1.2} व्यभजत्; M₆ (sup. lin.) व्यसृजत् (for व्यभ-). D₄ चतुर्धा व्यसृजत् (for the prior half). B₂ (marg.)

पुत्रेभ्यः; D₄ चतुर्धा (for 'भ्यः). — T₁ om. line 575. — (L. 575) D₁ D₇ T₂ G_{1.3.4} M बहुविधैर् (for नाना). D₁ D_{7.8} प्रजाक्षोत्पाद्य चोत्तमाः (D₁ 'मां); D₄ प्रजा उत्पाद्य चोत्तमाः (for the post. half). — (L. 576) D₁ D_{7.8} धीमतः (for धर्मतः). — (L. 577) T G_{3.4} रम्भेषु (for सर्वेषु). D₁ D_{7.8} T G_{3.4} सहप्रियः; D₂ [अ]मरो नृपः; G₁ M सहस्त्रिया (for [अ]मरोपमः). — D₂ om. lines 578-582. — (L. 578) D₁ D₁ D_{4.7.8} T G₃ आत्मनः (D₄ 'ना) कामकारेण (for the prior half). — (L. 579) G₁ यथा (for यदा). T G₂ अपगमत्; M₁ अध्वा (for अद्य). D₂ D₁ शांति (for सोऽन्तं). D₁ यदि नाथ्यगमस्तोते; D_{2.3.6} यदा नाथ्यगमच्छांति; D₄ यदा नाथ गमिष्यत (for the prior half). D_{3.6} पूर्वं (for सर्व-). D₁ -देववित्; D₁ S (G_{2.5} om.) -धर्म (for 'वेद'). — (L. 580) G₁ M_{1.2} उक्त्वा (for गीत्वा). D_{4.6} प्रविशद् (for प्रावि). — (L. 581) D₁ D_{7.8} यावद्व्रीहियवं लोके (for the prior half). D₁ D_{7.8} तिलाः (for स्त्रियः). — (L. 582) D₁ D_{7.8} इति मत्वा प्रदद्याभ्यतां; T G_{3.4} M₂₋₅ संतोषः परमं सुखं (for the post. half). — (L. 583) T तदा; G₃ सदा (for एवं). D₁ पति (for पत्य). D₁ D_{7.8} ययातिरप्य (D₁ 'प)शाम्यत; S (G_{2.5} om.) तिर्धृतिमानथ (G₁ M_{1.2} 'निह) (for the post. half). — Lines 584-586 = (var.) 12. 29. 91⁹-92⁹. — (L. 584) D₁ D_{4.5.8} पूरं; D₂ पूरं; D₇ पौरो (for पूरं). D_{7.8} राज्यं (for राज्ये). D₁ चागतो; S (G_{2.5} om.) प्रविष्टो (for प्रयातो). — (L. 585) D₂ संजय. — (L. 586) G_{3.4} M₂ पुण्यतमस्व (for 'तरस्व). — D₂ om. line 587. — (L. 587) T G_{1.3.4} M_{1.2.4} अदाक्षिण्यम् (for अदा). B₁₋₄ D₁ D_{2.3} अभि; D₂ अति; T अयि (for अधि). D₁ D₁ श्वेत्य; D₂ श्वेत्य; D₃ श्वेत्य; D₂ चेत्य; D₃ चेत्य; D_{7.8} श्वेत्य; T G₃ श्वेत्य (for श्वेत्य). B D₁ D₂ D₁ 3-8 व्याहरन्; D_{7.8} अवाहर (for उदाहरत्). D₁ अनिश्चित्यवाहर (for the

भारद् उवाच ।

नाभागमम्बरीपं च मृतं सृज्य शुश्रुम ।
यः सहस्रं सहस्राणां राज्ञां चैकस्त्वयोधयन् ।
जिगीषमाणाः संग्रामे समन्ताद्वैरिणोऽभ्ययुः । [590]
शस्त्रयुद्धविदो घोराः सृजन्तश्चाशिवा गिरः ।
बललाभाद्वशीकृत्य तेषां शस्त्रबलेन च ।
छत्रायुधध्वजराशिरिच्छत्वा प्रासान्गतव्यथः ।
त एनं मुक्तसंनाहा नाथन्तो जीवितैषिणः ।

शरण्यमीयुः शरणं तवास् इति वादिनः । [595]
स तु तान्वशगान्कृत्वा जित्वा चेमां वसुंधराम् ।
ईजे यज्ञशतैरिष्टैर्यथा शक्रस्तथानव ।
उसुसुः सर्वसंपन्नमन्नमन्ये जनास्तदा ।
तस्य यज्ञेषु विप्रेन्द्राः सुवृत्ताः परमार्चिताः ।
मोदकान्पूरिकापूपान्धाना वटकशङ्कुलीः । [600]
करम्भान्पृथुकान्मन्थानन्यानि सुकृताणि च ।
सूपान्मैर्यकान्पूपात्रागपाण्डवपानकान् ।

post. half). — Colophon om. in B₂ G₂s. — *Subparvan* : MSS. अभिमन्युवध. — *Adhy. name* : B (B₂ om.) D₂ D₂ D₃-s पोडशराजिकं (D₂ D₂ "जीकं"); D₁ G₁ "राजकं"; D₂ "राजकीय"; T G₃ "राजके यदातिचरितं". — *Adhy. no.* : B₁ D₂ T G₁ 3.4 M 60; B₂ D₂ 61; D₂ 55. — *Sloka no.* : D₂ 11. — Line 588 = (var.) 12. 29. 93^{ab}. — (L. 588) G₂ राजानम् (for नाभागम्). B₁s.4 D₂ D₂ D₁s.5.6 चेन्; D₁ वै (for च). D₂ D₁ 7.8 S शुश्रुमः. D₁ 2.5 मृतं संजय शुश्रुमः; D₂ 6 मृतं शुश्रुम संजय (for the post. half). — (L. 589) G₂ 5 M₃-s सहस्राणि (for "णि"). D₂ राजश्च (for राज्ञां). B₁ D₁ 3 अयोधयन् (for "ययत्"). B₂ D₂ राजां चैकस्त्वयोधयत्; D₂ D₁ 3 राजां वै समयो; S राजानाम्यु (M₃-s "न्दु")तयो (M₂ "शो")-पिनां (for the post. half). — (L. 590) B₂ (marg. as above).s D₂ D₂ D₃-s G₂ जिगीषमाणः; D₁ "मानः"; D₁ 3 T G₁ 8-s "माणः"; M₃ 4.5 (sup. lin.) जिहीर्षमाणः (for जिगीष). D₂ समयाद्; G₁ M समस्ता; G₂ "स्तान्" (for समन्ताद्). B₂ (marg. as above).s D₂ D₂ D₁ 3-8 [S]भ्ययात्; B₂ 4 [S]न्वयुः (for स्म्ययुः). D₂ D₁ 3 महानादै रणोद्यतः (for the post. half). — (L. 591) D₁ 2 अस्त्र- (for शस्त्र-). B₁ 8 D₂ शस्त्रयुद्धे तथा घोराः (B₁ "रे"); D₂ D₁ 3 S शस्त्रमुच्चावचं घोरं (for the prior half). D₂ D₁ 3 सृजन्तं (for "तश्च"). D₂ सृजन्तश्चापि ता गिरः (for the post. half). — D₂ repeats line 592 after line 593. — (L. 592) B₁ बललोभाद्; B₂ "भोगाद्"; D₂ (second time) धनलाभाद् (for बलं). D₂ D₁ 3 S बललाघवशिक्षामिध; D₂ (first time) D₂-s बलवान्वितथी (D₁ "न्स वशी"; D₂ "शतशी"कृत्य (for the prior half). D₂ बली; D₂-s बलं (for तेषां). B₁-s.8 D₂ D₂ D₁-s G₁ सोस्त्र-; D₂ (first time) शस्त्र-; D₂ (second time) सास्त्र-; G₂ शत्रु- (for शस्त्र-). — (L. 593) B₁ D₂ शस्त्रायुध- (for छत्रा). D₂ D₁ 3 ध्वजवरं; G₂ राजादिछत्रा (for ध्वजराशिर). T G₃ 4 सिंहो यथा गजादिछत्वा; G₁ M₁ 2 शस्त्रायुधं गजरथं;

G₂ छित्त्वा यथा गजाजित्वा (for the prior half). D₁ om. from प्राप्तान् up to वदशान् (in line 596). D₂ D₂-s छित्त्वा प्राप्तान्; D₁ छित्त्वा प्राप्तान्; T G₂-s नाभागस्तु (G₂ "गः स") (for छित्त्वा प्राप्तान्). D₂ D₁ 3 छित्त्वा प्राप्तान्यथा तथा; G₁ M₁ 2 जित्वा प्राप्तान्यथा; M₃-s छित्त्वा प्राप्तान्यथा; (for the post. half). — (L. 594) D₂ D₂ D₂ त एव; D₂ तदेनं (for त एनं). B D₂ D₂ D₂-s प्रार्थयन्; D₁ 8 नाथते; M₁ 2 अनथा (for नाथन्तो). T G₂ 3 नाथते विजिगीषवः; G₁ 8 हा नाथते जिगीषवः (for the post. half). — (L. 595) D₂ D₂ D₁ 3 S (except G₂) तव स. — (L. 596) T G₃ सर्वान् (for तु तान्). — (L. 597) D₂ इष्टे; G₁ M त्विष्टैर् (for इष्टैर्). B D₂ D₂ D₁-s यथाशस्त्रं; M₃ यथा शक्रं. D₂ 5 यथा (for तथा). D₂ D₂ T G₂ 4 [अ]नवः; D₂ नृपः; D₁ 8 नयः; D₂ वयः (for [अ]नव). — S transp. lines 598 and 599. — (L. 598) B₂ अनुमन्ये; D₂ अनुमान्य (for अनुमन्ये). B₂ G M तथा; D₂ T सदा (for तदा). — (L. 599) D₂ 1 यस्त्र (for तस्य). B D₂ D₂ D₁ 2.3.5 तस्मिन्नेव तु (B₂ D₂ च) विप्रेन्द्राः; D₂ 6 तस्मिन्नेव तु वि (for the prior half). D₂ संवृत्ताः; S प्रहृष्टाः (for सुवृत्ताः). D₂ D₁ 3 सुवृत्ता (D₁ "कृपा"श्च परार्हणाः (for the post. half). — (L. 600) B₂ पूरितापूपान्; D₂ 1 भारिकापूपा; D₁ पूरिकापूपान् (for "कापूपान्"). D₂ 2 मोदकं पूर-पूपा; D₂ मोदकं पूरिकाः पूपा; D₂ मोदका भारिकापूपान्; D₂ कं पूरिकापूपा; D₁ 3 "कान्धारिका यु (D₂ काः पूपा; T G₂-s M₁ 2 मोदकान्धारिकापू (G₂ 3 "कान्पूपा; G₁ M₃-s "कोत्कारिकापूपान् (for the prior half). D₂ वटक- (for वटक). G₁ M₁ 4 शङ्कुलीन् (for "ली"). B D₂ धाना (D₂ "ना")धनकशङ्कुलीः; D₂ 2 मात्रा नामकश"; D₁ धानासंयवशङ्कुलीः; D₂ 2.6 स्वादुपुनश्च श"; G₂ धानापाण्डवशङ्कुलीन् (for the post. half). — D₂ om. lines 601-604. — (L. 601) G₁ 2.4 M₁ 3 करम्भ- (for करम्भान्). D₂ 1 श्रेष्ठान्; D₁ चेष्टा (for मन्थान्). B D₂ D₂ D₁ 3 करम्भान् (D₂ "भाः पृथुद्वीका (D₂

सृष्टान्तानि सुयुक्तानि सृद्नि सुरभीणि च ।
 घृतं मधु पयस्त्रयं दधीनि रसवन्ति च ।
 फलं मूलं च सुखादु द्विजास्तत्रोपभुञ्जते । [605]
 मदनीयानि पानानि विदित्वा चात्मनः सुखम् ।
 अपिबन्त यथाकामं पानपा गीतवादिनैः ।
 तत्र स गाथा गायन्ति क्षीवा हृष्टाः पठन्ति च ।
 नाभागस्तुतिसंयुक्ता ननुतुश्च सहस्रशः ।
 तेषु यशेष्मन्वीरो दक्षिणामत्यकालयत् । [610]
 राज्ञां दशसहस्राणि दश प्रयुतयाजिनाम् ।

हिरण्यकवचान्सर्वान्श्वेतच्छत्रप्रकीर्णकान् ।
 हिरण्यस्यन्दनारूढान्सानुयात्रपरिच्छदान् ।
 ईजानो वितते यशे दक्षिणामत्यकालयत् ।
 सूर्याभिषिक्तांश्च नृपात्राजपुत्रशतानि च । [615]
 सदण्डं कोशनिचयान्ब्राह्मणेभ्यो ह्यमन्यत ।
 नैव पूर्वं जनाश्चकुर्वन् करिष्यन्ति चापरे ।
 यदम्बरीपो नृपतिः करोत्यमितदक्षिणः ।
 इत्येवमन्वमोदन्तं प्रीता यस्य महर्षयः ।
 स चेन्ममार सृज्य चतुर्भद्रतरस्त्वया । [620]

Ds 'कान्'; Ds केरवान्युकांशेष्टान्; T Gs. 5 करंभृ (Gs 'प्र') युक्तामया (Gs 'कांषां'न् (for the prior half). B (except B3) Dc1 Dn2 D1-6 अन्नानि (for अन्यानि). B2 सत् (for सु). D7. 3 नानाविधि (Ds 'ध') कृतानि च (for the post. half). — Dn1 om. lines 602-604. — (L. 602) D7. 3 सुप- (for स्यान्). G1. 2 M मोरंडकान् (for मेरेयकान्). B1 Dc1 D1 पूषान् (for यूषान्). B2-5 Ds स्यान्मेरेयकापूषान्; Dn2 सुरापांनोमरजका; D3 सुपमेरेयकापूष-; D4. 6 सुरं (Ds 'त') मेरेयकं पूषान्; T Gs-5 सुपायो (T1 'ह्यो')-रंड (Gs. 5 'ड-; G4 'डु') कान्यूपान् (for the prior half). B1 D4 S रागपाण्डव- (G1 M 'व-); B3 Ds. 6 'खांडव-; Dn2 पूषखांडव- (for रागपाण्डव-). B4 corrupt; G3 पानगान् (for 'कान्'). — (L. 603) B1 (marg.). 5 Dc1 D1. 3. 6 मिष्टान्तानि; S निभृ (Gs 'ह') तानि (for सृष्टान्तानि). D4 om. सुयुक्तानि. Dn2 Ds मिष्टानि सुप्रयुक्तानि (for the prior half). D7. 3 S स्वादुनि (for सृद्नि). — (L. 604) Gs पानं (for तोयं). D4 वा (for च). — (L. 605) Dn2 Ds G2 फल- (for फलं). G1. 2 M1. 2 उपसुंशिरे (for 'सुञ्जते'). — (L. 606) B3 D7. 2. 5 मादनीयानि; D8 दमं (for मदं). Dc1 (marg.) चान्तानि; D2. 1 Gs. 6 पापानि; D3 पानीति (for पानानि). S विदंशानात्मनः प्रियान् (for the post. half). — (L. 607) B1. 3 Ds अपिबन्ति; D1. 3. 5. 6 अपिबन्ति; D7 अपिबन्तं; S पयस्त्रय (for अपिबन्त). D7 तथा कामं; M2-6 यथाकालं (for 'कामं'). D7 गीतवादिनैः (for 'तैः'). Gs अपाना गतकाः परं (for the post. half). — (L. 608) G2 ततः; M3 यत्र (for तत्र). Dn2 D7. 3 [अ]शु (Ds सु) गाथा; D2 गाथाश्च (for स गाथा). Dc1 D4 Gs क्षीवा (for क्षीवा). Dc1 Ds G3 पतन्ति; D3. 6 Gs पिबन्ति (for पठन्ति). — (L. 609) Gs स्तव- (for स्तुति-). Ds संयुक्तां (for 'क्ता'). Ds सराणां स्तुति-संयुक्तां (for the prior half). — (L. 610) S नामागो (for [अ]म्बरीपो). S (except G4) दक्षिणा. B3 Dn2 Ds-6 अभ्यकल्प (D4 'काल') यत् (for अत्यकाल'). — (L. 611)

B Dc1 Dn1 D1. 2. 7. 3 S शत- (for दश-). Dn2 D7. 3 दश चायुत-; T G2-4 प्रयुतायुत-; G6 पदाता' (for दश प्र'). B3 Ds. 3 G2-5 वाजिनां; G1 M -याथिनां (for -याजिनाम्). — Dc1 om. line 612. — (L. 612) G3 स्वशान् (for सर्वांश्च). Dn1 D7. 3 हिरण्य-कवचाः सर्वे (for the prior half). B1-3. 5 Dn2 Ds-6 श्वेतवस्त्रावगुंठितान्; B4 श्वेतच्छत्रोपशोभितान्; Dn1 D7. 3 S सर्वे चो (S 'वांश्चो') त्तमध्वनिनः (for the post. half). — D2 om. lines 613-614. — (L. 613) D4 सानुयायि-; Ds स्वर्णपत्र-; Ds सनुपात्तत्र (sic) (for सानुयात्र-). Dn1 D7. 3 यानमानपरिच्छदाः (for the post. half). — Dn1 D7. 3 om. line 614. — (L. 614) G2 राजानो (for ईजानो). S दक्षिणा (for 'णाम्'). B4 Dn2 Ds. 5. 6 अभ्यकल्प (B4 'काल') यत्; D4 अन्वकल्प (for अत्यकाल'). — (L. 615) Dn1 Ds. 6-8 सूर्याभिषिक्ता (Ds. 6 'क्त') श्व नृपा (Ds. 6 'पो'); S 'वसिक्तांश्च नृपान् (for the prior half). D7 वा (for च). Ds राजपुत्रेस्तितानि च (for the post. half). — (L. 616) B1-3. 5 Dc1 D1 कोष- (for कोश-). Dn1 D7. 3 S -विषयान् (for -निच-). D3. 6 [S] भ्यमन्यत; D7. 3 अमं; S ह्यमं (G4 'स') त (for ह्यमन्यत). — (L. 617) B4 Dn1 नैव; T G2-5 इह; G1 M नेह (for नैव). Dn1 D7. 3 पूर्वं (for पूर्वे). S तथा (for जनाश्च). Dn2 reads from the post. half up to the prior half of line 620 twice (without var.). Dn1 D7. 3 S कतारो नैव (S वा न); Dn2 Ds. 6 न कतारो नैव; D1 न करिष्यति (for न करिष्यन्ति). D4 वर्तमानास्तथा परे; Ds न कतारोथ वा परे (for the post. half). — (L. 618) B4 यथांबरीपो. D4. 6 चकार (for करोति). T G2. 3. 5 दक्षिणैः (for 'णः'). — (L. 619) D4. 6 गंधर्वा (for इत्येवम्). B4. 6 Dc1 D1. 3 अनुमोदते (Dc1 D1. 3 'त'); D2 अतिमोदतं (for अन्मो). Ds इत्येव मत्वामोदतं (for the prior half). Dn1 D7. 3 S सुर-; D2 तत्र (for यस्य). — Lines 620-621 = (var.) 12. 29. 97. — (L. 620) D2 संजय (for सृजय). — (L.

पुत्राद्युप्यतरस्तुभ्यं मा पुत्रमनुत्पयथाः ।
अयज्वानमदाक्षिप्यमधि शैत्येत्युदाहरत् ।

Colophon.

नारद उवाच ।

शशबिन्दुं च राजानं सृतं सृज्य शुश्रुम ।
इंजे स विविधैर्यज्ञैः श्रीमान्सत्यपराक्रमः ।
तस्य भार्यासहस्राणां शतमासीन्महात्मनः । [625]
एकैकस्यां च भार्यायां सहस्रं तनयाभवत् ।
ते कुमारः पराक्रान्ताः सर्वे नियुतयाजिनः ।
राजानः क्रतुभिर्मुल्यैरीजाना वेदपारगाः ।
हिरण्यकवचाः सर्वे सर्वे चोत्तमधन्विनः ।

सर्वेऽश्वमेधैरीजानाः कुमारः शाशबिन्दवः । [630]
तानश्वमेधे राजेन्द्रो ब्राह्मणेभ्योऽददत्पिता ।
शतं शतं रयगता एकैकं पृष्ठतोऽन्यतुः ।
राजपुत्रं तदा कन्यास्तपनीयस्त्वलंकृताः ।
कन्यां कन्यां शतं नागा नागे नागे शतं रथाः ।
रये रये शतं चाश्वा बलिनो हेममालिनः । [635]
अश्वे अश्वे सहस्रं गा गवां पश्चादजाविकम् ।
एतद्धनमपर्यन्तमश्वमेधे महामखे ।
शशबिन्दुर्महाभागो ब्राह्मणेभ्यो ह्यमन्यत ।
वाक्षाश्च यूपा यावन्तो अश्वमेधे महामखे ।
ते तथैव पुनश्चान्ये तावन्तः काञ्चनाभवन् । [640]
भक्ष्यान्नपाननिचयाः पर्वताः क्रोशमुच्छ्रिताः ।

621) T Gs-s पुण्यतमस् (for 'तरस्'). Dn1 Dr.3 चैव (for तुभ्यं). — D2 om. line 622. — (L. 622) S (except Ms) अदक्षिप्यन् (for अदा*). B Dc1 Dn1 D1.3-8 अभि; Dn2 अति; T अवि (for अभि). Dc1 D1 शैल; Dn1 Dr.3 श्विल; D3 शैव्य; D4 शैव्य; D6 चैल; T G2.3 श्वेल (for शैल). B Dc1 Dn D1. 3-8 व्याहरन् (Dn1 'त्'); Dr.3 [अ]वाहर (for [उ]दाहरत्). — Colophon: — Sub-parvan: MSS. अभिमन्युवध. — Adhy. name: B Dc1 Dn2 D3.4.6 षोडशराजिकं; Dn1 D2.5 'राजकीयं'; D1 'राजकं'; T Gs 'राजके अंबरीषचरितं'; G2 अंबरीषचरितं. — Adhy. no.: B1 T G1-3.5 M 61; B2 Dn1 62; D2 55; G4 60. — Śloka no.: Dc1 16; Dn1 17. — M3.4 om. the ref. — (L. 623) Dc-s G2 शशबिन्दुं (for शश*). Dn1 Dr.3 चैत्ररथं; T G2-s च राजेन्द्रं (for च राजानं). D2.5 संजय. D1.2. 4.6.8 S शुश्रुमः. — (L. 624) B1.3 Dc1 D5 इंजे च; B4 Dn1 Dr.3 इंजे यो; S य इंजे (for इंजे स). B1 वडुभिर्; Dn1 Dr.3 विपुलेर् (for विविधैर्). — Line 625 = (var.) 12. 29. 98^{ad}. — (L. 626) D2 तु (for च). Dn1 Dr.3 एकैकस्यास्तु भार्यायाः (for the prior half). D4.6 सहस्रतनयाभवत्; S पुत्रजन्म तथा (G1.5 M1.2 'दा')भवत् (for the post. half). — After line 626, S ins.:

सहस्रं तु सहस्रं तु तस्यां तस्यां महात्मनः ।

— (L. 627) D3 च विकांताः (for परा*). T Gs-s शश- बिन्दुः (Gs sup. lin. 'दोः कु)मारास्ते (for the prior half). D4 [s]भिप्रेतः; D5 नियत- (for नियुत-). B3 चाजिनः; S दक्षिणाः (Gs 'णां) (for -याजिनः). — (L. 628) D4 अज्वानः (for राजानः). Dn1 Dr.3 राजानः क्रतुमुल्यैश्च

(for the prior half). D4 यज्ञागैर्; D5 दातारो (for इंजाना). — Line 629 = 12. 29. 99^{ad}. — (L. 630) B D1 T Gs.4 शशबिन्दवाः; Dc1 Dn D2-4.8 शशबिन्दवः (for शश*). — (L. 631) Gs partly damaged. Dn1 Dr.3 अश्वमेधे (for 'मेधे). Dn2 D3-8 राजेन्द्र; T G1.2.6 M यज्ञे; G4 यज्ञे स (for राजेन्द्रो). Dn1 Dr.3 ह्यमन्यत; D1 T G1.2.4 M [s]ददात्पिता. — Lines 632-638 = (var.) 12. 29. 100-102. — (L. 632) Dn2 D3 रयगता; D5 चैव रथाः; G5 रथानीकं; M3 रयगतं (for 'गता). — (L. 633) D3 तथा (for तदा). S राजपुत्रा (G1 M1-4 'व्य')स्तथा कन्या (for the prior half). D4.5 तपनीयैः; S रमणीया- (for तपनीय-). B4 विभूषिताः; G4 त्वलंकृताः (for 'स्वलं'). — (L. 634) D4 कन्याशतं; D5.7 कन्याकन्यां (for कन्यां कन्यां). — (L. 635) T G2-4 जलिनो (for बलिनो). — (L. 636) B4.5 Dn1 Dr.3 M3-5 गोसहस्रं; D5 सहस्रां गा. D5 च (for गा). T G M1.2 अश्वेधे सहस्रं च (G1.2 M1.2 तु) (for the prior half). D4.6 पंच; T G2-s M5 पंचाधि; G1 M1.4 पंच हि (for पश्चाद्). B1.3 पश्चादजाविकं; B4.5 D1.2 पंचाशदाविकं (B5 D1.2 'का:); Dn2 पंचाशदाविकं; D3 पंच त्वजाविकं; G2 damaged (for पश्चादजाविकन्). — (L. 637) Bom. ed. अपयान्स्म (for अपयन्तन्). — D4.8 om. (hapl.) lines 638-639. — (L. 638) Dn1 Dr.3 हि दत्तवान्; T G1.2 M1.5 (sup. lin.) ह्यमन्यत; G2-s M3-5 ह्यमन्यत; M2 ह्यमन्यत (for ह्यमन्यत). — D3 om. lines 639-643. — (L. 639) D4.6 वाक्षाश्च; D5 T G2-s वृक्षाश्च (for वाक्षाश्च). B4 यूपाश्च (by transp.). Dn1 Dr.3 वर्षपूगा हि यावन्तो (for the prior half). B2 (marg.).3 D3 ह्यश्वमेधे (for अश्व*). T G M1.2 ते (G5 ये)श्वमेधे हि श (G1 M1.2 'वैशिश)न्द्रिताः; M2-5 तेऽश्व-

तस्याश्वमेधे निर्वृते राज्ञः शिष्टास्त्रयोदश ।
तुष्टपुष्टनाकीर्णां शान्तविभ्रामनामयाम् ।
शशबिन्दुरिमां भूमिं चिरं भुक्त्वा दिवं गतः ।
स चेन्ममार सृजय चतुर्भद्रतरस्स्वया । [645]
पुत्रात्पुण्यतरस्तुभ्यं मा पुत्रमनुतप्यथाः ।
अयज्वानमदाक्षिण्यमधि श्वेत्येत्युदाहरत् ।

Colophon.

नारद उवाच ।

गयं चामूर्तरयसं मृतं सृजय शुश्रुम् ।
यो वै वर्षशतं राजा हुतशिष्टाशनोऽभवत् ।
तस्मै ह्यग्निर्वै प्रादात्ततो वरो वरं गयः । [650]

मेधिकशब्दिताः (for the post. half). — (L. 640) Gs तथैव च (for ते तथैव). — (L. 641) B1-3 Dc1 Ds S यज्ञाञ्च; D1 यस्याञ्च (for यज्ञाञ्च). D1 सर्वतः (for पर्वताः). B2 सर्वतः; D2.5 ऊजिताः; D4 उच्छ्रयाः (for उच्छ्रिताः). B2 (marg.) पर्वताः क्रोशसर्वतः (for the post. half). — (L. 642) Gs यस्य (for तस्य). Dn1 D4-8 निवृत्ते; G1 संवृत्ते (for निवृत्ते). Dn1 D7.8 राजञ् (for राजः). D7 त्रयो वशः (sic) (for त्रयोदश). D4 राशस्तस्य महात्मनः (for the post. half). — (L. 643) B Dc1 Dn2 D1.3-8 S -जनाकीर्णाः (for -जना-कीर्णा). Dn1 ह्यनामयां; S निरामयां (for अना). B Dc1 D1.3-8 शान्तविभ्रामस्त्व (D2.1.8 "म्राह्य" नामयाः; Dn2 "विभ्रामस्त्वनाशनाः (for the post. half). — D1 om. lines 644-646. — (L. 646) D7 T G2.5 पुण्यतमस्त्व (for "तरस्त्व"). — (L. 647) T G1.3-8 M1-4 अदक्षिण्यम् (for अदा). — B Dc1 Dn1 D1.3.5.7.8 अभि; Dn2 अति; T अयि (for अयि). Dc1 श्वेल; Dn1 D7.8 श्वेल; Dn2 श्वेल; D1.3.5 श्वेल; D2 चैल; T G2.5 श्वेल (for श्वेल). B Dc1 Dn2 D1.3-8 व्याहरन्; Dn1 [अ]व्याहरत्; D7.8 [अ]वाहर (for [उ]दाहरत्). D2 अभिषेवेति व्याहरन् (for the post. half). — Colophon. — Sub-parvan : MSS. अभिमन्युवध. — Adhy. name : B Dc1 D2-6 षोडशराजिकं; Dn1 D2 "राजकीयं; D1 "राजकं; T G2 षोडशराजके शश (T1 "शि"बिन्दुचरितं; G2 शशिबिन्दुचरितं. — Adhy. no. : B1 Ds S 62; B2 Dn1 63; D2 56. — Śloka no. : B1 11; Dn1 13. — Lines 648-650 = (var.) 12. 29. 104^a-105^b. — (L. 648) T G2-5 अपूर्तः; G1 M असूतः (G1 "त्र") (for अमूर्तः). Dn2 D2.3.6 T G M1.2.5 -रजसं; D7.8 -यशसं (for -रयसं). D2.5 संजय (for सृजय). D1.5.7.8 S शुश्रुम्

तपसा ब्रह्मचर्येण व्रतेन नियमेन च ।
गुरूणां च प्रसादेन वेदानिच्छामि वेदितुम् ।
स्वधर्मेणाविहिंसान्यान्धनमिच्छामि चाक्षयम् ।
विप्रेषु ददतश्चैव श्रद्धा भवतु नित्यशः ।
अनन्यासु सवर्णासु पुत्रजन्म च मे भवेत् । [655]
अन्नं मे ददतः श्रद्धा धर्मे मे रमतां मनः ।
अविघ्नं चास्तु मे नित्यं धर्मकार्येषु पावक ।
तथा भविष्यतीत्युक्त्वा तत्रैवान्तरधीयत् ।
गयोऽप्यवाप्य तत्सर्वं धर्मेणारीनजीजयत् ।
स दर्शपूर्णमासाभ्यां कालेष्वाग्रयणेन च । [660]
चातुर्मास्यैश्च विविधैर्यज्ञैश्चावासदक्षिणैः ।
अयजच्छ्रद्धया राजा परिसंवत्सरं शतम् ।

(for "म"). — (L. 649) D4 राजन् (for राजा). — (L. 650) D4 om. तस्मै ह्यग्नि. — (L. 651) M2-3 वृत्तेन (for व्रतेन). S च दमेन (for नियमेन). — D2 om. lines 653-655. — (L. 653) D1 [अ]व- (for [अ]वि-). Dn1 विज्ञेयामि; Dn2 D2.3.4.6 विजिलारोन्; D2 विजिला वा (for [अ]विहिंसान्यान्). S स्वधर्मेनाविहिंसा च (for the prior half). S धर्मं (for धनम्). — (L. 654) Dn1 D7 S पात्रेषु; Dn2 देवेषु; D2.3.6 वेदेषु (for विप्रेषु). T G2-3 M2-3 सा मे; G1 M1.2 मे वै (for चैव). — D2 om. line 655. — (L. 655) Dn1 अन्यासु च; G2 कन्यासु च (for अनन्यासु). T G2-4 च सर्वासु (for सवर्णासु). T G2-5 M2-3 सुप्रजं (G2 M2.5 "जा"स्त्व; G1.5 M1.2 सुप्रजास्त्व (for पुत्रजन्म). — (L. 656) B2 अर्थ मे; Dn1 अन्नं च; D2 पात्रेषु (for अन्नं मे). D2-6 आदतः (for मे द). Dn1 D7.8 [S]क्षयं (for श्रद्धा). T G2.4 अन्नं स्वादु दुहेन्महं; G1 M अन्नं मा दुदुपे (M2-3 "प")न्महं; G2 अन्नं मा दुदुपेर्मेहं; G2 अन्नं मा दुदुपे महं (for the prior half). D2.6 च (for मे). — (L. 657) Dn1 अविघ्नतास्तु; D2 "मं"वारु (for "मं"चास्तु). — (L. 658) Dn1 D7.8 तत्रैवांतर्हितोत्तलः (for the post. half). — (L. 659) B D हि (for स्वि). Dn1 D7.8 अथा-जयत् (for अजी). T G2-5 धर्मेणाराधयज्ज (G2-3 "यज")-गत्; G1 M धर्मेणाराधयज्जगत् (for the post. half). — (L. 660) D2 S -पूर्णमासाभ्यां (for -पूर्णं). B1.2 Dc1 Dn D2-3 T G2.3.5 आग्रयणेषु (for "णेन"). — (L. 661) T2 G2.4 चातुर्मास्यं (for "र्यैश्च"). D7.8 S विविध (for विविधैर्). S [र]ष्टिभिश्च (for यज्ञैश्च). — Lines 662-663 = (var.) 12. 29. 107^a-108^b. — (L. 662) D7 राजन् (for राजा). G1 अयजच्छ्रद्धयासास (for the prior half). D2 प्रति- (for परि-). B2.4.5 D1.2 -संवत्सरान्

दश नागसहस्राणि शतमश्वशतानि च ।
 शतं निष्कसहस्राणि गवां चाप्ययुतानि षट् ।
 उत्थायोत्थाय स प्रादात्परिसंवत्सरं शतम् । [665]
 नक्षत्रेषु च सर्वेषु ददन्नक्षत्रदक्षिणाः ।
 ईजे च विविधैर्यज्ञैर्यथा सोमोऽङ्गिरा यथा ।
 सौवर्णां पृथिवीं कृत्वा य इमां मणिशकैराम् ।
 विप्रेभ्यः प्राददद्राजा सोऽश्वमेधे महामखे ।
 जाम्बूनदमया यूपाः सर्वे रत्नपरिच्छदाः । [670]
 गयस्यासन्समृद्धास्तु सर्वभूतमनोहराः ।
 सर्वकामसमृद्धांश्च प्रादात्तांश्च गयस्तदा ।
 ब्राह्मणेभ्यः प्रहृष्टेभ्यः सर्वभूतेभ्य एव च ।

समुद्रद्वीपसैलेषु नदीनदवनेषु च ।
 नगरेषु च राष्ट्रेषु दिवि व्योम्नि च येऽवसन् । [675]
 भूतग्रामाश्च विविधाः संतुष्टा यज्ञसंपदा ।
 गयस्य सदृशो यज्ञो नास्तस्य इति तेऽब्रुवन् ।
 षट्त्रिंशद्योजनायामा त्रिंशद्योजनमायता ।
 पश्चात्पुरश्चतुर्विंशद्वेदी ह्यासीद्विरण्मयी ।
 गयस्य यज्ञमानस्य मुक्तावज्रमणिस्तृता । [680]
 प्रादात्स ब्राह्मणेभ्योऽयं वासांस्त्याभरणानि च ।
 यथोक्ता दक्षिणाश्चान्या विप्रेभ्यो भूरिदक्षिणः ।
 यत्र भोजनशिष्टस्य पर्वताः पञ्चविंशतिः ।
 कुल्याः कृशरवाहिन्यो रसानामभवेत्तदा ।

(for 'त्सरं'). Dn1 गतं (for शतम्). — (L. 663) B D
 गवां शतं (for दश नाग-). Dn2 सहस्रं च (for 'स्राणि').
 B1 G2 om. the post. half of line 663 and the prior
 half of line 664. G5 दशम् (for शतम्). D2 4 वः
 (for च). — D2 om. lines 664-676. — (L. 664)
 T G3 च (for षट्). — Lines 665 = (var.) 12.
 29. 108^{ad}. — (L. 665) D1 om. उत्थाय. B1 3 Dc1
 Dn1 यः; B2 4 5 Dn2 D3-5 S (except G5 M2) सं-
 (for स). D3 उत्थाय प्रादात्स वृषां (for the prior half).
 B Dc1 Dn2 D1 3 4 6 संवत्सराञ्च (for 'रं'). D7 8
 सवृषां (D3 सवत्सां) वत्सलां सतां (for the post. half).
 — (L. 666) B1 Dn2 D3 5 6 दक्षिणां (for 'णाः').
 — (L. 667) T G1-4 M शर्वे; G5 सर्पां (for सोमो).
 Dn1 D7 8 यथांगिराः (by transp.). — Lines 668-
 669 = (var.) 12. 29. 110. — (L. 668) M3 5
 (sup. lin.) स (for य). D7 8 कांचनां (for शक-
 राम्). — (L. 669) D3 प्राददाद् (for 'दद्'). S ब्राह्मणे-
 न्योददा (G2 4 M3-5 'द')द्राजा (for the prior half).
 Dn1 सोश्वमेध- (for 'मेधे'). — (L. 670) B1 चानु-
 D7 8 चाञ्च-; S चान्ये (for रत्न-). — D3 om. lines
 671-672. — (L. 671) T G2-4 M3-5 वरप्राप्त्या; G5
 वरं प्राप्य (for समृद्धास्तु). G1 M1 2 शय्यासनपराः सर्वे
 (for the prior half). D4 om. from मनोहराः up to
 समुद्र (in line 674). — (L. 672) B2 सर्वे (for सर्व-).
 B2-4 Dn2 D1 3 6 समृद्धाश्च; Dc1 'द्धास्तु'; Dn1 D7 8
 S 'दं च (for समृद्धांश्च). B1 5 Dn1 D7 8 S अन्नं; Dc1
 तांस्तु (for तांश्च). Dn1 D7 8 G6 तथा; T G1 3 4 M
 सदा; G2 वसु (for तदा). Dn2 प्रासादो भूमयस्तदा; D3 6
 प्रासादा भूमयस्तथा (D3 'दा') (for the post. half).
 — (L. 673) Dc1 D1 प्रहृष्टेभ्यः; Dn1 प्रशिष्टेभ्यः; Dn2
 प्रविष्टेभ्यः; D3 5 6 विशि"; D7 प्रकृतेभ्यः; D8 प्रकृष्टेभ्यः;

T G1 3 4 M1 2 वितृप्तेभ्यः; G2 5 [5]पि वृप्तेभ्यः; M2-5
 ह्यवृप्तेभ्यः (for प्रहृष्टेभ्यः). — (L. 674) B Dc1 Dn2
 D1 3-5 ससमुद्र (D4 om. ससमुद्र)वनद्वीप- (for the prior
 half). B2 'सरःसु (for 'वनेषु). — (L. 675) Dn2
 D1 6 स्वराज्येषु; D5 G5 च राज्येषु; T G1-4 M स-
 (G2 सु)राष्ट्रेषु (for च राष्ट्रेषु). T G2-4 वोषवद्; G1
 M3-5 वोषवद्; M1 2 वोषवन् (for वेडवन्). Dn1 D7 8
 सराष्ट्रेषु दिवि व्योम्नि चराचरमयेषु च. — (L. 676) S बहु-
 विधा (for च विविधाः). D7 8 भूतग्रामश्च विविधन् (for the
 prior half). Dc1 सुमुष्ठा (sic); Dn D3-5 द्युत्ता;
 D7 8 स नृपो; S विस्तिता (for संतुष्टा). — (L. 677)
 D7 8 यादृशो (for स'). S यज्ञा (for यज्ञो). Dn1
 D7 8 मे द्रुतं; D1 मे द्रुतं (for तेऽब्रुवन्). — D3 om.
 lines 678-680. — (L. 678) Dc1 Dn1 D3 पद्विशद्;
 Dn2 D1 5 पद्विश- (for पद्विशद्). D1 (marg.) -योज-
 नोत्सेधा (for योजनायामा). D7 8 शत- (for त्रिशद्). S
 विस्तृता (for आवता). D1 पद्विशयोजनायता (for the post.
 half). — (L. 679) D7 8 गुरा (for पुरश्च). Dn1
 (marg. as above) पार्श्वयोश्च; S चतुर्विंश (for 'विंशद्').
 D1 पार्श्वे तस्य चतुर्विंशद्; D3 पार्श्वे *श्चतुर्विंशद् (for the
 prior half). G1 3-5 M1 2 वेदिर् (for वेदी). Dn2
 त्वासीद्; T G M1 2 5 आसद्; M2 4 चासीद् (for
 ह्यासीद्). — (L. 680) D3 जयमानस्य (for यज्ञ'). B1 T
 G1 2 4 5 M3-5 मणिस्तृता (sic); Dn2 मणिस्तृतः; D1
 मणिस्तृता; D7 8 'स्तुवः (for 'स्तृता). Dn1 मुक्ता वेदनलि
 शकैरा; D5 मुक्तामणि च वज्रमृत् (for the post. half).
 — Dn1 om. line 681. — (L. 681) Dn2 D1 6 प्राद-
 दद्; D1 स प्रादाद् (by transp.); D3 प्राददाद्; T
 G2-4 तां प्रादाद्; G5 संप्रादाद्. B1 च; T G2-4 वे; G5
 वा (for ष्व). D7 8 ताः स प्रादाद्ब्राह्मणेभ्यो; G1 M तां
 संप्रादाद्ब्राह्मणेभ्यो (for the prior half). G5 सर्वांसि (sic) (for

पञ्चाभरणगन्धानां राशयश्च पृथग्विधाः । [685]
 यस्य प्रभावाच्च गयस्त्रिषु लोकेषु विभुतः ।
 वटश्चाक्षय्यकरणः पुण्यं ब्रह्मसरश्च तत् ।
 स चेन्ममार सृजय चतुर्भद्रतरस्त्वया ।
 पुत्रापुण्यतरस्तुभ्यं मा पुत्रमनुत्पयथाः ।
 अयस्वानमदाक्षिण्यमपि शैत्येत्पुदाहरत् । [690]

Colophon.

नारद उवाच ।

सांस्कृतिं रन्तिदेवं च मृतं सृजय शुश्रुम ।
 यस्य दिशतसाहस्रा आसन्सुदा महात्मनः ।

गृहानभ्यागतान्विप्रानतिथीन्परिवेषकाः ।
 पकापकं दिवारात्रं वराहममृतोपमम् ।
 न्यायेनाधिगतं वित्तं ब्राह्मणेभ्यो ह्यमन्यत । [695]
 वेदानधीत्य धर्मेण यश्चक्रे द्विपतो वशे ।
 उपस्थिताश्च पशवः स्वयं यं संशितव्रतम् ।
 बहवः स्वर्गमिच्छन्तो विधिवत्सत्रयाजिनम् ।
 नदी महानसाद्यस्य प्रवृत्ता चर्मराशितः ।
 तस्माच्चर्मण्वती पूर्वमग्निहोत्रेऽभवत्पुरा । [700]
 ब्राह्मणेभ्यो ददौ निष्कान्सौवर्णान्स प्रभावतः ।
 तुभ्यं निष्कं तुभ्यं निष्कमिति ह स्म प्रभाषते ।
 तुभ्यं तुभ्यमिति प्रादास्निष्कान्सिष्कान्सहस्रशः ।

वासि). — (L. 682) D₃ यथोक्त-; G₅ तथोक्ता (for यथोक्ता). G₁ M चान्ये (for चान्या). B D₁ D₂ D₃ T G₂-s M₂-s दक्षिणः (for 'णः'). — (L. 683) T G₂ यस्य (for यत्र). G₅ (marg.) राशयः (for पर्वताः). — (L. 684) B₅ कुशलः; D₁ D₂-s च रस-; D₂ सकृत-; D₂-s कृसर-; D₃ पायस-; T G₁-4 M च क्षीर- (for कृशर-). G₅ कुल्याश्च क्षीरवंत्यश्च (for the prior half). D₂ D₃ संभवत् (D₅ 'वंत्'); D₅ संवहस्य-; D₁-s S चामवंत् (for अम-). — (L. 685) B₁ (before corr.) -मात्स्यानां (for -गन्धानां). D₂ ते (for च). — (L. 686) G₅ प्रसादाद् (for प्रभावाच्). D₄ यागस्य; T G₁-4 M₁ च गया; G₅ गायत्री; M₂-s च गयात् (for च गयस्य). T G M₁ विभुता; M₂-s 'ताः (for 'तः'). — (L. 687) D₃ वः (for तत्). D₁ D₂ पुण्यो ब्रह्मसर- (D₁ रसमय)श्च यः (for the post. half). — D₄ om. lines 688-690. — (L. 688) D₂ संजय (for सृजय). — (L. 689) T G₄-s पुण्यतमस् (for 'तरस्'). — D₂ om. line 690. — (L. 690) S (except M₅) अदक्षिण्यम् (for अदा). B D₁ D₂ D₃ D₄-s G₂ अभि; D₂ अति; T अति (for अति). D₁ D₂ श्विल; D₁ शैल्य; D₂-s शैल्य (D₅ 'व्य'); D₅ चैल्य; G₅ शैल्य (for शैल्य). B D₁ D₂ D₃ D₄-s व्याहरन्; D₁ D₂ [अ]वाहर (for [उ]दाहरत्). — Colophon. — Sub-parvan: MSS. अभिमन्युवध. — Adhy. name: B D₁ D₂ 4. 6 षोडशरात्रिकं; D₁ D₂ 'राजकीयं; D₂ 'राजीयं; D₁ 'राजकं; D₅ 'राजीकं; T G₂-s 'राजके गयचरितं. — Adhy. no.: B₁ D₃ S 63; B₂ D₁ 64; D₂ 57. — Śloka no.: D₁ D₂ 22. — (L. 691) G₁ संकृति (for सा). B₃ D₁ D₂ चेन् (for च). D₂ संजय (for सृजय). D₁-s T G₂-s M शुश्रुमः. D₁ मृतं शुश्रुम संजय (for the prior half). — M₂-4 om.

line 692. — (L. 692) D₁ D₂ S (M₂-s om.) विंशति; D₁ द्विपद् (submetric) (for दिशत-). D₁ सुदा आसन् (by transp.); D₂ आसन्मृता; D₃ सुदाश्च- सन्; D₅ मांसं सुदा; D₁-s यू (D₅ यु)पा आसन्. — (L. 693) D₁ D₂-s गृहम् (for गृहान्). B D₁ परिवेशकाः; D₁ G₅ 'वेषिकाः; M₂-s 'वेष्टतां (for 'वेषकाः). — (L. 694) D₁-s पकं पकं; D₁-s पक्षपक्ष्या (D₅ 'क्षा) (for पका- पकं). D₁ दिवारात्रौ; D₁ दिवोरात्रम्; D₅ दिवारात्रिम् (for 'रात्रं). B D₁ D₂ D₁-s अपर्येत धनं तदा (for the post. half). — (L. 695) D₃ द्रव्यं (for वित्तं). D₁-s न्यायेनाधिगता विप्रा (for the prior half). D₁-s येनाक्षय्ये नगोत्तमे; S येनाक्षय्यं नगोपमं (G₅ 'त्तमं; M₂-s 'त्तमाः) (for the post. half). — (L. 696) D₁ D₂-s वेगेन (for धर्मेण). M₂-s (sup. lin.) वशे (for वशे). — (L. 697) M₁-s तं (for यं). B₁-s D₄-s S संशित- (for संशित-). — (L. 698) M₁ बृहन्तः (for बहवः). D₁ D₂-s M₂ सत्रयाजिनः (for 'जिनम्). — Lines 699-703 = (var.) 12. 29. 116-117. — (L. 699) D₂ महानदी; D₁ 'रसाद् (for 'नसाद्). D₂ D₃ यत्र (for यस्य). G₅ या नदी मानभागस्य (for the prior half). D₁ D₂ निस्तुता; D₄ अमवद् (for प्रवृत्ता). D₂ D₃-s धर्म- (for चर्म-). S -राशिभिः (for 'तः). — (L. 700) S नाम (for पूर्वम्). B₁-s D₁ अग्निहोत्राद् (for 'होत्रे). S ख्याता पुण्यस (T₂ G₁-s M₁-s 'ग्या स) रिद्धरा (for the post. half). — (L. 701) B D₁-s T G₂-s M₂-s [5]दद (T G₂-s 'दा)म् (for ददौ). D₂ D₃-s सु-; D₁ स्म (for स). D₁ D₂ सौवर्णान्यः सदस्पतिः; T G₂-s ब्राह्मणेभ्यः प्रताम्यति; G₁ M₂-s बाहुस्त- (M₂-s 'हू त)स्य प्रताम्यति (M₂-s 'तः); M₁-s ब्राह्मणेषु प्रताम्यति (for the post. half). — D₂ D₃-s om. line 702. — (L. 702) D₁-s तुभ्यं निष्कस्तव निष्क (for the

ततः पुनः समाश्रय निष्कानेव प्रयच्छति ।

अल्पं दत्तं मयायेति निष्ककोटिं प्रदाय सः । [705]

एकाह्वा दास्यति पुनः कोऽन्यस्तत्संप्रदास्यति ।

सहस्रशश्च सौवर्णान्वृषभान्गोशतानुगान् ।

अध्यर्धमासमदद्ब्राह्मणेभ्यः शतं समाः ।

अग्निहोत्रोपकरणं यज्ञोपकरणं च यत् ।

ऋषिभ्यः करकान्कुम्भान्स्थालीपिठरमेव च । [710]

शयनासनयानानि प्रासादांश्च गृहाणि च ।

वृक्षांश्च विविधान्दद्यान्नानि च धनानि च ।

prior half). Dn1 om. from the post. half of line 702 up to the prior half of line 705. T G2-4 संप्रति-; G1 M स्य प्रति-; G5 च प्रति- (for ह त्म प्र-). B1-भापतः; Dc1 D1 M4-भाषति. D1.8 इति तेभ्यः सदस्य (D1 सदस्य) तिः (for the post. half). — D2 om. lines 703-712. — (L. 703) B1-3 Dc1 D3.6 तुभ्यं तुभ्यं तुभ्यमिति; G5 इति तुभ्यं तुभ्यमिति (for the prior half). B1-3 Dc1 D3.6.1 G5 प्रादान्; T G3 देवो (for निष्कान्). B2 निष्कं; Dn2 D5 G1 M1.2 शत-; D3 om. (for निष्कान्). D4 वो निष्काः सहस्रशः (for the post. half). — (L. 704) B1 पुनः (for ततः). D3 तवाश्रयः; G1.5 M1.2 4.5 समाश्रयः. D4 निष्कान्येषां; D5 निष्कानि च (for निष्कानेव). G2 प्रदास्यति (for प्रयच्छति). — (L. 705) D2.6 हीति; D5.7.8 श्वेतन् (for [अग्निः]). M3-कोटिं (for -कोटिं). Dn1 D1.8 सहस्रशः (for प्रदाय सः). — (L. 706) D1.8 तस्याति (for दास्यति). S एकाह्वा तास्यति ततः (for the prior half). Dn2 पुनः कोटीः; D5.6 पुनः कोन्यः (for कोऽन्यस्तत्सं). Dn1 D1.8 तेभ्यो विप्राब्रुवन्वचः; D4 निष्कान्येषां प्रयच्छति; S का (G1 M3 त्वा) य विप्रा इति ब्रुवन् (for the post. half). — After line 706, B Dc1 Dn2 D1.3-8 ins.:

दिग्जपाणिवियोगेन दुःखं मे शाश्वतं महत् ।

भविष्यति न संदेह एवं राजादददद्भु ।

[(L. 2) D5 [अ]ददाद्.]

— Ms. 4 om. line 707. — (L. 707) G1 M1.2 सहस्रं वश (for 'सहस्र'). B5 Dn1 D1.8-शतानुगान् (for 'नुगान्'). B1 वृषभं गोवृषानुगं (for the post. half). — After line 707, B Dc1 Dn2 D1.3-8 ins.:

साष्टं शतं सुवर्णानां निष्कमाहुर्धनं तथा ।

[D1 साष्टं; D3-8 साष्टं (for साष्टं). B1.2.5 पणं; Dc1 Dn2 D3.4.6 पलं; D1 नराः; D5 फलं (for धनं). D1 सदा (for तथा).]

सर्वं सौवर्णमेवासीदन्तिदेवस्य भीमतः ।

तत्रास्य गाथा गायन्ति ये पुराणविदो जनाः ।

रन्तिदेवस्य तां दृष्ट्वा समृद्धिमतिमानुपीम् । [715]

नैतादृशं दृष्टपूर्वं कुबेरसदनेष्वपि ।

धनं च पूर्वमाणं नः किं पुनर्मनुजेष्वपि ।

न्यक्तं वस्तोकसारयमित्यूस्तत्र विस्मिताः ।

सांक्षिते रन्तिदेवस्य यां रात्रिमतिथिं वसेत् ।

आलभ्यन्त तदा गावः सहस्राण्येकविंशतिः । [720]

तत्र सः सूदाः क्रोशन्ति सुसृष्टमणिकुण्डलाः ।

— (L. 708) Dn1 अर्द्धांशः; D1.8 अन्वर्ध- (for अध्यर्ध-). B5 S अर्द्धाद् (for 'द्'). D4 परं (for शतं). G1 M1.2 गवां (for समाः). — (L. 709) D5 अग्निर् (for अग्नि-). B1.5 तत्. Dn2 D3-6 बहुधान्यं धनं च यत्; T G2-4 M3 गृहोपकरणं च यत् (T G3 तत्); G1.5 M (M3 sup. lin.) द्रव्योपकरणं च यत् (for the post. half). — (L. 710) Dn D3.4 कनकान्; D5 कान्नान् (for करकान्). D1 कुंडान् (for कुम्भान्). D1.8 विक्रयः करकाः कुंभाः; T G1-4 M पात्रयः शरावकुंभाश्च; G5 पात्रं शरावर्धं भांडान् (for the prior half). Dn1 D1.4.5 T -पीठान् (for -पि). G1 M1.2 स्थालीपिठकानि च (for the post. half). — (L. 711) D1.8 शयनाशन- (for 'सन-). D5-यानानि (for -या). D1.8 T G1 M प्रासादाश्च; D5 प्रमदाश्च (for प्रासादांश्च). D4 वा (for च). — (L. 712) B1 वृक्षास्तु (for 'श्व). B5 विविधोधानान्; Dn2 D3-6 'धान्द्रव्यान् (for 'धान्यबाद्). Dn1 D1.8 वृक्षसंदांश्च विविधान्; S वृक्षभांडांश्च विविधान् (for the prior half). B (except B5) Dc1 पञ्चोपवनानि च; Dn1 D1.8 द्रव्याण्यनुपमानि च; Dn2 D3.4.5 रत्नानि विविधानि यत् (Dn2 D4 च); S दृष्टवान्यनुपमानि च (for the post. half). — D3 om. lines 713-714. — (L. 713) B1.3 Dc1 अस्य; Dn2 D4-6 अपि (for एव). Dn1 D1 सौवर्णं सर्वमेवासीद् (for the prior half). — (L. 714) Dn1 D1 S स (for [अ]स्य). — (L. 716) B5-सदने प्रति; G5-अवनेष्वपि (for 'सदने'). — (L. 717) Dc1 G5 पूर्वमाणेन (G5 'जैनं); D1 पूर्वमाणं न; D2 पूर्णमासाश्च; D3.6 पूर्वमासीषद्; D4 पूर्वमानं च; D5 पूर्वमानेन (for 'माणं नः). Dn2 धनमापूर्वमासीषद्; D1.3 G1 M1.2 धनं चंचूर्ध्वमाणैः; T G2-4 M3 धनं चापूर्वमाणं तत्; M3.4.5 (sup. lin.) धनं चंचूर्ध्वमाणानां (for the prior half). T G3.4 मानवेपु; G1.2.5 M1.2.5 मानवेपु (for सनुवेपु). Dn2 D5 अपि (for इति). Dn1 D1.8 M3.4 किं पुनर्मनुजेष्वपि (for the post. half). — D2 om. lines 718-724. — (L. 718) Dn1 D1.8 निलं

सूपभूयिष्ठमशीध्वं नाद्य मांसं यथापुरम् ।
 रन्तिदेवस्य यत्किञ्चित्सौवर्णमभवत्तदा ।
 तत्सर्वं वितते यज्ञे ब्राह्मणेभ्यो ह्यमन्यत ।
 प्रत्यक्षं तस्य हन्यानि प्रतिगृह्णन्ति देवताः । [725]
 कन्यानि पितरः काले सर्वकामान्द्रिजोत्तमाः ।
 स चेन्ममार सृजय चतुर्भेदतरस्त्वया ।
 पुत्रात्पुण्यतरस्तुभ्यं मा पुत्रमनुत्प्यथाः ।
 अयज्वानमदाक्षिण्यमधि श्वेत्येत्युदाहरत् ।

Colophon.

वस्तौकसारोयम्; Dn2 D1.3.6 G2 M1.2 व्यक्तं वस्तौ (D1 'स्तो')कसारो (D1.6 'रो')यम्; D4 व्यक्तं च स्वोक्तसारोयम्; D5 व्यक्तं स्वलोकं (for the prior half). G5 तस्य (for तत्र). — Dn1 om. line 719. — (L. 719) G1 सांक्रुत्वो (for 'ते'). B3 भवेत् (for वसेत्). Dn1 D7.8 अनेकमिति सर्वशः (for the post. half). — (L. 720) Dn D3.6-8 M5 अलभ्यत; D1.6 आलभ्यत (for आल). — (L. 721) Dn1 D7.8 यत्र (for तत्र). B1.8 Dn1 [अ]स्य (for स). D4 शराः; M2-5 सुताः (for सुदाः). — (L. 722) B2.4 Dn2 D1.3.4.6 T2 G1.2 सूर्यं; B5 शूर्यं; D5 सूर्यं (for सूप-). S अश्वीत (for 'ध्वं'). Dn1 नातिमांसं; D2.4.6 पकं मांसं; D5 आर्यं मांसं; G5 नान्यमांसं (for नाद्य मांसं). B D (D2 om.) T1 G2 यथा पुरा (for यथापुरम्). — (L. 723) B1.3.4 Dn1 Dn2 D2.4.6 सुवर्णम् (for सौ). Dn1 D7.8 गुरा (for तदा). — (L. 724) T G5 तु कृते (for वितते). S ह्यमह (G5 'स')त (for ह्यमन्यत). Dn1 D7.8 दक्षिणामत्यकालयत् (for the post. half). — (L. 726) Dn1 D7.8 कन्यानि चापि पितरो (for the prior half). B3 सर्वकामाद्; Dn1 ह्यत्र काले; Dn2 D4.6 सर्वकामं; D2.6 सर्व एव; D7.8 अन्नकाले; T G M1.2 सर्वोक्तमान् (G5 'मं') (for सर्वकामान्). — (L. 728) T G2-5 पुण्यतमस् (for 'तरस्'). — D2 om. line 729. — (L. 729) D4 अयज्वीनम् (for 'ज्वानम्'). S (except M2.5) अदक्षिण्यम्. B Dn1 D1.3-8.8 अभि; Dn2 अति; T अयि (for अयि). Dn1 D1 श्वेत्य; Dn1 श्वित्य; D2.4 श्वेत्य; D5 चैत्य; D6 श्वेत्य; D8 श्वित्य; T श्वेत्य (for श्वेत्य). B Dn1 Dn2 D1.3-8 व्याहरन्; Dn1 D3 [अ]वाहर (for [अ]दाहरत्). D1 अभि श्वित्येववाहर (for the post. half). — Colophon. — Sub-parvan: MSS. अभिमन्युवध. — Adhy. name: B Dn1 D2-8 षोडशराजिकं; Dn1 D2 'राजकीयं; Dn2 'राजीयं; D1 'राजकं; T G2.4 'राजके रंतिदेवचरितं; G2 रंतिदेवचरितं. — Adhy. no.: B1 S 64; B2 Dn1 65; D2 58. — Sloka no.:

नारद उवाच ।

दौष्यन्ति भरतं चापि मृतं सृजय शुश्रुम । [730]
 कर्माण्यसुकराण्यन्यैः कृतवान्यः शिशुर्वने ।
 हेमावदातान्यः सिंहाद्वन्द्वद्व्याधुधान्वली ।
 निर्वीर्यास्तरसा कृत्वा विचकर्ष वचन्ध च ।
 क्रूरांश्चोभ्रवलान्याघ्रान्दमित्वा चाकरोद्देशे ।
 मनःशिला इव शिलाः संयुक्ता जतुराशिभिः । [735]
 व्यालादींश्चातिबलवांस्तत्प्रतीपान्नाजानपि ।
 दंष्ट्रासु गृह्यावरुह्य शुष्कास्यानकरोद्देशे ।

Dn1 18. — (L. 730) Dn1 दौष्यन्ति; Dn1 D7.8 दौष्यन्तं; D1.2.4 'ष्कन्ति' (D2.4 'ति'); G1.3.6 M दौष्य- (G4.5 'ष्य')ति; G3 दौष्यन्ति (for दौष्यन्ति). D5 संजय (for सृजय). Dn D1.5.7 S (except G5) शुश्रुमः. — (L. 731) Dn2 [अ]सुकराणि; D4 सुकराणि (for [अ]सुक). Dn1 D7.8 एव (for अन्यैः). G5 वच्छुचिर् (for यः शिशुर्). M4 शिशुर्यः कृतवान्वने (for the post. half). — (L. 732) B1 हिमवत्यागतान्सिंहान्; B2-5 G2 हेमावदातान्यः सिंहान्; M1.2 हेमावदातः सिंहशिशुर् (hypermetric) (for the prior half). G1 M1.3 वने (for वली). — (L. 733) D1 निर्दिष्टांस्; D5 निर्वायोस् (for निर्वा). D4 सहसा (for तरसा). D7.8 निचकर्त (for विचकर्ष). G1 M1.2 वृक्षेषु निवर्ध च (for the post. half). — D4 om. lines 734-738. — (L. 734) B4.5 Dn1 D1.7.8 M2-5 उग्रतरान्; D3.6 'रवान्; G4 अग्रववान् (for उग्र). Dn1 D7.8 दमयित्वा; S दमयित्वा (for दमित्वा च). — Dn1 D7.8 om. line 735. D2 om. lines 735-745. — (L. 735) D1 मनःशिलाः समायुक्तान् (for the prior half). Dn1 संयुक्ता (for संयुक्ता). Dn2 D1.3 संयुक्ता धा (D1 'क्तान्')तुराशिभिः; D5 संयुक्ता जातुवचुभिः; D6 संयुक्ता धातुरातुरा; T प्रभंक्त्वा जितकाशिनः; G1 M ममदाजलिना विभुः; G2 प्रावृत्तांजनराशिभिः; G3 प्रभंक्त्वांजनकाशिनः; G4 प्रभंक्त्वा शितकाशिनः; G5 प्रभंक्त्वांजनकाशिनः (for the post. half). — (L. 736) D2.6 चापि (for चाति-). Dn1 D7.8 S व्यालान्दी (Dn1 D7.8 'लान्दी'; T G2 M3 'लदी-'; G2 'लदी-'; G4 'लदी-'; G5 'लदी')वांश्चातिबलवांस् (for the prior half). B1-3.5 Dn1 ताम्रप्रतीपान्; B4 D1 सुप्रतीपान्; Dn1 D7 S त्रिप्र (T G2-5 त्रिप्र)भिन्नान्; Dn2 तत्प्रतीपान्; D5 स प्रतीक्ष्य; D6 तत्प्रतीक्ष्य; D3 त्रिप्रभिन्नान् (for तत्प्रतीपान्). T G2-4 सुप्रोपमः; G1.5 M धनोपमान् (for गजानपि). — (L. 737) B1 (marg.). 2.4 [अ]पिरुह्य; B5 स शिशुर्; Dn2 [अ]पिरुह्य; D5 [अ]

महिषानप्यतिबलान्वलेन विचकर्षे ह ।

बलिनः सुमरान्वह्नाधानासत्त्वानि चाप्युत ।

कृच्छ्राप्राणान्वने बद्धा दमयित्वाप्यवासृजन् । [740]

तं सर्वदमनेत्याहुस्तद्विदस्तेन कर्मणा ।

तं प्रत्यपेधजननी मा सत्त्वानि विजीजहि ।

सोऽश्वमेधशतेनेष्ट्वा यमुनामनु वीर्यवान् ।

त्रिशताश्वान्सरस्वत्यां गङ्गामनु चतुःशतान् ।

सोऽश्वमेधसहस्रेण राजसूयशतेन च । [745]

पुनरीजे महायज्ञैः समासुवरदक्षिणैः ।

अग्निष्टोमाग्निरात्राणामुत्थप्यविश्वजितानिभि ।

वाजपेयेष्टिसत्राणां सहस्रैश्च सुसंभृतैः ।

इष्ट्वा शाकुन्तलो राजा तपयित्वा द्वित्रान्धनैः ।

सहस्रं यत्र पद्मानां कण्वाय भरतो ददौ । [750]

जाम्बूनदस्य शुद्धस्य कनकस्य महायज्ञाः ।

यस्य यूपाः शतव्यासाः परिणाहेन काञ्चनाः ।

समागम्य द्विजैः सार्धं सेन्द्रैर्देवैः समुच्छ्रिताः ।

वरुध; Ds. 6 [अ]विगृह्य (for [अ]वरुह्य). Dn1 Dr. 8 इतेषु
गृहाधिरुहन्; S श्रीडमानः सुसंकुद्धो (for the prior half).
B3 (marg. also as above) शुष्कोष्टान्; B3 व्यात्तास्थान्;
Dn1 Dr. 8 स्वतास्थान्; Dn2 वनस्थान्; D3 शुष्वा; Ds
[अ]मृका (for शुष्का). Ds आत्मनः कुरुते वशः; S दम-
यित्वा न मुंचति (for the post. half). — After line
737, S ins.:

सुवर्षणां मन्वुमतां बलिनां युद्धशालिनाम् ।

[G5 सुपर्णां (for सुवर्षणां). M3. 4 मन्वुपानां (for
मतां). G1 M युद्धशालिनां.]

— (L. 738) Dc1 बलाद् (for बलान्). Dn1 Dr. 8
अविषाणान्मरोन्मत्तान्; S महिषाणां सुश्रंगाणां (M1. 2 नां)
(for the prior half). B3 Dc1 Dn2 D1. 3. 4. 5 बलिनो
(for बलेन). B4 चकर्षे बलिनो बने; Dn1 Dr. 8 बलिनां
युद्धशालिनां; S शतान्धमयद्वलात् (for the post. half).
— After line 738, B D ins.:

सिंहानां च सुहृत्तानां शतान्धमयद्वलात् ।

[Dn1 Dr. 8 सदर्षाणां; Dn2 Ds. 4. 6 सुदीर्घाणां (for
सुहृत्तानां). B3 सिंहनादं च हृत्तानां (for the prior half).
D2 [आ]कर्षयद् (for [अ]रमयद्). Dn1 Dr. 8 बली (for
बलात्); Dn2 Ds. 6 शतानां दमयद्वलात्; D1 शतनादमयद्वलात्
(for the post. half).]

— (L. 739) T G2-1 सुमरान्; G1. 5 M शरभान् (for
बलिनः). T G3. 4 शरभान् (for सुमरान्). B1 (marg.)
Dc1 न्यकृन् (for खड्गान्). Dn1 Dr. 8 बलिनः स (Dn1 ज-
रभान्शरान् (for the prior half). D3 वाप्युत; T G1. 3. 4
M चाव्यथ; G5 चाव्यथ (for चाप्युत). D4 अन्यान्सत्त्व-
विवाप्युत (for the post. half). — (L. 740) B कृच्छ्र-
प्राणैः; Dn1 Dr. 8 कृपावास्तान्. Ds वशे (for बने). D3
कृपावास्तान्शे चक्रे (for the prior half). B3 Dc1 Dn2
Ds. 6 T G1. 3 व्यापुञ्जद; Dn1 Dr. 8 [अ]स्ववा; D1
[अ]प्यवा; D4. 5 उपा; G4 M व्यावा (for [अ]प्यवा).
— (L. 741) Dn1 Dr. 8 आह (for आहुर). B1 ते दिवा-

नस्य; B1 (marg.) स्वातस्तेनान्य; B2-5 द्वित्रास्तेनान्य; Dc1
स्वातस्तेन स; Dn1 Dr. 8 स द्वित्रास्तेन; Dn2 D1. 3-4 ते
द्वित्रास्तेन; G2 द्वित्रास्ते तेन (for तद्वित्रास्तेन). — (L. 742)
Dn2 transp. मा and सत्त्वानि. B1 (marg. as above)
जहीति वै; B3 (marg.) जहीहि वै; Dn1 Dr. 8 विहिंसय
(Dr. 8); D3 निजीजहि; Ds विनिजय (sic); S व्यनीतय
(for विजीजहि). — Ds. 8 om. (hapl.) lines 743-744.
— (L. 743) B2 शतैरोजैः; Dn1 Dr. 7 S शतेनेजे (for
नेष्ट्वा). B2 उप (for अनु). Dn2 Ds. 6 यमुनावां च वीर्यवान्
(for the post. half). — (L. 744) B1-3 त्रिशतोवा (B4
न्यान्); Dc1 Dn2 त्रिश (Dn2 स)तांश्च; D1 त्रिशताश्वान्;
D3 त्रिशति च; D4 त्रिशतश्च; Ds M2-6 त्रिशता च; T
G2-6 त्रिशतं च; G1 M1. 2 त्रिशतं च (for त्रिशताश्वान्).
G2 सरस्वत्या (for स्वत्यां). Dn1 Dr. 8 श्रीमत्तानाहरदाप्यो
(for the prior half). Dn2 Ds. 4. 6 गंगयां च (for
गङ्गामनु). Dn1 च सागतः; Ds. 6 T G2-1 चतुःशतैः; G1. 5
M चतुःशतैः. Dr. 8 गंगा च मनुभृताः (sic) (for the post.
half). — (L. 745) D1 om. (hapl.) from स्त्रेण up
to सह (in line 748). G1 M1. 2 वाजपेय- (for राज-
सूय). — Ds. 8 om. lines 747-756. — (L. 747)
B Dc1 Dn2 Ds-6 अग्निष्टोमाग्नि (B2 [marg.] मग्नि)रात्रा-
स्थान् (for the prior half). B1 तथा; B2-5 Ds. 4. 6
इष्ट्वा; Dn Dr. 8 सुखा (Dn2 स्था) (for उक्थ-);
B2-4 Dc1 Ds. 4. 6 विश्वजिता (for त्रिजान्). B3 क्षपि;
G5 च सः (for अग्नि). — (L. 748) B Dc1 Dn2 Ds.
5. 6 वाजपेयसहस्राणां; D4 वैश्वतिरात्रान्वा; G5 वातुमोर्षेष्ट-
सत्राणां (for the prior half). B Dc1 Dn2 D1. 2. 4. 5 T
G2-1 सुसंभृतैः; Ds सुसंभृतैः; G5 जितैः (for भृतैः).
— (L. 749) T G1 M शाकुन्तलो. — Line 750 = 12.
29. 44^{cd}. — (L. 750) Dr. 8 दः स (for दय). B2
(marg. as above). 3 Dc1 Dn2 D1-6 कण्वाणां (for
पद्मानां). D4 परमं (for भरतो). — (L. 751) B1. 5
कोटि चास्य; B4 कोटि चापि; G2. 5 जनकस्य (for कन).
Dn1 Dr. 8 महोच्छ्रिताः (for महायज्ञाः). — (L. 752)
Dn1 Dr. 8 तस्य (for दस्य). Dn1 शतव्यासाः; G3 व्यासाः

स्वलंकृता भ्राजमानाः सर्वैरत्नैर्मनोरमैः ।

हिरण्यमश्वान्द्विरदात्रथानुद्धानजाविकान् । [755]

दासीदासं धनं धान्यं गाः सवत्साः पयस्विनीः ।

ग्रामान्गृहाणि क्षेत्राणि विविधांश्च परिच्छदान् ।

कोटीशतायुतं चैव ब्राह्मणेभ्यो ह्यमन्यत ।

चक्रवर्ती ह्यदीनात्मा जेतारिस्त्वजितः परैः ।

स चेन्ममार सृज्य चतुर्भद्रतरस्त्वया । [760]

पुत्रात्पुण्यतरस्तुभ्यं मा पुत्रमनुत्पथ्याः ।

अयज्वानमदाक्षिण्यमधि श्वेत्येत्युदाहरत् ।

Colophon.

नारद उवाच ।

पृथुं वैभ्यं च राजानं मृतं सृज्य शुश्रुम ।

यमभ्यपिञ्चनान् राज्ञ्ये राजसूये महर्षयः ।

अयं नः प्रथयिष्येत सर्वानित्यभवत्पृथुः । [765]

क्षतान्नस्त्रास्यते सर्वानित्येवं क्षत्रियोऽभवत् ।

(for 'व्यामाः). B Dc1 Dn2 Ds-6 यस्य यूपः शतव्यामः; D1 यस्य यूपशतव्याम- (for the prior half). B1 (marg.). 3 परिणादे च; G6 परिणामाः स-; M1.2 परिणादेम (sic); M3-6 'हेय (for 'हेन). B Dc1 Dn2 D1.3-1 G2 कांचनः. — T G2 om. line 753. — (L. 753) Dn1 Dn1.3 सहस्रव्यामाश्चोच्छ्राये; G1.8-5 M सहस्रव्याम (G4.5 'य' मुद्रिद्धाः (for the prior half). B1.3-5 Dc1 Dn2 D1.3.5 समुच्छ्रितः; B2 Ds 'स्थितः (for 'च्छ्रिताः). — (L. 754) D4 स्वलंकृतो. B D1 स्व (B1.5 D1 अ)लंकृताभ्राजमानान्; Dc1 Ds.5 स्व (D3 अ)लंकृतान्भ्राजमानान्; D6 स्वलंकृतो भ्राजमानः (for the prior half). B4 सर्वरत्न-; Dn1 Dn1.3 सर्वै रत्नैर्. Dn1 D1 मनोहरैः; D1 'नुतैः; G1.2.4.6 M 'रमाः (for 'रमैः). — (L. 755) B1.2 (marg. as above). 3 Dc1 D1 हैरण्यान्; Dn2 Ds-5 हैरण्यम् (for 'हिर'). Dn2 Ds.5.6 अश्व- (for अश्वान्). D4 सरथान् (for द्विरदान्). T G2-6 हिरण्यमाश्वद्विरदान्; G1.2 M हिरण्यमाश्वान्द्विरदान् (for the prior half). Dn1 Dn1.3 तथा चोद्धान्; Ds om. रथाः; T G2-5 उद्धानश्चान् (for रथानुद्धान्). Dn2 Ds.5.6 M3-5 अजाविकं. — (L. 756) G4 'दासान् (for 'दासं). Dn2 Ds.5 गावः (for धान्यं). Dn1 Dn1.3 दासीदासान् (D1 'सा य)नं कन्यां (for the prior half). D6 वत्साः सु-; M3 सहस्राः (for सवत्साः). Dn2 Ds.5 सवत्साः सुपयस्विनीः (for the post. half). — (L. 757) Dn1 ग्रामाः; D1.3 ग्राम- (for ग्रामान्). B4.5 D2 गृहांश्च (for गृहाणि). — (L. 758) M3-5 कोटि (for कोटी-). B Dc1 Dn2 D1-6 कोटीश- (B2 'टीः श-; B3 'टिश)शायुतांश्चैव (Dn2 'श्वापि) (for the prior half). Dn1 Dn1.3 च संवशः; T G1-2.6 M1-3.5 क्षमंहतः; G4 क्षमंसतः; M4 [S]म्यमंहत (for क्षमन्यत). — D2 om. line 759. — (L. 759) D1 सुदीनात्मा (for ह्यदी-). T G2-5 M3.4 चक्रवर्ती (G2.5 'ति)रदीनात्मा (for the prior half). Dn1 Dn1.3 जेता यस्य; D1.3.4 जितारिस् (for जेतारिस्). B1.3 Dc1 Ds जे (D6 जि)तारि-नजितः परैः; B1.5 जितारिष्ठांजिते परैः; Ds जेतारिस्त्वपर-जितः; Ds जेता यस्य जितः परैः; T G2-4 जेता नोद्वेजितः परैः; G1.5 M जेता युद्धे जितः परैः (for the post. half).

— (L. 760) D2.6 संजय (for सृज्य). — (L. 761) Dn1 Dn1 पुण्यात् (for पुत्रात्). T G2-5 पुण्यतमस् (for 'तरस्). — D2 om. line 762. — (L. 762) S (except G2 M6) अदक्षिण्यम्. B Dc1 Dn1 D1.3-3 अभि; Dn2 अति; T अवि (for अधि). Dc1 D1 श्वैल; Dn1 D3 क्षिप्रः; D3.4 श्वैव्यः; D5 चैल्यः; T श्वैल्य (for श्वैल). B Dc1 Dn2 D1.3-6 व्याहरन्; Dn1 Dn1.3 [अ]वाहर (D1 'रः) (for [उ]दाहरत्). — Colophon. — Sub-parvan : MSS. अभिमन्युवध. — Adhy. name : B Dc1 Dn2 Ds-6 षोडशराजि (Dn2 Ds 'जी)कं; Dn1 D2 G6 'राज-कीयं; D1 'राजकं; T G3.4 'राज (T1 'जि)के भरतचरितं; G2 भरतचरितं. — Adhy. no. : B1 D3 S 65; B4 64; Dn1 66; D2 59; Ds.7 67. — Śloka no. : Dc1 Dn1 17; D6 14. — Lines 763-770 = (var.) 12. 29. 128-132. — (L. 763) B4 Dc1 Dn2 Dn1.3 पृथुं वैभ्यं; Dn1 D1.4.6 पृथुवैभ्यं (D6 'न्यं); S वैभ्यं पृथुं (by transp.). B1.2 पृथुं च वैभ्यं च राजानं (hyper-metric); B4 पृथुं च वैभ्यं राजानं (for the prior half). Ds संजय (for सृज्य). Dn Dn1.3 S शुश्रुमः. — (L. 764) Ds.6 यदाभिर्षिचन् (for यमभ्य-). Dn1 Dn1.3 राजा-नं; S संमंत्र्य (for साम्राज्ये). — (L. 765) B Dc1 Dn2 Dn1-6 यत्न (Ds.6 'त्त)तः प्रथितेत्यु (B3 'ते ह्य)नुः; Dn1 Dn1.3 यत्नैर् पाषिंवा ऊनुः; G1 M अयं नः प्रथयेत्वेव (M1 'यत्नेति) (for the prior half). B1-3.5 D2.3.6 अभि-भवत्; B4 Dc1 Dn2 Dn1.4 अभिमवत्; Dn1 Dn1.3 नोभि-भवेत् (for इत्यभवत्). Ds सर्वमभ्याभवत्पृथुः (for the post. half). — (L. 766) D1 क्षतातस्य; D4 T2 'ब्राह्मस्य; Ds कृतातस्य; Dn1.3 क्षत्रं नस् (for क्षतान्नस्य). Dn1 M3-6 त्रायते (for त्रास्यते). Dn1 Dn1.3 S नित्यम् (for सर्वान्). S इति च (for इत्येवं). Dc1 [S]भवत्; Ds भवेत् (for सभवत्). — D1 om. line 767. — (L. 767) D1.6 पृथुः (for पृथुं). Dc1 Dn Dn2.4.6.1 वैभ्यं (for वैभ्यं). Dn2 Ds तदा; M3.4 पृथुं (for प्रजा). G2 शकासेति (for रक्ताः स्मेति). Ds T G2-4 यदाब्रुवन् (for यदब्रु-). Dn1 Dn1.3 रक्ता ह्यसौ तदाभवत्; Dn2 Ds.6 रक्ष-

पृथुं वैन्यं प्रजा दृष्ट्वा रक्ताः स्मेति यदब्रुवन् ।
ततो राजेति नामास्य अनुरागादजायत ।
अकृष्टपच्या पृथिवी आसीद्वैन्यस्य कामधुक् ।
सर्वाः कुम्भदुहो गावः पुटके पुटके मधु । [770]
आसन्दिग्धमया दर्भाः सुखस्पर्शाः सुखावहाः ।
तेषां चीराणि संवीताः प्रजास्तेष्वेव शेरेते ।
फलान्यमृतकल्पानि मूलानि च मधूनि च ।
तेपामासीत्तदाहारो निराहाराश्च नाभवन् ।
अरोगाः सर्वसिद्धार्था मनुष्या अकुतोभयाः । [775]
न्यवसन्त यथाकामं वृक्षेषु च गुहासु च ।

प्रविभागो न राष्ट्राणां पुराणां चाभवत्तदा ।
यथासुखं यथाकामं तथैता मुदिताः प्रजाः ।
तस्य संस्तम्भयन्नापः समुद्रमभियास्यतः ।
पर्वताश्च ददुर्भागं ध्वजमङ्गश्च नाभवत् । [780]
तं वनस्पतयः शैला देवासुरनरोरगाः ।
सप्तर्षयः पुण्यजना गन्धर्वाप्सरसोऽपि च ।
पितरश्च सुखासीनमभिगम्येदमब्रुवन् ।
सम्राडसि क्षत्रियोऽसि राजा गोप्ता पितासि नः ।
देह्यस्मभ्यं महाराज प्रभुः सखीप्सितान्वरान् । [785]
यैवेयं शाश्वतीस्तृप्तोर्वैतेयिष्यामहे सुखम् ।

स्मेति यदाब्रुवन् (for the post. half). — (L. 768) T G2-4 तस्माद् (for ततो). Dn1 नामासाव्; D1.8 नामा स (for नामास्य). D1 अनुगायति मानवाः (for the post. half). — (L. 769) M3-5 अकृष्टपच्या (for "पच्या). G5 ह्यासीद् (for आ). Dc1 D1.1.6 वैष्वस्य (for वैन्यस्य). — (L. 770) Dn2 कुम्भदुहा; D1 कुम्भो दुहो; D2.3.6 कुम्भदुयो (D2.6 "घा"); D3.4 S कामदुहा (for कुम्भदुहो). B5 सदा मखे दुहा गावः (for the prior half). — (L. 771) G1 M सुरमयो (for हिरण्यमया). S वृक्षाः (for दर्भाः). Dn1 D1.8 S सुगंधिनः (for सुखावहाः). — (L. 772) D1 चीरेण (for चीराणि). — (L. 773) Dn1 "कल्याणौ; D2 "कल्यानि; D1.8 "वृक्षाणां (for "कल्पानि). B1.5 D1.2 स्वादूनि (for मूलानि). B1.3 Dc1 D2 च मृदूनि च; Dn1 D1.8 विविधानि च; D1 lacuna. D2 इयति च मृदूनि च (for the post. half). — (L. 774) Dn2 तु नो (for च न). Dn1 विहारश्चापितोभवत्; D3 निराहाराश्च नाभवत्; D1.8 विहारश्चापि नाभवत्; S निराहारोपि नाभवत् (for the post. half). — Lines 775-776 = (var.) 12. 29. 133. — (L. 775) B2-5 Dc1 Dn2 D1-3.5.6 अकुतोभयाः; Dn1 D1.8 त्वकुतो; D1 च कुतो (for अकुतो). — (L. 776) D3 S निवसन्ति (for न्यवसन्त). D3 न्यवेशयंस्तदा कामं (for the prior half). B5 Dn2 S वृक्षेषु (for गुहासु). — (L. 777) Dn1 D1.8 पुत्राणां (for पुराणां). D2.4 बाभवत्; G1.5 अभं (for चामं). — (L. 778) Dn1 D1.8 G1 M यथा सम्यक्; T G2-5 यथा रम्यं (for यथाकामं). B1.3 Dn1 D1.8 T G2-5 तथैव; B2 तथैषा; Dc1 Dn2 D2.3.5.6 यथैता (for तथैता). G1 M तदे (G1 "ये) वसुधिताः प्रजाः (for the post. half). — Lines 779-780 = (var.) 12. 29. 134. — (L. 779) B Dc1 Dn1 D1.2 संस्तमिता; Dn2 तस्तंभिर; D3-6 संस्तंभिर (for संस्तम्भयन्). B Dc1 Dn Dn1 D1.2.5 ह्यापः; D3.6 चापः; D1 त्वापः (for आपः). B1-3 D1.4 त्वभियास्यतः; Dc1 D3 प्रति (for अभि). — (L. 780) T G2-5 [अ]वलीयंत;

G1 M अवलीयंत (for ददुर्भागे). G M1.2 -संगश् (for -मङ्गश्). — (L. 781) Dn2 दे (for तं). Dn1 D1.8 G1.2 M1.2 -महोरगाः (for -नरो). — (L. 782) G1 M1.2 पुण्यजना (for "जना). B1 D3 गणाः; D4 गणः (for अपि च). Dn2 D3 गंधर्वाप्सरसां गणाः; D5 "वांश्चाप्सरोगणाः (for the post. half). — (L. 783) M3-5 इदं वचनमब्रुवन् (for the post. half). — (L. 784) D1.8 सम्राट् त्वमसि क्षत्रियो (for the prior half). S [अ]सि पाति (G1 M "हि) (for पितासि). — (L. 785) G1 M1.2 अस्माकं (for अस्मभ्यं). Dn2 D3.5.6 प्रभुरान् (for प्रभुः सन्). — (L. 786) B4 शाश्वतं (for "तीत्). Dn2 D3.1.6 तृप्ता (for तृप्ती). Dn1 D1.8 यैवेयं शाश्वति तृप्ति; D3 S यैवेयं शाश्वतं तृप्ता (for the prior half). G4 वयं (for सुखम्). — After line 786, S ins. :

विज्ञापितः प्रजाभिस्तु प्रजानां हितकाम्यया ।
धनुर्गुह्यं पुरकांश्च वसुधामाद्रवदली ।
ततो वैन्यमयाद्राजन्तोर्भूत्वा प्रादवन्मही ।
तां पृथुर्भुतुरादाय द्रवन्तीमन्वसारयत् ।
सा लोकान्मृगलोकादीन्गत्वा वैन्यमयार्दिता । [5]
सा ददशाग्रतो वैन्यं कामुकोद्यतपाणिनम् ।
ज्वलद्भिर्विशिखैर्बाणैर्दक्षितैः सममुत्तिष्ठ ।
महायोगं महात्मानं दुर्धर्षमनरेरपि ।
अलभन्ती परित्राणं वैन्यमेवान्वपद्यत् ।
कृताञ्जलिपुटा राजन्यूत्यं लोकैस्त्रिभिरुदा । [10]
उवाच चैनं नाधर्म्यं स्वीयं कर्तुमर्हसि ।
कथं धारयिता चासि प्रजा राजन्मया विना ।
पृथुर्वाच ।

एकस्यार्थाय यो हन्यादात्मनो वा परस्य च ।
एकं प्राणं बहुन्नापि प्राणिनां नास्ति पातकम् ।
यस्मिन्सु निहते भद्रे बहवः सुखमेवेते । [15]

तथेत्युक्त्वा पृथुर्वैन्यो गृहीत्वाजगवं धनुः ।
 शरांश्चाप्रतिमान्धोरांश्चिन्तयित्वाब्रवीन्महीम् ।
 एषोहि वसुधे क्षिप्रं क्षरैभ्यः काङ्क्षितं पयः ।
 ततो दास्यामि भद्रं ते अन्नं यस्य यथेष्टितम् । [790]

वसुधोवाच ।

दुहितृत्वेन मां वीर संकल्पयितुमर्हसि ।

तस्मिन्हेते त्वयं नास्ति पातकं नोपमुच्यते ।
 सोऽहं पालनिमित्तं त्वां वधिष्यामि वसुंधरे ।
 यदि चेद्वनमादध न करिष्यसि मे प्रियम् ।
 त्वां निहत्स्व तु बाणेन मच्छासनपराङ्मुखीम् ।
 आत्मानं प्रथयित्वाहं प्रजा धारयिता स्वयम् । [20]
 सुखं वचनमास्थाय मम धर्मभृतां वरे ।
 संजीवय प्रजा नित्यं शक्ता ह्यसि वसुंधरे ।
 दुहितृत्वं च मे गच्छ एवमेतन्महाशरम् ।
 नियच्छेयं त्वदर्थाय उद्यतं वीरदर्शनम् ।

भूमिरुवाच ।

सर्वमेतन्महाराज विधास्यामि परंतप । [25]
 वत्सं त्वं पदय राजन्यै क्षरेयं येन वत्सला ।
 समां च कुरु सर्वज्ञ मां तु धर्मभृतां वर ।
 यथा दिव्यन्द्मानं वै क्षीरं सर्वत्र भावये ।

नारद उवाच ।

तत उत्सारायामास शिलाजालानि सर्वशः ।
 पृथुरैन्यस्तदा राजस्तेन शैला विवर्धिताः । [30]
 न हि पूर्वनिर्गमं वै विषमे वसुधातले ।
 प्रविभागः पुराणां वा ग्रामाणां वा महीपते ।
 न सस्यानि न गोरक्ष्यं न कृपिनं वणिग्पथः ।
 वैन्यात्प्रभृति राजेन्द्र सर्वस्थैतरय संभवः ।
 यत्र यत्र च साम्यं तु भूमावासीकिंलानप । [35]
 तत्र तत्र प्रजास्तात निवासमभिरुचयन् ।
 कुच्छ्रेणैव महाराज श्लेषमनुशुश्रुषः ।

[(L. 4) M₃-s द्रवतीम् (for द्रवन्तीम्). G₁. 2 M₁. 2
 अन्वधावत (for 'सारवत'). — (L. 6) G₂-s -पाणिक् (for
 'नम्'). — (L. 7) T G₂ निधितैर (for विशिखैर). M₃-s
 दीप्तसूर्य- (for 'तेजः'). — (L. 8) G₁ M₁-s महायोगि (for
 'योग'). — (L. 9) G₂-s [अ]स्पष्टत (for अन्व'). — (L.
 10) M₃-s पूज्या (for पूज्यं). — (L. 11) T G₂ वैश्यं
 (for 'चैनं'). G₁ M नाधर्म (for नाधर्म्यं). G₁ M₁. 2 स्त्रीवधे
 (for 'धं'). G₂ अहंति (for 'सि'). — (L. 12) T G₂
 transp. मया and विना. — (L. 14) G₂-s प्राणात् (for
 प्राणं). T अस्ति (for नास्ति). G₁ M₁. 2 प्राणानस्यास्ति पातकः ;

नारद उवाच ।

तथेत्युक्त्वा पृथुः सर्वं विधानमकरोद्वशी ।
 ततो भूतनिकायास्ते वसुधां दुदुहुस्तदा ।
 तां वनस्पतयः पूर्वं समुत्तस्थुर्दुधुक्षवः ।
 सातिष्ठद्वत्सला वत्सं दोग्धृन्पात्राणि चेच्छती । [795]
 वत्सोऽभूत्पुष्पितः शालः प्लक्षो दोग्धाभवत्तदा ।

M₃-s प्राणांस्तस्यास्ति पातकं (for the post. half). — (L.
 16) G₁ M₃-s शुभे ; G₂ सुखं (for त्ववं). M₁. 2 तस्मि-
 स्तु निहते नास्ति (for the prior half). G₁ M नोप-
 पातकं (for 'मुच्यते'). — (L. 17) G₁ M प्राणि- ; G₂
 बल- (for पाल-). — (L. 18) G₂ करिष्यसि न (by
 transp.). — (L. 20) G₂ राधयिता (for धार').
 — (L. 23) G₁ M₁. 2 एनं ; M₃-s एव (for एतन्).
 — (L. 24) T उद्यतं (for उद्यतं). G₁ M₁. 2 धरा ;
 M₃. s वसुंधरा ; M₅ वसुधा (for भूमिर्). — (L. 25)
 M₁ एतं (for एतन्). — (L. 26) T G₂ वत्स (for वत्सं).
 G₁ M तु (for त्वं). — (L. 27) G₂-s तु (for च).
 T G₂ सर्वं तु ; G₁ M सर्वत्र (for 'ज्ञ'). G₁ M त्वं (for
 तु). G₁ M₁. 2 वरः (for वर). — (L. 28) M₁. 2
 भावयेत् (for भावये). G₁ M₁. 3. 4 om. the ref.
 — (L. 30) M₁ तथा (for तदा). G₂-s राजा (for
 राजंस). M₃-s येन (for तेन). — (L. 32) T G₂
 प्रविभागं पुराणं वा (for the prior half). — (L.
 37) G₂-s कृच्छ्रेण च (for 'णैव').]

— (L. 787) T G M₁. 2 पुनर् (for पृथुर्). B₁-3. 5
 D₁ D₂ D₁-4. 0 वैन्यो (for वैन्यो). D₁ D₁. 8 सशरं
 (for [अ]जगवं). — (L. 789) B₁. 5 D₁ D₁ T G₁
 M₁ क्षरेभ्यः ; B₁ (marg.) क्षवेभ्यः ; D₂ D₃-6 क्षरेस्त्वं ;
 G₂ रक्षेभ्यः (for क्षरेभ्यः). — After line 789, S ins. :

मच्छासनातिगां वै त्वां प्रमथिष्याम्यहं शरैः ।

तथोक्ता सात्मनः श्रेयश्चिन्तयित्वाब्रवीत्पृथुम् ।

वत्सं पात्राणि दोग्धृश्च क्षीराणि च समादिश ।

[(L. 1) G₁ M₁. 2. 4 त्वा (for त्वां). — (L. 3) G₁
 M वत्सान् (for वत्सं).]

— (L. 790) G₂ [अ] हं भद्रं (for भद्रं ते). T G₂-s
 M₃-s सर्वं ; G₁ M₁. 2 क्षीरं (for अन्नं). S (except
 G₂) om. the ref. D₃ वसुदेव (for वसुधा). — (L.
 791) D₂ D₃-s S दुहितृत्वे च (for 'त्वेन'). D₃ मा
 राजन् (for मां वीर). MSS. om. the ref. — (L.
 792) D₃. 0 बली (for वशी). — (L. 793) B₁. 2
 (marg.) 3. 5 D₁ D₂ तां (for ते). T G₂-4 वीरगां ;
 G₁. 5 (marg. as above) M₁. 3-5 विराजं ; M₂ वीरजं
 (for वसुधां). B₁ दुदुधुक्षुषां तदा (for the post. half).

छिन्नप्ररोहणं दुग्धं पात्रमौदुम्बरं शुभम् ।
उदयः पर्वतो वत्सो मेरुर्दोग्धा महासिरिः ।
स्तान्धोपधयो दुग्धं पात्रमममयं तथा ।
दोग्धा चासीत्तदा देवो दुग्धमूर्जस्करं प्रियम् । [800]
असुरा दुदुहुर्मायामापात्रे तु ते तदा ।
दोग्धा द्विमूर्धा तत्रासीद्वत्सश्चासीद्विरोचनः ।
कृषिं च सस्यं च नरा दुदुहुः पृथिवीतले ।
स्वायंभुवो मनुर्वत्सस्तेषां दोग्धाभवत्पृथुः ।
अलावुपात्रे च तथा विषं दुग्धा वसुंधरा । [805]

धृतराष्ट्रोऽभवद्दोग्धा तेषां वत्सस्तु तक्षकः ।
सप्तर्षिर्मित्रं दुग्धा तथा चाकृष्टकर्मसिः ।
दोग्धा बृहस्पतिः पात्रं छन्दो वत्सस्तु सोमराट् ।
अन्तर्धानं चामपात्रे दुग्धा पुण्यजनैर्विराट् ।
दोग्धा वैश्रवणस्तेषां वत्स आसीत्कुबेरकः । [810]
पुण्यगन्धान्यपात्रे गन्धर्वाप्सरसोऽदुहन् ।
वत्सश्चित्ररथस्तेषां दोग्धा विश्वरुचिः प्रभुः ।
स्वधां रजतपात्रे तु दुदुहुः पितरश्च ताम् ।
वत्सोऽत्र वत्सरस्तेषां यमो दोग्धा तथान्तकः ।

— (L. 794) Dn1 S (except Gs) सर्वे (for पूर्व). Dn1 Dr.3 S (except Gs) उपतथ्युर; D4 समं तथ्युर; Ds समतं (for समुत्तं). — (L. 795) D4 सा निष्कं; Dr.3 अतिष्ठद्; T G2-4 सातीव (for सातिष्ठद्). B Dn2 Dr दोग्धा; Dc1 D1-5 दोग्धी; Dn1 दोग्धा (for दोग्धन्). Dn1 Ds.3 Gs.4 चेच्छति; D2 [अ]वेक्षती. — (L. 796) S सालः (M1.2 "ल") (for शालः). T G2-1.3 (inf. lin. as above) M1.2 पर्णो (for प्लक्षो). T G2-3 M द्विजडुमः; G1 [अ]भवद्भुमः (for [अ]भवत्तदा). — (L. 797) D1 क्षिन्नः; D2 छिन्नं; T1 G2-5 M3-5 भिन्नः (for छिन्नः). B1-3 औहुं (Bs "हुं") वरं (for औदुम्बरं). — (L. 799) Gs स्वर्गमयं (for अश्म). Dn2 Ds Gs तदा. — After line 799, Dn1 Dr.3 ins.:

देवानामभवद्भुतः पात्रमिन्द्रो हिरण्यम् ।
while, after line 799, Ds ins.:

अमरा दुदुहुर्देवी स्वर्णपात्रेऽथ वृत्रहा ।
Ds ins. after line 799:

देवेर्दुग्धा वसुमती विष्णुर्वत्सस्तदाभवत् ।
On the other hand, after line 799, S ins.:

देवानां वत्स इन्द्रोऽभूत्पात्रं दास्यमयं तथा ।

[M3-5 तदा (for तथा).]

— (L. 800) D4 repeats from तदा देवो up to असुरा दु (in line 801) after the prior half of line 802. Dn1 Dr.3 S च सविता; D4 (both times).5 वासीत्तो (Dc "दा") (for चासीत्तदा). T G2-5 ओजस्करं (for ऊर्जं). D4 (second time) परं (for प्रियम्). — (L. 801) Dc1 मयम् (for मायाम्). B2 D2 अयः (for आम-). B4 वै; Dn1 Dr.3 तां (for ते). S अयः पात्रे तु तामय (for the post. half). — (L. 802) S शुक्रोभूद् (for तत्रासीद्). Dn1 Dr.3 दोग्धा ह्यसामव-चुक्रो (for the prior half). Dn2 त्वासीद्; D4 आ

(for चा). — (L. 803) D4 तदा (for नरा). Ds कृषिं सस्यं चापि नरा (for the prior half). G4 धरणीतले (for पृथिवी). — (L. 804) Dn2 Ds [S]जवद्; Ds महा- (for मन्दुर). B1.3 (marg. as above) Dc1 Dn2 Ds प्रभुः (for पृथु). — After line 804, Ds ins.:

नागाश्च दुदुहुः क्षीणीं स्वदुग्धं परमारकम् ।

— (L. 805) B4 -पात्रे तु; Dn2 -पात्रं च (for -पात्रे च). Dn1 Dr.3 पुनर्; D4 तदा (for तथा). S अलावुपात्रे तु (G1.2 "त्रे तु") विषं (for the prior half). T G1-3 M1.2 नगैर्; G4 M3-5 तदा (for विषं). Ds दुग्धं (for दुग्धा). Gs तदा दोग्धा च वासुकिः (for the post. half). — (L. 806) Dn1 Dr.3 transp. तेषां and वत्सस्. Dr.3 च (for तु). — (L. 807) Dn1 Dr.3 पुनर् (for त्रश्च). Ds S दुग्धं (for दुग्धा). D4 ऋषिभिः सप्तर्षिर्ब्रह्मा (for the prior half). Dn2 Ds.3.5 तनयः; D4 lacuna; S तपश्च (for तथा). D4 वा (for च). Dn1 Dr.3 तत्र दोग्धा बृहस्पतिः (for the post. half). — (L. 808) Dn1 Dr.3 कृत्वा छन्दोमयं पात्रं (for the prior half). Dn1 Dr.3 तेषां (for छन्दो). B2-5 D1.3 च (for तु). — B1 om. (hapl.) line 809. Dr reads lines 809-815 twice (without var.). — (L. 809) Dn1 Dr.3 आम-पात्रे; D4 वाम"; G1 M त्वाम"; G2 लोम" (for वाम"). Dn1 Dr.3 om. (hapl.) from the post. half up to the prior half of line 811. D1 दोग्धा; Ds S (except G2) दुग्धं (for दुग्धा). — (L. 810) G1 M1.2 तु वर-णम् (for वैश्रव). Dn2 Ds-5 वृषध्वजः; T G3 कुबेरजः (for कुबेरकः). B Dc1 D1.2 वत्सश्चासीद्दुग्धं (B1.3 "ह") ध्वजः (for the post. half). — (L. 811) S पुण्यगन्धं (for गन्धान्). G1 पद्मपात्रे; G4 पुण्यपात्रे (for पद्म). — (L. 812) Dn2 Ds.3.5 Gs वैश्रवणम् (for चित्र). D4 विश्व-कृषिः; S वसुरपि (G1.3 M "रुचिः") (for विश्वरुचिः). Ds.3 च यः (for प्रभुः). — (L. 813) Dn2 Ds.3-5

एवं निकायैस्तैर्दुग्धा पयोऽभीष्टं हि सा विराट् । [815]

यैर्वर्तयन्ति ते ह्यद्य पात्रैर्वत्सैश्च नित्यशः ।

स यज्ञैर्विधैरिष्ट्वा पृथुर्वैन्यः प्रतापवान् ।

संतर्पयित्वा भूतानि सर्वैः कामैर्मनःप्रियैः ।

हैरण्यानकरोद्वाजा ये केचित्पार्थिवा भुवि ।

तान्ब्राह्मणेभ्यः प्रायच्छदश्चमेधे महामखे । [820]

पट्टिनागसहस्राणि पट्टिनागशतानि च ।

सौवर्णानकरोद्वाजा ब्राह्मणेभ्यश्च तान्ददौ ।

इमां च पृथिवीं सर्वां मणिरत्नविभूषिताम् ।

सौवर्णीमकरोद्वाजा ब्राह्मणेभ्यश्च तां ददौ ।

स्वधा (for स्वधां). B Dc1 Dn2 D1-6 G2-5 -पात्रेषु (for -पात्रे तु). T G1.2 तु; G2 M स (for च). — (L. 814) B D वैवस्वतस् (for उज्र वत्सरस्). B Dc1 Dn2 D1-6 [अं]तकस्तदा (B1 D2-6 'था'; Dn1 D1.3 [अं]तकः स्वयं (for तथान्तकः). — (L. 815) D2 सर्वजनैर् (for निकायैस्तेर्). B1-3 Dc1 D1 पयोभीष्टानि; Dn1 D1.3 S पयोभीष्टानि (for पयोऽभीष्टं हि). D3.6 पयोमिष्टान्नसा- (D6 'न्नसं')विराट्; D4 पयोभिस्तु विशो विराट्; D5 पयोमिश्रानिश्च विराट् (for the post. half). — Line 816 is partly damaged in G2. — (L. 816) Dc1 तैर् (for यैर्). Dn D1.3 हृष्टा; G1 M नृ (M3-5 दृ)ता (for ह्यद्य). D3.6 ये वर्तयन्ते ते स्व (D6 ह्य)द्य; D4 वर्त-यिष्यन्ति ते ह्यद्य; D5 यैर्वर्तयन्ते ते हृष्टा; T G2-5 निवर्तयन्ति ये हृष्टा; (for the prior half). Dn1 D1.3 वैन्येन (for वत्सैश्च). S (G2 damaged) पृथुं (G1 M1.2 दिष्टो; G2 दिष्टा; M3-5 दृष्टे) वैन्ये च (G1.5 M 'न्येन' सर्वशः (for the post. half). — (L. 817) B1.3-5 Dc1 D1.2 यज्ञैश्च (for स यज्ञैर्). B1-3 Dc1 Dn2 D1.2.4 देव्यः; D1 वैन्याः (for वैन्यः). — (L. 818) Dn D4.7 S (except G2) सर्व- (for सर्वैः). — D2 om. lines 819-822. — (L. 819) D3-6 हिरण्यान् (for हेर'). Dn1 D1.3 राजो (for राजा). D1 यः (for ये). D5 यान्कांश्चिपार्थिवान्भुवि; G2 यां कान्चित्पार्थिवो भुवि (for the post. half). — (L. 820) Dn1 D1.3 तां (for तान्). T अश्वमेधैर् (for 'मेधे'). — (L. 821) G2 damaged the prior half. B1.2 Dc1 D1 G1 M1.3 पट्टि; B4 Dn D3-6.8 T G2.4 M3-5 पट्टिर् (for पट्टि). B1.2 Dc1 D1 G1 M1.3 पट्टि; B4 Dn D3-8 T G2.4 M3-5 पट्टिर् (for पट्टि). — (L. 822) B1.2 (marg.) D1 सौवर्णानि (for सौवर्णान्). — Dn2 D3-6 om. (hapl.) lines 823-824. — (L. 823) S (except G2) य इमां (for इमां च). — Dc1 D2 om. line 824. — (L. 824) B1-3 Dn1 D1 सौवर्णाम् (for 'र्णाम्'). S कृत्वा हिरण्यमीं राजा (for the prior half).

स चेन्ममार सृज्य चतुर्भद्रतरस्त्वया । [825]

पुत्रात्पुण्यतरस्तुभ्यं मा पुत्रमनुत्पद्यथाः ।

अयज्वानमदाक्षिण्यमधि श्वेत्येत्युदाहरत् ।

Colophon.

नारद उवाच ।

रामो महातपाः शूरो वीरलोकनमस्कृतः ।

जामदग्न्योऽप्यतियशा अवित्रुतो मरिष्यति ।

यस्याभ्रमनुपयेति भूमिं कुर्वन्विपांशुलाम् । [830]

न चासीद्विक्रिया यस्य प्राप्य श्रियमनुत्तमाम् ।

S ह्यमंह (G2.5 'स')त (for च तां ददौ). — (L. 826) T G2-6 पुण्यतमस् (for 'तरस्'). — D2 M3 om. line 827. G2 partly damaged. — (L. 827) T G1.3-5 M1.2.4 अदक्षिण्यम् (for अदा'). B Dc1 Dn1 D1.3-8 अभि; Dn2 अति; T अयि (for अधि). Dn1 D1.3 श्वित्य; Dn2 सैव्य; D1 श्वैत्य; D3.4 श्वैव्य; D5 चैत्य; T G2 श्वैत्य (for श्वैत्य). B Dc1 Dn2 D1.3-6 व्याहरन् (D6 'म्'); Dn1 [अ]व्याहरत्; D1.3 [अ]वाहर (for [उ]दाहरत्). — Colophon. — Sub-parvan : MSS. अभिमन्युवध. — Adhy. name : B Dc1 Dn2 D3-6 षोडशराजिकं; Dn1 D2 'राजकीयं; D1 'राजकं; T G2.4 'राजके पृथुचरितं; G2 पृथुचरितं. — Adhy. no. : B2 Dn1 67; D2 60; D3 S 66. — Śloka no. : Dc1 32; Dn1 31. — (L. 828) Dn2 D3.4.6 T G2-5 M2 वीरो (for वीर). — (L. 829) Dn1 D1.3 [5]प्रतियशा; D4 M3 [5]प्यति-शया; T G2.4 ह्यतियशा; G2 ह्यतियशा; G5 महाराज (for स्प्यतियशा). Dn1 D1.3 सोवितुतो गमिष्यति (for the post. half). — (L. 830) B1.3 यः सायम्; B2.4.5 Dc1 Dn D1.2 यसाद्यम्; T G2.4 M5 (sup. lin. as above) यश्चाभी (M5 'भि')र; G2 यस्यायम् (for यस्या-भ्रम्). D3.4.6 यस्मात्समनुपये (D4 'तुप्ये')ति; D5 यज्वा-मन्योप्यतियशा; G5 यश्चाभ्रमनुपयेति (for the prior half). B Dc1 Dn2 D1.2.5 इमां सुखां (B3 D2.5 'खं'); D3 इमां शुभां; D1.3 विपांशुलां (for 'शुलाम्'). D4 भूमिमुर्वी समा शुभाः (sic); D5 भूमिमुर्वीमिमां शुभां (for the post. half). — (L. 831) T G2-6 तस्य (for यस्य). — After line 831, S ins. :

जामदग्न्यो न ते राजन्कचिच्छ्रोत्रमुपागतः ।

येनैकेन पुरा राजन्कुण्डेन हतवन्धुना ।

शुशुभिसान्त्वयमानेन त्राहि रामेति विस्मरम् ।

त्रिसप्तकुलो भूमिर्यत्कृता निःक्षत्रिया पुरा ।

[(L. 1) G1 M रामः (for राजन्). G1 M1-4 कनिर

यः क्षत्रियैः परामृष्टे वत्से पितरि चुकुषे ।
ततोऽवधीत्कालीवीर्यमजितं समरे परैः ।
क्षत्रियाणां चतुःपष्टिमयुतानि सहस्रदाः ।
तदा मृत्योः समेतानि एकैकं धनुपाजयत् । [835]
ब्रह्मद्विपां चाथ तस्मिन्सहस्राणि चतुर्दश ।
पुनरन्यानि जग्राह दन्तकूरे जवान ह ।

(for कथित्). — (L. 3) G₁ M_{1.2} चोषमानेन; M₂₋₃ प्रार्थ्यं (for ताम्यं). — (L. 4) G₁ M या भूमिः (for भूमिर्वात्). G₂ पुरा निःक्षत्रिया कृता (for the post. half).]

— (L. 832) S क्षत्रिय- (G₅ 'यः') (for क्षत्रियैः). Dn₁ परामृष्टैर्; Dn₂ Ds. 6 पुरा मृष्टे; D_{1.5} पुरा सृष्टैर्; D_{1.3} पुरोत्सृष्टैर् (for परामृष्टे). S (G₂ damaged) वत्सः (for वत्से). B_{1-3.5} D_{2.5} चावुवन्; B₁ Dn₂ D_{3.6} चा (D₅ वा) वृवं (Dn₂ 'वे'); Dc₁ (marg.) D₁ चा (D₁ वा) मृष्टे (for चुकुषे). Dn₁ D_{1.3} हते पितरि चावधीत्; D₁ वने पितरि वातिने (for the post. half). — (L. 833) Dc₁ Dn₂ D₄ M₃₋₅ अजितः (for 'तं'). — (L. 834) B₁ om. (hapl.) from सहस्रशः up to सुसलेनापि (in line 838). Dn₂ D₄₋₆ अयुतान्युधि सहस्रः (D₁ 'वशः'; D₅ 'हताः'; D_{7.3} S अयुतान्य (D_{1.3} G_{1.2} 'न्य' रिसंवहा (for the post. half). — (L. 835) Dn₁ D_{1.3} S सरस्वत्यां (for तदा वृत्ते). B₁ Dn₁ D_{1.3} S एकैकं (for एकैकं). T G_{3.4} [अ]जयत्; G_{1.2.5} M [अ]वधीत् (for [अ]जयत्). — (L. 836) Dn₁ D_{1.3} वधे; D₁ वाध (for चाथ). G₅ वसिन् (for तं). S (G₅ sup. lin. as above) सराट्प्राणि (for सहस्राणि). — (L. 837) B₁ D_{2.3} पुनरन्यानिजग्राह (for the prior half). D_{3.6} दृष्टं (for दन्तं). B_{1.2} (marg. as above). s Dc₁ Dn D_{1-3.5-8} कूरं; D₁ कूटे (for कूरे). B₁ Dn₂ D_{3.5.6} च (for ह). G₅ संजवान सहस्रशः (for the post. half). — (L. 838) G₂ partly damaged. B₁₋₃ मुपलेन; Dc₁ D_{1.3.4.6} मुशलेन. B₁ (marg. as above) Dc₁ D₃ T G_{3.4} अग्नत्; B₁ अहन् (for अग्नत्). Dn₁ D_{5.7.8} सहस्रं मुश (Dn₁ 'स' 'ले' (D₅ 'नि') वन्; G₅ सुसलेनापि तान्यग्नत् (for the prior half). D₁ बाहुना; D₅ अपि च (for असिना). — (L. 839) D₅ ऊर्द्ध वनात्; D_{1.3} उर्द्धवन्; T G_{1-3.5} M_{1.2} उर्द्धपितं; G₅ उर्द्धपितं; M₃₋₅ 'धतः' (for उर्द्धवनात्). Dn₂ D₃₋₆ तु (for च). — After the prior half of line 839, Dn₁ D_{1.3} S Bom. ed. ins. :

सहस्रमुदके धृतम् ।

दन्तान्भेक्त्वा सहस्रस्य कर्णनासं न्यकुन्तत ।

ततः सप्तसहस्राणि कडुभूमपाययत् ।

सहस्रं सुसलेनाग्निसहस्रमसिनावधीत् ।
उर्द्धवनात्सहस्रं च हैहयाः समरे हताः ।
सरथाश्वगजा वीरा निहतान्त्र दोरते । [840]
पितृवंधामर्षितेन जामदग्न्येन धीमता ।
निजग्रे दशसाहस्राणामः परशुना तदा ।
न ह्यमृष्यत ता वाचो यास्तैर्मुंशमुदीरिताः ।

शिष्टान्वद्धा च हत्वा च तेषां मूर्ध्निभिल्ल च ।
मुगवतीमुचरेण खाण्डवाक्षिणेन च । [5]
गिद्येने शतसाहस्राः.

[(L. 1) D₁ om. सहस्रं. T G M_{1.2.5} कृतं (for धृतम्). M_{3.4.5} (sup. lin.) सहस्रमुदकंनत. — (L. 2) Dn₁ T G M₃₋₅ सहस्रं च (for 'वस्य'). Bom. ed. कर्णा-
वासान् (for कर्णनासं). S मित्रकर्णासवाकरोत् (for the post. half). — (L. 3) Bom. ed. सहस्राणां. D₁ S कण- (for कटु). Dn₁ कर्णभूममपाययत् (for the post. half). — (L. 4) Bom. ed. वै (for च). G₁ अय-
हत्वा; Bom. ed. विभिन्न (for अभिल्ल). Dn₁ D_{1.3} तेषां
मूर्ध्नि निधीय च; G₅ धीमर्षिच्य च (for the post. half).
— (L. 5) S खाण्डवं (for 'वाद'). — (L. 6) G₂
damaged. S दोरते (for गिद्येने).]

B₂ om. the post. half. T G₂₋₅ हैहयाश्च; G₁ M
हैहयाः. Dn₂ D_{3.4.5} हैहयान्समरेवधीत् (for the post.
half). — D₂ om. lines 840-841. — (L. 840)
S संगजाः त (G_{1.2} M 'जाय' रथा वीरा (for the prior
half). T रामेणैके विदुषाः; G_{1.3-5} M रामेणैकेन दुर्वायाः;
G₂ M₃ (sup. lin.) रामेणैकेन दुर्वायाः (for the post.
half). — (L. 841) Dn₂ वधादुपिनेन; D₃ वधादुःषि
(for वधामर्षि). — For line 841, Dn₁ D_{1.3} subst.:

संयुतैः शतसाहस्रैर्वाहणैः क्षत्रियास्त्रितैः ।

[Dn₁ क्षत्रियाहृतैः (for 'स्त्रितैः').]

while, S subst. for line 841:

राम रामेलभिकुट्टैर्वाहणैः क्षत्रियादितैः ।

[T G₂₋₄ अभिकुट्टो; G₅ 'कुट्टै' (for 'कुट्टै').]

— (L. 842) G₁ M शत- (for दशः). Dn₁ D_{1.3} परान्
(for रामः). B₁ तथा; Dn₁ [आ]हनत्; D_{1.3} हतान्
(for तदा). — (L. 843) B₁ Dn₂ D₁ तां वाचं;
D₅ ता वाचं (for ता वाचो). D₁ न स ह्यमृष्यतां वाचं;
D₅ न ह्यमर्षत तां वाचं; D_{1.3} न ह्यमृष्यत तां वाचं; S
नामृष्य (G_{1.5} 'व्यं') न वचसाहि (G_{1.5} 'स्त्रामि') (for the
prior half). B₁ उदीरिता; T G₂₋₄ M₃₋₅ 'सितं'.
D_{5.6} वा वा (D₅ वास्ते) स्तेः समुदीरिताः; D_{1.5} वा तेर्मुंश-

भृगो रामाभिधावेति यदाक्रन्दन्दिजोत्तमाः ।
 ततः काश्मीरदरदान्कुन्तिक्षुद्रकमालवान् । [845]
 अङ्गवङ्गकलिङ्गं विदेहांस्राष्ट्रलिसकान् ।
 रक्षोवाहान्वीतिहोत्रांस्त्रिगर्तार्त्तिकवातान् ।
 शिवीनन्यांश्च राजन्यान्देशे देशे सहस्रशः ।
 निजघान शितैर्बाणैर्जामदग्नयः प्रतापवान् ।
 कोटीशतसहस्राणि क्षत्रियाणां सहस्रशः । [850]
 इन्द्रगोपकवर्णस्य बन्धुजीवनिभस्य च ।
 रुधिरस्य परीवाहैः पूरयित्वा सरांसि च ।
 सर्वानष्टादश द्वीपान्वशमानीय भार्गवः ।

इंजे क्रतुशतैः पुण्यैः समासवरदक्षिणैः ।
 वेदीमष्टनवोत्सेधां सौनर्णां विधिनिर्मिताम् । [855]
 सर्वरत्नशतैः पूर्णां पताकाशतमालिनीम् ।
 ग्राम्याण्यैः पशुगणैः संपूर्णां च महीमिमां ।
 रामस्य जामदग्न्यस्य प्रतिजग्राह कश्यपः ।
 ततः शतसहस्राणि द्विपेन्द्रान्हेमभूषणान् ।
 निर्दस्युं पृथिवीं कृत्वा शिष्टेष्टजनसंकुलाम् । [860]
 कश्यपाय ददौ रामो हयमेधे महामखे ।
 त्रिःसप्तकृत्वः पृथिवीं कृत्वा निःक्षत्रियां प्रभुः ।
 इष्ट्वा क्रतुशतैर्वीरो ब्राह्मणेभ्यो ह्यमन्यत ।

मुदीरिता; D1.8 मात्रा सृशमुदीरितां (for the post. half).
 — (L. 844) B4 भृगो; S भृशं (for भृगो). T
 G3.4 रामो (for राम). B1 (marg.) Dn D4.8
 अभिधानेति (for अभिधावेति). T यदाक्रन्द (for 'दन्').
 Dn1 D1.8 दिजोत्तमं. — (L. 845) G1 M1.2 तदा
 (for ततः). D1 कश्मीर-. D4 कुंत; D5.8 कुंतीन्
 (for कुन्ति-). D1 -छन्नक- (for -क्षुद्रक-). S (except
 G5) -मालवान्. — (L. 846) Dn1 S -कलिंगेद्रान् (for
 -कलिङ्गांश्च). D1.8 अंगवं (D8 'गा वं') गाः कलिंगेद्रो (D8 'द्रा'
 (for the prior half). B1 चाम-; D1 G1 M1.2.5
 ताम-; M3.4.5 (sup. lin.) तान- (for ताम्र-). D1.8
 विदेहास्त्रोपलितकाः (for the post. half). — (L. 847)
 Dn1 रक्षोवाहान्; Dn2 D1.8 राजावहान्; S कुंभाव (G2
 'प') हान् (for रक्षोवा'). D1.8 शत्रु (D8 'श्रु') दहानीति-
 होत्राश्च (D8 'त्रा') (for the prior half). D3 आतिका-
 वतान्; G5 मार्तगावतान् (for मार्तिकावतान्). D1.8 त्रिगर्ता-
 मार्षितवानपि (hypermetric) (for the post. half). — D2
 om. line 848. D8 om. lines 848-849. — (L.
 848) Dn1 अन्याश्च. Dn2 D8-8 तु (for च). T G1-4
 M राजेद्रान्; G5 राजेद्र (for राजन्यान्). B Dn1 Dn2
 D1.3.4.5 देशान्देशान्; D5 देशादेशाव (for देशे देशे).
 — (L. 850) B2 कोटीः; Dn1 D1.7.8 कोटि- (for कोटी-).
 D4 -सहस्रांशः (for 'स्राणि'). D4 om. the post. half.
 S [अ]धायधीन् (for सहस्रशः). — (L. 851) D4.5 इन्द्रगोप-
 सवर्णस्य (for the prior half). T -निसृज्य (for -निभ-
 स्य). — (L. 852) B1-4 Dn1 D5 G2 परीवापान्;
 D1.8 परीवाप्यः; T G2-5 'वाहान्'; G1 M परिष्ठावैः
 (for परीवाहैः). D4 परिवाहैः पूरयित्वा सर्वान्पेव सरांसि
 च. — (L. 854) D5 इष्टेः (for इंजे). — D2
 om. lines 855-857. — (L. 855) G3.4 वेदिम् (for
 वेदीम्). B Dn1 Dn1 D1.3.6.7 अष्टनलोत्सेधां; D4 अष्ट-
 मलो'; D5 G1 M (M3 sup. lin.) अष्ट (D8 'ष्टा') तलो';
 T G2-4 M5 अष्टादशो'; G5 ऋष्टतलो' (for अष्टनलो').

B5 Dn1 D3 सौवर्णी; D1.8 सौवर्ण- (for 'र्णा'). — D4
 om. line 856. D1 reads line 856 twice. — (L.
 856) D5.8 सर्वे (for सर्व-). Dn1 G2 -रत्नमयैः; D1.8
 'चयैः (for 'शतैः). Dn1 D1.8 S (except G5) -ध्वज-
 मालिनीं (for -शत-). — (L. 857) Dn1 D5.8 ग्राम्याण्यैः
 (for ग्राम्या'). T G2-4 च पशुभिः (for पशुगणैः). — D2
 transp. lines 857 and 858. B (except B1)
 Dn1 D1.3-7 S repeat (without var.) line 858
 after line 859. — (L. 858) D2 रामः श्रीमाध्यामदग्नयः
 (for the prior half). B2 D S काश्यपः (for क').
 — B2 D3 om. line 859. — (L. 859) Dn1 D1 S
 शतं (for ततः). G4 शतं (for शत-). B1.8 गजेद्रान्;
 G2 दिपानां; G4 द्विजेद्रान् (for द्विपेन्द्रान्). B1.5 S (G5
 corrupt) -भूषितान्; D1 -मालिनः (for -भूषणान्).
 — (L. 860) G5 निर्दस्युं (for निर्दस्युं). Dn1 विशिष्ट-
 (for शिष्टेष्ट-). T G3.4 -वत्सलः; G1 M वत्सलां; G5 -वत्स-
 लान् (for -संकुलाम्). D3 कृत्वा शिष्टेष्टजनाकुलं (for the
 post. half). — (L. 861) B2 D1.2 S काश्यपाय (for
 कश्यप'). D5 मुमोह ह (for हयमेधे). — (L. 862) B5
 Dn1 D1.4-3 त्रि- (for त्रिः). B5 Dn2 D1-8 वारान्
 (for -कृत्वः). Dn1 D1.8 इमां; D2 पुरा (for प्रभुः).
 D5 कृत्वा निःक्षत्रियान्मुः; S येन निःक्षत्रिया कृता (for
 the post. half). — (L. 863) D1.8 यज्ञशतैर् (for
 क्रतु). S तैस्त्रैर् (for वीरो). S त्वमंह (G4.5 'स') त (for
 ह्यमन्यत). — After line 863, B D Bom. ed. ins.:

सप्तदीपां वसुमतीं मारीचोऽयुक्तं द्विजः ।

रामं प्रोवाच निर्गच्छ वसुधातो ममाज्ञया ।

— (L. 864) D1 S काश्यपस्य (for क'). S उत्तार्यै (for
 प्रो). — After line 864, Dn1 D1.8 ins.:

कुङ्कुणेषु नरश्रेष्ठो महेन्द्रे पर्वतेऽवसत् ।

[Dn1 द्विजश्रेष्ठो (for नरश्रेष्ठो). D1 कुङ्कुणेषु सः श्रेष्ठो
 (for the prior half). D5 [s] विशन् (for स्वसत्).]

स कश्यपस्य वचनाप्योत्सायं सरितां पतिम् ।
 इषुपाते युधां श्रेष्ठः कुर्वन्ब्राह्मणशासनम् । [865]
 अध्यावसद्विरिश्रेष्ठं महेन्द्रं पर्वतोत्तमम् ।
 एवं गुणशतैर्जुष्टो भृगूणां कीर्तिवर्धनः ।
 जामदग्न्योऽप्यतियथा मरिष्यति महाद्युतिः ।
 त्वया चतुर्भद्रतरः पुत्रास्पुण्यतरस्तव ।
 अयज्वानमदाक्षिण्यं मा पुत्रमनुत्पयथाः । [870]
 एते चतुर्भद्रतरास्त्वया भद्रशताधिकाः ।
 मृता नरवरश्रेष्ठा मरिष्यन्ति च सृज्य ।

Colophon.

— (L. 865) Dn1 Dr. 3 ब्रह्मण्यो ब्राह्मणश्रेष्ठः; S इषुपेपुमतां श्रेष्ठो (for the prior half). — After the prior half of line 865, S ins.:

महेन्द्रं गिरिमाविशत् ।

ब्राह्मणो ब्राह्मणश्रेष्ठः.

[(L. 1) G1 M1.2 महेन्द्र- (for महेन्द्रं). M3-5 आव- सन् (for आविशत्).]

— (L. 866) Dn1 Dr. 3 निरिश्रेष्ठे (for 'श्रेष्ठ'). Dn1 Dr. 3 महेन्द्रं मास्तोपमः; S 'द्रमकुतोमयः (M1 'यं) (for the post. half). — (L. 867) B1 D2 S युक्तो; Dn1 Dr. 3 श्रेष्ठो; Dn2 तुष्टो (for जुष्टो). — (L. 868) G2 partly damaged, B2-5 D2 M4 ह्यतियथा; Dn1 Dr. ह्यतियथा; D3 ह्यतियथा (for 'अप्यतियथा'). Dn2 पतिष्यति (for मरिष्यति). B1 महामतिः (for 'द्युतिः'). T G1.3.4 M अविवृ (M1.2 'वि त') हो मरिष्यति; G5 चतुर्भद्रतरस्तव (for the post. half). — After line 868, Ms ins.:

स चेन्मरिष्यति सृज्य चतुर्भद्रतरस्तव ।

— (L. 869) T G2-1 पुण्यतमम् (for 'तरम्'). D3 G4 त्वया (for तव). G5 M5 पुत्रास्पुण्यतरस्तुव्यं मा पुत्रमनु- तपयथाः. — (L. 870) T G2-5 M1-4 अदक्षिण्यं (for 'अदा'). D1 अभि शैवेति व्याहरन्; G1.5 M3-5 अपि शैवेत्युदाहरत् (for the post. half). — G5 M3-5 om. lines 871-872. — (L. 871) Dn1 Dr. 3 तथा (for त्वया). T G2-4 तव (G2 त्वया) पुत्राधिकास्तथा; G1 M1.2 त्वया भद्रायुताधिकाः (for the post. half). — (L. 872) B1-3.5 Dn2 Dr. 3 -वरश्रेष्ठ (for -वरश्रेष्ठा). B1 मृता नृपा नरश्रेष्ठ (for the prior half). D2.5 संजय (for सृज्य). — Colophon om. in Dr. 3. — Sub- parcan: MSS. अभिमन्युवध. — Adhy. name: B Dn1 D3-5 षोडशराजिकं; Dn1 'राजकीयं; Dn2 'राजीयं; D1.2

न्यास उवाच ।

पुण्यमाख्यानमायुष्यं श्रुत्वा षोडशराजकम् ।
 अन्याहरन्नरपतिस्तूष्णीमासीत् सृज्यः ।
 तमब्रवीत्तथासीनं नारदो भगवानृषिः । [875]
 श्रुतं कीर्तयतो मर्षं गृहीतं ते महाद्युते ।
 आहो स्विदन्ततो नष्टं धादं द्यूदापताविव ।
 स एवमुक्तः प्रत्याह प्राञ्जलिः सृज्यस्तदा ।
 पुत्रशोकापहं श्रुत्वा धन्यमाख्यानमुत्तमम् ।
 राजर्षीणां पुराणानां यज्वनां दक्षिणावतम् । [880]
 विस्रयेन हृते शोके तमसीवाकंतेजसा ।

'राजकं; T G2.4 'राजके जामदग्न्यचरितानुवर्णनं; G1.2 M1.2 जामदग्न्यचरितं. — Adhy. no.: B1 D3 S 67; B2 Dn1 68; D2 61. — Śloka no.: Dn1 24; Dn1 26. — (L. 873) G5 पुण्यं यशस्यमाख्यानं; M3-5 पुण्यमायुष्य- माख्यानं (for the prior half). B Dn1 Dn2 Dr. 3 -रा- जिकं (for 'राज'). — (L. 874) B1 तु; Dn1 Dr. 3 न (for स). D2.5.1 संजयः (for सृज्यः). — M3.4 om. lines 875-879. — (L. 875) D3 T G M1.2.5 तदा (for तथा). Dn1 Dr. 3 [आ]सीनो; T G M1.2 दीनो; Ms राजन् (for [आ]सीनं). — (L. 876) Dn1 Dr. 3 S (M3.4 om.) कश्चिन्मया व्याहृतं यद् (G2 ते) (for the prior half). S (M3.4 om.) हृदये तस्मिन् (G5 M 'रं') तव (for the post. half). — (L. 877) B2.5 Dn1 Dn2 Dr. 3 अहो (for आहो). T G2.4 नान्यतो; Ms नान्यतो (for अन्ततो). Dn1 Dr. 3 अ (Dr आ) हो स्विदनुशोचष्व; G1 M1.2 अहो नास्ततो नष्टं (for the prior half). G1 M1.2 द्यूदपताव. Dn1 D2.4.5 धादं धादहवं व (D3 न) था; Dn2 D5 धादं ते दी (D3 तदी) यतामिति; Dr. 3 शानं द्यूदी- (Dr 'द्रि') पनीनिव (for the post. half). — Before line 878, S (M3.4 om.) ins. व्यासः. — (L. 878) Dn1 Dr. 3 तन् (for स). Dn1 उक्तं (for उक्तः). D2 संजयस् (for सृज्यस्). B1 संजयः प्राञ्जलिस्ततः (for the post. half). — B1 om. lines 879-884. — (L. 879) B1-3.5 Dn1 Dn2 Dr. 3 एतच्छ्रुत्वा (D3.5 तच्छ्रुत्वा तु) महाबाहो (for the prior half). Dn1 Dr. 3 अन्तुतं (for उत्तमम्). — Before line 880, G1 M1.2 ins. संजयः. G2.4.5 om. lines 880-884. — (L. 880) Dn2 D3.4.5.3 G1 M यज्विनां. — (L. 881) D3 विस्रियेन (for विस्रियेन). B1-3.5 Dn1 Dn2 Dr. 3 हृते (for हृते). Dn1 Dr. 3 विस्रियो हि न मे शोको; G1 M विश्रयेण हृतः शोक्स् (for विस्रियो हि न मे शोको); Dn2 Dr. 3 G1 M तमासीव (for the prior half).

विपाप्मास्यव्यथोपेतो बृहि किं करवाण्यहम् ।

नारद उवाच ।

दिष्टयापहतशोकस्त्वं वृणीष्वेह यदिच्छसि ।

तत्तत्प्रपत्स्यसे सर्वं न मृषावादिनो वयम् ।

सृञ्जय उवाच ।

एतेनैव प्रतीतोऽहं प्रसन्नो यद्भवान्मम । [885]

प्रसन्नो यस्य भगवान्न तस्यास्तीह दुर्लभम् ।

नारद उवाच ।

पुनर्दामि ते पुत्रं दत्सुभिर्निहतं वृथा ।

उद्धृत्य नरकात्कष्टात्प्रक्षुमप्रोक्षितं यथा ।

व्यास उवाच ।

प्रादुरासीत्ततः पुत्रः सृञ्जयस्याद्भुतप्रभः ।

प्रसन्नेनर्षिणा दत्तः कुबेरतनयोपमः । [890]

ततः संगम्य पुत्रेण प्रीतिमानभवन्नृपः ।

इंजे च क्रतुभिर्मुख्यैः समासवरदक्षिणैः ।

अकृतास्त्रश्च भीतश्च न च सांनाहिको हतः ।

अयज्वा चानपत्यश्च ततोऽसौ जीवितः पुनः ।

शूरो वीरः कृतास्त्रश्च प्रमथ्यारीन्सहस्रशः । [895]

अभिमन्युर्गतः स्वर्गं मृतनाभिसुखो हतः ।

ब्रह्मचर्येण यान्कांश्चित्प्रज्ञया च श्रुतेन च ।

इष्टैश्च क्रतुभिर्यान्ति तांस्ते पुत्रोऽक्षयान्गतः ।

विद्वांसः कर्मभिः पुण्यैः स्वर्गमीहन्ति नित्यशः ।

न तु स्वर्गादयं लोकः काम्यते स्वर्गवासिभिः । [900]

तस्मात्स्वर्गतं पुत्रमर्जुनस्य हतं रणे ।

तम'). Dn1 Dr. s ह्यवबीद्याकैतेजसं (for the post. half). — (L. 882) G1 Ms-5 अनुशापि त्वं; Gs M1.2 अनु मां (M1.2 मा) शापि (for अव्यथोपेतो). Dn1 Dr. s विपाप्मा नष्टशोकोहं; T विपापोरम्यनु मां शापि (for the prior half). Dn1 Dr. s उत (for अहम्). S (G2.4.5 om.) यदा (T 'या' स्थ करवाणि तत् (for the post. half). — (L. 883) B1-3 Dc1 Dn2 Ds-3 [अ]पहतः; B5 'हुत' (for 'हत'). M1.2 गृहीष्व (for वृणीष्व). T G1.3 M1.2 transp. इह and यद्. Ms-5 च (for [इ]ह). Dn1 Dr. s यमिच्छसि; Dn2 D1.2.4.6 यदीच्छ' (for यदिच्छ'). — (L. 884) Ds.4.6 संप्राप्य (D1 'प्य')ते (for प्रपत्स्यसे). S (G2.4.5 om.) तत्ते संपत्स्यते सर्वं (for the prior half). Ds.6 अमृषा- (for न मृषा-). Dn1 Dr. s त्व (Dn1 त) स्त्रियावादिनो वयं (for the post. half). G2 om. the ref. D1.2.6.7 संजय (for सृञ्जय). — Dn1 om. lines 885-886. — (L. 885) Dn2 च (for [ए]व). D1.3.6 च प्रीतोहं (for प्रती'). S पावितोहमनेनैव (for the prior half). Ds transp. प्रसन्नो and यत्. B1.2 (marg.).3 Dr. s भगवान्; D2 [स]च भवान् (for यद्भवान्). — (L. 887) Bom. ed. मृतं (for पुनर्). Dc1 Ds.6 Gs ददामि; G2 दास्यामि (for ददामि). Dn1 Ds-8 तथा; D1 तदा (for वृथा). — (L. 888) B4.5 Dn2 D1-6 पञ्चवत्प्रोक्षितं (D1 'प्रोक्षणं; D2.6 'प्रोक्षितं; T Gs.4 'वत्प्रोक्षितं; G1 Ms-5 'प्रोक्षितं (for 'मप्रोक्षितं). B5 Dn2 D1.5 om. the ref. — (L. 889) Dn1 Ds यथा (for ततः). D2.6 संजयस्य (for सृञ्जय). Dn1 Dr. s युधिष्ठिर; Ds.3 [अ]द्भुतः प्रभुः; Gs [अ]द्भुतप्रदः; Gs 'प्रियः (for 'प्रभः). — (L. 890) Dr. s प्रसन्नकृपिणा दत्तः (for the prior half). Ds कुबेरस्य सुतो यथा (for the post. half). S दत्तः प्रसन्नेन तदा कृपिणा दिव्य (G1 M1.2 'णादित्य)वर्चसा. — (L. 891) B2 प्रभुः;

Dn1 Dr. s पुनः; D1 नृप; T G1.3.4 ततः; G2 तदा (for नृपः). — (L. 892) Gs क्रतुशतैर् (for च क्रतुभिर्). B Dc1 Dn2 D1-6 पुण्यैः; Dn1 यज्ञैः (for मुख्यैः). — (L. 893) B1 अहतास्त्रश्च; B2.4 D1.2.5 अकृतांश्च (for 'स्त्रश्च). T G2.3 हीनश्च; G4 हीनं (for भीतश्च). B1 तु (for च). Dn1 सांनाहिका; D1 शोच्योर्भको; Ds.4 सोमो (D1 'मे)र्भको; Dr. s G1 M संनाहको (Ms-5 'तो) (for सांनाहिको). Dn2 नराणां बहुना हतः; Ds नराणां चाहुतो मृतः; Ds न च सेव्यो न शोभदः; T G2-5 न च संनाहकोविदः (for the post. half). — (L. 894) B Dc1 Dn2 D1.2.4-6 तु; Dn1 न (for the first च). Dn1 जीवानि ते; D1.5 [स]तौ जीवितान्; Dr. s G2 जीवा- पितः; T Gs.4 जीवायितः; G1 M1.2 वै जीवितः; Ms.6 (sup. lin.) जीवान्वितः; M1 lacuna (for सतो जीवितः). Ds पुरा (for पुनः). Ds ततोसौ जीवति पुमान् (for the post. half). — (L. 895) Dn1 श्रुतो (for शूरो). B4 Ds धीरः; D2 मन्त्युः (for वीरः). B2.4 D1-3 कृतांश्च (for 'स्त्रश्च). B Dc1 Dn2 D1-6 प्रताप्य (for प्रमथ्य). — (L. 896) B Dc1 Dn2 D1-6 वीरः (for स्वर्ग). B4.5 Ds.6 मृतनाभिसुखे; S संप्राप्तेभिसुखे. — (L. 897) B4 D2 यां; Dn1 Dr. s ये (for यान्). B3 T G Ms-5 लोकान्; B4 D2 कांश्चित्; Dn1 Dr. s M1.2 लोकाः; Dn2 कांश्चित्; Ds काश्चिद् (for को). B4 अथवा; Dn1 Dr. s यजुषां; Ds यज्ञेन; T G2.5 M1 प्रज्ञया (for प्रज्ञया). G2 धनेन (for धृतेन). D3 वा (for च). — (L. 898) B1-3.4 D1.6 शिष्टैश्च; Dc1 सिष्टैश्च (for इष्टैश्च). D1.4.6 T G2-5 याति (for यान्ति). B3 Ds.4.6 च; Dn2 तु (for ते). Dn2 D2 [स]क्षयां. T G1.3.4 M तान्स्त्री- भद्रो गतोक्षयान्; G2 तान्स्त्रीभद्रोक्षयान्गातान्; Gs सौमद्रोपि गतोक्षयान् (for the post. half). — (L. 899) M1

नेहानयितुं शक्यं हि किञ्चिदप्राप्यमीशितुम् ।
एवं ज्ञात्वा स्थिरो भूत्वा मा शुचो धैर्यमाप्नुहि ।
जीवन्त एव नः शोच्या न तु स्वर्गगतानव ।
शोचतो हि महाराज अवमेवाभिवर्धते । [905]
तस्माच्छोकं परित्यज्य श्रेयसे प्रयतेद्बुधः ।

प्रहर्षमभिमानं च सुखप्राप्तिं च चिन्तयन् ।
एतदाहुर्बुधाः श्रेयो न शोकः शोक उच्यते ।
एवं विद्वन्समुत्तिष्ठ प्रयतो भव मा शुचः ।
श्रुतस्ते संभवो मृत्योस्तपस्वनुपमानि च । [910]
सर्वभूतसमत्वं च चञ्चलाश्च विभूतयः ।

कतुभिः (for कर्मभिः). B₂.s Dn₂ इच्छन्ति (for इहन्ति).
S इहन्ते स्वर्गमुत्तरं (for the post. half). — (L. 900)
D₂ न हि; M₃-s ततः (for न तु). — (L. 901) D₂.
1.3 स्वर्ग (for स्वर्ग-). S तस्मात्स्वर्गं न (G₅ M₃-s 'न' नो)
राजन् (G₁.s 'तः' पुनः) (for the prior half). G₁ M
हर्षुनस्व; G₅ [S] व्यजुनस्व (for अजुनस्व). T G₂.4 सुतो
वशी; G₁ M [अ]च्युतो वशी; G₂ सुतो वली; G₅ [आ]मजो
वशी (for हन् रणे). — (L. 902) B₃ नेह प्रनायितुं शक्यं;
B₄ नेह चानयितुं शक्यः; B₅ नेहानयितुं शक्यं; Dn₁
D₁.s स नेहानयितुं शक्यः; Dn₂ D₂ न नेहानयितुं शक्यः
(D₂ 'क्यं'); D₄ नेहानेत्तुं शक्यं हि; T G₃ पुनरानीय न
हस्य; G₁ M₁ नेहानयति न हस्य; G₂.4 नेहानहति न हस्य;
G₅ नेहानीहति न हस्य (sic); M₂-s नेहानीये (M₂ 'य' न
न हस्य (for the prior half). Dn₂ D₂.s इहिति; D₁
इषितुं; T G₁-4 M₁.2 इशितुः (for 'तुम्'). B₁ काश्चिदप्रा-
प्यमीशितुं; B₃ किञ्चित्प्राप्येदमीशितुं; Dn₁ D₁.s 'त्रप्राप्यमी-
(D₅ 'मा' हितं; D₄ तत्र नाप्राप्यमीशितुं; D₅.6 किञ्चि (D₅
कश्चि)नाप्राप्यमीशितुं; G₅ किञ्चिदप्राप्यमीहते (sic); M₂-s
'दप्राप्तमीशितुः (for the post. half). — After line
902, B D ins.:

यां योगिनो ध्यानविविक्तदर्शनाः
प्रयाप्तिं यां चोत्तमयज्विनो जनाः ।
तपोभिरिष्टैरनुयायान्ति यां तथा
तामक्षयां ते तनयो गतो गतिम् ।
अन्तात्पुनर्भावगतो विराजते [5]
राजैव बीरो ह्यमृतात्परिदामिभिः ।
तामैरन्ध्रीमात्मननु द्विजोचितां
गतोऽभिमन्युर्न स शोकमर्हति ।

[(L. 1) B₁ या (for या). Dn₂ D₁-s ज्ञानः; D₂
चाति (for ध्यान-). B₂ विमुक्त- (for विविक्त-). — (L.
2) D₅ जैव; D₁.s याश्च (for यां च). B₁.2 (marg.).
2.1 Dn₁ यागयाजिनः; B₃ याजिनो जनाः; Dn₁ यययोगिनः;
D₂ याजिनो जनः; D₁.s यययाजिनः (for यज्विनो जनाः).
— (L. 3) Dn₁ उग्रैः; D₂ ईक्षैः (for ईक्षैः). Dn₁
ये वै; D₃ यदत् (for यां तथा). — (L. 4) Dn₁ तथाक्षयां
याति तपस्विनोपरे. — (L. 5) Dn₁ गतो गतिः; D₅ अथा
पुनर्; D₁.s यात्रापु' (for अन्तात्पु'). Dn₁ D₅-s भागवतो;

Dn₂ भाववतो (for 'नतो'). Dn₁ D₁.s वरीयान् (for विरा-
जते). — (L. 6) D₂ राजैव. B₁ धीरो (for बीरो).
B₃ D₃ ह्यमृतादिभिः सह; Dn₂ D₅ [S] वि (D₅ 'सि') मतो-
मृतादिभिः; D₄ [S] भिनतो मृतादिभिः; D₅ [S] भिनतो मृता-
दिभिः (for ह्यमृतात्परिदामिभिः). Dn₁ D₁.s नो वा विहीनः
सहिनो मृतादिभिः. — (L. 7) Dn₁ D₁.s विरोधि (D₁.s
'धि') तां; Dn₂ D₂.s दिक्षेतितां; D₂ दिक्षेतितां; D₅
विक्षेतितां (for दिक्षेतितां). — (L. 8) Dn₁ हि (for
स).]

— (L. 903) T G₂ ततो (for एवं). G₁.2 स्थितो (for
स्थिरो). B Dn₁ D₁.2 जगरीन्; Dn₂ D₂-s यतवान्
(for ना शुचो). G₂ धैर्यम् (for धैर्यम्). — (L. 904)
Dn₁ न (for नः). S जीवन्ति पुनः शोच्यो (for the
prior half). D₁ च (for तु). B₁ Dn₁ D₁.s स्वर्ग-
गतो (for स्वर्गगत). B₂.2 Dn₂ D₂.s नृपाः (B₃ 'य');
D₁ [S] नृपाः; G₂ नृपः (for [अ]नृप). — (L. 905)
Dn₁ D₁.s सुशोचन्तमथा (Dn₁ 'यो' वस्तम्; T G₂-4 स
शोचन्तमथा य (G₅ 'यो' य); G₁ M संशोचानोप्यथैव (M₃-s
'यैव' य; G₅ न शोचानो**यो य (for the prior half).
Dn₂ D₂-s दुःखम् (for अयम्). S अनुवर्तेते (for अभि-
वर्धते). Dn₁ स्वर्गो नानिवर्धते (for the post. half).
— D₂ om. lines 906-908. — (L. 906) Dn₁ D₁.s
T G M₁.2 श्रेयसि; D₄ श्रेयसे (for श्रेयसे). D₅ प्रवर्तेत
यः (for 'वर्तेद्बुधः'). M₂-s धैर्यमाप्नुहि भूपते (for the post.
half). — (L. 907) Dn₁ D₁-s T G₂-s प्रहर्षं प्री (D₁-s
G₅ 'धर्म') तिनानन्दं; G₁ M प्रहर्षं प्री (M₂ 'धर्म') निरा-
(M₁.2 'मा' नन्दः (for the prior half). D₁.s सुखं (for
सुख-). B₁ चित्तव (for चिन्तयन्). Dn₁ D₁.s S सुख-
मुत्तिष्ठचित्तव (D₁.s G₁ M₃-s 'ता') (for the post. half).
— (L. 908) S शौचम् (for श्रेयो). B Dn₁ D₁.
s-5 एतद्बुद्धा बुधः शोकं (for the prior half). D₁ वः
(for न). Dn₁ D₁.s श्रेयः; D₅ (marg.) कर्तुम् (for
शोक). Dn₂ न करोत्यात्मनोहितं; S अ (G₅ आ) शौचं
शोकम् (G₅ M₃-s 'क' उ) कर्तुम् (for the post. half).
— D₁ om. line 909. — (L. 909) Dn₁ Dn G₁.2
1.5 विद्वान्; D₅ विद्वन् (for विद्वन्). Dn₁ D₁.s
प्रसन्नो; D₅ प्रवृत्तो; S सुवना (for प्रवतो). — (L.
910) Dn₁ D₁.s श्रेयांसि (for तपसि). — (L. 911)
D₁ स्वलाश्च (for चञ्चला). S स्वलाश्च नाभिचो (G₁.s 'सि' चो) दिवं

संज्ञयस्य तु तं पुत्रं मृतं संजीवितं पुनः ।
एवं विद्वन्महाराज मा शुचः साधयाम्यहम् ।

संज्ञय उवाच ।

पुतावदुत्तवा भगवांस्तत्रैवान्तरधीयत ।
वागीशाने भगवति व्यासे व्यञ्जनभःप्रसे । [915]
गते मतिमतां श्रेष्ठे समाश्वास्य युधिष्ठिरम् ।
पूर्वेषां पार्थिवेन्द्राणां महेन्द्रप्रतिमौजसाम् ।
न्यायाधिगतवित्तानां तां श्रुत्वा यज्ञसंपदम् ।
संपूज्य मनसा विद्वान्विशोकोऽभूद्युधिष्ठिरः ।
पुनश्चाचिन्तयद्दीनः किं स्विद्वक्ष्ये धनंजयम् । [920]

Colophon.

9

After the ref. of 7. 84. 1, S ins. :

किरन्तं शरवर्षाणि रोषाद्ग्रेण महासुधे ।
वित्रासयन्तं तां सेनां कौन्तेयानां महीपते ।

दृष्ट्वा ततो महेष्वासो निघ्नन्तं च रथान्भृशम् ।

घटोत्कचो महाबाहू रणायामिजगाम ह ।

पिशाचवदनैर्युक्तं रथं काञ्चनभूषितम् । [5]

समास्थाय महाराज नानाप्रहरणैर्वृतम् ।

दंशितस्तपनीयेन कवचेन सुवर्चसा ।

भूपणैराचिताङ्गश्च नदन्निव च तोयदः ।

हैडिम्बेयः सुसंकुद्धो द्रोणमभ्यद्रवद्दली ।

तमभ्यधावदायान्तं कुद्गरूपमलम्बुसः । [10]

ऋक्षचर्मपरिक्षिप्तं रथमास्थाय दंशितः ।

रक्तोष्ठः सधनुः प्रांशुः कल्पवृक्ष इव स्थितः ।

क्षिपञ्छतर्फी विपुलां मुसलोपलतोमरान् ।

मुसण्डीर्बहुलाश्चैव त्रिशूलानपि पट्टसान् ।

कर्पणाशतधारांश्च पिनाकान्विविधांस्तथा । [15]

चक्राणि च क्षुरप्राणि क्षेपणीश्च कटकटान् ।

नाराचान्विविधानस्यन्सकङ्कोलकवायसः ।

(G₁ M_{1.2} 'तः') (for the post. half). — (L. 912) D₂ संज्ञयस्य (for 'संज्ञ'). B₂ Dn₂ D₃₋₆ च तं पुत्रं; Dn₁ Dr. 8 श्रुतः पुत्रो; T G₂₋₅ तु पुत्रोऽसौ; G₁ M तु ते (M₂₋₅ वै) पुत्रो (for तु तं पुत्रं). Dn₁ Dr. 8 मृतो जीवापितः पुनः; S मृतः संजीवितः श्रुतः (for the post. half). — (L. 913) Dn D_{6.1} विद्वान्; D₈ -विधो (for विद्वन्). Dn₁ D₆ G₆ साधु यामि; Dr. 8 त्वं व्रजामि (for साधयामि). MSS. om. the ref. — (L. 915) Dn₁ Dr. 8 अदर्शनं (for वागीशाने). B₂ शुभ्रः; T G₂₋₅ व्यक्तः (for व्यञ्ज-). Dn₁ Dr. 8 व्यासे व्योमगते तदा (for the post. half). — (L. 916) D₁₋₆ गतिमतां (for मतिं). Dci (marg. as above) समासाय (for 'श्वास'). — (L. 917) Dn₂ D_{3.1.6} T G₂₋₅ M₁ सर्वेषां (for पूर्वेषां). M_{2.6} (sup. lin.) स (M₅ पूर्वेषां पांडु-पुत्राणां (for the prior half). — (L. 918) D₁ -संपदां (for 'दम्'). S श्रुत्वा यज्ञेऽपि संपदः (G₁ M_{1.2} 'दं') (for the post. half). — (L. 919) D₂ G_{1.3-5} M निःशोको (for विं). — (L. 920) Dn₂ D_{1.6} दीरः; D_{2.6} T G₂₋₅ दीरः (for दीनः). Dn₁ Dr. 8 पुनश्च चि-तयोद्धिः; G₂ पुनश्चैव भयाहीनः (for the prior half). — Colophon. — Sub-parvan : MSS. अस्मिन्नुवध. — Adhy. name : B Dci Dn₂ D_{1.3-6} षोडशराजि- (D₁ 'जी-'; D₅ 'ज') के समाप्तं; Dn₁ व्यासागमने मृत्युक्तौ षोडशराजकीयं समाप्तं; D_{2.7.8} षोडशराजकीयं समाप्तं; T G₂₋₅ षोडशराजकं युधिष्ठिरशोकान्नोदनं; G₁ M_{1.2} व्यास-

गमनं; G_{1.2.4.6} M_{1.2.6} षोडशराजकं समाप्तं. — Adhy. no. : B₂ Dn₁ 69; D₂ 62; T G M₃₋₆ 68. — Śloka no. : Dci Dn₁ 26.

9

(L. 1) M_{1.2} किरन्तः (for किरन्तं). M_{1.2} द्रोणो (for द्रोणं). G₅ महाहवे (for 'सुधे'). — (L. 2) G₂ महात्मनां (for महीपते). — (L. 3) T G₃ द्रोणं (for दृष्ट्वा). G₁ M_{1.2} महेष्वासं (for 'ष्वासो'). G₂ निघ्नतां; M₁ निघ्नतश्च (for निघ्नन्तं). G₁ M तथा (for रथान्). — (L. 6) G₁ M नानाप्रहरणोद्यतः (for the post. half). — (L. 8) T G_{5.4} उचितांगश्च (for आचिं). — (L. 10) M_{1.6} आयातं (for आयातं). — (L. 12) T G₂₋₅ M₅ (sup. lin. as above) सधनुष्पाणिः (for 'नुः प्रांशुः'). T G_{5.4} प्रांशुकल्पः; G₂ प्रांशुः काल (for कल्पवृक्ष). — (L. 13) G_{3.5} M₂₋₅ शतघ्नीर् (for शतर्फी). G₄ विपुलान् (for विपुलां). G₂₋₅ मुसलोपम- (for 'पल-'). — (L. 14) T मुहंटीर्; G₁ M मुसंटीर्; G₂ मुसुटी; G₄ मुसंटी- (for मुसण्डीर्). M₂₋₅ विपुलाश्च (for बहु). G₂ शतघ्नीश्च (for विपुलान्). G₁ M आसि-; G₂ चापि (for अपि). — (L. 15) G₅ कर्पणान् (for कर्पणां). T G_{5.4} M_{1.5} शितधारांश्च (for शतधारांश्च). M₂₋₅ तदा (for तथा). — (L. 16) G₁ M_{1.2} क्षेपणीरापि टंकटान्; M₃ क्षेपाण्यधिकटंगरान्; M_{1.6} क्षेपण्यसिकटंगरान् (for the post. half). — (L.

चिक्षेप धनुरादाय निनदन्मैरवाव्रवान् ।

तं रौद्रं क्रूरमायान्तं दृष्ट्वा कालमिवागतम् ।

प्राद्ववद्भयसंविन्ना सा राजन्पाण्डुवाहिनी ।

[20]

सत्यकस्तु नरव्याघ्रो दृष्ट्वा तं राक्षसं युधि ।

अभ्ययादमस्प्रख्यो भ्रामयित्वा महद्भुजः ।

अभ्यद्रवच्च तद्रक्षसिष्ठ तिष्ठति चाव्रवीत् ।

अलम्बुसं राक्षसेन्द्रं सोऽस्त्रवर्षैरवाकिरत् ।

ततः पाण्डवसैन्यानि विद्रुतान्यथ भारत ।

[25]

निरीक्ष्याभ्यद्रवचूर्णं त्वरमाणो घटोत्कचः ।

चिक्षेप च गदाशक्तीस्तोमरानथ पट्टसान् ।

हेमचित्रत्सरुनुग्रान्खड्गानाकाशसप्रभान् ।

अन्योन्यमारदालोक्य राक्षसौ तौ महाबलौ ।

भैरवं नदतुर्नादान्सतोयाविव तोयदौ ।

[30]

ततः प्रवृत्ते युद्धं घोरं राक्षससिंहयोः ।

यादगोव पुरा वृत्तं रामरावणयोर्मध्ये ।

तौ शक्तीश्च पिनाकांश्च वज्रान्खड्गान्परवधान् ।

अन्योन्यमभिसंकुद्दौ तदा व्यसृजतामुभौ ।

आकृष्यमाणे धनुषी तयोर्बाहुबलेन च ।

[35]

यन्नेगेव तदा राजन्भृशं नादान्प्रचक्रतुः ।

अलम्बुसस्ततश्चक्रं कृतान्तज्वलनप्रभम् ।

घटोत्कचाय चिक्षेप यत्नमास्थाय वीर्यवान् ।

तन्नैमसेलिः संप्रेक्ष्य चक्रं वेगवदन्तरे ।

गदया ताडयामास तदीणं शतधाभवत् ।

[40]

ततोऽग्निचूर्णैः सहसा चक्रघातविलिःसृतैः ।

दंशकैरेव सा सेना पतद्भिर्भृशसंकुला ।

ततः प्रतिहते चक्रे स वीरो रोपसंकुलः ।

प्राहिणोत्तरसा शूलं शक्तीदंशगतास्तदा ।

ज्वलन्तीर्विकिरन्तीश्च ज्वालामालाः सहस्रधाः ।

[45]

युगान्तोल्लालिभास्तीक्ष्णा हेमदण्डा महास्वनाः ।

ताश्चापतन्तीः संप्रेक्ष्य राक्षसस्य घटोत्कचः ।

अर्धचन्द्रैः प्रचिच्छेद् नाराचैः कट्कपत्रिमिः ।

ततो रोपपरीताङ्गः प्रमुमोच स राक्षसः ।

शरवर्षं महाघोरं घटोत्कचरथं प्रति ।

[50]

10

After 7. 84. 21^{ab}, 8 ins. :

घटोत्कचोऽप्यसंभ्रान्तः शरवर्षं महत्तरम् ।

अलम्बुसवधप्रेप्सुर्मुमोचाग्निरिव ज्वलन् ।

अलम्बुसरथाच्चोप्राद्वटोत्कचरथादपि ।

शराः प्रादुर्भवन्ति स द्विरेफा इव खादिशः ।

अभ्रच्छायेव रचिता बाणैस्तत्र नरेश्वर ।

[5]

न स विज्ञायते किंचिद्वन्धकारे कृते शरैः ।

तत आकर्णमुकेन भङ्गेन च घटोत्कचः ।

अलम्बुसस्य चिच्छेद् शिरो यन्तुर्महाबलः ।

10

17) G1 M1.2 अस्य (for अस्यन्). G1 M1 संक्रोत्कचः; M1.5 सकरो (for सकङ्को). G1 M1.2.4.5 वामसः; G2.5 वायसान् (for 'सः). — (L. 18) T G2 विनदन् (for नि). — (L. 19) T रौद्रः (for रौद्र). M3.4 लोकम् (for कालम्). — (L. 20) T2 प्राद्ववन् (for 'वद्). G3 राजन्पाण्डुवाहिनी (for the post. half). — (L. 21) G3 सत्यकस्तु; G4.5 सत्यकिस् (for सत्यकस्तु). T G3.5 रथ- (for नर-). — (L. 22) G1 M धनुर्हि सः (for मह- इनुः). — (L. 23) T G2 तं (for तद्). — (L. 24) T G2.4 तोत्रः; G1 M1.2 शर- (for सोऽस्त्र). — (L. 27) M2.5 गदाः (for गदा-). — (L. 28) T1 G2 चित्रान्सरुन् (for चित्रत्स). — (L. 30) M3.5 नेदतुर् (for नदतुर्). G2.5 नारं (for नादान्). — (L. 31) G2.4 तयो (for घोरं). — (L. 33) T G2.4 स (for तौ). T G2.1 परवधान् (for 'धान्). — (L. 34) T तथा (for तदा). T2 G2 [अ]व्यजहताम् (for व्यसृजन्). — (L. 35) G1 आकृष्यमाणे. T G2.1 धनुषि. M3.5 इ

(for च). — (L. 36) G1 M1.2 महाराज (for तदा राजन्). — (L. 37) T G3.4 स तच् (for ततश्च). M3.4.5 (sup. lin.) धुरप्रं (for कृतान्त-). G1 M1.2 म्पुल्ल- नसंनिभं (for the post. half). — (L. 39) M3.5 चक्रं वै ज्वलनप्रभं (for the post. half). — (L. 41) G2 चक्रपात- (for 'घात-). — (L. 42) M3.4 -संकुलौ (for -संकुला). G2 पतद्भिर्भृशमाकुला (for the post. half). — (L. 44) T G2.4 तूर्णं (for शूलं). T G2.1 दशशर्णं (for 'शतान्). G1 M1.2 तथा (for तदा). — (L. 45) T G2.4 च (for वि). T G2.4 समततः (for सहस्रशः). — (L. 50) T शरवर्षं (for 'वर्षं).

(L. 2) M1.1 -प्रेप्सु (for -प्रेप्सुर्). G1 घर्मे चाग्निरिव ज्वलन् (for the post. half). — (L. 3) G2 -वधाच्च (for -रथाच्च). G3 -वधाच्च (for -रथाच्च). — (L. 4) G3 खादिशः (for खादिशः). — (L. 5) G2 प्राणैस्

ततोऽपरैर्वेगवद्भिः क्षुरैस्तस्य घटोत्कचः ।
 अक्षमीषां युगं चैव चिच्छेद युधि ताडयन् । [10]
 अवस्कन्ध रथानूर्णं कैमरिः क्रोधमुद्धितः ।
 तस्मिन्मायामयं घोरमस्त्रवर्षं वर्षप ह ।
 घटोत्कचोऽप्याशु रथात्प्रस्कन्ध स तमेव च ।
 मायास्त्रेणैव मायास्त्रं व्यथमत्समरे रिपोः ।
 द्वैडिम्बेनार्चमानस्तु युधि सोऽलम्बुसो दृढम् । [15]
 भन्तर्हितो महाराज घटोत्कचमयोधयत् ।
 भन्तर्धानगतं दृष्ट्वा तत्र तत्र घटोत्कचः ।
 गदया ताडयामास वेगवत्या महाबलः ।
 उत्पपात ततो व्योम्नि प्रहारपरिपीडितः ।
 अलम्बुसो राक्षसेन्द्रः सहसा पक्षिराडिव । [20]
 घटोत्कचोऽप्यसंभ्रान्तः खड्गपाणिरयोत्पतत् ।
 ततो वेगेन महता विवर्षिपुर्विवाम्बुदः ।
 तमापतन्तं संप्रेक्ष्य कैमरी राक्षसोत्तमः ।
 अमिदुद्राव वेगेन सिंहः सिंहमिव स्थितम् ।
 दक्षिणेनास्मिमुद्यम्य वक्षः प्रच्छाद्य वर्मेणा । [25]
 अमिदुद्राव वेगेन वेगवन्तं घटोत्कचः ।
 तावुभौ वेगसंरन्धावलम्बुसयटोत्कचौ ।
 अन्योन्यस्य तथैवोरु समाजघ्नतुरङ्गसा ।
 अन्योन्यस्याभिघातेन तयो राक्षससिंहयोः ।

शैलेनाभिहतस्यैव शैलस्याभून्महास्वनः । [30]
 ततोपसृत्य सहसा पुनरापेततुर्भुशम् ।
 चरन्तावसिमागांस्तान्विविधात्राक्षसोत्तमौ ।
 तयोर्गात्रेषु पतितावसी भिन्नौ निपेततुः ।
 वेगोत्सृष्टे मघवता वज्रे शैलतटेष्विव ।
 ततः सैन्यानि दृढशुस्त्युद्धमतिदारुणम् । [35]
 युद्धं तयो राक्षसयोरामिपे ज्येनयोर्विव ।
 ततो लोहितरक्ताक्षाद्युभौ तौ राक्षसोत्तमौ ।
 अदृश्येतां तु शार्दूलौ सन्धारक्ताचिवाम्बुदौ ।
 चक्राते ज्येनवच्चैव मण्डलानि सहस्रशः ।
 उभौ निखिंशहस्तौ तौ सपक्षाविव पक्षिणौ । [40]
 ततो भ्राम्य तु तं खड्गं पाण्डोः किर्मरिनन्दनः ।
 चिक्षेपास्य शिरो हतुं स च तस्य घटोत्कचः ।
 तावसी युगपद्दीप्तौ समेस्य विपुलौ भुवि ।
 पतितौ तौ तु ब्राह्मण्यां राक्षसौ समसज्जताम् ।
 शीर्षघातांसघातैश्च परस्परमथाहतौ । [45]
 पुनर्विमिश्रितौ वीरौ व्यायुध्येते मुहुर्मुहुः ।

11

After 7. 104, 33, T G2-s ins. :

भीमोऽपि च महाराज वैकर्तनमुपाद्रवत् ।

(for बाणैश्च). — (L. 6) G3 शयैः (for शरैः). — (L. 10) G2 M2, 8, 5 ताडयत् (for 'यन्'). — (L. 11) G1 M3, 4 कैमरिः; G2-s कैमरिः (for कैमरिः). — (L. 13) G1 M1, 2 [अ]य (for [आ]शु). G4 सममेव (for स तमेव). G1 M ह (for च). — (L. 15) G1 M1, 2 राक्षसो; M3-s युद्धे सो (for युधि सो). G1 M1, 2 रणे; G6 [S]द्रवत्; M3-s बली (for दृढम्). — (L. 17) G1 M तं तत्र च (for तत्र तत्र). — (L. 21) T G2-s अथोपतत् (for अथोत्पतत्). — (L. 22) G1 M2 विवर्षिपुर्विवांबुदं; M3, 4 विवर्षुर्विव चांबुदः (for the post. half). — (L. 23) M3, 4 कैमरिः (for कैमरी). G2 कैमरी राक्षसेश्वरः (for the post. half). — (L. 24) M6 [उ]स्थितं (for स्थितम्). M2, 4 सिंहः सिंह इवोत्थितं (for the post. half). — (L. 25) G2 M6 (inf. lin.) चर्मणा (for व*). — (L. 26) G1 घटोत्कचं. — (L. 30) T M3-s अन्वहतस्य (for अभि*). G1 M आसीन् (for अभून्). G2, 4 महात्मनः (for 'स्वनः'). — G1 om. lines 31-35. — (L. 31) G1 M1, 2 तरसा (for सहसा). M3-s दिवं (for भृशम्).

— (L. 32) G3 अतिमागांस् (for असिमागांस्). — (L. 33) T G1, 2 M सन्नौ (for भिन्नौ). — (L. 34) G1 -हते इव; M1, 2 -हताविव (for -तटेष्विव). — (L. 35) G1 M1, 2 तत्र (for ततः). — (L. 36) G1 M1, 2 युद्धे (for युद्धं). — (L. 37) G1 M1, 2 उभौ (for ततो). G1 M -रक्तांगाव् (for -रक्ताक्षाव्). — (L. 38) T G2 अथैश्च (G2 'क्षय'तां; G3-s तथैक्ष्येतां (for अदृश्येतां). G1 M1, 2 तौ व्यूढौ (for शार्दूलौ). — (L. 40) G2 पर्वतौ (for पक्षिणौ). — (L. 41) G6 भ्रामयित्वा (for ततो भ्राम्य). G3 ततो भ्राम्यकृतं खड्गं (for the prior half). G1 M1, 2 तदा (for पाण्डोः). T -मर्दनः; G2 -मर्दनौ (for -नन्दनः). — (L. 44) G1 M3, 4 समसज्जतुः (for 'ताम्'). — (L. 45) G1 M1, 2 शीर्षघातांसघाताभ्यां; G2-s शीर्षघातांसघातैश्च (for the prior half). — (L. 46) G1 M1, 2 व्यायुध्येतां; M3-s अयुध्येतां (for व्यायुध्येते).

11

(L. 2) T G2 आसुरेव च (hypermetric) (for 'रे

आसुरे तु महासैन्ये तारकं पावकियथा ।

तयोरेवं महद्युद्धमभवद्भीमकर्णयोः ।

तं भीमसेनो महता शरवर्षेण वारयन् ।

विद्याध सारथिं चास्य हयांश्च चतुरः शरैः । [5]

ध्वजं चास्य पताकां च भल्लैः संनतपर्वभिः ।

रथं च चक्ररक्षौ च भीमश्चिच्छेद मारिष ।

कर्णोऽपि रथिनां श्रेष्ठो भीमसेनेन कम्पितः ।

खड्गचर्मधरो राजन्भीममभ्यद्रवद्रुली ।

भीमश्चिच्छेद खड्गं च चर्मणा सह मारिष । [10]

दृष्ट्वा कर्णं च पार्थेन व्राधितं ब्रह्मिः शरैः ।

दुर्योधनो महाराज दुःशलं प्रत्यभापत ।

कर्णं कृच्छ्रगतं पश्य शीघ्रं यानं प्रयच्छ ह ।

एवमुक्तस्ततो राजा दुःशलः समुपाद्रवत् ।

दुःशलस्य रथं कर्णश्चारुरोह महारथः । [15]

तौ पार्थः सहसा गत्वा विद्याध दशभिः शरैः ।

पुनश्च कर्णं विद्ध्वापि दुःशलस्य शिरोऽहरत् ।

दुःशलं निहतं दृष्ट्वा भीमसेनेन मारिष ।

तस्यैव धनुरादाय कर्णो विद्याध पाण्डवम् ।

अन्योन्यं समरे वीरौ युयुधाते महावलौ । [20]

शत्रुघ्नौ शत्रुमध्ये तु बलवज्रभृताविव ।

भीमो विद्ध्वा हयांश्चैव सारथिं च पुनः पुनः ।

कर्णमभ्यद्रवत्पार्थः प्रहसंश्च महाबलः ।

ततो व्यायच्छमानस्य भीमसेनस्य संयुगे ।

तत्सैन्यं शकलीभूतं न प्राजायत किञ्चन । [25]

12

After 7. 114. 42, B De1 Ds ins. :

ततश्चटचटाशब्दो गोधाघाताद्भूतयोः ।

तलशब्दश्च सुमहान्सिंहनादश्च भैरवः ।

रथनेमिनादश्च ज्याशब्दश्चैव दारुणः ।

योधा व्युधारमन्युद्धादिदक्षन्तः पराक्रमम् ।

कर्णपाण्डवयो राजन्परस्परवर्षेणिगोः । [5]

देवर्षिसिद्धगन्धर्वाः साधु साध्वित्युपज्ञयन् ।

सुसुतुः पुष्पवर्षं च विद्याधरगणास्तथा ।

ततो भीमो महाबाहुः संरम्भी दृढविक्रमः ।

अश्वैरस्त्राणि संवार्य शरैर्विद्याध सूतजम् ।

कर्णोऽपि भीमसेनस्य निवार्यैयून्महाबलः । [10]

प्राहिणोच्चव नाराचानाशीविषसमाव्रणे ।

तावद्विरथ तान्भीमो व्योम्नि चिच्छेद पत्रिभिः ।

नाराचान्सूतपुत्रस्य तिष्ठ तिष्ठेति चाब्रवीत् ।

ततो भीमो महाबाहुः शरं कुद्धान्तकोपमम् ।

सुमोचाधिरयेवीरो यमदण्डमिवापरम् । [15]

तमापतन्तं चिच्छेद राधेयः प्रहसन्निव ।

त्रिभिः शरैः शरं राजन्पाण्डवस्य प्रतापवान् ।

पुनश्चासृजदुग्माणि शरवर्षाणि पाण्डवः ।

13

After 7. 118. 15, Dn2 Ds. 2. 5. 9 S ins. :

संजय उवाच ।

एवमुक्तो रणे पार्थो मूरिश्रवसमब्रवीत् ।

half). — (L. 4) T [अ]वारयत्. — (L. 5) T G2 वि-
व्याध (for 'ध'). — (L. 12) T दुःशलः. — (L. 13)
T शीघ्रयानं. G2 शीघ्रं तूपरकं जहि (for the post. half).
— Before line 14, Gs ins. संजय उवाच. — (L. 14)
T दुःशलः. — (L. 15) T दुःशलस्य. — (L. 16) T G2
विद्याध. — (L. 17) G2 च (for [अ]पि). T दुःशलस्य.
— (L. 18) T दुःशलः. — (L. 19) T G2 विद्याध.
— (L. 21) T G2 बलिवज्र- (for 'बल'). — (L. 23)
Gs प्रहसन्ने (for 'संश्र'). T महारथः (for 'बल'). — G2-s
om. lines 24-25. — (L. 25) T1 (before corr. as
above).² शकलीकृतं (for 'भूतं').

13

Dn2 Ds. 2. 5. 9 om. the ref. Ds om. line 1. Ms. s
पार्थ (for संजय). — (L. 1) Ds हि कैतेयो (for रणे
पार्थो). — (L. 2) Dn2 Ds. 2. 5. 9 व्यक्तं हि जी (Ds s
व्यक्तैतज्जी-; Ds व्यक्तं जी) यन्मायो (Ds 'नो') पि (for the
prior half). Gs संजयसे (for 'रत्न'). Dn2 Ds. 2. 5. 9
बुद्धि जरयते नरः (for the post. half). — (L. 3) G1

12

(L. 4) Ds साधु साध्विति वै प्रोचुर् (for the prior

व्यक्तमेव हि जीर्णः सन्बुद्धिं रञ्जयसे नृप ।
 अनर्थकमिदं सर्वं यत्त्वया ग्याहृतं प्रभो ।
 हृषीकेशेन संबन्धं गर्हसे मां च मूढवत् ।
 रणानामसि धर्मज्ञः सर्वशास्त्रार्थपारगः । [5]
 न चाधर्ममहं कुर्यां जानंश्चैव हि मुखसे ।
 युध्यन्ते क्षत्रियाः शत्रून्स्वैः स्वैः परिबृता नृप ।
 भ्रातृभिः पितृभिः पुत्रैस्तथा संबन्धिबान्धवैः ।
 वयस्यैरथ मित्रैश्च स्वबाहुबलमाश्रिताः ।
 अहं हि सात्यकिं शिष्यं सुखसंबन्धिमेव च । [10]
 मदर्थे युध्यमानं च त्यक्त्वा प्राणान्सुदुस्त्वय्यान् ।
 मम बाहुं रणे राजन्दक्षिणं युद्धदुर्मदम् ।
 निकृष्यमानं तं दृष्ट्वा कथं शत्रुवशं गतम् ।
 त्वया निकृष्यमाणं च दृष्टवानस्मि निक्षिप्यम् ।
 न चात्मा रक्षितव्यो हि एको रणगतेन हि । [15]

यो यस्य युध्यतेऽर्थाय स संरक्ष्यो नराधिप ।
 तै रक्ष्यमाणः स नृपो रक्षितव्यो महामृचे ।
 यद्यहं सात्यकिं दृष्ट्वा तूष्णीमासिष्य आहवे ।
 ततस्तेन वियोगश्च प्राप्यं नरकमेव च ।
 रक्षितश्च मया यस्मात्तस्मात्तव्यो मया स च । [20]
 यशश्चैव स्वपक्षेभ्यः फलं मित्रस्य रक्षणात् ।
 यच्च मां गर्हसे राजन्नन्येन सह संगतम् ।
 कस्तेन संगमं नेच्छेत्तत्र ते बुद्धिबिभ्रमः ।
 कवचं युध्यन्तस्तुभ्यं रथं चारोहतः स्वयम् ।
 धनुज्यां कर्पतश्चैव युध्यतः सह शत्रुभिः । [25]
 एवं रथगजाकीर्णं हयपत्तिसमाकुले ।
 सिंहनादोद्धतरये गम्भीरे सैन्यसागरे ।
 स्वैश्चापि समुपेतस्य विक्रान्तस्य तथा रणे ।
 सत्यकेन कथं योग्यः संग्रामस्ते भविष्यति ।

M1. 2. 5 विभो (for प्रभो). — (L. 4) Dn2 D2. 3. 5. 6 जानन्नेव (D3. 6 °जपि) हृषीकेशं (for the prior half). Dn2 D6 पांडवं; D3. 6 केशवं (for मूढवत्). D2 माव-
 मंसाश्च केशवं (for the post. half). — (L. 5) Dn2 D2. 3. 5. 6 संग्रामाणां हि (D2 च) (for रणानामसि). M3. 4 धर्मज्ञः. D2 M6 -शस्त्राख- (for -शास्त्रार्थ-). M3. 4 -पारग- — (L. 6) D2 धर्मम् (for [अ]पि). G1. 4 M1. 2. 5 हि मुखसि; G5 M3. 4 विमुहसि (for हि मुखसे). T G2. 8 अजानंश्चैव मुखसि (for the post. half). — (L. 7) Dn2 D3. 5. 6 युध्यन्ति; G1 युध्यन्ते (for युध्यन्ते). D3. 6 सर्वान् (for शत्रून्). D2 युध्यन्ति रक्षिताः शत्रून् (for the prior half). D6 स्वस्यैः (for स्वैः स्वैः). Dn2 D6 नराः (for नृप). — (L. 9) Dn2 D2. 3. 5. 6 ते च (D6 वै) बाहुं स (D2. 5. 6 °हुत्) माश्रिताः (for the post. half). — (L. 10) Dn2 D2. 3. 5. 6 स कथं (for अहं हि). G1 M1. 2. 5 सत्यकं (for सात्यकिं). D3. 6 सखि- (for सुख-). D2 सखिसंबन्धिनं च हि; S सहा (G1 M1. 2. 5 °खा) यं बांधवं तथा (for the post. half). — (L. 11) M3. 4 मदर्थे (for °र्थे). Dn2 D3. 5. 6 असदर्थे (D3. 6 °र्थे) च युध्यन्तं (for the prior half). — Dn2 D2. 3. 5. 6 om. lines 13-14. — (L. 13) G2-6 निकृष्यमाणं. — (L. 14) G1 यत्त्वा (for त्वया). G1 M1. 2. 5 विकृष्यमाणं (for निकृष्यं). — (L. 15) T G2-6 M5 च त्वं; G1 M (M5 sup. lin.) त्वया (for चात्मा). Dn2 D2. 3. 5. 6 वै (for हि). Dn2 D3. 5. 6 राजन् (for एको). D2 आपद्गतेन (for रणम्). G2. 3. 5 M वै (for हि). — (L. 16) Dn2 D6 युध्यन्ते (for युध्यन्ते). Dn2 D6 [S]प्रेषु; D3. 6 [S]प्रे तु (for सार्थाय). D2 आपस्तु

ये च युध्यन्ते (for the prior half). Dn2 D6 स वै रक्ष्यो; D2 ते वै रक्ष्या; D3. 6 स वै नान्यो (for स संरक्ष्यो). — (L. 17) Dn2 D2. 3. 5. 6 रक्ष्यमाणैः; T G3. 4 द्रक्ष्य-
 माणः (for रक्ष्य°). D3 स नृपो; D6 स नृपा (for स नृपो). D6 रक्षितव्या (for रक्षितव्यो). — (L. 18) G1 M सत्यकं (for सात्यकिं). Dn2 D2. 3. 5. 6 पश्ये (for दृष्ट्वा). Dn2 D2. 3. 5. 6 वध्यमानं महारणे (for the post. half). — (L. 19) Dn2 D6 तस्य (for तेन). Dn2 D2. 3. 5. 6 वियोगेन (for °गश्च). G3-6 प्राप्तं (for प्राप्यं). Dn2 D6 पापं मेनर्थतो भवेत्; D2 पापं ननु कथं मम; D3. 6 पापं न कथमेव मे (for the post. half). — (L. 20) G3 सखा (for स च). Dn2 D3. 5. 6 तस्मात्कुध्यसि किं मयि (for the post. half). — Dn2 D2. 3. 5. 6 om. line 21. — (L. 22) Dn2 D6 M1. 2. 5 मे; D6 M3. 4 मा (for मां). D6 अल्पेन; T G2-6 कृष्णेन; G1 M विष्णुना (for अन्येन). D2. 3. 6 संगतः. — (L. 23) G1 M संगतं; G3 संयुगं (for संगमं). Dn2 D2. 3. 5. 6 अहं त्वया विनिकृ-
 (Dn2 D6 °ह) तस्त्वं (for the prior half). Dn2 D2. 3. 5. 6 मे (for ते). — (L. 24) D2 कवची त्वं धनुष्पांश्च (for the prior half). D2 रथे (for रथं). D2 मया (for स्वयम्). — For lines 24-25, S subst.:

आवद्धकवचस्येह रथमारुह्य तिष्ठतः ।

सर्वायुषेरुपेतस्य प्रतियोद्धप्रतीक्षिणः ।

— (L. 26) S स्व (G1 M अ) सिन्धुयगजानीके (for the prior half). G6 damaged for the post. half. — (L. 27) G6 *हनादोद्धतायेन (for the prior half). — (L.

बहुभिः सह संगम्य निजित्य च महारथान् । [30]

श्रान्तश्च श्रान्तवाद्वाक्ष क्षीणसर्वायुधस्त्वया ।

इदं सात्यकि संख्ये निजित्य च महारथम् ।

अधिकं त्वं विजानीषे तथाप्यन्यमना भवान् ।

यदिच्छसि शिरश्चास्य असिना हर्तुमाहवे ।

तथा कृच्छ्रगतं दृष्ट्वा सात्यकिं कः क्षमिष्यति । [35]

त्वं तु गर्ह्य चात्मानमात्मानं यो न रक्षसि ।

कथं करिष्यसे वीर यो वा त्वां संश्रयेजनः ।

आत्तशस्त्रस्य हि रणे वृष्णीपुत्रं जिवांसतः ।

द्विजवान्यदहं बाहुं नैतल्लोकविगर्हितम् ।

न्यस्तशस्त्रस्य हि पुनर्विकलस्य विवर्मेणः । [40]

अभिमन्योर्वैधं तात धार्मिकः को नु पूजयेत् ।

14

After 7. 118. 26, S ins. :

दुर्योधनस्य क्षुद्रस्य न प्रमाणे च तिष्ठतः ।

सौमदत्तेरयं साधु सर्वसाहाय्यकारिणः ।

अस्मदीया मया रक्ष्याः प्राणबाध उपस्थिते ।

ये मे प्रत्यक्षतो वीरा हन्येरन्निति मे मतिः ।

सत्यकश्च वशं नीतः कौरवेण महात्मना । [5]

ततो मयैतच्चरितं प्रतिज्ञारक्षणं प्रति ।

संजय उवाच ।

पुनश्च कृपयाविष्टो बहु तत्तद्विचिन्तयन् ।

उवाच चैनं कौरव्यमर्जुनः शोकपीडितः ।

षिगस्तु क्षत्रधर्मं तु यत्र त्वं पुरुषेश्वरः ।

अवस्थामीदृशीं प्राप्तः शरण्यः शरणप्रदः । [10]

नातिभारः कृतान्तस्य विद्यते कुरुनन्दन ।

यत्र त्वं पुरुषेयाग्रः प्राप्तः पापामिमां दशाम् ।

नात्मनः सुकृतस्यास्य फलं वै नृपसत्तम ।

यत्र त्वं कुरुशार्दूल प्राप्तः पापामिमां दशाम् ।

रौरवं नरकं भीमं गमिष्यति सुयोधनः । [15]

यत्कृते नरशार्दूलः प्राप्तः पापामिमां दशाम् ।

28) G₁. 5 M₄ विश्रमस्य (for विक्रान्तस्य). D₂ D₂. 3. 5. 6 स्तैः परैश्च समेतैः (D₂ 'मन्वे'ल) सात्वतेन च संगमे (D₂ 'ते'). — (L. 29) T G₃. 4 सात्यकेन; G₂ M₄ सात्वतेन (for सत्यकेन). D₂ D₅ एकस्यैकेन हि कथं; D₂ एकैकस्य न हि कथं; D₃. 6 एकैकस्य हि कथं (for the prior half). D₂ D₂. 3. 6 सं; D₅ स (for ते). — Line 30 is partly damaged in G₅. — (L. 31) D₃. 6 आगतः (for आ-रुक्ष). G₅ क्षीणाः; M₁-3 क्षीणः (for क्षीण-). D₂ D₂. 3. 5. 6 विमनाः शस्त्रपीडितः (for the post. half). — (L. 32) S समेतः (for इदं). T G₂-5 M₃. 4 सा-त्यकिः; G₁ M₁. 2 सत्यकं; M₅ सत्यकः (for सात्यकि). G₁. 3-5 M₁. 2 संख्ये; M₃. 4 संख्ये (for संख्ये). S निजि-तश्च महारथः (for the post. half). — (L. 33) T G₂-4 त्वां; G₁ M त्वा (for त्वं). G₁. 3 M₁. 2. 5 विजानामि; G₄ न जानामि; M₃. 4 [अ]नुजानामि (for विजानीषे). D₂ अविनीतः शिरच्छेतुं; D₃. 6 विरथं शस्त्रहीनं तं; G₅ अधिकं चापि जानामि (for the prior half). M₁. 2. 5 [अ]भवं (for भवान्). D₂ D₃. 5. 6 स्ववीर्यवशमागतं (D₂ 'ते'); D₂ प्रवृत्तो वशमागतं (for the post. half). — (L. 34) D₂ यदा वक्षसि शिष्यस्य (sic); S इच्छसि त्वं शिरस्तस्य (for the prior half). D₂ D₅ हर्तुम्; D₂ हर्तुर् (for हर्तुम्). — (L. 35) D₂ D₂. 5. 6 चैव (for दृष्ट्वा). D₃ तथाप्या-पन्नं चैव (for the prior half). G₁ M₁. 2. 5 सत्यकं (for सात्यकि). — (L. 36) G₅ वा (for च). D₂ D₃. 5. 6

त्वं वै (D₃. 6 मां) विगर्हयात्मानम्; D₂ त्वं तु वै गर्हयात्मानम् (for the prior half). G₃. 4 स्वधर्म (for आत्मानं). D₃. 6 रक्षति (for 'सि'). D₅ यो न रक्षसि संयुगे (for the post. half). — (L. 37) T G₂. 3 M₃. 4 रक्षिष्यसे (T₁ 'ते'); G₁ M₁. 2 संरक्ष्यते; M₅ न रक्ष्यते (for करि-ष्यसे). D₃ वेत्तं (sic) (for वीर). D₂ ये वा त्वा शिशि-बुजंजाः; D₃. 6 ये वा त्वां संश्रया जनाः; T G₂-5 ये वै त्वां संश्रिता जनाः; G₁ M यो वै त्वां (M₅ त्वा) संश्रितो जनः (for the post. half). — D₂ D₂. 3. 5. 6 om. lines 38-41. — (L. 38) G₁ M वृष्णीवीरं (for 'पुत्रं'). — (L. 39) G₁ M लोके (for लोक-). — (L. 40) T G₂ च (for हि). T G₂-4 विरथस्य (for विकलस्य).

14

G₃. 4 om. lines 1-4. — (L. 1) T G₂. 5 अप्रमाणे (for न प्र'). M₅ [5] च (for च). — (L. 2) G₁ M₁. 2. 4. 5 कथं (for अयं). T G₅ साधुः (for साधु). G₁ M₅ सर्वे (for सर्वे). M₁. 2 सर्वे साहाय्यकारिणः; M₂. 5 सर्वे ते साहाय्यकारिणः (for the post. half). — (L. 5) G₂ सात्यकिः; G₃-5 सात्यकश्च (for सत्य). T G₂. 5 M₃. 4 वशं (for वशं). T G₂. 5 om. the ref. — (L. 8) G₁ प्रोवाच (for उवाच). — Before line 9, M₃. 4 ins. अर्जुनः. — (L. 9) M₂. 4 हि (for तु). M₃. 4 यत्त्वं हि (for यत्र त्वं). T G₂. M₃. 4

को हि नाम पुमाँहोके मादशः पुरुषोत्तम ।
प्रहरेत्त्वद्विधे त्वध प्रतिज्ञा यदि नो भवेत् ।

15

After 1004*, B Dc1 Dn1 Ds ins. :

ततः क्रुद्धो महाबाहुर्नन्दमखं दुरासदम् ।
प्रादुंश्चक्रे महाराज त्रासयन्सर्वभारतात् ।
ततः शराः प्रादुरासन्दिग्यास्त्रप्रतिमञ्जिताः ।
प्रदीप्ताश्च शिखिमुखाः शतशोऽथ सहस्रशः ।
आकर्ण्यपूर्णनिर्मुक्तैरभ्यर्कांशुनिभैः शरैः । [5]
नभोऽभवत्तद्दुष्प्रेक्ष्यमुल्कामिरिव संवृतम् ।
ततः शस्त्रान्धकारं तत्कौरवैः समुदीरितम् ।
अशक्यं मनसाप्यन्यैः पाण्डवः संभ्रमन्निव ।
नाशयामास विक्रम्य शरैर्दिग्यास्त्रमञ्जितैः ।
नैशं तमोऽंशुभिः क्षिप्रं दिनादाविव भास्करः । [10]
ततस्तु तावकं सैन्यं दीप्तैः शरगभस्तिभिः ।
आक्षिपत्पल्वलाम्बूनि निदाघार्कं इव प्रभुः ।
ततो दिग्यास्त्रविदुषा प्रहिताः सायकांशवः ।
समाप्लवन्दिपत्सैन्यं लोकं भानोरिवांशवः ।
तथापरे समुत्सृष्टा विशिखास्तिग्मतैजसः । [15]
हृदयान्माशु वीराणां विविशुः प्रियबन्धुवत् ।
य पुनमीयुः समरे त्वद्योधाः शूरमालिनः ।
शूलभा इव ते दीप्ता अग्निं प्राप्य ययुः क्षयम् ।

एवं स मृद्वन्धवृणां जीवितानि यशांसि च ।
पार्थश्चचार संग्रामे मृत्युर्विग्रहवानिव । [20]
सकिरीटानि वस्त्राणि सान्निधान्विपुलान्भुजान् ।
सकुण्डलयुगान्कर्णान्केपांचिदहरच्छरैः ।
सतोमरान्गजस्थानां सप्रासान्द्वयसादिनाम् ।
सचर्मणः पदातीनां रथिनां च सधन्वनः ।
सप्रतोदान्नियन्तृणां बाहूँश्चिच्छेद पाण्डवः । [25]
प्रदीप्तोऽग्रशराचिह्नान्धमौ तत्र धनंजयः ।
सविस्फुल्लिङ्गाग्रशिखो ज्वलन्निव हुताशनः ।
तं देवराजप्रतिमं सर्वशस्त्रभृतां वरम् ।
युगपद्विभु सर्वासु रथस्थं पुरुषर्षभम् ।
दर्शयन्तं महास्त्राणि प्रेक्षणीयं धनंजयम् । [30]
नृत्यन्तं रथमार्गेषु धनुर्ज्यातलनादिनम् ।
निरीक्षितुं न शेकुस्ते यत्नवन्तोऽपि पार्थिवाः ।
मध्यंदिनगतं सूर्यं प्रतपन्तमिवाम्बरे ।
दीप्तोऽग्रसंभृतशरः किरीटी विरराज ह ।
वर्षास्त्रिविदीर्णजलः सेन्द्रधन्वाम्बुदो महान् । [35]
महास्त्रसंज्ञे तस्मिन्निष्पुना संप्रवर्तिते ।
सुदुस्तरं महाघोरे ममज्जुयौधपुंगवाः ।
उत्कृत्तवदनैर्देहैः शरीरैः कृत्तवाहुभिः ।
भुजैश्च पाणिनिर्मुक्तैः पाणिमिर्मुक्तलीकृतैः ।
कृत्ताग्रहस्तैः करिभिः कृत्तदन्तैर्मदोत्कटैः । [40]
हयैश्चिह्नखुरग्रीवै रथैश्च शकलीकृतैः ।

पुरुषेश्वर. — (L. 10) Ms शरणप्रद (for 'प्रदः'). — (L. 12) G1 M पुरुषव्याघ्र. — G1 M1.2 om. (hapl.) lines 13-14. — (L. 13) Ms.4 न नृत्तं (for नात्मनः). — (L. 16) G1 M नरशार्ङ्ग. — (L. 17) G1 M1.2 पुरुषोत्तमः.

15

(L. 1) Dc1 Dn1 पार्थो (for क्रुद्धो). — (L. 4) B1 प्रदीप्ताग्राः (for 'साश्च'). — (L. 8) B1 अशक्यं (for अशक्यं). — (L. 12) D1 निदाघार्कं (for निदाघार्कं). — (L. 14) Dc1 समाभुवन्; D1 बृणवन् (for 'बृवन्'). — (L. 15) B1 Dn1 अथ (for तथा). — (L. 18) B1 सलभा (for शं). Bom. ed. दीप्तम् (for दीप्ता). — (L. 19) B1 शराणां (for शृङ्गाणां). — (L. 22) D1 युतात् (for 'युगान्'). D1 अहनत् (for 'रत्'). — (L. 24)

B1.6 Dn1 सवर्मणः (for सवर्). B1 सवर्मणः; B1 Dn1 सधन्विनः (for सधन्वनः). D1 रथिनां सशरं धनुः (for the post. half). — (L. 28) B1 शर- (for सर्व-). — (L. 30) Bom. ed. निक्षिपन्तं (for दर्शयन्तं). — (L. 31) Dc1 D1 नानादितं (for 'नम्'). — (L. 32) Dn1 निरीक्षितुं (for निरी). B1 पाण्डवं (for पार्थिवाः). — After line 32, B1 ins. :

न शेकुः सर्वसैन्यानि पाण्डवं प्रतिवीक्षितुम् ।
प्रस्तास्य गाण्डीवाञ्शरवातामहात्मनः ।
संग्रामे सप्तपश्याम हंसपङ्कीरिवाम्बरे ।
विनिवार्य स वीराणामस्त्रेणास्त्राणि सर्वशः ।

— (L. 34) Dc1 Dn1 -संहित-; D1 -संहत- (for -संभृत-). — (L. 37) Dn1 युधि (for योध-). — (L. 38) B1 गत- (for कृत्त-). — (L. 41) B1.6 D1 च विधुर- (for

निकृताङ्गैः कृत्तपादैस्तथान्यैः कृत्तसंधिभिः ।
निश्चेष्टैर्विस्फुरद्भिश्च कूजद्भिश्च सहस्रशः ।
मृत्योराघातललितं तत्पार्थायोधनं महत् ।
अपदयाम महीपाल मीरूणां भयवर्धनम् । [45]
आक्रीडामिव रुद्रस्य पुराभ्यर्दयतः पशून् ।
गजानां क्षुरनिर्मुक्तैः करैः समुजगेव भूः ।
कचिद्वभौ स्रग्विणीव वक्रपद्मैः समाचिता ।
विचित्रोष्णीषमुकुटैः केयूराङ्गदकुण्डलैः ।
स्वर्णचित्रतनुवैश्रै भाण्डैश्च गजवाजिनाम् । [50]
किरीटशतसंकीर्णां तत्र तत्र समाचिता ।
विरराज भृशं चित्रा मही नववधूरिव ।
मज्जामेदःकर्दमिनीं शोणितौघतरङ्गिणीम् ।
मर्मास्थिमिरगाधां च केशशैवलशाद्वलाम् ।
शिरोबाहूपलतटां रगणक्रोडास्थिसंकटाम् । [55]
चित्रध्वजपताकाढ्यां छत्रचापोर्मिमालिनीम् ।
विगतासुमहाकायां गजदेहाभिसंकुलाम् ।
रथोद्भुपशताकीर्णां हयसंघातरोधसम् ।
रथचक्रयुगोपाक्षकृवरैरतिदुर्गमाम् ।
प्रासासिशक्तिपरशुविशिखाहिदुरासदाम् । [60]
बलकङ्कमहानक्रां गोमायुमकरोत्कटाम् ।
गुध्रोदग्रमहाग्राहां शिवाविरुतभैरवाम् ।
नृत्यप्रेतपिशाचाद्यैर्भूतैः कीर्णां सहस्रशः ।

गतासुयोधनिश्चेष्टशरीरशतवाहिनीम् ।
महाप्रतिभयां रौद्रां घोरां वैतरणीमिव । [65]
नदीं प्रवर्तयामास मीरूणां भयवर्धिनीम् ।
तं दृष्ट्वा तस्य विक्रान्तमन्तकस्येव रूपिणः ।
अभूतपूर्वं कुरुषु भयमागाद्राजाजिरे ।
तत आदाय वीराणामस्त्रैस्त्राणि पाण्डवः ।
आत्मानं रौद्रमाचष्ट रौद्रकर्मणि निष्ठितः । [70]
ततो रथवराभ्राजन्नभ्यतिक्रामदर्जुनः ।

16

Ks B Dci Dn Dz, s ins. after 7. 121. 15 : Ds
after 14^{ab} : Ds after 16^{ad} :

एष मध्ये कृतः पङ्क्तिः पार्थ वीरैर्महारथैः ।
जीवितेप्सुसैहावाहो भीतस्तिष्ठति सैन्धवः ।
एताननिर्जित्य रणे पद्व्यान्पुरुषर्षभ ।
न शक्यः सैन्धवो हन्तुं ततो निर्वाजमर्जुन । [5]
योगमत्र विधास्यामि सूर्यस्यावरणं प्रति ।
अस्तं गत इति व्यक्तं द्रक्ष्यत्येकः स सिन्धुराट् ।
हर्षेण जीविताकाङ्क्षी विनाशार्थं तव प्रभो ।
न गोप्यति दुराचारः स आत्मानं कथंचन ।
तत्र छिद्रे प्रहृत्यं त्वयास्य कुरुसत्तम ।
व्यपेक्षा नैव कर्तव्या गतोऽस्तमिति भास्करः । [10]
एवमस्त्विति वीरमत्सुः केशवं प्रत्यभाषत ।

छिन्नसुरः. — (L. 42) B₂, s Dci Dn₁ निष्कीर्णाङ्गैः (for
निकृताङ्गैः). Ds कृत्तमूर्द्धभिः (for 'संधिभिः'). — (L. 43)
B₂, s शतशोथ (for कूजद्भिश्च). — (L. 44) Ds मृत्यो-
राक्रीडननिभं (for the prior half). — Bs om. line 45.
— (L. 47) B₁, s सुरः (for क्षुरः). — (L. 48) Dn₁
सङ्कीर्णव (for स्रग्वि). — (L. 52) B₁ transp. चुरं
and मही. — After line 53, Ds reads line 61.
— (L. 54) Dn₁ बर्मास्थिभिः (for मर्मा). Dci Dn₁
शाङ्गलां (for -शाङ्गलाम्). — (L. 55) Dci Dn₁ रग-
(for रगणः). Dn₁ संकुलां (for -संकटाम्). — (L. 56)
Dn₁ छिन्नः (for छत्रः). — (L. 59) B युगेशाक्षः (for
'पाक्षः'). — (L. 60) B₁₋₄ Ds -शानः (for -शक्तिः).
— (L. 61) Dn₁ बलाहकः (for बलकङ्कः). B -मकरोत्करां;
Ds 'ल्वनां (for 'त्कटाम्). — (L. 63) Dn₁ भूताकीर्णां
(for भूतैः कीर्णां). — (L. 67) Dci तद् (for तं).
— (L. 69) B₁ विनिवार्य शरीराणाम् (for the prior half).

Bs अन्वैर् (sic) (for अन्वैर्). — (L. 70) Bom. ed.
[अ]पिष्ठितः (for नि). — (L. 71) B (except B₂)
अत्यतिक्रामद् (for अन्यति).

16

Ds om. lines 1-2. — (L. 3) B₁ Ds पुरुषर्षभात्.
— (L. 4) Ds शक्योथ (for न शक्यः). Dci वक्तो
(for ततो). Ds अर्जुनं. Ks D₁ यत्नवान्भव फाल्गुन;
Dn₂ D₂ वक्तो विव्याप चाजुन (for the post. half).
— (L. 6) Dci इव (for इति). Dci Dn₁ अर्कं
(for एकः). — (L. 7) B₁ विनाशाय; D₁ विनाशार्थं
(for 'शार्थं). — (L. 8) B₁ स सार्थानां; D₂ स्वमा-
त्मानं (for स अ). — (L. 9) B₁ तु; D₂ स;
Ds [अ]सौ (for [अ]स्य). — Ds om. lines 16-85.
— (L. 16) D₂ तव (for रविम्). — (L. 17) B₁ तथा
(for तदा). B₁ नन्नास्यन्नापि न * (for the prior half).

ततोऽसृजत्तमः कृष्णः सूर्यस्यावरणं प्रति ।
 योगी योगेन संयुक्तो योगिनामीश्वरो हरिः ।
 सृष्टे तमसि कृष्णेन गतोऽस्तमिति भास्करः ।
 त्वदीया जह्नुष्यौघाः पार्थनाशास्त्रराधिप । [15]
 ते प्रहृष्टा रणे राजन्नापश्यन्सैनिका रविम् ।
 उन्नाम्य वक्राणि तदा स च राजा जयद्रथः ।
 वीक्षमाणे ततस्तस्मिन्सिन्धुराजे दिवाकरम् ।
 पुनरेवाव्रवीत्कृष्णो धनंजयमिदं वचः ।
 पश्य सिन्धुपतिं वीरं प्रेक्षमाणं दिवाकरम् । [20]
 भयं विपुलमुत्सृज्य त्वत्तो भरतसत्तम ।
 अयं कालो महाबाहो वधायस्य दुरात्मनः ।
 छिन्धि मूर्धानमस्याशु कुरु साफल्यमात्मनः ।
 इत्येवं केशवेनोक्तः पाण्डुपुत्रः प्रतापवान् ।
 न्यवधीत्तावकं सैन्यं शरैरर्काग्निं संनिभैः । [25]
 कृपं विन्याध विंशत्या कर्णं पञ्चाशता शरैः ।
 शल्यं दुर्योधनं चैव षड्भिः पङ्क्तिरताडयत् ।
 वृषसेनं तथाष्टाभिः पृथया सैन्यवमेव च ।
 तथैवान्यान्महाबाहुस्त्वदीयान्पाण्डुनन्दनः ।
 गाढं विद्ध्वा शरैः राजञ्जयद्रथमुपाद्रवत् । [30]
 तं समीपस्थितं दृष्ट्वा लेलिहानमिवानलम् ।
 जयद्रथस्य गोसारः संशयं परमं गताः ।
 ततः सर्वे महाराज तव योधा जयैषिणः ।
 सिपिबुः शरधाराभिः पाकशासनिमाहवे ।
 संछाद्यमानः कौन्तेयः शरजालैरनेकशः । [35]
 अक्रुष्यत्स महाबाहुरजितः कुरुनन्दनः ।

ततः शरमयं जालं तुमुलं पाकशासनिः ।
 व्यसृज्यतुल्यव्याघ्रस्तव सैन्यजिघांसया ।
 ते हन्यमाना वीरेण योधा राजत्रणे तव ।
 प्रजहुः सैन्यध्वं भीता द्वौ समं नाप्यधावताम् । [40]
 तत्राद्भुतमपश्याम कुन्तीपुत्रस्य विक्रमम् ।
 तादृक् न भावी भूतो वा यच्चकार महायशः ।
 द्विपान्द्विपगतांश्चैव हयान्हयगतानपि ।
 तथा स रथिनश्चैव न्यहृद्भुद्रः पशूनिव ।
 न तत्र समरे कश्चिन्मया दृष्टो नराधिप । [45]
 गजो वाजी नरो वापि यो न पार्थशराहतः ।
 रजसा तमसा चैव योधाः संछन्नचक्षुषः ।
 कश्मलं प्राविशन्वोरं नान्वजाननपरस्परम् ।
 ते शरैर्भिन्नमर्मणः सैनिकाः पार्थचोदितैः ।
 वभ्रमुशस्त्रखलुः पेतुः सेतुर्मल्लुश्च भारत । [50]
 तस्मिन्महाभीपणके प्रजानामिव संक्षये ।
 रणे महति दुष्पारे वर्तमाने सुदारुणे ।
 शोणितस्य प्रसेकेन शीघ्रत्वादनिलस्य च ।
 अशाम्यत्तद्रजो भौममसृक्सिक्ते धरातले ।
 आनामि निरमज्जंश्च रथचक्राणि शोणिते । [55]
 मत्ता वेगवतो राजंस्तवाकानां रणाङ्गणे ।
 हस्तिनश्च हतारोहा दारिताङ्गाः सहस्रशः ।
 स्वान्यनीकानि मृदन्त आर्तनादाः प्रदुद्बुधुः ।
 ह्यशश्च पतितारोहाः पत्तयश्च नराधिप ।
 प्रदुद्बुधुर्भयाद्राजन्धनं जयशराहताः । [60]
 मुक्तदेशा विक्रवचाः क्षरन्तः क्षतजं क्षितौ ।

— B₅ om. (hapl.) lines 19-20. — (L. 20) D₁ D₁ संख्ये (for धीरं). — (L. 21) K₄ D₂ D₁ २ अयं हि (K₄ भयेन) विप्रमुष्येतत् (for the prior half). — (L. 26) D₃ पंचशता. — (L. 27) D₁ एतान् (for the second पङ्क्तिं). — K₁ om. lines 28-30. — (L. 29) D₂ D₂ च; D₁ [अ]स्मान् (for [अ]न्यान्). D₁ सर्वान्धै (for त्वदीयान्). — B₁ om. lines. 33-36. — (L. 37) D₁ D₂ तुमलं (for तुमुलं). — (L. 40) B₅ समौ (for समं). K₄ D₁ २ नाभ्यधावतां (for नाप्य). — (L. 44) D₁ D₁ सारथिनश् (for स रथि). K₄ D₁ जग्रे (for न्यहन्). — (L. 45) D₁ तत्र न (by transp.). — (L. 47) D₁ D₅ संछिन्नः (for संछन्नः). — (L.

48) K₄ D₁ अभ्यजानन्; B₁ ३ D₁ D₃ नाभ्यजा* (for नाभ्यजा*). B₄ पराभवं (for परस्परम्). — (L. 49) D₁ तैः (for ते). K₄ D₁ -नोदितैः; B₅ D₂ ३ -चोदिताः (for -चोदितैः). — (L. 53) K₄ अनलस्य (for अनि*). — (L. 54) D₁ अशाम्यत् (for अशाम्यत्तद्). D₃ संसृक्तिने (for असृक्सिक्ते). D₁ असृक्सिक्ते च धरातले (hypermetrie) (for the post. half). — (L. 56) D₁ तत्र (for मत्ता). B₁ D₂ वेगवतां; B₂ ३ ५ D₂ वेगवता (for वतो). B रणाङ्गे (for रणाङ्गणे). — (L. 57) B₅ ते (for च). — B₂ om. lines 61-64. — (L. 61) D₂ D₂ क्षितैः (for क्षितौ). — (L. 62) B₁ अपलायन्तः; B₁ D₂ D₃ प्रापला* (for प्रपला*). —

प्रपलायन्त संव्रस्तास्त्यक्त्वा रणशिरो जनाः ।

ऊरुप्राहगृहीताश्च केचित्तत्राभवन्भुवि ।

हतानां चापरे मध्ये द्विरदानां निलिल्यिरे ।

एवं तव बलं राजन्द्रावयित्वा धनंजयः । [65]

न्यवधीत्सायकैर्वैरैः सिन्धुराजस्य रक्षिणः ।

कर्णं द्रौणिं कृपं शल्यं वृषसेनं सुयोधनम् ।

छादयामास तीव्रेण शरजालेन पाण्डवः ।

न गृह्णन्नक्षिपत्राजस्यमुञ्चन्नापि संदधन् ।

अदृश्यतार्जुनः संल्ये शीघ्रास्त्रत्वात्कथंचन । [70]

धनुर्मण्डलमेवावस्य दृश्यते स्मात्यतः सदा ।

स्नायकाश्च व्यदृश्यन्त निश्चरन्तः समन्ततः ।

कर्णस्य तु धनुश्छित्त्वा वृषसेनस्य चैव ह ।

शल्यस्य सूतं भलेन रथनीडादपातयत् ।

गाढविद्धावुभौ कृत्वा शरैः स्वस्त्रीयमातुलौ । [75]

अर्जुनो जयतां श्रेष्ठो द्रौणिशारद्वतौ रणे ।

एवं तान्याकुलीकृत्य त्वदीयानां महारथान् ।

उज्जहार शरं घोरं पाण्डवोऽनलसंनिभम् ।

इन्द्राशिसमप्रख्यं दिव्यमस्त्रामिभ्रजितम् ।

सर्वेभारसहं शश्वद्वन्धमाल्याचितं महत् । [80]

वज्रेणास्त्रेण संयोज्य विधिवत्कुरुनन्दनः ।

समादधन्महाबाहुर्गाण्डिवे क्षिप्रमर्जुनः ।

तस्मिन्संवीयमाने तु शरे ज्वलनतेजसि ।

अन्तरिक्षे महानादो भूतानामभवन्नृप ।

अत्रवीच पुनस्तत्र त्वरमाणो जनादनः । [85]

17

Bi-4 Dc1 ins. after 7, 123, 36 : B2 after 10 : Dn1 after 35^{ab} : D2 after 41 :

अनुकर्णैरुपास्रैः पताकामिध्वजैस्तथा ।

उपस्करैरधिष्ठानैरीपादण्डकवन्धुरैः ।

चक्रैः प्रमथितैश्चित्रैरस्त्रैश्च बहुधा रणे ।

युगैर्योक्रैः कलापैश्च धनुभिः सायकैस्तथा ।

परिस्तोमैः कुयामिश्च परिवेष्टुर्हस्तैस्तथा । [5]

शक्तिमिभिन्दिपालैश्च तूणैः शूलैः परस्वधैः ।

प्रासैश्च तोमरैश्चैव कुन्तैर्यष्टिभिरेव च ।

शतघ्नोमिर्मुञ्चुण्डीभिः खट्वैः परशुभिस्तथा ।

मुसलैर्मुद्गरैश्चैव गदाभिः कुणपैस्तथा ।

सुवर्णविकृतामिश्च कशामिर्मरतर्पणम् । [10]

घण्टामिश्च गजेन्द्राणां भाण्डैश्च विविधैरपि ।

स्त्रग्भिश्च नानाभरणैर्वैश्वैश्चैव महाधनैः ।

अपविद्धैर्वैभौ भूमिप्रहैर्यौरिव शारदा ।

— (L. 63) B3 [अ]पतन् (for [अ]भवन्). — (L. 65) B1 वासयित्वा (for द्राव). — (L. 67) Bom. ed. द्रौणिं कृपं कर्णशर्यौ (for the prior half). — (L. 68) D3 विक्षिपन् (for पाण्डवः). — D2 om. lines 69-85. — (L. 69) B1-3, 5 संदधत् (for 'धन्'). B1 Dn2 मुञ्चन्नापि च संदधत्; Dn1 न मुञ्चन्नापि मादधत् (for the post. half). — After line 69, K1 D1 ins.:

दृष्ट्ये रणभूमौ तु शरजालानि विक्षिपन् ।

ततस्तस्य नरेन्द्रस्य पुत्रमूर्धनि भूतले ।

जयद्रथवधे प्राप्ते लम्बमाने दिवाकरे ।

कौरवो पाण्डवी सेना बाला प्रौढा बधूरिव ।

[(L. 1) D1 सर- (for शर-). — D1 om. lines 2-4.]

— K1 D1 om. lines 70-85. — (L. 73) B1, 3 Dc1 च (for तु). D2 हि (for ह). — (L. 74) B1, 3 Dc1 Dn1 अपाहारत् (for 'तयत्'). — (L. 77) B1, 1 Dc1

त्वदीयान् (for त्वदीयानां). — (L. 78) B1, 2 (marg.). 3 Dc1 Dn1 उद्वहत् (for उज्जहार). — (L. 79) B1, 3 Dc1 Dn1 मंत्रानुः B2, 1, 3 मंत्राभिः (for अस्त्राभिः). — B2 reads lines 82-85 on marg. — (L. 84) B1, 2, 3 अन्तरीक्षे (for 'रिक्षे'). Dc1 चाभवन् (for अभवन्).

17

B2 reads lines 1-2 on marg. — (L. 1) D2 युगैः खट्वैः (for उपास्रैः). B4 अपि (for तथा). — (L. 3) B2 (marg.) दंष्ट्रैश्च (for अक्षैश्च). — (L. 4) B2 om. from the post. half up to the prior half of line 6. B1 धनुभिः सायकैस्तथाः (for the post. half). — (L. 6) Dn1 D2 मिदीपादैश्च (for मिन्दि). Dc1 हूलैः शूलैः परस्वधैः; D2 शूलैः प्रासैः परस्वधैः (for the post. half). — (L. 7) D2 हूलैश्च (for प्रासैश्च). — (L. 8) D2 भृश-डीभिः (for भृशैः). — (L. 9) B1, 3, 5 Dn1 मुस- (for 'श')लैर् (for मुस). B2 कुन्तैश्च; B3 कण्डैश्च (sic) (for

पृथिव्यां पृथिवीहेतोः पृथिवीपतयो हताः ।
 पृथिवीसुपगुह्याङ्गैः सुताः कान्तामिव प्रियाम् । [15]
 इमांश्च गिरिकूटाभाज्ञागानैरावतोपमान् ।
 क्षरतः शोणितं भूरि शस्त्रच्छेददरीमुखैः ।
 दरीमुखैरेव गिरिनौरिकाम्बुपरिस्रवान् ।
 तव बाणहतान्वीर पश्य निष्टनतः क्षितौ ।
 हयांश्च पतितान्पश्य स्वर्णभाण्डविभूषितान् । [20]
 गन्धर्वनगराकारात्रयांश्च निहतेश्वरान् ।
 छिन्नध्वजपताकाक्षान्विचक्रान्हतसारथीन् ।
 निकृत्तकृवरयुगान्भस्मेपान्वन्धुरान्प्रभो ।
 पश्य पार्थ हयान्भूमौ विमानोपमदर्शनान् ।
 पत्नींश्च निहतान्वीर शतशोऽथ सहस्रशः । [25]
 धनुर्भूतश्चर्मभूतः शयानानुधरोक्षितान् ।
 महीमालिङ्ग्य सर्वाङ्गैः पांशुध्वस्तशिरोरुहान् ।
 पश्य योधान्महाबाहो त्वच्छरैर्मिन्नविग्रहान् ।
 निपातितद्विपरथवाजिसंकुल-
 मस्यवसापिशितसमृद्धकर्मम् । [30]
 निशाचरश्ववृकपिशाचमोदनं
 महीतलं नरवर पश्य दुर्दृशम् ।
 इदं महत्त्वयुपपद्यते विभो
 रणाजिरे कर्म यशोभिवर्धनम् ।
 शतक्रतौ चापि च देवसत्तमे [35]
 महाहवे जहृषि दैत्यदानवान् ।
 स दर्शयन्नेव किरीटिनेऽरिहा
 जनार्दनस्त्वनरिभूमिमञ्जसा ।
 अजातशत्रुं समुपेत्य पाण्डवं

निवेदयामास हतं जयद्रथम् । [40]

18

After 7. 124. 18, B₁ De₁ Dn₁ ins. :

संहृष्टेन्द्रियचित्तात्मा नाशकद्रुक्मोजसा ।
 मुहूर्तमिव हर्षेण तूर्णान् भूत्वा महामतिः ।
 ततो हर्षान्वितो राजा हर्षांश्चुस्तलोचनः ।
 उवाच परमप्रीतः सगद्गदमिदं वचः ।
 प्रियमेतदुपश्रुत्य त्वत्तः पुष्करलोचन । [5]
 नान्तं गच्छामि हर्षस्य तित्तिर्पुरुदधेरिव ।
 अत्यद्भुतमिदं कृष्ण कृतं पार्थेन भीमता ।
 त्वया गुप्तेन गोविन्द व्रता पापं जयद्रथम् ।
 किं तु नात्यद्भुतं तेषां येषां नस्त्वं समाश्रयः ।
 स्थितः सर्वात्मना नित्यं प्रियेषु च हितेषु च । [10]
 त्वं चैवास्माभिराश्रित्य कृतः शस्त्रसमुद्यमः ।
 सुरैरवासुरवधे शक्रं शक्रानुजाहवे ।
 असंभाव्यमिदं कर्म देवैरपि जनार्दन ।
 त्वद्बुद्धिबलवीर्येण कृतवानेप फल्गुनः । [15]
 बाल्यात्प्रभृति ते कृष्ण कर्माणि श्रुतवानहम् ।
 अमानुपाणि दिव्यानि महान्ति च बहूनि च ।
 यदैवानुगृहीताः स्म त्वया ज्ञेहानुरागतः ।
 तदैवाज्ञासिपं शत्रून्हतान्प्राप्तां च मेदिनीम् ।
 मार्कण्डेयः पुराणपिंश्चरितज्ञस्त्वानघ । [20]
 माहात्म्यमनुभावं च पुरा कीर्तितवान्मुनिः ।
 असितो देवलश्चैव नारदश्च महातपाः ।
 पितामहश्च मे व्यासस्त्वामाहुर्विधिमुत्तमम् ।

कुणपैय. — (L. 12) De₁ Dn₁ अक्षैश् (for स्रग्भिश).
 De₁ (before corr.) Dn₁ संज्ञैश् (for वक्षैश्). — (L. 15) De₁ उपगृह्य. — (L. 16) Dn₁ इमांश् (for इमांश्).
 — After line 16, B₁ reads line 25. — (L. 17) D₁ क्षरतः (for क्षरतः). — (L. 19) D₁ तांश् (for तव). — (L. 21) D₁ विहतेश्वरान् (for निहते).
 — De₁ om. lines 22-23. — (L. 23) B₁ निकृत्त-
 कृवरान् (for the prior half). B₁ भस्मेशान्. — (L. 27) De₁ आलङ्घ्य (for आलिङ्ग्य). De₁ Dn₁ D₁ पांशु-
 (for पांशु). — (L. 29) D₁ द्विपरथाश्च (for द्विपरथ-
 वाजि). — (L. 30) D₁ वामुंके (for कर्मन्). — (L.

31) De₁ वृक- (for -श्वक-). — (L. 33) B₁ प्रभो
 (for विभो). — (L. 35) B₁ De₁ Dn₁ वापि (for
 चापि). — After line 36, B₁ reads 41.

18

(L. 9) B₁ च (for नश्च). — (L. 11) B₁ समुद्यतः
 (for 'यमः). — (L. 14) D₁ त्वदीयं बुद्धिबलं (for the
 prior half). B₁ De₁ एव (for एष). — (L. 15) B₁
 De₁ Dn₁ transp. ते कृष्ण and कर्माणि. — After line
 16, B₁ reads lines 21-27. B₁ om. line 17. B₁ om.

त्वं तेजस्त्वं परं ब्रह्म त्वं सत्यं त्वं महत्तपः ।
 त्वं श्रेयस्त्वं यशश्चाख्यं कारणं जगतस्तथा ।
 त्वया सृष्टमिदं सर्वं जगत्स्थायरजज्जन्मम् । [25]
 प्रलये समनुप्राप्ते त्वां वै निविशते पुनः ।
 अनादिनिधनं देवं विश्वमीशं प्रजापतिम् ।
 धातारमजमव्यक्तमाहुर्वेदविदो जनाः ।
 भूतात्मानं महात्मानमनन्तं विश्वतोमुखम् ।
 अपि देवा न जानन्ति गुह्यमाद्यं जगत्पतिम् । [30]
 नारायणं परं देवं परमात्मानमीश्वरम् ।
 ज्ञानयोनिं हरिं विष्णुं सुमुक्षूणां परायणम् ।
 परं पुराणं पुरुषं पुराणानां परं च यत् ।
 एवमादिगुणानां ते कर्मणां दिवि चेह च ।
 अतीतभूतभव्यानां संख्यातात्र न विद्यते । [35]
 सर्वतो रक्षणीयाः स्म सशक्राणां दिवौकसाम् ।
 यैस्त्वं सर्वगुणोपेतः सुहृन्न उपपादितः ।
 इत्येवं धर्मराजेन हरिरुक्तो महायशः ।
 अनुरूपमिदं वाक्यं प्रत्युवाच जनार्दनः ।
 भवतस्तपसोऽग्रेण धर्मेण परमेण च । [40]
 साधुत्वादार्जवाच्चैव हतः पापो जयद्रथः ।
 अयं च पुरुषव्याघ्र त्वदनुष्ठानवृंहितः ।
 हत्वा योधसहस्राणि न्यहज्जिष्णुर्जयद्रथम् ।
 कृतित्वे बाहुवीर्ये च तथैवासंभ्रमेऽपि च ।
 शीघ्रतामोघवेधित्वे नास्ति पार्थसमः कश्चित् । [45]
 तदयं भरतश्रेष्ठ आता ते पाण्डवार्जुनः ।

सैन्यक्षयं रणे कृत्वा सिन्धुराजक्षितोऽहरत् ।
 ततो धर्मसुतो जिष्णुं परिष्वज्य विशां पते ।
 प्रसृज्य वदुनं चास्य पर्याश्रासयत प्रभुः ।
 अतीव सुमहत्कर्म कृतवानस्ति फल्गुन । [50]
 असह्यं चाविषह्यं च देवैरपि सवासवैः ।
 दिष्टया निस्तीर्णमारोऽसि हतारिश्वांसि शत्रुहन् ।
 दिष्टया सत्या प्रतिज्ञेयं कृता हत्वा जयद्रथम् ।
 एवमुक्त्वा गुडाकेशं धर्मराजो महायशः ।
 पस्पशं पुण्यगन्धेन वृष्टे हस्तेन पार्थिवः । [55]

19

After 7. 128. 14, S ins. :

धृतराष्ट्र उवाच ।

तथा हतेषु सैन्येषु तथा कृच्छ्रगतः स्वयम् ।
 कच्चिद्दुर्योधनः सूत नाकार्षीत्पृष्टतो रणम् ।
 एकस्य च बहूनां च संनिपातो महानभूत् ।
 विद्रोषतो हि नृपतेर्विषमं प्रतिभाति मे ।
 सोऽत्यन्तसुखसंवृद्धो रक्ष्यो लोकस्य चेश्वरः । [5]
 एको बहून्समासाद्य कच्चिन्नासीत्पराञ्छुलः ।
 द्रोणः कर्णः कृपश्चैव कृतवर्मा च सात्वतः ।
 नावात्यन्कथं युद्धे राजानं राजकाङ्क्षिणः ।
 सर्वोपायैर्हि युद्धेषु रक्षितव्यो महीपतिः ।
 एषा नीतिः परा युद्धे दृष्टा तत्र महर्षिभिः । [10]
 प्रविष्टे वै मम सुते परेषां वै महद्बलम् ।

19

lines 19-20. — (L. 23) B₁s त्वं परं; D₀₁ परमं (for त्वं महत्). — (L. 25) D₀₁ D₀₁ त्वया सर्वनिदं सृष्टं (for the prior half). — (L. 26) B₂ हि (for वै). D₀₁ त्वं हि निवेशनं पुनः (for the post. half). — (L. 27) B₃ जगत्पति (for प्रजापतिम्). — B₁ om. lines 28-33. D₀₁ repeats line 28 after line 30. — (L. 28) D₀₁ (first time) त्वं धातारमजं व्यक्तम् (for the prior half). — (L. 30) B₁s D₀₁ त्वाद्यं (for आद्यं). — (L. 33) B₃ D₀₁ D₀₁ परं पराणां (D₀₁ पुराणां; D₀₁ पुराणं) परमं (for the prior half). — (L. 35) B₁ भव्यं च (for -भव्यानां). B₁s संख्या तात; B₄ संख्या तावन् (for संख्यातात्र). — (L. 36) D₀₁ दिवौकसः. Bom. ed. शक्रेण दिवौकसः (for the post. half). — Before line 38, B₄ ins. संजय उवाच. B₃ om. lines

38-42. — (L. 38) B₃ महौजसा (for महायशः). — (L. 40) B₃ D₀₁ भवता (for 'नम्'). D₀₁ वः (for च). — (L. 41) B₃ आर्जवत्वाच्च; D₀₁ D₀₁ अर्जुनाच्चैव (for आर्जवा). — (L. 42) B₁ संवृतः (for बृंहितः). — (L. 45) B₃ भेदित्वे; B₃ बुद्धित्वे (for भेदित्वे). — (L. 46) B₃ तेष वद (for पाण्डव). — (L. 49) B₄ D₀₁ तस्य (for चास्य). — (L. 51) B₁s अशक्तं (for असह्यं). — (L. 53) B₁ हत्वा पारं जयद्रथं (for the post. half). — (L. 54) B₂ (marg.) युधिष्ठिरः (for महायशः).

(L. 1) G₁ M₁-4, s (sup. lin. as above) गतेषु (for हतेषु). T G₂-4 गतेषु च (for गतः स्वयम्). — (L. 4) M₁ नृपतिभिर्; M₄s [5]पि नृपतेर् (for हि नृ').

सामका रथिनां श्रेष्ठाः किमकुर्वत संजय ।

संजय उवाच ।

राजन्संग्राममाश्रयं पुत्रस्य तव भारत ।

एकस्य च बहूनां च शृणु मे ब्रुवतोऽद्भुतम् ।

द्रोणेन वार्यमाणोऽसौ कर्णेन च कृपेण च । [15]

प्राविशत्पाण्डवीं सेनां मकरः सागरं यथा ।

किरन्निपुसहस्राणि तत्र तत्र तदा तदा ।

पाञ्चालान्पाण्डवांश्चैव विन्याध निशितैः शरैः ।

यथोद्यम्य ततः सूर्यो रश्मिभिर्नाशयेत्तमः ।

तथा पुत्रस्तव बलं नाशयत्तन्महाबलः । [20]

20

After 7. 131. 24^{ab}, K₄ B Dc1 Dn D1. 6 ins. :

अभ्यधावत्ततो द्रोणो यदुचीरजिघांसाया ।

तमायान्तमभिप्रेक्ष्य युधिष्ठिरपुरोगमाः ।

परिवृत्तुर्महात्मानं परीप्सन्तो यदूद्धहम् ।

ततः प्रवृत्ते युद्धं द्रोणस्य सह पाण्डवैः ।

बलेरिव सूरैः पूर्वं त्रैलोक्यजयकाङ्क्षया । [5]

ततः सायकजालेन पाण्डवानीकमावृणोत् ।

भारद्वाजो महातेजा विन्याध च युधिष्ठिरम् ।

साल्यकिं दशभिर्बाणैर्विशल्या पापतं शरैः ।

भीमसेनं च नवभिर्निकुलं पञ्चमिस्तथा ।

सहदेवं तथाष्टाभिः शतेन च शिखण्डिनम् । [10]

द्रौपदेयान्महाबाहुः पञ्चभिः पञ्चभिः शरैः ।

विराटं मत्स्यमष्टाभिर्दुपदं दशभिः शरैः ।

युधामन्युं त्रिभिः पद्मिस्तमौजसमाहवे ।

अन्यांश्च सैनिकान्विद्धा युधिष्ठिरमुपाद्रवत् ।

ते बध्यमाना द्रोणेन पाण्डुपुत्रस्य सैनिकाः । [15]

प्राद्रवन्वै भयाद्राजन्सार्तनादा दिशो दश ।

काल्यमानं तु तत्सैन्यं दृष्ट्वा द्रोणेन फल्गुनः ।

किञ्चिदागतसंरम्भो गुरुं पार्थोऽभ्ययाद्भुतम् ।

दृष्ट्वा द्रोणस्तु वीभत्सुमसिधावन्तमाहवे ।

सैन्यवर्तत तत्सैन्यं पुनर्यौधिष्ठिरं नृप । [20]

ततो युद्धमभूद्भूयो भारद्वाजस्य पाण्डवैः ।

द्रोणस्तव सुतै राजन्सर्वतः परिवारितः ।

व्यधमत्पाण्डुसैन्यानि तूलराशिमिवानलः ।

तं ज्वलन्तमिवादित्यं दीप्तानलसमद्युतिम् ।

राजन्ननिशमत्यन्तं दृष्ट्वा द्रोणं शरार्चिपम् । [25]

मण्डलीकृतधन्वानं तपन्तमिव भास्करम् ।

दहन्तमहितान्सैन्ये नैनं कश्चिद्वारयत् ।

यो यो हि प्रमुखे तस्य तस्थौ द्रोणस्य पूरुषः ।

तस्य तस्य शिराश्छित्त्वा ययौ द्रोणक्षरः क्षितिम् ।

एवं सा पाण्डवी सेना बध्यमाना महात्मना । [30]

प्रदुद्राव पुनर्भीता पश्यतः सव्यसाचिनः ।

— G₁ M₁. 3-5 om. lines 8-10. — (L. 10) G₂ पुरा (for परा). G₂ मनीभिः (for महर्भिः). — (L. 11) T G₂ वा (for वै). G₁ M₁-3. 5 सु- (for वै). — (L. 12) MSS. अकुर्वत. — (L. 13) G₁ M तव पुत्रस्य भारत (for the post. half). — (L. 14) G₁ M₁-3. 5 ब्रुवतो (for ब्रुवतो). — (L. 15) M₄ च (for सौ). G₁ M₁-3. 5 वार्यमाणस्तु द्रोणेन (for the prior half). G₂ कृपेण (for च कृपेण). — (L. 17) G₃. 4 तथा तथा. — (L. 18) T G₂ M₁. 2. 5 विन्याध (for 'य'). — (L. 19) G₃. 4 ततः (for ततः). G₁ M यथोद्यमि (M₄ 'दि'). ततं सूर्यो (for the prior half). G₃ रश्मिर् (for रश्मि). M₁. 2 ततः (for ततः). — (L. 20) M₁ यथा (for तथा). G₁ M₁. 2. 4. 5 महारथः (for 'बलः').

20

(L. 1) B₄ अभ्यद्रवत् (for अभ्यधावत्). — (L. 3)

B₁ यदूत्तमं (for 'दहम्'). — (L. 5) Dn₁ त्रैलोक्यस्याभि-
कांक्षया (for the post. half). — (L. 7) B₁ महाराज
(for 'तेजा'). — (L. 12) Ds निशितैः (for दशभिः).
— (L. 17) D₁ फाल्गुनिः; Some MSS. फाल्गुनः (for
फल्गुनः). — (L. 18) Ds संतप्तो (for 'संरम्भो'). — (L.
19) K₄ om. from the prior half up to the prior
half of line 21. Dc₁ Dn₁ Ds द्रोणं (for द्रोणस्य).
— (L. 20) D₁. 5 स (for सं). Bom. ed. बलं (for
नृप). — (L. 21) B₁ तयोर् (for ततो). — (L.
23) B₂ (marg. as above) वृण- (for तूल-). — (L.
24) B₁ Dc₁ [अ]ख्यं (for [अ]दिलं). — (L. 25)
B₁ Dc₁ Ds असंतं (for अलन्तं). Dn₂ द्रोण- (for द्रोणं).
Dn₁ शरान्वितं (for शरार्चिपम्). — (L. 26) B₁. 2 Dc₁
Dn₁ मंडलीभूत- (for 'कृत-'). — (L. 27) B₁ संस्थे (for
सैन्ये). Dn₁ दहन्तमिव तत्सैन्यं (for the prior half). B₁
नैकं (for नैनं). — (L. 29) B₄ ययुर्. K₄ Bs ययु-

संग्रभन्नं बलं दृष्ट्वा द्रोणेन निशि भारत ।
 गोविन्दमवव्रीजिष्णुर्गच्छ द्रोणरथं प्रति ।
 ततो रजतगोक्षीरकुन्देन्दुसदृशप्रभान् ।
 चोदयामास दाशाहो हयानद्रोणरथं प्रति । [35]
 भीमसेनोऽपि तं दृष्ट्वा यान्तं द्रोणाय फल्गुनम् ।
 स्वसारथिमुवाचेदं द्रोणानीकाय मां वह ।
 सोऽपि तस्य वचः श्रुत्वा विशोको बाह्यद्वयान् ।
 पृष्ठतः सत्यसन्धस्य जिष्णोर्भरतसत्तम ।
 तौ दृष्ट्वा भ्रातरौ यत्तौ द्रोणानीकमभिदुतौ । [40]
 पाञ्चालाः सृजया मत्स्याश्चेदिकारूपकोशलाः ।
 अन्वगच्छन्महाराज केकयाश्च महारथाः ।
 ततो राजन्नभूद्धोरः संग्रामो लोमहर्षणः ।
 यीमत्सुर्दक्षिणं पार्श्वमुत्तरं च वृकोदरः ।
 महद्भयां रथवृन्दाभ्यां बलं जगृहुस्तव । [45]
 तौ दृष्ट्वा पुरुषव्याघ्रौ भीमसेनधनंजयौ ।
 घृष्टयुगोऽभ्ययाद्राजन्साल्यक्रिश्च महाबलः ।
 चण्डवातामिपन्नानामुदधीनामिव स्वनः ।
 आसीद्राजन्बलौवानां तदान्योन्यमभिप्रताम् ।
 सौमदत्तिवधात्कुद्धो दृष्ट्वा साल्यकिमाहवे । [50]

21

After 7. 170. 22^{ab}, G₁ M₁. 2 ins. :

प्रपेतुः कुञ्जरास्तत्र शस्त्रसंघैर्निपातिताः ।
 व्यदीर्यमाणा गिरयो वज्रनुक्ता यथा पुरा ।
 हस्तिहस्तैश्च संछिन्नैर्गात्रैश्चैव विशां पते ।
 अपरैश्च तथा बाणैः कुन्तैश्च कनकोज्ज्वलैः ।
 संकीर्णा पृथिवी जज्ञे मांसशोणितकर्दमा । [5]
 गजेभ्यश्च्यवमानानां यन्तूणां तत्र भारत ।
 बिभुजानां विशीर्णानां न्यस्तकर्मुकवर्मणाम् ।

द्रोणशराः क्षिति (for the post. half). — (L. 31) B₁. 3. 5
 D₁ D₂ दुद्राव वै (B₁ च) (for प्रदुद्राव). — (L. 34)
 D₁ संकाश- (for -गोक्षीर-). D₂ -क्षीरकुन्देन्दुसप्रभान्
 (for the post. half). — (L. 36) Some MSS. फा-
 ल्यनं. — (L. 37) B₁. 2 स्वं; D₂ स (for स्व-).
 — (L. 40) D₁ यातौ (for यत्तौ). — (L. 41) D₁
 पंचालः. B₁-3. 5 -कोपलाः; Bom. ed. -कोसलाः. — (L. 42)
 D₂ D₁ D₂ कैकायाश्च (for कैक-). — (L. 45) K₄

पूर्णमायोधनं जज्ञे प्रेतराजपुरोपमम् ।
 अकुञ्चैरपविदैश्च तोमरैश्च महाधनैः ।
 बलंकारैश्च नागानां प्रैवैश्च सकृद्वैः । [10]
 कक्ष्याभिरभिकृण्डैश्च यज्ञैश्चैव पताकिभिः ।
 शक्तिमिश्च महाराज बाणैश्च नतपर्वभिः ।
 रथिनां च रथैर्भग्नैश्चिन्नैर्वा युगदण्डकैः ।
 चक्रैर्विमथितैर्मग्निदुर्गरक्षैश्च सृपिता ।
 तूर्णारैरपविदैश्च चापैश्च सुमहाधनैः । [15]
 अनुकर्णैः पताकामियौक्त्रैश्चैव विशां पते ।
 रश्मिमिश्च प्रतोदैश्च किङ्किणभिक्ष मारिष ।
 कवचैश्च तथा दीप्तैश्चामरव्यजनैरपि ।
 छत्रैश्च चन्द्रसंकाशैर्वृष्टयातपनिवारिभिः ।
 अङ्गुलित्रैः सकेयूरैर्दंष्ट्रैर्निष्कैश्च काञ्चनैः । [20]
 कर्णसूत्रैः किराटैश्च मुकुटैश्च महाधनैः ।
 चित्रैर्वस्त्रैर्बलंकारैः कुण्डलैश्चापि भारत ।
 अपविदैस्तथा शीर्षैर्बाहुभिरश्च महामनसा ।
 संछन्ना पृथिवी रजे तत्र तत्र यथातथम् ।
 उरश्छदैस्तथा चित्रैर्वृष्टाजालैश्च भास्वरैः । [25]
 निहतैस्तुरगैश्चैव निजिह्वैः शोणितोद्भिदैः ।
 हयारोहपरैश्चैव निर्दुर्गधैरस्त्रतेजसा ।
 नानाङ्गावयवैर्हाना यौधाः ससुभंयादिताः ।
 चुकुञ्चुस्तात तातेति हा हा पुत्रेति चासकृत् ।
 यौधा नूनं ते निधनं प्राप्ताः पाण्डवेया महारथाः । [30]
 वासुदेवश्च बाणैर्यस्तथा सोमकसृजयाः ।
 जीवत्सु समरे तेषु न हि वीरेषु सैनिकाः ।
 इमामवस्थां सहसा गच्छेयुर्वै कथंचन ।
 इत्यब्रुवंस्तथा यौधा हन्यमानास्तदा रणे ।
 क्रुद्धेन द्रोणपुत्रेण कालेनेव युगक्षये । [35]
 हन्यमानास्तथास्त्रेण तेन नारायणेन ते ।

तदा (for तव). — (L. 46) K₄ पुण्यव्याघ्र (for व्याघ्रौ).
 — (L. 47) D₁ D₂ महारथः (for महावहः). — Lines
 48-49 = (var.) 7. 131. 20. — (L. 50) D₁ सोम-
 दत्ति- (for सौमदत्ति-).

21

(L. 2) G₁ यथागुरं. — (L. 24) G₁ संछन्ना (for
 संछन्ना). — (L. 30) Prior half hypermetric.

22

After 7. 171. 36^{ab}, Ds ins. :

तमात्मभुजवेगेन विकर्पन्तं शरासनम् ।
 तं तु दृष्ट्वा सुसंकुद्धं कालानलयमोपमम् ।
 विमुञ्चन्विशिखांस्तूर्णं पार्यतोऽभ्यद्रवद्रणे ।
 तौ द्रौणिः क्रोधतान्नाक्षो दिक्षिन्नैव तेजसा ।
 छादयामास बाणैर्घृष्टद्युम्नं समन्ततः । [5]
 घृष्टद्युम्नोऽपि संभ्रान्तः शरेणानतपर्वणा ।
 प्रत्यविव्यत संकुद्धः पार्यतं प्रयतो बलात् ।
 तस्य द्रौणिर्धनुश्छित्त्वा स्थूणेन परवीरहा ।
 घृष्टद्युम्नं त्रिससत्या विन्याध निशितैर्नदन् ।
 तदपास्य धनुश्छिन्नं घृष्टद्युम्नः प्रतापवान् । [10]
 अन्यत्कार्मुकमादाय सोऽश्वत्थामानमार्दयत् ।
 स तदप्यस्य संकुद्धश्चिच्छेद परमास्त्रवित् ।
 तं चाप्यवाकिरद्वाणैर्घृष्टद्युम्नं परंतपः ।
 ततः स पार्यतस्तूर्णं शक्तिं हेमपरिष्कृताम् ।
 चिक्षेप परमकुद्धो ज्वलन्तीमशनीमिव । [15]
 तामापतन्तीं सहसा व्यालीकाल इवाहवे ।
 चिच्छेद ससधा राजन्शरैः परमतेजनैः ।
 तां निकृत्तां ततो दृष्ट्वा द्रौणिना पार्यतस्ततः ।
 धनुरन्यत्समादाय समरे वेगवत्तरम् ।
 ततोऽविध्यत्सुतीक्ष्णाभ्यां शराभ्यां द्रौणिमाहवे । [20]
 ततो द्वाभ्यां सुतीक्ष्णाभ्यां भलाभ्यां तत्र कार्मुकम् ।
 द्रौणिर्दुपदपुत्रस्य चिच्छेद प्रहसन्निव ।
 तं च बाणैर्महातेजाः पुनरन्यैः समावृणोत् ।
 साध्वसूतरथं तूर्णं छादयामास संयुगे ।
 तस्य चानुचरान्सर्वादीसास्त्रान्पार्श्वतः स्थितान् । [25]
 व्यद्रावयत संकुद्धः शरैः संनतपर्वभिः ।
 ब्रह्मदत्तं ततो बाणं घृष्टद्युम्नजिवांसया ।
 द्रोणपुत्रः प्रचिक्षेप सात्यकिस्तद्विधाच्छिनत् ।
 सात्यकिस्तु तमादाय राजपुत्रं शरादितम् ।

22

Lines 31-32 = (var.) 7. 171. 46. — After line
 32, Ds reads 7. 171. 47-48.

अष्टामिर्निशितैर्बाणैरश्वत्थामानमार्दयत् । [30]

अशीत्या पुनराहत्य नानारूपैरमर्षणः ।

विन्याधास्य त्रिभिः सूतं चतुर्भिश्चतुरो हयान् ।

एवमुक्त्वा शरैस्तीक्ष्णैः सात्यकिं तूर्णमावृणोत् ।

संरुधः क्रोधतान्नाक्षो द्रोणपुत्रः प्रतापवान् ।

सात्यकिस्तु ततः क्रुद्धः शरेणानतपर्वणा । [35]

द्रोणपुत्रं समाजग्ने सर्वसैन्यस्य पश्यतः ।

ततो द्रौणिर्महाराज बाणैः संछाद्य सात्यकिम् ।

धनुः क्रोधपरीतात्मा चिच्छेदाशु महास्त्रवित् ।

ततः शक्तिं महाघोरां हेमदण्डामयसयीम् ।

चिक्षेप सात्यकिस्तूर्णं द्रोणपुत्रजिवांसया । [40]

तामापतन्तीं सहसा शक्रमुक्तामिवाशनम् ।

अप्राप्तमेव चिच्छेद द्रौणिः सप्तभिराश्रुगैः ।

तां निकृत्तां शरैर्दृष्ट्वा द्रौणिना सात्यकैर्भृशम् ।

सोऽन्यत्कार्मुकमादाय भारग्नं वेगवत्तरम् ।

तद्विकृत्य महच्चापं सात्यकिः सात्वतां वरः । [45]

सायकैर्वहुभिस्तूर्णमश्वत्थामानमार्दयत् ।

ततो द्रौणिः सुसंरुधः शरजालेन माधवम् ।

छादयामास समरे सात्यकिं क्रोधमूर्छितः ।

तान्यस्य शरजालानि अन्तरिक्षे विशां पते ।

अप्राप्तानेव चिच्छेद युयुधानो महारथः । [50]

ततः पूर्णायतोत्सृष्टैर्हेमपुङ्खैः शिलाशितैः ।

बाणैर्विच्याध सुदृढं द्रोणपुत्रममर्षितः ।

तथा स विद्धः सुभृशं द्रोणपुत्रोऽत्यमर्षणः ।

शैनेयं समरे क्रुद्धः प्रदहन्निव चक्षुषा ।

अवाकिरदमेयात्मा बाणवर्षैः समन्ततः । [55]

पर्वतं वारिधाराभिस्तपान्ते जलदो यथा ।

23

After 7. 171. 46, Ks Dn2 D1.s T ins. :

धनुर्ध्वजं च संयत्तैश्चिच्छेद कृतहस्तवत् ।

स साध्वं व्यधमवापि रथं हेमपरिष्कृतम् ।

23

(L. 1) Ks T संयत्तश्च (for 'सैश्च'). — (L. 2) Ks
 D1 तिलशोः ; Ds स शैले (for स साध्वं). Ks D1 -परि-

[1138]

हृदि विव्याध समरे त्रिशता सायकैर्भृशम् ।

एवं स पीडितो राजन्नश्वत्थामा महाबलः ।

शरजालैः परिवृतः कर्तव्यं नान्वपद्यत ।

[5]

एवं गते गुरोः पुत्रे तव पुत्रो महारथः ।

कृपकर्णादिभिः सार्धं शरैः सात्वतमावृणोत् ।

दुर्योधनस्तु विंशत्या कृपः शारद्वतस्त्रिभिः ।

कृतवर्माथ दशभिः कर्णः पञ्चाशता शरैः ।

दुःशासनः शतेनैव वृषसेनश्च सप्तभिः ।

[10]

सात्यकिं विव्यधुस्तूर्णं समन्तान्निशितैः शरैः ।

ततः स सात्यकी राजन्सर्वानिव महारथान् ।

विरथान्विमुखांश्चैव क्षणेनैवाकरोद्वृष ।

अश्वत्थामा तु संप्राप्य चेतनां भरतर्षभ ।

चिन्तयामास दुःखार्तो निःश्वसंश्च पुनः पुनः ।

[15]

ततो रथान्तरं द्रौणिः समारुह्य परंतपः ।

सात्यकिं वारयामास किरन्शरशतान्वहून् ।

तमापतन्तं संप्रेक्ष्य भारद्वाजसुतं रणे ।

विरथं विमुखं चैव पुनश्चक्रे महारथः ।

ततस्ते पाण्डवा राजन्द्वा सात्यकिविक्रमम् ।

[20]

शङ्खशब्दान्भृशं चक्रुः सिंहनादांश्च नेदिरे ।

एवं तं विरथं कृत्वा सात्यकिः सत्यविक्रमः ।

जघान वृषसेनस्य त्रिसाहस्रान्महारथान् ।

अयुतं दन्तिनां सार्धं कृपस्य लिजघान सः ।

पञ्चायुतानि चाश्वानां शकुनेर्निजघान ह ।

[25]

ततो द्रौणिर्महाराज रथमारुह्य वीर्यवान् ।

सात्यकिं प्रति संकुदः प्रययौ तद्द्वेषस्या ।

पुनस्तमागतं दृष्ट्वा शैनेयो निशितैः शरैः ।

अदारयत्कूरतरैः पुनः पुनररिदम् ।

24

After 7. 171. 65, K₁ B Dci Dn D1. 3. 6 T1 ins. :

मालवं पौरवं चैव युवराजं च चेदिपम् ।

दृष्ट्वा समक्षं निहतं द्रोणपुत्रेण पाण्डवः ।

भीमसेनो महाबाहुः क्रोधमाहारयत्परम् ।

ततः शरशतैर्स्त्रीक्ष्णैः संकुदाशीविपोषमैः ।

छादयामास समरे द्रोणपुत्रं परंतपः ।

[5]

ततो द्रौणिर्महातेजाः शरवर्षं निहत्य तम् ।

विव्याध निशितैर्वर्णिर्ममसेनममर्षणः ।

ततो भीमो महाबाहुर्द्रौण्यैर्बुधि महाबलः ।

धुरप्रेण धनुश्छिन्ना द्रौणिं विव्याध पत्रिणा ।

तदपास्य धनुश्छिन्नं द्रोणपुत्रो महामनाः ।

[10]

अन्यत्कार्मुकमादाय भीमं विव्याध पत्रिभिः ।

तौ द्रौणिभीमौ समरे पराक्रान्तौ महाबलौ ।

अवर्षतां शरवर्षं वृष्टिमन्ताविवाम्बुदौ ।

भीमनामाङ्किता बाणाः स्वर्णपुङ्खाः शिलाशिताः ।

द्रौणिं संछादयामासुर्वनौघा इव मास्करम् ।

[15]

तथैव द्रौणिर्निर्मुक्तैर्भीमः संततपर्वभिः ।

अवाकीर्यत स क्षिप्रं शरैः शतसहस्रशः ।

स छाद्यमानः समरे द्रौणिना रणशालिना ।

स्कृतं. — (L. 3) T विव्याध (for 'ध'). D1. 5 त्रिशतैः. — (L. 7) D1 शल्य- (for कृप-). — T2 om. lines 6-29. — (L. 16) Bom. ed. अथो (for ततो). K₁ D₁ रथांतरे. — (L. 21) T₁ चक्रिरे (for नेदिरे). — (L. 27) D₁ वषेच्छया (for 'स्तया'). — (L. 29) D₁ कूर- नलेः (for 'तरैः').

24

(L. 1) D₁ om. from. मालवं up to युवराजं (in line 1). D₁ मालव्यं (for 'वं'). — (L. 2) B₁ Dci Dn₁ D₁ निहतान्. — (L. 4) D₁ स कुदोयः D₁ युजगाभैर् (for संकुदाशी-). — (L. 5) D₁ 6 परंतप. — (L. 6) B₁ 3 Dci Dn₁ D₁ तत् (for तम्). D₁ ततो द्रौणिं च विव्याध पत्रिणा धनुराच्छिन्नत्. — K₁ om. (? hapl.)

lines 7-11. D₁ om. lines 7-9. — (L. 7) Dn₁ D₂ om. (hapl.) from निशितैर् up to विव्याध (in line 9). — (L. 9) B₁ पत्रिभिः. — D₁ om. (hapl.) lines 10-11. — (L. 12) D₁ ततो द्रौणि- भीमसेनः (for the prior half). D₁ महारथौ (for 'वज्रौ'). — (L. 13) Dn₁ अवर्षतां. B₁ (marg.) शराशरैः D₁ 5 शरवर्षैर् (for 'वं'). D₁ शरवर्षोपवर्षतां प्रावृषीव बलाहकौ. — (L. 15) Dn₁ संछादयामास. Dn₁ D₁ T₁ मेवौघा (for धनौघा). — (L. 16) D₁ तथैव द्रौणिना मुक्ता भीमं संतत- पर्वणः. — (L. 17) B₁ अवाकीर्यत. D₁ अवाकिरजये दूर्ण (for the prior half). — (L. 18) Dn₁ D₁ 6 सं- (for स). B₁ बल- (for रण-). B₁ Dci Dn₁ माङ्किता; B₂ 3 माङ्किता; D₁ शोभिना (for -शालिना). D₁ द्रौणिना पांड- वर्षभः (for the post. half). — (L. 20) B₁ स्वर्णपुङ्खै-

न विव्यथे महाराज तदद्भुतमिवाभवत् ।
 ततो भीमो महाबाहुः कर्तस्वरविभूषितान् । [20]
 नाराचान्दश संप्रैषीद्यमदण्डनिभाञ्छितान् ।
 ते जडुदेशमासाद्य द्रोणपुत्रस्य मारिष ।
 निर्भेद्य विविशुस्तूर्णं वल्मीकमिव पत्रगाः ।
 सोऽतिविद्धो भृशं द्रौणिः पाण्डवेन महात्मना । [25]
 ध्वजयाष्टिं समाश्रित्य न्यमीलयत लोचने ।
 स सुहृताप्युनः संज्ञां लब्ध्वा द्रौणिर्नराधिप ।
 क्रोधं परममातस्थौ समरे रुधिरोक्षितः ।
 दृढं सोऽभिहतस्तेन पाण्डवेन महात्मना ।
 वेगं चक्रे महाबाहुर्भीमसेनरथं प्रति ।
 तत आकर्णपूर्णानां शराणां तिग्मतेजसाम् । [30]
 शतमाशीविषाभानां प्रेषयामास भारत ।
 भीमोऽपि समरश्चापी तस्य वीर्यमचिन्तयत् ।
 तूर्णं प्रासृजदुम्राणि शरवर्षाणि पाण्डवः ।
 ततो द्रौणिर्महाराज छिन्वास्य विशिखैर्धनुः ।
 आजघानोरसि क्रुद्धः पाण्डवं निशितैः शरैः । [35]
 ततोऽन्यद्भुतुरादाय भीमसेनोऽत्यमर्षणः ।
 विव्याध निशितैर्वणिर्द्रौणिं पञ्चभिराहवे ।
 जीमूताविव घर्मान्ते तौ शरौघप्रवर्षिणौ ।

अन्योन्यक्रोधतान्नाक्षौ छादयामासतुर्धुधि ।
 तलशब्दैस्ततो घोरैश्चासयन्तौ परस्परम् । [40]
 अयुष्येतां सुसैरन्ध्रौ कृतप्रतिकृतैपिणौ ।
 ततो विस्फार्य सुमहद्वापं रुक्मविभूषितम् ।
 भीमं प्रेक्षत स द्रौणिः शरानस्यन्तमन्तिकान् ।
 शरघर्म्मध्यगतो दीप्ताचिरिव भास्करः ।
 आददानस्य विशिखान्संदधानस्य चाशुगान् । [45]
 विकर्षतो मुञ्चतश्च नान्तरं ददृशुर्जनाः ।
 अलातचक्रप्रतिमं तस्य मण्डलमायुधम् ।
 द्रौणेरासीन्महाराज बाणान्विसृजतस्तदा ।
 धनुश्च्युताः शरास्तस्य शतशोऽथ सहस्रशः ।
 आकाशे प्रलट्श्यन्त शलभानामिवायतीः । [50]
 ते तु द्रौणिधनुर्मुक्ताः शरा हेमविभूषिताः ।
 अजस्रमन्वकीर्यन्त घोरा भीमरथं प्रति ।
 तत्राद्भुतमपश्याम भीमसेनस्य विक्रमम् ।
 बलं वीर्यं प्रभावं च व्यवसायं च भारत ।
 तां स मेघादिबोद्धतां बाणवृष्टिं समन्ततः । [55]
 जलवृष्टिं महाघोरां तपान्त इव चिन्तयन् ।
 द्रोणपुत्रवधप्रेप्सुर्भीमो भीमपराक्रमः ।
 अमुञ्चच्छरवर्षाणि प्रावृषीव बलाहकः ।

(for कर्तस्वर-). — (L. 21) Ds नाराचान्प्रेषयामास
 (for the prior half). Ks सितान्; Ds तदा (for
 शितान्). — (L. 23) Dn2 [आ]विशिशुष. — (L.
 25) Bs समासाद्य (for 'श्रिल'). — (L. 26) Ds
 मुहूर्तास पुनस्तस्मिन् (for the prior half). Ds लब्धसंज्ञो
 (for लब्ध्वा द्रौणिर्). Bs जनाधिप; Dn1 महारथः (for
 नराधिप). — (L. 27) Ds आतस्थे. Ds समरे तु विरो-
 धिनः (for the post. half). — (L. 28) Ds पीडितस्
 (for संहितस्). — (L. 29) Bs महाराज (for 'बाहुर्').
 — (L. 30) T1 तत्र (for तत). Ds तत आकृष्य कर्णांतं
 (for the prior half). Ds शराणां गाढवाससां (for the
 post. half). — (L. 31) Dc1 Dn1 D1.5 आशीविषा-
 भाणां. — (L. 32) B Dn अचित्तयन्. — (L. 33) Bs
 पूर्ण (for तूर्ण). Ds प्रेषयद् (for प्रासृजद्). — (L. 34)
 Bs महातेजाश् (for 'राज'). Ds निशितैर् (for विशिखैर्).
 — (L. 36) Bs Ds ह्यमर्षणः (for 'सल'). — (L.
 37) Ds आशुगैः (for आहवे). Bs द्रौणि विव्याध पंचभिः
 (for the post. half). — (L. 38) Ds जीमूतम्.
 — (L. 39) B1.2 Dc1 D1.5.6 अन्योन्यं (for 'न्य-'). Bs

Dc1 Dn1 मृधे (for युधि). — Dc1 Dn1 om. lines
 40-45. — (L. 40) Ds -शब्दरथैर् (for -शब्दैस्ततो). Ds
 त्रासयानौ; T1 छादयंतौ (for त्रासयन्तौ). Dn2 छादये-
 *** स्परं (for the post. half). — (L. 42) Ds विकृष्य
 (for विस्फार्य). D1.5 रत्न- (for रुक्म-). Ds -परिस्फुटं
 (for -विभूषितम्). — (L. 43) Ds दिक्षुश्चित्र चक्षुषा
 (for the post. half). — After line 43, Ds ins.:

ततो द्रौणिशान्तश्च भृशं क्रुद्धो व्यकासत ।

— (L. 44) Ds शरन्मध्यगतो भास्वान् (for the prior
 half). — (L. 46) Ds ददृशे नांतरं जनः (for the post.
 half). — (L. 48) Dn1 विसृजतुस्. B1 तथा (for तदा).
 — (L. 49) Ds शरान्विसृजतस्तस्य (for the prior half).
 — (L. 51) Dn1 तत् (for ते). Ks Dc1 D1.5 -विनिर्मुक्ताः
 (for -यन्). — (L. 52) D1.5 अनुकीर्यत; Ds अवकीर्यते
 (for अन्वकीर्यन्त). — (L. 55) Dn [उ]द्धतां (for [उ]-
 दृतां). Bs भीममेघादिबोद्धतां; Ds तां स मेघरवोद्धतां (for
 the prior half). Dn1 Ds शरवृष्टिं (for बाण). Ds सश-
 स्थितां (for समन्ततः). — (L. 56) Ds शरवृष्टिं तु तां घोरा-

वेदान्कृत्वाथ चतुरश्रतुरोऽश्वान्महेश्वरः ।
 उपवेदान्बलीनांश्च कृत्वा लोकत्रयेश्वरः ।
 गायत्रीं प्रग्रहं कृत्वा सावित्रीं च महेश्वरः । [10]
 कृत्वोकारं प्रतोदं च ब्रह्माणं चैव सारथिम् ।
 गाण्डीवं मन्दरं कृत्वा गुणं कृत्वा च वासुकिम् ।
 विष्णुं शरोत्तमं कृत्वा शल्यमग्निं तथैव च ।
 वायुं कृत्वाथ वाजाभ्यां पुङ्खे वैवस्वतं यमम् ।

विशुक्लत्वाथ निश्राणं मेरुं कृत्वाथ वै ध्वजम् । [15]
 आरुह्य स रथं दिव्यं सर्वदेवमयं शिवः ।
 त्रिपुरस्य वधार्थाय स्थाणुः प्रहरतां वरः ।
 असुराणामन्तकरः श्रीमानतुलविक्रमः ।
 स्तूयमानः सुरैः पार्थ ऋषिभिश्च तपोधनैः ।
 स्थानं माहेश्वरं कृत्वा दिव्यमप्रतिमं प्रभुः । [20]

6) B₂ (marg.), s. 5 D₀₁ (marg.) D₈-8 युगं (for यूयं).
 K₁, s. 4 B₂-5 D₀₁ D_n D₃ तु; B₁ [अ]य (for च).
 § K₁, 2 D₁ अविनाहं; D₈ अधो नाहं; D₇, 8 अपि नाहं
 (for अविनाहं). D₁ विनाहं तव तक्षकं (for the post.
 half). — (L. 7) D₂, s. 7, 8 योन्त्राण्यगानि; D₁
 पुण्योक्तागानि; D₈ यज्ञागानि च (for योवत्राङ्गाणि च).
 K₂, 4 B₁, 2, 5 D_{n2} D₈ सत्त्वानि; B₃ D₀₁ (before
 corr.) D_{n1} सर्वाणि; B₁ भूतानि; D₀₁ (by corr.)
 सर्वाणि; D₈ पट् चापि (for चत्वारि). D₁, 6 कृत्वा सर्वः;
 D₁, s. 7, 8 सर्वं कृत्वा (for कृत्वा शर्वः). — (L. 8)
 B₃, 4 D₈ तु; D₂ नु; D₁, s. 7, 8 च (for [अ]य).
 K₁ चत्वारश्च (for चतुः). D₈ वेदान्कृत्वा चतुरगांश्च (for
 the prior half). K₁ B₈ D₂ चतुरश्वान्; D₈ रश्च
 (for रोऽश्वान्). — K₃ D₂ om. (hapl.) lines 9-10.
 — (L. 9) K₁ D₁ खलीनां च; B₂ (marg. as above)
 मुनीनां च; D₁, s. 7, 8 खलीनं च; D₈ नानि (for नान्श्च).
 D₁, 7 लोके; D₈ लोके (for लोक). K₁, 2 D₁, 4-8 महेश्वरः
 (for त्रयेः). — K₂ om. (hapl.) line 10. — (L.
 10) B₂ नरेश्वरः (for महेश्वरः). — (L. 11) §₂ D₁ प्रा-

ह्माणं (for ब्रह्माणं). D₃ चापि (for चैव). — (L. 12)
 § K₁, 2 D₁ गांडिवं; D₁, 7, 8 गांजी (D₇ जि)वं (for
 गाण्डीवं). D₈ धनुषं (for मन्दरं). K₁ B₃-8 D₀₁ D_{n1}
 D₂ तु (for च). — (L. 13) K₁ शरोत्तरं (for मं).
 — (L. 14) D₃ त्वाष्ट्रं (for वायुं). B₂ D₀₁ D_{n1} D₈
 तु; D₁, s. 7, 8 च (for [अ]य). K₁ पत्राणि (for वा-
 जाभ्यां). K₁ मुखं (for पुङ्खे). — (L. 15) B₁, 4
 D_{n1} [अ]य (D_{n1} तु) नियाणं; B₃ तु निश्राणं; D₂, 4-8
 परित्राणं (for [अ]य निश्राणं). § K₁-3 D₁ विष्यं कृत्वा च
 विश्रामे; D₃ विशुतं चैव निश्राणं (for the prior half).
 §₂ K₁, 2 D₁, 5 च; B₃ D₃ तु (for [अ]य). — (L. 16)
 D₈ देवः (for दिव्यं). D₁, s. 7, 8 आरुह्य रथं देवः (D₈
 तूर्णं) (for the prior half). B₁ वेदमयः; B₁ देवमयः
 (for यं). D₂, 4, s. 7, 8 शुभं (for शिवः). — (L. 18)
 D₇, 8 शान्तिकरः (for अन्तकरः). — (L. 19) D₀₁ D_{n1}
 D₃ मुनिभिश्च (for ऋषिः). — (L. 20) §₂ K₁, 2 D_{n1}
 D₈, 7 महेश्वरं (§₂ रः). K₂, 4 D_{n2} D₁, 2, s. 8 विभुः;
 D₃ सुवि (for प्रभुः).

CRITICAL NOTES AND CORRECTIONS

1

9 ^a) संसाध. Cd संशोच्येति पाठश्चिन्त्यः.

27 ^{ab}) स्वाधर्षा, obviously सु + आधर्षा 'well assailable', because the lion of the mountain-cave is killed. Though the reading is documented by a small minority of MSS. (K1.4 B2.4.5 Dn2 D3.4) it is suggested by सुधर्षा of D6 G1 M and supported by Cd.

29 ^a) द्रष्टुमावभौ. This periphrasis is apparently an idiomatic expression, in which *draṣṭum* does not mean 'to see' but 'for being seen'.

49 ^a) तत्त्वण्डं पूरयामास 'filled up the gap' laid open (*apāvṛta*) by the fall of Bhīṣma. The phrase recurs in 7. 42. 6^a. Cf. also 7. 101. 38^a तत्त्वण्डं पित्र्य-माविशत्.

2

25 ^a) नागकक्ष्या. Usually the expression means elephant-girdle. Monier-Williams renders (see under हस्ति) the word as 'lion' or 'tiger', with which view E. W. Hopkins (*Position of the Ruling Caste in Ancient India* in *JAOS*, xiii, 1888, p. 245) agrees. For this sign on Karna's banner see 7. 6. 9^a; 80. 12^a; 8. 7. 7^a etc. — ^b) The v. l. to जैत्रं च मे are obviously meant to regularise a defective Vārtmī Pāda, just as S v. l. to दास्याम्यहं in 22^a is meant to recitify a defective Śālinī Pāda. Such attempts at modification *metri causa*, especially in Triṣṭubh-Jagatī verses, are numerous and need not be specified further.

29 ^b) वीरकांक्षं. By this word is generally meant 'garland' (Dev. माला) used in 'Svayamvara' as in 1. 176. 30^{ab} where the qualifying adjective काञ्चन corresponds to हैम here. The Śāradā MS. of Devabodha's commentary (ed. Dandekar, p. 106) on 1. 176. 30, however, adds on the margin: वीरकांक्षं सर्ववराय मालास्थापनं माजनं; if this is accepted, it would explain both पूर्ण and काञ्चन in the present passage. Secondly, the word would mean an auspicious

garland betokening victory, as in 7. 87. 62^a; but in the present passage, in view of माला in the next line, this sense would not be suitable. V. Pisani (*Vāk*, ii. p. 22) refers to the Ādi-parvan passage and gives 'crown' as the meaning of the word; but there is nothing to support his interpretation. — The sight of Kanyā as *prāyātrika* is considered auspicious by the Smṛtis. The idea recurs in a similar context in 7. 58. 20^a; 87. 63^d. — The large crop of variants for this line shows that the real purport was missed. Even Devabodha (on 7. 87. 62^a) explains वीरकांक्षं as वीरपेवं मणं, अवशिष्टेषु, against what he himself says elsewhere!

3

The incident of Bhīṣma-Karna interview occurs briefly also in 6. 117.

23 ^a) इष्टिहरं सुबोरं. Cf. चक्षुर्हं वीरं in 7. 124. 22^a; तेजोहरं इष्टिविषं सुबोरं in 5. 16. 26^a.

5

3 ^a) अर्थपतिः. Cd अनुपतिः (sic) प्रधानस्वामी; Ca अर्थपतिः प्रधानस्वामी.

8 ^a) न *कृते. Our emendation consists merely of the restoration of hiatus which various groups of MSS. attempt to avoid. Similar examples of hiatus are not rare; cf. च क्रविकः 1. 1. 40^a; अस्व क्रविकः 1. 33. 18^b; क्रविश्च क्रविपुत्रश्च 1. 76. 18^a; रावेन्द्र क्रवश्च 5. 149. 29^{ab}; etc. — For other such emendations in this book to restore hiatus see 7. 13. 35^d; 43. 10^d; 47. 27^a; 137. 23^d.

17 ^a) युक्ताक्षिरसदशनात्. दर्शन (at the end of a compound) = aspect or appearance. Cf. नारदादेव दर्शनात् 1. 2. 98^b; बहुगन्धर्वदर्शना 5. 114. 3^b. Dev. strangely explains: दर्शनाक्षीतिशालात्!

24 ^a) भवत्रेष्वाः. Cd भवत्रीता इति प्रायशः पाठः. Cf. 7. 74. 37^a.

30 ^b) Read विस्फारयन्.

40 ^b) Cd सुमयानद्वितैः सौभाग्यवतीभ्यः। सुमयानद्वितैः इति प्रायशः पठन्ति.

6

4-5. Kṛtavarma, a Vṛṣṇi prince, son of Hṛdika, joined Duryodhana with an Akṣauhini of troops (5. 19. 17), as also did the Kāmboja Sudakṣiṇa (5. 19. 21).

15 It is curious that the Krauñca-Vyūha of the Pāṇdavas is arranged by Yudhiṣṭhira, and not by Dhṛṣṭadyumna, the commanding officer (Senāpati), as is done correspondingly and rightly by Droṇa. Though the official commander, Dhṛṣṭadyumna is neither the chief leader nor director of the fight. On Vyūhas generally see Hopkins, *op. cit.*, p. 212.

42 °) अलातचक्रवत्. Cf. 7. 95. 25^d.

7

17 °) गावः शीतार्द्रिता इव = 134. 25^d. Cf. 130. 6^{cd}.

25 °) Śaibyātma is possibly Auśinara Śaibya (7. 9. 65), grandson of Śibi Auśinara mentioned in 7. 118. 30. In that case, who is Śibi also mentioned here (S variant Śaibya), as also in 7. 15. 32 (S variant Śala) and in 7. 130. 14 (v. l. Śaibya). This Śaibya Auśinara, who sided with Yudhiṣṭhira and attacked Droṇa, is probably to be distinguished from Śaibya Govāsana (7. 70. 38; 6. 17. 20 and notes thereon) fighting in the army of Duryodhana. — A Kāśipati, who was an ally of Yudhiṣṭhira (7. 7. 28), is mentioned in 5. 49. 38, and his horses described in 7. 22. 31; but he should be distinguished from the Kāśirāja whose son was attacked by Dhṛṣṭadyumna (7. 9. 56), Kāśiśa mentioned in 9. 2. 17 among the allies of Duryodhana, as well as from Kāśya Abhibhū (6. 89. 12; 7. 22. 19, 34; 70. 38), or simply Kāśya (7. 24. 43; 5. 168. 21).

8

7 °) अस्त्रं चतुर्विधं. Dev. explains: युक्तायुक्तं करयुक्तम् अस्त्रयुक्तं चेति; Arj. युक्तायुक्तम् अयुक्तम् अवयुक्तम् अन्तयुक्तम्. But in Udyoga अस्त्र (5. 30. 10) and चतुर्विधं (5. 155. 3; 193. 57) are described as *catuṣpād*, the four parts of the science of archery being described there by Dev. as मन्त्रोपचारमोक्षसंहाराक्षलारः पादाः. — °) Cd reads इवावसथरं.

8 °) देवाग्नपरिवारणं. The epic war-chariot, like

its Vedic forerunner, appears to have been provided with a kind of guard or fence-ring (*varūṭha*) to prevent warriors from falling down when engaged in action. The description suggests that the fence-ring was covered with or made up of tough leather like the skin of tiger or elephant. Cf. व्याघ्रचर्मपरीवारा वृताश्च द्वीपिचर्मभिः 5. 152. 6^{cd}. See ABORI xxvi, 1945, pp. 286-87. The expression is very often used, as in 5. 81. 18; 138. 21; 179. 10, etc.

21 °) = (var.) 31^{ab}.

9

8 °) वाशितासंगमे. Cf. 7. 117. 20, 31; 134. 47; 152. 15 etc.

38 °) महारथसमाख्यातं = 106. 3^c; *समाख्यातो 105. 26^c. Cf. 8. 23. 37^a.

39 °) Note the peculiar double crasis in एकोपसूत्य; similar instances in तपसोयस्य 1. 170. 14, ततो-लुकाश्रमे 5. 187. 25, अपसरोपमाः 6. 7. 30, हतोयुद्धः 12. 92. 17, ततोपदिष्टं 12. 124. 29. — °) Dhṛṣṭaketu son of Śiśupāla, deserted the Cedis and alone joined the Pāṇdavas, just as Yuyutsu, son of Dhṛtarāṣṭra and a Vaiśyā, alone went over to the Pāṇdavas (7. 22. 27). Dhṛṣṭaketu is mentioned as a Mahāratha (5. 168. 8) and referred to as Śaiśupālī in 5. 49. 41; 7. 34. 5; 101. 22, 28 etc.

51 °) अनाधृष्टि 'superior to any check'. The ŚK reading अनाधृष्टि makes no sense.

64 °) संस्थास्तुचारिषु. P W takes this as a wrong form for संस्थास्तुचारिषु 'along with movables and immovables'. Dev. on 1. 179. 11 (संस्थानचारिषु) explains the phrase as मरणधर्मकेषु. In 3. 207. 12 the reading is संस्थानचारिषु (v. l. संस्थास्तु, संस्थापु). But the reading given by us is well documented, among other MSS. by Ś and most K.

10

10 °) अवहत्. Dev. takes it in the sense of आवहत् (= ऊढवान्), which is actually the B variant. आ + √वह् = to bring home a bride in 5. 145. 18. See on this word, ABORI, xxvi, 1945, p. 213.

18 °) अश्वशक. Ś Br. appears to use this word to signify 'excrement of a horse'! Here it seems

to mean a particular (disgusting?) tribe of Śakas who were horse-riders (cf. अश्वपुङ्गव in 6. 1. 7).

25 ^d) चागमत्. Ca. d read अगमं (= अगमवानर्ह) which is not well supported by MSS. and remark: आगमादिति पाठश्चिन्त्यः.

11

22 ^d) एकाग्रमनः. According to commentators एकाग्रमनः = 'sole object' of thought signifies the way of death. Dev. Arj. explain: एकं मरणमेवाग्रमनं मार्गो द्रव्य. This meaning would suit the word in 8. 29. 31.

13

8-18 The elaborate likening of a battle-field of slaughter to a river or sea is a bizarre epic simile, which occurs frequently in this Book, e.g., 7. 15. 42-43; 19. 60-61; 20. 31-37; 48. 49-50; 68. 47; 74. 51-53; 83. 29-30; 89. 11-15; 95. 2-4; 113. 15; 131. 119-23; 162. 15-16; etc.

12 ^a) शरीरदारुशृङ्गादां. The dead bodies wallowing in blood are compared to Śringāṭas floating in water. The Śringāṭa, (called Śīṅghārā or Śīṅghāḍā in most North Indian languages, and Pāṇi-phal 'water-fruit' in Bengali) designates an aquatic plant (Trapa bispinosa); but the comparison here is to its turbinate triangular nut of blackish brown colour and ligneous texture (hence the appropriateness of the expression दारु). The S reading 'संघाटं' 'assemblage' is a colourless *lect. fac.*, which does not explain दारु satisfactorily, although शरीरसंघाटं occurs with v. l. in a similar context in 7. 20. 36^a; 48. 49^a, the word संघाट, corresponding to संघाट in 7. 13. 18^a or संघात (N v. l.) in 48. 49^a. It is noteworthy, however, that संघाटिका is another name of the aquatic plant Trapa bispinosa.

15 ^b) प्राणिवाणिजसेवितं. The meaning is not clear, although the reading is more or less certain. The v. l. 'वारिज' is facile and weak. According to Monier-Williams वाणिज = submarine fire; but the difficulty is that the sea is supposed to contain submarine fire, and not a river. If, however, we take वाणिज in the ordinary sense of a merchant, we can say that the creatures (grdhra, śṛṅgāla etc.), which roam about in the battle-field, are likened to merchants who

trade in corpses. The fact that these creatures are mentioned again in 16^a need not present a serious objection, for jhaya is repeated in 13^a and 16^a.

29 ^d) लाटवन्. Recurs in 7. 28. 6^a. This peculiar (Prakritic) root *laṭ* (or caus. *lāṭ*) 'to toss' or 'to throw' is, as variants in both places show, obviously not relished. It is, however, recognised in the Dhātupāṭha, although not listed in Whitney's *Roots*.

45 पौरव. Mentioned as a Mahāratha in the army of Duryodhana in 5. 164. 19-20. He is perhaps the same as Paurava Bhaṭkṣatra (King of Aṅga) mentioned in 7. 31. 63 (S. v. l. Naisadha), although the name is given as Viddhaksatra in 7. 171. 56; 172. 9. He appears to have been slain by Aśvatthāman (7. 171. 64). He should be distinguished from the Saindhava Viddhaksatra, father of Jayadratha (7. 121. 17), and Kekaya Bhaṭkṣatra (7. 22. 17; 82. 1), slain by Droṇa (7. 101. 5, 22).

50 ^c) Śārāvāra or Śārāvāraṇa (7. 13. 66; 6. 86. 36) = 'arrow-guard' or shield. Dev. वर, but वरच in 7. 171. 50; Hopkins, *op. cit.*, p. 304.

57 ^a) वक्षिणहावाजं. The Carman (shield) was, like an arrow, amply feathered (वक्षिण) with peacock plumes (वक्षिण) as an ornamentation. As the epithet applies normally to an arrow, ŚK reading, perhaps perceiving the incongruity, altogether omits *vāja* (= feather of an arrow) and changes it to वक्षि; वक्षिणवत् = 'covered with peacock feather'.

59 ^b) The expression प्रवेरित 'cast away, buried' is already authenticated by its use in 1. 17. 23; 68. 73; 5. 173. 5, as well as in 7. 2. 15 (प्रवेरयन्); 140. 32; 142. 8. The variants show that it was considered an unusual word, probably formed irregularly as प्र + अव + ईरित. See PW and notes on Udyoga p. 737 and ABORI, xxvi, 1945, pp. 283-90.

61 ^a) बृद्धधृक्पुत्रं दातारं. Refers to Jayadratha.

80 ^a) आनयनि = Śalya, son of Rāyana. A curious etymology of the name is given in 8. 23. 44.

14

23 ^d) पुष्पिननिवि किञ्चुकी. A simile often repeated: 6. 43. 13^a; 7. 47. 4^a; 71. 17^a; (var.) 83. 20^a; (var.) 99. 10^a; 111. 24^a; 137. 9^a; etc.

15

7 ^a) Śatānika, son of Nakula, should be distinguished from Śatānika, younger brother of Virāṭa (7. 20. 20; 4. 30. 10). The latter, curiously enough, is said to have been slain by Bhīṣma in 6. 113. 24, but he meets with death again at the hands of Droṇa in 7. 20. 32 and of Śalya in 7. 142. 27!

32, 37 Vyāghradatta Pāñcālya, who is mentioned as a warrior in the army of Yudhiṣṭhira in 5. 168. 18, is slain here by Droṇa. He should be distinguished from Vyāghradatta, son of the Magadha king, in the army of Duryodhana, who is slain by Sātyaki (7. 81. 14; 82. 32). — Sinhasena, the Pāṇḍava warrior, killed here by Droṇa, may or may not be the same as Pāñcāli Sinhasena, son of Gopati, whose horses are described in 7. 22. 43. There is another Sinhasena who fought with Karṇa (8. 40. 46).

16

2 ^a) अवहार, a regular term for cessation of fight, 5. 183. 27^a; 7. 32. 3^a.

19 ^a) सुषिङ्गेर. Kṣemendra gives the name as सुषिङ्ग. — ^{ed}) Suśarman, king of the Trigartas, was evidently not killed by Arjuna in 6. 100. 1 (see notes thereon); and perhaps he survived among the Saṁsaptakas until he was killed by Arjuna in 9. 26. 43. His brothers are mentioned in 7. 17. 20; but no brother of Suśarman appears with the name of Śatānika, as Jacobi supposes. Prasthala appears to be a clan of the Trigartas; in 8. 30. 391* N reads Prasthala among people of blamable behaviour.

20 ^a) माचेलक. In spite of confusing variants this seems to be the most acceptable form of the name. See v. l. on the word in 8. 4. 47^a and the editor's notes thereon, p. 678. — Kṣemendra has ललित for ललित्य; also त्रिगर्वराज for त्रिगर्व.

29-36 The oath-taking of the Saṁsaptakas may be compared to that of Arjuna in 7. 51. 24-37.

32 ^{ab}) The Smṛti injunctions clearly forbid cohabitation with a woman in menstruation (*rajasvalā*); hence the qualification मोहत्, which word the

Varāha-purāṇa (ed. Venkatesvara Press, 142. 41) also employs in a similar context. But the period (*rtu-kāla*) is extended usually to 16 days, of which the first four days are to be avoided (Manu. 3. 45-46). This view is apparently accepted by S reading; and the *Ṛtukāla* in this extended sense is employed in 7. 55. 28^{ab}. — ^c) आङ्गसंगतिकानां. People who assemble at a funeral ceremony and partake of food are deprecated; e. g. in *Padma-purāṇa* (ASS. ed., Ādikāṇḍa 56. 11 = *Kārma-purāṇa* 1. 17. 11^b-12^a; Caṇḍeśvara's *Gṛhasṭha-ratnākara*, p. 344). Ds appears to take संगति in the sense of *saṅgama* (sexual intercourse), hence the v. l. आङ्गमैथुनिक. Dev., however, curiously explains in his commentary: अहं त्वदर्थं करोमि त्वमपि मदर्थं भविष्यसीति कृतसमयानां.

34 ^b) The occurrence of the word होरा, which is sought to be replaced in BS by the *lect. fac.* मातृ, is interesting; but the sense is obscure. Usually, होरा (Greek *hōrā*, an hour) means the rising of a zodiacal sign at a particular time or its resulting effect; but this meaning is here incompatible, unless the sense intended is 'ignoring the particular zodiacal sign'. Is it possible that it has been used here as equivalent to Greek *hēlios* and signifies the sun?

38 ^a) अपदान्तरं = तत्क्षणं (Dev.).

44 Satyajit is mentioned as a son of Drupada in 5. 168. 22. He is slain by Droṇa in 7. 20. 16.

17

19 ^a) हस्तवाप 'hand-guard' should be distinguished from हस्तवाप (in 5. 23. 21) 'hand-throw' (Dev. मुष्टि), which signifies shooting of several arrows at once. The word recurs in 7. 78. 28^b; 96. 34^{ab} = 140. 28^{ab}; 99. 24^b; 137. 28^a; 145. 42^a etc. See Hopkins, *op. cit.*, p. 262, 273.

31 ^a) कृत्वा मृत्युं निवर्तनं 'making death the (cause of) retreat' (निवर्तनं = निवर्तनहेतुं), or 'making retreat (equivalent to) death', i. e., desisting from fighting only in death. Dev. (on 6. 53. 2) explains: स्वस्य परस्य वा मृत्युयेव निवर्तकः. The phrase recurs in 7. 127. 20^b; 171. 39^a.

18

10 ^a) The spelling मृकुटी or मृकुटि, which occurs

also in 5. 103. 36, appears to be well documented here.

11 ^a) त्वाद्गमनं. Mentioned again in 132. 29, along with Vārūṇa, Yāmya, Āgneya and Sāvitra weapons: in 163. 28, along with Aindra, Pāśupata, Vāyavya and Vārūṇa.

22 ^b) भावधोऽऽय. This is one of the instances of irregular epic Visarjaniya Samdhi of *as + ā* resulting in *o*, as in रजोऽऽनीलं 7. 74. 52. Such Samdhis with the word *ātman* (or Ved. *tman*!) (e. g. सोऽऽत्मानं 5. 149. 42; मूर्च्छन्निवोऽऽत्मानं 7. 153. 12) are common enough, but we have also रजोऽऽय 1. 168. 21; ततोऽऽयनेधिकं 1. 2. 66; सोऽऽस्तीको 1. 49. 17; यौवन-गोऽऽमुत्ते 1. 71. 22; जलधारासुतोऽऽकुलान् 1. 218. 14; संभृतोऽऽश्रमवासिना 5. 164. 6 (no v. l.).

35 ^c) आक्रीड इव रुद्रस्य. Cf. रुद्रस्याक्रीडसंकाशः 7. 100. 39^c.

19

6, 13 Some of the warriors mentioned here are not known elsewhere; hence the large number of variants with regard to the forms of these names. By Naiṣadha is perhaps meant Naiṣadha Bṛhatkṣātra mentioned above (note on 7. 13. 45). Karakarṣa is mentioned in 5. 49. 43 as following Śarabha, brother of the Cedi king; in 6. 80. 31 he is a Pāṇḍava warrior who rescued Cekitāna!

7 ^d) हंसपद. If they are the same people as हंसमार्ग mentioned in 6. 10. 68, then the BS reading हंसपथ would be preferable.

35 ^a) मरीच्यः. N does not approve of this S transference of fem. *i-* to *i-* stem. But this is not unusual in the epics, e. g., शस्त्रः (weapon) 5. 139. 40; 7. 138. 18; शस्त्री 5. 152. 3; आयत्नी 5. 39. 7; 7. 134. 56; स्मृती Rām. 5. 15. 33, etc.

20

35 ^a) मांसशोणितकर्दमा. One of the frequent epic descriptive phrases, e. g., 6. 50. 94^b; 162. 15^d; 164. 82; 9. 14. 17^b; 11. 16. 55^d; etc.

40 ^b) प्रमित इव कुक्षरः = 7. 21. 4^b (acc. sing.) = 7. 38. 28^b = 9. 56. 59^d. Cf. 7. 9. 8^a; 68. 52^c.

43 Curiously enough, we are told that Vasudāna was killed later by Droṇa (7. 164. 84). G₁ M perhaps perceived this incongruity and changed the reading accordingly.

46 ^b) The S reading क्लृप्त, accepted in our text as an epithet of Yudhiṣṭhira, is interesting. N seeks to avoid this blunt reference to the king's addiction to gambling, but Dev. supports S reading, which does not want to mince matters.

21

27 ^c) काका इव महानागं. Dev. reads कोका: and explains it as पिपीलिका: । महानागं महामपं ॥ अथवा कोका वृकाः, महानागं महामग्नं. Arj. agrees.

22

19 Abhibhū is the proper name; see 7. 61. 40; 70. 38. Hence the reading अभिभू: in 7. 22. 34 would appear preferable; but Abhibhū is the name of Kāśya and not of his son.

21 Sutasoma, whose origin is described, was the son of Bhīma (Pārtha) and Draupadī, just as Prativindhya of the previous stanza was the son of Yudhiṣṭhira and Draupadī. The other three sons of Draupadī by the Pāṇḍavas are mentioned in 23-25.

27 ^c) The K reading महाकको (for महाकाया), supported by Cd, is a notable variant; for कक means 'a white horse', as in 7. 107. 26. Both Amarakośa and Abhidhāna-cintāmaṇi mention कक as the synonym of a white horse.

29 Sörenson suggests that Saucitti is the patronymic of Satyadhṛti mentioned in 5. 168. 17; but this is not borne out by 6. 89. 12; 7. 22. 29, 32, 34, 48 (Satyadhṛti Kṣaimiti), where they appear as names of separate warriors.

46 ^a) Dev. मद्रका: श्वेतसुराः. Cf. मद्रकाः in 58^a.

51 Śaibya Citraratha should be distinguished from (Pāṇḍala) Citraratha, brother of Virāṭa, mentioned in 7. 98. 37, as well as from Śaibya Anānara.

53 ^c) पटचरहन्तारं. Cf. 7. 24. 33^c. The word पटचर, literally meaning a thief or robber, probably denotes a people here.

58 ^b) शरदण्डानुदण्डजाः. The S reading शरदण्ड

Critical Notes]

(काण्ड) निम्न द्याः merely repeats 46^d, and adopts here the reading दण्डधार of 46^d (for दण्डकेतु). If the expression, as Ca. d imply, indicates horses of different regions (Cv देशविशेषोद्भवाः), then दण्डधार and अनुदण्ड would be names of different countries. We know nothing of Anudaṇḍa, but Śaradaṇḍa was the name of a country belonging to Śālva in Madhyadeśa (Kāśikā on Pāṇini IV. 1. 173). Nilakaṇṭha reads दण्डधारानुदण्डः and explains: दण्डधारः दण्डप्रकाण्ड इव अनुदण्डः पृष्ठद्वारे यथा, मितगौरव्या इत्यर्थः. This is ingenious; but अनुदण्ड in this sense is not recorded independently anywhere, and appears to be a facile invention of the commentator.

24

22 ^b) In 7. 19. 6 the form of the name is Bhūta-varman, which is given by S reading here. Sabhā-pati is not a designation but the proper name of a warrior, who is mentioned again in 8. 65. 28 as fighting against Arjuna.

48 ^b) Note the Ś reading खजाकपा. The खज, खजक or खजाका is a churning stick; possibly some kind of weapon is meant here. See Critical Notes on Karna-parvan 8. 8. 41^a. Unless there is some technical significance, the traditional शस्त्राका is perhaps as little an actual weapon in warfare as खजाका.

26

6 ^a) Dev. Arj. सहः सोडा, पचायच्.

8 ^b) Dev. Arj. विसितं गवितं in the old sense.

28

6 ^b) शरदाप, lit. 'throwing of arrows'. The v. l. परिदाप or परिदार shows that its meaning was considered uncertain. Recurs in 1. 180. 12 apparently in the sense of a bow; but here (as in 7. 105. 31; 163. 18), in view of the word धनुः or शरसन in immediate context, it should mean a quiver.

39 Note that several lines are inserted here by the Bombay and Kumbhakonam editions, which are given by none of our MSS.

29

19 ^b) सुवर्गविद्याः Nilakaṇṭha's reading विद्याः

(= tiger) is given only by B₁; but व्याघ्र is already mentioned in the same line.

38 ^d) वृत्तमोकनिव पद्मगाः. A frequently employed simile to indicate the sharp piercing of an arrow; 7. 111. 15^d; 114. 7^d; 117. 7^d; 140. 29^d, etc. Also 6. 112. 118^d.

40 ^a) Citraśālā ed. reads तदाश्वः, but अश्व has no relevance among beasts of prey. Cf. शस्त्रगालवायसाः 48. 47^a. — ^d) आदोष = आदोषन 'battle-field'; loss of final syllable *metri causa*.

31

36 ^b) विभीतः = विगतभयाः (Dev.), apparently भीत = भय.

35

21 ^d) शुकमा इव पावकं. A stock epic simile; e. g., 8. 17. 104^d; 11. 25. line 3 of 63*.

23-25 For explanation of the weapons mentioned here (and in 7. 37. 22; 87. 15; 153. 21-23; 154. 14; 162. 40-41 etc.), see Hopkins, *op. cit.*, p. 269^f; and for the various parts of the chariot mentioned in 31-32 (and also in 37. 5-6; 40. 18; 43. 16-17; 65. 28; 88. 9-10; 97. 21-22 etc.), see the same work, p. 249, 340-42.

27 ^a) पञ्जरशैरिव पन्नजैः. The arrows with five points are obviously compared to five-headed snakes. Cf. 7. 118. 2^d. Rām. (Bom. ed. 5. 38. 25^{ed}) कः क्रीडति सरोषेण पन्नवक्ष्रेण भोगिना. The earliest known representation of the five-headed Nāga is to be found in the Barhut reliefs (2nd century B. C.).

44 ^a) = (var.) 45. 5^{ab}.

36

29 There are various Kuru warriors bearing the name Suśeṇa. The present Suśeṇa, with the qualifying description *dirgha-locana* or *dirgha-netra*, is probably not the son of Karṇa, of whom more is said in Book 8, but son of Dhṛtarāṣṭra, who fights with Bhīma (7. 102. 94). — Both Suśeṇa and Kuṇḍabhedī are not killed here but merely struck down. For निहत or अवधीत in this sense, see 6. 75. 49; 7. 102. 94; 132. 18.

35 ⁴) वृणाः सिद्धार्थिता इव = 9. 18. 3^d. See note on 7. 7. 17^d above.

38

30 ⁶) कृकर. The reading is documented in G₁ Ms., although the word in the sense of a musical instrument is not found in any lexicon. The *v. l.* कृक्व and कृक्च (the last having given rise to the Vulgate कृक्च, a more well-known word!) are perhaps scribal mislections. The reading adopted in 6. 95. 41⁶ is कृक्च (supported by Cd), although कृकर is given there by S.

42

17 ⁶) सोत्तरायुधिमिरावृद्धयोधैः सह Dev. (with reference to elephants). Cf. 7. 18. 30^e सोत्तरायुधिनः, where Dev. gives the same explanation.

44

9 Rukmaratha here is the son of Śalya. The expression is used as an epithet of Droṇa (7. 7. 30; 91. 12 etc.) because of his golden chariot (7. 8. 19; 145. 2; 164. 68), as well as of Virāṭa (5. 27. 18); but it is also the name of some princely warriors in 7. 87. 19.

45

21, 23 Krāthaputra is mentioned in 5. 4. 16 as one of the princes to whom Pāṇḍavas should send messengers. Perhaps he has nothing to do with Viśakrātha (7. 19. 13) or Kratha (7. 96. 10), or Krātha, son of Dhṛtarāṣṭra, killed by Bhīma (8. 35. 7, 15) or Krāthi (7. 131. 86). Uncertainty regarding these names naturally gives rise to strange variants.

47

17 ⁶) Note the S reading वृणा 'manly, vigorous', accepted in our text, for the rather colourless रणे of N. This Vedic epithet is applied *par excellence* to Karna by S also in 7. 2. 2^d; 122. 30^d; 150. 71^d; 155. 22^e, 24^d; 157. 4^e. But N has वृणः (for Karna) in 7. 108. 20⁶ (S रणे); 120. 73^e (only in some N); 150. 71^d; 155. 22^e, 24^d; 157. 4^e; 6. 117. 4⁶, etc.; इष्य in 7. 112. 45^d. It would be better to adopt the

S reading वृणा (for N वृणः) uniformly throughout, as it should be in 7. 114. 77^d, unless the MSS. indication is definitely otherwise.

39 ⁴) The general sense of the stanza is that Abhimanyu in the battle-field appeared as if imitating Vāsudeva-Kṛṣṇa, वनार्दन इषारः (7. 48. 1). The S reading वासुदेवानुकृति (for वासुभद्रानु) seems to be a conscious emendation, which appears to have spread into B and D; Ś K₁. 3 D₁ read as in text and keep up the Yamaka with क्षणदासुभद्रः of the previous line. Devabodha explains: वासुभद्रो वासुदेवः. The fact that B S and some N MSS. change the expression क्षणदासुभद्रः appears to indicate that it is a *lect. diff.*, the sense of which was frankly obscure; and this change involved necessary alteration of वासुभद्रानु into वासुदेवानु in the next line. S goes to the length of changing the entire aspect of Pāda ⁶ into a Vaitiśāstha Pāda. If we take क्षणदा here to mean 'night', as it normally does, then क्षणदा + सुभद्रः or क्षणदासुभद्रः does not make any sense suitable to the context. Is it possible to take क्षणदा as an adverb (like *nitya-dā, sarvādā*) meaning 'for the moment'? In the battle-field the excellent (सुभद्रः) Abhimanyu, with Cakra in his hand (चक्रप्राप्तिः) appeared (वने) for the moment (क्षणदा) as if imitating Vāsubhadra with his Cakra.

48

1 ^a) स्वसानन्दिकः. S reading स्वसुनन्दि- is obviously meant for regularization. In स्वसा the fem. *r*-stem is transferred to *ā*-stem; as in 6. 112. 3⁶ वृक्षेयोर-निब स्वसा. Similar use in Rāmāyaṇa 7. 12. 2. Such transfer of *r*-stem we find in Pali (Geiger, sec. 91) and Buddhist Hybrid Sanskrit (Grammar, sec. 13. 3, 7). For -नन्दिक्, cf. माद्रीनन्दिक् 5. 49. 30^d.

2 ⁶) उद्यत्तारिवरायुधं. उद्यत्तारि⁶ would be a tempting emendation, but अरिन् = discus.

7 ⁶) कालकेय. It is noteworthy that Śakuni, son of Subala, king of Gandhāra, is said here to belong to the Kālakeya tribe of Asuras who were slaughtered by Arjuna (7. 49. 16; 103. 39). S with some B D MSS. finds the reading incongruous and entirely effaces it. Kṣemendra paraphrases: सुवदन्त्यान्त्रं वीर-कालिकेयं जवान सः. The ब्रह्मवन्त्यान्त्रं people are also mentioned next by Kṣemendra.

(Vālmiki); 131.61; 132.16; 153.27; 156.23.

72

10 °) तालमात्राणि; also 7.44.16. See notes on Udyoga 5.26.23°. Hopkins, *op. cit.*, p. 270, is not correct in his interpretation of तालमात्र as 'palm long'.

73

28 °) सेरावतशतहदाः. Airāvata is a kind of rain-bow.

75

15 °) असंभ्रमत्. Irregular insertion of augment before the preposition. Nilakantha glosses: उपसर्गात्पूर्वमापौड! — °) अति = अतिक्रम्य. The function of अति as a Karmapravacanīya is misunderstood; hence the variants.

13 °) उपावर्तयत् 'rolled on the ground'. Recurs as उपावृत्त (= लुठित Dev.) in a similar context. See notes on 5.181.2.

22 °) सेनिकावृत्त. Practically no v. l. A case of epic double Sandhi of ās + a, as in नृपावृत्त 7.130.35° (practically no v. l.), क्रोधरक्तक्षणावृत्त 7.134.13° (no v. l.), सिद्धावृत्त 7.134.80° (no v. l.). Also with अभवन्—हृषितामवन् 7.42.34° (no v. l.), 108.22° (no v. l.); विमुखावन् 7.114.44° (no v. l.); विमनामवन् 7.164.91; व्यथितामवन् 7.172.39. These cases may, however, be explained by taking the verbs as instances of augmentless imperfect form भवन् or वृवन्. But cf. त्वरिताविच्यन् 7.145.17; बाह्यास्त्युग्रमहीम् 7.164.107.

31 °) बलाक masc. = crane, being perhaps less familiar than fem. बलाका, gives rise to strange variants.

36 °) षिद्धि. The loss of initial syllable (Apharesis), resulting in dhi for adhi is mostly metri causa, as in उग्र कर्मणि षिद्धिः 7.121.42; षिद्धितौ रण-मूर्धनि 7.147.30°; पादाङ्गुष्ठप्रषिद्धिता 5.187.21°; को भवानिह षिद्धिः 1.13.18°; नागानां षिद्धितानां 1.48.13ab; मार्गमावृत्त षिद्धिताः 12.149.13°. The variants in the present case, especially the entire change of the word in S, are meant to avoid the irregularity.

76

21 °) दृश्य. Cf. 7.78.46°. Also 1.218.22 (no v. l.). Similarly, चिन्त्य 7.11.5a; also 5.193.1 (no v. l.).

82

5-6 Here Kṣemadhūrti is slain by Kekaya Brhatsatya; but in 8.4.42 he is said to have been killed by Bhīma with his club.

84

24 °) सालकटङ्कटः. Probably a name or epithet of Alambusa.

29 °) पक्कमलम्बुसं. Alambusa must be a kind of large and heavy fruit (Dev. फल) likened here to the Rākṣasa of that name. Not lexically recorded. Cf. फल पक्कं तरोरिव 7.98.56.

85

7 °) तोत्रार्द्धि इव द्विपः = 7.121.10°; 171.51°. Also 6.50.63°; 9.20.16° = 9.25.20°. Cf. 7.106.28°; 149.15°.

16 °) Cf. 7.86.24°.

87

47 °) पञ्चगुणो रथः. Nilakantha vaguely explains: पञ्चगुणसामग्रीकः, while Dev. offers no explanation. Hopkins refers to this passage but does not interpret. In 7.87.55 we have mention of five essentials, namely, पीत (having thirst quenched), उपावृत्त (rolled on the ground), स्नान (bathed), जग्धान (well fed), विनीतशय (having darts removed); but they refer to the horses, and not to the chariot itself. The five essentials of a chariot should be Rathin, Sārathi, Āśva, Dhvaja and Śastra.

88

9 °) For the difference between उपस्य and नीड of a रथ, see Hopkins, *op. cit.*, p. 238.

89

23 °) कुप्यभृतकः. The expression कुप्यवेतनी occurs

in 3. 16. 22 and probably means one getting wages in base metal (and not in gold or silver).

32 ⁸⁰) = 128. 16^{8d} = (var.) 91. 51^{8d}.

91

16 ^a) Read प्रायाच्छनैः.

47 ^{8d}) As the v. l. indicate, the identity of the Kuru warrior Naiṣādhī, who accompanied Jalaśādhī on the elephant, is uncertain. He may be the elephant rider Naiṣādhī, who is slain by Bhīma in 8. 43. 71; but he cannot be Ketumat Naiṣādhī, who is killed by Bhīma already in 6. 50. 70. In 7. 156. 2, Naiṣādhī appears from the context (7. 155. 29) to be Ekalavya.

94

6 Several Sudarśanas are found mentioned. Besides Sudarśana, a Kuru warrior, who is called here राजवर, अवनिपालपुत्र and पश्चिमुत्तपौत्र and killed by Sāt-yaki, there is Sudarśana, son of Dhṛtarāṣṭra, killed by Bhīma (7. 102. 99), as well as Mālava Sudarśana, a Pāṇḍava warrior, slain by Aśvatthāman (7. 171. 56, 63). The epithet पश्चिमुत्तपौत्र, the significance of which is not clear, as well as राजवर, recurs applied to Alambusa in 7. 115. 14, 19.

7 ^b) समभिप्रशंसन्. Augmentless imperfect with three prepositions !

95

35 ^a) On शैक्यायस or शैक्य (7. 109. 10), see notes on 5. 50. 8.

97

12 The number of unconvincing variants indicate that the repetition of कृत्वा is original. The phrase कृत्वा संशप्तकान्मिथः = having sworn reciprocally not to recede from fight. Cf. a similar passage in 7. 99. 6^{8d}.

98

50 ^a) वैतस्तिक. A small arrow which was probably वितस्तिप्रमाण (वितस्ति = 12 aṅgulas or about 9 inches) employed for fighting at close quarters (निरुद्धयुद्ध)

145

[1153]

7. 164. 150. Cf. Rāmāyaṇa, ed. Gorresio, 6. 49. 49. Kṣemendra (Droṇa 407) speaks of किङ्कुप्रमाण वेदस (किङ्कु = a cubit).

100

6 ^a) आदिकेषु समूहेषु, 'daily assemblage of troops'; the variants show that the simple meaning was missed. समूहेषु = व्यूहेषु, Dev.

39 ^b) मूरिवधनः, explained by Devabodha as मूरिच्छेदनः, recurs in 7. 128. 34^b.

101

49 ^a) कर्मग्राहगृहीत 'seized by paralysis of the thighs', 5. 50. 7.

69 Cf. 7. 165. 49, 103.

102

33 ^{8d}) = (var.) 40^{8d}.

35 ^a) गुडाकेश. Dev. gives a curious etymology of this word : गुडाका धनुर्विद्या, तस्मा इयः अग्रणीः ! The word is supposed to mean 'one who has overcome sleep or sloth (गुडाका)'.

47 ^d) आलम्बिकं 'of exceeding importance, pressing, urgent'. Although this reading is given by a few MSS. only, the variants are strangely discrepant and unconvincing. Dev. supports it as against ŚK. Cf. आलम्बिकेषु 7. 1. 43^d.

69 ^a) But Vinda and Anuvinda (of Avanti) are already killed by Arjuna in 7. 74. 25, 29 ! Their mention here, along with the sons of Dhṛtarāṣṭra, led Jacobi to suppose (Mahābhārata, pp. 194, 230) that these were sons of Dhṛtarāṣṭra. They should be distinguished from the Kekaya Vinda and Anuvinda killed by Sāt-yaki in 8. 9. 20, 32.

97 In spite of the expression अवधीत्, Suśeṇa, son of Dhṛtarāṣṭra, is not killed outright in 7. 36. 29 nor here. Suśeṇa is still alive in 8. 4. 100, and Kṛpā-bhedi in 7. 131. 84.

104

1 ^a) = 9^a.

33 ^a) व्याघ्रच्छेदा, also 7. 133. 19. व्याघ्र in the

sense of fight occurs in 5. 136. 24. Hence व्यायच्छन्ति 7. 105. 4; व्यायच्छन्तः 125. 16; व्यायच्छन्तः 22. 2 (S व्यायामेन); व्यायच्छमानस्य 127. 3, 5, etc.

106

45 ^a) Cf. श्राविच्छलितो यथा 141. 20^d, 150. 51^d; श्राविषौ शल्लैरिव 143. 16^d. Cf. 7. 48. 6^{ad}. The form श्राविद् (= श्राविष्) occurs also in 1. 133. 22.

49 ^a) गृहपादैः = सपैः, Dev.

107

11 ^b) It is strange that the Chitrashala ed. should read अपुत्रां (for सपुत्रां) with reference to Kuntī!

30 ^a) समाचं = रङ्गं. Cf. महारङ्ग 114. 60^a.

108

30 ^{ab}) = 109. 2^{ab}.

109

29 ^a) कौञ्चं पत्रया इव. Refers to the Himalayan pass through the Krauncha mountain, mentioned also by Kālidāsa (Pūrvamegha 59), which was pierced by Kārttikeya and Paraśurāma, and through which swans are said to pass on to the Mānasa lake. Devabodha's reading कौञ्ज (= कृतादिगृह) is gratuitously fanciful. Cf. हंसाः कौञ्चमिवाविशन् 7. 114. 82^d, where, however, Dev. reads as in text, and explains: कौञ्चं काशिकेयबाणद्वारेण हंसा इव.

110

9 ^b) यमकालान्तकोपमं. Cf. यमान्तकनिकाशयोः 141. 5^d; कालान्तकयमोपमः 6. 50. 42^d; कालान्तकयमोपमं Rām. 6. 116. 22^b.

114

91 ^b) धनुषां कृजतां रणे. Cf. 7. 162. 6^d कायुंकाणां च कृजतां. See Kāśikā on Pāp. vii. 3. 59.

115

18 There appears to be some discrepancy or confusion with regard to the identity and slaying of Alambusa. He appears to have been killed by Ghaṭotkaca in 7. 84. 29, but here again he is said to be killed by Sātyaki! He is first mentioned in 7. 24. 57 as fighting against Ghaṭotkaca. In the present

passage Alambusa, however, is mentioned not only as Rājavarā (an epithet which Kṣemendra, Droṇa 500, repeats), but also as Pārthiva-putra-pautra, presumably of human ancestry. But curiously enough, he is mentioned again as Rākṣasendra in 7. 140. 16 (S अल्लयुष); 142. 34 (most S अल्लयुष or हुल्लयुष!) Perhaps more than one Alambusa might have been meant. Jacobi (*Mahābhārata*, p. 196) appears to agree with this view, and distinguishes as many as three Alambusas. Alambusa in 7. 83. 15, 23 (cf. 6. 90) is a Rākṣasa, son of Rṣyaśṛṅga and brother of Baka Rākṣasa — a description which Kṣemendra (Droṇa 364) follows; but in the present case Alambusa is a king of human descent. It is natural to confuse Alambusa with Alāyudha and Alambala; and this confusion, made mostly by the Vulgate, led Jacobi to suppose a third Alambusa, son of Jaṭāsura. Alāyudha, mentioned as a Rākṣasa king and warrior in 5. 163. 33, is described also as a relation of Baka Rākṣasa (7. 151. 3; वक्रभ्राता 7. 153. 4; वक्रशक्ति 153. 33; वक्रस्य दयितः सखा, Droṇa 657, in Kṣemendra). We find him mentioned also in 7. 70. 46 and distinguished from Alambusa. Alāyudha does not actively appear till 7. 151. 1, while Alambusa is mentioned as already killed in 7. 125. 21, though actually killed by Ghaṭotkaca in 7. 153. 32. It is Alambala, killed also by Ghaṭotkaca (7. 149. 31), who is mentioned as the son of Jaṭāsura in 7. 149. 5; so also in Kṣemendra (Droṇa 635). Jacobi ignores Alambala.

116

2 ^a) आनर्त. Sātyaki is called here Ānarta (as also in 9. 17. 80). Ānarta, as the name of a country (Saurāṣṭra) or people, is referred to in 5. 81. 45. Apparently, Sātyaki is supposed to belong to that country as he was a Dāśārha (7. 117. 4) or Yādava (7. 117. 61). But as he was also a Sātvata (7. 116. 27) of the Vṛṣṇi tribe (7. 117. 25, 28, 47), Śūrasena is mentioned as his domicile in 7. 116. 9.

117

12 ^a) अपाचि 'amends, recompense'. In 5. 50. 50, as well as in 7. 149. 7, Dev. explains the word as निष्कृति, Arj. as शोधन. In 1. 46. 41, Dev. explains it as वैरनिर्यातन. The word also means 'respect,

homage', as in l. 170. 11; 5. 89. 37; 127. 20.

118

30 ^d) Read औशीनरो.

36 ^e) कौरवेन्द्राय = कौरवेन्द्रस्य. The genitive is actually found in a limited number of MSS. The use of dative for genitive proper, i. e. in संदन्धे (and not श्रेये) पठ्यते, is not infrequent in Vedic usage, although it is not noticed by Maconnell; e. g., Ś. Br. ii. 6. 4. 5 सा या श्रेयी शल्लकी सा त्रयै विवायै रूपम्, xiii. 1. 5. 1 त्रियै वा एतद्रूपं यद्वीणा; Baudh. Gr. Sūtra I. 10. 12 त्रयै नवास्तौरे संश्रिता वसन्ति तस्यै नाम गृह्णाति; Hiranyakeśi Gr. S. ii. 1. 3 (= var. Pāraskara Gr. S. 1. 15. 8; Āgni-veśya Gr. S. ii. 1. 2) सोम एव नो राजेत्वाहुर्मास्योः प्रजाः । विदुस्तन्मा आसीनास्तौरे तुभ्यं गङ्गे ॥ In the epic the dative is found for such genitive in connexion with मङ्गल and तुभ्यं for मम (मे) and तव (ते), e. g. दन्धिपति रिपुस्तुभ्यं 5. 162. 25, वयं तु गुरवस्तुभ्यं 5. 186. 17, etc. as they occur also in the quotations given above from Hiranyakeśi Gr. S.

119

9 ^e) Hypermetric.

120

29 ^b) व्यपाश्रितः 'having resorted to', which meaning S reading व्यवसितः misses. Cf. व्यपाश्रयः 'refuge, resort' 7. 9. 71; राजनीति व्यपाश्रित्य 7. 127. 19; यो हि धर्मं व्यपाश्रित्य 5. 37. 15.

71 ^b) = 163. 5^d. Cf. Rāmāyaṇa 6. 88. 64. — लघु चित्रं च सुष्ठु च.

72 ^b) वातिकैः perhaps 'sorcerers', is meant as in 5. 62. 21; but in what connexion they come in here is not clear. Dev. explains : दूतैर्वातवज्रमणशिलैः. Cf. 7. 135. 39^d, where Dev. reads वातिकाः and explains : वातिकाः वाताहराः, वातिका इति पाठे स एवायं.

86 ^e) विज्ञलज्जेन, explained by Dev. ज्वालाभालित्वात्.

121

15 Kṣemendra agrees in omitting here the long Vulgate passage about the illusion of darkness created by Kṛṣṇa. Dev. remarks in this connexion : तत्र तमःसृष्टिः कचिद्दृश्यते । सा च न प्रामाणिकी । बहुबुद्ध्यादरेण पठन्तीति ।

122

19 ^d) दशधर्मगतेन. Dev. explains : भवत्वाविज्ञेन शोधितस्त्वात्. The S variant दश^a is obviously due to misunderstanding.

21, 24 ^a) उपाकुल, उपाकुलम्. Technically, Upakarman is the ceremony performed before beginning the study of the Vedas.

39 ^e) कालम् adv. 'timely, seasonably'. Cf. कालमुक्तं 7. 122. 31^d.

125

15 ^d) पातुनात्मानमुत्सहे. As the v. l. show, here we have a confusion between the verbal roots पा and पू. The form पावितुं is Vulgate attempt at rectification; but the correct form appears to be पवितुं.

127

12 ^d) Cd आत्मविदा (for अस्मविदा), explained as स्वशक्तिविदा.

16 ^a) वैवोपसृष्टः = देवेन प्रसृतः, अनर्थकर्मप्रारम्भत्वात् Dev.

130

23 Dhruva here is a Kuru warrior, but there is another Dhruva, who is a Pāṇḍava warrior, mentioned in 7. 133. 37.

25 Kṣemendra gives (Droṇa 569) the name of Jayaratha, a Kuru warrior, as Jaladhara.

131

25 ^d) प्रत्यभिन्न 'opposed as an enemy, hostile'. Also 7. 152. 14. Cf. 5. 125. 10.

56 ^d) क्रौञ्चमग्निमुनो यथा. Agni-suta = Kārtikeya. See note on 109. 29.

132

20, 21 The text (132. 21) speaks of five brothers of Śakuni, but actually gives the names of three only. The extra passage 1136^a obligingly supplies the names of the remaining two.

133

54 ^e) Bhūti is son of Somadatta, also mentioned

in 7. 36. 5; 140. 6; and 141. 1-12 (killed by Sātyaki).

140

27 °) माधव. Kṛtavarman, son of Hṛdika, is so called because he was a Viṣṇi prince of the Mādhava clan (माधव = मधुगोत्र Dev.). Also 7. 140. 35^d; 145. 58^d (Sātyaki); 146. 4^d, 15^d (Sātyaki); etc.

141

1 °) In the critical notes, read "Cdp. v" for "Cd. v".

142

34 °) अष्टचक्र; also 7. 150. 12. Eight-wheeler chariots are rarely mentioned. But these have special reference to the Rākṣasas Alambusa and Ghaṭotkaca.

144

34 °) पदाती च पदातिनं. Here we have an instance of i-stem transferred to in-stem; hence the number of variants wanting to rectify. But पदातिनं occurs in Rām. 6. 89. 53 (v. l. पदाति); पदातिनौ in Rām. 2. 40. 41 (v. l. पदातौ or पदाती तौ).

145

31 °) Read मा गास्तिष्ठेति.

148

36 °) Read राक्षसान्धासुराणि and make corresponding corrections in the footnotes.

150

3 °) Read पृष्ट.

155

2-3 Although there is good reason for it, this unseemly jubilation of Kṛṣṇa (while the Pāṇḍavas are plunged in grief) is considered by some critics to be a later addition. The real cause of the joy is the fact that Karna was constrained to divert the Indra-given Śakti from Arjuna to Ghaṭotkaca who is killed by it. Kṛṣṇa explains this; but since this

reason is somewhat of a selfish kind, a more altruistic reason is added in 7. 156. 26-28, as an after-thought, that Ghaṭotkaca was an evil man who was inimical to Brahmanas and to the performance of Yajña; and it is in the fitness of things that he was killed! But since the passages are given by all recensions and versions, we need not stray here into the sphere of Higher Criticism.

157

10 °) Read अयोधवद्.

31 °) Cd reads: अयं प्रत्ययितः कर्णः शक्त्या चामितविक्रमः and explains: प्रत्ययस्तथेति बुद्धिः, सा जानास्येति प्रत्ययितः। शक्त्या निमित्तभूतया.

158

1 °) अपनीतं = अपनयः, as Cd explains: so दुष्पणीतं = दुनयः in 11°.

159

41 There cannot be much doubt that 1263* is a substitute passage for 41 (which is in Triṣṭubh), although it is in Anuṣṭubh and inserted after 34. Both the passages are indeed omitted by B. 1. 5 D. 1 D. 2. 1; but against the omission we have, on the one hand, the testimony of entire S (G missing) and, on the other, of such better types of N MSS. as ŚK (Ś: K missing) B. 1. 3 D. 1. 3. The omission is due perhaps to motives of propriety.

161

4 °) कुर्मि. An instance of verbal stem transfer. The form recurs in 5. 180. 26.

9 °) This is merely a repetition, with variation, of 4^d, although कुरु for कुरुन् is syntactically incompatible.

162

11 °) स्वे पराश्व. Dev. accepts this reading of the text.

26 °) सैन्येन रजसा. सैन्येन = सेनाभवेन; see 6. 1. 20 and notes thereon.

44 °) वक्रुट, 'armour for horse' Hopkins, op.

cit., p. 258 fn, but 'breast-plate or goad' p. 268 fn.

48-50 अपसव्यं कृ. It is not clear why Hopkins, p. 200 fn, explains this phrase by 'make an attack on one'. Usually अपसव्यं means 'not on the left side, right'. In auguries, evil omen is indicated by movement of animals from right to the left (e. g. अपसव्या मृगाः सर्वे धार्तराष्ट्रस्य केशव 5. 141. 16; also 7. 167. 3). The alternative reading in 7. 161 4¹ is अपसव्यमिमं (= द्रोणं) कुरु, where the plain meaning would be that Arjuna is instructed to keep the enemies on the left (सपत्नान्सव्यतः कृत्वा) and Droṇa on the right (अपसव्यमिमं कुरु). This seems to be the sense of the phrase here also, as well as in 7. 163. 24. Monier-Williams and PW note that अपसव्यं कृ (= प्रदक्षिणं कृ) sometimes means to circumambulate a person by keeping the right side towards him. Such movement in a rite generally implies reverence for the object of circumambulation or belief in the magical efficacy of the act. In the alternative reading of 7. 161. 4¹ it is possible to find the sense of reverence of Arjuna for his Guru Droṇa; but the repetition of the phrase in this and the other passage noted above hardly bears out this interpretation.

163

31 °) अञ्जुनेनार्जुनं. Obviously Arjuna is compared to Arjuna himself — an instance of the poetic figure Ananvaya. But Dev. कर्तव्यार्थेन । तेनैव पार्थिवेन वा । उपमानाभावात्.

47 °) Note that पार् is irregularly neuter here.

164

11 °) न लिप्तः. From the context of unfair warfare some commentators would take लिप्तः = विषेण लिप्तः; Cf. 12. 96. 11 नेपुलिप्तो न कर्णो स्यादस्तमेतदायुषम्. On the question whether poisoned arrows were used, the evidence is not conclusive; see Hopkins, *op. cit.*, pp. 277-78, 280 fn. The phrase विषतोमर, poisoned dart, occurs only in an inserted passage 543* in the list of weapons enumerated in 5. 152. — वस्तिक. The Vulgate reads वस्तिक, which is explained, rather artificially, by Nil. as a loose-headed arrow shot into the bladder (वस्ति). But from old medical works, वस्ति appears to be an in-

jection syringe made of bladder. Undoubtedly some kind of deadly weapon is meant. Cf. 5. 152. 7 (where the reading is वस्ति).

147 °) एकविंशति. The number of manoeuvres actually mentioned in the text is only 10, to which the additional passage 1314* adds three more. Both Dev. and Nil. accordingly mention and explain 13 kinds. See notes on 6. 50. 45 and Hopkins, *op. cit.*, p. 286, for some of these sword-maneuvres.

165

13 °) हतौजाः. Although the reading suits the context, the variant हतौजाः appears to be better authenticated by MS. evidence.

49 Cf. 7. 101. 69; 165. 103.

96 °) सर्वं मद्रं ते. Although this reading is given by a very small number of MSS., it is probable, in view of the strange character of discrepant readings given by various groups of MSS.

109-115. This narration is a repetition, with some verbal changes, of 7. 164. 67-70, 106.

117 °) Among N MSS., K₁ B D have the unusual word अक्रन्दे (turmoil), and some K त्वन्नामपीदितः. The S reading, accepted in the text, is perhaps a later attempt at improvement, but it is consistent.

166

42 °) सकल्यं. Perhaps सकल्य is a mislection for सकल्य, in which phrase कल्य, as explained by Nil., is a technical term which signifies प्रयोग. Dev. reads सकलं and explains it as समोश्च in accordance, apparently, with the dictum that the science of archery consists of four constituents (pādas), namely, मन्त्र, उपचार, मोक्ष and संहार.

167

5 °) कथं कथा (should be read as one word). Dev. कथं कथा कथं कथमिति विवादः.

168

4 °) The variants क्षान्त, (क्षान्तः or क्षन्ता) क्षोषरि arise perhaps from misunderstanding, while क्षोष्य and असाधु appear to be attempts at improvement.

By त्रिध्वनि साधु, Dev. understands देवदिजयुरुषु.

170

18 ^a) कर्णायसमया युद्धाः. Dev. explains as पापा-
णगोलकाः; 'iron balls' (also called *ayoguda*), used
as projectile. See Hopkins, *op. cit.*, p. 295 f.n.

29 ^a) अवसत्स्यामि. Dev. also accepts this reading
and explains: अवसादं यास्यामि । पाठान्तरमर्वाचीनम् ।

46 ^a) By अनया is meant गद्या, as some variants
actually clarify.

171

34 ^a) S preserves the hiatus; N unnecessarily
repeats सः in order to avoid the hiatus.

55 ^b) Perhaps irregular for कुञ्जरं मर्दितं. The T
Ga. 4 reading कुञ्जरमर्दिना is obviously an emendation.

172

59 ^a) The text-reading is found in a very
small number of MSS. Even if it is not the most
satisfactory, it is selected because the different
readings given by different small groups of MSS.
are hardly more suitable.

67 ^a) It is noteworthy that the text-reading
वैत्तपात्यं is given only by B, but it is most likely
as being a somewhat unusual expression.

86-90 This is perhaps the earliest recorded
reference to the Liṅga-worship, in which the epic
Śiva is conceived as a phallic deity. See also 7.
173. 83-85, 92, 94; B. 13. 14. 27-35, 161. 16.
Hopkins is not justified in his conjecture that
these passages are mere interpolations which should
be disregarded. If they are additions, they must
have got into the epic text before our present
manuscript-tradition begins; for both the N and
S recensions include them. See S. K. De in *Our
Heritage* (Bulletin of Postgraduate Research Dept.,
Calcutta Sanskrit College), Vol. i, pt. i, pp. 7-11.

173

4 Cn explains: निघ्नतः शत्रून्निघ्नति पाठे शरीरैः शत्रून्निघ्नतो
ममाग्रतो यान्तं पुरुषमहं लक्ष्ये इत्यन्वयः ।

59 This curious myth of Śiva as a child in the
lap of Umā need not signify any implication of
a cult of the Mother Goddess.

93 Dev. accepts this reading and explains:
प्राणिनां शरीरेषु महादेवो वायुरूपो विषमस्थः प्राणादिरूपेण पञ्चधा
व्यवस्थितः । तथा समस्तुल्यरूपतया । पञ्चत एव न द्वित्रादिसंख्यया
स्थितः । किंभूतेषु शरीरेषु-विषमस्थेषु उत्तममध्यमरूपेषु । नास्योत्तमा-
दिषु न कश्चिद्विशेषोऽस्ति । न केवलं शरीरेषु प्राणापानशरीरिष्वपि
समविषमप्रकारः । अत्र प्राणापानशब्देन मनोबुद्धयर्हकाराः पञ्चात्मन
उपलक्ष्यन्ते । त एव शरीरिणः संधारकप्रेरकत्वात् संचेष्टयन्ते सर्व-
मिति ॥

APPENDIX (cont.)

[App. 20 A ought to have come on p. 1137 before App. 21; but it was passed over through oversight, and is now printed after the Notes, on p. 1159.]

20 A

After 7. 131. 99, K₄ B Dc₁ Dn D₁. s. s. s. ins. :

ततो घटोत्कचः कुट्टो रक्षसां भीमकर्मणाम् ।
द्रौणिं हतेति महतीं चोदयामास तां चमूम् ।
घटोत्कचस्य तामाज्ञां प्रतिगृह्णाथ राक्षसाः ।
दंष्ट्रोञ्ज्वला महावक्त्रा घोररूपा भयानकाः ।
व्यात्तानना दीर्घजिह्वाः क्रोधताम्रेक्षणा नृशम् । [5]
सिंहनादेन महता नादयन्तो वसुंधराम् ।
हन्तुमभ्यद्रवन्द्रौणिं नालाप्रहरणायुधाः ।
शक्तीः शतघ्नीः परिवानशनीः शूलपट्टिशान् ।
खड्गान्गदा सिन्धुपालान्मुशालानि परश्वधान् ।
प्रासान्सींस्तोमरांश्च कणपान्कम्पनाञ्छितान् । [10]
हुलान्भुशुण्ड्यश्मयुडान्स्थूणाः कार्णायसीस्तथा ।
सुदरांश्च महोघोरान्समरे शत्रुदारणान् ।
द्रौणिमूर्धन्यसज्जन्त राक्षसा भीमविक्रमाः ।
विशिषुः क्रोधताम्राक्षाः शतशोऽथ सहस्रशः ।

20 A

(L. 1) D₈ हैडिभिर्भीमविक्रमान् (for the post. half).
— (L. 2) K₄ D₁. s. s. s. सत सत (for द्रौणि हत). D₈
नोदयामास (for चो). D₁. s. s. s. तां (for तां). — (L. 3) B₁. s. s. [आ]यु; D₈ तु (for [अ]यु). — (L. 4) B₁
Dc₁ D₈ दंष्ट्रोञ्ज्वल- (for 'ञ्ज्वल'). Dn₂ भयावहाः (for
'नकाः). — (L. 5) D₁ दीर्घः; D₈ दीप्त- (for दीर्घ-).
B₄ 'युजाः (for 'जिह्वाः). Dn₂ दीर्घेक्षणा (for 'ताम्रे').
— (L. 6) K₄ D₁. s. s. नमस्तलं (for वसुंधराम्). — (L.
7) D₈ युद्धम् (for हन्तुम्). K₄ नानाप्रहरणायुधं (for
the post. half). — (L. 8) D₈ शूल- (for शूल-).
— (L. 9) K₄ Dn₂ D₁. s. s. s. भिडि (D₁. s. 'ड') पालान् (for
भिन्दिपा). K₄ B₂-4 Dc₁ Dn₂ D₈ मुसलानि; B₁. s. सुपं
(for मुशं). Dc₁ D₁. s. परस्वधान्. — (L. 10) D₈
प्राशान् (for प्रासान्). D₈ कुणपान्कम्पनाञ्छिताः; D₈ कर्णे-
यान्कांचनाञ्छितान् (for the post. half). — (L. 11) K₄
B₄. s. स्थूलान्; D₁. s. हलान्; D₈ हुंडान् (for हुलान्).
D₁. s. मुशुंडीक्ष; D₈ मृशुंड्यश्म- (for मुं). K₄ Dc₁
गदा-; Dn₂ D₃ 'युडा- (for 'युडान्). K₄ D₁. s. s.
स्थूणान्; B₈ स्थूण-; Dc₁ Dn₁ स्थूलाः. D₈ कर्णावसान्
(for कार्णावसीस). — (L. 12) D₈ 'दाक्षान् (for

तच्छब्दवर्षे सुमहद्रोणपुत्रस्य मूर्धनि । [15]
पतमानं समीक्ष्याथ योधास्ते व्यथिताभवन् ।
द्रोणपुत्रस्त्वसंभ्रान्तस्तद्वर्षे घोरमुत्थितम् ।
शरैर्विध्वंसयामास वज्रकल्पैः शिलाक्षितैः ।
ततोऽन्यैर्विशिखैस्तूर्णे स्वर्णपुङ्खैर्महामनाः ।
निजघ्ने राक्षसान्द्रौणिर्दिव्यास्त्रप्रतिमन्त्रितैः । [20]
तद्गणैरर्दितं यूथं रक्षसां पीनवक्षसाम् ।
सिंहैरिव बभौ मत्तं गजानामाकुलं कुलम् ।
ते राक्षसाः सुसंकुट्टा द्रोणपुत्रेण ताहिताः ।
कुट्टाः स्य प्राद्रवन्द्रौणिं जिघांसन्तो महाबलाः ।
तत्राद्भुतमिमं द्रौणिर्दंशयामास विक्रमम् । [25]
अशक्यं कर्तुमन्येन सर्वभूतेषु भारत ।
यदेको राक्षसीं सेनां क्षणाद्रौणिर्महाबलिव् ।
ददाह ज्वलितैर्बाणै राक्षसेन्द्रस्य पश्यतः ।
स दहन्नाक्षसानीकं रराज द्रौणिराहवे ।
युगान्ते सर्वभूतानि संवतकं हवानलः । [30]
तं दहन्तमनीकानि शरैराशीविषोपमैः ।

'-र'). — (L. 13) D₁. s. संभ्रता (D₈ 'स्त-') (for
[अ]सज्जन्त). D₈ राक्षसा विक्रमाच्छया; D₈ राक्षसा भीम-
रूपिणः (for the post. half). — (L. 15) D₁. s. तद्वस्तु
शरवर्षे ते (D₈ 'षे तु') (for the prior half). — (L. 17)
K₄ D₁. s. हि (for तु). Dn₁ विक्रोतस; Dn₂ D₈ संभ्रान्तं
(D₈ 'तत्') (for [अ]संभ्रान्तस्य). K₄ Dc₁ Dn D₈ उच्छिद्यन्ते
(for उत्थि). — (L. 18) D₁ शिलाक्षितैः (for 'क्षितैः').
— (L. 20) Dn₁ निजघ्ने (for 'घ्ने'). — (L. 21) B₄
पूर्व; D₈ युद्धं (for यूथं). — (L. 22) B₁ सिंहैरेव (for
सिंहैरिव). — (L. 23) K₄ D₁. s. तदा ते (D₁. s. ततन्ते)
राक्षसाः कुट्टा (for the prior half). D₁. s. पीडिताः (for
तां). — (L. 24) B₁-3 Dc₁ संप्राद्रवन्; D₈ सम्राद्रवन्
(for स प्राद्र). D₈ कुट्टायाः प्राद्रवन्द्रौणिं (for the prior
half). Dn₁ om. (hapl.) from जिघांसन्तो up to द्रौणिर्
(in line 27). K₄ D₁ महाबलं (for 'बलाः'). — (L.
25) B₁ D₁. s. s. अद्भुतमम्. — (L. 26) B₈ सर्वभूतेन (for
'तेषु'). — (L. 27) D₈ क्षीयन् (for क्षणम्). D₈ महाबलः
(for 'लविव'). — (L. 28) B₈ (marg. as above).
निशिदैर् (for ज्वलितैर्). — (L. 29) K₄ D₈ बह्वः
Dc₁ हत्वा; Dn₁ बह्वः (for दह्वः). — (L. 31) Dc₁
निर्दहन्तम् (for तं दहन्तम्).

